हिन्दी मुहावरा-कोष
लेखक
प्रो० आर० जे० सरहिन्दी
प्रकाशक
रामनारायण लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद

हिन्दी मुहावरा-कोष

लेखक

प्रो० आर० जे० सरहिन्दी

Doctor of Hindi Literature

प्रकाशक

रामनारायण लाल

पब्लिशर और बुकसेलर

इलाहाबाद

प्रथम संस्करण] १९३७ [मूल्य १॥।)

प्रस्तावना

श्री गणेश करना आर्यों का धार्मिक कृत्य है। काय के आरम्भ करते समय हिन्दू लोग श्रीगणेश का पूजन-स्तवन करते हैं। इसी प्रकार मुसलमानों में कार्य आरम्भ के समय बिस्मिल्लाह कहते हैं। बस ये ही वाक्यांश कार्यारम्भ का बोध कराने लग गये हैं। अति संक्षेप में मुहावरों का यही उद्गम है।

मुहावरा शब्द अरबी भाषा का शब्द था। हिन्दी में इसके मुहाब्बरा, मुहावरा रूप हुए। इसी अर्थ में हिन्दी व्याकरणकारों तथा विद्वानों ने वाग्धारा, वाग्रीति तथा भाषा-संप्रदाय शब्दों का भी प्रयोग किया है। उर्दू में इसी अर्थ में रोज़मर्रा तथा इस्तलाह शब्दों का प्रयोग होता है। रोज़मर्रा शब्द को भी हिन्दी व्याकरणों में इसी अर्थ में लिखा गया है।

हिन्दी में इसका 'मुहावरा' रूप मुझे उपयुक्त प्रतीत हुआ। मैं इसका अर्थ भी बहुत सीधा-सादा 'अभ्यास' मानता हूँ। मुझे यह मुहावरा पड़ गया है अथवा आपको इस काम का मुहावरा है; इन दोनों वाक्यों में मुहावरे का अर्थ अभ्यास ही है। यद्यपि अनेक विद्वानों ने मुहावरे के पृथक् पृथक् संकुचित और विस्तृत अर्थ माने हैं; परन्तु इसके अरबी अर्थ के अनुकूल हिन्दी शब्द 'अभ्यास' ही मेरी समझ में उपयुक्त प्रतीत हुआ।

मुहावरे प्रत्येक भाषा की वह निधि हैं जिस पर भाषा जीवित रहती है। भाषा के मर जाने का अर्थ यह भी है कि उसके मुहावरों का कुंठित हो जाना और जन साधारण की बोलचाल से उठ जाना। मुहावरे जन साधारण की संपत्ति होते हैं। मुहावरे व्याकरण के प्रतिकूल भी होते हैं अथवा मुहावरे व्याकरण के अनुकूल नहीं भी होते। परन्तु मुहावरे भाषा की सजीवता का चिन्ह हैं। इसीलिये विद्वान लोग विशेष कर साहित्यिक रसिक विद्वान इन्हें अपनाते हैं।

भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिये मुहावरों पर अधिकार प्राप्त करना अति आवश्यक है। ग्रंथ को अधिक से अधिक दिनों तक जीवित रखने के लिये चाहे उपयुक्त शब्दों का संचय और उन पर अधिकार आवश्यक भले ही हो पर ग्रंथ का अधिक से अधिक प्रचार मुहावरों के बल पर ही हो सकता है।

अँग्रेज़ी के साधारण जानकार जानते हैं कि मुहावरेदार (Idiomatic) अँग्रेज़ी का महत्व कितना है और बेमुहावरा जबान कितनी नीरस मानी जाती है। उर्दू में भी मुहावरों का राज्य है। कुछ समय पहिले तो वह कविता पर ऐसे छा गये थे कि कविता का सर्वोत्तम गुण ही मुहावरामय पद्य हो गया था। आज 'दाग़' अमर है तो अपनी सरलता के लिये है और उसकी सरलता है केवल मुहावरा ही। हिन्दी में प्रेमचन्द का अधिकार था सिर्फ़ इसीलिये कि उनकी भाषा में मुहावरे भरे पड़े हैं।

आज उर्दू और हिन्दी का झगड़ा काफ़ी ज़ोरों पर है। लोग कितने ही प्रकार के तर्क देकर एक दूसरे को अपने अपने पक्ष में कर लेना चाहते हैं परन्तु सब यत्न बेकार रहते हैं। हिन्दी लोगों के लिये कठिन है, इस बात की शिकायत भी सुनने में आती है। उधर साहित्यिक विद्वान कहते हैं कि बिना कठिन शब्दों के काम नहीं चलता। इन सब बातों के सुलझाने का सरल उपाय केवल 'मुहावरा' है।

मुहावरे के मैदान में आकर उर्दू और हिन्दी का इतना भी भेद नहीं जितना मेरे पड़ोसी की घरू बोली और मेरी घरू बोली में है बल्कि दोनों एक ही घर की बोली हो जाती हैं। दो बोली ही नहीं, एक ही बोली हो जाती है। उर्दू के साहित्यिक और हिन्दी के साहित्यिकों का रोग केवल मुहावरे की कुछ ख़ुराकों से ख़त्म किया जा सकता है।

मुहावरे हर घर की स्त्री की भाषा का प्रधान तत्व हैं और अपढ़ लोगों में भी इनका पूरा पूरा प्रचार है। हम मुहावरों के द्वारा किसी भी देश की बोली पर भी अधिकार पा सकते हैं और भाषा पर भी।

किसी भी भाषा के साहित्यिक इतिहास को मन में बैठालने पर हमें यह ज्ञात होता है कि हर एक बोली धीरे-धीरे भाषा बनती है और हर

एक सजीव भाषा धीरे धीरे मृत भाषा बन जाती है। परन्तु जो भाषाएँ अधिक से अधिक जीवित रहती हैं वे 'बामुहाविरा' होने के बल पर ही। हिन्दी बेचारी पिछड़ी हुई भाषा कही जाती है; परन्तु हिन्दी मुहावरों का अध्ययन करने के पश्चात मेरा यह भ्रम बिलकुल दूर होगया। क्योंकि हिन्दी में लगभग दस हज़ार से ऊपर मुहावरे मेरे देखने में आये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में आठ हज़ार से ऊपर मुहावरे दिए गये हैं। इनमें से भी कुछ मुहावरे भूल से दो या अधिक बार आगये हैं परन्तु इन कुल मुहावरों के अतिरिक्त भी लगभग दो हज़ार मुहावरे मेरे पास हैं, संभवतः अन्य संस्करण में मैं उन्हें जोड़ सकूँ।

मुहावरों के अर्थ देने के अतिरिक्त उनके प्रयोग भी लिखे गये हैं। अंत में कुछ मुहावरों के अर्थ दे दिये गए हैं; परन्तु प्रयोग देने में कंजूसी बर्ती गई है। उसका कारण यही है कि थोड़े से मुहावरे पढ़ लेने के पश्चात मुहावरों को प्रयोग में लाना प्रत्येक पाठक को स्वयं आ जाता है और दूसरी बात है कि 'प्रयोग रहित' मुहावरों के ही अर्थ वाले अन्य मुहावरे पुस्तक में अन्य स्थानों पर भी आ गये हैं।

मैं लिखित भाषा में विराम चिन्हों को भाषा से भी अधिक महत्व पूर्ण स्थान देता हूँ इसीलिये सारी पुस्तक में विराम का प्रयोग विद्वानों को कई प्रकार से किया हुआ मिलेगा। संभवतः प्रचलित विराम नियमों के प्रतिकूल विराम चिन्ह मिलेंगे इसके लिये मैं स्वयं ही दोषी हूँ।

मुहावरा-कोष से हिन्दी भाषी जन समाज का अटूट सम्बन्ध तो है ही साथ ही अहिन्दी भाषी लोग जो हिन्दी का वास्तविक अध्ययन करना चाहते हों उनके लिये तो यह हिन्दी के ख़ज़ाने पर अधिकार पा लेने की कुंजी ही है। क्योंकि 'किसी भी भाषा पर उसके मुहावरों से ही अधिकार प्राप्त किया जा सकता है।'

'त्रुटियें रह जाना मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है और किसी की त्रुटियों से सूचित करना उसी का नहीं समाज भर का उपकार करना और अपनी योग्यता का वास्तविक सदुपयोग है।' अतः विद्वान लोगों

से प्रार्थना करूँगा कि वे मुझे प्रकाशक की मारफ़त मेरी त्रुटियों और अपनी सम्मतियों से सूचित करने का कष्ट उठाकर अनुगृहीत करें।

पुस्तक के स्वरूपानुकूल इसकी भूमिका में पर्याप्त खोज पूर्ण और महत्वपूर्ण लेख होना अनिवार्य था परन्तु कई कारणों से मैं असमर्थ हूँ। मुहावरों का महत्व जानने वाले विद्वान संभवतः इतने से ही सन्तुष्ट होकर मुझे क्षमा करेंगे।

अंत में मैं प्रकाशक महोदय को धन्यवाद दूँगा क्योंकि उनके धैर्य और उन्हीं की निसंकोचता से आज यह पुस्तक पाठकों की सेवा में पहुँच रही है। मेरी सफलता पाठकों को अधिक से अधिक प्राप्त लाभ में निहित है।

विनीत —
आर० जे० सरहिन्दी

होलिकोत्सव
१९६३

सहायक पुस्तकों की सूची

१—हिन्दी शब्द सागर	... ...	हिन्दी
२—हिन्दी मुहाविरा कोष	... ...	”
३—जेबी हिन्दी मुहावरा कोष	..	”
४—मुहावरा अर्थ प्रकाश	... ...	”
५—हिन्दी मुहावरे	... ...	”
६—फीरो जुल्लुग़ात	... ...	उर्दू
७—सैयदी डिक्शनरी	... ...	”
८—मुहावरात और इस्तलाहात	... ..	”
९—उर्दू ईडियम्स	.. ...	”
१०—मुल्की ज़बान के मुहाविरे	... ...	”
११—उर्दू मुहावरे	... ...	”
१२—मुहाविराते निस्वाँ	... ...	”
१३—लोकोक्तियाँ और मुहाविरे	... ...	हिन्दी
१४—हिन्दी लोकोक्ति कोष	... ...	”

१५—English Idioms and How To Use Them.

१६—English Idioms Published by Thomas Nelson and Sons.

१७—Hindi Idioms and their usage.

तुलसी रामायण, सूरसागर तथा अन्य वर्तमान कवियों की पद्य पुस्तकों से भी सहायता मिली है। मैं उन सबका अति कृतज्ञ हूँ।

लेखक

हिन्दी मुहावरा कोष

श्री गणेश करना—प्रारम्भ करना। आज ता० २८ अप्रेल सन् ३५ को इस पुस्तक का श्रीगणेश किया गया है।

श्री गणेश होना—काम शुरू होना। भाई, श्रीगणेश तो हो फिर तो मैं सँभाल लूँगा।

अंक देना—(१) आलिंगन करना। बहुत दिन के बाद मिले हो, यह जी चाहता है कि अंक ही दिये रहूँ। (२) नम्बर देना, मुझे तो परीक्षक ने कुल चालीस अंक दिये हैं।

अंक भरना—लिपटाना, लिपटना। विदाई के समय जब वह रोने लगा तो मैंने उसे अंक भर लिया, क्योंकि मुझ से रहा न गया। मैं आने लगा तो उसने मेरी अंक भर ली (मुझ से लिपट गया) और रोने लगा।

अंक लगाना—(१) गले लगाना। बावरी जो पै कलंक लग्यौ तो निशंक ह्वै क्यों नहिं अंक लगावै। (२) नम्बर डालना। सफों पर अंक लगा दो, बिना सिले हैं कहीं उलट पुलट न हो जायँ। **अंक डालना** भी प्रचलित है।

अँकवार भरना—(१) भेंटना, गले मिलना। (२) गोद भरना। बहू, तुम्हारी अँकवार भरी रहे।

अंकुश देना—(१) जबरदस्ती। तुम अंकुश देकर कराना चाहते हो, परन्तु याद रहे मैं इस कार्य को हर्गिज़ नहीं करूँगा। (२) दबाव डालना। मैं उस पर अंकुश नहीं देना चाहता। (३) वश में रखना, भाई अभी बीमार हो इंद्रियों पर कुछ तो अंकुश दो, बदपरहेज़ी बहुत हानिप्रद है।

अंकुश मानना—(१) दबाव मानना। तुम समझते हो मैं पिता जी का अंकुश मानता हूँ, हर्गिज नहीं इस बात में तो ईश्वर का भी लिहाज न करूँ।

अंग उभरना—यौवन के लक्षण होना। अब कुछ उसके अंग उभरने लगे हैं।

अंग अंग ढीला होना—थकित होना। शिथिलता आना। सारे दिन के परिश्रम से अंग अंग ढीले हो जाते हैं। बुढ़ापे में अंग अंग ढीले हो जाते (पड़ जाते) हैं।

अंग अंग फूले न समाना—खूब खुशी होना। वह तो अंग अंग फूला नहीं समाता, व्याह क्या हुआ स्वर्ग का राज्य मिल गया।

अंग अंग मुस्कराना—(१) प्रसन्नता से रोम रोम खिलना। बालक की अठखेलियाँ देख कर माँ का अंग अंग मुस्करा रहा था। शिशु की वीरोक्तियाँ सुन कर दुष्यंत का अंग अंग मुस्कराने लगा। (२) सौन्दर्य की पूर्णता झलकना। क्या कहूँ, उसका अंग अंग मुस्करा रहा था। वह क्या मुस्कराती थी उसका अंग अंग मुस्कराता था।

अंग करना—स्वीकार करना। जाको मन मोहन अंग करे (सूर)। मैं अंगीकार करता हूँ।

अंग छूना—कसम खाना। सूर हृदय से टरत न गोकुल अंग छुअत हौं तेरो।

अंग टूटना—अंगड़ाई आना। शिथिलता होना। ज्वर से पहिले अंग टूटने लगते हैं।

अंग धरना—धारण करना। सर्दी में भी कपड़े अंग नहीं धरते हो, यह हानिप्रद है।

अंग देना—थोड़ा आराम करना। खाकर जरा अंग देना चाहिये।

अंग मोड़ना—(१) सिकुड़ना, ससुर के सामने तो अंग मोड़ कर बैठा करो। (२) पीछे हटना। रे पतंग निःशंक जल, जलत न मोड़े अंग। पहिले तो दीपक जले पीछे जले पतंग। (३) अंगड़ाई आना।

अंग लगना—(१) हज़म होना। उसे खाया पिया अंग ही नहीं लगता। (२) काम में आना। अच्छा हुआ साधू के ही अंग लग गया, यहाँ कौन खाता।

अंग लगाना—(१) लिपटाना। (२) संग लगा देना। इस कन्या को किसी के अंग लगा दो। (३) स्वीकार करना। (४) पहनना। मैंने तो कभी इस कपड़े को अंग भी नहीं लगाया।

अंग लाना—हृदय से लगाना। परनारी पैनी छुरी कोउ न लावो अंग।

अंगार उगलना—जली कटी बातें कहना। क्रोधित होकर दुर्वचन कहना। मुझे क्या पता था कि तुम इतने नाराज हो, छेड़ते ही अंगार

उगलने लग गये। ज़रा ज़रा सी बातों पर अंगारे उगलने लगते हो, ऐसा भी क्या क्रोध, बिचारा बच्चा है तुमसे क्या काम नहीं बिगड़ते ?

अंगार बनना या होना—(१) सुर्ख़ होना। क्रोध के समय तो चेहरा अंगार हो जाता है। (२) शरीर में लाली आना। देखो दो महीने की कसरत से ही लड़का अंगारा हो गया है।

अंगार बरसना—(१) कड़ी धूप पड़ना। आज कल तो बाहर अंगारे बरसते हैं, दुपहरी में घर से निकलना दुश्वार है। (२) दैवी आपत्ति आना। भाई, क्या करें काम शुरू करते ही अंगारे बरसने लगते हैं। यह अर्थ शायद ब्रज के 'गिटई पड़ना' मुहाविरे से लिया गया है।

अंगारों पर पैर रखना—जानते हुए नुकसान के काम करना। भाई, सोच कर काम करो, इस काम को करना अंगारों पर पैर रखना है। जोखों का काम करना ही अंगारों पर चलना है।

अंगारों पर लोटना—(१) ईर्ष्या से जलना। (२) क्रोध से आग बबूला होना। मेरे सुख को देख कर वह अंगारों पर लोटता है। (३) कष्ट सहना। दम पै बने जो उसको सहूँ मैं, लोटता अंगारों पर रहूँ मैं।

अंगारों पर लोटाना—दुख देना। बातों बातों में लोटाया मुझे अंगारों पर।

अँगूठा चूमना—(१) खुशामद करना। चाहे कुछ हो, मैं जेल ही क्यों न चला जाऊँ परन्तु दुश्मनों के अंगूठे चूमने न जाऊँगा। (२) आधीन होना। वह तो रिश्तेदारों के अँगूठे चूम कर दिन बिता रहा है।

अँगूठा दिखाना—(१) विश्वास देकर मौके पर निराश कर देना। पहिले से तो इन्कार नहीं किया, अब आप ऐन वक्त पर अंगूठा दिखा रहे हैं, यही आपकी सभ्यता है ? (२) निराश नर को काम बिगड़ने पर सहायता न देकर उल्टा चिढ़ाना। हाँ भाई, बुरे दिन जो ठहरे, यही कारण है कि तुम जैसा दोस्त अँगूठा दिखाकर हँसी उड़ा रहा है।

अँगूठा नचाना—चिढ़ाना। काम बिगड़ने पर दोस्त भी अँगूठा नचाते हैं।

अँगूठे पर मारना—परवा न करना। मैं अँगूठे पर मारता हूँ, सौ क्या पाँच सौ भी न लूँ।

अँगूठी का नगीना—जोड़ा मिलना। सिया सोने की अँगूठी राम साँवरो नगीना है।

अंचल पसारना—(१) नम्रता

से माँगना। मैं अञ्चल पसार कर प्राणों की भिक्षा माँगती हूँ। (२) माँगना। मैं क्यों अँचल पसारूँ, मुझे क्या गर्ज़ है ?

अंजर पंजर ढीला होना—(१) मशीन बिगड़ना। बाइसिकिल के सारे अंजर पंजर ढीले हो गये। (२) अंग अंग ढीला होना। (३) अभिमान नष्ट कर देना। अब किसी से अकड़ कर न बोलेगा, क्योंकि आज मैंने इतना पीटा है कि सर्वदा के लिये अंजर पंजर ढीले हो गये हैं।

अंटाचित होना—(१) सुन्न हो जाना। मैं तो साँप देखते ही अंटा-चित हो गया। (२) अचेत होना। एक ही प्याले में अंटाचित हो गया। (३) कारबार बिगड़ना। बिचारे का सारा व्यापार अंटाचित हो गया है।

अंटी करना—चीज़ उड़ाना।

अंटी बाज़—(१) दगाबाज़। तुम बड़े अंटीबाज़ हो तुम्हारा विश्वास नहीं। (२) रुपये खा जानेवाला। उसके हाथों कुछ न देना वह बड़ा अंटीबाज़ है आधे भी पहुँच जायें तो ग़नीमत समझो।

अंटी मारना—(१) जूए में कौड़ी उँगलियों में छिपा लेना। (२) अंटी में से चीज़ उड़ा लेना। आज कल के जेब कतरे से पहिले अंटी मार लोग अधिक होशियारी से अंटी मारते थे।

अंटी रखना—छिपा रखना। उसे देखते ही मैंने पुड़िया अंटी रखली।

अंड बंड बकना—असम्बद्ध बातें करना। चोर के पैर कितने, मैंने ज्यों ही नौकर से डपट कर पूछा तो वह अंड बंड बकने लगा। तुम्हें कुछ मालूम भी है या वैसे ही अंड बंड बक बैठते हो।

अंडा सेना—(१) चिड़ियों का अंडों पर बैठ कर गर्माना। (२) बच्चे गोदी में लेकर सोना। तुम तो हर वक्त अंडे से सेती रहती हो, अरे बच्चा सोगया बस अपने काम में लग जाना चाहिये।

अंडे बच्चे—छोटे छोटे कई बच्चे। कहो, अंडे बच्चे कहाँ छोड़े, सोगये शायद ?

अंत करना—(१) हद्द कर देना। तुमने भी अंत कर दिया, ऐसी भी क्या हंसी बिचारे को दुखी कर दिया। (२) नष्ट करना। (३) समाप्त करना।

अंत पाना—भेद पाना। रहस्य जान लेना। इनकी नीति का अंत पाना असम्भव है।

अंत बनना—आख़ीर अच्छा होना। इस आकस्मिक सहायता से बिचारे का अंत बन गया।

अंत बिगड़ना—(१) परिणाम बुरा होना। उसके जीवन का अंत बिगड़ गया, भगवान किसी को कुपुत्र न दे। (२) परलोक बिगड़ना। भाई, अधर्म से अंत बिगड़ता है। (बिगाड़ना का भी प्रयोग होता है)।

अंत होना—नाश होना। मृत्यु होना। आज मेरे हाथों कंस का अंत होगा।

अँतड़ियाँ कुल बुलाना या लगना—(१) खूब भूख लगना। भाई, दो बज गये हैं, मेरी अँतड़ियें कुल बुला रही हैं, चलो खाना खावें। (२) भूख से सूखना। बिचारा बुड्ढा तीन दिन का भूखा था, मैंने देखा सारी अँतड़ियाँ लग गई थीं। (अँतड़ी जलना भी प्रचलित है)।

अँतड़ियें टटोलना पेट दबा कर उसका खाली या भरा होना देखना। जोरू टटोले गंठरी, मा टटोले अँतड़ी, (कहावत)।

अँतड़ियों के बल खोलना—उपवास के बाद भर पेट होना। महिनों के बाद आज दोनों वक्त अँतड़ियों के बल खोले हैं।

अँतड़ियों में बल पड़ना—पेट दुखना या पेट में दर्द होना। इतना अच्छा मज़ाक उड़ा कि हँसते हँसते अँतड़ियों में बल पड़ गये।

अंतर पड़ना—द्वेष होना, भेद पड़ना। अब तो दोनों के दिलों में अंतर पड़ गया है।

अंतरिक्ष होना—अंतर्द्धान होना, लुप्त होना। देखते देखते अंतरिक्ष हो गया।

अंदाज़ उड़ाना—चालढाल से कूतना। हम तो सूरत देख कर ही अंदाज़ उड़ा लेते हैं।

अंधा धुंध मचाना—अन्याय या अंधेर मचाना, अंधाधुंध मचा रखी है इधर का सामान उधर, उधर का इधर फेंक दिया।

अंधा बनना—लापरवाह होना। अंधा बन कर काम करता है, बिगड़े नहीं तो क्या सुधरे?

अंधा होना—परवाह ही न होना। व्याह के समय तो अंधा हुआ था, अब घाटा आया है तब पछताता है।

अंधा बनाना—आँख में धूल डालना, धोखा देना।

अंधी सरकार—अन्यायी या मूर्ख राज्य। रजवाड़ों की सरकार तो बिलकुल अंधी हैं, बेचारे किसानों पर आँख मीचकर अन्याय होता है।

अंधे की लाठी या लकड़ी—एक मात्र अवलंब। अब तो यह लड़की ही मुझ अंधे की लकड़ी है।

अंधेर खाता—(१) ठीक ठीक हिसाब न होना। ऐसा भी क्या अंधेर

खाता कोई कुछ ले जावे लिखा पढ़ी ही नहीं। (२) अन्याय। वहाँ बड़ा अंधेर खाता है, कोई सुनता ही नहीं।

अंधेर छाना—गड़बड़ होना। दयालु महाराज के मरने से राज्य में अंधेर छा गया।

अँधेरगुप—बहुत अंधेरा। यहाँ तो बिल्कुल अंधेरगुप है कहाँ ले आये।

अंधेर नगरी—अन्याय का स्थान। मुसलमान कोतवाल के आने से शहर अंधेर नगरी हो गया है।

अँधेरा छाना—शोक छाना, निराशा होना। तिलक के मरने का संवाद सुनते ही देश में अँधेरा छा गया।

अंधेरा छोड़ना—प्रकाश के सामने से हटना। अन्धेरा छोड़ कर खड़े हो जिससे कुछ दिखाई पड़े।

अँधेरी झुकना—बहुत अंधेरा। आज तो बड़ी अंधेरी झुक रही है बारिश बड़े जोर की आवेगी।

अंधेरी कोठरी—पेट, गर्भ, कोख। इस अन्धेरी कोठरी का हाल कोई नहीं बता सकता कि लड़की होगी या लड़का।

अंधेरी डालना या देना—किसी की आँखों को मूंद कर उसकी दुर्गति करना। इस बदमाश को तो अंधेरी डाल कर इतना पीटना चाहिये कि याद करे।

अँधेरे उजेले—वक़ बे वक़। टार्च ले जाया करो अँधेरे उजेले कभी काम आवे।

अँधेरे घर का उजाला—इक लौता बेटा। यह लड़का ही मेरे अँधेरे घर का उजाला है।

अँधेरे मुँह या मुँह अंधेरे—बहुत सवेरे। रात को सोया और अँधेर मुँह ही उठ कर चल दिया।

अंबर के तारे डिगना—असंभव बात। भाई! कंगाल का लाखों रुपये दान करना अंबर के तारे डिगना नहीं तो और क्या है?

अकड़ जाना—घमंड दिखाना, हठ करना, तुनक मिज़ाजी। तुम तो ज़रा सी बात पर अकड़ जाते हो, मनुष्य के नाते ज़रा सुन तो लिया करो।

अकेली कहानी—एक ओर की बात। मैं अकेली कहानी पर विश्वास नहीं करता, जब उसकी सुन लूँगा तब मालूम होगा कि किसका अपराध है, तुम्हारा या उसका।

अकेला दम—अपना ही भरोसा। मुझे क्या परवा है अकेला दम है, जान ख़तरे में भी हो तो क्या।

अकेले दुकेले—बिना साथी के। भाई अकेले-दुकेले न जाना, वहाँ ख़तरा है।

अकेले राम—अकेला दम। परिवार आदि का बंधन न होना।

अक्ल का अजीर्ण होना—(व्यंग्य) मूर्ख होना। क्या अक्ल का अजीर्ण हो गया है (या अक्ल मारी गई है) जो रुपये का ५ सेर घी तौल रहा है।

अक्ल का दुश्मन—मूर्ख। तुम तो अक्ल के दुश्मन हो, फिर वही उल्टी बात कहते हो।

अक्ल का पुतला—बुद्धिमान। बिगड़ते काम को सुधार लिया, अक्ल का पुतला है।

अक्ल का पूरा—(व्यंग्य) तुम तो बड़े अक्ल के पूरे हो न जो इस मशीन को चला लोगे।

अक्ल के पीछे लाठी लिये फिरना—काम बिगाड़ना। अक्ल के खिलाफ़ काम करना।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना—बहुत सी कल्पना करना। केवल अक्ल के घोड़े दौड़ाने से काम नहीं हो जाते, जब करते हैं तो पता चलता है। अक्ल के घोड़े तो बहुत दौड़ाये परन्तु उसका पता नहीं चलता। अक्ल के चाहे जितने घोड़े दौड़ाओ काम बनना तो मुश्किल है।

अक्ल ख़र्च करना—समझ से काम करना। जरा अक्ल ख़र्च करो, झट समझ में आ जायगा।

अक्ल चकराना या चक्कर में आना—मिल की मशीनों को देख कर तो अक्ल चकराती है। वकील के सवाल पर सवाल पूछने से मेरी अक्ल तो चक्कर में आगई।

अक्ल चरने जाना—समझ का जाते रहना। तुम्हारी अक्ल क्या चरने गई थी, पूछा था तो जवाब देते वह कोई हौआ तो था ही नहीं।

अक्ल दंग रह जाना—स्तम्भित होना। विज्ञान के नवीन आविष्कारों को देख कर तो अक्ल दंग रह जाती है। अक्ल दंग होना। सुध बुध भूलना। एक दम डाकुओं से घिरा देख कर तो उसकी अक्ल दंग रह गई।

अक्ल दंग होना—अक्ल चकराना, सुध-बुध भूलना।

अक्ल देना—समझाना। तुम मुझे क्या अक्ल देते हो मैं स्वयं सब कुछ जानता हूँ।

अक्ल दौड़ाना या लड़ाना—सोचना विचारना, अक्ल ख़र्च करना।

अक्ल पर पत्थर पड़ना—मौके पर बेवकूफ़ी हो जाना। अक्ल पर पानी फिरना।

अक्ल सठियाना—बुद्धि भ्रष्ट होना। साठ बरस के बाद अक्ल भी सठिया जाती है।

अक्ल से सरोकार न होना—मूर्ख होना, कुछ न समझना।

अक़्लमंद की दुम बनना—तुम जानते तो कुछ नहीं और वैसे अक़्लमंद की दुम बने फिरते हो।

अक्षर घोटना—किताब के एक एक अक्षर को याद करना।

अक्षर घसीटना—जल्दी में लिखना। मैंने योंही स्टेशन पर ही चार अक्षर घसीट दिये थे।

अक्षर से भेंट न होना—(१) अपढ़ होना। जिनकी कभी अक्षर से भेंट भी नहीं हुई, वे भला क्या पंडित हैं (२) अनभिज्ञ होना। जिस विषय के एक अक्षर से भी मेरी भेंट नहीं हुई उस पर भला क्या व्याख्यान दूँ।

अगर मगर करना—(१) व्यर्थ तर्क करना। मीन मेख़ निकालना। बात बात पर अगर मगर करना ठीक नहीं। जो बात ठीक हो वह मान लेना चाहिये। (२) व्यर्थ तकरार करना, टाल मटोल करना। जब भी रुपये का तक़ाज़ा करता हूँ अगर मगर करने लगता है।

अगले ज़माने का आदमी—सीधा सादा, ईमानदार। अगले ज़माने के आदमी छल कपट नहीं जानते।

अगाड़ी पिछाड़ी लगाना—बंधन में पड़ना। ख़ूब घूम लो शादी होते ही अगाड़ी पिछाड़ी लग जावेगी।

अगिया बेताल—बड़ा साहसी। वे दोनों भाई अगिया बेताल हैं।

अचार बनाना—(१) खूब पीटना। जो रोज़ ही इस तरह देर से आया करोगे तो किसी दिन ऐसा अचार बनाऊँगा कि याद रक्खोगे (२) व्यर्थ होना। मुझे तो थोड़ी सी दे दो सारी का क्या अचार बनाना है। अचार डालना भी प्रचलित है।

अच्छा आना—ठीक अवसर पर आना। भाई अच्छे आये क्योंकि मैं अभी जा रहा था फिर न मिलता।

अच्छा करना—(१) आराम कर देना। मैं इसे चार दिन में अच्छा कर दूँगा। (२) काम बिगाड़ना। आपने अच्छा किया और सत्यानाश कर दिया।

अच्छा कहना—(१) प्रशंसा करना। (२) सुन्दर लेक्चर देना। (३) चुभती हुई या मौके की बात कहना। जनाब इस समय बात रख दी, क्या ही अच्छा कहा मैं तो दंग रह गया।

अच्छा बिच्छा—भला चंगा। कल ही मैंने उसे देखा था वह तो (भला चंगा) अच्छा बिच्छा फिर रहा था।

अच्छा भोजन—इसे तो अच्छा भोजन दिये जाओ काम के नाम तो मैय्या मर जाती है।

अच्छे दिन आना—भाग्य खुलना। अब तो भाई अच्छे दिन आगये हैं, अब की बार कुछ स्थायी काम करना।

अच्छे मिलना—(१) ख़ूब प्राप्त होना। जब लेखक को पैसे अच्छे मिलेंगे तो पुस्तक क्यों न अच्छी होगी। (२) आवश्यकता के वक़्त मिलना। भाई तुम (ख़ूब) अच्छे मिले मैं तो तुम्हारे घर ही जा रहा था। (३) (व्यंग्य) अच्छी मिली जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी।

अच्छे रहना—(१) बीमार न रहना। (२) काम बना लेना। भाई तुम बहुत अच्छे रहे पहिले से पहिले ही सब रुपये ले लिये।

अच्छे अच्छे—बड़े बड़े। इस धनुष पर अच्छे अच्छे ज़ोर लगा गये तुम क्या तोड़ोगे। अच्छे अच्छे कपड़े पहन कर मेले में जाना। आज कल अच्छे अच्छे मारे मारे फिरते हैं वे पढ़ों का तो कहना ही क्या?

अछूता—(१) कोरा। यह कुरता तो अछूता रखा है किसी ने नहीं पहना। (२) निर्लेप। वह सब दोषों से अछूता है। (३) वह तो साहब अछूता ही आदमी है, मैंने तो ऐसा कोई कोई देखा है।

अछूती कोख—वह स्त्री जिसका कोई बच्चा न मरा हो। बहन! तेरी तो अछूती कोख है।

अटकल पच्चू—(१) मन घड़न्त। ये अटकल पच्चू बातें रहने दीजिये। (२) अंदाजा। मशीन पाती तो नहीं लेकिन अटकल पच्चू से ही पा गई।

अटक—रोक या सम्बन्ध। जाके मन में अटक है वही अटक रहा। तुम्हें क्या अटक है जो खुद नहीं कह देते। अरे भाई! जैसे तैसे अटक रहे हैं जो दिन गुज़र जायें अच्छे हैं। क्यों अटक अटक कर पढ़ता है।

अटकना—उलझना। किसी तगड़े से अटकना वह मज़ा चखायेगा।

अटकाना—उलझाना, फँसाना, रोकना। ज़रा कुण्डे को अटका देना, जितने में मैं पहुँचू उसे अटकाये रखना, हिसाब को इतने दिन अटकाये रखना ठीक नहीं।

अटकल बाज़—अनुमान लगानेवाला। वह बड़ा अटकल-बाज़ (कितना) है फ़ौरन समझ जायेगा कहाँ गये थे।

अटकाव—सहारा। यदि ज़रा भी अटकाव हुआ तो मैं ऊपर चढ़ जाऊँगा।

अटना—गर्द जम जाना। मैं तो गर्द से अट गया।

अटपट बोलना—(१) अंडबंड कहना। लटपट पग धरती धरे, अटपट बोलत बैन। अटपट बोलकर सब बना बनाया काम बिगाड़ दिया।

अटसट लगाना—ताल मेल लगाना। उसने तो अपनी अटसट लगा ली है कुछ न कुछ मिल ही जाता है।

अठखेलियाँ करना—क्रीड़ा करना। करत है कुंजन में अठखेली। क्यों सखियों में अठखेलियाँ करती फिरती हो घर का काम यों ही पड़ा है।

अठखेलियाँ सूझना—(१) मौज सूझना। मैं सर दर्द से मरा जाता हूँ, तुम्हें अठखेलियाँ सूझती हैं। (२) छेड़छाड़ करना। तुम्हें अठखेलियाँ सूझें यहाँ बेज़ार बैठे हैं।

अड़के बैठना—दरवाज़े में क्यों अड़कर बैठ गये हो। गर अड़के बैठ गया तो लेकर ही उठूँगा।

अड़के खड़ा होना—राह रोकना। निकलने की बहुत कोशिश की पर वह अड़ के खड़ा हुआ था।

अड़चन डालना—रुकावट डालना। उसका स्वभाव ही है लोकोपकारी कार्य्यों में अड़चन डालना।

अड़ियल टट्टू—रुक कर काम करनेवाला। इस अड़ियल टट्टू को मत ले चलो, रास्ते भर तंग करेगा।

अड्डा जमाना—रोज़ ही रहने लगना। तुमने ख़ूब अड्डा जमाया इतने दिन हो गये जाने का नाम ही नहीं लेते।

अढ़ाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना—अपनी सम्मति अलग रखना। तुम कभी किसी की मानते भी हो या योहीं अपनी अढ़ाई चावल की खिचड़ी हमेशा अलग पकाते रहते हो।

अढ़ाई दिन की हकूमत—(१) केवल थोड़े दिनों का अधिकार। सक्के ने भी अढ़ाई दिन की हकूमत में चमड़े का सिक्का चला दिया था। (२) चार दिन की चाँदनी। क्यों अत्याचार कर रहे हो अढ़ाई दिन की हकूमत है फिर आप भी हम जैसे हो जायेंगे।

अड़े पर काम आना—विपत्ति में काम आना। मित्र वही है जो अड़े पर काम आवे।

अति रंजित करना—ख़ूब बढ़ा चढ़ा कर कहना। उसकी सारी बातें अति रंजित होती हैं।

अथ से इति तक—शुरू से आख़ीर तक। अथ से इति तक पुस्तक को पढ़ना चाहिये।

अथाह में पड़ना—कठिनाई में पड़ना। अथाह में पड़ा हूँ कुछ नहीं सूझता। नैय्या अथाह में पड़ी है।

अधर चबाना—क्रोध के कारण दाँतों से ओठ दबाना। बनवारी की बातें सुनते ही वह अधर चबाने लगा और आँखें लाल हो गईं।

अधूरा कर देना—कमज़ोर कर देना। बुढ़ापा सब को अधूरा कर देता है। अब आकर बुढ़ापे ने किये ऐसे अधूरे, पर गिर गये, दुम झड़ गई, फिरते हैं लंडूरे।

अधूरा जाना—असमय गर्भपात होना। जनाब, निःसन्तान नहीं उनके १७ वर्ष में ६ बच्चे अधूरे गये हैं।

अधूरा होना—(१) नासमझ होना। क्या तुम अभी तक अधूरे ही हो, सोच समझ कर बोलो। (२) आधी ताकत होना। मैं तुम्हारे बिना अधूरा हूँ यदि तुम साथी बन जाओ तो काम चल जाय।

अधौड़ी तनना—खूब पेट भर जाना। आज न्यौते में खूब अधौड़ी तनी होगी।

अनबन रहना—लड़ाई रहना। सौतों में हमेशा अन-बन रहती है।

अनबिधाँ मोती—क्वारी लड़की। भाई, अभी तो वह अनबिधाँ मोती है चिन्ता ही रहती है।

अनबोल रानी—शान्त प्रकृति। बहू क्या आई है, अनबोल रानी है।

अनसुनी करना—ध्यान न देना। अनसुनी करने से काम न चलेगा, यह काम तो करना ही पड़ेगा।

अनजान बनना—जानते हुए भी न जानना। सब कुछ पता होते हुए भी अनजान बन रहे हो।

अन्न अंग न लगना—मोटा या तन्दुरुस्त न होना। तुम कितना ही खालो तुम्हारे तो अन्न अंग लगता ही नहीं।

अन्न जल उठना—जीविका का न रहना। अब मेरा यहाँ से अन्न जल उठ गया है, मैं यहाँ रहकर क्या करूँ।

अन्न जल करना—जलपान करना। मेरे लिये तो तुम्हारे यहाँ अन्न जल करना पाप है।

अन्न पहँचानना—खाना समझना। पशु भी अपना अन्न पहचानते हैं।

अन्न मिट्टी होना—अन्न नष्ट होना, अच्छी तरह न पकना। ऐसी फूहर है कि उसके हाथों सब अन्न मिट्टी हो जाता है ऐसी भी क्या नौ सिखिया तो कुछ बनाना आता हो।

अन्न लगना—रोटी लगना। अन्न लग गया है ऐंठ से बोलता है।

अपना उल्लू सीधा करना—मतलब निकालना। कोई हारे या जीते वकीलों को तो अपना उल्लू सीधा करना।

अपना किया पाना—कर्म का फल पाना। चोर को जेल हुई अपना किया पाया।

अपना लेना वा कर लेना—(१) अपना बनाना। दूसरों को अपना कर लेना टेढ़ी खीर है, (२) अपने अनुकूल कर लेना। वह सेवाभाव से सबको अपना कर लेता है। (३) मोह लेना। उसकी आँखों ने मुझे अपना ही तो लिया।

अपना घर समझना—इसे भी अपना घर समझिये और कभी कभी दर्शन देते रहिये। यह न मालूम कब अपना घर समझेगा। अपना घर समझ कर आराम से रहिये।

अपना टका सीधा करना—हर तरह रुपया कमाना या जीतना। बेईमानी हो चाहे ईमानदारी मुझे तो अपना टका सीधा करना। अपना तो टका सीधा करने से काम, बुड्ढा मरे या जवान।

अपना ठिकाना करना—अपने लिये रहने का इन्तज़ाम करना। अब बहुत दिन हो गये अपना ठिकाना करो।

अपना पराया—मित्र शत्रु, मेरा तेरा। इसे अपना पराया बहुत आता है। अपने पराये की परख करना बुद्धिमानों का काम है। घर में अपना पराया करने से लड़ाई पैदा होती है।

अपना सा करना—भरसक प्रयत्न करना। अपना सा बहुतेरा किया परन्तु वह टस से मस न हुआ मैं क्या करूँ।

अपना सा मुँह लेकर रह जाना—कुछ न बन पड़ना, लज्जित होना, जब उसकी एक न सुनी गई तो वह अपना सा मुँह लेकर रह गया। जब उनके हाथ शिकार न लगा तो अपना सा मुँह लेकर लौट आये।

अपना ही राग गाना—अपने मतलब की कहना, अपने फ़ायदे से काम रखना। अपना ही राग गाये जाते हो या किसी दूसरे की भी सुनते हो, (राग अलापना भी प्रचलित है)

अपनी अपनी पड़ना—अपना अपना ख्याल होना, अपनी अपनी चिन्ता पड़ना। वहाँ कौन किसी की सुनता था सब को अपनी अपनी पड़ रही थी। जीवन तू कासो कहे, अपनी कथा बखान, जाहि लखों ताहि परी अपनी अपनी आन।

अपनी अपनी गाना—परस्पर

विरुद्ध बातें कहना, सब का भिन्न भिन्न विचार प्रकट करना। अपनी अपनी गाने से कोई फ़ायदा नहीं, किसी एक बात का निश्चय करो। किसी की एक नहीं सुनते सब अपनी अपनी गाते हैं।

अपनी खाल में मस्त रहना—अपनी हालत में खुश रहना। कोई खाल में मस्त तो कोई माल में मस्त।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—अपनी बात अलग रखना। साथ रहने से काम चलता है अपनी अपनी खिचड़ी अलग पकाना शोभा नहीं देता।

अपनी छाती पर हाथ धर के कहना—अपना सा हाल दूसरे का भी समझना। ज़रा तुम ही अपनी छाती पर हाथ धर के कहो कि गरीब पर कैसी बीतती है।

अपनी तरफ़ ख़्याल करना—ज़रा अपनी तरफ़ ख़्याल करो क्या रहे हो ? उपदेश देने से पहले अपनी तरफ़ भी ख्याल करना चाहिये।

अपनी नींद सोना—इच्छानुसार सोना, चिन्ता और झंझट से अलग रहना। हमें तो कोई परवाह नहीं मज़े से अपनी नींद सोते हैं। सिपाही को अपनी नींद सोना भी नहीं मिलता।

अपनी बात का एक—पक्का वायदा करने वाला। वह अपनी बात का एक आदमी है।

अपनी बात पर आना—हट पकड़ना, ज़िद पकड़ना। मैं अगर अपनी बात पर आ गया तो इसे पूरा करके छोड़ूँगा।

अपनी बीती—अपना अनुभव किया हुआ, अपने पर गुज़री हुई। आप बीती कहूँ या जग बीती। अपने पर जो बीती है वह मैं ही जानता हूँ।

अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मारना—बुराई मोल लेना, जान बूझ कर विपत्ति में पड़ना। जयचन्द ने मुसलमानों को बुला कर अपने पैर में आप कुल्हाड़ी मारी थी।

अपने पैरों पर खड़ा होना—निर्वाह योग्य बनना। मुझे अब सहायता की ज़रूरत नहीं मैं अब अपने पैरों पर खड़ा हो गया हूँ।

अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना—अपनी प्रशंसा आप करना। क्यों अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनते हो हम जानते हैं तुम कितने वीर हो।

अपने सिर लेना—अपने ज़िम्मे लेना। तुम व्यर्थ दूसरों की लड़ाई अपने सिर लेते हो।

अपने हक में काँटे बोना या विष बोना—अपने लिये आप बुराई

करना। मैंने ही उस आदमी को अपने यहाँ ठहरा कर अपने हक में काँटे बोये थे।

अपने हाल में न रहना—होश हवाश में न रहना। जब कभी उसे दौरा पड़ता है वह अपने हाल में नहीं रहता। अपने हाल में रहो क्यों वे समझी कर रहे हो, (खाल में रहना भी प्रचलित है) खाल में रहो ऐंठों मत।

अपने तक रखना—किसी से न कहना। अगर यह भेद अपने ही तक रखो तो कहूँ।

अपने पर आना—जब अपने पर आई तो लगे बगलें झांकने। जब अपने पर आती है तब पता चलता है। आखिर अपनी पर आ ही गये, फिर क्या था उड़ा दिया सर।

अपने तईं खिंचना—अपना भला चाहना। अपनी तईं तो हर कोई खिंचता है।

अपने को लाट समझना—अपने को बड़ा समझना। वह अपने को बड़ा लाट साहब समझता है।

अपने गिरह का क्या जाता है—अपना कुछ खर्च न होना। हमारे कहने से इस बेचारे का काम बन जायेगा अपनी गिरह का क्या जायेगा।

अपने गिरेबान में मुँह डालो—अपनी हैसियत गुण आदि का ख्याल करना। ज़रा अपने गिरेबान में तो मुँह डालो कि तुम कैसे हो।

अपने हाथों कबर या कुँआ खोदना—अपना नाश स्वयं करना। जो अपने हाथों कुंआ खोदता है वह उसमें खुद गिरता है। औरंगज़ेब ने हिन्दुओं पर जज़िया लगा कर अपनी कबर आप खोदी थी।

अफ़वाह उड़ाना—झूठी खबर उड़ाना, गप्प उड़ाना आज शहर में महात्मा गांधी के गिरफ़्तार होने की अफ़वाह उड़ रही है।

अब तब करना—हीला हवाला करना, देर करना, बहाना करना, आज कल करना। उससे जब मांगो तब ही अब तब करने लगता है।

अबे तबे करना—अनादर पूर्वक बातें करना। बस, ज़बान सुधार कर बोलो, अबे तबे की तो मुँह नाली में रगड़ दूँगा। हर एक से अबे तबे से पेश आना ठीक नहीं।

अब तब होना—(१) मृत्यु समय निकट आना। हाँ, मैं उसे देख आया हूँ वह तो अब तब हो रहा है, घड़ी दो घड़ी का महमान है। (२) टल जाना। जब मिलता हूँ अब तब हो जाती है दो महीने हो गये।

अभय दान देना—भय से बचाने का वचन देना। जनमेजय के नागयज्ञ से घबरा कर तक्षक ने भगवान से अभय दान देने की प्रार्थना की।

अभिनय करना—(१) स्वांग भरना। तुम अभिनय करने में बड़े चतुर हो! (२) हाव भाव दिखाना। आप गरीबों का तो ख़ूब ही अभिनय करते हैं, हू ब हू नक़शा खींच देते हैं।

अमचूर हो जाना—सूख जाना, दुबला पतला हो जाना। तुम तो दो दिन के बुख़ार में ही अमचूर हो गये।

अमल पानी करना—भंग या अफ़ीम पीना, नशा खाना, नशा जमाना। पहले अमलपानी करलें पीछे खाना खायेंगे।

अरमान निकालना—हौंसले पूरा करना। तुम अपने अरमान निकाल लो दिल में क्यों रखते हो। वसल की रात रहे अरमान निकाले न गये। आह होती न मेरे लब पर यह नाला होता, एक भी तूने जो अरमान निकाला होता। यार तनहा जो इधर भूल के आ निकला है, कैसे अरमान मचलते हैं निकलने के लिये। अगर आज मेरे पास रुपया होता तो सब अरमान निकाल लेता। आओ तुम भी आज अपने सब अरमान निकाल लो बहुत इधर की उधर कहते फिरते थे।

अरमान रहना या रह जाना—इच्छा पूरी न होना। मन की बात मन ही में रहना, निराश होना। उनके अचानक मरने से मेरे सब अरमान दिल में ही रह गये। रहा दिल ही के अन्दर दिल ही का अरमान, निकली जाती है क्या करूँ मेरी जान। तलवार खूँ में रंग लो अरमान रह न जाये, बिस्मिल के सर पर कोई एहसान रह न जाये।

अरमान आना—(१) घमण्ड आना। अब उसे दौलत का अरमान आ गया है। (२) दुखित होना। पछताना। करेगा कत्ल पर पीछे तुझे अरमान आयेगा।

अरमान ठंडे पड़ना या सिराना—हविश रह जाना। सारे ही अरमान सिराने, मन प्रसून मुरझाने।

अरमान होना—उत्सुकता होना, आतुरता होना। बस फकत मेरे दिल में तेरे दीदार का अरमान है।

अर्धचन्द्र देना—गल हत्था देना। गर्दन खींचकर निकालना। उसे अर्ध चन्द्र देकर निकाल दो।

अलख जगाना—पुकार कर परमात्मा का नाम लेना। ईश्वर के नाम पर भिक्षा माँगना। तुझे घर

घर अलख जगाने की कुछ आदत सी पड़ गई है। घर घर अलख जगाना, दो रोटी का चून लाना।

अलल बछेड़ा—अल्हड़ आदमी, अनुभव हीन पुरुष, वे सूंड़ का हाथी। अनल बछेड़ा मत हो ज़माना बुरा है।

अवतार होना—शरीर धारण करना, पैदा होना। परमात्मा ने अब तक कितने ही अवतार लिये हैं। राम ने रावण का ध्वंस करने को ही अवतार लिया था।

अवतारी—शरारती। बड़ा औतारी लड़का है।

अवसर चूकना—मौका हाथ से खो देना। किसी को अवसर पर नहीं चूकना चाहिये।

अवसर ताकना—मौका देखना, मौका ढूँढ़ना। अवसर ताकते रहे कभी तो वह हाथ आयेगाही।

अवसर मारा जाना—समय बीत जाना। अवसर मारा जात है चेतु विराने मीत।

अवस्था ढलना—बुढ़ापा आना, उम्र अधिक होना। अब क्या है अवस्था ढल गई है।

असामी बनाना—अपने मतलब पर चढ़ाना। कोई ऐसा असामी बनाओ जो लाख दो लाख दे दे।

अहंकार का पुतला—बहुत घमंडी। पूँजी पतियों में अधिकांश अहंकार के पुतले होते हैं। (अहंकार की मूर्ति भी प्रचलित है)।

आ

आँख—तुम्हारी आँख हमेशा पराये माल पर लगी रहती है। मेरे लिये दोनों आँख बराबर हैं।

आँख अटकना—प्रेम होना, मेरी उनसे आँख अटक गई। गर आँख अटकती न किसी शोख से जाकर। तो दिल भी कहीं शौख़ गिरफ़ार न होता।

आँख उठाना—देखना, आँख सामने करना। आँख उठाओ तो देख पड़ेगा। (२) बुरी दृष्टि से देखना, हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। मेरे पास रहने से तुम्हारी तरफ़ कोई आँख नहीं उठा सकता।

आँख उठा कर न देखना—घमण्ड करना, ध्यान न देना। वह तो अब गरीबों की तरफ आँख उठाकर भी नहीं देखता।

आँख उलट जाना—पुतली का ऊपर चढ़ जाना। ज़ख्म के चीरते ही लड़के की आँख उलट गयी।

आँख ऊँची न होना—लज्जा से दृष्टि नीची रहना। अब उनकी आँख हमारे सामने ऊँची नहीं होती।

आँख ऊपर न उठना—लज्जा से नज़र ऊपर न होना। बेटी पर रुपया लेकर अब समाज में उसकी आँख ऊपर नहीं उठती।

आँख ओझल }
आँख ओट }—(१) अपने पीछे। आँख ओझल पहाड़ ओझल। आँख की ओट तो चाहे जो कुछ करे परन्तु सामने करेगा तो मेरी भी बदनामी है।

आँख कड़वाना—नींद की झपकी आना। अब मुझे सोने दो आँख कड़वा रही हैं।

आँख कान खुला रखना—होशियार रहना। जब से उसके यहाँ डाका पड़ा है वह आँख कान खुले रखता है।

आँख कान से दुरुस्त होना—खूबसूरत और बिना ऐब के होना। लड़की आँख कान से दुरुस्त है आप देख लें, परन्तु हमारे पास पैसा नहीं है।

आँख की पुतली समझना, होना—अत्यन्त प्रेम करना। मैं तुझे आँखों की पुतली समझता हूँ।

आँख की हया—(१) मुँह देखे की शरम। जरा इसके पिता जी की आँख की हया है वरना मैं तो इसे पुलिस के हवाले कर ही देता। (२) किसी की शरम। बहू में आँख की हया तो नाम को भी नहीं।

आँख खुलना—उठना, सचेत होना, होशियार होना। इतने सवेरे तो आँख खुलना बड़ी मुश्किल है। दवा (गले से) उतरते ही बच्चे की आँख खुल गई। रात को खटका होते ही मेरी आँख खुल गई। क़त्ल का भण्डाफोड़ होने से समाज की आँखें खुलीं।

आँख खोलना—(१) आँख बनाना, न मालूम इस डाक्टर ने कितनों की आँखें खोल दी हैं। (२) ध्यान से। अब इस वक़्त आँख खोलकर देख लो पीछे मैं ज़िम्मेवार नहीं। क्या आँखों को खोला है तनक गोश को खोल, अफ़साना है पल मारते ही मजलिस सारी।

आँख गड़ना—नज़र जमाना, टकटकी बाँधना। सूरज की तरफ़ आँख गड़ाकर देखने से दृष्टि तीव्र होती है। ख़ूब सूरती पर सब की आँख गड़ जाती हैं। इधर तो पुतलियाँ पथराये देती हैं कज़ा मेरी, उधर आँखें गड़ी जाती हैं उनके रुये दिलबर में।

आँख गरम करना—दर्शन का सुख लेना, किसी की सुन्दरता देख कर आँखें जुड़ाना। क्या पनघट पर खड़े आँख गरम कर रहे हो?

आँख घुलना—दृष्टि से दृष्टि मिलना। अब तो ख़ूब आँखों से आखें घुलती हैं।

आँख चरने जाना—सामने की चीज़ दिखाई न देना। सामने तो रक्खा है, क्या आँखें चरने गई हैं?

आँख चार होना—आँख से आँख मिलाना, सामने होना। (१) आश्चर्य है तुम्हारे जैसा चार आँखों वाला आदमी भी धोखा खा गया। (२) जब आँखें चार होतीं हैं मोहब्बत आ ही जाती है। (३) घर का खोकर अब मुझे भी चार आँखें हो गई हैं। (४) मैंने पहले ही कहा था कि उसकी तुमसे चार आँखें होते ही साफ़ मुकर जायेगा।

आँख चुराना—टालजाना, छिपा जाना, कतरा जाना। (१) अपना काम निकाल कर अब आँख चुराते हो। (२) वह जब कभी इधर आता है तो आँख चुराकर निकल जाता है। (३) वह अब बड़े आदमी हो गये हैं दोस्तों से आँख चुराते हैं। पड़ गई अब तो नज़र आँख चुराते क्यों हो। (४) दगा देना। तुम तो काम पड़ते ही आँख चुरा गये। ज़ुल्फों का बल बताना, आँखें चुरा के चलना, क्या कज़ अदाइयाँ हैं क्या कर्म निगाहियाँ हैं।

आँख चुराकर देखना—छिपकर देखना। मैं उनकी आँख चुराकर दीवार के सहारे खड़ा हुआ यह सब कुछ देख रहा था।

आँख चुरा जाना—आँख बचाकर निकलजाना। मुझे देखते ही आँख चुरा जाते हैं। अब तो आँख चुरा कर निकल जाता है बात भी नहीं करता। इक दिन वह था कि होते थे इशारे हमसे, अब तो कुछ आँख चुरा जाते हो प्यारे हमसे।

आँख चूकना—असावधान होना। आँख चूकते ही माल यारों का।

आँख छिपाना—कतरा कर जाना। अब तो वह अलग ही अलग आँख छिपाकर निकल जाता है।

आँख जमना—दृष्टि स्थिर रहना, नज़र ठहराना। सूरज के चकाचौंध के मारे आँख नहीं जमती। बिजली पर आँख नहीं जमती।

आँख जोड़ना—आँख मिलाना। तब तोते रन में दृग जोरे।

आँख झपकना—नींद आना। ज़रा ही आँख झपकी थी की चोर माल उठाकर ले गया।

आँख झुकना या झेंपना—आँख नीची होना। मुझे देखते ही उसकी आँखें झुक जाती हैं। कई दफ़ा मुँह की खाने पर भी उनकी आँख नहीं झेंपती।

आँख टंगना—टकटकी लगाना वा बाँधना। तुम्हारी राह देखते देखते आँखें टंगी रह गईं।

आँख ठंडी करना होना—धैर्य होना, सन्तोष होना। मेरे बेटे! तुझे देख कर तो मेरी आँखें ठंडी हो गईं। अब जरा मेरी आँखें ठंडी हुई हैं।

आँख डबडबाना—आँखों में आँसू आना। उसकी मृत्यु सुनते ही मेरी आँखें डबडबा आईं।

आँख डालना—मुलाहिजा करना, सरसरी तौर पर देखना। (१) दूसरों की वस्तु पर आँख डालना चोरों का काम है। (२) ज़रा इस पुस्तक पर आँख डाल लो तो फिर यह छपने जायगी।

आँख तरसना—किसी चीज़ को देखने को चित्त लालायित होना। भगवान के दर्शनों के लिये किसकी आँखें नहीं तरसती। पुत्र को गये हुये कई वर्ष हो गये अब उसे देखने को मेरी आँख तरस रही हैं।

आँख तरेरना—क्रोध से देखना। क्यों आँखें तरेरते हो काम तो आप से भी बिगड़ते हैं।

आँख तले न लाना—तुच्छ समझना। मैं तुझे ज़रा भी आँख तले नहीं लाता।

आँख दिखाना—कोप दिखाना। क्या मुझे आँख दिखाकर डराना चाहते हो।

आँख देखते—जान बूझकर। आँखों देखते मक्खी नहीं खाई जाती।

आँख देखा—स्वंय देखा। यह सब कुछ मेरी आँख देखा किस्सा है।

आँख दौड़ाना—चारों ओर देखना। मैंने बहुतेरी आँख दौड़ाई पर दिखाई न दिया।

आँख न उठना—लज्जा से आँख नीची रहना। मेरी तो उनके सामने आँख नहीं उठती।

आँख न खोलना—बेसुध रहना। आज चार दिन हो गये बच्चे ने आँख नहीं खोलीं।

आँख न ठहरना जमना—आँखें एक जगह न जमना। मोटर की रोशनी के आगे आँखें नहीं ठहरतीं।

आँख न डालना—न देखना। उन्होंने इस चीज़ पर आँख भी न डाली काम में लाना तो रहा दर किनार। (इसी का उल्टा आँख डालना भी होता है अर्थात् सरसरी तौर पर देख लेना)।

आँख नाक से डरना—ईश्वर से डरना जो आँख नाक से अंधा कर देता है। मुझसे न डरे तो अपनी आँख नाक से तो डरे।

आँख निकालना—क्रोध से देखना। घुड़कना, आँख फोड़ना। मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मेरी तरफ़ आँख निकालते हो। गुलाम कादिर ने

शाहआलम की आँख निकाल ली थीं।

आँख नीची होना – लज्जा उत्पन्न होना। मेरी तो शर्म से आँख नीची हो गई।

आँख नीली पीली करना—बहुत गुस्सा होना। वृथा क्यों आँख नीली पीली करते हो।

आँख पड़ना—ध्यान जाना। संयोग से रुपये पर हमारी आँख पड़ गई, अन्यथा वह उठा लेता। जिस पर तुम्हारी आँख पड़ जाती है उसे तुम कब छोड़ते हो।

आँख पथराना– आँख थक जाना। तुम्हारी राह देखते देखते आँखें भी पथरा गईं।

आँख पर चढ़ना—(१) निगाह पड़ना। मैं ढूँढ़ ही रहा था कि जन्म पत्री मेरी निगाह पर चढ़ गई और मैंने उसे खोल डाला। (२) दिल में प्रेम विश्वास होना। आज कल सेठ जी की आँख पर मथुरा प्रसाद चढ़ा हुआ है उसी की मानते हैं।

आँख पर तिनका रखना– जान बूझ कर परवा न करना। पिता जी ने तो आँख पर तिनका रख लिया है, उन्हीं का फर्ज है कि डाँट दें।

आँख पर रखना—आराम से रखना। उसने मुझे हमेशा अपनी आँखों पर रखा है।

आँख पलट जाना—तेवर बदल जाना, मुकर जाना। वह तो हिस्सा बँटाने के नाम झट आँख पलट गया।

आँख पसारना—दूर तक देखना। मैं तो मेले में बहुतेरी आँख पसार कर देखता रहा, पर वह दिखाई ही न दिया।

आँख पसीजना—आँखों में आँसू आना। पुत्र की मृत्यु पर भी उसकी आँखें न पसीजीं। उसका दहाड़ मार कर रोना देख कर मेरी आँख पसीज गई। ग़रीबों की मुसीबतें देख कर भी अमीरों की आँखें नहीं पसीजतीं।

आँख पहचानना—इशारा समझना। मैं ख़ूब उनकी आँखें पहचानता हूँ। आँखों को आँख पहचानती हैं। मैं तो मनुष्य की आँख पहचानता हूँ।

आँख पाना—(१) देखने की शक्ति लौट आना। मैंने डाक्टर की बदौलत आँखें पा लीं। (२) देखने की तमीज होना। आँखें भी पाई हैं या योंही परख करते हो?

आँख फटना—आश्चर्य में आना। सरकस के खेल देखते ही मेरी आँखें फट गईं।

आँख फड़कना—शुभाशुभ सूचित

करना। परमात्मा ख़ैर करें आज तो मेरी बाईं आँख फड़क रही है।

आँख फाड़ कर देखना—प्रेम से देखना। वह उसकी तरफ़ आँख फाड़ फाड़ कर देख रहा था।

आँख फिरना या फिर जाना—बेहोश होना, प्रतिकूल होना। अपना मतलब निकालते ही उन्होंने आँखें फेर लीं। कौन होता है बुरे वक्त की हालत का शरीक, मरते वक्त आँख को देखा है कि फिर जाती है। आँख फेरी तूने जिससे दम फ़ना उसका हुआ, मुरदों के आसार ज़िन्दों में नज़र आने लगे।

आँख फूटना—दिखाई न देना। आँखें फूट गई हैं? देख कर नहीं चलते। आँख फूटी पीर गई (कहावत)।

आँख फोड़ना—आँखों की ज्योति नष्ट करना। रात भर उनको इन्तज़ार करते करते आँख फूट गईं। रात में सिलाई करके क्यों अपनी आँख फोड़ते हो। उसने मज़दूर की आँख फोड़ दी।

आँख बचाना—ख्याल बँटाना। आँख बची माल दोस्तों का। आँख बचते ही उठा लेना।

आँख बन्द करके काम करना—ध्यान न रखना। सुधार कर करना तो जानते ही नहीं, जो काम करते हो आँख बन्द करके करते हो, आखिर वह बिगड़ जाता है।

आँख बदल जाना व लेना—बे मुरव्वत हो जाना। वह तो तोते की तरह आँख बदल जाता है।

आँख बन्द करना या होना—(१) बेखबर हो जाना, भूल जाना। उसकी तरफ़ से तो आँखें बन्द कर ली हैं। (२) निधड़क। डरो नहीं आँख बन्द करके चले आओ।

आँख बनवाना—आँख की चिकित्सा कराना। आँख बनवाओ फिर दिखाई देगा।

आँख बराबर करना—आँख सामने करना। वह मेरे सामने आँख बराबर नहीं कर सकता।

आँख बिछाना—प्रेम से स्वागत करना। मैंने आप के लिये आँखें बिछा रखी हैं। जाती जाती वह अपनी मुसकराहट छोड़ गई थी उसी पर मैंने अपनी आँखें बिछा दीं। आँखें बिछायें हम तो उदू की भी राह में, पर क्या करें कि तू है हमारी निगाह में।

आँख बैठ जाना—आँख के ढेले का अंदर को चला जाना। हैज़े में आँख बैठ जाती है।

आँख भर आना—(१) आँखों में आँसू आना। उसका तड़पना देख कर मेरी आँखें भर आईं। चला

किश्ती में जब आगे से वह महबूब आता है। कभी आँखें भर आतीं हैं, कभी दिल डूब जाता है। कह कह के दुख अपना मैं किया मगज़ को खाली, इतना न हुआ सुन के तेरी आँख भर आवे। (२) आँख भर कर कभी मैंने उसे नहीं देखा।

आँख भर कर देखना—नज़र जमाकर देखना। मुझे भी आँख भर कर देख लेने दो।

आँख भर लाना—आँखों में आँसू ले आना। आख़िर मिन्नतें करते करते वह आँख भर लाई और गिड़ गिड़ाकर कहने लगी, इस बार छोड़ दो।

आँख भौं चढ़ाना व टेढ़ी करना—गुस्सा करना। उसने मुझे देखते ही आँख भौं चढ़ा लीं। आँख भौं चढ़ा कर क्यों बातें करते हो ?

आँख भौं सिकोड़ना—ना पसन्द करना। चाँदी के ज़ेवरों को देखते ही उसने आँख भौं सिकोड़ लीं।

आँख मटकाना—इतराना, नाज ओ नखरे करना। क्या आँख मटकाती है ये भी दिन टल जायँगे।

आँख मारना—इशारा करना। वह तो मुझे रुपया दे रहा था मगर उसने आँख मार दी।

आँख मिचकाना—इशारा करना। जरा आँख मिचका देना वह समझ जायेगा।

आँख मिलाना—आँख लड़ाना, टकटकी बाँध कर देखना। मेरे होते हुए तुम से कोई आँख नहीं मिला सकता। आइना क्या बतायेगा मुझसे मिलाओ आँख, मेरी नज़र कसौटी है हालो जमाल की।

आँख मूंदना—संसार से विदा होना, ध्यान न देना। आँखें मुंद जाने पर कुछ भी होता रहे। मैंने तो उधर से आँख मूंद ली हैं।

आँख में पानी नहीं—शर्म नहीं। उसकी आँख में जरा भी पानी नहीं न किसी से पर्दा करती है न बोलते हुए शर्माती है।

आँख में मैल लाना—दिल खट्टा होना। जरा सी भूल पर आप आँखों में मैल ले आये, भला क्या मैं माफ़ी के लायक न थी ?

आँख में मैल है उसमें मैल नहीं—बहुत खूबसूरत है, साफ़ सुथरी है।

आँख मैली करना, होना—आँख बिगाड़ना। केवल दो रुपये के लिये आँख मत मैली करो।

आँख रखना—ध्यान रखना, नज़र रखना। इस पर आँख रखना कहीं

भाग न जाये। ज़रा मेरे सामान पर भी आँख रखते रहना।

आँख लगना—नींद आना। दर्द के मारे आज रात भर आँख नहीं लगी। न लगी आँख जब से आँख लगी। सौदा को जो वालीं पे गया शोरे कयामत, खुद्दामे अदब बोले अभी आँख लगी हैं।

आँख लगाना—प्रेम करना। इधर यार से आँख लगाना उधर पतिव्रता का ढौंग रचना तुझे ही आता है। किसी से आँख मत लगाओ। नज़र उठायें जो आरसी से तो उनसे पूँछू मैं यह हँसी से, लगाई है आँख क्या किसी से, कहो तो यह देख भाल क्या है।

आँख लगी—(१) प्रेमिका। आज उस आँख लगी को कहाँ छोड़ आये। (२) आँख लगी दिल बिंधा।

आँख लजाना—शर्मिन्दा होना। मुख खाता आँख लजाती।

आँख लड़ना वा लड़ जाना—नज़र मिलाना, देखा देखी होना, प्रेम होना। क्या तेरी किसी और से आँख लड़ गई है, जो तू इस से शादी करने में आना कानी कर रही है? आँख से आँख है लड़ती मुझे डर है दिल का, कहीं यह जाये न इस जंगों जदल में मारा।

आँख लड़ाना—आँखें मिलाना। पर स्त्री से आँख लड़ाना अधर्म है।

आँख ललचाना—देखने की इच्छा होना। उनके दर्शनों को मेरी आँख ललचा रही हैं।

आँख लाल करना व होना—क्रोध करना। मारे क्रोध के उसकी आँख लाल हो गई।

आँख वाला—चतुर। हे प्रभु! तेरी निराली शान है, आँख वालों को तेरी पहचान है।

आँख सीधी करना व होना—रुखाई न करना, मेल जोल होना। वह गये दिन जो हमेशा मुझ से सीधी आँख थी। आँख सीधी नहीं करता कि मुकाबिल हों गाह, आरसी नाज़ से वह देखे हैं शरमाये हुये।

आँख सेंकना—दर्शनों का सुख लेना। कहो आज तो उनको देखकर खूब आँख सेंकी।

आँख से सलाम लेना—घमंड के कारण आँख से ही किसी का आदाब, नमस्कार स्वीकार करना।

आँख से (में) नमस्कार—आँखें झपका कर या नीची करके नमस्कार करना या लेना। जबान नहीं हिलाई जाती आँख से ही नमस्कार कर लेते हो।

आँख होना—शान होना। अब ठोकरें खाकर मेरे आँख हो गई हैं।

दुनिया के दिन रात झगड़ों को देखकर मुझे भी आँख हो गई हैं।

आँखें आई हुई होना—आँखें दुखना। आज कल उसकी आँखें आई हुई हैं लिख पढ़ नहीं सकता।

आँखें उमड़ना—(१) देखने की इच्छा होना। मेरी आँखें उनके दर्शनों के लिये उमड़ रहीं थीं। (२) देखने आना। महात्मा गान्धी के लिए लाखों आँखें उमड़ रहीं थीं, शहर में कोई बाकी न बचा था।

आँखें कहीं दिल कहीं—(१) दिल प्रेमी के पास पड़ा हुआ है आँखें यहाँ हैं। (२) आँखें दूसरी जगह दिल दूसरी जगह। देख भाल कर काम किया करो, ये क्या कर रहे हो देखते भी हो या यों ही आँखें कहीं और दिल कहीं है।

आँखें खिलना खिल उठना—प्रसन्न होना। प्रेमी को आते देख कर उसकी आँखें खिल उठती हैं।

आँखें खुलना खुलजाना—(१) ज्ञान होना। महात्मा जी के उपदेश से सब की आँखें खुल गईं। (२) होशियार हो जाना। पिछली बार घाटा आने से अब उसकी आँखें खुली हैं, अब फिजूल खर्चीं नहीं करता।

आँखें खुली की खुली रह गईं—दम निकल गया। यहाँ से भला चंगा गया था रास्ते में ठोकर लगी गिर पड़ा और आँखें खुली की खुली रह गईं।

आँखें खोल कर देखना—गौर करना। आँखें खोलकर देखो इसमें दो हज़ार का नुकसान है।

आँखें गुद्दी में होना—(१) बेवकूफ होना। तुम्हारी आँखें गुद्दी में हैं जब ही तो ठीक-ठीक काम नहीं करते। (२) देख कर काम न करना। सामने रखी चीज़ को ठोकर मारदी क्या आँखें गुद्दी में हैं जो सामने की वस्तु नहीं दीखती।

आँखें चढ़ाना—गुस्से में आना। इनकी तो ज़रा सी बात पर आँखें चढ़ जाती हैं।

आँखें चमकाना—आँखों से इशारे करना। यह लड़की आँखें चमकाने में बहुत चतुर है।

आँखें चारों तरफ़ चक्कर मक्कर करना—आँखें चंचल होना कितनी प्यारी आँखें हैं और फुर्तीली इतनी कि चारों तरफ़ चक्कर मक्कर करती रहती हैं।

आँखें चारों तरफ़ रहना या होना—हर एक बात का ध्यान रखना। तुम उनको क्या धोखा दे सकते हो! उनकी आँखें चारों

तरफ़ रहती हैं यह न समझना कि वे तुम्हें देख नहीं रहे हैं।

आँखें चुँधियाना—आँखों में चकाचौंध होना। आँखों के आगे चमक आने से देख न सकना। इस हंडे की बड़ी रोशनी है आँखें चुंधिया जाती हैं। सोने चाँदी का काम इतना चमकदार हो रहा है कि आँखें चुंधियाती हैं।

आँखें जमीं से लगना—आँखें नीची होना, शरम आना। उस दिन इस बुरी तरह से हराया कि जब भी वह मेरे सामने आता है आँखें जमीं से लगी रहती हैं।

आँखें जमीन से सिली होना—आँखें जमीं से लगना, लज्जा से हमेशा नीचे की ओर रखना। बहू इतनी सुशील है कि आँखें हमेशा जमीन से सिली हुई रहती हैं।

आँखें जलना—दुख होना। तेरे बुरे काम देखकर मेरी आँखें जलती हैं।

आँखें टेढ़ी टेढ़ी हैं—नाराज़ हैं। आज कल वह मेरी नहीं मानता अब तो उसकी आँखें कुछ टेढ़ी टेढ़ी हैं जब आँखें सीधीं थीं तब तो मैं जो चाहता था करा लेता था।

आँखें ठंढी रहें—औलाद जिन्दा रहे। कभी रोना न पड़े, सुख से रहें। बहू ! मुझ गरीबनी की तो यही दुआ है कि तुम्हारी आँखें ठंडी रहें।

आँखें ढूँढ़ती हैं—देखने की बड़ी इच्छा है। मेरी आँखें तुम्हें ही ढूँढ़ रहीं थीं। जब भी जाता हूँ मेरी आँखें उन्हें ही ढूँढती हैं।

आँखें तरसना—दर्शन नहीं होते, मिलाप या भेंट नहीं होती। हमारी आँखें तो तुम्हारे लिये तरसती हैं और तुम आते ही नहीं।

आँखें तलवों से लगना—स्वागत करना। मैं जब जब भी गया बेचारे की आँखें मेरे तलवों से ही लगी रहीं, बड़ी खातिर से पेश आया।

आँखें दुखना—आँखें आई हुई होना। मेरी आँखें दुख रहीं हैं इस लिये ठंडा चश्मा लगाये रहता हूँ।

आँखें देखना—हालत देखना। स्वभाव तथा रीति नीति जानना। उसने बड़े बड़ों की आँखें देखी हैं, वह तुम्हारे काबू में न आयगा। आज कल तो हमारे अफ़सरों की आँखें देखो कितनी बुरी हैं।

आँखें धोई धुलाई हैं—आँखें साफ़ हैं, दिल साफ़ है। उसकी आँखें मेरी तरफ़ से बिल्कुल धोई धुलाई हैं, वह मुझसे इतनी बात पर आँख मैली नहीं कर सकता।

आँखें पाना—(१) बीनाई, दृष्टि शक्ति पाना। एक बार तो अंधा ही हो गया था अब भगवान से

आँखें पाई हैं। (२) इशारा पाना। आँखें पाते ही मैं उसे पीट दूँगा।

आँखें प्यासी होना—दर्शनों की इच्छा होना। हरि हित आँखें प्यासी मोरी। आँखों की प्यास बुझा प्यारे।

आँखें पैदा करना—तमीज़ हासिल करना। आँखें पैदा करो यह आदमी शरीफ़ नहीं हो सकता तुम क्या जानो आदमी परखना।

आँखें फोड़ना—(१) गौर से देखना। आँखें फोड़कर देखो छः हैं या सात। (२) आँखों के ढेले निकाल लेना या छेद कर देना, दृष्टि शक्ति नाश करना। तिजाब के धुएँ ने मेरी आँखें फोड़ दीं।

आँखें बड़ी नियामत हैं—आँखें अमूल्य वस्तु हैं। आँखों वालो, आँखें बड़ी नियामत हैं।

आँखें बन्द किये चले जाओ—निःशंक चले जाओ। कोई खतरा नहीं आँखें बन्द किए चले जाओ।

आँखें बन्द थीं—देखा नहीं था। लोटा तुम्हारे सामने ही तो रखा था क्या तुम्हारी आँखें बन्द थीं।

आँखें मिट जाँयें—फूट जावें। वे आँखें मिट जावें जो स्त्रियों को ताकती हैं।

आँखें माँगना—दृष्टिशक्ति की इच्छा करना। भगवान से आँखें माँगती हूँ और कुछ नहीं।

आँखें रो रोकर सुजाना—इतना रोना कि आँखें सूज जावें। बहुत रोना। क्यों रो रो कर आँखें सुजाती हो जो हो गया सो हो गया।

आँखें रोशन करना, होना—नूर आना, प्रसन्न करना, ज्ञान देना। आपको देखने से आँखें रोशन हो जाती हैं।

आँखें सफेद होना या होजाना—बीनाई का जाते रहना। आँखों में जाला पड़ना। पहिले तो थोड़ी थीं अब तो दोनों आँखें सफेद हो गई हैं, बिल्कुल दिखाई ही नहीं देता।

आँखों का परदा हटना—ज्ञान चक्षु खुलना। आँखों का परदा हटते ही सब बातें समझ में आ गईं।

आँखों का पानी ढलना—निर्लज्ज होना। तेरी तो आँखों का पानी ढल गया है, न शर्म है न लिहाज़।

आँखों का रोना—देखने को आकुल होना। उनके बिना मेरी आँखें रोती हैं।

आँखों की कसम—स्त्रियें प्रायः यह कसम खाती हैं यह बहुत कीमती कसम समझी जाती है। मुझे अपनी आँखों की (कभी २

अर्थ है बच्चों की) कसम जो मैंने देखा भी हो।

आँखों की राह दिल में आना—आँख और दिल दोनों का प्यारा। मेरी आँखों की राह दिल में आया है मैं उसका अनिष्ट कभी नहीं देख सकती।

आँखों के आगे आना—करनी का फल उठाना। जैसा किया था वैसा उसकी आँखों के आगे आ गया।

आँखों के आगे अन्धेरा छाना— ।
आँखों के आगे अन्धेरा होना— । संसार सूना दिखाई देना। अभिमन्यु के मरते ही अर्जुन की आँखों के आगे अन्धेरा छा गया।

आँखों के आगे चान्दना—(१) आँखो के आगे सफाई होना। मेरी आँखों के आगे तो चान्दना है मुझे तो उसके किसी काम में बुराई नहीं दिखती। (२) आँखों का होना न होना एकसा। तुम्हारी आँखों के आगे तो चान्दना है क्यों अन्धे मियाँ ?

आँखों का अन्धा—मूर्ख। क्या तुम्हें लूटने को मैं ही आँखों का अन्धा गाँठ का पूरा मिला हूँ ? हम तो ऐसे ही की ताक में रहते हैं जो आँखों का अन्धा गाँठ का पूरा हो।

आँखों का काँटा होना—शत्रु होना। जब से मैं इस घर में आई हूँ सौत की आँखों का काँटा हो रही हूँ।

आँखों का काजल चुराना—गहरी चोरी करना। क्या ख़ूब तुमने तो आँखों का काजल चुरा लिया।

आँखों का जाते रहना—(१) अंधा हो जाना। उस बेचारे की इस बुढ़ापे में आँखें भी जाती रहीं। (२) अंधे जैसा होना। ऐसी आँखें तो नहीं जाती रहीं जो कार्याकार्य नहीं देखते ?

आँखों का तारा—बहुत प्यारा, मोहन मेरी आँखों का तारा है।

आँखों का तेल निकालना—बहुत बारीक काम करना। तुमने चित्र में रंग भरने का काम क्या किया, मेरी आँखों का तेल ही निकाल लिया।

आंखों का नासूर हो जाना— आँखों से हर समय पानी जाना। उसे तो रंज क्या छाया है आँखों का नासूर हो गया है, हर समय रोता ही रहता है।

आँखों का (में) नूर होना—(१) रोशनी, दृष्टि शक्ति। मेरी आँखों में नूर है तब तक तो सब साथी हैं फिर कौन किसका है। (२) औलाद। हरेक बच्चा हमारी आँखों का नूर है। (३) बहुत प्यार करना। मैं तुम्हें अपनी आँखों का नूर समझता हूँ।

आँखों का परदा उठा देना—शर्म छोड़ देना, घूँघट न रखना। उसने अपनी आँखों का परदा ही उठा दिया अब वह औरत किस बात की ?

आँखों के आगे चिनगारी या लौ छूटना—चकाचौंध आना। सूर्य को देखने से आँखों के आगे चिनगारी छा गई।

आँखों के आगे तारे छूटना—कमजोरी या सदमे से तिरमिरे छूटना। मुझे इन दिनों कुछ नहीं दिखाई देता मेरी आँखों के आगे तो तारे छूटते हैं। (आँखों में आँसू भरने पर भी ऐसा होता है)।

आँखों के आगे नाचना—
आँखों के आगे फिरना—
ध्यान पर चढ़ा रहना। उसकी सूरत मेरी आँखों के आगे फिर रही है।

आँखों के आगे रखना—पास से न जाने देना। मैं इन बच्चों को अपनी आँखों के आगे रखती हूँ।

आँखों के तले लोहू या खून उतरना—गुस्से में लाल होना। नीच तुझे देखते ही मेरी आँखों के तले लोहू उतरता है।

आँखों के नाखून लेना—तमीज़ सीखना। अभी आप जानते ही क्या हैं पहिले आँखों के नाखून लीजिये फिर इसे देखना तब इसकी असलियत आप को जाहिर होगी।

आँखों के बल—शौक से। मैं आँखों के बल जाने को ही नहीं हर एक काम बजा लाने को तैयार हूँ।

आँखों के बल चलना—आँखों पर बैठना, ध्यान से चलना। पहाड़ों पर आँखों के बल चलना पड़ता है।

आँखों को खो बैठना—आँख खो बैठना, अन्धा हो जाना। मैं तो रो रो कर अपनी आँखों को भी खो बैठी।

आँखों देख के या देखते—प्रत्यक्ष में। जान बूझ कर आँखों देखते मक्खी नहीं निगली जाती।

आँखों देखा न कानों सुना—नया ही, अनौखा। हमने तो ऐसा कभी आँखों देखा न कानों सुना, समझ में नहीं आता तुम्हें ऐसी बात पर कैसे विश्वास आगया।

आँखों पर ऐनक लगाओ—(१) आँख बनवाओ। (२) देखने की तमीज़ हासिल करो। आँखों पर ऐनक लगाओ तब देखना यह क्या सुन्दर चीज है।

आँखों देखी कहना या बात होना—सामने की घटना। मैं तो आँखों देखी कह रहा हूँ कोई सुनी सुनाई तो नहीं।

आँखों पर ठीकरी रख लेना—निर्लज्ज होना, जान बूझ कर अन जान बनना। हमसे तो देखते हुए

आँखों पर ठीकरी नहीं रखी जाती। उसने तो बिल्कुल आँखों पर ठीकरी रख ली है, लड़के को कुछ नहीं कहता।

आँखों पर परदा पड़ना—अज्ञान छाना, धोखा होना। क्या खरीदते वक्त आँखों पर परदा पड़ गया था ?

आँखों पर बैठाना—बहुत आदर करना। आप हमारी आँखों पर बैठें। वह जब मेरे घर आयें मैं उन्हें अपनी आँखों पर बिठाऊँ।

आँखों पर हाथ रखना—जान बूझकर अन्धा बनना। ऐसा कुकर्म मुझसे तो नहीं देखा जाता, मैं तो अपनी आँखों पर हाथ रख लेता हूँ।

आँखों में आँख पड़ना या डालना—प्रेम होना। उससे मेरी स्वाभाविक ही आँखों में आँख पड़ गई। नेक सीं काँकरी जाके परै, वह पीर के मारे सुधीर धरै ना। कैसे परै कल ऐरी भटू जब आँख में आँख परै निकरैना।

आँखों में आँखें डालना—आँखों से मोहित करना। ले गया मेरा वह दिल आँखों मैं आँखें डालकर।

आँखों में कहना - इशारा करना। मैंने तुम्हें आंखों में ही कह दिया था। बच्चा वह है जो आँखों के कहने में चले।

आँखों में कूट कूट कर मोती भरना—आँखें बड़ी सुन्दर हैं। उसकी आँखों में तो कूट कूट कर मोती भरे गये हैं देखते ही मोह लेती है।

आँखों में खटकना या खार होना—नज़रों में बुरा लगना। वह तो दुश्मन की तरह मेरी आँखों में खटकता है।

आँखों में खाए जाना—आँखों के इशारे से धमकाना और मना करना। मैं आख़िर कैसे स्वीकार कर लेती सास तो मुझे आँखों में खाए ही जाती थी।

आँखों में ख़ून उतरना—क्रोध से रक्त नेत्र होना। उसे देखते ही मेरी आँखों में ख़ून उतरता है।

आँखों में गड़ना—बुरा लगना। वह सब की आँखों में गड़ रहा है।

आँखों में खाक की चुटकी डालना—कभी जरा सा भी काम न करूँ। मैं उस नीच की आँखों में खाक की चुटकी भी डालूँ तुम उसे खाना खिलाने को कहते हो।

आँखों में घर करना—हृदय में बैठना। पुतलियों की तरह आँखों में घर करते हैं आप।

आँखों में चरबी छाना—घमण्ड में चूर रहना। थोड़े ही धन से उसकी आँखों में चरबी छा गई है

अब तो वह किसी को पहचानता भी नहीं।

आँखों में चुभना—दिल में जम जाना। यह चीज़ तो मेरी आँखों में चुभ गई है और अब मैं इसका इन्तजाम भी जरूर करूँगा।

आँखों में जगह करना—हृदय में स्थान पाना, सम्मान होना। उसके परिश्रम द्वारा जनता की आँखों।

आँखों में ज़रा मैल नहीं—कसूर करने पर भी ढीठ होना। छः दफ़े जेल जा चुका है परन्तु उसकी आँखों में ज़रा भी मैल नहीं है।

आँखों में जान आना—ठंढक पड़ना। धूप में चलते चलते दुखी हो गये अब जरा छाँह में आकर आँखों में जान आई है। (२) निरोग होना। अब तो कुछ उसकी आँखों में जान आगई है पहिले तो मरियल सा लगता था।

आँखों में डर न होना—हया या भय न होना। उसकी आँखों में किसी का डर नहीं चाहे जितनी बेइज़्ज़ती हो।

आँखों में तरावट आना—तबियत ताज़ी होना। अब ज़रा पानी पीकर आँखों में तरावट आई है। घी खाने से आँखों में तरावट आती है।

आँखों में धूल झोंकना—धोखा देना। बातों ही बातों में वह आँखों में धूल झोंक देता है। देखते ही देखते वह आँखों में धूल झोंक गया।

आँखों में नौन देना झोंकना—(१) दगा देना, आँखें फोड़ना। बुरा करना। (२) वह सब की आँखों में नोन (मिर्च) झोंकना चाहता है किसी का सगा नहीं है। (३) उसकी आँखों में नौन तो मैं झोंक दूँ, लेकिन भलाई तो कभी न करूँ, याद है उस दिन कैसी नीचता की थी।

आँखों में पालना—अत्यन्त प्रेम से रक्षा करना। एक ही लड़का है इसे मैं आँखों में पालता हूँ।

आँखों में फिरना—तस्वीर में रहना। हर वक्त याद रहना। उसकी एक एक हरकत मेरी आँखों में फिरती है। वह आज तक हर वक्त आँखों में फिरती है।

आँखों में फीका लगना—आँखों में न जँचना, मेरी आँखों में तो यह सारा पंडाल ही फीका लगता है क्योंकि न तो बिजली का इंतजाम है न बड़े बड़े फोटो ही हैं आखिर ऐसा भी क्या इन्तजाम।

आँखों में वचन होना—आँखों में वायदा करना। उनके आँखों में ही वचन हो जाते हैं, चिट्ठी

तो वे एक दूसरे को लिखते ही नहीं पकड़ूँ कहाँ से ?

आँखों में बसना—हृदय में समाना। कृष्ण मेरी आँखों में बस गया है।

आँखों में मुरव्वत- लिहाज या मुरव्वत, बड़ा तोते चश्म है उसका क्या विश्वास करना उसकी आँखों में मुरव्वत नहीं है।

आँखों में मोहिनी है—देखते ही चित्त लुभा जाता है, दिल चाहने लगता है। उसकी आँखों में तो मोहिनी है जो उधर गया वही मरीज़ बन गया।

आँखों में रसीलापन होना—चित्त लुभाने की ताकत होना। उसकी आँखों में रसीलापन है जी चाहता है उधर ही देखा करें।

आँखों में रात कटना वा काटना—रात भर जागते रहना। मित्र तुम्हारी बाट देखते देखते आँखों में रात काट दी। उनकी बीमारी के कारण रात आँखों में कटती है।

आँखों में शील होना—चित्त में नम्रता होना। उसकी आँखों में ज़रा भी शील नहीं बिल्कुल बेशर्म है।

आँखों में समाना—आँखों में जँचना। आँखों में समा जाना इस दिल में रहा करना, बैकुण्ठ यही तो है इसही में रहा करना। समाया है जब से तू आँखों में मेरी, जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है। इतनी थोड़ी चीज मेरी आँखों में नहीं समाती।

आँखों में सरसों फूलना—प्रसन्नता होना, प्रेमी को देखते ही उसकी आँखों में……।

आँखों में सरूर होना—आँख लाल होना। नशे से आँखें चढ़ जाना।

आँखों से खुद। मैंने आँखों से उसे वह काम करते हुए पाया या देखा। मैं आँखों से (खुशी से) हाज़िर हूँ।

आँखों से उतरना—आँख से गिरना। यह ज़ेवर अब मेरी आँखों से उतर गया है।

आँखों से एक आँसू न निकलना—जरा भी रंज न होना। पिता के मर जाने पर भी उसकी आँखों से एक आँसू न निकला।

आँखों से कबूल—दिलोजान से मंजूर है। हमें आपकी हरेक बात आँखों से कबूल है। आपका हुक्म आँखों से कबूल है।

आँखों से करना—बहुत प्रेम से काम करना। कहना आँखों से करूँ सुन ले राजकुमार!

आँखों से खून बरसना वा चिनगारी छूटना—अत्यन्त क्रोध करना। उसे देखकर मेरी आँखों

से ख़ून बरसने लगता है और चिनगारियाँ छूटने लगती हैं।

आँखों से गिरना वा उतरना—तुच्छ होना, बे कदर होना। वह रुपया गबन करने के कारण पबलिक की आँखों से गिर गया है। अब तुम मेरी आँखों से उतर गये हो।

आँखों से जमाना देखा है—हम जानते हैं, ऐसा नहीं होता, हमारा अनुभव है। इन आँखों से जमाना देखा है, इन पर विश्वास मत करो सब झूँठ बोलते हैं पीछे कोई नहीं रुपया वापिस किया करता।

आँखों से जान निकलना—राह देखते देखते दिक हो जाना। तुम्हारी राह देखते देखते आँखों से जान तक निकल गई।

आखों से देखा जो कभी न देखा था—आश्चर्य-कारी, अपूर्व, भयंकर। आज वह भी इन्हीं आखों से देखा जो कभी न देखा था (बाजीगर ने कमाल ही किया था) हमें ऐसी नीचता की आशा भी न थी।

आँखों से न देखूँ—और तो और देखना भी न पसंद करूँ। मैं तो ऐसे आदमी को आँखों से न देखूँ।

आँखों से भी कभी देखी है—कभी देखना भी मयस्सर हुआ है। तुम्हें तो देखने को भी न मिली होगी, योंही मीन मेख निकालते हो ऐसी चीज़ कभी आँखों से भी देखी है?

आँखों से लगाना—चूम लेना। तेरे इस चित्र को मैं अपनी आँखों से लगाता हूँ।

आँखों से लोहू टपकना—बहुत रोना। जो आँख ही से न टपका तो फिर लोहू क्या है।

आँखों ही आँखों में—आँख के इशारों से ही। आँखों ही आँखों में उसने सारी बातचीत करली।

आँच आना—दुःख या हानि पहुँचना। इस मुकदमे में अगर तुम्हारे ऊपर कुछ आँच आने का अन्देशा हुआ तो मैं बचा लूँगा।

आँच का खेल—भयंकर काम है। देश में क्रान्ति मचाना आँच का खेल है पता नहीं किस समय जला देवे।

आँच खाना—गर्मी पाना। काँच का बरतन ज्यादा आँच खाने से टूट जाता है।

आँच दिखाना—(१) गर्म करना। ढाक के कोयले ज़रा आँच दिखाते ही जल जाते हैं। (२) नष्ट करना। मेरी ओर से चाहे इसमें आँच दिखा दो मुझे क्या नुकसान।

आँच न आने देना—कुछ हानि न होने देना। इस मामले में

तुम्हारे ऊपर ज़रा भी आँच नहीं आ सकती। देखना! बच्चे को आँच न आने पाये।

आँच से खेलना—खतरनाक काम हाथ में लेना। उस आदमी से कभी बात न करो वह धोखेबाज हैं, उससे मिलना आँच से खेलना है।

आँचल दबाना—दूध पीना। आज तो बच्चा आँचल भी नहीं दबाता।

आँचल देना—दूध पिलाना। बच्चे को सब के सामने आँचल नहीं देना चाहिये, अन्यथा नज़र लगने का भय रहता है।

आँचल पर बैठना—यथेष्ट स्वागत करना। कृष्ण! यदि मेरे घर आओ तो मैं तुम्हें आँचल पर बैठाऊँ।

आँचल पसारना—भीख माँगना। मेरे बच्चे को छोड़ दो मैं तुम्हारे आगे आँचल पसारती हूँ।

आँचल फाड़ना—(१) पर्दा नशीन का गैर शख़्स से बातें करना। उसने तो ससुर के सामने भी आँचल फ़ाड़ दिया है। (२) गुस्तख़ाना बातचीत। क्यों आँचल फाड़ती हो हद में रह कर बातें करो। (३) जादू टोना करना। उसने मेरे बच्चे को देखते ही आँचल फाड़ा था, घर आकर वह बीमार हो गया।

आँचल बिछाना—आँचल पर बैठाना, अत्यंत आव भगत करना। उनके लिये आँचल बिछा रखा है।

आँचल मुँह पर लेना—घूँघट निकालना। आँचल मुँह पर लो भाई जी आ रहे हैं।

आँचल में बाँधना—हर समय साथ रखना। मिठाई क्या मेरे आँचल में बंध रही है जो तुझे अभी दे दूँ, घर आना और ले, जाना।

आँचल में बात बाँधना—खुद याद रखना। आज की बात आँचल में बाँध लेना।

आँचल लेना—आवभगत करना। अरी बहू, जल्दी उठ, अपनी सास का आँचल ले।

आँचल सँभालना—शरीर को खूब ढकना। बहू बेटी को आँचल सम्भाल कर चलना चाहिये।

आँट पड़ना—भेद पड़ना। साझा आपस में आँट पड़ते ही बट जाता है।

आँट पर चढ़ना—दाँव पर चढ़ना। याद रखना अगर आँट पर चढ़ गये तो मुँह की खाओगे (अंटे पर चढ़ना भी प्रचलित है)।

आँट लगाना—रोक देना। उसने बने बनाये काम में शिकायत करके आँट लगा दी।

आँटी गर्म करना—रिश्वत देना। पेशकार की आँटी गर्म कर देने से मुकदमा खारिज हो सकता है।

आँटी गर्म होना—अधिक धन होना। आज तो आँटी ख़ूब गरम हो रही है।

आँतें कुल बुलाना—भूख से बुरी हालत होना। भूख से आँतें कुल बुला रही हैं।

आँतें गले में आना—परेशान होना। इस काम से तो आँते ही गले में आ गईं।

आँते समेटना—भूख सहना। अच्छी बरात की, रात भर आँतें समेटे बैठे रहे।

आँतें सूखना—भूख से बुरी दशा होना। तुम तो कहते थे मुझे भूखा रहने का अभ्यास है अब तो दो दिन में ही आतें सूख गईं।

आँतों का बल खुलना—पेट भरना। आज तो लड्डू खाने से आँतों के बल खुल गये।

आँतों में बल पड़ना—पेट ऐंठना, दुखना। हँसते हँसते आँतों में भी बल पड़ गये।

आँधी आना वा चलना—हलचल मचना। ऐसी क्या आँधी आ गई जो इतनी जल्दी करते हो।

आँधी उठाना—धूम मचाना। क्यों आँधी उठा रखी है अपनी अपनी जगह पर बैठ जाओ। कुछ दिन गांधी की आँधी भी ख़ूब उठी।

आँधी के आम—बहुत सस्ती चीज़। आज अमरूद आँधी के आम हो रहे हैं। आँधी के आम हैं फिर इस भाव न मिलेंगे?

आँधी रोग होना—परेशानी होना, रास्ता तै न होना। कहा था ५ मील है यहाँ आँधी रोग हो गया है, दो घंटे हुए तो भी पहुँचते ही नहीं।

आँधी होना—बहुत तेज़ चलना। डाकगाड़ी आज आँधी हो रही है। चलते वक्त तो तुम आँधी हो जाते हो किसी को साथ नहीं लगने देते।

आँवल नाल गड़ना—जन्म भूमि। मेरा कोई आँवल नाल तो गढ़ा ही नहीं है जो वहाँ जाऊँ ही जरूर, इच्छा होगी चला जाऊँगा नहीं तो नहीं सही।

आँसुओं का तार बंधना
आँसुओं का तार न टूटना
आँसुओं की झड़ी बंधना }
खूब आँसू बहाना, लगातार आँसू आना। पश्चाताप के मारे उसकी आँखों से आँसुओं की झड़ी बंध गई। सीता के वियोग में राम की आँखों से आँसुओं का तार नहीं टूटता था।

आँसुओं से मुँह धोना—बहुत

आँसू गिरना । शबे फुरकत न तनहा मुझे रुलाती है, यह सुबहे वस्ल भी आँसुओं से मुँह धुलाती है।

आँसू डबडबा आना—रोने की दशा होना । यह बात सुनते ही उसकी आँखों में आँसू डबडबा आये । उसकी मृत्यु की याद आते ही आँसू डबडबा आते हैं।

आँसू डालना, गिराना, टपकाना—रोना । ज़रा ज़रा सी बात पर आँसू टपकाना ठीक नहीं । स्वामी श्रद्धानंद के बलिदान पर ऐसा कोई आदमी न था जिसने आँसू न गिराये हों ।

आँसू थमना—रोना बन्द होना । जब से फेल होने का समाचार सुना है उसके आँसू नहीं थमते ।

आँसू निकल पड़ना—एक दम रुलाई आ जाना । उसकी दीन दशा देखकर मेरे तो आँसू निकल पड़े ।

आँसू पीकर रह जाना—भीतर ही भीतर दुःखी होकर रह जाना । मैं तुम्हारे कुलक्षण देखकर आँसुओं का घूंट पीकर रह जाती हूँ । करती थी जो भूख प्यास बस में, आँसू पीती थी खाके कसमें ।

आँसू पुछना—ढाँढ़स बंधना, दिल जमई होना । अगर उसे भी कुछ हिस्सा मिल जाता तो उसके आँसू पुछ जाते ।

आँसू पोंछना—ढाढ़स देना, दिल जमई करना । उसका तो कोई आँसू पोंछनेवाला भी न रहा । गरीबों के आँसू परमात्मा ही पौंछते हैं।

आँसू बहाना—रोना । उनके नाम पर आँसू बहाएँ क्यों कर हम, वे हँसते हुए देश पर कुरबान हुए।

आँसू भर लाना—रोने लगना । जैसे ही मैंने उससे यह बात पूछी वह आँसू भर लाया ।

आइना होना—(१) समझ में आ जाना । उसकी यह बात तो मुझे आइना हो गई । (२) बच्चों की बुद्धि आइना होती है, उसमें जैसे विचार पड़ेंगे वैसे ही काम बच्चे करने लगेंगे । (३) साफ़ होना । बर्तन क्या हैं, आइना हो रहे हैं।

आइने में मुँह देखना—(१) अपनी असलियत को समझना लड़की तो हो जन्नत की (स्वर्ग) परी और अपनी शक्ल भी आपने आइने में देखी ! (२) आपको दे देता ! आपने अपनी शक्ल भी आइने में देखी या योंही माँगने लगे ! (३) जाओ आइने (दर्पण) में मुँह देखो फिर माँगना !

आकाश के तारे तोड़ लाना—बहुत कठिन कार्य कर दिखाना ।

उस महा वेईमान से रुपये ले आये ! ये तो साहब आकाश के तारे तोड़ लाये !

आकाश खुलना—(१) बादल साफ होना । आज कई दिनों के बाद आकाश खुला है ! (२) सुविधा होना । वहाँ का आकाश मेरे लिये साफ है, मैं कुछ भी कर सकता हूँ !

आकाश चूमना वा छूना—बहुत ऊँचा होना । महाराज के महल आकाश चूमते हैं ।

आकाश पर दिया जलाना—इतराना, घमण्ड करना । अभी से आकाश पर दिया जलाने लगे, देखना, तुम्हारे जैसे ३६० फिरते हैं ।

आकाश पाताल का अन्तर—महदन्तर । ये विचारे उनकी क्या बराबरी करेंगे इनमें उनमें आकाश पाताल का भेद (अन्तर) है ।

आकाश पाताल के कुलावे मिलाना या एक करना—(१) भारी उद्योग करना । खिलाफत की रक्षा के लिये मुसलमानों ने आकाश पाताल एक कर दिया था । (२) बहुत बातें करना । यों तो आकाश पाताल के कुलावे मिला देते हो और काम करने के नाम पर कुछ नहीं ।

आकाश बाँधना—अनहोनी बात कहना । इरादा भी करते हो तो आकाश बाँधने का भला यह भी कभी हो सकता है ?

आकाश से बातें करना—बहुत ऊँचा होना । हिमालय की कंचन चंगा चोटी आकाश से बातें करती हैं !

आग करना—बहुत गर्म करना । आँच जलाना । तुम चूल्हे में आग करो, मैं आता हूँ । तुमने तो इस लोहे को तपाकर आग कर दिया ।

आग का पुतला—क्रोधी । उसे मत छेड़ो वह तो आग का पुतला है ।

आग के मोल—बहुत मंहगी । पहाड़ों पर सब चीज़ आग के मोल मिलती है ।

आग खाना अंगार हगना—जैसा करना वैसा भरना । हमें क्या जो आग खायेगा अंगार हगेगा ।

आग तलवे से लगना—अत्यंत क्रुद्ध होना । यह सुनते ही तलवे से आग लग गई ।

आग देना—(१) बरबाद करना । मुझे क्या करना है ? मेरी ओर से चाहे इन्हें आग दे दो । इनमें आग दे दो । (२) दाह देना—पारा १०१ आग देने से शुद्ध हो जाता है ।

आग निकलना—किसी वस्तु का बहुत गर्म होना । गर्मी के मारे

दिवारों से भी आग निकल रही है। (२) पत्थर को पत्थर पर मारने से आग निकलती है।

आग पड़ना—मंहगा होना। आज तो शाक भाजी पर भी आग पड़ रही है।

आग पर आग डालना—दुःख पर दुःख देना, जले को जलाना। वह पहिले ही जला भुना बैठा था, तुमने और आग पर आग डाल दी।

आग पर पानी डालना—शान्त करना, क्रोध मिटाना। जरा तुमही समझाकर आग पर पानी डाल दो।

आग पर लोटना—बेचैन होना, रंज करना, क्रोध करना। मैं उसके विरह में आग पर लोट रहा हूँ।

आग पानी का वैर—स्वाभाविक शत्रुता। दोनों अपनी अपनी ताक में रहते हैं उनका तो आग पानी का वैर है, पहिले उसने पीट दिया था, अब के उसने जेल में ठूँस दिया!

आग पानी में लगाना—जहाँ लड़ाई न हो वहाँ लड़ाई कराना। लगाते हैं तो हम वे गिरियाँ हैं दिल जलों को तेरे, ये हैं वही जो लगाते हैं आग पानी में।

आग पेट की—भूख। कोरी बातों से पेट की आग नहीं बुझती।

आग फाँकना—नुकसान में प्रवेश। क्यों ख्वाम ख्वाह इस काम में पड़कर आग फाँकते हो?

आग फुंकना—क्रोध में और क्रोध आना। उसकी बातों से मेरे तन में आग फुँक गई।

आग फूँकना—आग लगाना। इस दवा ने तो और आग फूंक दी!

आग फूंस का वैर—स्वाभाविक शत्रुता। बिल्ली चूहे का आग फूंस का वैर है।

आग बबूला होना या बनना—अत्यन्त क्रुद्ध होना। वह दुभाँती की बात सुनते ही आग बबूला हो जाता है या बन जाता है। परशुराम इन्द्र धनुष को टूटा देखकर आग बबूला हो गये।

आग बरसना—तेज धूप पड़ना। आज तो घर से निकला नहीं जाता आग बरस रही है!

आग बरसाना—(१) शत्रु पर गोलियों को चलाना। आजकल इटली की तोपें अबीसीनियाँ पर आग बरसा रही हैं। (२) क्रोधित होना। जब भी तुम आते हो आग ही बरसाते आते हो!

आग बुझा देना या लेना—(१) बदला लेना। तुम्हें भी अपनी आग बुझा लेने का अच्छा अवसर है! (२) आग पर पानी डालना। चूल्हे की आग बुझा दो।

आग बुझना—(१) इसे कुछ खाने को दे दो जिससे इसकी पेट की आग बुझ जावे। (२) लड़ाई झगड़ा मिटना। इतनी खुशामद पर भी तेरी आग नहीं बुझी।

आग बोना—लड़ाई का बीज बोना। क्या देख रहे हो यह सब आग तुम्हारी ही बोई हुई हैं।

आग भड़कना या भड़काना—हलचल मचाना। (१) जरा सी बात ने हिन्दू मुसलमानों में आग भड़का दी। (२) बदला लेने का भाव उमड़ना। शत्रु के देखते ही उसकी आग भड़कने लगी।

आग भभूका बनना—जल जाना।

आग बन जाना—गुस्से में लाल हो जाना।

आग भी न लगाना—कुछ न समझना। मैं तो तेरे हज़ार रुपयों में आग भी न लगाऊँ।

आग मुँह में लगना—(१) चुप होना। तुम्हारे मुँह में आग नहीं लगती! (२) मरना। उसके मुँह में कब आग लगेगी।

आग में कूदना या पड़ना—दूसरे का दुःख या आफत अपने सिर लेना। तुम क्यों किसी की आग में कूदते हो! हमारी तरफ से लड़ें या मरें!

आग में घी पड़ना—आग में घी डालना—क्रोध को बढ़ाना। उसकी कटी जली बातों से आग में और घी पड़ जाता है। क्यों चिढ़ाते हो और आग में घी डालते हो!

आग में झोंकना—खराब करना, आफत में फेंकना। लड़के को आजकल के लड़कों की सोहबत में बैठने देना आग में झोंकना है।

आग में पानी डालना—झगड़ा मिटाना। बढ़ती हुई आग में पानी डालने से खून खच्चर तो न हो सकेगा।

आग में मूतना—अनीति करना। क्यों आग में मूतते हो गरीबों की आह भी मनुष्य को ख़ाक कर देती है।

आग में घी डालना—किसी के क्रोध को बढ़ाना। लक्ष्मण परशुराम से वचन क्या कह रहे थे, आग में घी डाल रहे थे। **आग का काम करना** भी प्रचलित है। लक्ष्मण के वचनों ने आग में घी का काम किया!

आग लगना या लगाना—बिजलियाँ देखने वालों पे गिराते आये! तुम जिधर आये आग लगाते आये!

आग लगना—(१) बुरा लगना। क्रोध पैदा होना। उस बदमाश को लड़के के साथ देखते ही मेरे तन में आग लग गई। (२) ईर्ष्या

होना, जलन होना। इतना अकलदुसा (स्वार्थी) है कि किसी को खाता पीता देखते ही इसके आग लग जाती है। (३) लाल फूलों का चारों ओर फूलना। टेसू के खिले फूलों को देखकर मालूम होता है जैसे जंगल में आग लग गई। (४) मँहगी होना। बाज़ार में तो आज आग लग रही है, हर एक चीज़ बाबा के मोल बिक रही है। (५) दूर जाना। कभी तुम्हें यहाँ से आग भी लगेगी। (६) ईर्ष्या, प्रेम, क्रोध आदि किसी भाव का उमड़ना। उन्हें देखते ही दिल तड़प जाता है आग लग जाती है। (७) नष्ट होना। आग लगे तुम्हारे काम में मरा इतना भी क्या काम! (८) जलन पैदा करना। इस दवा ने तो बदन में आग लगा दी। (९) झगड़ा बढ़ाना। अभी तो झगड़ा मिटा है, यह और आग-लगाने को आ गया। (१०) चुगली करना। उसने न मालूम मेरे विरुद्ध अफसर से क्या आग लगा दी। (११) नष्ट करना, अगर ज्यादा बुरा भला कहोगे तो मैं इसमें आग लगा दूँगी। (१२) छोड़ देना। ससुराल में आग लगा मैके में जा बसी। (१३) बेचैन होना। सेज पड़ी है सूनी आग लगी है दूनी। (१४) उत्पात मचाना। क्यों आग लगा रहे हो निश्चल नहीं बैठते।

आग लगाकर तमाशा देखना—दूसरों को झगड़े में फँसा कर आप अलग हो जाना। अपने घर में आग लगाकर तमाशा देखो तब पता चले!

आग लगाकर पानी को दौड़ना स्वयं पहिले भड़काना फिर ठंडा करना। पहिले शिकायत की अब जब वह उसे मारने लगे तो रोकती हो, अब क्यों आग लगाकर पानी को दौड़ती हो?

आग लगाना—नाश होना। आग लगाओ ऐसी नौकरी में जिसमें खाने को वक्त न न्हाने को चैन!

आग लगे पर कुआँ खोदना—आखिर मौके पर उपाय करना। दस महीने का बीमार है जब से भी कुछ किया? अब आग लगे पर कुआँ खोदने से क्या होगा?

आग से पानी होना या हो जाना—गुस्सा न रहना। जहाँ चिकनी-चुपड़ी दो चार बातें कीं वह आग से पानी हुआ।

आग होना—क्रुद्ध होना। ब्राह्मण देवता अछूत की परछाईं पड़ते ही आग हो गये।

आगा भारी होना—गर्भ रहना। अब तो बहू का कुछ आगा भारी हो रहा है।

आगा पीछा करना—(१) हिचकना। इस नाले को कूदने में आगा पीछा क्यों करते हो ? (२) टालमटोल करना। रुपये देने में आगा-पीछा क्यों करते हो !

आगा पीछा सोचना—परिणाम सोचना। आगा पीछा सोचकर यदि काम किया होता तो आज ये दिन न देखने पड़ते !

आगा मारना—(१) बढ़ोतरी में विघ्न डालना। मैंने पहिले ही उसका आगा मार दिया। (२) फौज़ का आगा मार दिया।

आगा मारा जाना—भावी तरक्की में रुकावट आना। और तो कुछ नहीं इन्सपेक्टर की रिपोर्ट से मेरा आगा मारा गया।

आगा सँभालना—आघात रोकना। आगा तू सँभालना पीछा मैं देख लूँगा।

आगे आगे—क्रमशः। इब्तदाये इश्क है रोता है क्या ? आगे आगे देखिये होता है क्या। आगे आगे दूल्हा पीछे पीछे बरात शोभा देती है।

आगे आना—(१) भिड़ना। अगर कोई माई का लाल है तो आगे आवे। (२) बदला मिलना। जैसा जो करता है वैसा उसके आगे आता है। (३) आख़िर में ज़ाहिर होना। हम कहते थे वही आगे आया।

आगे करना—(१) अगुआ बनाना। (२) आफ़त में झोंकना। ख़ुद ने तो चोरी की मुझे आगे कर दिया। अर्जुन ने शिखण्डी को आगे करके बाण मारा था।

आगे का उठा—जूठा। गांधी जी के उपदेशों से मेहतरों ने आगे का उठा खाना छोड़ दिया।

आगे का कदम पीछे पड़ना—(१) वीरों का कभी आगे का कदम पीछे नहीं पड़ता। (२) अवनति होना। दिनों का फेर है जो काम उठाते हैं आगे का कदम पीछे पड़ता है। (३) तुम लगे ग़ैरों से मिलने दिल हमारा फट गया, जो कदम उल्फ़त का था आगे सो पीछे हट गया।

आगे डालना—अनादर से देना। जो बचा खुचा होता है कुत्ते की तरह मेरे आगे डाल देती है।

आगे डोलना—बच्चों का होना। बहुतेरे आगे डोल रहे हैं एक उतर गया तो क्या हुआ। (**आगे फिरना**—खड़ी बोली)।

आगे धरना—आदर्श बनाना। माता पिता की शिक्षा को आगे धर कर चलना चाहिये। (**आगे रखना**—ख० बो०—पेश करना)।

आगे पीछे फिरना—खुशामद के

रूप में साथ रहना। वह हमेशा अफ़सर के आगे पीछे फिरता रहता है।

आगे पीछे रहना—सी० आई० डी० का सिपाही मेरे हर वक्त आगे पीछे रहता है। "आगे पीछे फिरता है" भी इस भाव में आता है।

आगे पीछे न होना | आगे पीछे होना—वंशज न होना। मेरे कौन आगे पीछे रक्खा है, जो दान पुण्य कर जाऊँगा वही आप का है। आगे नाथ न पीछे पगा (गृहस्थी के झंझट न होना)।

आगे बढ़ना—सामने आना। (१) जरा आगे बढ़ कर दो दो हाथ मारो। (२) मारते के सामने कौन आगे बढ़ता है। (३) उन्नति करना। आजकल जापान व्यापार में बहुत आगे बढ़ रहा है। (४) मार्ग दिखाना। दीपक लेकर आगे बढ़ो। (५) रोकना, बाधा पहुँचाना। आगे बढ़ो, नहीं तो दुश्मन क़िले पर चढ़ आते हैं। (६) सामना करना। डरते क्यों हो आगे बढ़ो।

आगे रंग लाना—(१) गुल खिलना। (२) भविष्य में बुराई लाना। (३) यह तुम्हारा शबाब आगे रंग लायेगा। (४) यह जूए का शौक आगे रंग लायेगा।

आगे से लेना, आगे होकर लेना—स्वागत करना। बरात को आगे से लेकर जनवासे में ठहरा देना। आगे से जिहि सुरपति लेईं, अर्ध सिंहासन आसन देईं।

आजकल करना या बताना—टाल-मटोल करना। आजकल करने से क्या फायदा, देना है तो दे दो अन्यथा इन्कार कर दो।

आजकल में—आज या कल तक, दो चार दिन में, शीघ्र ही। वह आजकल में ही आने वाला है।

आजकल लगना—अब तब होना। आजकल लग रही है, डाक्टरों ने जवाब दे दिया।

आज को—इस समय। आज को तिलक जीवित होते तो स्वराज्य मिल जाता।

आज तक—अब तलक। आज तक तो एक पैसा दिया नहीं आगे की भगवान जाने।

आज दिन—वर्तमान समय में। आज दिन गांधी जी की टक्कर का दूसरा राजनीतिज्ञ नहीं।

आज बरस कर फिर बरसेगा—ऐसा ही फिर भी होगा। जैसे आज हद दरजे के नाराज या प्रसन्न हुए थे वैसे फिर भी होंगे।

आटा गीला होना—मुश्किल का सामना। आजकल बड़ा आटा गीला हो रहा है करें तो बदनामी न करें तो बदनामी।

आटे दाल का भाव मालूम

होना—व्यवहार का ज्ञान होना। मेरे मर जाने के बाद आटे दाल का भाव मालूम हो जायगा!

आटे दाल की फ़िकर—निर्वाह की चिन्ता। सयाने हो गये आटे की फ़िक्र करो। **आटे के साथ घुन पिसना**—अपराधी के साथ निरपराध की कम्बख़्ती आना! चोरी की उसने, मैं वैसे ही आटे के साथ घुन की तरह पिस गया।

आटे में नमक—थोड़ा। झूठ बोलो इतना जितना आटे में नमक।

आठ आठ आँसू रोना—फूट फूट कर रोना। पिता जी की याद आते ही आठ आठ आँसू रोने लगता है।

आठों गाँठ कुम्मैत—घुटा हुआ, पूर्ण चालाक। वह कब धोका खा सकता है आठों गांठ कुम्मैत है, कुछ रुपये ज्यादा लिखा लिये कुछ मुकर गया।

आठों (आठ) पहर चौंसठ घड़ी—दिन रात। वह तो आठों पहर चौंसठ घड़ी क्लेश रखती है।

आडम्बर फैलाना—ढोंग रचना। तुम आडम्बर फैलाना तो अच्छा जानते हो। (२) दिखावट करना। शादी में इतना आडम्बर रचने की क्या जरूरत थी?

आड़े आना—विघ्न डालना। तुम मेरे हर काम में आड़े आते हो।

आड़े तिरछे होना—बिगड़ना त्यौरी बदलना। मैंने ऐसा क्या कह दिया जो आड़े तिरछे होते हो!

आड़े हाथों लेना—व्यंग्योक्ति से लज्जित करना, खरी खोटी सुनाना। मैंने तो आज उसे ऐसे आड़े हाथों लिया कि वह याद करेगा।

आत्मा मसोसना—भूख दबाना। मैं तो अपनी आत्मा मसोस कर बैठ रहूँगी मगर इन बच्चों के लिए क्या करूँगी।

आत्मा ठंडी होना—(१) सन्तोष होना! मेरी तो आत्मा तब ही ठंडी होगी जब मेरे जैसा हाल इसका होगा। (२) पेट भरना। पेट में पड़े तो आत्मा ठंडी हो।

आत्मा में पड़ना—पेट में पड़ना। आत्मा में पड़े तो परमात्मा सूझे।

आदमी बनना—(१) सभ्य बनना। जब देखो तब लड़कपन की बातें तुम कभी आदमी भी बनोगे! (२) इन्सानियत। तुम्हें आदमी बनना कब आयेगा।

आदमी के लिबास में आना—तहजीब सीखना। आदमी के लिबास में जानवर मत बनो।

आदमी होना—पूरे जवान होना। पहचानता कैसे तब तुम बच्चे थे अब पूरे आदमी हो गये। (२)

इन्सान बनना। बसकि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना, आदमी को भी मयस्सर नहीं इन्साँ होना।

आधमकना—अकस्मात आ जाना। तुम यहाँ कैसे आ धमके? कोई चिट्ठी न पत्री एकदम ही!

आधा होना—दुर्बल होना। मैं तो उसके रंज में आधा हो गया।

आधार होना—पेट में पड़ना। कुछ आधार भी कर लिये थे या भूखे ही चल दिये थे।

आधी बात कहना—थोड़ा कहना। (१) साफ साफ कहो आधी बात कहने से काम नहीं चलेगा। (२) मैंने तो उससे आजतक आधी बात भी नहीं कही।

आधी बात—जरा सी भी बेइज़्ज़ती के शब्द। मैंने आज तक किसी की भी आधी बात तक नहीं सुनी।

आधी बात न पूछना—तनिक ख्याल न करना। सत्कार तो क्या उसने तो आधी बात भी नहीं पूछी।

आन की आन में—दम भर में, अति शीघ्र। आन की आन में सब तैयार हो गये।

आन की आन में—मर्यादा के मान में। आन की आन में आकर इतना बड़ा काम कर डाला।

आन तोड़ना—(१) प्रतिज्ञा तोड़ना। तुम कितने ही नाराज हो जाओ मैं अपनी आन नहीं तोड़ सकता। (२) जिद्द छोड़ना। क्यों पीछे पड़े हो तुम्हें आन तो तोड़नी पड़ेगी। (३) मर्यादा भंग करना। उसने विवाह कुल की आन तोड़ कर किया।

आनन्द के ढोल बजाना—खुशी मनाना। पिता के मर जाने पर तो अब वह आनन्द के ढोल बजाता है। (**तार बजाना भी प्रचलित है**)।

आन पड़ी / **आन बनी** / **आ पड़ी**—मुसीबत पड़ना। जिम्मेदारी होना। खुद पर बीतता। दूसरों को ही नसीहत देती थीं अब अपने पर आ बनी है तो आटे दाल का भाव मालूम हुआ है।

आन मानना—हार मानना। देख कर कुर्ती सजीली सब्ज धानी आप की, धान के भी खेत ने है आन मानी आप की।

आन रखना—हठ रखना। केवल आन (मान या हठ) रखने के लिये मैंने बहुत खर्च कर डाला।

आन सँभालना—आबरू रखना। आन सँभाले जान थी जाती, जान सँभाले आन थी जाती।

आन होना—रोक या अप्रचलन। दिल्ली की हद में काले साँप की आन है।

आना कानी करना—टाल-मटोल

करना, न देना। तुम जाकर माँगना तो सही आना कानी करेगा तो मैं देख लूंगा।

आप आप करना—खुशामद करना। हम तो आप आप करते हैं और तुम नख़रे कर रहे हो।

आप आप की पड़ना—अपना अपना ख्याल होना। कौन किसको पूछता है सब को आप आप की पड़ी है। अपनी अपनी पड़ना भी प्रचलित है।

आपको आसमान पर खींचना—अपने आप को बहुत ऊँचा समझना।

आपको दूर जानना—दूरदर्शी समझना। वह अपने को बहुत दूर (की बात सोचने वाला) जानता है।

आप को भूलना—(आपा भूलना) बेहोश या मदहोश हो जाना। तुच्छ मनुष्य धनवान होने पर आप को भूल जाते हैं। (२) मैं तो अपने आप को भूल गया था, आज मालूम हुआ कि मैं इस योग्य हूँ।

आपस में गिरह पड़ना—दिलों में गांठ पड़ना। अब वे मित्र नहीं हैं, अब तो आपस में गिरह पड़ी हुई है।

आपा खोना—(१) अहंकार त्याग। ऐसी बानी बोलिये मन का आपा खोय, औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय। (२) अपने को नष्ट कर देना। चूना पान के साथ होकर आपा खो देता है। (३) मर मिटना। एक हिन्दू औरत की रक्षा में उसने आपा खो दिया। (४) अपनी विशेषता या अस्तित्व त्याग देना। हल्दी और चूना मिलकर आपा खोकर लाल हो जाते हैं।

आपा तजना—(१) आत्म-भाव का त्याग। आपा तजौ औ हरि को भजौ। (२) अहंकार छोड़ना। आपा तजै सो हरि का होय।

आपा धापी पड़ना या होना—(देखो आप आप की पड़ना)।

आपे में आना—(१) सचेत होना। इस समय वह आपे में आ गया है बातें करनी हैं तो कर लो। (२) दम लेना। जरा आपे में आलूँ तो बातें करूँ। (३) सँभालना। इतनी हानि उठा कर आपे में आये तो क्या आये।

आपे से बाहर होना—बेकाबू या बदहवास होना। (१) कितना भी क्रोध हो आपे से बाहर न होना चाहिये। (२) ऐसी वैसी छोकरी के लिये इतना आपे से बाहर हो गये। आपे से हो गया क्यों बाहर? आग लग जाय तेरी हस्ती पर। आपने तो किया आपे से बाहर हमको। क्रोध शोक या इश्क में लोग आपे से बाहर हो जाते हैं।

आफ़त का परकाला
आफ़त का टुकड़ा } —(१) फ़ुर्तीला, होशियार। लड़का क्या है आफ़त का परकाला है, आनन फ़ानन में काम कर लाता है। (२) अटूट प्रयत्न करने वाला। (३) उपद्रवी, शरारत करने वाला। नाकों दम किये देता है ये तो आफ़त का टुकड़ा है।

आफ़त झेलना, उठाना—(१) तकलीफ़ सहना। स्वतन्त्रता के लिये प्रताप को बड़ी आफतें झेलनी पड़ीं। (२) ऊधम मचाना। डाकुओं ने तो चारों ओर आफ़त उठा (मचा) रखी है।

आफ़त मचाना— (१) बेचैन करना। दिल ने आफ़त मचा रखी है बहुत, इसको तस्कीन कभी दे जाना। (२) उतावली (जल्दी) मचाना। आफ़त क्यों मचाते हो, खाना तो खालूँ, अभी आता हूँ।

आफ़त में पड़ना
आफ़त मोल लेना
आफ़त सिर पर लेना } —(१) व्यर्थ झगड़े में पड़ना। मैंने व्यर्थ में यह आफ़त सिरपर ली, (२) खर्च कर झंझट लेना। घोड़ा क्या लिया आफ़त मोल ले ली किसी को पास नहीं फटकने देता। (३) नुक़सान देह जिम्मेदारी। वायदा क्या किया आफ़त सिर पर लेली।

आब आब होना—(१) पिघल जाना। मेरी ऐसी गिरी हुई हालत देख कर वह तो आब आब हो गया। (२) शर्मिन्दा होना। जब मैंने इसे जुआ खेलता पकड़ लिया तो वह आब आब हो गया।

आब आब करना—आब आब कर मर गया सिरहाने रखा पानी।

आब आना—रौनक आना। अब तो चेहरे पर आब आ गई है।

आब चढ़ाना—पालिश करना, चिकनाना, चमकाना, तेज करना, साफ़ करना।

आबदाना उठना—(१) जीविका या संयोग समाप्त होना। दिल्ली से आबदाना उठा यहाँ आ गये। (२) मौत आना। बस अब दुनिया से हमारा आबदाना उठ गया है (आबदाना नहीं रहा है भी प्र०)

आब देना— चमकाना। बर्तनों पर घिस कर आब दो।

आबरू खाक में मिलाना, खोना— इज्जत बरबाद करना। उसने अपनी आबरू खाक में मिला दी।

आबरू पर पानी फिरना—इज्जत में बट्टा लगना। कुपुत्र से बाप की आबरू पर भी पानी फिर गया।

आबरू पैदा करना—कीर्ति प्राप्त करना, इज्जत बनाना। उसने खुद आबरू पैदा की है।

आबरू में बट्टा लगना या फरक़

आना—धब्बा लगना। पीछे चाहे छूट ही जायँ अब तो आबरू में बट्टा लग गया।

आ बला गले पड़—व्यर्थ में अपने सिर मुश्किल काम लेना। पहिले तो खुद चाहा कि आ बला गले पड़ अब जब काम मिल गया तो पछताते हो। **आ बैल मुझे मार**—भी प्रसिद्ध है।

आब हवा बिगड़ना—ऋतु या जलवायु में विकार होना। बहुत से बीमारों के जाने से अब मंसूरी की भी आबहवा बिगड़ गई (खराब हो गई) है।

आये गये होना—समाप्त होना। कितने जीव प्रति दिन आये गये हो जाते हैं। स्त्री लि० आई गई होना।

आराम में आना—दुख कम होना। पीठ के नीचे जब अंगीठी जलाई तब जरा आराम आया।

आवा का आवा बिगड़ना—सब के सब बिगड़ना। किसी का तो एक दो बिगड़ता है इसका अवा का अवा बिगड़ गया। क्लास की सारी लड़कियें ही शैतान हैं यानी आवा का आवा ही बिगड़ा हुआ है।

आराम में होना—(१) सोना। नवाब साहब इस वक्त आराम में हैं सुबह तशरीफ़ लाइये। (२) सुखी होना। अब तो मैं बहुत आराम में हूँ, पहिले से आधा भी दर्द नहीं।

आराम से पाँव फैलाना—सुख की नींद में सोना, निश्चित होना। छः दिन के बाद आज आराम से पाँव फैलाये हैं नहीं तो दिन रात इतना व्यस्त था, कोई हद नहीं।

आराम होना—(१) सुविधा होना। मोटर से बड़े आराम हैं चाहे जब चल दो। (२) लाभ होना। मुझे इस दवा से आराम हुआ है। (३) निरोग होना। छः महीने में आराम हुआ।

आ लेना—पकड़ना या आघात करना। हिरन पानी पी रहा था कि बाघ ने आ लिया।

आवाज उठाना, ऊँची करना—(१) आंदोलन करना। कांग्रेस ने आज़ादी के लिये आवाज़ उठाई। (२) विरुद्ध खड़ा होना। तलाक़ बिल के लिये बहुत से लोग (खिलाफ़) आवाज उठा रहे हैं।

आवाज़ (ज़ें) कसना—(१) ताने मारना, उपालम्भ देना। मेरा क्या दोष है जो आवाज कसते हो। (२) व्यंग छोड़ना। चुभती कहना। क्यों बेचारे को आवाज़ें कस कर तंग करते हो। (३) किसी की बहू बेटी पर आवाज़ मत कसो।

आवाज़ देना, मारना, लगाना—पुकारना। जरा आवाज़ तो दो कि

आजाय। ऐसे आवाज मारो कि सुनले। रास्ते चलते आवाज़ लगाना असभ्यता है।

आवाज़ पड़ना, बैठना—बुलाहट, पुकार। मुझे आवाज़ पड़े तो कह देना बाज़ार गया है। (२) गला बैठना। रात भर गाने से आवाज़ पड़ (बैठ) गई है।

आवाज़ पर लगना—आवाज़ का इशारा समझना, और उस पर चलना। कुत्ता आवाज़ पर लगा हुआ है।

आस तकना—(१)आसरा देखना। भाई की क्या आसतक रहे (भरोसा) हो वह कुछ नहीं देगा। (२) दूसरे की आशा में आप कुछ न करना। आस बिरानी जो तके जोयत ही मर जाय।

आसबंधना—(१) इंतजार करना। खेतियाँ जिनकी खड़ी हैं सूखी, आस वो बांधे बैठे हैं मेह की। (२) तसल्ली होना। रोगी की हालत सुधर रही है, इससे कुछ तो आस बँधती है।

आस(रा) होना—(१) उम्मीद। जब तक साँस तब तक आस। (२) सहारा होना। है केवल इक आस तुम्हारी। (३) गर्भ रहना। तुम्हारी बहू को कुछ आस है? (अंक २ अर्थ में आसरा का प्रयोग होता है)।

आसन उखड़ना—(१) जमने न पाना, अपने स्थान से हिल जाना। यहाँ से अच्छे अच्छों के आसन उखड़ (हिल) गये। (३) घोड़ा इतने जोर से दौड़ा कि सवार का आसन उखड़ गया।

आसन उठना—स्थान छूटना। कल हमारा आसन यहाँ से उठ जायगा।

आसन करना—(१) योग के नियमानुसार शरीर को मोड़ना, तोड़ना, मरोड़ना। तुम्हें शीर्षासन करना चाहिये। (२) ठहरना। इस कोठरी में महात्मा जी आसन किये हुए हैं।

आसन कसना—(१) अंगों को तोड़ मरोड़ कर बैठना (२) कुश्ती में दाव पेंच में दाब कर बैठना। उसने पहलवान की गर्दन पर ऐसा आस कसा कि बिचारा हिल भी न सका।

आसन जमाना—(१) निश्चल बैठना। उठो! यहाँ क्यों आसन जमाया है, कुछ काम करो, जो होना था होगया। (२) एक स्थान पर रहना। बरसात में यहाँ आसन जमेगा। (३) हमने तो तेरी आस पर आसन जमा लिया (४) स्थायी (प्रभाव) होना। अब कुछ डर नहीं अब तो हमारा आसन वहाँ जम गया है। . . . . .

आसन डोलना—(१) चित्त चलायमान होना। रुपये के लोभ से तो महात्माओं का भी आसन डोल जाता है। (२) भय से हिलजाना। काँप जाना। विश्वामित्र के तप से इन्द्र का आसन डोल गया। (३) दिल पर असर होना। दिल हिल जाना। भक्तों पर अत्याचार देख भगवान का आसन डोल उठता है। (४) दया आना। निरपराधों पर जुल्म देख कर भी भगवान का आसन नहीं डोलता ?

आसन तले आना—क़ाबू में आना, अधीन होना। मेरे आसन तले आगये तब तो मज़ा चखा दूँगा।

आसनदेना—(१)आदर से बैठाना (२) श्रेष्ठ स्थान देना। सभा में सब को यथा योग्य आसन दो। अर्ध सिंहासन आसन देही।

आसन बाँधना—दोनो जाँघों के बीच दबा लेना। जाँघों से जकड़ना।

आसन लगाना—(१)मतलब पूरा करने के लिये अड़ बैठना। (२) ठहरना। (३) बिछौना बिछाना। (४) आसन मारना। (५) जमकर बैठना। धूनी भी रमाली है आसन लगा लिया है।

आसन पाटी लेकर पड़ना—दुःख या क्रोध प्रकट करने के लिये बिना खाये पीये, खूब आडम्बर के साथ (या साधारणतया) खाट पर पड़ना। कैकेयी रामचन्द्र जी के राज्यतिलक को सुनकर आसन पाटी लेकर पड़ रही।

आसमान के तारे तोड़ना—देखो आकाश के तारे तोड़ लाना।

आसमान जमीन के कुलावे मिलाना—बढ़ बढ़ कर बातें करना तुमने उसकी प्रशंसा में आसमान और जमीन के कुलावे मिला दिये।

आसमान जमीन एक कर देना—आफ़त ढाना। अगर सुन लिया उन्होंने भी यूँ ही, एक कर देंगे आसमाँ और ज़मीं। (२) बहुत यत्न करना। मैंने उस का पता लगाने में आसमान जमीन एक कर दिया।

आसमान जमीन का अंतर—बहुत फ़र्क़। दोनों के स्वभाव में आसमान और ज़मीन का अंतर है।

आसमान टूट पड़ना—(१) यकायक विपत्ति पड़ना। (२) भयंकर घटना होना। खुदा के वास्ते इतना तो झूठ मत बोलो, कहीं न टूट पड़े आसमान कोठे पर। (२) तुम जो गुस्से से मुझे देखते हो। आसमाँ मुझपै टूट पड़ता है।

आसमान ताकना झाँकना—अभिमान से सिर ऊपर उठाना।

वह तो आसमान ताकता हुआ सड़क पर चलता है।

आसमान दिखाना - कुश्ती में चित्त करना। पछाड़ना। दोनों पहलवानों में से किसी ने किसी को आसमान नहीं दिखाया। (आसमान के तारे गिनवाना भी प्रचलित है)

आसमान पर उड़ना—(१) इतराना। इतने अधिकार से ही आसमान पर (में) उड़ने लगे। (२) शक्ति से बाहर काम का संकल्प करना। क्यों आसमान पर उड़ते हो तुम्हारा तो बाप भी यह नहीं कर सकता।

आसमान पर क़दम रखना—बड़ा समझना। मैं न कहूँगा क्योंकि अब वह आसमान पर क़दम रखने लगे हैं।

आसमान पर चढ़ना—बहुत घमंड करना। ऐसा कौन सा कार्य कर दिखाया है जो आसमान पर चढ़े जाते हो। उनका दिमाग़ तो आजकल आसमान पर चढ़ा हुआ है, वे क्यों बात करने लगे।

आसमान पर चढ़ाना—(१) ख़ूब प्रशंसा करना, बढ़ावा देना। लोगों ने तो उन्हें एक दम आसमान पर ही चढ़ा दिया (२) झूठ मूठ प्रशंसा करके फुला देना। तारीफ के पुल बाँध देना। क्यों उसे आसमान पर चढ़ा कर बिगाड़ते हो ?

आसमान से गिरना—(१) अनायास मिलना। रुपये तो मेहनत से मिलते हैं कहीं भी आसमान से नहीं गिरते (बरसते)। (२) आपसे आप आ जाना। अगर तुम इसे नहीं लाये तो क्या यह आसमान से गिरी (टपकी) है। (३) करोड़ पति आदमी था परन्तु, बिचारे को चान्दी के घाटे ने एक दम आसमान से गिरा दिया।

आसमान से बातें करना, टकराना, टक्कर लेना—(देखो आकाश से बातें करना)।

आसमानी पिलाना—शराब पिलाना।

आसमान पर थूकना—श्रेष्ठ मनुष्य की बदनामी करना स्वयं की बदनामी करना है। गांधी जी को जो बुरा कहते हैं वे आसमान पर थूकते हैं।

आसमान फट पड़ना—प्रलय होना। मैं क्यों गाली देती, राम राम, आसमान फट पड़े जो मैंने गाली दी हो तो।

आसमान में थेगली लगाना—जहाँ कोई या कुछ न जा सके वहाँ पहुँचना।

आसमान में छेद करना—जो काम किसी से न हो सके उसे कर

डालना। बड़ा ही चतुर है आसमान में भी थेगली लगा देता है। बड़े बड़े विद्वानों की ग़लती निकालना आसमान में छेद करना है।

आसमान में छेद हो जाना—बहुत वर्षा होना। वर्षा क्या हुई आज तो आसमान में छेद ही हो गये।

आसमान सिर पर उठाना—(१) खूब कोलाहल, आंदोलन या उपद्रव करना। ज़रा ज़रा सी बातों के लिये लोग आसमान सिर पर उठा लेते हैं।

आसमान सिर पर टूट पड़ना—(१) प्रथम तो दुकान में आग लगी ही थी तब तक यह और आसमान सिर पर टूट पड़ा। (२) इतना झूँठ मत बोलो कहीं आसमान...।

आसरा तकना—उम्मीद करना। मैं तो तुम्हारा ही आसरा ताकता हूँ तुम्हीं मेरे सहायक मित्र हो।

आसामी बनना—(देखो असामी बनाना)।

आस्तीन का साँप—बग़ल का बैरी, विभीषण, विश्वासघाती। चालबाज़ दोस्त। इसे दोस्त मत समझो आस्तीन का साँप है, यहाँ से सब भेद ले जाता है, किसी न किसी दिन नुकसान देगा।

आस्तीन में साँप पालना—बैरी का पोषण करना। इसे मत रखो, क्यों आस्तीन में साँप पालते हो, जो अपने बाप का न हुआ तुम्हारा क्या होगा।

आह पड़ना—शाप पड़ना बद दुआएँ पड़ना। तुम पर उस दुखिया की आह पड़ी है। (आह लेना भी इसी अर्थ में आता है) किसी की आह मत लो थोड़ी सी जिन्दगी है।

आह भर कर रह जाना—दिल मसोस कर रह जाना। चाह होने पर भी कुछ न कर सकना। मन मार कर रह जाना। मैं उसकी बेदर्दी देख कर आह भर कर रह गया, विवश था कुछ हाथ में तो थाही नहीं।

आह भरना, खींचना—ठंडी सांस भरना। उसके आह खींचने से मेरा कलेजा काँप गया।

इ

इक्के दुक्के—अकेले दुकेले । इक्के दुक्के डाकू को तो मैं ही मार गिराऊँगा ।

इज्जत अपने हाथ होना—मर्यादा और मान वश में होना । अपनी इज्जत अपने हाथ में है, भला काम करोगे बनेगी नहीं करोगे थू थू होगी ।

इज्जत उतारना या लेना—आबरू खराब करना । भले मानसों की इज्जत उतारने में उसे कुछ देर नहीं लगती ।

इज्जत करना—मान करना । बड़ों की इज्जत करना छोटों का कर्तव्य है ।

इज्जत खोना—आबरू गँवाना । उसने एक ही नीच काम करके अपनी आबरू गँवा दी ।

इज्जत गँवाना इज्जत खोना । थोड़े से लोभ में तुमने अपनी इज़्ज़त गँवा दी ।

इज्जत डुबोना—मर्यादा नष्ट करना, मान खोना । बुरे कामों में फँसकर तुमने पुरुषाओं की भी इज़्ज़त डुबो दी ।

इज़्ज़त देना—(१) इज्ज़त का नाश । (२) सम्मान करना । (१) इतने से रुपयों पर क्या मैं अपनी इज़्ज़त दे दूँगा (बेच दूँगा) । (२) बरात में सम्मिलित होकर आपने मुझे बड़ी इज़्ज़त दी ।

इज़्ज़त दो कौड़ी की करना—इज़्ज़त खराब करना । उसने अपनी इज़्ज़त दो कौड़ी की कर ली ।

इज़्ज़त पर पानी फेरना—इज़्ज़त खोना । क्यों अपनी इज़्ज़त पर पानी फेर रहे हो ।

इज़्ज़त बनाना या मिलाना—बड़ा ओहदा लेना । आजकल बिना खर्च किये इज़्ज़त नहीं बनती । ऐसा काम करो जिसमें इज़्ज़त मिले ।

इज़्ज़त बिगाड़ना—आबरू खराब करना । सरे बाज़ार तेरी इज़्ज़त न बिगाड़ी तो बात क्या ।

इज़्ज़त मिट्टी करना या होना—आबरू नाश करना । उसकी सारी इज़्ज़त मिट्टी हो गई । उसने अपने आप इज़्ज़त मिट्टी कर ली । इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी या खाक कर दी ।

इज्जत होना—आदर होना । उनकी सरकार में भी बड़ी इज़्ज़त होती है ।

इजलास पर चढ़ाना—मुकदमा करना । कचहरी तक पहुँचाना औरतों का इजलास पर चढ़ाना अच्छा नहीं ।

इधर (का) उधर करना—(१) तितर बितर करना, (२) हटना, (३) टाल-मटोल करना, (४) उलट

पुलट कर देना। (१) ज़रा सी चीज़ ढूँढ़ने में घर का सब सामान इधर का उधर कर दिया। (२) अब तक क्या माल उसके घर में रखा है सब इधर उधर कर दिया होगा। (३) देने में सब ही इधर उधर करते हैं। (४) मशीन के सारे पुरज़े इधर उधर कर दिये।

इधर उधर की बात—(१) उड़ती ख़बर अफ़वाह। (२) व्यर्थ की बात। (३) पक्ष विपक्ष की बात। (१) मुझे तुम्हारी इधर उधर की बात नहीं सुहाती। (२) इधर उधर की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिये। (३) इधर उधर की बात कान में पड़ ही जाती है।

इधर उधर की लगाना—चुगली खाना, कान भरना। उसने इधर उधर की लगा कर उन्हें मुझसे नाराज़ कर दिया।

इधर उधर की हाँकना—गप्प मारना, झूठ मूठ बकना। उसका क्या विश्वास वह तो इधर उधर की हाँका ही करता है।

इधर उधर में रहना—आवारा फिरना। वह दिन भर इधर उधर में रहता है।

इधर उधर रहना—पास में रहना, पीछे लगे रहना। हर वक्त सी० आई० डी० उसके इधर उधर रहती है।

इधर का उधर होना—उल्टा हो जाना। ज़रा सी बात के फेरने से सब मामला इधर का उधर हो गया।

इधर का होना (रहना) न उधर का—(१) किसी की तरफ़ का न रहना। (२) किसी काम का न रहना। (३) किसी ओर न होना। (१) न खुदा ही मिला न विसाले सनम न इधर के रहे न उधर के रहे। (२) पढ़ लिखकर वह इधर के हुए न उधर के। (३) मैं किसी का पक्ष नहीं लेता न मैं इधर का हूँ न उधर का।

इधर की उधर करना या लगाना—एक दूसरे का भेद देना, एक से दूसरे की बुराई करना। यह इधर की उधर और उधर की इधर लगाती रहती है। तुमने इधर की उधर लगाकर सब का मन पलट दिया।

इधर की दुनिया उधर होना—असम्भव का सम्भव होना, चाहे जो कुछ हो। यह मकान बनकर ही रहेगा चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाये।

इने गिने—(१) कुछ, थोड़े से ही। (२) चुने चुनाये। (३) गिने गिनाये। (१) इने गिने आदमी ही सत्यवादी होते हैं। (२) एसेम्बली

में इने गिने ही वक्ता हैं। (३) मेरे पास तो इने गिने मोती हैं।

इन तिलों तेल न होना—(१) बे रहम होना, या दूसरे के पटाव में न आना। (२) काम न सधना। (१) बस रहने भी दो यह तो कंजूस और निर्दय है पूरा, भला इन तिलों में तेल कहाँ, अनाथों के लिये भी चन्दा नहीं देता। (२) चलो नहीं झक मारते हो इन तिलों तेल नहीं।

इन्द्र का अखाड़ा होना—मकान ख़ूब सुसज्जित होना। उसका मकान तो इन्द्र का अखाड़ा हो रहा है।

इन्द्रायन का फल—देखने में अच्छा वास्तव में बुरा। सूरत हराम वह देखने में तो इन्द्रायन का फल है।

इल्लत कटना—झगड़ा चुकना या दूर होना। रुपये तो देने पड़े परन्तु इल्लत जल्दी ही कट गई।

इल्लत काटना—जल्दी ज्यों त्यों खतम करना। धीरे धीरे काम करो यों ही इल्लत मत काटो।

इल्लत लगना—व्यर्थ का या कठिन काम सर पर होना। मेरे पीछे तो बाल बच्चों की इल्लत लगी है कहीं आ जा भी तो नहीं सकता।

इस कान सुनना उस कान उड़ा देना—ध्यान देकर न सुनना। कहने के अनुसार काम न करना या टाल देना। (१) यहाँ तो कुछ मतलब ही नहीं इस कान सुनी उस कान उड़ा दी हमें क्या ज़रूरत कि ग़ौर से सुने। (२) तुमको कितना भी समझाया जाये लेकिन व्यर्थ, कहने के अनुसार काम नहीं करते इस कान सुनी उस कान उड़ा दी।

इस पर न भूलना—इस पर घमंड या भरोसा न करना। इस पर न भूलना कि तुम धनवान हो, मैं सरे बाज़ार पीटूँगा।

इस (बात) पर न जाओ—(१) यह मत सोचो। इस पर न जाओ कि भला है, अच्छे अच्छे छिप छिप कर वहीं जाते हैं। (२) इस पर घमंड या विश्वास न करो। इस पर न जाना चाहिये है वर्तमान क्या, लड़की के लिये देखो कि लड़का भी योग्य है? जाने से भी क्या फायदा इस बात पर जनाब, जो आज लखपती हैं कल दिवालिये वही।

इस (बात) पर खाक डालो या पत्थर मारो—इसको जाने दो। इसका जिक्र न करो। अजी क्यों बार बार कह कह कर दिल खराब करते हो, खाक डालो इस बात पर जो हुआ सो हुआ।

इस (बात) पर मरता है या जान देता है—इस पर आशिक है या

न्यौछावर है। मैं तो तुम्हारी इन्हीं मीठी बातों पर मरता हूँ। हम इस पै जान देते हैं वो देखते तो हैं।

इससे क्या पूरा पड़ेगा—इससे काम पूरा न होगा। इतने से क्या पूरा पड़ेगा भी प्रचलित है। इससे क्या पूरा पड़ेगा आखिर इतना सा साग और दस आदमी।

ई

ईंट का घर मिट्टी करना—घर बरबाद करना। मनसूबे खराब करना। शराब के पीछे उसने ईंट का घर मिट्टी कर दिया। तुम्हारी बातों ने हमारा सारा ईंट का घर मिट्टी कर दिया।

ईंट तक बिकवाना—सब कुछ ले लेना। उसने अपने ऋण की वसूली में ईंट तक बिकवा दी।

ईंट से ईंट बजाना—फूट डालकर नाशकारी लड़ाई करना। घबराते क्यों हो मैं दोनों की ईंट से ईंट बजा दूँगा तब चैन लूँगा।

ईद का चाँद देखना—माशूका का मुँह देखना। हम तो रोज ईद का चाँद देखते हैं तब रोजा खुलता है।

ईद के पीछे टर—वक्त पर काम न हुआ तो फिर क्या लाभ। अभी कर करा दो नहीं फिर तो ईद के पीछे टर है।

ईमान काँपना—डरना। आत्मा से अस्वीकार होना। यों कुछ भी कहला दो, परन्तु गंगा जल उठाने में तो मेरा ईमान काँपता है।

ईमान का सौदा—कम नफे पर सौदा बेचना। विश्वास का काम। भाई! मेरे यहाँ ईमान का सौदा है दो पैसा रुपया से ज्यादा तो लेता ही नहीं। यहाँ तो ईमान का सौदा है चाहे ले या न ले।

ईमान की बात कहना—सच कहना। भाई मैं तो अदालत में ईमान की बात कहूँगा। ईमान की जो बात हो ईमान से कहो।

ईमान डिगना या डोलना—दिल में बेईमानी आ जाना। उसका तो दस रुपल्ली पर ईमान डिग गया।

ईमान देना—सत्य छोड़ना। धर्म विरुद्ध कार्य करना। गुरु गोविन्द के लड़कों ने जान दी, पर ईमान न दिया।

ईमान बगल में दबाना—बेईमानी करना। उनसे चाहे जितना झूठ बुलवालो ईमान बगल में दिये रहते हैं।

ईमान बह जाना—धर्म नष्ट होना। जाहिद शराब पीने से काफ़िर हुआ

मैं क्यों ? क्या डेढ़ चुल्लू पानी में ईमान बह गया ?

ईमान बेचना—सत्य व्यवहार करना। रुपये के पीछे सब कुछ नीचता करना। जान वेची है ईमान नहीं वेचा है।

ईमान में फ़र्क़ आना— धर्म घटना। वह तो देने से इन्कार कर गया, उसके ईमान में फर्क आ गया।

उ

उँगली उठाना या उठना—किसी की ओर संकेत करना। बुरा कहना। दोष देना तुमसे प्रेम करने पर तो मुझ पर लोगों की उँगली उठने लगी। कौन उँगली उठा सकता है मैं उसका मुँह तोड़ दूँ। मजाल है मेरे होते तुम पर कोई उँगली भी उठा सके।

उँगली काटना— उँगली दाँत से काटना— अचम्भे में पड़ना। ज़रा इसका स्वाद चखो दाँत से उँगली काटने लगोगे।

उँगली पर नाचना—अपने वश में करना। आजकल के बाबू अपनी औरतों की उँगलियों पर नाचते हैं।

उँगली पर नचाना—हैरान करना। क्या समझते हो उँगलियों पर नचा दूँगा, अभी तो एक ही मुकदमा लगा है सो पंजों के बल चलना पड़ रहा है।

उँगली रखना—दोष दिखाना। ऐसा काम करो जो कोई उँगली न रख सके।

उँगली लगाना—छूना। मारना। थोड़ा सा परिश्रम करना। मेरे होते हुये तुम्हें कोई उँगली नहीं लगा सकता। आप तो किसी काम में उँगली भी नहीं लगाते। तुम घर के किसी भी काम में उँगली लगाते हो ?

उँगली करना—परेशान करना। क्यों करते कराते उँगली किये जाते हो।

उँगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ना—थोड़ा सा सहारा पाकर और ज्यादा की इच्छा करना या पा लेना। भाई ! उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ा जाता है अब ज़रा कोठरी मिल गई है धीरे धीरे दालान भी हथिया लेंगे।

उखड़ी उखड़ी बातें करना—बे रुखी बात करना। मेरी सूरत देखते ही वह कुछ उखड़ी उखड़ी सी बातें करने लगा।

उगल उगल के खाना—बिना इच्छा और भूख के खाना। अगर भूख नहीं है तो छोड़ दो उगल उगल कर क्यों खाते हो।

उगलना (पड़ना)—माल वापिस देना। बहुत दिनों से रुपये बचाये बैठे थे नालिश करते ही सारा माल उगलना पड़ा।

उगलना (देना)—भेद खोल देना। पुलिस का डंडा पड़ते ही उसने सब कुछ उगल दिया।

उछल कूद करना—प्रसन्न होना। बढ़ बढ़ कर बातें करना। अजी होली के दिन बड़ी उछल कूद होती है। यह तो बड़ी उछल कूद करते थे अब क्यों चुप्पी साध गये।

उछल पड़ना—(१) अत्यन्त प्रसन्नता से उछल पड़ना। लाटरी आने की खबर सुनते ही वह एक दम उछल पड़ा। (२) गुस्से में उछल पड़ना। जालिमों के जुल्म देखते ही वह उछल पड़ा और तलवार निकाल ली।

उजड़ा घर बसना—विवाह होना। निःसन्तान के लड़का होना। उसका विवाह हो गया यह अच्छा हुआ उस बेचारे का उजड़ा घर बस गया।

उजला मुँह करना वा होना—बड़प्पन हासिल करना। सुपात्र लड़का अपने घर का उजला मुँह करता है। चोर का पता चल जाने से तो उस बेचारे का उजला मुँह हो गया।

उठखड़ा होना—चलने को तैय्यार होना। बीमार का अच्छा होना। इतनी सुनते ही वह उठ खड़ा हुआ। अब तो बहुत अच्छा हूँ दो महीने में उठ कर खड़ा हुआ हूँ।

उठ जाना—(१) मर जाना। (२) खर्च हो जाना। (३) खत्म हो जाना। (१) ऐसे उत्पाती का इस पृथ्वी से उठ जाना ही अच्छा है। (२) जो कुछ पास पल्ले था वह सब इसकी बीमारी में उठ गया। (३) अगर एक बार उसके अँगूठा, दस्तखत ले लिये जाते तो यह सारा झगडा ही उठ जाता।

उठती कोंपल—युवा। खिलती कली। बूटा सा है कद उसका और चाल में छल बल है। हो क्यों न बहार उस पर बढती हुई कोंपल है।

उठती जवानी—नव यौवन। उठती जवानी पाप की निशानी। उठती जवानी में हमने भी यही किया था।

उठते बैठते—हर घड़ी। उठते बैठते उनकी याद नहीं भूलती। ज़रा उठते बैठते इसका काम भी कर दिया करो। उठते बैठते पहुँच

ही जायेंगे। उठते बैठते रोका सब को सोते जागते टोका सबको।

उठना बैठना—आना जाना। अगर बुरी जगह उठना बैठना रखते हो तो एक दिन पछताओगे। मेरा अब वहाँ उठना बैठना नहीं है।

उठा रखना—बाकी रखना। मैं अपनी तरफ़ से कुछ उठा न रखूँगा। सवा रुपया उस देवता का नाम का भी उठा रखना।

उड़ आना—बहुत जल्द आना। इतनी जल्दी वहाँ से उड़ आये मैं देखता ही रह गया।

उड़ चलना—(१) भाग जाना (२) तेज़ दौड़ना। (३) स्वादिष्ट होना। (४) शोभा पाना। (५) घमण्ड करना। (१) यहाँ से उठ चलो नहीं तो पकड़े जाओगे। (२) एड़ लगाते ही घोड़ा उड़ चला। (३) पोदीने की चटनी से रसोई उड़ चली (४) सब्ज़ साड़ी पहनते ही वह उड़ चली। (५) छोटे आदमी थोड़े ही से उड़ चलते हैं।

उड़न छू होना—भाग जाना। वह रुपया उठाते ही उड़न छू हो गया।

उड़ता होना—भाग जाना। वह तो रुपये लेकर उड़ता हुआ, उड़ता बना मैं तो टापता ही रह गया।

उड़ती ख़बर—अनिश्चित बात। अफ़वाह। उड़ती ख़बर सुनी है कि महात्मा जी यहाँ आ रहे हैं।

उड़ती चिड़िया पहचानना—दिल की जानना। जनाब मुझे क्या चलाते हो मैं उड़ती चिड़या को पहचानता हूँ।

उड़ा रखना—मशहूर कर देना। लोगों ने बाज़ार लूटने की झूठी ख़बर उड़ा रखी है।

उड़ान भरना—बहुत दूर दूर तक आना जाना। ऐंठना।

उड़ान मारना—उड़ान भरना। आज कल तो बड़ी दूर दूर की उड़ान मार रहे हो कभी दिल्ली कभी कलकत्ता। दो कौड़ी की चीज़ के लिये क्यों इतनी उड़ान मारते हो।

उतर कर—कुछ कम। इससे उतर कर वह चालाक है।

उतार चढ़ाव बताना—बहकाना। धोखा देना, ऊँच नीच समझाना। बहुतेरे जिन्दगी के उतार चढ़ाव बताये मगर उसकी समझ में नहीं बैठा। उसने बहुतेरे उतार चढ़ाव बताये पर मैं सावधान ही रहा।

उतारू होना—तंग करना, छेड़ना वह तो लड़ने के लिये उतारू हो रहा है।

उत्तम मध्यम कहना—बुरा भला कहना। बहुत कुछ उत्तम मध्यम कहा पर उसपर असर नहीं हुआ।

उथल पुथल करना—उलट पलट

देना। बच्चे से चीज़ मत मंगाओ यह सब उथल पुथल कर देगा।

उदय से अस्त लौं—सारी पृथ्वी पर। पहले सूर्य वंशी राजाओं का उदय से अस्तलौं राज्य हो चुका हैं। अरब खरब लौं द्रव्य है। उदय अस्त लौं राज।

उधर का चाला नहीं—उधर जाने को दिन अच्छा नहीं। आज उधर का चाला नहीं है। यदि जाओगे तो नुकसान होगा, इसलिये कल जाना चाला है।

उधार खाये बैठना—किसी उम्मेद में दिन गुज़ारते रहना। हम तो आज के लिये ही उधार खाये बैठे थे।

उधेड़ बुन—सोच विचार। आज किस उधेड़ बुन में लग रहे हो या पड़े हो।

उन्नीस बिस्वे—कुछ ही कम। यह बात उन्नीस बिस्वे ठीक है।

उन्नीस बीस होना—बहुत थोड़ा कम होना। उन्नीस बीस भले ही हो जाय ज़्यादा फर्क़ नहीं हो सकता।

उन्नीस बीस का फ़र्क होना—बहुत थोड़ा फर्क़ होना। दोनों एक ही हैं उन्नीस बीस का फर्क़ भले ही हो।

उपरी, उपरा—एक दूसरे से बढ़ जाने की इच्छा। इन दोनों दोस्तों में क्लास में प्रथम आने की उपरी उपरा चल रही है।

उफन जाना या पड़ना—(१) गुस्से में आजाना। जरासी बात में उफन गये धैर्य तो रखते शायद वह वैसे ही मान जाता। (२) घमंड में आजाना। ओछे लोग दो पैसे पास होते ही उफन पड़ते हैं।

उभर जाना - हालत अच्छी होना। अबतो उभर गये हैं पहिले तो बेचारे बहुत ही गरीब थे।

उभर चलना—(१) अब तो वह कुछ उभर चली है। (२) जरा सा पढ़ कर इतने उभर चले कि बात भी नहीं सुनते।

उभार देना—(१) बहका देना। तुम्हें पिता के खिलाफ़ किसने उभार दिया। (२) उकसा देना, भड़का देना। तुमने जो मेरे भाई को उभार दिया तुम्हारे क्या हाथ आया?

उभार लाना—चुरा लाना। उठा लाना। वैसे नहीं देगा तो यार उभार कर ही ले आवेंगे।

उभार लेना—उछाल लेना। आदमी पानी में तीन बार उभार लेने के बाद डूबता है।

उमड़ना घुमड़ना—चारों तरफ़ छाना। आज बादल खूब उमड़ घुमड़ रहे हैं। उमड़ि घुमड़ि घन बरसन लागे।

उमर के दिन भरना—दुख से

जीवन काटना। ग़रीबों का क्या है उमर के दिन भरना है।

उमर भर का पट्टा लिखाना—सर्वदा के लिये अधिकार प्राप्त करना। उमर भर का पट्टा नहीं लिखाया है अब तुम कमाने लायक हो अपना खर्च खुद चलाओ।

उमर भर की रोटियाँ सीधी कर लेना—उमर भर के खाने पीने को निकाल लेना। लोग एक बार रियासत में नौकर होने से उमर भर की रोटियाँ सीधी कर लेते हैं।

उलझन में पड़ना—फेर में आना। उसकी इस बात से मैं बड़ी उलझन में पड़ गया।

उलट पड़ना—नाराज़ होना। मैंने तो भलाई की कही और वह उलटे मुझ पर ही उलट पड़े।

उलटे पाँव लौटना या वापिस जाना—फौरन लौटना। मैं जरा भी नहीं ठहरा तुरन्त उलटे पाँव लौटा।

उलट पेच की बात करना—घुमा फिरा कर बात करना। इतनी उलट पेच की बातें क्यों करते हो साफ़ साफ़ कहो।

उलटा जमाना—खोटा ज़माना। आजकल उलटा जमाना है कोई किसी को कुछ कह तो दे। आजकल उलटा जमाना है औरतों के भी चार चार विवाह होने लगे।

उलटा तवा—अत्यन्त काला। शकल तो देखो जैसे उलटा तवा मिज़ाज़ का कुछ ठिकाना ही नहीं। किसी वस्तु के लिये बहुत परिश्रम करना।

उलटी गंगा बहाना—जो कभी न हुआ हो उसे करना। शूद्रों को ब्राह्मण बनाना उलटी गंगा बहाना है। कहीं ऐसा हो सकता है? उनकी लड़की हमारे घर में ब्याही जाय यह तो उल्टी गंगा बहाना है।

उलटी छुरी से काटना—अत्यन्त दुख देना। तुम तो मेरे अगले जन्म के वैरी हो ख़ूब उल्टी छुरी से काटे जाओ।

उलटी माला फेरना—अहित चाहना। उसने मुझे बहुत सताया है मैं तो उसकी उलटी माला फेरता हूँ।

उलटे मुँह गिरना—दूसरों को नीचा दिखाने के स्थान पर स्वयं नीचा देखना। मुझे तो क्या निकलवाने की कोशिश कर रहे थे हज़रत खुद ही उलटे मुँह गिरे।

उलटे छुरे से मूँड़ना—बेवकूफ बनाना। लोगों को ख़ूब उलटे छूरे से मूंडते हो ऐसा कोई नुसख़ा हमें भी बतला दो।

उलटा सीधा—भला बुरा। उन्होंने उलटा सीधा कहना शुरू किया जब मुझे भी बोलना पड़ा। जैसा मुझसे

उलटा सीधा सीना आता है सी दूँगी।

उलटी खोपड़ी—मूर्ख। यह भी उलटी खोपड़ी का आदमी है कहो कुछ समझे कुछ।

उलटी पट्टी पढ़ाना—बहकाना। न मालूम लड़के को किसने ऐसी उलटी पट्टी पढ़ाई है कि वह मुझसे विरुद्ध रहता है।

उलटी सीधी सुनाना—खरी खोटी सुनाना, भला बुरा कहना मैंने भी वह उल्टी सीधी सुनाई कि क्या याद करेंगे?

उलटी टाँगें या आँतें गले में आ गईं—अपनी करनी से आप फँसना। उसे चोरी की सलाह देकर उल्टी आँतें गले में पड़ गईं।

उलटी साँस चलना—मरने के करीब। अब उसकी कोई उम्मेद नहीं उलटी साँस चल रही है।

उलटे पाँव फिरना—फौरन लौट जाना। वह मेरी शकल देखते ही उलटे पाँव फिर गया।

उल्लू का पट्ठा—मूर्ख। बड़ा उल्लू का पट्ठा है ज़रा से काम को कहो घंटों लगा देता है।

उल्लू फँसना—किसी को अपने चंगुल में फँसाना। ख़ूब उल्लू फँसाया है चाहे जो करवाये जाओ।

उल्लू सीधा करना—काम बनाना। इतना चालाक है अपना उल्लू सीधा कर लेता है और दूसरे के ज़रा काम नहीं आता।

उल्लू बनाना—मूर्ख बनाना। मुझे क्यों उल्लू बनाते हो मैं ख़ूब समझता हूँ।

उल्लू के से दीदे—बड़ी बड़ी और डरावनी आँखें। चीज़ तो पास की भी नहीं दिखती और दीदे उल्लू के से हैं।

उल्लू बोलना—उजाड़ होना। आज जहाँ इतनी चहल पहल है वहाँ एक समय (सिर्फ) उल्लू बोला करते थे।

उसका भी मुँह झुलस दो—उसे भी कुछ दे दिलाकर टालो। बहुत देर से माँग रहा है उसका भी मुंह झुलस दूँ।

उसका तेल जल चुका—समाप्त हुए। इनका तो तेल जल चुका।

उसका हिसाब हो गया—बस इनका हिसाब हो गया कल से नौकरी से अलग।

उस पर जान खोदी—उसकी चाह में मर मिटा। उस बेचारे ने उस पर जान खोदी पर प्रेम की नज़र भी न पासका।

ॐ

ऊँच नीच समझना (१) फायदा नुकसान सोचना। हर काम में ऊँच नीच खूब समझकर हाथ डालना चाहिये। (२) जिन्दगी के उतार चढ़ाव हेर फेर जानना। पड़े अपने अपने जो सब ऐश बीच न समझे जमाने की कुछ ऊँच नीच। (३) उचित अनुचित सोचना। जो मुख पर आता है कह डालते हो कुछ ऊँच नीच भी समझा करो। (४) मैं किसी को ऊँच नीच नहीं समझता, मेरी निगाहों में सब एकसे हैं।

ऊँच नीच समझना—उचित का ध्यान होना। अब ऊँच नीच सूझी है तब से क्या सो रहे थे।

ऊँच नीच सूझना—पूर्णतया सोच विचार लेना। मैंने ऊँचनीच सोचा तब ज्ञात हुआ कि सचमुच मेरी भूल थी।

ऊँच नीच सुनना—बुरी भली सुनना। मुझे क्या ज़रूरत पड़ी है कि मैं किसी की ऊँच नीच सुनूँ, मेरी ओर से कुछ किया करो। (२) मैं क्यों ऊँच नीच सुनूँ, नौकरी की भी है तो क्या गालियाँ सुनने के लिये।

ऊँचा नीचा सुनाना—बुरा भला कहना। फटकारना। मैंने उसे बहुत ऊँचा नीचा सुनाया, तब वह माना कि अपराध उसका ही था।

ऊँचा सुनना—कुछ बहरापन। जोर से कहने पर सुनना। जरा चिल्लाकर कहो मैं ऊँचा सुनता हूँ।

ऊँचा होना—(१) अधिकार, प्रतिष्ठा आदि में बड़ा होना। जिस मनुष्य ने जितनी अपने देश की सेवा की है वह उतना ही ऊँचा हो गया है। (२) अधिक होना। बताइये तो सही वह किस बात में ऊँचा है।

ऊँचे चढ़कर कहना—पुकार कर कहना। सब से कहना। ऊँचे चढ़ मीरा कहे कोई कह दे गिरधारी सों जाय।

ऊँचे चढ़ना—(१) देखो ऊँचा होना, (२) अभिमान करना। अजी! वह तो अब बहुत ही ऊँचा चढ़ गया है, पुराने मित्रों से तो बातें भी नहीं करता।

ऊँचे नीचे पैर पड़ना—(१) बुरी आदतों में फँसना। बुरी संगति से बहुतों के पैर ऊँचे नीचे पड़ने लगते हैं। (२) शराब के नशे में पैर ऊँचे नीचे पड़ने लगते हैं।

ऊधम उठाना, मचाना, जोतना—शोरगुल करना। उपद्रव करना। मास्टर के जाते ही सारी क्लास ऊधम उठाने लगती है।

ऊपर ऊपर जाना—(१) व्यर्थ होना। मेरा कोसा ऊपर ऊपर नहीं जायगा। (२) बीच या नीचे की चीज़ छोड़ना। क्यों साहब! यहाँ आते भी हो तो ऊपर ही ऊपर चले जाते हो। (३) न ठहरना। ऊपर ही ऊपर आते हैं और चले जाते हैं घर में तो घड़ी भर भी नहीं ठहरते।

ऊपर से ऊपर खा जाना—चुपके से खुद खा जाना। हाकिमों तक तो बहुत कम (रिश्वत का) रुपया पहुँचता है, बाकी तो पेशकार वगैरा ऊपर ही ऊपर खा जाते हैं।

ऊपर से ऊपर लेना या ले लेना—पहिले ही ले लेना। तुम्हारे रुपये थे मैं दे देता ये क्या बात कि तुम उससे वसूल करके लाये और उन्हीं में से ऊपर ही ऊपर अपने रुपये ले लिये।

ऊपर ऊपर की—दिखावे की। मैं जानता हूँ ये केवल ऊपर ऊपर की बातें हैं। उनकी ऊपर ऊपर की दोस्ती है।

ऊपर का दम भरना—(१) ऊँचा साँस लेना। (२) दिखावटी प्रेम या सहानुभूति प्रकट करना। सब ऊपर का दम भरने वाले हैं, एन वक़्त पर कोई साथ नहीं देता।

ऊपर की आमदनी—इधर-उधर की कमाई। २५) मिलते हैं, हाँ ऊपर की आमदनी १००) है।

ऊपर की दोनों जाना—अंधा हो जाना। ऊपर की दोनों गईं हिय की गईं हेराय, कह कबीर चारों गईं तासों कहा बसाय।

ऊपर डालना—(१) जिम्मेदार बनाना। यह काम मेरे ऊपर मत डालो मैं नहीं कर सकूँगा। (२) बीच में डालकर, बहाने या पर्याय से कहना। मेरे ऊपर डालकर क्यों कहते हो, सीधे उसी को क्यों नहीं कह डालते।

ऊपर तले के—एक के बाद दूसरा। ऊपर तले के बच्चे हैं बीच में कोई नहीं मरा।

ऊपर तले होना—एक के बाद शीघ्र दूसरा व्याह। ऊपर तले हैं एक में से आये दूसरे में चले गये।

ऊपर वाला—(१) ईश्वर। ऊपरवाला सब के पाप पुण्य देखता है। (२) मालिक या अधिकारी। मैं आज्ञा नहीं दे सकता ऊपर वालों से पूछो। (३) बाहरी। मैं जो कुछ भी कमाकर लाता हूँ सब ऊपरवाले ही खा जाते हैं। (४) नौकर चाकर। काम करने वाले। घरवालों से अधिक ऊपर वालों की चिन्ता रहती है, क्योंकि उन्हें तो समय पर चुकाना (तनख़ाह देनी) पड़ती है,

घर में तो चाहे एक दिन भूखे भी सो रहें।

ऊपर होना (१) आगे बढ़ जाना। वह अब एक क्लास ऊपर हो गया है। (२) उत्तमतर होना। वह हमारे से किस बात में ऊपर है। (३) मान्य होना। आजकल तो उन्हीं की बात ऊपर रहती है।

ऊपर मढ़ना—(१) डालना। मेरे ऊपर यह अपराध मत मढ़ो। (२) ऋण मढ़ना। आप तो एशो आराम की जिन्दगी बिता गये लेकिन हमारे ऊपर तो हजारों रुपये मढ़ गये न! (३) जुर्माना या देनदारी होना। सारा नुकसान मेरे ऊपर मढ़ा गया।

ऋ

ऋण चढ़ना—कर्ज बढ़ना।

ऋण चढ़ाना—कर्ज बढ़ाना।

ऋण पटना, पटाना—कर्ज वसूल होना या वसूल कराना।

ऋण मढ़ना—बुरे पिता पुत्रों पर ऋण मढ़ जाते हैं।

ए

एक अंक या एक आंक—एक ही बात। दृढ़ निश्चय। मुख फेरि हँसैं सब राव रंक, तेहि धरै न पैहू एक अंक। एकै आँक मोर मन एहू, सीयराम पद सहज सनेहू।

एक आँख से देखना—बराबर का बर्ताव, एक सा समझना। मेरे लिये वे और आप दोनों एक से हैं, मैं दोनों को एक आँख से देखता हूँ।

एक आँख न भाना—बिलकुल, थोड़ी देर के लिये भी अच्छा न लगना। मुझे तो बहू के ये लच्छन एक आँख भी (क्षण भर भी) नहीं भाते।

एक एक करके—बारी बारी से। एक एक करके आओ तो मैं सब को पछाड़ दूँ।

एक एक के दो दो करना—(१) दूना लाभ लेना। उसकी दूकान से सौदा मत लिया करो वह तो एक एक के दो दो करता है। (२) एक काम के दो काम बना देना। तुम्हारी यह आदत है एक एक के दो दो कर देती हो नौकर विचारा कैसे जल्दी कर डाले, पहिले उसे एक कर लेने दो फिर दूसरे के लिये कहो। (३) व्यर्थ वक्त खोना मनसूबे ही बाँधना। तुम कुछ करते भी हो या योंही बैठे एक एक दो दो किया करते हो।

एक और एक ग्यारह होना—मिलकर बहुत शक्ति बढ़ जाना। भाई! एक और एक ग्यारह होते हैं, अब वे दोनों मिल गये हैं तो बहुत कुछ कर ही डालेंगे।

एक एक कोना छान मारना—सारे में ढूँढ़ लेना। मैंने तो घर का एक एक कोना छान मारा मुझे तो कहीं करछी मिली नहीं।

एक एक पग चलना दूभर होना—थकान या निर्बलता से चल न पाना। मेरी शक्ति नहीं है तुम्हीं जाओ, मुझे तो एक एक पग चलना अब दूभर हो रहा है।

एक कहूँ न दस सुनूँ—ना भाई मैं उनसे बात भी नहीं करूँगा, मैं न एक कहूँ न दस सुनूँ।

एक की दो कह लेना—दुगना बदला लेना (बातों में)। भाई! क्यों नाराज हो उसने एक ही बात तो कही है, तुम मुझे एक की दो कह लो।

एक की दस सुनाना—एक ताने, उपालम्भ के बदले में दस गुने ताने या दुखकर कड़े शब्द कहना। तुम मुझे एक की दस सुना दो मैं कब बुरा मानता हूँ।

एक जान करना—(१) दूसरे की भी अपनी सी दशा करना। (२) मरना और मारना। इस बार तुमने जरा भी गाली दी तो अपनी और तुम्हारी एक जान कर दूँगा, मुक्कों से जवाब दूँगा।

एक तरकस के तीर हैं—एक जान है—एक ही बात है—(ये सब ऐकार्थी हैं।)

एक दो तीन बोलना या होना—(१) नीलाम करना। उसका घर तो कल एक दो तीन हो गया। (२) काम आरम्भ करने का अंतिम क्षण, एक दो और तीन कहते ही दौड़ना शुरू कर देना। (३) दूर होना। चलो यहाँ से एक दो तीन हो जाओ।

एक टाँग खड़ा रहना—(१) काम पर तैयार रहना। नौकरी के वक्त मैं हर समय एक टाँग पर खड़ा रहता हूँ। (२) भक्ति व सेवा करना। मेरे लिये तो बेचारा एक टाँग पर खड़ा रहता है, अभी डाक्टर के अभी वैद्य के सब काम वही करता है।

एक डाल पर रहना—(१) बात न बदलना। शाखावलंबन करना। चुप तो तब हो सकता है जब कि वह एक डाल पर रहे, अभी कुछ कहता है जब उस बात में तर्क करते हैं तब तक दूसरी बात बदल जाता है। (२) स्थायित्व, मुस्तकिल मिजाजी। उसने एक डाल पर रहना तो सीखा ही नहीं आज पान वाले के यहाँ है तो कल परचूनिये का नौकर है।

एक न चलना—कोई युक्ति सफल न होना। कोई बात न मानी जाना। मेरे सामने उसकी एक (बात भी) नहीं चल सकती।

एक पर एक होना—एक से दूसरा बढ़ा हुआ होना। ये क्या धनवान हैं दुनिया में एक पर (एक से ज्यादा) एक धनवान भरे पड़े हैं।

एक बाज़ार बन्द होना—काना होना। उनका तो एक बाज़ार बन्द है वह क्या देखेंगे।

एक बात; एक जबान—(१) निश्चित, पक्का वायदा। मर्दों की एक बात होती है जब कह दिया है तो अंत तक निबाहूँगा। (एक जबान भी प्रचलित है)। (२) बँधे हुए दाम। निश्चित मूल्य जिससे कम ज्यादा न हो सके। उसके यहाँ एक बात ही है चाहे बूढ़ा खरीदे चाहे बच्चा। (३) सच्ची बात। हेर फेर मत करो, एक बात कहो क्या हुआ था ?

एक माँ बाप का होना—(१) मिल कर रहना। वह सब ऐसे रहते हैं जैसे एक माँ बाप के हों। (२) जबान में पक्के होना। अगर तुम एक माँ बाप के हो तो वायदा न टालना। (असली माँ बाप के होना इस अर्थ में अधिक प्रचलित है।)

एक बात, जबान होना—एक बात पर रहनेवाला होना।

एक मुँह होना, बोलना—सबकी एक राय। वे सबके सब एक ही मुँह बोलते हैं।

एक मुँह से कहना—एक की राय दूसरे से मिलना। जूरियों ने एक मुँह से उसे निर्दोष कहा।

एक लाठी से हाँकना—ऊँचे नीचे सबसे एक सा व्यवहार, सबको एक ही से दबाव में रखना। तुम योग्य, अयोग्य, बड़ा, छोटा कुछ नहीं देखते सबको एक लाठी हाँकते हो। गधे घोड़े एक लाठी हाँकते हो।

एक साँचे के ढले—शक्ल सूरत में एक। ये दोनों भाई एक ही साँचे के ढले हैं।

एक से एक—बढ़ बढ़कर। एक ते (से) एक महारणधीरा।

एक से इक्कीस होना, देना, करना—वृद्धि होना, फलना-फूलना। भगवान तुम्हें एक से इक्कीस करें। तुम मुझ भिखारी को एक देते हो ईश्वर तुम्हें इसके बदले में इक्कीस दे।

एक से दिन न रहना—हमेशा एक सी दशा न होना। दिन एक से नहीं रहते जब सुख के न रहे तो ये दुख के ही क्यों रहेंगे।

एक से दिन न जाना—दुख सुख

का स्थायी न होना। सब दिन जात न एक समान।

एक ही भाव तोलना—सबको समान समझना या देना। मैं तो सबको एक भाव तोलता हूँ, जो उन्हें दिया वही तुम्हें दे रहा हूँ।

एड़ देना वा लगाना—(१) घोड़े को एड़ी मार कर चलाना। एड़ लगाते ही घोड़ा हवा से बातें करने लग गया। (२) भले चंगे काम में बाधा पहुँचाना। तुम्हारे ही एड़ लगाने से मेरा काम बिगड़ गया। (३) लात मारना। ऐसे एड़ मत लगाओ बेचारी के कहीं जगह बेजगह ज्यादा न लग जाय।

एड़ी घिसना या रगड़ना—(१) दुख झेलकर मरना। चारपाई पर कौन पड़ कर मरे, कौन यों एड़ियाँ रगड़ कर मरे। (२) बहुत दौड़ धूप या यत्न करना। यहाँ से वहाँ भेजा अब फिर उसे वहाँ भेज रहे हो व्यर्थ में बेचारे की एड़ियाँ घिसाते हो, मैं कहती हूँ वह अब भी घर पर न मिलेगा।

ऐ

ऐंठ ऐंठ कर रह जाना—दिल मसोस कर बैठ रहना। बहुतेरा जी चाहता था कि उस समय तुम्हारी सहायता करते परन्तु बेबसी में ऐंठ ऐंठ कर रह जाना पड़ा।

ऐंठ जाना—(१) अकड़ कर मर जाना। इस साल इतनी जोर की सर्दी पड़ी है कि कितने ही भिखारी तो बेचारे रात में ही ऐंठ गये। (२) रूस जाना। जरा सी बात में ऐंठ जाते हो। हमें कुछ देकर भूल गये हो जो ऐंठे जा रहे हो।

ऐंठ लेना रखना—हथिया लेना, दबा रखना। इतना शैतान है कि सेठ के लड़के के पास जो चीज़ देखता है डरा धमकाकर झट ऐंठ लेता है।

ऐन-मैन—बिलकुल वैसा ही। ये तो ऐन-मैन महेश सा लड़का है।

ऐसा वैसा होना—नाश होना। तेरे घर के सब ऐसे वैसे हो जायें।

ऐसा वैसा न होना—विशेष होना। कोई ऐसा वैसा नहीं है पचीस लाख का आसामी है।

ऐसी तैसी करना—(१) इज्जत बिगाड़ना। तेरी तो ऐसी तैसी करके न छोड़ा तो नाम क्या, तू बहुत ऐंठता है। (२) अनादर करना। आह रे दिल तूने कैसी की, हत् तेरे दिल की ऐसी तैसी की।

ऐसी तैसी में जाना (१) कुछ भी हो चाहे नष्ट हो या और कुछ। जब साला कहना ही नहीं मानता तो

हमारी तरफ़ से ऐसी तैसी में जाय। (२) बारह गाँव का चौधरी अस्सी गाँव का राय, अपने कामन आवे तो ऐसी तैसी में जाय।

ऐसी कम तैसी—बच्चों को डराते समय कहते हैं। ठहर तो जा न मानेगा ले तेरी-ऐसी कम तैसी।

ऐसे ऐसे मेरी जेब में पड़े हैं—ऐसे लोगों की होशियारी और चालाकी मुझ पर नहीं चल सकती। ऐसे ऐसे तो मेरी जेब में पड़े हैं ये वेचारे क्या मुझे चकमा देकर हरायेंगे।

ऐसे कीड़े पड़ेंगे—बहुत बुरा हाल होगा। गरीबों का खून न पियो उन्हें दुख न दो नहीं तो ऐसे कीड़े पड़ेंगे के याद रखोगे।

ऐसे क्या कीड़े पड़े हैं—ऐसी क्या ग़रज है। ऐसे क्या कीड़े पड़े हैं जो मैं बार बार उनकी खुशामद करूँ और उनकी खोज में मारा मारा फिरूँ।

ऐसे भोले हो—बड़े चालाक हो। ऐसेही भोले हो जो रुपये छोड़ दोगे, मैं जानता हूँ पाई पाई वसूल करोगे।

ऐसे लड़के बहुत खिलाये हैं—कोई फुसला नहीं सकता। मुझे क्या बनाते हो मैंने ऐसे ऐसे लड़के बहुत खिलाए हैं। मैं तुम्हारी बातों में नहीं आ सकता।

ऐसे ही तीस मारखाँ हो—(१) हम जानते हैं तुम कुछ भी वीर नहीं हो। बड़े तीस मारखाँ बनते हैं, रात को जरा सा खटका सुनकर काँपने लगे। (२) ऐसे ही तीस मारखाँ हो जो सारी पुस्तक एक दिन में याद कर लोगे।

ओ

ओंठ काँपना—बहुत सर्दी से ओंठ काँपना। कुछ ओढ़ लो ओंठ काँप रहे हैं। (कभी कभी सर्दी के ही अर्थ में ओंठ फड़कना भी आता है)।

ओंठ काटना—क्रोध से ओंठ को दाँतों तले दबाना। नीच पुलिस वाले को वेचारे ताँगे वाले पर डंडे बरसाते देखकर वह ओंठ काटने लगा।

ओंठ चबाना—निरपराध पर अत्याचार देख जोश या क्रोध आ जाना। पहिले तो वह ओंठ ही चबाता रहा, जब रहा ही न गया तो बीच में कूद पड़ा, उसी का परिणाम यह सिर फूटा है।

ओंठ चाटना—जीभ का चटकारे लेना, स्वाद की लालसा। मिठाई बहुत ही बढ़िया थी हम तो अब तक ओंठ चाटते हैं।

ओंठ चिपकना—खूब मीठा होना। मीठे और सर्द हैं कि जरा नाम लिया, ओंठ चिपकते हैं अलग दाँत हैं कर कर बजते।

ओंठ तक न हिलना—मुख से आवाज न निकलना। चुप! ओंठ तक भी न हिले, नहीं तो गोली दाग़ दूँगा।

ओंठ फड़कना—गुस्से में ओठों का काँपना। मैं उस समय कुछ बोल नहीं सकता था नहीं तो ओठ तो मेरे भी फड़क रहे थे।

ओंठ मटकाना—कहने लायक बात को ओठों तक लाना फिर उचित अनुचित समझ कर न कहना। व्यर्थ ओंठ क्यों मटकाते हो कहना है तो कह ही डालो।

ओंठ मलना—दुखकर वचन कहने वालों का मुँह मसलना, मुँह तोड़ना। नीचे डालकर जिन ओठों में वह बुड़बुड़ा रहा था वही ओठ मसल दिये।

ओठों पर आना—थोड़ा सा भी कभी न कहना। तुम विश्वास रखो मेरे ओठों पर भी यह बात कभी न आवेगी किसी से कहना तो दूर रहा।

ओंठों पर लाना—आपकी बुराई तो मैं ओठों पर भी नहीं ला सकता मुख से कहना तो रहा दर किनार।

ओंठों में कहना—धीमे और अस्पष्ट स्वर में कहना। ओठों ही ओठों में कह गये होंगे मैंने तो सुना नहीं कि तुमने कुछ भी कहा था।

ओंठों से खाना—दाँत लगाने की आवश्यकता ही न होना। वह कह रहा था 'ओठों से खालो बढ़िया गज़क।'

ओंठों से टूटना—मुलायम या खस्ता होना। कचौरियें तो ओठों से टूटती हैं, इतनी बढ़िया हैं।

ओंठों में मुसकराना—ऐसी हँसी जो ओठों तक ही रहे। ओठों से हँसी का प्रकट होना। इस बात को सुनकर वे मुस्कराये जरूर परन्तु ओंठों ही में, वे मालूम।

ओंठ हिलाना—मुख से शब्द निकालना। टुक ओंठ हिलाऊँ तो कहता है 'न बक वे।' और पास जो बैठूँ तो कहता है 'सरक वे'।

ओंठों पर नाचना—(१) बहुत याद होना। सारा व्याकरण उसके ओठों पर नाचता है। (२) याद आना पर कह न पाना। देखो वह बात ओठों पर नाच रही है लेकिन कह नहीं पाता ऐसा ही कुछ नाम है......कि...।

ओखली में सर देना—जान बूझ कर झंझट में फँसना। पूरा दुख सहने को तैयार होना। अब जब ओखली में सर ही दे दिया तो

मूसलों से क्या डर, जो होगा देखा जायगा।

ओछी पूँजी–थोड़ा मूलधन। ओछी पूँजी से कुछ फायदा नहीं होता।

ओछे की प्रीति—(१) नादान की दोस्ती। (२) नीच से मेल। ओछे की प्रीति से दगा खाओगे।

ओछा आदमी है—छिछोरा मनुष्य है। कमीना है। गम्भीर नहीं है।

ओढ़ना उतारना — आवरण उतारना, भीतरी बात खोलना। वे इज्जत करना। क्यों सब आदमियों के बीच में बिचारे का ओढ़ना उतारते हो, भीतर से सब का यही हाल है।

ओढ़ना बिछौना बनाना—चीज़ को हर वक्त काम में लाना। बुरी तरह काम में लाना। डेढ़ सौ रुपये का दुशाला है और तुम इसका ओढ़ना बिछौना बनाये डालते हो, कभी कहीं गये तो ओढ़ लिया, बस।

ओढ़ना बिछौना बाँधना या समेटना—चल देना, खिसकना। महाराज! बहुत दिन हो गये अब अपना ओढ़ना बिछौना समेटिये या बाँधिये।

ओढ़ लेना या ओट लेना— जिम्मे लेना। उसने सारा अपराध खुद ओट लिया।

ओढ़नी बदलना—सखी बनाना (जैसे पुरुषों में पगड़ी बदलना)। तुमने किस छिछोरी से ओढ़नी बदली है जो कभी काम न आवे।

ओर आना—अंत समय आना। हँसता ठाकुर खँसता चोर इन दोनों का आया ओर।

ओर निभाना, निबाहना—(१) फ़र्ज़ पूरा करना। अपनी ओर निबाहिये बाँह गहे की लाज। (२) हमेशा वचन आदि के पाबन्द रहना। पुरुष गँभीर न बोलहि काहू देहु दुहू दिसि ओर निबाहू।

ओर लेना—पक्ष समर्थन करना। तुम तो ओर ले रहे हो निष्पक्ष होकर बताओ कसूर किसका है?

ओलहना उतारना—(१) काम दिल से न करना। तुम तो केवल उलाहना उतारना चाहते हो आये मुँह दिखाया और चल दिये। (२) बदला चुकाना। भाई! उसका ओलहना उतारना है कुछ काम करें या न करें, परन्तु हो आवें नहीं तो कहेगा कि मैं तो तुम्हारे भाई के विवाह में काम करता रहा और तुम मेरे यहाँ झाँके भी नहीं।

ओस के मोती—(१) शीघ्र नाश होने वाला। यह संसार ओस का मोती बिखर जात क्षण भर में। (२) शीला के भाग्य में पति प्रेम न था केवल ओस के मोती थे,

मोती (पति) का असली प्रेम तो किसी और से था, विवाह तो केवल माँ बाप का था।

ओस पड़ना—(१) उमंगों का मिटना। सब हँसी चुहल जाती रही, ओस सी पड़ गई। (२) बुझ जाना। फूलों पर ओस पड़ गई। (३) लजाना। ये तो देवर हैं इसे देखकर क्यों ओस पड़ गई।

औ

औंधे मुँह गिरना—(१) बुरी तरह धोखे में आना। (२) जल्दी में काम का बिगड़ना। पहिले तो लड़कियें बड़ी कर लेते हैं फिर एकदम व्याह की पड़ती है, सो औंधे मुँह गिरते हैं, जैसा लड़का मिला व्याह दी चाहे वह सारी उमर रोवे। (३) मान भंग होना। बहुत बढ़ बढ़कर बातें बनाते थे खूब औंधे मुँह गिरे, अब किसी से बात करने के भी न रहे।

औंधे होना—बे सुध होना। कहिये जनाब बस इतने ही थे, एक प्याले में ही औंधे हो गये।

औतारी—अनोखा। लड़का क्या है औतारी है सारे काम अनहोने करता है।

औने पौने बेचना—नुकसान से बेचना। दुकान उठाते समय सब चीज़ औने पौने बेचनी पड़ी।

और का और होना—(१) कुछ का कुछ होना। भूचाल ने क्वेटा में क्षण भर में ही और का और कर दिया। (२) बदल जाना। अब तो पहचानने में भी नहीं आता जब तो मरा सा था अब तो कुछ और ही हो गया है।

और तो और—दूसरी बात तो जाने दीजिये। और किसी से तो ऐसा हो भी सकता है। यह तो असंभव भी हो सकता था, परन्तु। और तो और वह बाप को भी गाली देता है। और तो और मूँछे नहीं उतरवाई सो भी खैर कुछ नहीं उसने तेरह ब्राह्मण भी नहीं जिमाये।

और ही कुछ होना—(१) अनोखी बात हो जाना। वहाँ कुछ और ही हो गया था, घरवाले सब बँधे पड़े थे। (२) अन्य ही होना। वह चितवन औरै कछू जिहि बस होत सुजान। (३) अनोखा होना। वह चाँद सा मुख नामे खुदा और ही कुछ है।

और ही रँग खिलना—विलक्षण कार्य होना। तुम्हारे कई बार कहने पर भी मुझे विश्वास न था, उस दिन होटल में गए तो ज्ञात हुआ

वहाँ कुछ और ही रंग खिल रहे हैं, बोतल सामने रक्खी है और...।

औसान जाता रहना, भूलना—धैर्य न रहना। मौके पर काम न बन पड़ना। खाट पर साँप लहराता देखकर मेरे तो सारे औसान जाते रहे। मैं क्या कर सकता था ऐसे वक्त पर अच्छे अच्छे औसान भूल जाते हैं।

क

कंकड़ पत्थर—कूड़ा कर्कट। व्यर्थ की वस्तुएँ। यों ही कंकड़ पत्थर भरलाते हो देख कर लाया करो आख़िर मुफ़्त तो नहीं लाते।

कंघी चोटी करना—शृङ्गार करना, बाल ठीक करना। कंघी चोटी किये बिना भला मैं कैसे बाहर जा सकती हूँ।

कंघी चोटी में रहना—बनाव ठनाव में रहना, शृङ्गार में ही अधिक कर गवाना। आजकल ऐसा फैशन छाया है दिन रात लड़कियाँ कंघी चोटी में ही रहती हैं। रात भर वह कंघी चोटी में रहे, सुबह तक सिर पर मेरे आरे चलें।

कंचन बरसना—(१) सोना प्राप्त होना। तुलसी वहाँ न जाईये कंचन बरसत मेह। (२) पच्ची कारी आदि से शोभित होना। वहाँ तो प्रत्येक मन्दिर कंचन बरसता है।

कंचन का कौर खिलाना—किसी के लिये खूब खर्चना। बहुत प्रेम करना और सुख पहुँचाना। मैंने अपनी प्यारी बिटिया कंचन का कौर खिलाकर पाली है, इसके लिये सोना बहाया गया है, फिर भला मैं इसे कैसे दुखी देख सकती हूँ।

कंटक होना—विघ्न रूप होना। जो आदमी हमारे रास्ते का कंटक है उसका कंटक काट दो (समाप्त कर दो)।

कंठ न खुलना—(१) मुँह से शब्द न निकलना। वहाँ तुम्हारा कंठ (गला) ही न खुला यहाँ इतना चढ़ बढ़ कर कह रहे थे। (२) जुकाम या बहुत बोलने से आवाज़ न निकलना। मैं व्याख्यान नहीं दे सकता मेरा कंठ खुला हुआ नहीं है।

कंठ फूटना या फूट निकलना—(१) ठीक ठीक उच्चारण निकलना। (२) शब्द निकलना। (३) घाँटी फूटना।

कंठ बैठना—गला ठंडा होना। आवाज मरी हुई होना। बहुत बोलने से मेरा कंठ बैठ गया है।

कंठ का हार होना या बनना—(१) प्रेमी होना। मोहित होना। वह मेरे कंठ का हार है। उसे मैं

कैसे दिल से दूर कर सकती हूँ। (२) पीछे पीछे ही रहना। पिंड न छोड़ना। वह तो मेरा कंठ हार बना हुआ है जहाँ जाती हूँ वहीं पहुँचता है।

कंठी उठाना, छूना—गुरू की दी हुई पवित्र कंठी हाथ में लेकर कोई बात कहना, अर्थात ईमान से शपथ खा कर कहना।

कंठी बाँधना—(१) शिष्य बनाना मेरे तो उन महात्मा जी ने कंठी बाँधी है। (२) विषय त्यागना वैरागी होना। मुझे अब संसार से क्या प्रयोजन जब मैंने कंठी ही बँधवा ली। (३) मद्य मांस छोड़ना। (४) अन्ध भक्त बनना।

कंठी बाँधना देना—स्वामी योगानन्द ने मुझे कंठी दी है या बाँधी है।

कंठी लेना—चेला बनना। तुमने किससे कंठी ली है।

कंडा होना—सूख कर उपले जैसा होना। चिंता से वह तो कंडा होगया है।

कंधा डालना व डाल देना—(१) बैल का अपने कंधे से जुआ उतार देना। घोडों का हुआ था हाल पतला, बैलों ने दिया था कंधा डाल। (२) साहस टूट जाना। हिम्मत छोड़ देना। (३) थक जाना। तुम तो हर काम में शुरू में ही कंधा डाल देते हो।

कंधा देना—(१) सहारा लगाना, मदद करना। तुमने भले अवसर पर आकर कंधा दिया, वरना मैं इस काम को अपने आप नहीं कर सकता था। (३) मुर्दनी में अर्थी कंधे पर लेना। उसने तो अपने बाप को कंधा तक नहीं दिया।

कंधा पकड़ कर चलना—अन्य के सहारे काम करना। बुढ़ापे में तो कंधा पकड़ कर चलना पड़ता है परन्तु जवानी में किसी के कंधे का सहारा नहीं तकते थे।

कंधा लगना—गाड़ी के जूए की रगड़ से बैल का कंधा छिल तथा सूज जाना। आज कल यह बैल बेकार है क्यों कि इसका कंधा लगा हुआ है।

कंधे से कंधा छिलना—धक्के लग लगकर भीड़ में चलना। जलूस में कंधे से कंधा छिलता था।

कँधावर भेजना—नया व्याह होने पर वर के घर सौगात के साथ धोती चादर भेजना।

कंबल उढ़ाना—जेलखाना कराना। मत दे रुपया मेरा भी नाम नहीं जो तुझे (जेलखाने का) कंबल न उढ़ाया!

कंबल उढ़ा कर लूटना—चकमा देकर या मूर्ख बनाकर रुपये ऐंठना। क्या कंबल उढाकर लूटा है, बहुत

होशियारी से काम लेते हुये भी मैंने अपने आप उन्हें रुपये दे दिये।

ककड़ी के चोर को कटारी से मारना—छोटे अपराध पर बड़ा दण्ड देना। जरासी छींटे ही तो आपके कपड़ों पर पड़ी हैं सो विचारे ककड़ी के चोर को कटारी से मारने लगे।

ककड़ी खीरा करना या समझना—कुछ कदर न करना। शिवाजी मुगलों की फौज को ककड़ी खीरा समझता था।

कचकच करना या मचाना—बहुत तर्क वितर्क करना। बहुत बात चीत तकरार करना। मुझसे यह कचकच नहीं सुनी जाती खाना तो कम से कम खा लेने दो।

कच बाँधना बगल से हाथ ले जाकर गर्दन के ऊपर चढ़ा कर दबाना। कच बाँधते ही पहलवानी पर पानी फिर गया।

कचर कचर कर खाना—खूब पेट भर खाना। कचर कचर कर के सब खा गया।

कचर कूट करना—(१) बहुत मारना। तनक सी गलती पर तुमने बालक को कचर कूट कर दिया। (२) ख़ूब पेट भरना।

कचहरी के कुत्ते—कुत्ते की तरह कचहरी आने वालों का मुँह जोहने वाले। न छोड़े तनके कपड़े भी मुए कुत्ते कचहरी के।

कचहरी चढ़ना—अदालत तक मामला ले जाना। मैं कहता हूँ कचहरी चढ़कर भी देखलो फ़ायदा कुछ नहीं होगा।

कचहरी लगना—बहुत से आदमियों का बैठा रहना। उनके घर तो हरदम कचहरी सी लगी रहती है।

कचालू करना—ख़ूब पीटना। मारते-मारते कचालू कर दिया। कचालू बनाना भी प्रयुक्त होता है।

कचालू होना—लाल लाल होना। आँखें कचालू हो रही हैं फिर दही खा रहे हो रात को दुख देंगी।

कचूमर निकलना—(१) ख़ूब पीटना। उसने तो जरा कसूर में लड़के का कचूमर निकाल दिया। (२) ख़ूब कूटना। धीरे २ कूटो कचूमर मत निकालो। (३) बिगाड़ना, सार खींचना। तुम्हारे हाथ जो चीज पड़ जाती है उसका कचूमर निकाल कर छोड़ते हो!

कचूर होना—हरा होना। (जायसी ने इसका अपनी कविता में बार २ प्रयोग किया है।) नयन कचूर प्रेम मद भरे नयन कचूर भरे जनु मोती।

कच्चा करना—(१) शर्मिन्दा करना। क्यों विचारे को कच्चा

करते हो सबसे भूल होती है। (२) झूठा ठहराना उसने सारी बातें अपने सबूत में कच्ची करदी। (३) हिम्मत छुड़ाना। तुम बार २ कहते थे कि पास न होगा इसलिये अब यह कच्चा हो गया, परीक्षा न देगा।

कच्चा खा जाना या चबाना--गुस्से के वक्त मार डालने की धमकी। अब गाली मत देना नहीं तो कच्चा ही खा जाऊँगा।

कच्चा चिट्ठा खोलना या सुनाना—रहस्य खोलना, छिपी हुई खामियें या कमजोरियें जाहिर करना। अब वह मुँह भी नहीं दिखा सकता क्योंकि उस का कच्चा चिट्ठा खोल दिया गया है।

कच्चा धागा-कमजोर। अस्थायी। कसम तो कच्चा धागा है मैं विश्वास न करता चाहे जितनी कसम खाया करो।

कच्चा पक्का—मकान जिसमें पक्की ईंट गारे से जोड़ी हो। कच्चा पक्का मकान मत बनवाओ।

कच्चा पक्का करना—(१) अनिश्चित। अभी तो कच्चा पक्का साही है कुछ निश्चित नहीं कब होगा। (२) अधूरा होना। काम को कच्चा पक्का क्यों छोड़ते हो हाथ लिया है तो निभाओ। (३) बिगाड़ देना। तुमने इसे कच्चा पक्का कर दिया अब हम कुछ नहीं कर सकते।

कच्चा पड़ना—(१) झूठा पड़ना। अब क्या होता है बना बनाया सबूत कच्चा पड़ गया। (२) सिर पिटाना। पहिले तो बड़ा बहक रहा था लेकिन काशी के आचार्य के आते ही कच्चा पड़ गया।

कच्चा बैठना—मरने के समय ऊपर नीचे के दाँतों का ऐसा मिल जाना कि खुल न सकें। उनके दाँत तो कच्चे बैठ गये थे।

कच्चा होना—धैर्य छूटना। विपत्ति में कच्चा न होना चाहिये।

कच्ची कली—अप्राप्त यौवना, छोटी उमर की। कच्ची कली है तुम क्या कह रहे हो? (अनखिली कली भी प्रचलित है।)

कच्ची कली टूटना—(१) छोटी अवस्था में मरना। (२) मासूम लड़की का पुरुष से संयोग होना।

कच्ची खा जाना-हिम्मत टूट जाना। वह मुझसे अधिक बलवान है तो भी लड़ने में कच्ची खागया। जोश में शुरू तो कर दिया लेकिन पूरा करने से पहले ही कच्ची खा गये।

कच्ची गोटी या गोली खेलना—अनाड़ी होना, तजुर्बेकार न होना। बोली कि न दूँगी यों ज़बाँ में, खेली नहीं कच्ची गोलियाँ में।

कच्ची पक्की खिलाना—ठीक ढाक

खाना न मिलना। बेचारे के घर से तो बिमार थी योंही बाज़ार से, कभी अपने ही हाथों कच्ची पक्की खिलाता रहा।

कच्चे घड़े की चढ़ना—ताड़ी पीना। ख़ूब आज तो कच्चे घड़े चढ़े हुए हो हम जानते हैं आँखें ही कह रही हैं।

कच्चे घड़े की पीना—नशे के कारण मूर्खता के काम। होश से काम करो न, क्या कच्चे घड़े की पी रखी है।

कच्चे घड़े पानी भरना या भरवाना—कठिन कार्य कराना। मैं भी कच्चे घड़े पानी भरवाऊँगा मायके में तो तू मेरी हँसी उड़वाती है, इसका बदला भी लेकर छोड़ूँगा।

कच्चे बच्चे—छोटे २ बाल बच्चे। ऐसे बच्चे जो अपने आप अपना काम न कर सकें। गंगा जी न्हाना तो मैं भी चाहती हूँ किन्तु इन कच्चे बच्चों को किस पर छोड़ जाऊँ।

कच्छ की उखेड़—कुश्ती में नीचे वाले को लँगोट पकड़ कर उखाड़ देना। बहुत देर से चित्त ही नहीं होता था फिर जो मैंने बगल से कन्धे पर हाथ ले जाकर कच्छ की उखेड़ दी तो एक दम चित्त हो गया।

कछनी काछना—रुमाली या तिकोनी पहिनना। घुटनों तक की धोती बाँधना। पीताम्बर की कछनी काछे मोर मुकुट सिर दीने।

कज निकालना—(१) टेढ़ापन दूर करना। छड़ी में कज पड़ गई है निकाल दो। (२) दोष दूर करना। चाल चलन की कज निकाल कर शरीफों में मिल सकते हैं। (३) दोष दिखाना। तुम हरेक बात में कज निकालते हो शाबाशी नहीं देते।

कट कट के मरना—(१) आपस में लड़कर मरना। कौरव पांडव जरा सी बात पर कट कट कर मर गये। (२) जान दे देना। कट २ के मर जाऊँगा लेकिन माँ की लाज बचाऊँगा। (३) झगड़ना। क्यों व्यर्थ में ही हिन्दू मुस्लिम दोनों भाई कटे मरते हैं?

कट कट जाना—(१) शर्मिन्दा होना। मुझे उसकी कारस्तानी मालूम है इसलिये मुझे देखते ही कट कट जाती है। (२) जलन होना, खिसियाना। उस दिन से मुझे देखते ही कट जाता है कारण कि मेरी बात मानली गई और लाख जोर लगाने पर भी वह टापता ही रह गया।

कट जाना—(१) कट कर मर जाना। महाभारत की लड़ाई में लाखों आदमी कट गये। (२) खतम होना। बुरे दिन तो सब कट

गये अब तो अच्छे आगये हैं। बातों बातों सारा रास्ता कट गया। (३) दूर होना। गंगा स्नान से सारे पाप कट गये। (४) जलन होना। मुझे इनाम मिला हुआ देख कर सारे लड़के कट गये। (५) मोहित होना। तिरछी नजरों कट गये हम उनकी। (६) हार जाना। कल वह चौपड़ की बाजी में कई बार कट गया। (७) ग़लत साबित होना। मेरी बात से उनकी बात कट गई। (८) बिक जाना। पिछले साल सारामाल कट गया, बड़े पैसे बने। (९) फूटना, छेद होना। इतनी जोर का मेह पड़ा कि घर का कोठा कट गया और मेह बड़ी जोर से अन्दर आने लगा। (१०) दूसरी तरफ़ जाना। मुझे देखते ही वह कट जाते हैं। पानी मेरे बजाय उसके खेत में कट गया, मेरा खेत सूखा रह गया।

कटती कहना—मर्म भेदी बात कहना, बुराई करना। तुम हरेक की कटती कहते हो भलाई तो करते ही नहीं।

कटनी काटना—इधर से उधर, उधर से इधर भागना। मैं पकड़ने को चला तो वह कटनी काटने लगा।

कटनी मारना—जोतने से पहिले खेत की घास खोदना। आज कटनी मार रहे हैं फिर जोतेंगे।

कटवाँव्याज—वह व्याज जो कुल कर्ज में से थोड़ा दे देने पर लगे। किश्तें देते रहने पर कटवाँ व्याज चलेगा सारे रुपये पर व्याज न देना पड़ेगा।

कटे पर नमक छिड़कना—(१) दुखी को और दुखी करना। एक तो वैसे ही मरा पड़ा हूँ दूसरे तुम मारे डालते हो क्यों कटे पर नमक छिड़कते हो। (२) नाराज को और चिढ़ा कर नाराज़ करना। अव्वल तो वह अभी घर से बिगड़ते हुए गये थे तुमने मेरी शिकायत करके और कटे पर नोन छिड़क दिया।

कटोरा चलाना—मंत्र बल से कटोरी चलाकर चोर का पहचानना। आँखें रूपी कटोरी हज़ारों को छोड़ चितचोर पर पहुँचती हैं।

कट्टे लगना—(१) दूसरे के कारण अपनी वस्तु नष्ट होना। इतने दिनों की रक्खी चीज़ आज तेरे कट्टे लगी। (२) दूसरे की नज़र में खटकने वाली चीज़ नष्ट हो जाना। मेरे पास एक मकान था जो तेरी आँखों में खार की तरह खटकता था आज वह भी तेरे कट्टे लगा।

कठ पुतली होना—(१) हाथ का खिलौना होना। वश में होना।

प्रो० साहब तो अपनी औरत के हाथ की कठ पुतली बने हुए हैं। (२) चुप चाप रहना। नई बहू तो कठ पुतली है दिनभर कोने में बैठी रहती है।

कड़ाका बीतना वा गुज़रना—(१) दुख से उपवासों में दिन गुजरना। घर में एक भी दाना तो नहीं तीन तीन दिन कड़ाका बीतता है।

कड़ाके का—जोरदार, बहुत तेज़। कड़ाके की भूख लगेगी क्यों कि कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा है।

कड़ाही में हाथ डालना—अग्नि परीक्षा करना, कड़ी परीक्षा करना। अगर सच्चे हो तो कड़ाही में हाथ डालो।

कड़ी उठाना, झेलना—कठिनताओं को झेलना। बड़ी कड़ी झेलने के बाद में इसे उनके पंजों से छुड़ा कर लाया हूँ।

कड़ी नज़र आँख, रखना—(१) हरवक्त देख भाल रखना। मुझपर बड़ी कड़ी आँख रखते हैं जहाँ ज़रा नज़र से दूर हुआ और उन्होंने आवाज़ दी।

कड़ी नज़र आँख, रखना, होना—(१) पूरा ध्यान रखना। देखना उस लड़के पर कड़ी आँख रखना कहीं जाने न पावे। (२) कोप भाव रखना। इन दिनों समाचार पत्रों पर सरकार की कड़ी आँख रहती है।

कड़ी (कड़ी) कहना, सुनना—सख़्त सुस्त कहना, खरी खरी सुनाना। उन्होंने जाते ही मुझे कड़ी कड़ी सुनानी शुरू की, मैं समझ गया किसी ने मेरे विरुद्ध शिकायत की है।

कड़ी धरती—(१) वह प्रदेश जहाँ के लोग हट्टे कट्टे हों। पंजाब की धरती ही कड़ी है इसीसे मुसलमानों की सिख परवा ही नहीं करते (२) भूत-प्रेत के रहने की जगह। रात को न जाना वहाँ कड़ी धरती है।

कड़ुआ करना—(१) रुपया लगाना। जहाँ इतना खर्च किया और दो रुपये कड़ुए करेंगे। (२) दाम खड़े करना। माल बहुत दिनों से पड़ा था ५) कड़ुए किए।

कड़ुए मुख—कटु भाखी मुख। खीरा को मुख काटि के भरिए नमक बनाय, रहिमन कड़ुए मुखन को चहिये यही सजाय।

कड़ुआ होना—बुरे बनना। तुम क्यों सब से कड़ुए होते हो।

कड़ुआ होना—नाराज होना। इतनी सी बात में वो तो कड़वे हो गये और गाली देने लगे।

कढ़ जाना—किसी के साथ भाग जाना। यों चित चाहत एरी भट्ट मन मोहनै लैके कहूँ कढ़ि जाइये।

कढ़ी का सा उबाल—थोड़ी देर का जोश। कढ़ी का सा उबाल है अब तो कुछ हो भी जायगा नहीं तो नहीं।

कतर ब्योंत में लगे रहना—नयी तजवीज़ या लाभ सोचते रहना। वह हमेशा कतर ब्योंत में लगा रहता है कभी कम्पनी खोली कभी मकानों का ठेका लिया अब प्रेस खोला है।

कतर ब्योंत से—हिसाब से। वे ऐसी कतर ब्योंत से चलते हैं कि थोड़ी आमदनी में अपनी इज्जत बनाली है।

कतर ब्योंत करना—(१) सोच विचार में लगे रहना। रात दिन मैं इसी कतर ब्योंत में लगा रहता हूँ कि इस झगड़े को मिटा दूँ। (२) किफायत करना, कमी करके काम बनाना। कुछ कतर ब्योंत करके इतने रुपयों में ही काम निकालो। (३) काट छाँट करना। कुछ कतर ब्योंत कर डालो, कोट तो निकल ही आवेगा।

कतरनी सी ज़बान चलना—बकवाद करना, बात काटना। सुनती भी हो या कतरनी......।

कथक्कड़ होना—बहुत बोलना। कथक्कड़ हो गया है बात ही नहीं खतम होती जी उकता जाता है।

कथा उठना—कथा बंद होना। पूर्ण मासी को कथा उठेगी आना जरूर।

कथा चुकाना, मुकाना—(१) झगड़ा मिटाना। कथा मुकादो जी क्या दो रुपये के लिये नीच को मुँह लगाते हो। (२) मार डालना।

कथा बैठना—(१) प्रारंभ होना। अभी तो कथा बैठी है। (२) होना। कथा बैठी हुई है समाप्त नहीं हुई।

कथा बैठाना—कथा के लिये पंडित नियुक्त करना। राजा ने कथा बैठाई है शुभ हो।

कदम उठाना—(१) शीघ्र चलना। कदम उठाओ दूर जाना है। (२) उन्नति करना। अब तो उसका कदम उठ गया है चारों तरफ़ के आदमी नीचा देखने लगे हैं।—तेज़ चलना। कदम उठाकर चलें तो दस मिनट में पहुँच जायँगे।

कदम कदम जाना—(१) पैदल जाना। हम तो कदम २ ही गये थे दो घंटे में पहुँचे थे। (२) धीरे २ चलना। कदम कदम जाओगे तोभी दोपहर तक पहुँच ही जाओगे।

कदम को हाथ लगाना—(१) पैर छूना, विनय करना। मैं तुम्हारे कदम को हाथ लगाता हूँ भाई! चले चलो। (२) कसम खाना। तुम्हारे कदमों के हाथ लगाकर

कहता हूँ मैंने उससे कभी भी नहीं कहा।

कदम गाड़ के बैठना—धरना देना, न हटना। आज मैं कदम गाड़ कर बैठ गया हूँ रुपया मिल जायगा तब ही उठूँगा पहिले नहीं।

कदम चूमना—(१) अत्यंत आदर करना। कितना पर उपकार ! आपके कदम चूमने को जी चाहता है (२) खुशामद करना। कदम चूमते फिरते हो दूसरों के, लेकिन न हम को पुकारते हो।

कदम न निकालना—(१) परदे में ही रहना, न निकलना। वह घर से कदम भी नहीं निकालता। (२) किसी की बात के बाहर न जाना। राय उनकी भी यह हुई उसदम, आप राय से निकालिये न कदम।

कदम पर कदम रखना—(१) पीछे चलना, किसी के पैरों के निशान पर पैर रखना। मैं तो उनके कदम पर कदम रखता चला गया, रास्ता पूछने की जरूरत ही न पड़ी। (२) किसी के अनुसार काम करना। लड़का सपूत है अपने पिता के कदमों पर ही कदम रखता है।

कदम बढ़ाना, आगे रखना—(१) तेज चलना। कदम बढ़ाओ इतनी धीरे २ कब तक पहुँचेंगे। (२) उन्नति करना। जापान व्यापार में कितना कदम आगे बढ़ा रहा है, संसार का कोई देश मुक़ाबिला नहीं कर सकता (३) ज़्यादती करना। अगर तुम कदम बढ़ाओगे तो मारे जाओगे।

कदम भरना—आगे बढ़ना। अब तो वह बदमाशी में कदम भरने लगा है।

कदम मारना—(१) दौड़धूप करना मैंने बहुत कदम मारे लेकिन उन्हें न पा सका। (२) बहुत शीघ्र चलना। दस कदम मारोगे वहाँ पहुँच जाओगे। (३) बहुत व्यस्त होना। आजकल तो चैनही नहीं बड़े कदम मार रहे हो। (यह महावरा पैर पीटना का अनुवाद है)

कदमों से लगे रहना:—हरसमय साथ रहना। तुम जूती की तरह हर समय उनके कदमों से ही लगे रहते हो।

कन कौआ काटना—(१) पतंग की डोर काटना। (२) किसी से संबन्ध तुड़ाना। वहाँ से तो उनका कनकौआ काटदिया।

कन कौआ लड़ाना—एक पतंग की डोरी दूसरे की पतंग की डोरी में डालना। कन कौआ लड़ाओ तुम यहाँ घर की ख़बर भी है ?

कन कौआ बढ़ाना—पतंग को से देना, डोरी बढ़ाना। मैं कन कौआ बढ़ा कर लड़ाता हूँ।

कनखी मारना—(१) आँख का

संकेत करना। राम ने लक्ष्मण को कनखी मारी झट उसने सूपनखा का नाक साफ़ करदी। (२) आँख द्वारा रोकना। कनखी क्यों मारते हो करने दो न !

कनखियों लगना :—छिप कर देखना सुनना। धुनि किंकिन होति जगैंगी सबै सुख सारिका चौंकि चितै परिहैं। कन खैयन लागि रही हैं परोसिनि सो सिसकीं सुनि कै डरिहैं।

कनी खाना या चाटना—हीरे की नोक खाकर या चाटकर प्राण देना। सलीमा ने तब तक कनी चाटली थी बादशाह उसे खोकर जन्म भर पछताते रहे। अनी के बस कनी खाना।

कनसुआ, कनसुई या कनसुइयाँ लेना—(१) छिपकर बात सुनना। कनसुआ लिया तो ज्ञात हुआ वे तुम्हारे विरुद्ध विचार रहे थे। (२) भेद लेना। आहट सुनना (३) सगुन विचारना।

कनेव छेदना—खाट के पायों में टेढ़े छेद होना जिससे चारपाई टेढ़ी हो जाय। बढ़ई ने पावों को कनेव छेदा है।

कनौती उठाना, खड़ा करना—चौकन्ना होना ; कान खड़े होना। घोड़ा शेर को देखते ही कनौतियाँ उठाने लगा मेरे भी प्राण सूख गये।

कनौती बदलना—कान खड़े होना। जब मालूम हुआ यही वह डाकू है तब तो कनौती बदल गई, मैं डरने लगा।

कन्नी काटना :—बचकर निकलना

कन्नी खाना—पतंग का एक ओर झुकना। बढ़े कैसे कन्नी खातीं है।

कन्नी दबना—(१) अधीन होना। मेरी क्या कन्नी दबती है। (२) दबाव। (३) लजाना। उसके सामने क्या कन्नी दबती है बोलती क्यों नहीं ?

कन्ने ढीले होना पड़ना—(१) थक जाना। मेरे तो चलते-चलते कन्ने ढीले पड़ गये। (२) मान मर्दन होना। उसकी चालों से आखिर कन्ने ढीले पड़ गये।

कपड़े उतारना—सब कुछ ले लेना। यह न समझना कुर्क करवा के छोड़ दूँगा, याद रखना कपड़े उतार लूँगा तब पीछा छोड़ूँगा।

कपड़े रंगना :—बैरागी, संन्यासी होना। कपड़े रंग लिये हैं हमें दुनिया से क्या काम ?

कपड़ों में न समाना—(१) बहुत आनंदित होना। उसकी खबर सुनते तुम तो कपड़ों में भी नहीं समाते थे अब क्या हो गया। (२) बहुत जोश में आना। तुम

तो कपड़ों में भी नहीं समाते ऐसा भी क्या क्रोध। (३) बहुत मोटा होना। उसका तो अंग कपड़ों में भी नहीं समाता।

कपड़ों से होना—मासिक धर्म की अवस्था में होना। वह कपड़े से होने के कारण रोट नहीं बना सकती।

कपाल खुलना—(१) सिर फट जाना। धड़ाम से गिरा, सारा कपाल खुल गया अब अस्पताल ले गये हैं। (२) भाग्य खुलना। अब तो कपाल खुल गया है नौकरी मिल गई है।

कपास ओटना—संसार में फँसना। आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास।

कफ़न को कौड़ी न होना या न रहना—बहुत कंगाल होना। खाने की बात तो दूर कफ़न के लिये भी कौड़ी नहीं है।

क़फ़न फाड़ कर उठना—(१) एक दम जोर से चिल्ला उठना। अभी तो मुर्दे बने बैठे थे, उसका नाम सुनते ही क़फ़न फाड़कर उठे। (२) मरते-मरते बचना। उसका तो बड़ा बुरा हाल था डाक्टर जवाब दे चुके थे, बेचारा क़फ़न फाड़कर उठा है। (३) एक दम उठना। सुन्न चुप चाप पड़े थे तुम्हारे आते ही मानों कफ़न फाड़ कर उठ बैठे हैं।

कफ़न फाड़ कर चिल्लाना—सहसा जोर से चिल्लाना।

क़फ़न सिर से बाँधना:—(१) मरने को तैयार हो जाना। इतने बलवान से लड़ने की तैयारी करते हो तो कफ़न सिर से बाँध कर लड़ो।

क़फ़स में जान फँसना—मुश्किल में पड़ना। मेरी तो ऐसी क़फ़स में जान फंसी है किसी भी काम के न रहे।

कब का, कब के, कब से—बहुत पहिले। हम यहाँ कब के बैठे हैं, पर तुम्हारा पता ही नहीं।

कबाब होना—बहुत गुस्से में आना। वह तो इतना चिढ़ गया कि कबाब हो गया।

कबाला लिखाना—अधिकार में ले लेना। तुमने क्या कबाला लिखा लिया है जो इस घर में जमें हुए हो।

क़ब्जा उठना—अधिकार जाना। अब तो उसका क़ब्जा उठ गया है कुछ भी करो स्वतंत्र हो।

क़ब्जे पर हाथ रखना—(१) तलवार की मूँठ पर हाथ रखना। मैं क़ब्जे पर हाथ रख कर कहता हूँ यदि वीर हूँ तो मार कर ही आऊँगा।

(२) दूसरे की मूँठ पर हाथ रख कर तलवार न निकालने देना। उसने क़ब्जे पर हाथ रख लिया नहीं तो तेरी गर्दन उड़ा देता।

क़ब्र का मुँह झाँक आना या झाँकना—मरते-मरते बचना। कई बार वह क़ब्र का मुँह झाँक या देख चुका है।

क़ब्र के मुर्दे उखाड़ना:—गई बीती बातों को फिर सामने लाना। क़ब्र के मुर्दे उखाड़ने से क्या मेल होगा, जो गई उन्हें भूल जाओ।

क़ब्र खोद कर लाना:—जहाँ कहीं भी हो वहाँ से लाना। मैं उसे क़ब्र खोद कर भी निकाल कर ही लाऊँगा।

क़ब्र में पाँव लटकाये बैठना:— मरने के बिल्कुल लायक होना। मैं तो अब क़ब्र में पाँव लटकाये बैठा हूँ आज नहीं कल उठ जाऊँगा।

कभी न कभी—किसी न किसी समय। कभी न कभी तो तुम भी माँगने आओगे तब हम भी यही जवाब देंगे।

कभी कुछ कभी कुछ—एक ढंग पर नहीं। उनका विश्वास नहीं वह कभी कुछ कभी कुछ कह डालते हैं।

कमर कस कर बाँधना:—काम करने का पक्का इरादा करना। कमर कस कर बाँध लेने पर कोई नहीं हरा सकता।

कमर कसना—तैयार होना। वह जाने के लिये कमर कस चुका है।

कमर खोलना:—(१) आराम करना। कमर खोल दो और यहाँ सो लो। (२) इरादा छोड़ना। मैंने तो भाई कमर खोलदी है मैं इसे न करूँगा। (३) हिम्मत हारना। कमर खोलते हो जवान होकर।

कमर झुकना—बुड्ढा हो जाना। जिनकी कमर झुक गई है उनसे मशविरा लेना मना है, सलाह लो तो उनसे जिनकी छाती निकली हुई है।

कमर टूटना:—(१) उत्साह न रहना। इस बार घाटा आने से मेरी कमर टूट गई है, अब रोज़गार कैसे फैलाऊँ। (२) सहायता न रहना। बिना आदमियों के कमर टूटी हुई है, काम चले किसके बल पर। (३) किसी का मर जाना। कमर टूटी मेरी, जवान बेटा मरा मेरा।

कमर पकड़ना वा थामना:— मदद करना। हमारी कमर ठीक मौके पर पकड़ी उसने, यार मरते को बचाने वाले कितने।

कमर पकड़ कर उठना:—बहुत कमजोर होना। इतना है कि कमर पकड़ कर उठता बैठता है।

कमर पकड़ कर बैठ जाना:— बहुत दिल टूटने पर, अत्यन्त

आफ़तों में, चोट लगने पर ऐसा होना। एक तरफ़ से हो तो भुगत भी लें किसी की डिगरी, किसी का दावा, बेचारे कमर पकड़ कर बैठ गये हैं।

कमर बाँधना :—(१) हिम्मत देना। उन्होंने मेरी कमर बाँध दी थी कि मुक़दमे की पैरवी मैं कर दूँगा, बस फिर क्यों न करता। (२) काम के लिये तैयार करना। भाई कमर बाँधो क्या आलस्य में पड़े हो।

कमर लगना—(१) खाट पर पड़े पड़े पीठ दुखने लगना। चार महीने हो गये पड़े पड़े हमारी तो कमर लग गई है (२) घोड़े की पीठ में घाव होना, जीन बाँध कर चढ़ो घोड़ी की पीठ लगी हुई है।

कमर सीधी करना :—विश्राम करना, थोड़ा लेट लेना। कई मील चल कर आये हो जरा कमर सीधी करलो फिर जाना।

कमल उलटना—गर्भाशय का मुख उलट जाना। एक बच्चे के बाद कमल उलट गया फिर कोई बच्चा कैसे हो सकता था।

कमल खिलना—दिल खुश होना, मुख प्रसन्न होना। आज तुम्हारा कमल खिल रहा है।

कमान चढ़ना—दौर दौरा होना, क्रोध में होना। आज कल उनकी कमान चढ़ी हुई है सब उनकी ही मानते हैं।

कमान पर जाना :—(१) नौकरी पर जाना। मैं कमान पर जा रहा हूँ रोटियाँ वहीं ले आना। (२) लड़ाई पर जाना। कमान पर गये हैं पता नहीं लौटें या नहीं।

कमान बोलना :—कमांड करना, आज्ञा देना।

कमाल करना :—बहुत अनोखा या मुश्किल काम कर डालना। आपने भी कमाल कर दिखाया और किसी की ताक़त न थी कि ऐसा कर दिखाता।

कमाल को पहुँचाना—पूरा उतारना। उसने इस कला को कमाल को पहुँचा दिया है।

कमी न करना:—खूब प्रयत्न करना। अपनी तरफ़ से हमने कोई कमी नहीं की यह तुम्हारा भाग्य कि काम न बना।

कयामत (कमाल) का—गज़ब का, हद दरजे का। कयामत का चालाक (या कमाल का चालाक) है।

कयामत बरपा करना—गज़ब ढा देना, अनोखा काम करना। तुमने तो कयामत बरपा कर दी तख्ता ही उलट दिया।

कर गहना :—(१) विवाह करना। कर गहे की लाज है वरना माता

जी तो इस स्त्री से बहुत ही दुखी हैं। (२) शरण देना या आश्रय देना। मेरो कर गह गुपाल पाँय परों तोरे।

करम टेढ़ा व तिरछा होना :— तक़दीर खराब होना, काम बिगड़ते ही चले जाना। भाई तक़दीर ही टेढ़ी है तुमने वाक़ई में बहुत मदद की लेकिन काम न हुआ।

करम ठोकना— (१) भाग्य को दोष देना। अपने ही करम ठोको भला मैंने क्या कमी की जो काम न हुआ ! (२) करम ठोकते रह गये पहिले किया न काम।

करम फूटना— (१) अभाग्य होना। हमारे करम फूटे हुए हैं उनमें कीर्ति लिखी ही नहीं। (२) बुरे दिन आना। इन दिनों मेरे करम फूटे हुए हैं जिस काम में हाथ डालता हूँ वही बिगड़ जाता है।

करवट न लेना :— (१) किसी कर्तव्य का ध्यान न रहना। कितने दिन हो गये छत्र माँग कर ले गये थे सो आजतक करवट नहीं ली। (२) लौट कर आना। आपको गये हुए कितने दिन हो गये कभी इधर को करवट भी न ली गई।

करवट लेना या बैठना— पक्ष में होना। पता नहीं ऊँट किस करवट बैठे (कहावत)।

करवट बदलना :— (१) बगल से दूसरी बगल की तरफ़ सोना। (२) मौके पर दूसरी तरफ़ जा मिलना। तुम करवट बदलते हो इस समय तो हमारी सी कह रहे हो लेकिन विश्वास नहीं फिर करवट बदल लो। (२) पलटा खाना। मगर ने करवट ली और मैं भागा।

करवटें बदलना— याद में व्याकुल होना, तड़पना। आपकी याद में रात भर करवटें बदलते गुज़ारी।

करवटों में काटना या बिताना— तमाम रात करवटों में बिताई बड़ी मुश्किल से सूरज निकला।

करारा दम— (१) थका या शिथिल न होना। अभी तो करारा दम है दस मील चला जाऊँ। (२) तेज़। आवाज़ करारी है दम करारा है।

करोड़ की एक :— चुनी हुई, बहुत कीमती। करोड़ की एक बात है कि तुम मत जाओ।

क़र्ज़ उतारना— क़र्ज़ लौटाना। उधार बेबाक करना। उसके २५) थे सो २, २, ४, ४, करके क़र्ज़ उतार दिया।

क़र्ज़ उठाना— क़र्ज़ लेना, क़र्ज़ा सिर लेना। ५०) रामू से क़र्ज़ उठा कर तुमको दिये थे मेरे पास नहीं थे।

क़र्ज़ खाए बैठना— उधार खाए बैठना, पहिला क़र्ज़ होना। ५)

पहिले ही क़र्ज़ खाए बैठे हो अब १०) किस मुँह माँगते हो।

क़र्ज़ खाना :—क्या हमने तुम्हारा क़र्ज़ खाया है जो आँख दिखाते हो।

कलंक चढ़ाना, लगाना—बदनामी, बुराई होना, दोष देना। मुझे कलंक मत लगाओ मैंने नहीं बिगाड़ा। कलंक चढ़ेगा तुम्हारे सिर क्योंकि तुम कर रहे हो।

कलई खुलना—पोल खुलना असलियत ज़ाहिर होना। उनकी सारी कलई खुल गई कि वह डाक्टर नहीं है।

कलई न लगना—युक्ति न चलना। तुम्हारी कलई न लगेगी।

कल ऐंठना :—किसी का चित्त एक ओर से फेरना। परवाह मत करो मैंने जरा सी कल ऐंठी फिर वह १०) तो क्या १ पैसा भी न देगा।

कल कल करना—आज कल करना। देने के नाम रोज कल-कल कर देते हो।

कल का—थोड़े दिनों का, सामने पैदा हुआ। कलका लड़का है बुड्ढों के मुँह लगता है।

कल का पुतला :—(१) दूसरे के हाथ में रहने वाला अन्य की सम्मति या आज्ञा के अनुसार करने वाला। वह तो कलका पुतला है जैसा मुनीमों ने कहा मान गया। (२) अधिक परिश्रमी। वह तो कल का पुतला है चौबीस घंटे कोई काम कराओ कभी आराम का नाम ही नहीं।

कल की बात होना (१) जैसे अभी बीती हो। यद्यपि दस बरस गुजर गये लेकिन ऐसी याद है जैसे कल की बात हो। (२) पिछले दिन की। अजी कल को बात है वह मुझे भी गाली देने लगा।

कल न हो :—भविष्य में ऐसा न हो। मैं दे तो देता हूँ लेकिन कल को ऐसा न हो वह नाराज हो जावे।

कल पकड़ना :—आने वाले दिन तक रहना। इसके प्राण गले में हैं यह कल नहीं पकड़ सकता।

कल पड़ना—शान्ति, चैन मिलना। दोनों तरफ दर्द है किसी करवट कल नहीं पड़ती।

कल पाना—(२) तरीका मालूम होना। मैंने अब उसकी कल पा ली है जरा सी भंग पिलाई और फिर चाहे जितना काम करा लो।

कल को न कहना—भविष्य में न कहना। कल न कहना कि मैं बुरा हूँ तुम्हें बात कह रहा हूँ।

क़लम करना—काटना। कलम रुके तो कर कलम कराइये। जो आम के पेड़ कलम कर दोगे तो कलमी आम पैदा होंगे।

क़लम खींचना, फेरना, मारना—

लिखे हुए को काटना। रद करना। लिख भी दिया है तो क्या कलम फेर दो फिर कौन पढ़ता है।

कलम घिसना :— लिखते रहना।

क़लम चलना—(१) लिखाई होना। आज कल तो खूब दिन भर कलम चलती है कोई किताब लिख रहे हो क्या ? (२) कलम का काग़ज़ पर अच्छी तरह चलना। यह कलम ठीक नहीं चलती दूसरी लाओ।

क़लम चलाना—(१) लिखना। और कुछ नहीं तो कलम ही चलाओ एक पुस्तक तो तैयार होगी। (२) तेज लिखना। कलम चलाओ ! यों कैसे दो घंटे में सारा लिख पाओगे।

क़लम जारी रहना :—(१) लिखते रहना। दीवान सिंह की कलम वैसे ही जारी है हालाँ कि नवाब भूपाल ने दावा कर रखा है। (२) आज्ञा लिखने का अधिकार रहना। अभी तो मेरी क़लम जारी है तुम्हें नौकर करा ही दूँगा।

कलम तोड़ना :—(१) बेहद लिखना। साहब इतना अधिक लिखा है कलम तोड़ दी है। (२) अनूठी और अत्यन्त हृदयस्पर्शी लिखना या कहना। थोड़ा ही लिखा है लेकिन क्या कमाल का, कलम तोड़ दी है। क्या मर्म भेदी कविता बनाकर सुनाई कि बस कलम ही तोड़ दी हो।

कलमदान देना—लिखने की कोई नौकरी देना। मुंशी को कलम दान दे दिया गया है कल से वही लिखा करेंगे।

कलम न रुकना—लेख लिखते ही रहना। छः बार जेल जा चुका है लेकिन कलम अब भी नहीं रुकती सरकार की आलोचना करता ही रहता है।

क़लम बंद करना—लिख लेना। यह जो कुछ कहता है कलम बन्द कर लो।

क़लम बंद— पूरे पूरे। कलम बन्द सौ जूते लगेंगे।

क़मल बंद लगाना—दे० कलम बंद।

क़लम बंद सुनाना—बहुत गालियाँ देना। उसने कलम बंद गालियें सुनाईं।

क़लम में जोर होना—लेख में प्रभाव होना। वहाँ के सम्पादकों की कलम में जोर है इसी लिये जनता उनकी है।

क़लमा पढ़ना—अति श्रद्धा रखना, दुआ मनाना। मैं तो तुम्हारे नाम का ही कलमा पढ़ता रहता हूँ।

कलाबाजी खाना— सिर नीचे करके पलटा खाना। नटों का कला बाज़ी खाना अच्छा था।

कलाम होना—संदेह होना, तुम्हारी बातें कलाम की होती हैं।

कली खिलना—प्रसन्न होना। आनन्दित होना। आज मेरे दिल की कली खिल गई।

कलेजा उछलना—(१) हृदय धड़कना, घबराहट होना। मेरा कलेजा तो अभी से धड़क रहा है मैं ऐसे भीषण कृत्य को न देख सकूँगा। (२) आनन्द विभोर होना। परीक्षा उत्तीर्ण हो गया यह सुन कर तो मेरा कलेजा बाँसों उछलने लगा।

कलेजा उड़ा जाना—दिल पर खुश्की होना, होश बिगड़ना। इस दवाई से तो कलेजे में जलन हो रही है और उड़ा जा रहा है।

कलेजा उलटना—(१) क़ै बहुत होने से जी घबराना। बार बार क़ै होने से कलेजा उलटा जा रहा है। (२) होश न रहना। उसका तो कलेजा उलट गया है आँखे बन्द हैं बोलता भी नहीं।

कलेजा कटना—(१) हीरे की कनी या किसी विष से आँतों में छेद होना। उसका तो कलेजा कट रहा है क़ै में खून व मांस के छिछड़े निकलते हैं। (२) दस्त में खून आना। बड़े दस्त हो रहे हैं कलेजा कट कट कर आ रहा है। (३) दिल पर चोट पहुँचना। उसकी दशा देख कर किसका कलेजा नहीं कटता। (४) बुरा लगना। एक पैसा भी खर्च करते हुए उसका कलेजा कटता है। (५) जलन होना। बेचारे के पास चार पैसे की आमदनी देख कर तुम्हारा कलेजा क्यों कटता है।

कलेजे काढ़ना वा काढ़ लेनाः—(१) बहुत दुख देना। दिल निकालना। मेरा तो कलेजा ही काढ़ लिया गया अब मैं हवालात से डरने लगा हूँ। (२) सब कुछ ले लेना। मेरे बच्चे को मेरे से छीन लिया मेरा कलेजा काढ़ (निकाल) लिया। (३) मोहित करना। उसकी अदाँ ने काढ़ लिया यों कलेजा मेरा। (४) सबसे बढ़िया वस्तु छाँट लेना। तुमने भी साहब ग़ज़ब किया सब वस्तुओं का सार कलेजा काढ़ लिया।

कलेजा काढ़ के देना—सबसे प्यारी या सार वस्तु देना। बड़ा कंजूस है वह तो एक पैसा किसी को नहीं दे सकता तुम्हें सौ रुपये दे दिये समझो कि कलेजा काढ़ कर दे दिया।

कलेजा खाना—(१) बहुत तंग करना। क्यों कलेजा खाये जाते हो मुझे शान्ति से बैठने दो। (२) बहुत तकाज़ा करना। कल से

बराबर कलेजा खा रहा है आज उसके रुपये देही देंगे।

कलेजा खिलाना—बहुत प्यारी वस्तु देना, पालन करने में कमी न करना। यह दस बरस का था जब इसके पिता मर गये थे तब से मैंने इसे कलेजा खिला कर पाला और अब ये अलग रहना चाहता है।

कलेजा चीर कर दिखाना रखना—(१) सब कुछ दे देना। अगर हम कलेजा चीर कर रखदें तो भी तुम्हें विश्वास न होगा। (२) पूरा विश्वास दिलाना। मैं कलेजा चीर कर दिखा सकता हूँ कि मेरे यही भाव हैं।

कलेजा छिदना वा सालना—(१) कड़ी कड़ी बातों से जी दुखना। अब तो सुनते सुनते कलेजा छिद गया कहाँ तक सुने।

कलेजा छेदना, बींधना—बहुत कड़ी बातें कहना। क्यों कलेजा बींध रहे हो मैं लाचार हूँ वरना कभी इतना नहीं सुन सकता था।

कलेजा छलनी होना:—दुख पड़ते पड़ते दिल कमजोर हो जाना. चिन्ताओं का भार सहते सहते दिल दहल जाना। क्या करें हमारा कलेजा तो छलनी हो गया है सुख का नाम ही नहीं।

कलेजा जलाना—दुख देना। मेरा कलेजा क्यों जला रहे हो।

कलेजा टूक टूक होना—रंज से दिल फटना, दिल पर चोट पहुँचना। उनकी मृत्यु से मेरा कलेजा टूक टूक हो गया।

कलेजा टूटना—हिम्मत टूटना, उत्साह न रहना। इस बार के घाटे से मेरा कलेजा टूट गया है अब मैं फिर इस काम को नहीं कर सकता।

कलेजा ठंडा करना—मुराद पूरी करना, संतुष्ट करना। एक काम तुमने ऐसा किया है जिसने मेरा कलेजा ठंडा किया है।

कलेजा ठंडा होना—शांति प्राप्त होना, संतोष होना। बेटे! ऐसा काम करो जिससे मेरा कलेजा ठंडा हो, मुझे जलाओ नहीं।

कलेजा तर होना—(१) धन जमा होने के कारण ला परवाह होना। उसे जरा भी चिन्ता नहीं उसका कलेजा तर है १००) २००) खर्च भी हो जायँगे तो क्या होगा। (२) दिल को खुशी पहुँचाना। शर्बत से तो कलेजा तर हो गया।

कलेजा तोड़ तोड़ कर कमाना—बहुत मेहनत से कमाना। बेचारा कलेजा तोड़ तोड़ कर कमाता है, फिर भी पूरा नहीं पड़ता।

कलेजा थर थर करना—दिल

काँपना। मेरा कलेजा थर थर करता है पता नहीं वह क्या पूछेगा।

कलेजा थामना (थाम लेना)—दुख सहने के लिये जी कड़ा करना। कलेजा थाम कर सह लेंगे ये दुख भी सारे।

कलेजा थाम कर बैठ जाना वा रह जाना—(१) मन मसोस कर रह जाना। जिस समय मृत्यु समाचार सुना तो कलेजा थाम कर रह गये। (२) संतोष करना। यह सहा भी कलेजा थाम कर बैठ गये।

कलेजा थाम कर रोना—(१) मन मसोस कर रोना। (२) रह रह कर रोना। वहाँ चिल्लाने की तो इजाजत नहीं कलेजा थाम कर रोना पड़ता है।

कलेजा दहलना—(१) दिल में हिचकिचाहट और घबराहट होना। दिल दहल जाता है यह जेल की गाथा सुन कर (२) दिल में धड़कन होना। यह भयंकर दृश्य देख कर मेरा तो दिल दहल गया।

कलेजा धक धक करना—डर से व्याकुल होना। मेरा कलेजा धक धक करता है पता नहीं मजिस्ट्रेट क्या पूछ बैठे।

कलेजा धक से हो जाना:—(१) डर से हृदय स्तब्ध हो जाना। हरिमोहन का कलेजा धक से हो गया और वह लड़खड़ाती ज़बान से बोला। (२) भौंचक्का रह जाना, आश्चर्य होना। ये कौन कह सकता था इतना शरीफ़ आदमी भी छिपे छिपे यह काम करता है, मैंने तो जब सुना कलेजा धक से हो गया।

कलेजा धड़कना—(१) कलेजा डर से काँपना। (२) जी में खटका होना।

कलेजा धड़काना—(१) खटके में डाल देना। (२) डरा देना।

कलेजा धुकड़ पुकड़ होना—देखो 'कलेजा धड़कना।'

कलेजा निकलना—(१) बहुत कष्ट होना। मैं देने को तो तैयार हूँ लेकिन इस चीज़ को देने में मेरा कलेजा निकल रहा है (२) सार वस्तु चली जाना। चोरी में मेरा तो कलेजा निकल गया अब मेरे पास कुछ भी तो नहीं रहा।

कलेजा निकल जाना—(१) दम छूटना। दौड़ो खुदा के वास्ते देखो तो क्या हुआ, कहता है कोई हाय! कलेजा निकल गया। (२) बहुत व्याकुल होना।

कलेजा निकालना—देखो 'कलेजा काढ़ना।'

कलेजा निकाल कर रख देना—(१) हृदय की बात प्रकट करना। इस पुस्तक में वास्तव में लेखक ने कलेजा निकाल कर रख दिया है।

(२) सब कुछ अर्पण कर देना। मैंने तो तुम्हारे सामने कलेजा तक निकाल कर रख दिया है अब मेरे पास कुछ नहीं है। (३) सत्य साबित करना। मैं कलेजा निकाल कर रख सकता हूँ मैंने ठीक ही कहा है।

कलेजा पक जाना—कष्ट से जी ऊब जाना। रोज के लड़ाई-झगड़े से कलेजा पक गया है।

कलेजा पकड़ना—देखो 'कलेजा थामना।'

कलेजा पकड़ लेना—(१) दुखों के लिये जी कड़ा कर लेना। मैंने भी कलेजा पकड़ लिया है कुछ भी हो पैर पीछे न पड़ेंगे। (२) कलेजे पर भारी मालूम होना। बलग़म ने कलेजा पकड़ लिया है।

कलेजा पत्थर का होना—(१) दुख सहने के लिये तैयार हृदय। मेरा कलेजा पत्थर का हो गया है कोई भी विपत्ति हो मैं सामना करूँगा। (२) दुख सहते सहते दिल सुन्न हो जाना।

कलेजा पत्थर करना—(१) चित्त दबाना। जो होना था हो चुका अब कलेजा पत्थर करके घर चलो। (२) चित्त कठोर करना। कलेजा पत्थर करके उस निरपराध को मैंने मारा, हुक्म था।

कलेजा पानी होना—उसकी दुख भरी कहानी सुनकर किसका कलेजा पानी न हो जायगा? (कलेजा पसीजना भी प्रचलित है)।

कलेजा फटना—(१) दिल में कष्ट होना। दुखिया की आह कलेजे को फाड़ रही है। (२) ईर्ष्या होना। उसके पास चार पैसे हैं इससें तुम्हारा कलेजा क्यों फटता है?

कलेजा बढ़ जाना—हौंसला हो जाना। इनाम मिलने से कलेजा बढ़ जाता है।

कलेजा बैठा जाना—हृदय का मंद और संज्ञा शून्य होता जाना। मेरा कलेजा बैठा जा रहा है चैन ही नहीं पड़ता कहीं ऐसा न हो मैं पकड़ा जाऊँ।

कलेजा मलना—दिल दुखाना, कष्ट पहुँचना। कलेजा मल मल के किया मुझे ग़ाफिल।

कलेजा मसोस कर रहना—दे० कलेजा थाम कर रह जाना।

कलेजा मुँह को वा मुँह तक आना—(१) मन विकल होना। भूख के मारे कलेजा मुँह को आता है। (२) दुख होना। दुख भरी बातों से मेरा कलेजा मुँह तक आ गया।

कलेजा सुलगना—दिल जलना।

मुझे मत सुनाओ मेरा कलेजा खुद सुलग रहा है।

कलेजा हाथ भर का होना—(१) उत्साह होना। उनका कलेजा हाथ भर का है अनजाने व्यापार में हजारों रुपया योंही लगा देते हैं। (२) सहनशक्ति होना। उनका दिल हाथ भर का है नीच ऊँच सब सुन लेते हैं। (३) विशाल होना। हाथ भर का कलेजा है जो काम करते हैं हद को पहुँचा देते हैं।

कलेजा हिलना—देखो 'दिल दहलना'

कलेजे का टुकड़ा—(१) संतान। मेरे कलेजे के टुकड़े को मेरे सामने ही खेलने दो। (२) प्यारा व्यक्ति। वह मेरे कलेजे का टुकड़ा है (एक हिस्सा) उसकी बुराई मैं नहीं सुन सजता।

कलेजे पर चोट आना—सदमा पहुँचना, असह्य होना। अगर आप बुरा काम करते हैं तो मेरे कलेजे पर चोट आती है।

कलेजे पर छुरी चल जाना, फेरना—दुख पहुँचना पहुँचाना। क्यों कलेजे पर छुरी फेरते हो मेरे, उनकी आँखें ही चला देती हैं छुरियाँ इस पर।

कलेजे पर पत्थर रखना—(१) धीरज धरना। कलेजे पर पत्थर रखे बैठे हैं आखिर कोई वश नहीं चल सकता है। (२) दिल पक्का कर लेना।

कलेजे पर साँप लोटना—किसी बात का ध्यान करके शोक व दुख या जलन होना। (क) जब वह मरे लड़के की कोई चीज़ देख लेता है तो उसके कलेजे पर साँप लोट जाता है। (ख) जब वह अपने पुराने मकान को दूसरों के काबू में देखता है तो उसके कलेजे पर साँप लोट जाता है। (ग) तुम्हारे कलेजे पर क्यों साँप लोटता है तुम कर सकते हो तो तुम भी वही कर डालो जो उसने किया है।

कलेजे पर हाथ धरना वा रखना—सच्ची बात जो आत्मा स्वीकार करे। कलेजे पर हाथ रख कर बतलाओ क्या बचपन में तुमसे ज़रा भी गलती नहीं हुई?

कलेजे पर हाथ रख कर देखना—कलेजे पर हाथ रख कर देखो कसूर तुम्हारा है या मेरा?

कलेजे में आग लगना—(१) बहुत दुख होना। (२) द्वेष से जलन होना। (३) प्यास लगना।

कलेजे में डालना—पास रखना। जी चाहता है उसे कलेजे में डाल कर रखूँ।

कलेजे में घुसना वा बैठना—हृदय में विश्वास जमाकर भेद ले

लेना, मतलब निकाल लेना। वह ऐसा कलेजे में घुस जाता है सारा भेद ले लेता है। पहिले तो कलेजे में घुस गया और काम के बाद आँख दिखा दी।

कलेजे से लगा कर रखना—(१) प्यारी वस्तु को दूर न होने देना। मैं अपने बेटे को कलेजे से लगाकर रखूँगी। (२) बहुत प्रयत्न से रक्षा करना। मैंने सात बरस कलेजे से लगाकर रखा है, इसे खो मत देना।

कलेजे से लगाना—छाती से लगाना, भेंटना, प्यार करना।

कलेवर चढ़ाना-मूर्ति पर घी सिंदूर लेप करना।

कलेवर बदलना—(१) शरीर त्याग करना। महात्मा जी कल कलेवर बदल लेंगे। (२) दूसरा रूप करना। बार बार कलेवर बद-लते रहते हो। (३) रोग के बाद नया शरीर होना। (४) पुराना कपड़ा उतार कर नया पहिनना।

कलेवा करना—खा जाना। काल कलेवा कर गयो बड़े बड़े हू भूप।

कल्ला दबाना—(१) गला दबाना। मैंने उसका कल्ला दबा दिया जब दम घुटने लगा तब स्वीकार करली। (२) अपने सामने दूसरे को न बोलने देना। वह जिस समय बोलते हैं अच्छे अच्छे लेक्चरारों के कल्ले दबा देते हैं।

कल्ला मारना—डींग मारना। गाल बजाना।

कस कर रखना—दबा लेना, रोक लेना। कसकर राखो मित्र हूँ मुँह आई मुसकानि।

कसक मिटाना वा निकालना—(१) पहिले वैर का बदला लेना। अगर अकेले मिल गये तो सारी कसक निकाल लूँगा (२) दुख दूर होना। मेरे दिल में यही कसक थी सो निकल गई।

कसा कसाया—चलने के लिये बिल्कुल तैयार। मैं तों कसा कसाया खड़ा हूँ तुम्हीं देर करते हो। घोड़ा कसा कसाया है देर कुछ भी नहीं।

कसम उतारना—तनिक कुछ करना। तुम तो कसम उतारना चाहते थे इसलिये दस मिनट के लिये जरा हो आये।

कसम खाने को—एक भी, जरा-साभी। मेरे कसम खाने को बेटा नहीं। कसम खाने को दम नहीं मेरे पास।

कसर निकालना:—(१) कमी पूरी कर लेना। इधर की कसर उधर निकाल लेंगे। (२) तुम भी कभी हत्थे चढ़ोगे तब सारी कसर निकाल लूँगा (बदला लेलूँगा)।

कसा कसाया—बिल्कुल तैयार। हम तो कसे कसाये हैं तुम्हारी देर है।

कसाई के खूंटे से बाँधना—बेरहम के हाथों देना। गऊ सी बेटी तुमने कसाई के खूंटे बाँध दी यह बुरा किया।

कसाला पड़ना—कष्ट होना। कहै ठाकुर कासौं कहा कहिये हमें प्रीति करे के कसाले पड़े।

कसौटी पर कसना—परीक्षा करना, अच्छी तरह जाँच लेना। कसौटी पर कस कर ही किसी से मैत्री करनी चाहिए।

कह कहा उड़ाना, लगाना वा मारना—मज़ाक उड़ाना, हँसी करना। मेरी हर एक सम्मति का वे कह कहा उड़ाने लगते हैं, लेकिन पीछे याद आती है कि बात ठीक थी।

कह बैठना—(१) ताना देना, शिकायत करना। इस लिये वह ज़िबह करते हैं मुँह फेर कर, यह न कह बैठूं कि आँखों की मुरव्वत क्या हुई। (२) सख्त जवाब देना। मैं वहाँ नहीं जाऊँगा क्योंकि यदि वह कुछ कह बैठा तो खून खच्चर हो जायगा।

कहना बदना—(१) निश्चय ठहराना। यह बात पहिले से कही बदी थी। (२) प्रतिज्ञा कर। तुम कह बद कर निकल जाते हो। (३) ललकार कर, खुले खजाने। हम जो कुछ करते हैं कह बद कर करते हैं, छिप कर नहीं।

कहना सुनना—(१) गाली गलौज। मेरी उनसे जरा सी बात पर कहा सुनी हो गई है (२) बात चीत करना, दिखाने के लिये। यह बात तो केवल कहने सुनने के लिये है असलियत कुछ और है।

कहने पर जाना—किसी की बात पर विश्वास कर के काम करना। उसके कहने पर मत जाओ, वह महा झूठा आदमी है।

कहने में वा कहने सुनने में आना—(१) बहकाये में। मैं तो उसके कहने में आकर वहाँ चला गया अब पछता रहा हूँ। (२) बनावटी बातों पर विश्वास करना, धोखे में आना। चतुर लोग धूर्तों के कहने सुनने में नहीं आते।

क़हर करना—(१) अत्याचार करना। (२) आश्चर्यकारी कर्तव्य। (३) असंभव को संभव करना।

क़हर टूटना—आफ़त आना। मेरे पर क़हर टूटा पड़ा बीमार मैं यक दम।

कहाँ का—(१) असाधारण, बड़ा भारी। कहाँ के मूर्ख से पाला पड़ा। (२) जो नहीं है, कहीं का नहीं। वे

कहाँ के हमारे दोस्त हैं ? वे कहाँ के सत्यवादी हैं।

कहाँ का कहाँ—बहुत दूर। हम लोग चलते चलते कहाँ के कहाँ जा निकले।

कहाँ से—क्यों व्यर्थ में। पता नहीं यह कहाँ से आ मरा हम तो शान्ति से समय बिता रहे थे अब यह झगड़ा भी सिर पड़ा। (२) नहीं। अब उनके दर्शन कहाँ से हो सकते हैं, वे तो सदा के लिये विदा हुए।

कहाँ की बात—ये बात ठीक नहीं। अजी! कहाँ की बात वो सदा योंहीं कहा करते हैं।

कहीं आकर—बहुत दिनों में। चौदह बरस व्याह को हो गये अब कहीं आकर संतान हुई है।

कहीं और—दूसरी जगह। कहीं और माँगो यहाँ कुछ न मिलेगा।

कहीं कहीं—किसी किसी स्थान पर। उस प्रदेश में कहीं कहीं पहाड़ भी हैं। (२) बहुत कम। मोती समुद्र में कहीं कहीं मिलता है सब जगह नहीं।

कहीं का जो पहले न देखा हो, बड़ा भारी। उल्लू कहीं का, चल यहाँ से।

कहीं का न रहना वा होना—किसी भी योग्य न रहना मैं तो अब कहीं का न रहा न नौकरी कर सकता हूँ और न रोजगार ही।

कहीं......न—ऐसा न हो कि। कहीं तुम भी वहीं न रह जाना। कहीं वह न आजाय।

कहीं......तो नहीं—कहीं रास्ता तो नहीं भूल गया।

काँकरी चुनना—चिंता या वियोग के कारण मन न लगना। काँकरी चुनते हुए दिन गुजरते हैं क्या करें मन मार कर बैठ रहना पड़ा।

काँच खोलना—(१) प्रसंग करना। कामी से कुत्ता भला ऋतु पर खोले काँच, राम नाम जाना नहीं भावी जाय न बाँच। (२) हिम्मत छोड़ना, धोती खोलना। बस इतने में ही काँच खोल दी।

काँच निकलना—कमजोरी या परिश्रम में असमर्थ होना। इस पत्थर को उठाओ तो काँच निकल आवे।

काँच निकालना—(१) बेदम करना, बहुत चोट या कष्ट पहुँचाना। इतना माल ढोना पड़ता है कि काँच निकाल देता है (२) बहुत मेहनत कराना। देते हैं तीन आने और काँच निकाल कर छोड़ते हैं।

काँचा मन कच्चा मन। जप माला छापा तिलक सरै न एकौ काम, मन काँचे नाचे वृथा साँचे राँचे राम।

काँचा मन होना—छोटा हृदय

पक्का दिल न होना। समय सुभाव नारिकर साँचा, मगंल महमन भयउ अति काँचा।

काँटा खटकना—संदेह होना। दिल में रहे काँटा न खटकता।

काँटा चुभोना—तंग करना। क्यों काँटा चुभोते हो बिचारे गरीब को दो पैसे पैदा करने दो।

काँटा निकलना निकल जाना—संदेह, बाधा, जलन, या दुख मिटना। आपकी बातों से मेरे हृदय का काँटा निकल गया।

काँटा निकालना—(१) खटका मिटाना। (२) बाधा वा कष्ट दूर करना। मेरे बेटे को नौकर रख कर मेरा काँटा निकाल दिया।

काँटा बोना—(१) बुराई पैदा करना, अनिष्ट करना। जो तो को काँटा बुवै ताहि बोव तू फूल। (२) अड़चन डालना। अगर आप हमारे मार्ग में काँटा बोते हैं तो याद रखिये हम भी बुरी तरह पेश आयेंगे। (काँटा बिछाना भी प्र० है)।

काँटा सा खटकना—अच्छा न लगना। मेरी आखों या दिल में तो कुपूत लड़का काँटों सा खटकता है।

काँटा सा होना—बहुत दुबला पतला होना या हो जाना। वह तो इस बीमारी में सूख कर काँटा सा हो गया।

काँटी खाना—कैद काटना। जनाब, वह मामूली जुवारी नहीं है, कितनी ही काँटी खा चुका है।

काँटे की—सुसंगत, नपी तुली, न करने योग्य। वह बड़े काँटे की बात कहता है अच्छे अच्छे वकील तक दंग रह जाते हैं।

काँटों पर लोटना—(१) बेचैन होना, दुख से तड़पना। इस वक्त तो इतनी तकलीफ़ है कि काँटों पर लोट रहा है। (२) ईर्ष्या या जलन होना। सौत के लड़कों को देख कर तो काँटों पर लोटती है।

काँटों में उलझना—विपत्ति में उलझना। काँटों में यदि हो न उलझना, थोड़ा सा लिखा बहुत समझना।

काँटों में खींचना वा घसीटना—(१) किसी की बहुत बड़ाई करके उसे शर्मिन्दा करना। ये सब बातें कह कर मुझे काँटो में न घसीटिये। (२) बहुत दुख देना। आप ने मुझे बहुत काँटों में घसीटा है अब मैं भी उसका बदला लूँगा।

काँटों में फँसना—मुश्किल में पड़ना। हम तो इस काम को हाथों में लेकर काँटों में फँस गये।

काँध मारना—धोखा देना, काम न आना। सजग जो नहीं मार पल

काँधा, बुध कहिये हस्ति कहाँ बाँधा।

काई छुड़ाना—(१) मैलदूर करना। (२) दुःख दरिद्रता दूर करना। उन्होंने हमारी बहुत ही मदद की हम पैसे पैसे को मोहताज थे हमारी काई छुड़ाई।

काई सा फट जाना—तितर बितर होना। हजारों आदमियों की भीड़ थी लेकिन जब तलवार लेकर निकला तब काई सी फट गई।

कागज़ करना—दस्तावेज, टिकट के कागज़ पर रुपये या जायदाद का अधिकार लिखना। मैंने दो सौ रुपये का कागज़ कर दिया है, वे चार सौ रुपये का कागज़ कराना चाहते थे।

कागज़ काला करना—फिजूल कुछ लिखना। क्यों कागज़ काला कर रहे हो मैं जानता हूँ तुम्हें जैसा लिखना आता है।

कागज़ की नाव—न टिकने वाली चीज। यह सिर्फ कागज़ की नाव है ठहर नहीं सकती।

कागज़ के वा कागजी घोड़े दौड़ाना—खूब लिखा पढ़ी करना। तुम कागजी घोड़े तो बहुत दौड़ाते हो लेकिन खुद जाकर मिलते तक नहीं।

कागज़ खोलना—भेद या दोष जाहिर करना। सुधारक ने कितने ही विधवा आश्रमों के कागज़ खोल डाले।

कागज़ पर चढ़ाना—लिख लेना, टीपना। मैंने कागज़ पर चढ़ा लिया है भूलूंगा नहीं।

कागा रौल मचाना—चख़ चख़ करना। महमानों ने ऐसी कागा रौल मचा रखी है कि कान पड़ी आवाज़ नहीं सुनाई देती।

काछ कछना—स्वांग भरना। जस काछ कछे तस नाच नचे।

काजल की कोठरी—दूषित या कलंकित स्थान काजल की कोठरी में कैसहु सयाने जायँ एक लीक काजल की लागै पै लागैरी। यह मथुरा काजल की ओवरी जे आवे ते कारे।

काजल घालना, घुलाना वा देना—आँखों में काजल लगाना। ऐसी पै तो ऐसी, काजल दीये पै कैसी।

काट खाना—नुकसान उठाना। आप की वजह से मैंने २५) की काट खाई वरना उस जैसे पचास चालाक मुझे काट नहीं दे सकते।

काट खाने को दौड़ना—रूखे पन से जवाब देना, हर बात पर बिगड़ना। उस से बात करो तो काट खाने को दौड़ता है।

काट छाँट करना—(१) कमी

करना। उसने डेढ़ सौ में काट छाँट करके तीस आदमी चुने ।

काट फाँस करना—(२) इधर की उधर लगाना। वह काट फाँस किया करता है इसी से मित्रों में गाँठ पड़ी।

काटने दौड़ना—चिड़ चिड़ाना, नाराज होना। उससे रुपये माँगने जाते हैं तो वह काटने दौड़ता है।

काटे खाना—(१) चित्त व्यथित होना। आज कपड़े भी काटे खाते हैं। (२) सूना लगना । उनके विना मकान काटे खाता है ।

काटे न कटना (१) बहुत कठिन होना। यह पेंसिल तो काटे नहीं कटती। (२) विताये न बीतना खतम ही न होना। आज कल तो रात काटे नहीं कटती।

काटो तो खून नहीं—दुखदाई, भयानक या रहस्य खोलने वाली बात को सुन कर सन्न रह जाना। शरीफ आदमी थे ज्योंही उसने भंडा फोड़ा बस उनके तो होश उड़ गये काटो तो खून नहीं रहा।

काठ का उल्लू—वज्र मूर्ख, घोर अज्ञानी। सेठ तो तुम्हारा काठ का उल्लू है उसे ज्ञान नहीं।

काठ का घोड़ा—लंगड़े आदमी की लकड़ी। हमारा सहारा है काठ का घोड़ा ।

काठ की हाँडी—(१) धोखे की चीज़। (२) जो टिकाउ न हो या जिसका धोखा एक ही बार चले । जैसे हाँडी काठ की चढ़ै न दूजी बार।

काठ चबाना—रूखी सूखी रोटी खाना। सारी उम्र हमने तो काठ चबाते काटी।

काठ में पाँव देना—(१) अपराधी को पहिले पाँव में काठ की बेड़ी पहनाते थे । (२) स्वयं बंधन में पड़ना, आफ़त में फँसना । फूले फूले फिरत हैं भयो हमारो व्याह, तुलसी गाय बजाय के दियो काठ में पाँव।

काठ में पाँव पड़ना—कफ़स में जान, मुश्किल में पड़ना । क्या बतावें ऐसा काठ में पाँव पड़ गया है, कुछ भी तो नहीं कर पाते।

काठ होना—(१) चेतना रहित होना । वारंट के सिपाही को यकायक देखते ही वह तो काठ हो गया। (२) सूख कर सख़्त हो जाना। वह तुम्हारी याद में काठ हुए जा रहे हैं।

कान आ लगना—कानों में खुफिया बातें करना। मैं उठ गया कि गैर तेरे कानों आलगा।

कान उठाना—(१) सुनने के लिये तैयार होना । मैं तो कान उठाये हुए था, तुमने ही कुछ नहीं कहा। (२) चौकन्ना, सचेत

होना। काम करते हुए भी वह हर तरफ़ कान उठाये रहता है।

कान उमेठना वा ऐंठना—(१) चेतावनी देना, आज्ञा देना। तुम ज़रा से कान उमेठ दोगे तो मुझे विश्वास है वह मुझे १००) के लिये मने नहीं करेगा। (२) न करने की प्रतिज्ञा करता हूँ। मैं कान ऐंठता हूँ, ऐसा फिर कभी न होगा। (३) ग़लती मानना। वास्तव में भूल हुई मैं कान ऐंठता हूँ। (४) दण्ड देना। मैंने ज़रा सी भूल पर भी उसके खूब कान ऐंठ दिये हैं।

कान करना—ध्यान देना, सुनना। बालक वचन करहिं नहिं काना।

कान कतरना वा काटना—(१) मात करना, बढ़ कर होना। अकबर केवल तेरह बरस का था लेकिन होशियारी और जवाँमर्दी में बड़े बड़े जवानों के कान काटता था। (२) चकमा देना। मैंने बड़े बड़े चालाकों के कान कतरे हैं तुम बेचारे मेरे क्या कान कतरोगे।

कान का कच्चा—(१) शीघ्र विश्वासी, बहकाये में आजाने वाला। वह कान का कच्चा है तुम्हारे कहते ही वह उसे दोषी समझ कर निकाल देगा। (२) सुन कर कह देने वाला। औरतें कान की कच्ची होती हैं।

कान का परदा फटना—अधिक हल्ला गुल्ला न सह सकना। मेरे कान का परदा फटता है इन बाजे वालों को बंद करो।

कान का मैल निकलना—सुनने के लायक होना (व्यंग्य)। कान का मैल निकलवाओ तब आकर सुनना।

कान खड़े करना—(१) चौकन्ना करना, सचेत करना। फिर उड़ती पहुँची जो भनक कान में अपने, सुनते ही खड़े कर दिये बस कान हमारे। (२) होशियार होना। बहुत कुछ खो चुके अब कान खड़े करो।

कान खड़े होना—चेत होना। इतनी हानि उठाई अब कान खड़े हुए, ऐसा न करेंगे।

कान खाना वा खाजाना—(१) बहुत शोर गुल मचाना, बहुत बातें करना। क्यों कान खाए जाते हो बस चुप रहो। (२) बहुत बार कहना। मैं ने तीस बार घर पर जाकर उनके कान खाये तब जाकर उन्होंने तुम्हें नौकर रखा है।

कान खा लिये—मारे बक बक के परेशान कर दिया। तुमने तो मेरे कान खालिये आखिर ऐसी भी क्या बात।

कान खुलना वा खुल जाना—सबक़ लेना, समझ जाना । अब इतने दिनों बाद मेरे कान खुले खैर अब होशियारी से रहूँगा ।

कान खुजाने की फुरसत न होना—जरा वक्त खाली न होना । आज कल तो कामों में इतना व्यस्त हूँ कि कान खुजाने तक की फुरसत नहीं मिलती ।

कान खोलना, खोल देना—चेताना, भूल बता देना । अब महात्मा जी ने मेरे कान खोल दिये मैं समझता था कि मैं ही ठीक था ।

कान गरम करना—दबाव डालना । तुम उसके कान गरम करो तो मानेगा ।

कान दबाना—विरोध न करना, सहमना । अगर दबाव किसी का तुम्हारे दिल पर नहीं, तो हम को देख कर तुम कान क्यों दबाते हो ?

कान देना—ध्यान देना । हम ऐसी मूर्खता पूर्ण बातों पर कान नहीं देते ।

कान धरना—(१) ध्यान से सुनना । मैं पहिले से ही कान धरे हुए था इसलिये सारी बातें सुन लीं । (२) सुना हुआ याद रखना । मेरे कहने पर कुछ कान धरो, मुँह इधर फेरो कुछ तो बात करो । (३) न करने की प्रतिज्ञा करना । अब कान धरता हूँ कभी ऐसा न करूँगा । (४) कान उमेठना । (५) मानना । वह किसी की शिक्षा उपदेश कान नहीं धरता ।

कान न दिया जाना—(१) न सुना जाना । ठठेरों के बाजार में कान नहीं दिया जाता । (२) करुण स्वर रहम के कारण न सुनना चाहना । बच्चे का माँ के लिये रोना सुन कान नहीं दिया जाता । (३) न सुना जाना । ऐसी बातों पर कान नहीं दिये जाते, ये लोग तो कहा ही करते हैं ।

कान न हिलाना—चूँ न करना, बिना विरोध बात मान लेना । चिन्ता न करो मैं जब उससे कहूँगा तो वह कान भी न हिलावेगा ।

कान पकड़ना (१) भूल स्वीकार करना । लेती थी ऐसी आन बान से तान कि पकड़ता था तानसेन भी कान (२) गलती पकड़ने पर गुरु मानना । मैं कान पकड़ता हूँ आप उस्ताद निकले । (३) न करने की प्रतिज्ञा करना । आज से कान पकड़ते हैं, ऐसा न करेंगे (४) पछतावे के साथ प्रतिज्ञा । भाई इस बार तो फस गये अब जमानत देने से कान पकड़ते हैं । (५) किनारा कसना । मुकदमा लड़ाने से वह हमेशा कान पकड़ते

हैं। चाहे कितना ही नुकसान क्यों न होजावे। (६) जबरदस्ती। उसे कान पकड़ कर करा लूंगा, वह मेरा मित्र है।

कान पकड़ी छेरी—आज्ञा-कारिणी। वह तो मेरी कान पकड़ी छेरी (लौंडी) है, कहते ही फौरन करेगी।

कान पकड़ कर निकाल देना—बेइज्जती के साथ बाहर करना। तुम यों मकान न छोड़ोगे तो कान पकड़ कर निकाल दूँगा।

कान पड़ी आवाज़ न सुनना—बहुत शोर गुल होना। वहाँ कारखाने में तो कान पड़ी आवाज़ भी नहीं सुन सकते।

कान पर जूँ न रेंगना—(१) जरा भी परवाह न होना। हजार कहो उसके कान पर जूँ नहीं रेंगती। (२) बेखबर होना। इतना सब कुछ होगया और तुम्हारे कान पर जूँ तक न रेंगी।

कान पर से गोली जाना—किसी विपत्ति से बाल बाल बच जाना। मैं तो बिलकुल आ ही गया था चक्कर में बस यों समझो कान पर से गोली गई है।

कान पर हाथ धरना व रखना—(१) एक दम न सुनना, मानना। पूछते ही वह कान पर हाथ धरने लगा। (२) डरना। ऐसे दृश्य को देखते एलिस ने कान पर हाथ रख लिये। (३) लाइल्मी या अज्ञानता जाहिर करना। वह कानों पर हाथ रखते हैं, उन्हें क्या खबर।

कान पूँछ फटकारना—सावधान होना। इतना सुनते ही वह कान पूँछ फटकार कर उठ खड़े हुए।

कान पूँछ दबा कर चला जाना—चुपचाप चले जाना, बिना विरोध किये टल जाना। जरा सा डर दिखाया और देखा उनने जब हमको, दबा कर कान पूँछ अपनी हुए रुख़सत यहाँ से वो।

कान फटना वा कान का परदा फटना—शब्द सुनने से बाज़ आना। तोपों की आवाजों से कान फटे जाते हैं।

कान फड़ फड़ाना—होशियार होना। (कुत्ते ऐसा करते हैं उसी से यह मुहावरा लिया है)। ज्यों ही उनसे कहा लगे कान फड़ फड़ाने।

कान फूँकना—(१) चेला बनाना। मैंने उसके कान फूंके हैं वह मेरा आज्ञाकारी है। (२) कान भरना। उसने मेरी ओर से उनके कान फूंक दिये हैं, इसलिये वे नाराज़ हैं।

कान भरना वा कान भर देना—(१) किसी के विरुद्ध किसी के मन में बात बैठा देना। लोगों ने

पहले से ही उनके कान भर दिये थे, इस लिये हमारा कहना सुनना सब व्यर्थ हुआ।

कान भर जाना – सुनते सुनते जी ऊब जाना। बस मैं नहीं सुनना चाहता मेरे तो कान भर गये ऐसी बातों से।

कान में डाल देना—सरसरी तौर पर सुना देना। यह बात पहिले से ही जरा उनके कन में भी डाल देना।

कान में तेल या रूई डाल बैठना—(१) सुन कर भी ध्यान न देना। अजी! मैं तो कान में तेल डाल कर बैठ गया हूँ कोई बुराई करो या भलाई हमें क्या चिन्ता? (२) वेखबर सा या लापरवाह हो जाना। लोग रुपया माँगते हैं उसने कान में रूई ठूँस ली है।

कान में फूँकना–(१) कान भरना, भीतर ही भीतर किसी को बहका देना। उन्होंने मेरे विरुद्ध उनके कान में फूँक भरदी है, इसलिये मैं सिफारिश नहीं कर सकता। (२) कोई लगती हुई बात कहना। कान में फूँकी जब मैंने वह बात, आज तो सुनते ही वह दम खा रहा।

कान में रखना—याद रखना। मेरी यह बात कान में रखना नहीं तो निश्चय धोखा खाओगे। मैं हर एक बात कान में रखता हूँ, परन्तु भेद मौके पर खोलता हूँ।

कान रखना—निगाह में रखना, पता लगाना। हमारे हर एक भेद पर वे कान रखते हैं, जरा सी बात हुई और वहाँ पहुँची।

कान से लगना—(१) चुपके चुपके कहना। जब से बुरे लोग कान लगने लगे तभी से वह काइयाँ बने हैं पहिले यह बात न थी। (२) मानी जाना। तुम्हारी बात उनके कान जरूर लगती हैं कह कर तो देखो। (३) कान के पीछे घाव होना। बच्चे के कान लग गये हैं।

कान लगाना—ध्यान देना। मेरी हरेक बात पर वह कान लगाते हैं।

कान लगा कर सुनना—गौर से एक एक शब्द सुनना। तुम कहो मैं कान लगा कर सुन रहा हूँ।

कान से निकल जाना—सुनी बात भूल जाना। जरूर याद रखना, क्योंकि मैं जानता हूँ तुम्हारे कान से बात थोड़ी देर में निकल जाती है।

कान होना—चेत वा ख्याल होना। जब तक उन्होंने हानि न उठाई तब तक कान न हुए।

काना फूँसी करना, होना— चुपके चुपके बात होना। पहिले से तो ऐसे खम ठोक कर तैयार थे

अब डरते और काना फूँसी करते हो।

कानी के व्याह को सौ जोखों—जहाँ कमी या खामी हो वहाँ सौ डर। भाई! कर तो डालूँ लेकिन तुम्हें मालूम है कि कानी के व्याह को सौ जोखों होती हैं।

कानी कौड़ी का न होना—किसी कीमत का भी नहीं। मैं तो कानी कौड़ी भी न दूँ, यह कानी कौड़ी का भी नहीं है।

कानों कान खबर न होना—जरा भी खबर न होना, कुछ भी सुनने में न आना। देखो! कानों कान भी ख़बर न होने पावे और उसका काम भी हो जावे।

कानों कान फैलना—एक से दूसरे उससे तीसरे आदि का सुनना। ख्याल रखो कोई जानने न पावे क्योंकि ऐसी बात कानों कान फैल जाती है।

कानों में उँगली देना—न सुनना। मैंने कानों में उँगली देली है अब कुछ भी कहा करो मैं न सुनूँगा।

कानों से काम लेना—पूछ ताछ करके या सुन कर भला बुरा समझना। भाई! उससे व्याह तो कर रहे हो लेकिन जरा कानों से काम लो संसार उसकी बाबत क्या कह रहा है।

काबू में करना—वश में करना। मैंने उसे काबू में कर लिया है अब वह तुमसे कुछ नहीं कह सकता।

काबू पर चढ़ना या चढ़ाना—दाँव पर चढ़ना, अधिकार में आना। मेरे काबू पर चढ़ गया तो मैं १००) झपट ही लूँगा।

काबू पाना—अधिकार होना। मैंने उसकी जायदाद पर काबू पा लिया है।

कानून छाँटना व बघारना—हुज्जत या कुतर्क करना, नुक्ता चीनी करना। खुद तो तैयार नहीं और दूसरा करता है तो कानून छाँटते हो।

काफिया तंग करना—बहुत हैरान या तंग करना। मैंने बार बार पूछ कर उसका काफ़िया तंग कर दिया।

काफिया तंग रहना, होना—नाकों दम रहना। इधर उधर आना जाना इतना अधिक है कि काफ़िया तंग रहता है।

काफिया मिलाना—(१) तुक बंदी करना। उसे कविता क्या आवे वह तो सिर्फ़ काफिया मिलाना जानता है। (२) साथी बनाना। हमने तो उनसे काफ़िया मिला लिया है।

काफूर होना—रफू चक्कर होना,

चंपत होना। देखते देखते ही तो वह काफ़ूर हो गया।

काम अटकना—हर्ज होना, कार्य रुकना। उनके बिना तुम्हारा कौन सा काम अटका है।

काम आना—(१) मारा जाना। उस लड़ाई में हज़ारों सिपाही काम आए। (२) प्रयोग में आना। तुम्हारी बंदूक फिर कब काम आयगी? (३) लाभ होना आखिर तुम्हारी अक्ल भी कुछ काम आयगी।

काम खुलना, खोलना—शुरू होना, करना। अभी काम खोला है बाज़ार में धीरे धीरे जानने लग ही जायँगे।

काम देना—व्यवहार में आना। रख छोड़ो वक्त पर काम देगी। वह किसी के काम नहीं आता।

काम करना—(१) असर करना, प्रभाव डालना। दवा इस समय तो काम कर गई। (२) कोशिश में कामयाब होना। यहाँ पर उसकी बुद्धि काम कर गई। (३) मतलब निकालना। वह अपना काम कर गया और तुम ताकते रह गये।

काम का—फायदे मंद। ऐसे मौके पर यह बड़ा काम का आदमी है।

काम के सिर होना—काम में लगना। महीनों से बेकार बैठे थे, काम के सिर हो गये, अच्छा ही है।

काम चमकना—रोजगार खूब चल जाना, आशातीत फायदा होना। दो साल के अंदर ही अंदर वैद्य जी का काम चमक गया है, अब मोटर में सैर करते हैं।

काम चलना—(१) होता रहना। सिंचाई का काम चल रहा है? (२) काम की गति धीमी हो जाना। अजी! काम चल रहा है वरना आमदनी कुछ भी नहीं। (३) कार्य सिद्ध हो जाना। इतने में तुम्हारा काम चल जाय तो ले जाओ।

काम चलाना—(१) चलता रखना। इस समय वही है जो १००) मासिक में काम चला रहा है वरना और कोई नहीं ऐसा कर सकता। (२) जैसे तैसे काम निकालना। भाई! काम चला रहा हूँ वरना धरती तो बिलकुल फट गई है।

काम तमाम या आखिर करना वा होना—(१) काम पूरा होना। यह काम तो तमाम हो गया। अब और बतलाइये क्या करना है? (२) मरना। लड़ाई में सारे आदमियों का काम तमाम हो गया, एक भी तो बाकी न रहा।

काम देखना—(१) चलते हुए काम की जाँच करना। मैं बाहर जा रहा हूँ जरा इनका काम देख लिया करना। (२) अपने कार्य से मतलब रखो। तुम्हें इन झगड़ों से क्या, तुम अपना काम देखो।

काम निकलनाः—(१) मतलब बनना, कार्य सिद्ध हो जाना। मुफ्त में निकले काम तो क्यों खर्चों दाम। (२) जरूरत पूरी होना। इससे काम निकले तो ले जाओ दूसरा तो मेरे पास नहीं है।

काम निकालना—(१) मतलब निकाल लेना। चालाक आदमी है, अपना काम निकल लेता है। (२) गुज़ारा करना। अभी तो काम निकालो फिर दूसरा ले लेना।

काम पड़ना—(१) आवश्यकता होना। जब काम पड़ेगा तो देखा जायगा (२) वास्ता पड़ना। चंदन पड़ा चमार घर, नित उठि कूटै चाम, चंदन बपुरा क्या करै पड़ा नीच से काम।

काम बँटाना—हाथ बँटाना, किसी कार्य में सहायता करना। भाई! कुछ तो काम बँटा लो मैं तुम्हारा कृतज्ञ होऊँगा।

काम बढ़ाना—(१) नियमित समय पर कोई काम बंद करना। सात बजे काम बढ़ा कर मैं आ सकूँगा पहिले नहीं (२) फौरन काम बढ़ा कर मैं मुर्दनी में चला गया। (३) रोजगार फैलाना। उसने बड़ा काम बढ़ा लिया है।

काम बनना—स्वार्थ सिद्ध होना, कार्य पूरा होना। मेरा काम तो बन गया, उसका चाहे कुछ भी हो।

काम बनाना—कार्य में सहायक होना। मौके पर खूब काम बनाया, नहीं तो बड़ी बदनामी थी।

काम बना रहना—समय अच्छा रहना। भगवान करे आपका काम बना रहे।

काम बिगड़ना—(१) बात बिगड़ना। उसका काम बिगड़ ही गया अब क्या होता है। (२) रोजगार नष्ट होना। इस बार के घाटे से उनका काम ही बिगड़ गया।

काम में आना—बर्ता जाना। यह भला किस काम में आयगी फेंको दूर।

काम भुगतना—पूर होना। काम भुगत गया अब निश्चित हुए।

काम भुगताना—पूरा करना। इनका काम भुगता दूँ तब तुम्हारा भी कर दूँगा।

काम में लाना उपयोग करना इस्तेमाल में रखना। रखे रखे

सड़ जायगा, जितना काम लाओगे उतना अच्छा रहेगा।

काम रखना—(१) होशियारी, कठिन कार्य। इस भीड़ में से निकलना काम रखता है। (२) वास्ता या ताल्लुक। तुम सिर्फ खाने से काम रखते हो काम से कुछ काम नहीं।

काम लगना—(१) नौकर होना। छ महीने की बेकारी के बाद अब २५) महीने का काम लगा है। (२) काम जारी होना। महीनों से काम लगा है, पर मंदिर अब भी तैयार नहीं हुआ।

काम लगा रहना—(१) व्यस्त रहना। उन्हें हर वक्त काम लगा रहता है, बात करने को वक्त नहीं। (२) काम पड़ता रहना। कोई आता है कोई जाता है यही काम दिन रात लगा रहता है।

काम लेना—(१) कार्य कराना। जो मनुष्य नौकरों से काम लेना नहीं जानता वह बर्बाद होगा ही। (२) इस्तेमाल करना। आप दवात से काम ले रहें या मैं ले जाऊँ?

काम से काम रखना—केवल अपने ही कार्य का ध्यान रखना। उन्हें तो काम से काम वे दुनिया के झंझटों में हाथ नहीं डालते।

काम से जाता रहना—नौकरी आदि से दूर हो जाना। वह बेचारा इस काम से भी जाता रहा।

काम होना—(१) मरना। गिरते ही उनका तो काम हो गया। (२) बहुत कष्ट पहुँचना। तुम आज्ञा दे रहे थे, उठाने वालों से पूछो। उनका काम हुआ जा रहा था। (३) जरूरत पूरी होना। मेरा काम तो हो गया अब तुम्हारा भी कर देंगे।

कायथ की खोपड़ी- बहुत धूर्त चालाक और दगाबाज़ आदमी। उसके फंदे में न फँसना उसके सिर में कायथ की खोपड़ी है, धोखा खाओगे।

कायम उठाना—शतरंज की बाजी बिना हार जीत के उठाना। कोई भी नहीं जीता बाजी कायम ही उठा दी।

क़ायल करना—(१) शर्मिन्दा करना। क्यों बेचारे को ज़रा सी बात पर क़ायल करते हो भूल हो गई सो हो गई (२) समझा बुझा कर बात मनवाना। जब दस आदमी क़ायल करेंगे तो करना ही पड़ेगा।

क़ायल होना—(१) दूसरे की बात को यथार्थ मान लेना। उसकी बात ठीक निकली तो मैं क़ायल हो गया। (२) स्वीकार करना। हम उसकी चालाकी के क़ायल हैं। (३) शर्मिन्दा होना।

काया पलट जाना—और से और हो जाना। तीस बरस में दिल्ली

की काया पलट गई। काया पलट होना भी प्रचलित हैं।

काया पलट देना—रूप बदल देना। दवाई ने इतना गुण किया कि उसकी काया ही पलट दी दुबले-पतले को मोटा-ताज़ा बना दिया।

कारखाना लगा रहना—आदमियों का जमघट रहना। यहाँ दिन भर कारखाना लगा रहता है।

कारूरा मिलना बहुत हेल मेल होना। आज कल उन्होंने सेठ जी से कारूरा मिला रखा है।

काल काटना—(१) वक्त गुजरना। (२) मुश्किल से समय बिताना। जैसे तैसे काल काट रहा हूँ।

काल के गाल में जाना—मर जाना, खतम हो जाना। जाना है एक दिन काल के गाल में सब को।

काल क्षेप करना—देर करना। क्यों काल क्षेप करते हो जल्दी चलो।

काल पाकर—(१) कुछ समय बाद। काल पाकर उसका रंग बदल जायगा। (२) मौका पाकर काल पाकर मैं आक्रमण करूँगा।

काला नाग—घातक, अत्यन्त कुटिल। वह आदमी काला नाग है सैकड़ों को डस चुका है।

काला पहाड़—डरावनी और न बीतने योग्य। दुःख की रातें काला पहाड़ हो जाती हैं।

काला मुँह करना—(१) बुरा काम करना। क्यों काला मुँह कर रहे हो दुनिया क्या कहेगी। (२) अनुचित सहगमन करना। तुमने भी काला मुँह किया है, मैं तुम्हें आदर्श जानता था। (३) बुरे आदमी का दूर होना। जाओ यहाँ से काला मुँह करो। (४) कलंक लगाना। ऐसे काम करके तुम अपना मुँह काला कर रहे हो। (५) बुरे को दूर हटाना। तुम्हें इन झगड़ों से क्या काम, जाने दो मुँह काला करो। (६) झंझट दूर करना। जो कुछ लेना देना है, ले दे कर मुँह काला करो। (७) कलंक का कारण होना। तुम आपके आप गये हमारा भी मुँह काला किया।

काला मुँह होना—कलंकित होना। हमारा व्यर्थ में ही मुँह काला हुआ।

काला बाल जानना, समझना—तुच्छ समझना। चोर कब का ज़ोर माने हैं, काला बाल उस को अपना जाने हैं।

काला भुजंग—बहुत काला आदमी। हद भी होती है वह तो काला भुजंग है।

कालिख लगना—मुँह पर बदनामी या कलंक लगना। हमारे मुँह पर कालिख लगी है किस मुँह से वहाँ जाऊँ।

कालिख लगाना—(१) बदनामी का कारण होना। इसी एक बात ने तुम्हारे मुँह में कालिख लगाई। (२) कलंक लगाना, दोषी ठहराना। उसने इस विषय में तुम्हारे ही मुँह में कालिख लगाई है।

काली माई खेलने लगना - डर से काँपना। मुझे देखते ही उसके सिर काली माई खेलने लगती है।

काली हाँडी सिर पर रखना वा धरना—कलंक लेना। क्यों काली हाँडी अपने सिर पर रखते हो और सुधार वादी तो ऐसा नहीं करते वे तो सिर्फ़ कहते हैं।

काले कोसों—बहुत दूर। ताते अब मरियत अपसोसन, मथुरा हूते गए सखीरी अब हरि काले कोसन।

काले कौवे खाना—बहुत उम्र तक जीवित रहना, उसने तो काले कौवे खाए हैं वह अभी कैसे मर सकता है।

काले तिल चबाना—(१) दुखी रहना। काले तिल चबाये हैं बेचारे छः महीने से खाट पर पड़ा है। (२) आधीनता या गुलामी में होना। ऐसे क्या मैंने तेरे काले तिल चबाये हैं जो मैं ही हरकाम करता मरूँ।

कावा काटना—(१) चक्कर में दौड़ना। अभी कावा काट कर मैं आया जाता हूँ। (२) आँख बचा कर निकल जाना। अभी था और अभी कावा काट कर निकल गया।

किच किची बाँधना—(१) क्रोध से दाँत काँपना। उन्हें इतना गुस्सा आया, किच किची बाँध रहे थे, या किच किची बँध गई। (२) दाँत पर दाँत रख कर खूब दबाना। किच किची बाँधे अभी दो टुकड़े हुआ।

किताब का कीड़ा—(१) मनुष्य जो हर समय किताब ही पढ़ता रहे। वह तो परीक्षा के समय किताब का कीड़ा बन जाता है। (३) किताबी ज्ञान रखने वाला। हम तो किताब के कीड़े हैं बाहर की दुनिया में किसी चीज़ का क्या रूप है यह हमें ज्ञान नहीं, जो लिखा है वह जानते हैं।

किताबी चेहरा—बहुत सुंदर, काव्य वर्णित शक्ल। उनका चेहरा बिल्कुल किताबी चेहरा है, मैंने ऐसी खूब सूरत कभी देखी नहीं।

किधर आया किधर गया—(१) आने जाने की ख़बर होना। हम को क्या खबर मुनीम को पता होगा कि रुपया किधर आया किधर

गया। (२) ख़बर न होना। हम तो चारपाई पर बेसुध पड़े थे हमें क्या ख़बर किधर आया किधर गया।

किधर का चाँदा निकला—अनहोनी बात होना, जिसकी आशा न हो उसका मिलना। अच्छा आप आये हैं ! आज किधर का चाँद निकला।

किधर जाऊँ क्या करूँ—कोई उपाय नहीं, क्या उपाय करूँ। छिपने को जगह नहीं देने को रुपये नहीं किधर जाऊँ क्या करूँ।

किनारा करना व कसना—दूर होना, छोड़ना। वह गवाही आदि कचहरी के कामों से हमेशा किनारा कसते हैं। यहाँ ठहरने का काम नहीं यहाँ से किनारा करो।

किनारे करना—दूर करना। इसे किनारे करो। यह काम नहीं कर सकता।

किनारे न जाना—दूर रहना। मैं ऐसे काम के किनारे भी नहीं जाता।

किनारे न लगना—पास न फटकना। मौका आवेगा तो मैं भी किनारे न लगूँगा।

किनारे बैठना—(१) अलग हो जाना। मैं खुद ही कर लूँगा तुम किनारे बैठो। (२) मरने को तैयार होना। तुम अपने को बचाओ हम तो किनारे बैठे ही हैं।

किनारे लगना—समाप्त होना, मरना। वह तो एक ही बार में किनारे लगे अब तुम्हारी बारी है।

किनारे लगाना—खतम करना। जब हाथ में लिया है तो किनारे पर लगाओ।

किनारे होना—छुट्टी पाना। हम तो इन कामों से किनारे हुए अब तुम्हारी तुम जानो।

किर किरा हो जाना—काम बिगड़ जाना, आनन्द न आना। तुम्हारे बिना सारे नाटक का मज़ा किर किरा हो जायगा।

किराया उतारना—भाड़ा दे देना। मैंने छ महीने का किराया तो उतार दिया।

किलकारी मारना—खूब खुश होना। चले हनुमान मार किलकारी।

किला टूटना—मुश्किल आसान होना, असंभव संभव होना। तुमने अगर यह काम कर लिया तो समझो किला टूट गया (किला तोड़ देना भी चलता है)।

किल्ली ऐंठना वा घुमाना—युक्ति करना, तरकीब करना। मैं ऐसी किल्ली ऐंठूँगा कि आप खुद ही मेरा काम करने को तैयार हो जायँगे।

किवाड़ तोड़ तोड़ कर खाना—दुख से दिन काटना। हुए गरीबी

से इतने पायाँ, किवाड़ तोड़ कर खा रहे हैं।

किस खेत वा बाग का बथुआ वा मूली है - तुच्छ हैं, कुछ कीमत नहीं, किसी गिनती में नहीं। मैं उसे क्या समझता हूँ वह किस खेत की मूली है।

किस दर्द वा मर्ज की दवा है— क्या फायदा है किस काम आ सकता है। अगर तुम काम ही न करोगे तो बताओ तुम किस मर्ज की दवा हो।

किस मुँह से–(१) कैसे। क्यों कर, हम जिन्दा क्यों रहें न वह हम से गर मिले, किस मुँह से हम कहें कि न वह उम्र भर मिले (२) किस शौक से, किस हौसले या अधिकार से। चाँद किस मुँह से तेरे मुँह के बराबर होगा।

किसी का हो रहना—(१) गुलाम बनना। क्यों हाथ पैर रहते किसी के हो रहे हो। (२) अनुसार चलना। किसी के हो रहे या किसी को कर रहे (कहावत)।

किसी की चलाना—किसी का ज़िकर करना। किसी की क्या चलाते हो अपनी तरफ़ तो देखो, तुम में कितने गुण हैं ?

किसी की चमकना— वृद्धि होना, यश फैलना। आज कल तो तुम्हारी चमक रही है, हर एक के मुख पर तुम्हारा ही नाम है।

किसी के देवता का कँचकर जाना—होश हवास न रहना, बहुत डर से बोलने, करने लायक न होना। एक दम वारण्ट का नाम सुनते ही उनके देवता कूँच कर गये।

किसी के बल पर कूदना— किसी की सहायता की आशा पर बढ़ बढ़ कर बातें करना। तुम जिस के बल पर कूदते हो वह मेरे खिलाफ़ कुछ नहीं कर सकता।

किसी के हक में कांटें बोना— किसी को हानि पहुँचाना। अगर तुम्हारा काम नहीं बनता था तो तुमने दूसरे के हक़ में कांटें क्यों बोए, उसी का बनने देते।

किसी को उड़ाना—(१) स्त्री को फ़ुसला कर ले भागना। मैं तो इसे मद्रास से उड़ाकर लाया हूँ। (२) धोखा देना। क्यों बेचारे को उड़ा रहे हो, गरीब है।

किसी चीज पर थूकना—चीज़ से घृणा करना, सरोकार न रखना। मुझे क्या जरूरत है मैं तो उस पर थूँकू भी नहीं यह तो सिर्फ तुम्हारी वजह से ऐसा किया।

किसी जगह को सिर पर उठाना—बहुत शोर गुल करना।

क्यों सारा मदरसा सिर पर उठा रखा है क्या कोई मास्टर नहीं है ?

किसी पर छुरी तेज रहना वा होना—(१) कमजोर को दण्ड देना। बस उनसे तो वश नहीं चलता मुझ पर हर बात में छुरी तेज रहती है, मुझे खाजाओ। (२) मारने को तैयार होना। कहिये किस के लिये छुरी तेज कर रहे हो (कभी कभी दुरालोचक या मुकदमे बाज़ की कलम चलने पर भी कहते हैं)।

किसी पर जान, जाना, देना वा मरना—(१) आशिक होना। हो गया मरना भी मुश्किल आप पर मर कर मुझे। (२) प्राणों से अधिक प्यार करना। जान देता हूँ नाम पर उसके।

किसी पर भूलना वा भूल कर बैठना—सहायता पर घमंड करना। वह वक्त पर आँख फेर लेता है, उस पर भूल कर बैठना मूर्खता है।

किसी बात वस्तु के लाले पड़ना—बहुत इच्छा होने पर भी न मिलना। यहाँ रोटियों के हैं लाले पड़े, जुबाँ पै हमारे हैं ताले पड़े।

किस्मत आजमाना—कोई काम शुरू करके यह देखना कि फलीभूत होते हैं या नहीं। मैं तो किस्मत आजमा रहा हूँ यों इस काम से क्या पूरा पड़ेगा।

किस्मत उलटना वा बिगाड़ना—भाग्य अच्छा न होना, कार्य में सफलता न मिलनी। किस्मत उलट गई तो हुआ क्या जनाब, कल थे तख्त नशीं आज माँगते फिरते।

किस्मत का लिखा पूरा होना—भाग्य में लिखा हुआ मिलना। ख़त लिखा मुझको तो उसमें नाम भी पूरा न था क्या करूँ किस्मत का लिखा आज पूरा हो गया।

किस्मत जागना—भाग्य खुलना, समय अनुकूल होना। उनकी किस्मत जाग गई और व्यौपार में लाभ ही लाभ होता गया।

किस्मत चमकना—भाग्य से कार्य का बढ़ते जाना। यश फैलना। किस्मत चमक गई वह राजा की पदवी पर जा पहुँचा।

किस्मत पलटना
किस्मत फिरना } प्रारब्ध का अच्छे से बुरा या बुरे से अच्छा होना। किस्मत फिरते देर नहीं लगती फिर देखो क्या होता है।

किस्मत फूटना—दिन बुरे आना, काम बिगड़ना। किस्मत फूटगई हैं करें क्या हर रोजगार में घाटा दिखाई देता है।

किस्मत लड़ना—(१) भाग्य

परीक्षा होना। बीस अर्जियें हैं किस्मत लड़ रही हैं देखें कौन जीते। (२) भाग्य खुलना। उनकी किस्मत लड़गई वे ऊँचे पदपर पहुँच गये।

किस्सा उठाना वा खड़ा करना —झगड़ा शुरू करना। क्यों व्यर्थ में किस्सा खड़ा करते हो जो होगया बस होगया, अब उसका क्या जिक्र करना।

किस्सा खतम करना चुकाना तमाम या पाक करना—(१) झगड़ा मिटाना। अजी! यह कहे उतने रुपये देकर किस्सा खतम करो। (२) किसी वस्तु या विषय को समूल नष्ट करना। जाने भी दो किस्सा तमाम करो अब और कोई बात कहो।

किस्सा खतम होना, चुकना, तमाम या पाक होना—(१) झगड़ा मिटना। (२) किसी बात या विषय का समूल नष्ट होना।

किस्सा मोल लेना—आफ़त या झगड़ा सिर पर लेना। क्यों व्यर्थ में किस्सा मोल लेते हो यह जाने इसका काम जाने तुम्हें इससे क्या?

कीचड़ में फँसना—संकट या कठिनाई में पड़ना। क्या करें हम तो उसके साथ दुकान खोलकर कीचड़ में फँस गये रुपया भी फँसा पड़ा है और दुकानदारी भी मिट्टी हो रही है।

कीड़े काटना—बेचैनी या जी उकताना। दमभर बैठे नहीं कि कीड़े काटने लगे।

कीमत ठहराना, चुकाना—मूल्य निश्चित करना। कीमत ठहरालो रुपये मैं देदूँगा।

कील काँटे से दुरुस्त होना—तैयार होना। कील काँटे से दुरुस्त होकर वह जल्लाद आया।

कुआँ खोदना—(१) दूसरे की बुराई का सामान होना। जो दूसरों के लिये कुआँ खोदता है उसके लिए खाई तैयार रहती है। (२) जीविका के लिए कठिन परिश्रम करना। हम तो रोज कुआँ खोदते हैं और रोज पानी पीते हैं।

कुओं या कुएँ झाँकना—कोशिश में इधर उधर भाग दौड़ करना। जरा सा काम समझते हो, मुझे इसके लिये बहुत कुएँ झाँकने पड़े हैं।

कुआँ टूटना—कुएँ में पानी कम रहजाना। पानी बहुत खींचा जाता है इस लिये कुआँ टूट गया है, बरसात में फिर पानी आजायगा।

कुएँ की मिट्टी कुएँ में लगना—जहाँ कमाना वहीं गँवाना। क्या कहते हो, एक पैसा भी नहीं बचता कुएँ की मिट्टी कुएँ में ही लगजाती हैं।

कुएँ में गिरना—आफ़त में

फँसना। जो जान बूझकर कुएँ में गिरता है उसे भला कोई कबतक बचा सकता है।

कुएँ में फेंकना—(१) टाल देना। जाने देना। रुपये का इन्तजाम तो हो नहीं सकता जब तो यह बात कुएँ में फेंकनी पड़ेगी।

कुएँ में बाँस डालना—बहुत ढूंढ खोज करना। तुम्हारे लिये तो कुओं में बाँस डलवा दिये गये, आखिर आप थे कहाँ?

कुएँ में भाँग पड़ना—समूह का समूह उन्मत्त होना, सब की बुद्धि मारी जाना। कुएँ ही में यहाँ भाँग पड़ी है, क्यों नहीं सारा जमाना मूर्ख हो।

कुएँ पर से प्यासे आना—जहाँ किसी वस्तु की प्राप्ति का स्थान हो वहाँ से निराश होना। धनवान के यहाँ से बिना रुपये आना कुँए पर से प्यासे आना है।

कुँए में डालना—जन्म नष्ट करना। ऐसी जगह लड़की देकर तुमने उसे कुएँ में डाल दिया।

कुएँ में से बोलना—बहुत धीरे से बोलना। तुम क्या कुएँ में से बोल रहे हो मैं तो सुन भी नहीं पाता।

कुछ और गाना—प्रश्न कुछ और उत्तर कुछ और ही। हम कुछ पूछते हैं तुम कुछ और गाते हो।

कुछ एक—थोड़े से। कुछ एक आदमी विरुद्ध है बाकी सब पक्ष में हैं।

कुछ ऐसा—विलक्षण। कुछ ऐसा होगया है अब कोई किसी का विश्वास ही नहीं करता।

कुछ ऐसा वैसा—असाधारण। वह कुछ ऐसा वैसा आदमी नहीं है, घर का सेठ है।

कुछ का कुछ—उलटा और का और। तुम कुछ का कुछ समझते हो मेरा मतलब यह नहीं था।

कुटकरना—मित्रता न रखना। हम जानते हैं आपने उनसे कुट करदी है।

कुठाँव मारना—(१) शरीर के मर्म स्थानों, नाजुक जगहों पर मारना। तुम लड़कों को बड़े कुठाँव मारते हो। (२) बुरे स्थान पर लेजाकर मारना। तुम्हें ऐसे कुठाँव लेजाकर मारे जहाँ पानी भी न मिले और आवाज कोई सुने नहीं।

कुछ कहना—बुराभला कहना, गाली देना। तुम से कुछ कहा भी है या योंही नाराज हो रहे हो।

कुछ न चलना—अधिकार से बाहर की बात, वश न चलना। लाख किया पर कुछ न चला।

कुछ लगाना—खुद को श्रेष्ठ समझना वह न कुछ अधिक विद्यावान है और न ऐसा धनवान ही

इस पर भी अपने को कुछ लगाता है।

कुछ से कुछ हो जाना—बड़ा भारी उलट फेर या परिवर्तन होना। इस दवाई को खाकर छः महीने में ही शरीर कुछ से कुछ होगया।

कुछ हो रहना—किसी योग्य हो जाना। बचपन में ही व्यापार में डाल दिया तो अब कुछ हो ही रहा।

कुञ्जरो वा नरो वा—अनिश्चित, दुविधा में, संदेह होना। सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेखत परसि धरो, स्वारथ हू परमारथ हू को नहिं कुञ्जरो नरो।

कुठला होना—मोटा ताजा होना। अरे! कुछ काम भी करेगा कि हराम का खाकर कुठला होता जायगा।

कुण्डी खटखटाना—(१) दरवाजे की साँकल हिलाना। (२) बहुत बार किसी से मिलने जाना। जनाब सिफारिश के लिये कितनों ही की कुण्डी खट खटानी पड़ी, तब काम बना। (३) माँगते फिरना। कुण्डियें खटखटाता फिरता है अब कोई मित्र बोलता तक नहीं।

कुत्ता काटना—(१) पागल होना। (२) मूर्खता के काम करना। मालूम होता है तुम्हें कुत्ते ने काटा है, जो ऐसा करने चले हो। (३) बड़ी भारी आवश्यकता होना। ऐसा क्या कुत्ते ने काटा है जो तीन पैसे की चीज़ के तीन आने दूँ।

कुत्ते का दिमाग़ या भेजा होना—बहुत बकना, हर वक्त बोलते रहना। वह कभी चुप कैसे हो सकता है, उसका तो कुत्ते का दिमाग़ है।

कुत्ते की मौत मरना या मारना—बुरी तरह चिल्ला चिल्ला कर मरना या दुखीकर मारना। मेरा शाप है तुम कुत्ते की मौत मरोगे।

कुत्ते की दुम—अपना टेढ़ा स्वभाव न छोड़ना। तुम कभी समझाने से नहीं मान सकते कुत्ते की दुम सात बरस नली में रही तब भी सीधी न हुई।

कुनबा जोड़ना—नाते रिश्ते के मित्र आदि को इकट्ठा करना। कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानमती ने कुनबा जोड़ा (कहावत)।

कुन्दन सा दमकना—स्वच्छ सोने की तरह चमकना। जनाब उसका रंग कुंदन सा दमकता है।

कुन्दन हो जाना—निखर जाना। अब उसका चाल चलन कुन्दन हो गया है।

कुन्दन होना—निर्मल होना। आदमी बड़ा कुन्दन है उसमें राग द्वेष कुछ नहीं।

कुप्पा सा मुँह करना—मुँह

फुलाना, रूठ कर बोल-चाल बंद करना। तुमने कुप्पासा सा मुँह क्यों कर लिया, तुम्हें तो मैंने कुछ कहा नहीं।

कुप्पा होना या हो जाना—(१) रूठना। (२) नाराज होकर मुँह फुलाना। (३) बहुत आनन्दित होना। जिस समय वह सुनेगा फूलकर कुप्पा हो जायगा। (४) सूजना, फूल जाना। भिड़ के काटने से उसका मुँह कुप्पा हो गया। (५) मोटा होना। वह दो महीने में ही पहाड़ पर कुप्पा हो गया।

कुम्हड़े की बतिया—अशक्त, निर्बल मनुष्य। इहाँ कुम्हड़ बतिया कोऊ नाहीं जो तर्जनि देखत मर जाहीं।

कुरबान करना—न्यौछावर करना। मैंने मन कर दिया कुरबान तुम्हारी शक्ल पै आज।

क़ुरबान जाना—बलि बलि जाना। अदा पर आप की क़ुरबान जाते हैं हम सौ बार।

कुरबान होना—(१) बलि बलि जाना। (२) मरना। चित्तौड़ पर हजारों कुरबान हो गये।

कुर्सी देना—इज्जत देना। बड़े बड़े हाकिम लोग उन्हें कुर्सी देते हैं।

कुल उछालना—वंश को बदनाम करना। तुमने खूब अपना कुल उछाला, दुनिया तुम्हारे सारे कुटुम्ब का नाम बखानती है।

कुल बखानना—(१) सब का नाम लेकर गाली देना। बड़ी लड़ाकी है जरा देर में कुल बखानने लगती है। (२) नाम बखानना। (३) वंश विरदावलि वर्णन करना।

कुलाच मारना भरना वा लेना—(१) बहुत दूर दूर तक पहुँचना। वह तो बड़े बड़े हाकिमों तक कुलाँचे भरते हैं। (२) चौकड़ी भरना। लेत कुलाँचे लखौ तुम अबही धरत पाँव धरती पर जबहीं।

कुल्हियाँ में गुड़ फोड़ना या पकाना—(१) कोई काम इस तरह करना जिसकी किसी को खबर भी न हो। मैं इस जगह कुल्हिया में गुड़ फोड़ता हूँ, न यहाँ पुलिस है न कोई और झंझट (२) बड़े काम को थोड़े से आदमियों से कराना। भला तुम कुल्हिया में गुड़ फोड़ना चाहते हो पाँच आदमी पचास का काम किस तरह कर सकते हैं?

कुश्ती खाना—कुश्ती में हार जाना। मैंने आज तक सब को हराया है खुद कोई कुश्ती नहीं खाई।

कुश्ती मारना—कुश्ती में जीतना।

जितनी कुश्तियें बदी हैं सब कुश्तियें मारी हैं।

कुहराम डालना, पड़ना वा मचना—वावैला या रोना पीटना। महाराज के मरते ही सारे देश में कुहराम मच गया।

कूच करना—(१) चलने को तैयार होना। शेर को देखते ही मेरे प्राण तो कूँच कर गये। (२) चल देना, चले जना। तुम्हें देखते ही वह यहाँ से कूँच कर गये।

कूट कूट कर भरना—खूब अच्छी तरह, ठसा ठस भरना। उसे भोला मत समझो उसमें कूट कूट कर चालाकी भरी हुई है।

कूट पीस कर पेट पालना, पोसना—जैसे तैसे कठिन परिश्रम के कार्य कर के निर्वाह करना। बेटा! तुम्हें तुम्हारे पिता छः बरस का छोड़ कर मरे थे, मैंने कूट पीस कर पेट पाला है, अब तुम्हारी जरा आशा है।

कूड़ा करकट समझना—व्यर्थ समझना। मेरी वस्तुओं को तुम कूड़ा करकट समझते हो पता है इनमें पैसे लगे हैं।

कैंची करना—कतरना। दिल्ली में सारे नोट किसी ने जेब से कैंची कर लिये।

कैंची काटना—(१) कह कर मुकर जाना। तुम वक्त पर कैंची काट जाते हो लेकिन मैं जो वायदा करूँगा मरते दम पूरा करूँगा। (२) निगाह बचा कर निकल जाना। वो तो मैंने देख लिया वरना तुम कैंची काट कर निकल रहे थे।

कैंची लगाना—(१) काटना, छाँटना। (२) सिर के बाल काटना। (३) दो सीधी चीजों को कैंची की तरह टेढ़ी तिरछी रखना।

कैद काटना, भरना—जेल में दिन बिताना। डाकू ने ७ बरस की कैद काटी।

कैद लगाना—(१) सीमा बाँधना। तुमने अधिक न देने की जो कैद लगादी उससे मेरा कुछ बच गया। (२) शर्त लगाना। विवाह में उम्र की कैद लगादी है, यह अच्छा है।

कैफियत तलब करना—विवरण माँगना, कारण पूछना। बात बात में आप कैफियत तलब करते हैं, मैं इतना तो बेईमान नहीं।

कोई एक या कोई सा—जो चाहे सो एक। कोई एक तुम ले लो सारे नहीं।

कोई कहीं समझे कोई कहीं समझे—मुझे उन्होंने अपने घर ठहराया मेरे होटल के रुपये बचे, मैंने उनके बच्चों को दो रुपये दे दिये, कोई कहीं समझे कोई कहीं समझे।

कोई दम का मेहमान होगा—थोड़ी देर में मरजाने वाला। बुड्ढे मिया तो अब कोई दम के मेहमान हैं, फिर हमारा ही राज है।

कोई न कोई—एक नहीं तो दूसरा, यह न सही वह। हमारे जाल में तो कोई न कोई फँसेगा ही।

कोई बात भी हो, यह भी कोई बात है—कुछ बात नहीं है। कोई बात भी हो जो बताऊँ ?

कोख उजड़ना-(१) पुत्र मरजाना। एक था वह जाता रहा मेरी तो कोख उजड़ ही गई। (२) गर्भ गिर जाना। उनकी कोख सात बार उजड़ चुकी है।

कोख की आँच—(१) संतान की इच्छा। (२) संतान का प्रेम। (३) संतान का वियोग। कोख की आँच बहुत बुरी (बहुत अधिक) होती है।

कोख खुलना - संतान होना। चौदह बरस व्याह को हुए, अब कहीं आकर कोख खुली है।

कोख लगना या सटना—भूख या और किसी कारण से पेट अंदर धँसना। पति ने छः दिन से खाना नहीं दिया है वेचारी की कोख लग गई है।

कोठा बिगड़ना—(१) अपच रोग होना। मुझे हज़म नहीं होता कोठा बिगड़ गया है। (२) गर्भाशय में रोग होना। संतान कहाँ से हो बिचारी का कोठा बिगड़ गया है।

कोठा साफ़ होना—(१) हृदय में कोई बुरा विचार न होना। उसका कोठा आप की तरफ से बिल्कुल साफ़ है। (२) साफ़ दस्त होने के बाद पेट हल्का होना। आज दवाई खाई तो कोठा साफ़ हो गया।

कोठी उतारना, बैठाना, डालना या गलाना—कुँए या पुल के खंभे में जमघट या गोले के ऊपर की जोड़ाई को नीचे उतारना। कुए में छः फुट कोठी उतारदी गई है बस ठीक है।

कोठी करना या खोलना—लेन देन का काम शुरू करना, आढ़त की दुकान खोलना। उनकी कपड़े की कोठी है, उनके द्वारा कपड़ा मँगवाइये सस्ता और अच्छा मिलेगा।

कोड़ा फटकारना—चाबुक मारना, या चाबुक से आवाज निकालना।

कोढ की खाज या कोढ में खाज—एक दुख में दूसरा दुख और आ जाना। एक तो नौकरी छूटी दूसरे घर भर बीमार पड़ा है इस कोढ़ की खाज का क्या इलाज।

कोथला भरना—खूब भोजन करना (व्यंग्य) कोथला भरलो फिर जाने भोजन मिले या नहीं।

कोदो दलना—तुच्छ और बहुत परिश्रम का काम करना । तीन पैसे घड़ी और वह भी कोदो दलना, इस जीवन से मरना भला ।

कोदों दलना—(छाती पर) किसी को दिखा कर उसे जलाने के काम करना । मैं भी यह चहाता हूँ कि उसी के घर रहूँ और फिर उसी की छाती पर कोदों दलूँ । (आज कल छाती पर मूंग दलना अधिक प्रचलित है) ।

कोदों देकर पढ़ना वा सीखना—अधूरी या वेढंगी शिक्षा पाना । हम तो कोदों देकर पढ़े हैं समझो हमें क्या पढ़ना आता है ।

कोना झाँकना—बगलें झाँकना, मौका आने पर किसी बात को प्रकट करने से मन चुराना या छिपना चाहना । कहते थे मुझे मिल जाय तो मैं उसे बड़ा लताड़ूँ अब जब वह आया तो साफ़ बात कहने में भी कोना झाँकने लगे ।

कोना दबना—दबाव या वश में होना । इन दिनों वह मेरी गवाही दे देगा क्योंकि उसका कोना दब रहा है, अगर न कहेगा तो मैं उसके रुपये न दूँगा ।

कोयलों पर छाप या मोहर लगना, पड़ना—सिर्फ छोटे छोटे खर्चों में मीन मेख निकालना, या कंजूसी करना । अमीरों के बड़े खर्चे तो कम नहीं होते और कोयलों पर मुहर लगती है ।

कोर दबाना—कुछ हिस्सा क़ाबू में करना । मैंने कुछ रुपये अभी नहीं दिये हैं, क्योंकि कोर दबी रहेगी तो बाक़ी काम अच्छी तरह करदेगा वरना बेगार टालेगा ।

कोरम कोर चवाल सौ—बिल्कुल बुद्धू । ये कहाँ के बुद्धिमान हैं यह भी कोरम कोर चावाल सौ ही हैं ।

कोरा जवाब—नाहीं कर देना । मैंने रुपये माँगे थे लेकिन उसने कोरा जवाब दे दिया ।

कोरा रखना, रहना—(१) बिल्कुल कुछ न सिखाना । दर्जी की दुकान पर छः महीने बैठाया लेकिन उसने बिल्कुल कोरा रखा, पजामा भी नहीं काट सकता था । (२) मूर्ख होना । इतने बरस उस जैसे चालाक के पास रह कर भी कोरे ही रहे । (३) कुछ लाभ न होना । लखपती के घर रह कर भी कोरे ही रहे ।

कोरा लौटना—असफल या बिना लिये ही वापिस आना । हमको यह आशा न थी कि तुम भी कोरे ही लौटोगे, हम समझते थे तुम तो लेकर ही आओगे ।

कोरे उस्तरे से मूँड़ना—(१) फौरन धार रखाये हुए उस्तरे से मूँडना । (२) बिना पानी लगाए

मूँडना। (३) खूब लूटना, खूब मूर्ख बना कर मतलब गाँठना। तुम तो लोगों को कोरे उस्तरे से मूँडते हो।

कोल्हू का बैल—(१) बहुत परिश्रमी। वह तो साहब कोल्हू का बैल है काम में लग गया तो फिर एक मिनट नहीं चैन से बैठता। (२) काला चश्मा या अँधौटा लगाना। क्यों कोल्हू के बैल बनते हो आँख दुखती हैं तो बाहर ही न निकलो।

कोल्हू में डालकर पेरना—अत्यंत दुख देना, बहुत दुख दे दे कर जान लेना। पहिले राज दण्ड में जैसे कोल्हू में डालकर पेर देते थे, बस यही हाल हमारा मालिक करता है दम लेने को भी तो मौका नहीं देता।

कोसना पानी पी पीकर—बहुत देर तक ठहर ठहर कर और अधिक बुरा कहना। तुम तो पानी पी पीकर कोसती हो चलो गुस्से में कह दिया सो कुछ नहीं, गाली देते देते पेट ही नहीं भरता।

कोसों या काले कोसों—बहुत दूर। बेचारी लड़की को काले कोसों फेंक दिया है कभी आ भी न सकेगी।

कोसों दूर रहना—(१) पास न होना, आना। वह मेरे से कोसों दूर रहता है, मिलना तो नाम किसका। (२) पास न जाना। बुरों से मैं कोसों दूर रहता हूँ। (३) बचकर रहना, अलग होना, न करना। वह छल कपट की बातों से कोसों दूर रहता है।

कौड़ा का
कौड़ी या दो कौड़ी का
कौड़ी काम का नहीं } (१) किसी भी दाम अच्छा न होना। ये रुपया दो कौड़ी का भी नहीं। क्या कहूँ ये बर्तन कौड़ी काम का नहीं। (२) निकृष्ट। यह आदमी कौड़ी का भी नहीं है।

कौड़ी का कर डालना—(१) खराब कर देना। पच्चीस रुपये के शाल को बुरी तरह बर्त कर कौड़ी का कर डाला। (२) इज्जत खराब करना। मैंने उसे सरे बाजार कौड़ी का कर डाला।

कौड़ी का बल न पड़ना—जरा भी हिसाब न छूटना। बड़े मुनीम जी से कौड़ी का भी बल नहीं पड़ता।

कौड़ी के तीन तीन होना—(१) खूब सस्ते होना। बाजार में जाओ तो मालूम हो कौड़ी के तीन तीन हो रहे हैं (३) बेकदर होना। वे अपनी करनी से कौड़ी के तीन तीन हो रहे हैं।

कौड़ी को न पूछना—(१) मुफ्त

भी न लेना। मैं इसे रुपये छोड़ कौड़ी को भी न पूछूँ, (२) बिल्कुल तुच्छ समझना। वहाँ तुम्हें कोई कौड़ी को भी न पूछेगा।

कौड़ी कोस दौड़ना—थोड़ी प्राप्ति के बदले बहुत दूर दूर तक जाना, कठिन परिश्रम करना, आजकल बेचारे का यह हाल है कि आप उसे कौड़ी कोस दौड़ा लो।

कौड़ी कौड़ी अदा करना, भरना, चुकाना—सारा कर्ज़ा दे देना, मैंने उसकी कौड़ी कौड़ी चुका दी है।

कौड़ी कौड़ी जोड़ना—बड़ी मेहनत से रुपया इकट्ठा करना, बहुत थोड़ा थोड़ा रुपया इकट्ठा करना, कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी कर कर बातें छल की, भारी बोझ धरा सिर ऊपर केहि विधि होवे हलकी।

कौड़ी कौड़ी भर पाना—कुछ भी बाकी न रहना। मैंने तो कौड़ी कौड़ी भर पायी, अब तुम्हारे रुपये बाकी बच गये हैं।

कौड़ी कौड़ी लेना—(१) अपना एक पैसा भी न छोड़ना। मैं कौड़ी कौड़ी ले लूँगा क्यों छोड़ूँ? (२) दूसरे का सारा धन ले लेना। उसके पास जो कुछ था निर्दय ने कौड़ी कौड़ी ले लिया।

कौड़ी पास न होना—गरीबी होना, हाथ तंग होना। मेरे पास कौड़ी भी नहीं है क्या दूँ?

कौड़ी फिरना—जुए में किसी का दाव पड़ने लगना। अब मेरी कौड़ी फिरी है देखो क्या रंग लाती है।

कौन किसका होता है—कोई किसी की सहायता नहीं करता। सब कहने की बातें हैं विपत्ति में कौन किसका होता है।

कौन होना—(१) कुछ अधिकार न होना। वह कौन होता है जो आज्ञा दे, मैं उसके बाप की भी नहीं मान सकता। (२) कोई संबन्ध या रिश्ता न होना। तुम हमारे होते कौन हो जो तुम्हें अपने घर खाना खिलाते। (३) होत हैं कौन वे मेरी भटू जिन के संग फेरी हैं भावरियाँ।

कौर छीनना—देखते देखते किसी का भाग दबा बैठना। इतना चालाक है मुँह का कौर तक छीन सकता है।

कौरे लगना—(१) रूठकर कोने में खड़ा होना। जरा सी बात में ही काम छोड़कर कौरे जा लगती हो। (२) कोने में छिपकर सुनना। मन जिनि सुनै बात यह माई, कौरे लाग्यो होइगो कितहूँ कोई माई।

कौल का पूरा, पक्का या धनी—

बात पर मर मिटने वाला, सच्चा। वह अपने कौल का पूरा है यदि तुम से कुछ भी कह दिया है तो करेगा भी जरूर।

कौल तोड़ना—वायदा पूरा न करना। देखो कह कर भी समय पर न पहुँचे कौल तोड़ ही दिया।

कौल पर जमना—बात कह कर उससे न हटना। कौल पर अपने जमी रही मैं, हुई न डाँवा डोल कभी मैं।

कौल से फिरना—देखो कौल तोड़ना।

कौवा गुहार में पड़ना या फँसना—(१) बहुत शोर गुल के बीच में होना। हम तो वहाँ भीड़ में कौवा गुहार में पड़ गये आपकी आवाज़ सुनाई न पड़ी। (२) व्यर्थ झगड़े में पड़ना। मैं पहिले से जानता तो इस कौवा गुहार में न फँसता।

कौवे उड़ाना—व्यर्थ का कार्य करना, कुछ काम न होना। वहाँ बैठे बैठे कौए उड़ाया करो और क्या काम है।

क्या उखाड़ना—कुछ न कर सकना। मैं नभी दूंगा तो मेरा क्या उखाड़ लेगा ?

क्या कहना है ! (१) खूब किया, धन्य। बहुत अच्छे क्या कहना है ! (२) (व्यंग्य में) कुछ नहीं। तुम्हारे क्या कहने हैं तुम तो माने हुए विद्वान हो !

क्या कुछ—सब कुछ। मैंने क्या कुछ सहायता नहीं की परन्तु वह तो कृतघ्न है।

क्या पूछना है ? (१) बहुत अच्छा हुआ। बड़ा मज़ा आया क्या पूछते हो लोट पोट हो जाओगे। (२) देखो 'क्या कहना है।

क्या किया—ठीक न किया है। यह क्या किया, क्या तुम्हें यही उचित था ?

क्या क्या न किया—बहुत सहायता की, कुछ कसी न की। मैंने तुम्हारे लिये क्या क्या नहीं किया ?

क्या खूब—बहुत अच्छे। क्या खूब तुम भी मूर्ख हो।

क्या चीज़ है—ना चीज़ है, तुच्छ है। वह मेरे सामने क्या चीज़ है ?

क्या जाता है-?-कुछ हानि नहीं। उनका क्या जाता है दोनों अदालत जायँगे तो उन्हीं दोनोंकी हानि है।

क्या जाने ? कुछ नहीं जानता। वह क्या जाने इन बातों को यह व्यापार की बातें हैं।

क्या पड़ी है—कुछ जरूरत नहीं। तुम्हें क्या पड़ी है जो दूसरों के लिये दौड़े दौड़े फिरते हो।

क्या मुँह दिखाओगे—शर्मिन्दा होना पड़ेगा, क्या जवाब दोगे। शेखी मारते थे अब एक काम भी

पूरा न कर सके उन्हें क्या मुँह दिखाओगे ?

क्या समझना—कुछ न समझना। मैं उसे क्या समझता हूँ यह तो तुम्हारी वजह से दे दिया है।

क्या हुआ—कुछ परवाह नहीं, कुछ हानि नहीं। दो थप्पड़ भी लगा दिये तो क्या हुआ साहब होगा अपने घर का।

क्यों कर—कैसे, नहीं। मैं यह आँ उजाड़ में क्यों कर रह सकता हूँ ?

क्यों नहीं (१) ऐसा ही है। क्यों नहीं तुम जो कहोगे वही होगा। (२) हाँ, जरूर। प्रश्न—तुम वहाँ जाओगे। उत्तर—क्यों नहीं ? (३) ऐसा नहीं है (व्यंग्य) क्यों नहीं तुम तो पुरोहित हो। (४) ऐसा नहीं कर सकता (व्यंग्य) क्यों नहीं तुम तो पहाड़ लाँघ सकते हो !

क्यों न हो (१) तुम्हारे जैसे पुरुष से यही आशा थी। क्यों न हो आप वीर हैं आपको यही शोभा देता है। (२) छिः (व्यंग्य) क्यों न हो ब्रह्मचारी क्या संसार से दूर हैं जो यह स्त्रियों की बड़ाई न करें ?

क्रम क्रम करके, से—धीरे धीरे। जो कोउ दूर चलन को करै, क्रम क्रम करि महि में पग धरै।

ख

खंगर लगना—दुर्बलता का रोग लगना। तुम्हें ऐसा क्या खंगर लग गया है जब देखता हूँ पहिले से अधिक सूखा और कमजोर पाता हूँ।

खचाखच भरना या कसना—ठसाठस भरना, पूरा होना। कमरा आदमियों से खचाखच भर गया है।

खटपाटी लेना व लगना—जिद्द या गुस्सा से रूठ कर खाटपर जा पड़ना। कैकेयी खटपाटी लिये पड़ी थी, दशरथ ने जब यह देखा··।

खट राग फैलाना—तूलकलाम करना, आडम्बर या झंझट बढ़ाना। इतने खटराग फैलाने की क्या जरूरत है सादा तरीका पर ही काम होजायगा।

खट से देदेना—फौरन। उन्होंने कहते ही खट से रुपये निकाल कर दे दिये।

खटाई में डालना—किसी कार्य को योंही पड़ा रहने देना, कोई निश्चय न करना। पेशकार को रिश्वत न मिली बस उसने जज तक कागजात ही न पहुँचने दिये सारा मामला खटाई में डाल दिया।

खटाई में पड़ना—दुविधा या

अनिश्चित दशा में होना। महाराज के विलायत से लौटने तक तो मामला खटाई में पड़ा ही समझिये।

खटिया सेना—बीमारी के कारण खाट पर पड़े रहना। बस उस दिन से जो तबियत खराब हुई है आज तक बेचारे खटिया ही से रहे हैं।

खट्टा जी होना—दिल फिर जाना, किसी की ओर से मन में अविश्वास या घृणा आना। उस दिन की चाल बाजी से हमारा जी खट्टा हो गया है, ऐसे आदमी का यकीन।

खट्टा मीठा जी होना—जीभ में पानी भर आना, जी ललचाना। पकवानों की सुगन्धि से जी खट्टा मीठा हो गया।

खट्टे मीठे दिन—बुरे भले दिन, दुख सुख। बड़े बड़े महाराजों को भी खट्टे मीठे सभी तरह के दिन बिताने पड़ते हैं, हम तो खैर चीज़ ही क्या हैं ?

खट्टे होना—अप्रसन्न होना। आज कल वे हमसे नहीं बोलते खट्टे हो रहे हैं।

खड़ा जवाब देना—फौरन इन्कार, सुनते ही मना कर देना। मैंने ज्योंही ज़िक्र किया उसने खड़ा जवाब दे दिया।

खड़ा पड़ा पीटना—हर दशा में शोक से रोते रहना। वह तो खड़ा क्या और पड़ा क्या दिन रात पीटता रहता है। (पिट्टना बना रहता है दिल्ली की औरतों में प्रचलित)

खड़ा रहना—प्रतीक्षा में रहना, बाट जोहना। भली मित्रता है जिस समय देखो उसके लिये दरवाजे पर ही खड़ा रहता है।

खड़ा होना—सहायता देना, मदद करना। कोई किसी की विपत्ति में नहीं खड़ा होता।

खड़िया में कोयला—बेमेल बात, अच्छे के साथ बुरे का संयोग। और सब बात अच्छी हैं जरा जिर्रीपन ही खड़िया में कोयला है।

खड़ी पछाड़ें खाना—क्रोध या शोक से पृथ्वी पर गिर पड़ना। बेचारी सुनते ही खड़ी पछाड़ें खाने लगी।

खड़े खड़े करना, होना—(१) खड़े हुए। खड़े खड़े पानी मत पियो। (२) फौरन, झटपट। यों खड़े खड़े कोई काम नहीं होता।

खड़े खड़े फिरना—चिन्तित या घबराये हुए घूमना या फौरन लौटना। हलांकि मैं कलकत्ते बड़े काम से गया था लेकिन यह तार पाते ही मैं खड़े खड़े फिरा हूँ।

खड़े खड़े या खड़े पाँव—(२) खड़े हुए। (१) फ़ौरन, झटपट। (३) क्षणभर के लिये। जरा खड़े खड़े

मेरी भी बात सुन जाओ (४) बे-रुके। मैं खड़े पाँव चला आया हूँ। (५) थोड़ी देर के लिये। खड़े पाँव वहाँ हो आओ फिर यहाँ भी तो काम है।

ख़त आना या निकलना—(१) रेख निकालना (२) डाढ़ी वगैरा के बाल निकलना। अब तो उसके खत आ गया है अब बच्चा नहीं है।

ख़त बनाना—(१) कलम काटना, कान के बराबर बालों को उस्तरे से मूँड़ना। मैं जरा नीचा ख़त बनाऊँगा, आपकी सूरत पे बड़ा खिलेगा। (२) माथे के ऊपरी भाग के बालों को उस्तरे से बराबर करना।

ख़तम करना—मार डालना। एक को तो वहीं खतम कर डाला है, एक बचा है वह भी बुरी तरह घायल हैं।

ख़तम होना—प्राण निकल जाना, मर जाना। वे तो खतम हो गये, दस दिन हुए।

ख़ता खाना—(१) धोखे में पड़ना, धोखे में नुकसान उठाना। रात में जाओगे तो खता खाओगे। रास्ता खराब है। (२) गलती करना। याद था ऐन मौके पर खता खा गया।

खपा देना या डालना—(१) जान देना। उसने अपने को इसके लिये खपा ही तो दिया। (२) लगा देना। पंडित जी ने सारी उम्र देश के लिये ही खपा डाली। (३) मार डालना। इसे किसी झुरमुट में लेजाकर खपा दो। (४) लगा देना। तुमने सारा का सारा इसी में खपा दिया।

खप्पर भरना—खप्पर में मदिरा भर कर देवी पर चढ़ाना। यह काम हो जाय तो मैं देवी का खप्पर भरूँ।

ख़बर उड़ाना—अफ़वाह होना, खबर फैलना। उनके पकड़े जाने की ख़बर तो उड़ रही है, भगवान जाने ठीक है या गलत।

खबर फैलना—खबर उड़ना। तमाम शहर में यही ख़बर फैली हुई है कि तुमने ही यह काम किया है।

ख़बर लेना—(१) समाचार जानना। लेते रहो खबर कहाँ लौं शिवराज हैं। (२) दीन या दुखी की दशा पर ध्यान देना, सहानुभूति या सहायता करना। हम मरें या जियें आप तो हमारी कभी खबरें भी नहीं लेते। (३) दंडित करना, सज़ा देना। आज उनकी खूब डंडों से खबर ली गई। (४) खोजना,

पूछना। तुमने न हमारी कुछ ख़बर ली, छाती पत्थर की क्यों कर ली? (५) पालन पोषण करना, रक्षा करना। आपके बिना हमारी खबर लेने वाला यहाँ परदेश में और है ही कौन? (६) खबर गीरी करना, देखते रहना। मैं जरा बाजार तक हो आता हूँ तुम इन चीज़ों की खबर लेते रहना।

खम खाना—(१) मुड़ना, झुकना। पहर रात भर मार मचाई, मुरक्यो तुरक वहाँ खम खाई। (२) हारना, पराजित होना, नीचा देखना। मैं जरा सी बात पर खम नहीं खा सकता। मर मिटूँगा पर सामना जरूर करूँगा।

खम ठोकना—(१) लड़ने के लिये ताल ठोकना। आए तहाँ जहँ खल छलकारी, फेंट बाँधि खम ठोकि खरारी। (२) दृढ़ता दिखलाना। मैं इस काम के लिये खम ठोकता हूँ।

खम ठोककर—(१) ताल ठोक कर। (२) पक्की तौर पर। (३) निश्चय पूर्वक। मैं खमठोक कर उसके सामने भी यह बात कह सकता हूँ।

खम बजाना या मारना—'देखो खम ठोकना।

खमीर बिगड़ना—स्वभाव या व्यवहार में भेद पड़ना। मेरी ओर से खमीर बिगड़ा है।

खरा आदमी—ईमानदार, व्यवहार में सच्चा या साफ़। आदमी खरा है यह मैं कह सकता हूँ देर में दे परन्तु दे देता है।

खरा करना—रुपये बजा कर देख लेना। खरा कर लो फिर कहीं मुझे बदनाम करो।

खरा खेल फ़र्रुख़ाबादी—साफ़ मामला, शुद्ध व्यवहार। हम व्यवहार में झिक झिक नहीं चाहते हमारा खरा खेल फ़र्रुख़ाबादी है लेना है लो न लेना हो मत लो।

खरा खोटा परखना—भला बुरा जाँचना। खरा खोटा परखे बिना किसी से संबंध करने में धोखा खाना पड़ता है।

खरा खोटा होना—मनडिगना, नीयत बिगड़ना।—हम स्त्रियों में काम नहीं करना चाहते जरा देर में खरा खोटा होजाए तो जिन्दगी खराब होगी।

खराद पर चढ़ना—(१) बिल्कुल ठीक या दुरुस्त होना। एक इंच का भी फरक नहीं है खराद पर चढ़ा हुआ है। (२) सुधारना। खराद पर चढ़कर तो ठीक होजाएगा। (३) दुनिया के व्यवहार में चतुर होना, तजुर्बेकार

या अनुभवी। बच्चा नहीं है खराद पर चढ़ा हुआ है वह धोखा नहीं खा सकता।

खरापन बघारना—बहुत सच्चा बनना, सचाई की डींग मारना। क्यों अपना खरापन बघारते हो तुम्हारी भी सब सुनली है।

खराबी में पड़ना—बुरी हालत होना। मैं तो खराबी में पड़ गया नहीं तो मज़ा चखाता।

खरी सुनाना वा खरी खरी सुनाना—(१) साफ़ तथा बुरी लगने वाली सच्ची या लगती बात कहना। मैं उसे बड़ी खरी सुनाकर आया हूँ, याद रखेगा कि कोई था। (२) अगर न दोगे तो मैं खरी खरी सुनाऊँगा।

खरे आना—अच्छे मिले। अच्छे आये (व्यंग्य) आप तो खरे आये हम वहाँ प्रतीक्षा ही करते रहे।

खरे होना—रुपये मिलने का निश्चय हो जाना। तुम्हारे रुपये तो खरे हो गये अब हमारा इनका हिसाब रहा है।

खर्च उठाना—(१) व्यय करना, खर्च का भार सहना। इतनी सी चीज़ के लिये कितना खर्च उठाना पड़ा। (२) व्यय दूर करना, खर्च बंद करना। मैंने मोटर का खर्च तो उठा दिया इससे भी १००) महीने की बचत हो गई।

खर्च चलाना—व्यय देते रहना, खर्च के लिये रुपये देना। घर का खर्च बड़ा लड़का चलाता है।

खर्च में डालना (१) व्यय करना ही पड़ना। मुझे भी इस खर्च में डाल ही दिया वरना मुझे क्या मतलब था। (२) हिसाब में लिखना, खर्चे में लिखना। ये १५०) हमारे खर्च में डाल दो उनके नाम मत लिखो।

खर्च में पड़ना—(१) खर्च करने के लिये विवश होना। इस खर्च में भी मैं पड़ा पर कुछ हाथ न आया। (२) खर्चे में लिखा जाना। आपके नाम नहीं, वह रकम खर्च में पड़ गई है।

खर्राटा भरना, मारना वा लेना-सुषुप्ति अवस्था, गहरी नींद सोना, बेखबर सोना। वह तो उस समय खर्राटे भर रहा था उसे तन की भी सुध न थी।

खलबली पड़ना वा मचना—शोर गुल होना, हल्ला या हलचल मचना। डाकुओं के आने की ख़बर सुन कर सारे कस्बे में खलबली मच गई।

खवे से खवा छिलना—बहुत भीड़ के कारण कंधे से कंधा छिलना। बड़ा भारी मेला था, निकलना

मुश्किल पड़ता था, खवे से खवा छिलता था।

खल होना—पिसना, चूर चूर होना। खल भई लोक लाज कुल कानी।

खाओ वहाँ तो पानी पीवो यहाँ—अत्यंत शीघ्र आओ, बिल्कुल देर न करो। बहिन बहुत बीमार है, खत के देखते ही तुम अगर खाओ वहाँ तो पानी यहाँ आकर पीवो, थोड़ा लिखा बहुत समझो।

ख़ाक उड़ना—(कहीं पर) नाश होना, उजाड़ होना। अब वहाँ पर खाक उड़ रही है।

ख़ाक उड़ाना—(१) कुछ न करना। दूसरों को कहते हो तुमने ही क्या ख़ाक उड़ाई जरा भी न बोला गया। (२) अपनी इज्जत बरबाद करना। खूब ख़ाक उड़ाई कर कराके जरा सी बात पर बाप दादाओं के नाम पर धब्बा लगाया। (३) हँसी उड़ाना, मट्टी पलीद करना। लोगों ने उसकी खूब खाक उड़ाई।

ख़ाक उड़ाते फिरना-ख़ाक छानना, इधर उधर यों ही मारे मारे फिरना। जम कर काम तो कहीं करता नहीं यों ही ख़ाक उड़ाता फिरता है।

ख़ाक करना—मिट्टी में मिलाना, बरबाद, तबाह या नष्ट भ्रष्ट करना। उसने अपना लाख का घर जुए में खाक कर दिया।

ख़ाक चाटकर बात कहना—बहुत नम्र होकर बोलना। वह तुम्हारे सामने तो ख़ाक चाटकर बात करता है, पीछे शेर हो जाता है।

ख़ाक चाटना—सिर नवाना, अनुनय विनय करना। बहुत बढ़कर बातें करते थे लेकिन आखिर ख़ाक चाटनी ही पड़ी।

ख़ाक छानना—(१) बहुत तलाश करना। कहाँ कहाँ की ख़ाक छानी पर वह न मिला। (२) मारा मारा फिरना। वह नौकरी के लिये चारों तरफ़ खाक छानता फिरा।

ख़ाक डालना—(१) दबाना, छिपाना। उसके ऐबों पर कहाँ तक ख़ाक डाली जाय। (२) भूल जाना, गई गुजरी करना। पुरानी बातों पर ख़ाक डाल कर अब मेल करो।

ख़ाक फाँकना—(१) मारा मारा फिरना। (२) झूठ बोलना। ख़ाक क्यों फाँकते हो सच बोलने से क्या कोई दण्ड मिलेगा ?

ख़ाक बरसना—(१) अच्छी हालत न रहना। कुछ नहीं बिचारे के सर पर खूब ख़ाक बरसा दी गई कहीं का न छोड़ा।

ख़ाक में मिलना—(१) बरबाद होना, चौपट हो जाना। बेचारे का भरी सभा में अपमान होने से

सारी आबरू ख़ाक में मिल गयी। (२) हस्ती मिटा देना, अपने को खतम कर डालना । चाहे मैं ख़ाक में मिल जाऊँ परन्तु बात से न टलूँगा ।

खाक में मिलाना—बरबाद करना, नष्ट भ्रष्ट कर देना। उसने सारी आबरू ख़ाक में मिलादी ।

खाकर डकार न लेना—एक दम हजम हो जाना , किसी की चीज़ या माल बिलकुल ले लेना और जरा भी जाहिर न होने देना, हजम कर जाना। वह बड़े बड़े लोगों के रुपये खाता है और डकार भी नहीं लेता तुम तो क्या चीज़ हो।

खाका उड़ाना—(१) हँसी उड़ाना, हूबहू क्रियात्मक नकल करना। क्यों बेचारे का खाका उड़ाते हो अपना भी पता है कैसे बोलते हो और चलते हो। (२) बदनामी करना। न अपनी आबरू बरबाद करना, न अपनी ख़ाक का खाका उड़ाना।

ख़ाका उतारना—(१) बिलकुल नकल करना। बख्शी जी का तो ऐसा ख़ाका उतारता है कि दूर से तो इसे ही लोग बख्शी समझें। (२) कच्चा नक़शा खींचना।

खा जाना—(१) हड़प कर लेना, चीज़ लेकर न देना, चट कर जाना । तीन सौ रुपये तो मेरे खागया आज तक देने का नाम नहीं। (२) बरबाद या नष्ट भ्रष्ट कर डालना । यह चिन्ता तुम्हें खा जायगी क्यों हवाई पुल बाँधते हो। (३) मार देना। देखता तो ऐसा घूर घूर कर है मानो खा ही जायगा ।

खाट पर पड़े खाना—(१) बीमारी की दशा में खर्च होना । कई सौ रुपये तो खाट पर पड़े पड़े खागया। (२) निःशंक खर्च करना, बे फिकर रहना। उसे क्या परवा है वह तो अपने खाट पर पड़े खाता है लगी बँधी आमदनी है ।

खाट लगना वा खाट से लगना—बीमारी या कमजोरी के कारण खाट से उठने लायक भी न होना। ऐसी बीमारी भी भगवान किसी को न दे बेचारे छः महीने से खाट से लग रहे हैं।

खाट से उतारना—मरने के बिल्कुल करीब होना । कई बार खाट से उतारे जा चुके हैं।

खाता कमाता—इकट्ठा रुपया न हो, खर्च चला जाता हो । आदमी तो खाता कमाता है वैसे जमा जथा नहीं है।

खाता खोलना—(१) खाती डालना । (२) नया व्यवहार करना। दोस्ती तो बहुत दिन से

थी परन्तु खाता तो अभी खुला समझिये।

खाता डालना—हिसाब खोलना, लेन देन शुरू करना। हमने अब आपका खाता डाल लिया सीधे मुनीम से भी जो चाहें सो आप स्वयं ले सकते हैं।

खाता पड़ना—लेन देन आरम्भ होना। तुम्हारा खाता तो पड़ा हुआ है कुछ भी ले लो।

खाना पीता होना—(१) भोजन पान करना। (२) सुख से दिन बिताना। लड़के बाले भूखों मरते हैं और आप खाता पीता है।

खाते बाकी—किसी के नाम पर शेष। १००) तुम्हारे खाते बाकी हैं।

खातिर में आना—(१) ध्यान आना, निगाह में जँचना। अब वह मेरी खातिर में आगया है मुझे उसका विश्वास है। (२) इज्जत होना। वह विद्वानों की भी खातिर में आता है।

खाना और गुर्राना—उपकार न मानना, निर्वाह चलाना और फिर ऐंठ दिखाना। तुम यहाँ खाते हो और फिर गुर्राते हो, हम तुम्हारे कर्जदार तो नहीं, रास्ता नापो।

खान पान करना—खाना पीना, संबंध रखना। वह तो मेरे साथ खान पान तक करता है।

खाजाना (कच्चा)—(१) कच्चा खा जाना। प्राण ले लेना। मैं तुझे कच्चा खा जाऊँगा मुझसे बैर मत कर।

खाना (मुँह की)—(१) मुँह-की खाना, हार जाना, करनी का फल पाना। भरी सभा में उसने मुँह की खाई।

खाना कमाना—मेहनत मजदूरी से गुज़ारा होना। बस खाना कमाना बना है और कुछ नहीं।

खाना न पचना—बेकल होना, जी न मानना, व्याकुल रहना। मुझे तुम्हारे देखे बिना खाना तक नहीं पचता।

खाना पीना लहू मट्टी करना—क्रोध, शोक, खेद आदि के कारण खाने का आनन्द बिगड़ना। घर भर में क्लेश ने खाना पीना भी मट्टी कर दिया है।

खाने के दाँत और दिखाने के और—भीतर बाहर में अंतर होना। उनकी बातों पर विश्वास मत करो खाने के दाँत और हैं दिखाने के दाँत और हैं यहाँ तो वह कह चले हैं करने के कुछ नहीं।

खाने दौड़ना—नाराज़ होना, बहुत क्रोधित होना। तुम तो जरा जरा सी बात पर खाने को दौड़ती हो ऐसी क्या तुम्हारी धौंस में बसते हैं।

खा पका जाना वा डालना—खतम कर देना, खाने पीने में ही उड़ा देना। जो कुछ कमाता है खुद ही खा पका डालता है घर को कुछ भी नहीं भेजता।

खार खाना—(१) जलन होना, बुरा लगना। वह मुझसे खार खाते हैं। (२) क्रुद्धहोना। वह तुम पर खार खाये बैठे हैं।

खाल उधेड़ना वा खींचना—बहुत सख्त सज़ा देना, शरीर से चमड़ा अलग करना। मारे बेतों के खाल उधेड़ दूँगा।

खाल बिगड़ना—शामत आना, दण्ड पाने की इच्छा होना। तुम्हारी खाल बिगड़ी है इसी लिये मुझसे लड़ने आये हो?

खाल में मस्त होना—अपनी हालत में ही प्रसन्न होना। कोई खाल में मस्त कोई माल में मस्त।

खालसा करना—(१) जब्त करना। छोटी छोटी मुसलमानी रियासतें खालसा करली गईं। (२) नष्ट करना। वह मुसलमान जो न माने, खालसा कर दिये गये।

खाला ऊँचा—(१) ऊँची नीची जमीन। (२) भला बुरा, नफ़ा नुकसान। कुछ खाले ऊँचे की चिन्ता नहीं, जो करेंगे वह तो करेंगे ही।

खाला जी का घर—(१) सहज काम। यह भी खाला जी का घर है जो एक दम सब काम हो जायँ। (२) अपना घर, अधिकृत स्थान। जाओ हम सेवा करने के लिये नहीं हैं, यह तुम्हारी खाला जी का घर नहीं है।

खाली करना—(१) भीतर कुछ न रहने देना। घड़ा खाली करके फिर पानी भरो (२) छोड़ देना। मैंने उनका मकान खाली कर दिया है।

खाली जाना—ठीक न बैठना, सफलता न मिलना। इस बार तो हमारा निशाना खाली गया वरना यह नौकरी से छूट ही जाता। झूठा होना अगर आज रुपया उनके यहाँ न पहुँचा तो बात खाली जायगी।

खाली दिन—वह दिन जब कोई नया शुभकार्य न किया जाय। कल बुधवार है खाली दिन है परसों शुरू करेंगे।

खाली न जाना—वचन निष्फल होना। हमारी बात खाली न जायगी, वह कल जरूर आवेगा।

खाली (हाथ) होना—(१) रुपये न होना। आज कल हमारा हाथ खाली है, हम कुछ नहीं दे सकते। (२) हथियार के बिना। खाली हाथ मत जाओ मार्ग खराब है।

(३) हाथ में लिया हुआ काम खत्म होना, फ़ुरसत होना। आज कल हमारा हाथ खाली है कुछ काम हो तो दिला दो। (४) हाथ में कुछ भेंट न होना। बड़े आदमियों के पास खाली हाथ नहीं जाते जरा दो फूल ही ले जाओ।

खाली होना—(१) कोई काम धाम न करना। (२) बिना जीविका के रहना।

खिचड़ी खाते पहुँचा उतरना—अत्यंत नाजुक होना। अजी! उनका तो खिचड़ी खाते पहुँचा उतरता है, इतनी नाजुक हैं।

खिचड़ी छुआना— नव वधू से पहिले पहिल भोजन बनवाना। आज ही तो खिचड़ी छुआई है।

खिचड़ी पकाना—(१) आपस में चुप चाप सलाह करना। आप लोग अलग बैठे क्या खिचड़ी पका रहे हैं, क्या आप भी इसके विपरीत हैं। (२) डेढ़ या ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकना या पकाना, अपनी सम्मति सब से अलग रखना। तुम किसी की मानते भी हो या अपनी डेढ़ ..।

खिचड़ी होना—(१) दो तरह की वस्तुओं का मिला होना, काले तथा सफेद बाल होना। उनके बाल खिचड़ी हो गये हैं। (२) दो वस्तुओं का मिल जुल जाना। बिगड़ जाना। मैंने सुधार सुधार कर रखे थे, तुमने खिचड़ी कर दिये।

खिँच जाना (मन) मन मोहित होना। मेरा चित्त उस ओर खिंच गया है।

(दर्द)—दूर होना। इस लेप से सारा दर्द खिंच गया।

(हाथ)—बंद होना, संबन्ध न रहना। अब इस काम में से उनका हाथ खिंच गया है।

खिल खिलाकर हंसना—कह कहे के साथ हँसना, जोर की आवाज से हँसना। वह इसे सुन कर खिल खिलाकर हँसे, उन्हें बड़ी खुशी हुई।

खिल्ली में उड़ाना—यों ही हँसी में टाल देना, मज़ाक उड़ाना। मेरे उपदेशों को तो वह खिल्ली में उड़ा देते हैं; फिर पछताना पड़ेगा।

खिलौना (हाथ का)—(१) प्रिय व्यक्ति, वह जिससे मन बहले। अपने गुण के कारण वह अमीरों के हाथ का खिलौना बना हुआ है। (२) वश में होना। वह मेरे हाथ का खिलौना है।

खींच खाँच कर—जैसे तैसे, टेढ़ा सीधा लिखकर। यह काम खींच खाँच कर पार पड़ा है।

खींचना (मन)—मन मोहित

करना, अपनी ओर लगाना। वह मेरे चित्त को खींच रही है।

(दर्द)—दर्द दूर करना। यह लेप सब दर्द खींच लेगा।

खींच लेना (हाथ)—न देना या और कोई काम बंद करना। उसने एक दम अपना हाथ खींच लिया है, एक पैसा भी नहीं देता।

खीज निकालना—चिढ़ निकालना, किसी को नाराज करने का तरीका। उसने मेरी खीज निकाल ली है, जब मैं आता हूँ उस दिन की बात याद दिला देता है।

खीरा ककड़ी समझना—अत्यंत तुच्छ वस्तु, गाजर मूली। मैं तो इन्हें तलवार के सामने खीरा ककड़ी समझता हूँ।

खीरे के मोल बिकना—बेकदर या बहुत सस्ता होना। वैसे पुनि आपके कुठौर कोई जाय पड़े, है तो वह हीरा पै बिकाने मोल खीरा के।

खीस काढ़ना—(१) मर जाना। देखते देखते खीस काढ़ दी। (२) दीन होकर कुछ माँगना। दो दो पैसे के लिये क्यों खीस काढ़ते फिरते हो। (३) बेढंगे तौर से हँसना। हर बात में तुम खीस काढ़ते हो यह बेहूदापन है।

खीस खलाना—नष्ट होना। कान्ह कृपाल बड़े नतपाल गये खल खेंचर खीस खलाई।

खीस डालना—नष्ट करना। काहे को निर्गुण ज्ञान गनत हो जित तित डारत खीस।

खुगीर की भरती—व्यर्थ के लोगों या पदार्थों का संग्रह। क्या खुगीर की भरती शुरू की है इनसे भला कुछ काम बन सकता है?

खुजलाना—किसी काम को करने की इच्छा होना। तुम्हारे मारने के लिये मेरे हाथ खुजलाते हैं। मार खाने के लिये तुम्हारी पीठ खुजलाती है। बोले बिना तुम्हारा मुँह खुजलाता है।

खुजली उठना—(१) दण्ड पाने की इच्छा होना। तुम्हारे खुजली उठा करती है, पिट जाते हो फिर दस पाँच दिन ठीक रहते हो। (२) प्रसंग कराने की इच्छा होना। सौत! ऐसी भी क्या खुजली उठती है दो दिन के लिये भी उन्हें बाहर नहीं जाने देती।

खुजली मिटना—(१) पिटना। (२) प्रसंग हो जाना। आज तो खुजली मिट गई होगी आज तो वह आ गया है न!

खुदरा करना—नोट या रुपया आदि भुनाना।

खुदा खुदा करके—बड़ी कठिनता से। खुदा खुदा करके वह गाँव पकड़ा, पैरों में छाले पड़ गये।

खुदा की मार—ईश्वरी प्रकोप।

तुझ पर खुदा की मार तूने मुझे गिरा दिया।

खुलकर लगना—खूब, बिना रुकावट के। गंगा के पानी से खुलकर भूख लगती है और खुलकर दस्त होता है।

खुलकर कहना—साफ़ कहना वेधड़क। जो कहना है खुलकर कहो।

खुल खेलना—(१) स्वतंत्रता से कार्य करना। खुल कर खेलने का मौक़ा मिले तो हम अपने जौहर दिखावें कि कितने योग्य हैं। (२) खेलने के लिये काफ़ी जगह होना, दूर दूर होकर खेलना। जरा खुल कर खेलो तो देखें। (३) लज्जा वा कलंक का ख्याल न करके सब के सामने कोई बुरा काम करना। हम तो खुल कर खेलते हैं चोरी छिपकर किया तो क्या किया।

खुल जाना, खुल पड़ना, खुला होना—(१) बात उगल देना, साफ़ साफ़ कह देना। मित्रों से वह बिल्कुल खुला पड़ा है उनसे नहीं छिपाता। (२) हँसी मज़ाक की सब बातें कहने लगना। बड़े बूढ़ों के जाते ही वह भी गंभीरता छोड़ कर खुल पड़ा। (३) खो जाना। रास्ते चलते उनके १००) खुल गये।

खुलता रंग होना—(१) हलका सुहावना रंग। दुपट्टे का जरा खुलता रंग रहे तो अच्छा है। (२) गोरा रंगा। उस लड़के का रंग कुछ खुलता हुआ है।

खुले आम, खुले ख़ज़ाने खुले बाज़ार वा खुले मैदान—सरे आम, सबके सामने। मैं तो खुले मैदान कहता हूँ मुझे किसी का क्या डर ?

खुशामदी टट्टू होना—हाँ में हाँ मिलाने वाला, मुँह पर बड़ाई करता रहने वाला। वह तो खुशामदी टट्टू है वह साफ़ साफ़ नहीं कह सकता।

खूंटा गाड़ना—(१) हद बाँधना। (२) शर्त लगाना। देने को तो इन्कार न किया लेकिन दो रुपये का खूँटा गाड़ दिया। (३) अधिकार करना। मैंने पहिले ही अपना खूँटा गाड़ दिया है अब किसी की ताक़त नहीं कि ले ले।

खूंटे के बल कूदना—किसी सहायता की आशा पर अभिमान करना। तुम जिस खूँटे के बल कूदते हो मैं उसको भी दीन दुनिया से उखाड़ दूँगा।

खून उतरना—(आँखों में) क्रोध से आँख लाल होना। उसकी आँखों में यह सुनते ही खून उतर आया।

खून उबलना या खौलना—गुस्से से तमक कर लाल होजाना।

उस की नीचताएँ देख कर खून खौल उठता है, परन्तु लाचारी है क्या करूँ ?

खून करना—जान लेना, मार देना। कंधे पे तेग धरते हैं कौड़ी के वास्ते, आपस में खून करते हैं कौड़ी के वास्ते।

खून का प्यासा—जान लेने का इच्छुक। मैं अपमान के कारण उसके खून का प्यासा हूँ।

खून की नदी बहाना—खूब मार काट करना। जरा देर में वीर ने खून की नदियें बहा दीं।

खून खुश्क होना—अत्यंत भयभीत होना। उनको देख कर खून खुश्क हो जाता है।

खून गर्दन पर चढ़ना या सवार होना—(देखो खून सिर पर सवार होना)(१) मरने का समय आना। बहुतेरा रोका परन्तु उसकी गर्दन पर खून सवार था रास्ते में डाकू मिले और कर कत्ल दिया।

खून ठंडा होना—(१) भय खाना, डर जाना। अपने से बलवान को देखकर उसका खून ठंडा होगया।

खून निकलवाना—फसद खुलवाना। मैं ने जौंक लगवा कर खून निकलवाया था अब दर्द नहीं है।

खून पीना— (१) दुख सहना। मेरा बहुत खून पीया गया है। (२) मार डालना। आखिर एक दिन भीम ने दुर्योधन का खून पीया ही तो सही। (३) बहुत दुखी या तंग करना। क्यों गरीबों का खून पीते हो सदा तुम्हारा भी राज न रहेगा।

खून बहाना—मारना, घातक आक्रमण करना। खून बहाये बिना काम नहीं चलता।

खून बिगड़ना—(१) खून में कोई खराबी आना। मेरा खून बिगड़ गया है अतः दस्त लिये हैं (२) कोढ़ी होजाना। (३) जोश न रहना। हमारा खून ही बिगड़ गया है स्वतंत्रता के भाव कहाँ से आवें ?

खून सिर पर सवार होना— (१) किसी को मार डालने को उद्यत होना। खून सिर पर सवार है वह कत्ल किये बिना न मानेगा। (२) कत्ल के बाद पहचान का कारण होना। उसके सिर खून सवार था आखिर क्यों न पकड़ा जाता।

खून सुखाना—चिन्ता होना, दुख से दुर्बल होना। तुम क्यों व्यर्थ के लिये अपना खून सुखाये डालते हो, जो होगा मैं देख लूँगा।

खेत आना—रण में मारा जाना। इतनी बड़ी लड़ाई में सिर्फ दो हजार खेत आये।

खेत कमाना—(१) खाद इत्यादि डालकर खेत को उपजाऊ बनाना।

(२) खेत से फसल उत्पन्न करना। आज कल हमारा खेत आदमी ही कमा रहे हैं।

खेत करना—(१) एकसा करना। सोखि कै खेत कै (कर) बाँधि कै सेतु करि उतरिबो उदधिन बोहित चहिबो। (२) चंद्रोदय का प्रकाश। (३) युद्ध करना।

खेत का लिखा पढ़ा—किसान, गँवार। वह क्या जाने दस्तखत करना वह तो खेत का लिखा पढ़ा है।

खेत छोड़ना—(१) लड़ाई से भागना, लड़ाई बंद करना। बड़े बड़े वीर खेत छोड़ गये बली के सामने कौन खड़ा होता है। (२) काश्तकारी छोड़ना। उसने हमारा खेत छोड़ दिया है।

खेत रखना—विजय पाना, जीतना। उसने अकेले ही खेत रखा नहीं तो सबका दिल उखड़ गया था।

खेत रहना—खेत आना, काम आना, मारा जाना। मुगल सेना के कई हजार आदमी खेत रहे।

खेत हाथ रहना—मैदान मारना, विजय होना। आखिर खेत मुसलमानों के ही हाथ रहा।

खेती मारी जाना—फसल नष्ट होना। इस साल बर्फ़ से सारी खेती मारी गई।

खेप हारना—माल में घाटा उठाना। यह खेप तो हम हार ही गये।

खेल खिलाना—बहुत तंग करना, खूब दिक करना। क्यों मुझे खेल खिलाते हो सच २ बताओ कहाँ रखी है?

खेल खेलना—दगा देना, चाल चलना। दोनों ओर के नीतिज्ञ अपने २ खेल खेलते हैं देखो किसकी विजय हो।

खेल जानना वा समझना—सरल; सहज जानना। बहुत कठिन काम है तुम उसे खेल समझते हो?

खेल करना—काम को ठीक न करना, खेल मत करो जम कर काम करो।

खेल जाना, खेलना—प्राण दे डालना। वह तो जान पर खेल गया अब चाहे जीत हो या हार।

खेल बिगड़ना—(१) काम ख़राब हो जाना। हमारा तो बना बनाया खेल बिगड़ गया। (२) रंग में भंग होना। तुमने बे मौके आकर खेल बिगाड़ दिया।

खेलना खाना—खुशी वह निर्द्वन्द्वता से दिन बिताना, चैन से रहना। अभी तुम्हारे खेलने खाने के दिन हैं, सोच करने के नहीं। खेलत खात लरिकपन गो जोवन जुवतिन लियो जीति।

खेला खाया—पूरा जानकार, बहुत तजुर्बेकार। वह देश भर घूमा है खेला खाया आदमी है, तुम जैसों को तो बाज़ार में बेच दे।

खेला खेला कर मारना—दुख दे दे कर; धीरे २ चिड़ा २ कर; दौड़ा दौड़ा कर मारना। अबहि करौं का बहुत बड़ाई हतिहौं तोहि खेलाई खेलाई।

खेह खाना—(१) ख़ाक फाँकना, व्यर्थ वक्त बरबाद करना। वहाँ क्या खेह खाने गये थे घर में जगह नहीं है ? (२) बुरी हालत में पड़ना। सोइ रघुनाथ कपि साथ पाथ नाथ बाँध आयो नाथ भागे ते ख़िरिर खेह खाहिगो।

खोज मारना, मिटाना—पैर के चिन्ह या जाने के और कोई चिन्ह ज़मीन पर से मिटाना। चोर जाते वक्त खोज मार कर गया है अब क्या पता लग सकता है।

खोटा खरा होना—नीयत खराब हो जाना, दिल पतित हो जाना। अब तो वे खोटे खरे हो गये हैं वरना पहिले बड़े सच्चे सीधे थे।

खोटा पैसा—(१) बुरी कमाई। कसाई का पैसा खोटा है इससे भीख अच्छी। (२) खराब पैसा (सिक्का)। (१) मूर्ख या बुरा लड़का। अपना ही पैसा खोटा है परखने वाले का क्या दोष।

खोटी खरी सुनाना—बुरी भली बातें कहना, फटकारना। मैंने उसे बहुत खोटी खरी सुनाई क्योंकि मैं भी आपका अपमान नहीं सह सकता था।

खोटा खाना—बेईमानी से बुरी तरह कमा कर खाना। वह खोटा खाता है इसका फल पायेगा।

खोद २ कर पूछना—तर्क वितर्क करके, बड़ी शंकाएँ करके, खूब अच्छी तरह पूछना। पुलिस बड़ी खोद २ कर पूछती है।

खोपड़ी (औंधी)—बेवकूफ़। औंधी खोपड़ी है कुछ कहो कुछ समझता है।

खोपड़ी खा जाना या चाट जाना—बकवाद करके तंग करना। क्यों तुम खोपड़ी खाए जाते हो मैं बिलकुल नहीं सुनता चुप रहो।

खोपड़ी खुजलाना—(१) शामत आना, पिटने के सामान करना, गलत काम करना। क्यों तुम्हारी खोपड़ी खुजला रही है ? ध्यान से करो नहीं तो जूता बजेगा। (२) सिर पर जूते लगाना। क्यों खोपड़ी खुजलाऊँ क्या ?

खोपड़ी गंजी करना—सिर पर खूब जूते लगाना, मारते २ सिर के बाल उड़ा देना। याद रखो बहुत शरारत करोगे तो मारते २ खोपड़ी गंजी कर दूँगा।

खोपड़ी गंजी होना–(१) पिटते २ सिर पर बाल न रहना। सारी खोपड़ी गंजी हो गई है। (२) वैसे ही सिर के बाल उड़जाना।

ख्याली पुलाव पकाना—(१) केवल सोचना। वह ख्याली पुलाव पकाना जानता है काम करना नहीं। (२) असंभव बातें सोचना। उसकी बात पर क्यों काम करते हो वह केवल ख्याली पुलाव पकाता है, भला सोचो यह काम आसान हैं ?

ख्याल बाँधना—अनुमान या कल्पना करना। ख्याल बाँधने से क्या पता चल सकता है।

ख्याल रहना—याद रहना। ख्याल रहेगा कि नोट करदूँ ?

ख्याल में पड़ना—याद में मस्त या लौलीन होना। वह उस लड़की के ख्याल में पड़ा है।

ख्याल से उतरना–याद न रहना। मेरे ख्याल से उतर गई है वरना मैं खूब जानता हूँ।

ख्याल रखना—(१) लिहाज रखना। मित्रता का तो ख्याल रखते! (२) कृपा दृष्टि रखना। जरा हमारा भी ख्याल रखना।

ग

गंगा उठाना—गंगा जल से भरा बर्तन उठा कर कसम खाना, गंगा की कसम खाना। उसने भरी अदालत में गंगा उठाकर यह कह दिया कि मैंने रुपये नहीं लिये, अब क्या कहा जा सकता है।

गंगा नहाना–(१) लड़की का व्याह कर देना। इस साल हम लड़की के हाथ पैर पीले कर के गंगा नहा लिये। (२) निश्चिन्त हो जाना। बस यह काम हो जाय तो मैं तो सर्वदा के लिये गंगा नहालूँ। (३) पाप धुलना। सारे जीवन कुकर्म किये थे परन्तु इस एक पुण्य के करने से वह गंगा नहा चुका। (४) कृतार्थ होना, मतलब बनना। तुम यहाँ से टलो तो मैं गंगा नहा लूँ।

गंगा जली उठाना—गंगा जली हाथ में लेकर कसम खाना। मैं गंगा जली उठा कर कह सकता हूँ मैंने रुपये नहीं लिये।

गंगा पार उतरना वा कर देना—देश से निकाल देना। सारी जायदाद लेकर तुमने बिचारे को गंगा पार कर दिया, मुँह दिखाने का भी न छोड़ा।

गंगा लाभ होना—मर कर गंगा में बहाया जाना, मुक्त होना। कल

उन्हें गंगा लाभ हो गया अच्छा हुआ दुख से छूटे।

गंज डालना – मंडी आबाद करना, बाजार लगाना। महाराज ने रायगंज नाम से एक नया गंज डाला है।

गंडा तावीज करना—झाड़ फूँक करना। वैद्य की औषधि नहीं, गंडा तावीज कर रही हैं।

गँवार का लट्ठ—(१) बेवकूफ़। वह तो निरा गँवार का लट्ठ है उसे बोलने की तमीज़ नहीं। (२) ना समझी से अनुचित दंड देना। गँवार का लट्ठ बिना समझे चलता है, अदालती न्याय तो भी पहिले कुछ निर्णय कर लेता है, पर वह नहीं।

गंदा करना—(१) कलंकित करना। एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है (कहावत) (२) खराब करना। तुमने सारे कपड़े गंदे कर दिये।

ग़ज़ब करना—(१) जुल्म वा हद करना। गर्मी ने तो आज ग़ज़ब कर रखा है। (२) आश्चर्य जनक; अनोखा कार्य करना। यों तो चुप रहता है परन्तु जब बोलने के लिए स्टेज पर खड़ा होता है तो ग़ज़ब करता है।

ग़ज़ब टूटना वा पड़ना—मुसीबत आना, कफ़स में पड़ना। हम पर तो एक के बाद एक ग़ज़ब ही टूट पड़ा है।

ग़ज़ब का—विलक्षण, अपूर्व, अत्यंत। वह ग़ज़ब का चोर है; ग़ज़ब की खूबसूरत हो तुम।

ग़ज़ब तोड़ना वा ढाना—(१) कमाल करना, अनोखे काम करना। आप भी ग़ज़ब ढाते हैं सर्दी में बर्फ के पानी से नहाते हैं। (२) बदला लेना, बैर पूरा करना। कई बार हारा है इस बार फिर ग़ज़ब तोड़ने आया है।

गजर दम—बहुत सुबह, चार बजे प्रातः। वह गजरदम उठकर चला गया।

ग़जी गाढ़ा—मोटा झोटा, साधारण। तुम रईस हो हम ग़जी गाढ़े पहिनने वाले गँवार।

गज भर की जीभ होना—(१) खाने के लिये अधिक जीभ चटकाना ज़्यादा खाना, चखने य खाने का हक़ ज़्यादा होना। तुम्हारी ही कोई गज़ भर की जीभ है जो तुम्हें दिखलाया जाय। (२) बहुत बोलना। हर वक्त बोलते रहते हो ऐसा क्या तुम्हारी ही जीभ है हम भी जवाब देना जानते थे पर हम नहीं बोले।

गज़ट करना / गज़ट होना—(१) सरकारी पत्र में प्रकाशित होना कराना। (२) बहुत प्रसिद्ध होना।

यह बात तो सब जगह गज़ट हो गई है कौन नहीं जानता।

गट्ट करना—(१) दबा बैठना, हड़प जाना। वह सारा माल गट्ट कर गया। (२) निगल जाना, खाना। वह सारी रबड़ी गट्ट कर गया।

गट्टा उखाड़ना—(१) परास्त करना, हराना। एक ही कुश्ती में गट्टा उखाड़ दूँगा बड़े पहलवान बने फिरते हो।

गठरी बाँधना—(१) सामान बाँध कर चलने की तैयारी करना। गाड़ी का वक्त़ है गठरी बाँधो। (२) घुटनों को छाती पर लगा कर दोनों हाथों से जकड़ना। सर्दी इतनी थी कि गठरी बाँध दी।

गठरी मारना—(१) चालाकी, चोरी आदि से माल उड़ाना। अब ईमानदारी से पेट नहीं भरता किसी की गठरी ही मारनी पड़ेगी। (३) बाँध कर डाल देना। रास्ते गीर की गठरी मारी और माल लेकर चंपत हुए।

गडंग मारना या हाँकना—(१) गप्पें मारना, डींग हाँकना। क्यों गडंग हाँकते हो तुम सेर भर घी पी जाओगे? (२) अहंकार करना, शेखी मरना। वह बड़ी अपनी गडंग मारता है।

गड़ जाना—झेंपना, शर्मिन्दा होना। तुम तो बेहया हो और कोई होता तो (शर्म से) गड़ जाता।

गड़हा पाटना या भरना—(१) कमी पूरी करना, टोटा भरना। दो बार तो १००) १००) देकर गड़हा भर दिया अब बार बार मैं कहाँ तक दूँ। (२) रूखी सूखी चीज़ से पेट भरना। बेचारे घास-पात, चना-चबैना खाकर गड़हा भरते हैं क्या करें पैदा नहीं।

गड़हे पड़ना—गड्ढे हो जाना। वहाँ की मिट्टी बह जाने के कारण जगह जगह गड़हे पड़ गये हैं।

गड़हा खोदना—(१) कमाना। रोज गड़हा खोदना और रोज़ पानी पीना ऐसे ही गुज़रती है। (२) नुक़सान पहुँचाना। क्यों बेचारे गरीब के लिये गड़हा खोदते रहते हो नौकरी छूट भी गई तो तुम्हें क्या मिलेगा?

गड़हे में पड़ना—असमंजस या कठिनाई में पड़ना। दिल गड़हे में पड़ा है क्या करूँ प्यारी।

गड़े कोयले या मुर्दे उखाड़ना—(१) घाव हरा करना, पुरानी बातों को दुहराना। अब गड़े मुर्दे क्यों उखाड़ते हो नहीं तो कुछ फैसला न होगा। (२) मरे हुए पुरुष के दोष दिखाना, छिपे हुए दोष प्रकट करना। जाने दो अब गड़े कोयले मत उखाड़ो।

गड्ड का गड्ड—ढेर का ढेर, बहुत सा। गड्ड का गड्ड पुस्तकों का लाकर रख दिया।

गढ़ गढ़ कर बातें करना वा बनाना--झूठ मूठ की कल्पना करके बात कहना, नमक मिर्च लगा कर बातें करना। क्यों गढ़ गढ़ कर बातें करती हो यों सचाई छिपाने से न छिपेगी।

गढ़ जीतना—(१) किला जीतना। (२) कठिन काम करना। अगर तुम यह काम कर लाये तो समझो गढ़ जीत लिया।

गतका—अच्छा, काम का। गतका कपड़ा भी तो पास नहीं।

गत बनाना या करना—(१) बुरी हालत करना। हमी से पूछते हो फिर कि यह क्या गत बनाई है। (२) मारना-पीटना, डाँटना डपटना, खबर लेना, दंड देना। घर पर जाओ देखो तुम्हारी क्या गत बनाई जाती है। (३) चेहरे पर रंग कीचड़ आदि लगाना, अनोखा रूप बनाना। होली पर तुम्हारी देखना क्या गत बनाई जायगी। (४) बिगाड़ना। देखो कपड़ों की क्या गत कर रखी है, जरा भी शहूर नहीं। (५) मरे का श्राद्ध करना। पिता जी की गति कर दी निश्चिन्त हुए। (६) हँसी उड़ाना, शर्मिन्दा करना। वे अपने को बड़ा बोलने वाला समझते हैं कल उनकी भी वह गत की गई कि याद रक्खें।

गत होना—मरना, मर जाना। उनकी लम्बी बीमारी के बाद कल गत हो गई।

गताल खाते में जाना--(१) व्यर्थ होना, व्यर्थ में जाना। हमारी सारी रक़म तो गताल खाते में गई और उसने अपने रुपये निकाल लिये। (२) हड़प जाना, हज़म हो जाना। पहिले के रुपये तो गताल खाते में गये अब और रुपया दो तो व्यौपार चलेगा वरना रहने दो।

गदहे का हल चलना—उजड़ जाना, खंडहर हो जाना। आज कल तो गाँव वाले मकान में गदहे का हल चलता है, क्योंकि हम लोग शहर में आ बसे अब वहाँ मकान में रुपये क्यों लगावें।

गदहे पर किताबें लादना—निर्बुद्धि को पढ़ाना, मूर्ख को व्यर्थ में किताबें वग़ैरा देना जब कि वह उनसे लाभ न उठा सके। इसे आवेगा जावेगा कुछ नहीं आप व्यर्थ में गदहे पर किताबें लाद रहे हैं, ये न पढ़ेगा रुपया चाहे बरबाद कर लो।

गदहे पर चढाना—खूब बेइज़्ज़त करना, बदनाम करना। उस बेचारे

को तुमने गदहे पर चढ़ा कर छोड़ा।

गदा का सुनाना—फट कारना, भिड़कना।

गद्द करना—पेट में जाकर किसी चीज़ का न पचना।

गद्द धरना—गद्द कर रोग होना।

गद्दी चलाना—गद्दी पर बैठना, वंश क्रम या शिष्य क्रम जारी रखना। महंत की गद्दी को अब कौन चलावेगा शिष्य तो कोई है नहीं।

गद्दी पर बैठना—(१) सिंहासन पर बैठना। पंचम जार्ज के बाद एडवर्ड अष्टम गद्दी पर बैठे हैं (२) उत्तराधिकारी होना।

गपउड़ाना—झूठी खबर फैलाना। उसने सारे गाँव में यह गप उड़ा दी कि मैं पकड़ा गया।

गप्प मारना या लड़ाना या हाँकना—(१) बहुत सी बातें करना। तमाम दुनिया की गप्प लड़ाते रहते हो। (२) शेखी बघारना। क्यों इतनी गप्प हाँकते हो हम जानते हैं तुम जितने वीर हो। (३) झूठी बातें बना बना कर कहना। उसका क्या विश्वास वह तो यों ही गप्प मारता होगा।

गये बीते होना—बुरी हालत को पहुँचना, निकृष्ट, किसी काम का नहीं। तुम हमसे भी गये बीते हो हम इतना तो भी कर लेते हैं तुम से इतना भी न होगा।

ग़म खाना—(१) क्षमा करना, ध्यान न देना। जाने दो ग़म खाओ, नाराज़ होने से कुछ न बनेगा। (२) ठहरना, समय लगाना। ग़म खाओ मुझे हो आने दो फिर जाना। (३) सब्र और शान्ति से रहना। बनिया क्यों मोटा? ग़म खाता है।

ग़म ग़लत करना-दुख भुलाना, शोक दूर करने का प्रयत्न करना। क्यों ग़म ग़लत करते हो मुझे रोने दो।

ग़रकी देना या ग़रकी में डालना—कष्ट देना, दुख देना। क्यों बिचारे को ग़रकी देते हो वह तो पहिले ही मरा हुआ है।

ग़रज़ का बावला—अपने मतलब से सब कुछ करने वाला। इस समय ग़रज़ का बावला है गाली भी दे लोगे तो परवाह न करेगा।

ग़रज़ कि—मतलब यह है कि, अर्थात, सारांश है कि। ग़रज़ कि तुम नहीं दे सकते!

गरज गाँठना—मतलब निकालना, काम सिद्ध करना। हम अपनी गरज गाँठने के लिये उससे बात भी करते हैं वरना हमें क्या मतलब।

गरदन उठाना—विरोध करना,

सिर उठाना। वह मेरे खिलाफ गर्दन उठायेगा तो फल पायेगा।

गरदन उड़ाना—सिर काटना, मार डालना। तलवार के एक वार से ही गरदन उड़ा दी।

गरदन ऐंठना—दे० गरदन मरोड़ना।

गरदन ऐंठी रहना—घमंड में या नाराज रहना। मैं जब तक रहता हूँ उनकी गरदन ऐंठी ही रहती है।

गरदन कटना, काटना—(१) धड़ से सिर अलग करना। (२) बुराई होना, हानि पहुँचाना। आपका तो कुछ न बिगड़ा अब गरदन तो हमारी कटी साहब हम से पैसे काट लेगा।

गरदन झुकाना—(१) शरमाना, लज्जित होना। उसने गरदन झुका कर भूल का पश्चाताप किया (२) नम्र आज्ञाकारी या आधीन होना। बड़ों के सामने उसकी गरदन झुकी रहती है, जरा घमंड नहीं कि मैं विद्वान हूँ। (३) बेहोश होना। (४) मरना। बैठे बैठे उसकी गरदन झुकगई बस फिर जमीन पर ले लिया गया।

गरदन न उठाना—(१) सब बातों को चुपचाप सह लेना। उस बेचारे की इतनी बुराई की गई पर उसने गरदन भी न उठाई। (२) बीमारी के कारण पड़े रहना। जब से यह लड़का बीमार पड़ा है इसने गरदन नहीं उठाई। (३) शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।

गरदन नापना—(१) अर्ध चंद्र देना, गरदनिया देना, गरदन पकड़ कर निकालना। वहाँ से तो तुम्हारी गरदन नापी ही गई थी यहाँ फिर चाहते हो मजा चखना! (२) अपमान करना, बेइज्जती करना।

गरदन नाचीज़ होना—जानकी कीमत न होना। लड़ाई में राजा की गरदन भी नाचीज़ होती है।

गरदन पकड़ कर करा लेना—ज़बरदस्ती करालेना, दबाव डाल कर करा लेना। मैं यह तो उसकी गरदन पकड़ कर करा लूँगा वह मेरी इतनी भी न मानेगा?

गरदन पकड़ कर निकालना—अपमान या बेइज्जती करना। वे तो गरदन पकड़ कर निकाले गये।

गरदन पर—जिम्मे, ऊपर। इसका पाप तुम्हारी गर्दन पर है।

गरदन पर छुरी फेरना—दुखी या तंग करना, बरबाद करना, हानि पहुँचाना। तुमने अपना भला किया, परन्तु हमारी गरदन पर तो छुरी फेर दी न! हमें वह रुपये भी न मिलेंगे।

गरदन पर जुवा रखना—(१) जिम्मेदारी सिर पर लेना। हम क्यों गरदन पर जुवा रखें हमें क्या फायदा है, जो यह काम करें!

(२) सौंपना, भारी काम सुपुर्द करना। यह जुवा उसकी गरदन पर रखो वह इस काम को पूरा कर सकेगा।

गरदन पर बोझ होना—(१) बुरा लगना, खलना। मुझे यह काम गरदन पर बोझ मालूम होता है क्योंकि मेरी दिलचस्पी तो ज़रा नहीं। (२) सिर पड़ना, भार होना। इस काम का बोझ तुम्हारी गरदन पर ही है।

गरदन पर लेना—हत्या का अपराधी होना, अपने ऊपर हत्या लेना। उसने वह खून अपनी गरदन पर ले लिया, अदालत भी चौंक गई।

गरदन मरोड़ना—(१) गलादबाना, मारडालना। भूत ने उसकी गरदन मरोड़ दी वह मर गया (२) कष्ट पहुँचाना, पीड़ित करना। क्यों दस रुपये के लिये उसकी गरदन मरोड़ते हो यह दस रुपये भी उसके लिये नियामत हैं।

गरदन मारना—(१) सिर काटना। (२) नुकसान पहुँचाना।

गरदन में हाथ देना या डालना—(१) बेइज्जती करना। (२) गरदनिया देना। गरदन में हाथ डाल कर निकाले गये। (३) प्रेम प्रदर्शित कर, छाती से छाती मिलाना। जब जाता हूँ गरदन में हाथ डाल कर बातें करती है।

गरदन फँसना—जोखों में पड़ना, कफ़स में पड़ना। जमानत देकर हमारी तो गरदन फँस गई, फिर करें तो तोबा!

गरदन हिलाना—(१) अस्वीकार करना, इन्कार करना। खुदा का मान लेना दिल से फरमाना खबर दार उससे मत गरदन हिलाना। (२) झकझोर के कहना। वहाँ तुम्हारी गरदन हिलादी गई थी फिर भी नहीं लाये!

गरम करना—(१) गुस्सा दिलाना, नाराज़ करना। मैं उन्हें गरम कर दूँगा तुम लड़ने लगना। (२) (कान गरम करना)-कान उमेठना।

गरम मामला—हाल की घटना, अभी गरम मामला है जो करना है कर डालो।

गरम सर्द उठाना, सहना वा देखना—भले बुरे दिन काटना, संसार का ऊँचा नीचा देखना। उसने गर्म सर्द सभी कुछ सहा है अतः गम्भीर बन गया है।

गरम हो उठना—नाराज या गुस्से में हो जाना। जरा सी बात पर गरम हो उठते हो।

गरमा गरमी से—शीघ्रता से, बड़े उत्साह से, बहुत जोश से। कांग्रेस

का काम सन् ३० में बड़ी गरमा गरमी से हुआ।

गरमा देना—(हाथ) रिश्वत देना। ५) से इसके भी हाथ गरमा दो।

गरमी करना—प्रकृति में उष्णता लाना, पेट वा कलेजे में ताप करना। कुनैन वहुत गरमी करती है।

गरमी झाँटना वा निकालना—घमंड दूर करना, ऐंठ निकालना। अभी हम तुम्हारी गरमी निकाले देते हैं, लाना रे! जूता।

गरीबी आना—दरिद्र या मुहताज होना। हम पर गरीबी आगई है इसलिये रुपया नहीं खर्च सकते।

गर्द उड़ाना—नष्ट करना, धूल में मिलाना। सेना ने गाँव की गर्द उड़ा दी।

गर्द को न पहुँचना—बराबरी न कर सकना। ये बेचारे उसकी गर्द को भी नहीं पहुँच सकते वह बहुत बड़ा है।

गर्द झड़ना—ऐसी मार खाना जिसकी परवाह न हो। ऐसे मुक्कों से क्या होता है मैंने तो समझा कि कोट की गर्द झड़ रही है।

गर्द फाँकना—फिजूल घूमना, आवारा फिरना। क्यों गर्द फाँकते फिर रहे हो वह तुम्हारा काम न करेगा।

गल जाना—व्यर्थ खर्च होना। कल तमाशे में ५०) गल गये।

गलती में पड़ना—धोखा खाना, धोखे में होना। मैं गलती में पड़ गया यह वही है या और है।

गल बहियाँ डालना—गले में हाथ डालना, प्रेमालिंगन करना। गल बहियाँ न डालो रे बालमा।

गर्द होना—(१) नाचीज़ होना, तुच्छ होना। इसके सामने सब गर्द है। (२) नष्ट होना, चौपट होना। मुकदमेबाजी में वह गर्द हो गया।

गला आना—गले के अंदर छाले या सूजन होना। मेरा गला आ रहा है रोटी नहीं खाई जाती।

गला काटना—(१) गरदन पर छुरी फेरना। (२) धड़ से सिर जुदा करना। (३) अत्यंत कष्ट देना, अन्याय करना। वह लोगों का गला काट कर रुपया जमा करता है। (४) खाने की चीज़ का गले में चुभना। यह सूरन गला काटता है। (५) अहित करना, विरुद्ध काररवाई करना। जो मित्र बनते हैं वह पीछे गला काटते हैं।

गला घुँटना—दम रुकना, अच्छी तरह साँस न आना। किवाड़, हवा बंद है, गला घुँटने लगा।

गला घोंटना, टीपना, दबाना वा मरोड़ना—(१) ज़बरदस्ती या

ज़ब्र करना। गला घोंट कर किसी से कब तक काम ले सकते हैं ? (२) मार डालना, गला दबा कर प्राण निकालना। जी आता है गला घोंट कर मर जाऊँ, ऐसी ज़िन्दगी से बाज़ आई। (३) गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जायँ। (४) हानि पहुँचाना। मेरा क्यों गला घोंटते हो जुर्माना ही लेना है तो साहब से लो।

गला चलना—सुरीला कंठ होना। बहुत मत गाओ फिर कल गला कैसे चलेगा ?

गला छुड़ाना या छुटाना—पिंड छुटाना, झंझट मिटना, पल्ला छुड़ाना। (क) उसे कुछ दे लेकर गला छुड़ाओ। (ख) कल वह रास्ते में मुझसे ऐसा उलझ पड़ा कि गला छुड़ाना मुस्किल हो गया।

गला छूटना—छुटकारा मिलना, बचाव होना। मेरा गला छूटना मुश्किल है तुम चले जाओ।

गला पड़ना या बैठना—(१) गले से शब्द सुरीला व स्पष्ट न निकलना, आवाज़ बैठना। रात भर गाते गाते गला बैठ गया है। (२) सरदी के कारण गले में छोटी छोटी गिल्टियाँ पड़ना जिनसे खाने में कष्ट हो।

गला फँसना—मजबूर होना, विवश होना, गरदन फँसना। जब आदमी का गला फँसता है तब कुछ करने को तैयार होता है।

गला फँसाना—(१) मुश्किल में डालना, जिम्मेदारी सिर पर लेना। तुम क्यों अपना गला फँसाते हो जिसे ग़रज़ होगी अपने आप करेगा। (२) बंधन में डालना, वशीभूत करना। हमारा गला फँसा कर आप चलते बने।

गला फाड़ना—जोर जोर से चिल्लाना, इतनी आवाज़ से पुकारना कि गला दुखने लगे। क्यों गला फाड़ रहे हो वह नहीं बोलेगा।

गला फिरना—तान और लय के अनुकूल स्वर निकलना। जरा गला फिर जाय तो ऐसा गाऊँ कि आनन्द आ जाय।

गला फूलना—दम फूलना, उकता जाना। जरा गला फूल गया था इसलिये बोला भी नहीं जाता था।

गला बाँधकर धन जोड़ना—खाने पीने का कष्ट उठा कर भी धन इकट्ठा करना। आज कल वह गला बाँधकर धन जोड़ रहा है।

गला रेतना—(१) किसी की बुराई का सामान करना, हानि पहुँचाना। उसने खुद ठेका कम पर लेकर हमारा भी गला रेत दिया और आप भी फँस ही गया समझो। (२) अधिक और असह्य दुख

देना। हमने बड़े बड़े पाप किये हैं, एक दम नहीं बल्कि गला रेत कर क़त्ल किये हैं।

गली कमाना—(१) पाख़ाना साफ़ करना। तीन तीन गलियाँ कमानी पड़ती हैं और फिर (२) गली में झाड़ू देना। सारी गली कमानी पड़ती है।

गली गली फिरना या छानना—(१) शहर भर में ढूँढ लेना। गली गली छान मारी कहीं न मिला। (२) व्यर्थ घूमना। क्यों गली गली फिरते हो घर पर बैठो।

गली गली मारे मारे फिरना—(१) इधर उधर व्यर्थ घूमना। (२) जीविका के लिये इधर से उधर भटकना। गली गली मारे मारे फिरना पड़ता है, तब कहीं रुपये आठ आने की मजूरी होती है। (३) चारों ओर अधिकता से मिलना, साधारण होना। ऐसे वैद्य तो गली गली मारे मारे फिरते हैं।

गली झँकाना—इधर उधर हैरान करना, खोज में फिराना। तुमने मुझे कितनी गलियाँ झँकाई।

गले का हार—(१) अत्यंत प्यारा व्यक्ति, जो दूर न किया जा सके। इस समय तो राजा साहब उसे गले का हार समझते हैं। (२) पीछा न छोड़ने वाला, वह जो बोझ मालूम हो, न चाहने पर भी साथ रहने वाला। कितना ही दूर रहें अब वह गले का हार ही बना रहता है क्या करूँ?

गले के नीचे उतरना या गले उतरना—(१) मन में जमना, स्वीकृत होना, समझ में आना। उसे कितना ही समझाया परन्तु यह बात उसके गले के नीचे ही नहीं उतरती। (२) निगलना, पेट में जाना। दवाई इतनी कड़वी है कि गले के नीचे नहीं उतरती।

गले (तक, में) उतारना—स्वीकार कराना, समझ में बैठाना।

गले पड़ना (१) मत्थे मढ़ा जाना, न चाहने पर भी मिलना। गए नमाज़ छुड़ाने उल्टा रोजा गले पड़ा। (२) सिर पर आना, करना ही पड़ना। गले पड़ी ढोल बजाए सिद्ध। (३) आगे आना, सिर पड़ना। मैं क्या जानती थी कि वियोग गले पड़ेगा, मैं मोह ही क्यों डालती।

गले बाँधना—(१) व्यर्थ में पास रखना। तुमने दो घोड़ियों का खर्च और गले बाँध रखा है, नहीं काम आतीं तो एक बेच डालो। (२) व्यर्थ में संग लगाना। चार बरस के बच्चे को क्यों मेरे गले बाँधती हो मेले में इसे पाखाना आगया तो! (३) इच्छा विरुद्ध किसी से विवाह

करना, अनुचित मेल। ऊँट के गले बकरी बाँध दी बेचारी लड़की क्या दुआ देगी। (४) जबरदस्ती देना। जब वह इसे नहीं लेना चाहता तो क्यों उसके गले बाँधते हो।

गले मढ़ना—(१) इच्छा के विरुद्ध देना, दे० गले बाँधना। (२) वह दूकानदार टूटी फूटी चीज़ें लोगों के गले मढ़ देता है। (३) न चाहने पर भी कार्य भार देना। मैं नहीं कर सकता क्यों मेरे गले मढ़ते हो! (४) इच्छा के विरुद्ध ब्याहना। कानी स्त्री उसके गले मढ़ी गई।

गले में जंजीर पड़ना—ब्याह हो जाना, काठ में पाँव पड़ना, पैरों में बेड़ी पड़ना। हमारे गले तो जंजीर पड़ी है वरना जेल का क्या डर!

गले लगना—(१) गले मिलना, गले में हाथ डालना। बरसों से बिछुड़े थे देखते ही दौड़ कर गले लगे। (२) गले पड़ना।

गले लगाना—हृदय से लगाना, प्रेम करने लगना। क्यों रूठी हो गले लगाओ, गुज़र गया है जमाना गले लगाये हुए।

गश खाना—मूर्छित होना, बेहोश होना। अमीचंद गश खाकर ज़मीन पर गिर पड़ा।

गश्त मारना या लगाना—चारों ओर फिरना, चक्कर लगाना। एक बार गश्त लगा आऊँ देखूँ कौन जाग रहा है; कौन सो रहा है।

गस्सा मारना—कौर खाना। दो गस्से मारलूँ फिर चलता हूँ।

गहरा आसामी—धनी आदमी, ज्यादा देने वाला। वह तो गहरा आसामी है. उससे ही सारे रुपये क्यों न ले लो।

गहरा पेट—(१) ऐसा हृदय जिसका भेद न खुले। उसकी बातें कोई नहीं जान सकता, उसका बड़ा गहरा पेट है। (२) माल या बात हज़म कर जाने वाला। बड़ा गहरा पेट है १०००) ५००) बिना तो बात ही नहीं।

गहरा रंग पकड़ना—झंझट वा उलझन में पड़ते जाना, बात बढ़ती जाना। अब इस विषय में कुछ न बोलो नहीं तो यह मामला गहरा रंग पकड़ जायेगा, क्योंकि दोनों ओर बड़ी बड़ी ताकतें आ गई हैं।

गहरा हाथ-पड़ना, मारना, लगाना—(१) काफी माल उड़ाना, बहुत रुपया हड़पना। अब के तो गहरा हाथ मारा है साल भर का निर्वाह होगा? (२) हथियार या हाथ का पूरा वार होना। मैं धीरे से मारना चाहता था; परन्तु गहरा हाथ पड़ गया, बस दो टुकड़े हो गये। (३) खूब रुपया कमाना, कीमती वस्तु

मिलना। इस बार हाथ ज़रा गहरा लगे तो मज़ा आये।

गहरी घुटना, छनना—(१) खूब गाढ़ी भंग घुटना। (२) बड़ी मित्रता होना। आज कल इन दोनों की गहरी घुटती है, हर वक्त ही साथ देखो (३) खूब आमोद प्रमोद होना। आज कल तो शाम को उनके यहाँ चले जाते हैं वहाँ बड़ी गहरी घुटती है ११ बज जाते हैं। (४) घुल घुल कर बात चीत होना। कहो एकान्त में क्या गहरी घुट रही है?

गहरे करना—माल मारना, खूब लाभ उठाना। नौकरी लग गयी है, नवाब के यहाँ गहरे कर रहे हैं।

गहरे चलना—(१) घात में लगना। (२) जाते हुए पथिक के प्राण लेना। (३) घोड़े को सवारी में जोर से चलाना।

गहरे लोग—उस्ताद लोग, भारी, चतुर लोग। मेरी घड़ी लड़के कैसे उड़ा ले जायँगे, यह तो गहरे लोगों का काम है।

गाँठ उखड़ना—किसी अंग का अपने स्थान से हट जाना। मैं जो जोर से कूदा तो गाँठ उखड़ गई, अब बड़ा दर्द है।

गांठ कटना—(१) गाँठ में बँधी वस्तु का चोरी जाना (२) ठगा जाना, अधिक दाम दे देना।

गाँठ कतरना या काटना—(१) नुकसान होना, ठगना, थोड़ा माल मिलना। इस बार तो तेल में गाँठ काट लीं। चार में दो पैसे का भी माल नहीं दिया। (२) गाँठ काट कर रुपया निकाल लेना, जेब कतरना। बम्बई के गँठ कतरे चलते चलते गाँठ कतर लेते हैं।

गाँठ करना—(१) गाँठ में बाँध लेना, अंटी करना। (२) बटोरना, जमा करना। उसने इस घर से बड़ा माल गाँठ किया।

गाँठ का पूरा—रुपये वाला होना। आँख का अंधा गाँठ का पूरा कोई कोई ही होता है।

गाँठ का पैसा—अपना धन, पास का रुपया। गाँठ के पैसे को इस तरह खर्च करो तो हम समझें कि शौकीन हो।

गाँठ खुलना—(१) उलझन सुलझना, समस्या हल होना। इतनी देर की पंचायत के बाद गाँठ खुली, बस फिर फैसला हो गया। (२) असली बात का पता लगना। अभी गाँठ नहीं खुली है, हृदय में गुब्बार है।

गाँठ खोलना—(१) उलझन या झगड़ा मिटाना, कठिनाई या अड़चन दूर करना। इस गाँठ

को कोई ऐसा आदमी खोल सकता है जिसकी बात दोनों फरीक़ न टालते हों। (**मन या हृदय की) गाँठ खोलना**—(१) मन में रखी हुई बात कहना, जी खोल कर कहना। (२) भीतरी इच्छा प्रकट करना। अब तुमने मन की गाँठ खोली है अब मैं, तुम जो कहोगे वही करूँगा। (३) हौसला पूरा करना, मन की निकालना। तुम अच्छी तरह अपनी गाँठ खोल लो।

गाँठ पकड़ना वा करना (मन में)—भेद मानना; बुरा मानना, बुरी लगना। उसकी ईर्ष्या भरी बात से मेरे हृदय में गाँठ कर गई।

गाँठ पड़ना (मन में)—(१) मामला पेचीला होता जाना, उलझन बढ़ती जाना। (२) द्वेष या मन मोटाव बढ़ता रहना। (३) दिलों में फरक हो जाना। कुछ न कुछ गाँठ पड़ गई है तभी वह नहीं बोलता।

गाँठ पर गाँठ पड़ना—दो गाँठ पड़ना, गहरा रंग पकड़ना।

गाँठ बाँधना—याद रखना। गाँठ बाँधलो कहीं फिर कहो कि भूल गया था।

गाँठ में बाँधना—(१) याद रखना, हमेशा ध्यान रखना। (२) निश्चय करना। उस दिन से कान पकड़ा और यह बात गाँठ में बाँध ली है कि झूठी गवाही न दूँगी।

गाँठ में होना—पल्ले में, पास में। गाँठ में भी कुछ है या यों ही बाजार चल रहे हो?

गाँठ (मन में) रखना—(१) जी में बुरा मानना। (२) ईर्ष्या या जलन रखना। वह हमसे मन में गाँठ रखता है। (३) झपट लेना, ले लेना। वह उनसे भी कुछ न कुछ गांठ कर रखता है।

गाँठ से—अपने पास से, अपना। गांठ से लगाना पड़े तो मालूम हो।

गाँठता ही नहीं—कुछ नहीं समझता, परवा न करना। वह तो अपने पिता जी तक को नहीं गाँठता मेरी तो बात क्या।

गाँठना (मतलब)—(१) मतलब निकालना, काम निकालना। हमें तो अपने मतलब गाँठने से काम हमारी तरफ से चाहे कल उसका दिवाला ही निकल जाय। (२) पूरी करना। वह अपनी बात या काम गाँठ लेता है, चाहे और कोई मरे या जिये।

गाँस कर रखना—बात को मन में जमा कर रखना, स्मरण रखना। तुम वह बात गाँस कर राखी, हमको गई भुलाइ।

गाँस निकालना—बैर निकालना, बदला लेना। बहुत दिन की गाँस उन्होंने इस बार मुझे हानि पहुँचा कर निकाल ली।

गाँस में करना या रखना—अधिकार या वश में करना। पावेगो पुन कियो अपनो जोर करेगो गाँसी।

गाँसी लगना—तीर लगना। फाँसी से फुलेल लागे गाँसी सी गुलाल लागे गाज अरगजा लागे चोवा लागे चहकन।

गाज पड़ना—(१) बिजली गिरना, डर होना, चुप हो जाना, नकर सकना। ऐसी गाज पड़ गई है पूछो तो जवाब तक नहीं देती। (२) आफ़त आना, ध्वंस होना। हमारे सारे रोजगार पर गाज पड़ गई एक पैसे का लाभ नहीं।

गाज मारना— (१) बिजली गिरना। (२) आफ़त आना।

गल गाजना— हर्षित होना। उनई आय दुहू गल गाजे हिन्दू तुरुक दोऊ सब बाजे।

गाजर मूली समझना—दे० खीरा ककड़ी समझना।

गाड़ में बैठना—(१) घात में या ताक में बैठना। (२) चौकी या पहरे बैठना।

गाड़ा बैठाना—चौकी बैठाना, पहरा बैठाना।

गाढ़ी छनना—(१) भंग का खूब पिया जाना। (२) गहगड्ड नशा होना। आज तो बड़ी गाढ़ी छनी है होश भी नहीं है। (३) विरोध होना, लाग होना। हमारी उनकी आज कल काफ़ी गाढ़ी छन रही है, देखिये कौन झुकता है। (४) शेष देखो गहरी छनना।

गाढ़े का साथी या संगी—संकट और विपत्ति में मित्रता निभाने वाला। दौलत राम को मैं कैसे छोड़ दूँ यह मेरे गाढ़े का साथी है।

गाढ़े की कमाई—बहुत मेहनत से कमाया हुआ पैसा। बाप की गाढ़ी कमाई बेटा उड़ा रहा है।

गाढ़े दिन—विपत्ति का समय, दुख का वक्त।

गाती मारना—गाती बाँधना, कपड़े के कोनों को पीठ से लाकर छाती पर से लेजाकर गले के पीछे बाँधना।

गाद बैठना—(१) कीट या कीचल या तलछट जमना।

गाना (अपना २)—देखो मु० नं० १६३।

गाना (अपनी ही)—देखो "अपना ही राग गाना।"

गाय की तरह काँपना—बहुत डरना, थर थर काँपना। बहू तो बेचारी बहुत ही सीधी है तुम्हारी

नराज़ी सुनकर तो गाय की तरह काँपती है।

गाय का बछिया तले बछिया का गाय तले करना—(१) हेरी फेरी करना, इधर का उधर करना। (२) काम निकालने के लिये कुछ का कुछ करना। वह बड़ा चतुर है गाय का बछिया तले बछिया का गाय तले करके किसी तरह अपने रुपये निकाल ले गया।

गाय ताल लिखना—बट्टे खाते लिखना, गत्ताल खाते लिखना।

गारना (तन, गात)—शरीर गलाना, शरीर को कष्ट देना। यों तप में तन गारयो गुसाईं।

गारी (ली) आना, पड़ना, लगना—कलंक या लांछन लगना। बरजत मात पिता पति बांधव अरु कुल आवे गारी।

गारी लाना—कलंकित करना, दाग लगाना।

गाल करना—(१) बोलने में शंका या संकोच न करना, मुँह जोरी करना। कत सिख देइ हमहिं कोइ भाई, गाल करब केहि कर बलपाई। (२) डींग मारना। वह मघवा बलि लेतु है नित करि करि गाल।

गाल फुलाना—(१) अभिमान प्रगट करना, गर्व सूचक आकृति। वचन करहिं सब गाल फुलाई। (२) रूठना, रिसकर के बोलना। हँसब ठठाइ फुलाउब गालू।

गाल बजाना—(१) डींग मारना। वृथा मरन जनि गाल बजाई, मन मोदकन कि भूख बुझाई। (२) बढ़ बढ़ कर बात करना। बलवान है स्वान गली अपनी तिहि लाज न गाल बजावत सोहै।। (३) व्यर्थ बकवाद करना। क्यों गाल बजा रहे हो तुम्हारी बातों में कुछ सार नहीं। (४) शिवजी के सामने बंबं करना।

गाल में जाना (कालके)—(१) मुँह में पड़ना। जो गाल में गई अब वह क्या लौटेगी। (२) मौत के मुख में जाना। काल के गाल गये भट मानी।

गाल में भरना—खाने के लिये मुँह में भरना। (गाल भरना भी बोलते हैं—इतना मुँह भरना कि चलाया न जा सके)।

गाल मारना—डींग हाँकना, सीटना। मृषा मूढ़ जनि मारसि गाला (२) मिथ्या जल्पना, व्यर्थ बकना। क्यों न मारै गाल बैठो काल डाढ़न बीच (३) कौर मुँह में डालना, ग्रास मुख में रखना। गाल मारलें तो चलें।

गाला सा, रुई का गाला—उज्ज्वल, धौला, सफ़ेद।

गालियों पर उतरना—गालियाँ

बकने लगना, गालियाँ देना। जब बातों का ठीक ठीक जवाब नहीं दिया जाता, तो चिढ़ कर गालियों पर उतर आते हैं।

गालियों पर मुख खोलना—गाली बकना आरम्भ करना, दुर्वचन कहना शुरू करना। सास कभी नहीं बोलती बस गालियों पर मुख सर्वदा खोलती है।

गाली खाना—दुर्वचन सुनना, गाली सहना। क्यों गाली खाने वहाँ जाते हो, मत जाओ।

गाली देना - दुर्वचन कहना।

गाली पड़ना—अभिशाप, शाप या गाली का फल होना। ऐसा मत कहो तुम्हीं को गाली पड़ती है।

गाव खुर्द होना—(१) बरबाद जाना, नष्ट भ्रष्ट होना। (२) ग़ायब होना। देखते देखते पुस्तक यहाँ से गावखुर्द होगई।

गाहक (जी वा प्राण के)—(१) मार डालने वाला, प्राणों का इच्छुक। तुम हो मम प्राणनु के गाहक, जीवन नहिं दै हो मोहि। (२) चाहने वाला।

गाहकी पटना—सौदा होना। हमारी गाहकी १००) में पट गई।

गिटकरी लेना—आवाज़ को लहरा देना।

गिटपिट करना—टूटी फूटी अंग्रेज़ी बोलना।

गिन गिन कर (गालियाँ) देना, सुनाना- बहुत अधिक गालियाँ देना, बहुत बुरा भला सुनाना।

गिन गिन कर दिन काटना—बहुत कष्ट के साथ वक्त बिताना, मुश्किल से दिन गुजारना।

गिन गिन कर पैर रखना—धीरे धीरे सावधानता से चलना। यहाँ अँधेरे में गिन गिन कर पैर रखने पड़ते हैं।

गिन गिन कर लगाना—खूब पीटना, गिनती से मारना। झूठ बोलोगे तो गिन गिन कर (जूतियें) लगाऊँगा।

गिनती (में) आना, होना— किसी कोटि में समझा जाना, कुछ समझना। तेऊ काल कलेऊ कीने तू गिनती कब आयो।

गिनती कराना—किसी श्रेणि के अंदर समझा जाना। वह विद्वानों में अपनी गिनती कराने के लिये मरा जाता है।

गिनती कराने या गिनाने के लिये—नाम मात्र को, कहने सुनने भर को। गिनती कराने के लिये उसे दोस्तों में समझिये, बस।

गिनती के- इने गिने, कुछ थोड़े से वहाँ गिनती के आदमी आए।

गिनती पर जाना—(१) हाजिरी देने या लिखाने जाना। (२)

गिनना । तुम गिनती पर क्यों जाते हो यह देखो कि खाना कितने आदमियों का खाया गया, चाहे खाया ५ ने या ५० ने खर्च तो हुआ ३०० का ।

गिनती होना—किसी महत्व का समझा जाना । वहाँ बड़े बड़ों का गुज़र नहीं, तुम्हारी क्या गिनती है ।

गिनना (दिन)—(१) आशा में समय बिताना, दुख बीतने की राह देखना । दिन औधि के कौं लौं गिनों सजनी अँगुरीन के पौरन छाले परे । (२) किसी प्रकार काल क्षेप करना, वक्त़ गुजारना । भाई दिन गिन रहे हैं हम ज़िन्दगी के ।

गिन्नी खाना, गिन्नी खिलना—पहिला चक्कर मारना (पतंग के लिये) दूसरा चक्कर देना ।

गिरगिट की तरह रंग बदलना—बहुत जल्दी विचार, निश्चय या कपड़े बदलते रहना, अभी कुछ कहना थोड़ी देर में कुछ और विचार हो जाना वह तो गिरगिट की तरह रंग बदलता है, अभी लाल पीले हो रहे थे अभी जनाब प्रेम की बातें करने लगे ।

गिरफ़्त करना—दोष या आपत्ति निकालना या प्रकट करना । हरेक की चीज़ में गिरफ़्त करना तुम्हारी आदत है ।

गिरफ़्त में लेना—चक्कर में फाँसना; वश में करना । इस बार उसे मैं गिरफ़्त में ले आया हूँ ।

गिरफ़्तारी निकलना—पकड़े जाने का वारंट निकलना ।

गिरह का बल होना—रुपये का घमंड । तुम्हें गिरह का बल है उसे तुम व्यर्थ समझो ।

गिरह पड़ना—देखो गाँठ पड़ना नं० ३ ।

गीत गाना—(१) बड़ाई या प्रशंसा करना । भाई जिसका नमक खावेंगे उसका गीत गावेंगे ।

गीत गाना (अपना ही)—देखो मु० नं० १६१ ।

गीदड़ बोलना—बुरा शकुन होना । गाँव के पास गीदड़ बोलते हैं गाँव पर आपत्ति आयेगी । **किसी स्थान पर गीदड़ बोलना**—उजाड़ हो जाना ।

गीदड़ भभकी—केवल धमकाना, डराने भर की बात । यह केवल गीदड़ भभकी है वह कुछ नहीं कर सकता ।

गुजरना (किसी पर)—संकट या विपत्ति आना । जिस पर गुज़रती है वही जानता है (कहावत) ।

गुजरजाना—मर जाना ।

गुजारना (नमाज़)—नमाज़ पढ़ना । **अर्ज़ी**—अर्ज़ी दस्ती पेश करना ।

गुट्ट करना—मिल जुल कर काम करना। —**बाँधना**—(१) झुंड होना। एक सम्मति वाले कई होना उन्होंने गुट्ट कर लिया एक जैसी सब कहते हैं। —**बनाना**—एक से ही कई आदमी होना। उन्होंने गुट्ट बनाया हुआ है और किसी को मौका ही नहीं देते।

गुड़ फूटना (कुल्हिया में)—(१) गुप्त रीति से कोई काम होना। (२) छिपा हुआ पाप होना। **जो गुड़ खायगा वह कान छिदावेगा**-**जो गुड़ खायगी अँधेरे में आयगी**—जो धन लेगा उसे ही कष्ट उठना पड़ेगा।

गुड़ गोबर कर देना—बना बनाया काम मट्टी कर देना, बात बिगाड़ देना। तुमने साफ़ साफ़ कह कर सारा गुड़ गोबर कर दिया।

गुड़ दए मरे तो ज़हर क्यों दे—जब कोमलता व सरलता से ही काम हो जाय तो सख़्ती की क्या जरूरत। डरा धमका कर काम बन जाता है तो क्यों फिर शिकायत करो जो गुड़…।

गुड़ खाना गुलगुलों से परहेज करना—कोई पूरा काम करना उसके अंश को करने को तैयार न होना।

गुड़ होगा तो मक्खियाँ बहुत आ जायँगी - धन होगा तो खाने वाले आप आ जायँगे।

गुड़िया सँवारना हैसियत के मुताबिक लड़की का व्याह कर देना।

गुड़िया सी—छोटी सी। गुड़िया सी लड़की है बड़ी प्यारी।

गुड़ियों का खेल जानना, समझना - मामूली और सहज काम। तुमने इसे गुड़ियों का खेल समझ रखा है, यह बहुत मुश्किल है।

गुड़ियों का व्याह— (१) लड़की गुड़ियों का व्याह करती है। (२) छोटी छोटी बच्चियों का व्याह। (३) गरीब आदमी की लड़की का व्याह जिसमें धूम धाम न हो। गुड़ियों का सा व्याह किया पता भी न चला कब हुआ।

गुड्डा बाँधना, पुतला बाँधना—अपकीर्ति या निन्दा करना। अब तुलसी पूतरा बाँधि है, सहि न जात मोसों परिहास एते।

गुण गाना—प्रशंसा करना। जिसका खाओ उसके गुण गाओ। **मानना** - एहसान मानना, कृतज्ञ होना। मेरा यह काम कर दो मैं तुम्हारा जनम भर गुण मानूँगी।

गुदगुदाना वहीं तक जहाँ तक हँसी आवे--दिल्लगी उतनी अच्छी जितनी बुरी न लगे।

गुदगुदी करना—गुदगुदाना ।

गुदड़ी का लाल—ऊपर से सीधा, और गरीब वैसे बड़ा धनी या गुणी । गुदड़ी का लाल है रहता सीधा सा है; परन्तु वैसे लखपति है ।

गुदड़ी में लाल—तुच्छ स्थान पर उत्तम वस्तु, छोटे स्थान में बहुमूल्य वस्तु या गुणी व्यक्ति । तुम क्या जानो गुदड़ी में यहाँ लाल छिपे हैं ।

गुदड़ी (क्या है)—क्या ताक़त है ? क्या मजाल या हकीक़त है ? उनकी क्या गुदड़ी है जो मेरे लड़के से शादी करें ?

गुद्दी की नागिन—गुद्दी में (बालों का चक्र होना) भौंरी होना जो अशुभ है ।

गुद्दी नापना—सिर के पिछले हिस्से पर थप्पड़ मारना ।

गुद्दी में आँखें होना—देखो "आँखें गुद्दी में होना ।"

गुद्दी से जीभ निकालना—बहुत कड़ा दण्ड देना ।

गुरु घंटाल होना—बहुत चालाक और धूर्त होना ।

गुर्गे छूटना, लगना, होना—गुप्त चर या पता लगाने वाले आदमी फिरना, हर जगह होना ।

गुर्रा करना, देना, बनाना—(१) छुट्टी करना (२) नागा करना (३) लंघन करना । (४) टाल मट्टल करना ।

गुल —कतरना—(१) दीपक की बत्ती का जला हुआ निर्जीव भाग काटना । (२) कोई अनोखा काम करना । (३) काग़ज़ या कपड़े आदि के बेल बूटे बनाना ।—**करना**—दीपक बुझाना ।—**खाना**—अपने शरीर पर गरम धातु से दगवाना । **खिलना**—(१) अनोखी घटना होना, मजेदार-बात होना, ऐसी बात जिसका पहिले से अंदाज न हो हो जाना, भेद खुलना । आपके चले आने के बाद खूब गुल खिले दोनों ने गड़े मुर्दे उखाड़े बड़ी पुरानी बातें खुलीं । (२) उपद्रव मचना या बखेड़ा खड़ा होना । मैंने उसकी शिकायत घर कर दी है, देखो क्या गुल खिलता है । **खिलाना**—(१) अनोखी बातें या कार्य सामने रखना । (२) उपद्रव और बखेड़ा खड़ा करना ।—**बँधना**—(१) आग का अच्छी तरह सुलग जाना, आग में ताव आ जाना । अभी तवा चढ़ाती हूँ जरा गुल बँध जाने दो । (२) कुछ पूँजी या धन हो जाना । अब तो निश्चिन्त सा है कुछ गुल बँध गया है शायद ।—**गोथना सा**—मोटा ताजा, फूले फूले गालों

वाला । लड़का तो गुलगोथना सा है उससे तो भागा भी नहीं जा सकता ।

गुलछर्रें उड़ाना—बड़े आनन्द और विलास मय जीवन बिताना । हमने भी महाराजा साहब के सेक्रेटरी होने की हालत में खूब गुलछर्रें उड़ाये ।

गुलझट या गुलझटी पड़ना—मन में फर्क आना, मनोमालिन्य होना । अब तो कुछ गुलझट पड़ गई है पहिले बड़ा मेल था ।

गुलझट या गुलझटी निकालना—मनमुटाव और दिल का फर्क दूर करना । गालियों से कहीं गुलझटी निकाली जाती है ?

गुलाब चटकना—(१) गुलाब की कलियों का खिलना । (२) लकड़ी पर यौवन आ जाना । गुलाब चटक रहा है यही समय है ।

गुलाब छिड़कना—गुलाब का अर्क छिड़कना, गुलाब छिड़कने की रसम अदा करना । बरातियों के चंदन मैं लगाऊँगा गुलाब तुम छिड़कना ।

गुलाबी आना—चेहरे पर रौनक होना, गालों पर सुर्खी आना । अब तो गुलाबी आ गई है अंगूरों के सेवन का फल है ।

गुलाम करना, बनाना—बिल्कुल अपने ही अधिकार या वश में करना । मैंने उसे अपने गुलाम बना लिया है जो कहता हूँ करता है ।

गुलाम का तिलाम—सेवक का भी सेवक, बहुत तुच्छ सेवक ।

गुलाम होना—वश में होना । मैं तुम्हारा गुलाम नहीं हूँ, मेरी भी स्वतंत्र इच्छाएँ है ।

गुल्ली बँधना—वीर्य पुष्ट होना, युवावस्था आना । अब तो गुल्ली बँध गई है विवाह करदो ।

गुस्सा-उतरना—क्रोध दूर होना या शांत होना । गुस्सा उतरे तो कुछ अर्ज करूँ ।—**उतारना**—(१) क्रोध जो इच्छा हो उसे पूर्ण करना, अपने क्रोध का फल चखाना । उन्होंने मुझे पीट कर अपना गुस्सा उतारा । (२) क्रोध किसी और पर हो उसे दूसरे पर प्रकट करके शांत होना । उनसे तो वश नहीं चला अब हम पर गुस्सा उतारने लगे ।—**के मारे भूत होना**—बहुत क्रुद्ध होना, क्रोध से काँप जाना, बहुत कुछ करने लगना । सुनते ही गुस्से के मारे भूत हो गया और १० मिनट में वहाँ पहुँचा ।—**चढ़ना**—क्रोध आना, कोप का आवेश होना । इस समय गुस्सा चढ़ा हुआ है उनसे कुछ मत कहो ।—**थूक देना**—क्रोध दूर कर देना, गई गुज़री करना, क्षमा करना । जाने

दो मुई को, गुस्सा थूको आप बड़ी बुड्ढी है।—**नाक पर रहना होना**—थोड़ी सी बात पर क्रोध आ जाना, बहुत जल्दी नाराज हो जाना। गुस्सा तो उनकी नाक पर रहता है, जरा देर में आग बबूला हो जाते हैं।—**निकालना**—दे० गुस्सा उतारना।—**पीना, पी जाना**—अंदर ही अंदर क्रोध को छिपा जाना, क्रोध को रोक लेना। इस समय वह गुस्सा पी गया, वरना तुम्हें बड़ा मारता। —**मारना**—क्रोध को रोककर समाप्त कर देना, अथवा गुस्सा पीना। गुस्सा मारने से मनुष्य शांत और गंभीर बनता है। जिसने गुस्से को मार लिया उसने जग जीत लिया। —**के मारे (से) लाल होना**—क्रोध से मुख व आँखें लाल हो जाना, क्रोध के आवेश में आना। पुत्र की नीचता सुनते ही वह गुस्से से लाल हो गया।

गूँगे का गुड़—ऐसी बात जिसका अनुभव हो पर वर्णन न हो सके, बात जो कहते न बने। साहित्य का रस गूँगे का गुड़ है, जो चखता है वही जानता है।

गू उछलना उछालना—कलंक फैलना व फैलाना। क्यों बेचारे के ऊपर गू उछालते हो कहीं का न रहेगा।

गू उठाना—(१) नीच से नीच काम करना। हमें तो रुपये चाहिये वह कहें तो हम तो उनका गू भी उठाने को तैयार हैं। (२) बहुत सेवा करना. बेचारे ने पब्लिक के गू तक उठाये हैं।

गू का चोथ—किसी काम का न होना, बैठे रहना। वह तो गू का चोथ है न लीपने का न पोतने का (कहावत)।

गू का टोकरा सिर पर रखना—बदनामी और कलंक धारण करना। क्यों बुढ़ापे में भंगन को घर में डालकर गू का टोकरा सिर पर उठाते हो।

गू गोड़ते फिरना—जैसी तैसी औरतों से मिलते फिरना। क्यों घर की बहू छोड़ कर गू गोड़ते फिरते हो शर्म करो।

गू खाना—(१) बहुत नीच या अनुचित काम करना। क्यों गू खाता है इतना नदीदा है तुझे यह चीजें घर नहीं मिलतीं? (२) व्यर्थ और बदनामी का काम करना, मना करने पर भी जाना, बेइज्जत होने पर भी काम करना। कितनी बार फटकार दिया है, किन्तु फिर आता है और गू खाता है।

गू मुँह में देना—(१) बहुत धिक्कारना। (२) झूठा साबित करना। (३) जलील करना।

देखो तुम डींग हाँकते अब सब के सामने तुम्हारे मुँह में गू दे दिया अब ठीक रहे न !

गू मूत करना—मल मूत्र साफ करना। सारे गू मूत किये बड़ा हुआ तो ये हाल है।

गू में ढेला फेंकना—बुरे आदमी से छेड़ छाड़ करना। उसे कुछ मत कहो गू में ढेला फेंकोगे तो छीटें आवेंगी।

गू में नहाना—बहुत बदनाम व कलंकित होना, फजीहत होना। एक नीचता करने से ही गू में नहाना पड़ा।

गूदा निकालना (मारते मारते)—बहुत मारना, गहरी मार मारना। मैं मारते मारते तुम्हारा गूदा निकाल दूँगा नहीं तो सच बता दो (मारते मारते गू निकालना अधिक प्रचलित है)।

गूलर का कीड़ा भुनुगा—दुनिया की बाबत कुछ न जानने वाला, कूप मंडूक, अनुभव प्राप्त करने के लिये घर या देश से बाहर न निकलने वाला व्यक्ति, आप तो गूलर के कीड़े हैं आपको क्या पता यूरोप कितना स्वर्ग बन चुका है ?

गूलर का फूल होना—वह फूल जो कभी देखने में न आवे, कभी न मिलने वाला व्यक्ति, दुर्लभ वस्तु या व्यक्ति आप तो गूलर के फूल हो गये हैं ऐसा भी क्या काम कभी दर्शन ही नहीं होते।

गूलर का पेट फड़वाना—भंडा फोड़ कर छिपी हुई बात को प्रकट करना। हमने गूलर का पेट फड़वाया तो दुनिया एक नई ही दुनिया निकली जिसकी बाबत कुछ भी मालूम न था।

गूलर फोड़ कर जीव उड़ाना—गूलर का पेट फड़वाना, गुप्त भेद प्रकट करना। हमने गूलर फोड़ कर सब जीव उड़ा दिये अब उनका हृदय साफ़ है।

गृहस्थी सँभालना—घर का काम काज करना या देखना भालना, घर का खर्च बर्दाश्त करना। अब बड़े हुए अपनी गृहस्थी सँभालो सारी जिन्दगी हम ही खिलाते रहें क्या ?

गैल करना (किसी को)—किसी को साथ कर देना। कोई दासी गैल करदो अकेली ठीक नहीं।

गैल जाना (किसी को) (१) साथ जाना। मैं उसकी गैल गई थी अकेली नहीं। (२) अनुसरण करना, नकल करना। हम तो उन्हीं की गैल जा रहे हैं क्योंकि उसी पथ पर विश्वास है।

गैल लेना—साथ में ले लेना।

गोंदा दिखाना (१) बुलबुलों को लड़ाने के लिये उनके बीच में आटे की गोली फेंकना जिससे लड़ने लगें। (२) लड़ाई लगाना, कोई ऐसा लोभ जिसे प्राप्त करने के लिये दोनों पक्ष लड़ने लगें।

गोंदी सा लदना—(१) बहुत अधिक फल लगना, फलों से भर जाना। (२) शरीर में माता या और किसी तरह के बहुत से दाने निकलना। वेचारा गोंदी सा लद रहा है, पता नहीं कैसे फोड़े हैं जाते ही नहीं।

गोटी जमना जमाना या बैठना बैठाना— उपाय या युक्ति सफल होना, प्राप्ति की तदवीर पूरी होना। उन्होंने तो अपनी गोटी बैठा ली अब हम रह गये कहाँ नौकरी ढूँढ़े।

गोटी मरना—हारना।

गोटी मारना—हराना, किसी की युक्ति काट कर अपनी चलाना। उन्होंने हमारी गोटी मार कर आप जीत ली।

गोटी लाल होना—चेहरा सुर्ख होना फायदा या प्राप्ति होना। आज कल तो उनकी गोटी लाल हो रही है।

गोटी हाथ से जाना निकल जाना—लाभ की तदबीर बिगड़ना, नुकसान होना। हमारी तो गोटी हाथ से निकल गई वरना हम तो तुम्हारा काम बना देते।

गोता—खाना—(१) जल में डूबना। (२) धोखे में आना, चक्कर में आना। (३) असफलता या संकट में होना। अभी तो वे गोते ही खा रहें हैं बड़ी डाँवा डोल स्थिति है, क्या होगा भगवान जाने।—**देना**—डुबोना, (१) चक्कर में फँसाना। (२) धोखा देना। क्यों वेचारे को गोता दे रहे हो किसी अमीर पर हाथ फेरो।—**मारना, लगाना**—(१) डुबकियें लगाना। (२) स्त्री प्रसंग करना (असभ्य)। (३) बीच बीच में अनुपस्थित रहना। तुम तो २,२ महीने को गोता लगा जाते हो, मिलते ही नहीं।

गोद का—(१) छोटा सा बच्चा। एक गोद का ('गोद में' भी) है दो बड़े हैं। (२) पास का, समीपी। गोद की चीज़ छोड़ कर इतनी दूर जाना ठीक नहीं।

गोद देना—दत्तक बनाने के लिये अपना पुत्र देना।

गोद बैठना—किसी का माना हुआ पुत्र बनना, दत्तक पुत्र बनना।

गोद भरी रहना—गोद में बच्चे, लड़के सर्वदा बने रहना, बच्चे

वाली रहना। बहू तुम्हारी गोद भरी रहे।

गोद पसार कर बिनती करना—बहुत अधीरता से माँगना या प्रार्थना करना। मैं गोद पसारती हूँ परमेश्वर दया कर।

गोद भरना—(१) विवाह आदि शुभ अवसर पर बहू के पल्ले में नारियल आदि शुभ पदार्थ डालना, संतान होना। उसकी गोद भरी है।

गोद लेना—दत्तक पुत्र बनाना।

गोबर करना—(१) गौ बैल आदि का गोबर त्यागना। (२) गोबर के कंडे वग़ैरा पाथना या ऐसे ही कुछ और काम करना। (३) गोबर हटाना। (४) बिगाड़ देना। तुमने सारा गुड़ गोबर कर दिया।

गोबर गणेश होना—बहुत बुरे रूप वाला, मोटा-मठीगन, सुस्त, मूर्ख। वह तो गोबर गणेश है जहाँ बैठाल दो वहीं बैठ गया उठाओगे तभी उठेगा।

गोल गाल—(१) मोटे हिसाब से, बड़ी बड़ी संख्या गिन कर। (२) अस्पष्ट रूप से, साफ़ साफ़ नहीं। वह गोल गाल समझा कर चला गया, साफ़ खुला नहीं।

गोल बात—बात ऐसी तरह से बनाना जिससे पूरा भेद न खुले। गोल बात तो मैं बताये देता हूँ ज्यादा पता लगाना हो वहाँ जाकर लगाओ।

गोल मटोल—(१) दे० गोलगाल। (२) नाटा और मोटा, गुल गोथना सा।

गोल माल होना—गड़बड़ या साजिश होना। क्या गोल माल है कोई चोर पकड़ा गया है क्या?

गोल बाँधना—दे० गुट्ट बाँधना।

गोल होना—चुप हो रहना, चुप हो जाना।

गोल पारना, डालना—गड़ बड़ या हल चल मचाना। उधो सुनत तिहारो बोल, ल्यायो हरि कुशलात धन्य तुम घर घर पार्‌यो गोल।

गोली खाना—बंदूक की गोली लगना। हमने लड़ाई में दस गोली खाईं।

गोहार मारना—मदद के लिये पुकार मचाना।

गोहार लड़ना—(१) पुकार तथा ललकार कर लड़ना। (२) गँवारों का लाठियों से लड़ना। (३) एक का कई से लड़ना। वह गोहार से लड़ता है, दस दस आदमी नहीं ठहर पाते।

गौं का—(१) मतलब का, काम का। गौं का काम पकड़ो। (२) मतलबी, खुदग़रज़। वह केवल

अपनी गौं का है और किसी का का नहीं।

गौं का यार—मतलबी दोस्त, केवल अपने मतलब के लिये साथ रहने वाला। वह गौं का यार है हमारे काम न आवेगा अपना पड़ेगा तो पैरों में लोटा लोटा फिरेगा।

गौं गाँठना—मतलब निकालना।

गौं निकालना—(१) गौं गाँठना। अब तो गौं गाठली ('गँठ गई') वे हम से अब बात भी क्यों करेंगे। (२) काम पूरा करना, स्वार्थ सिद्ध कर लेना। हमने तो गौं निकाल ही ली अब चाहे कल ही मर जाय।

गौं पड़ना—जरूरत पर काम पड़ना। हमें क्या गौं पड़ी है जो तुम्हारे दरवाजे खटखटाया करें।

घ

घंटा दिखाना—माँगने वाले या चाहने वाले को वस्तु न देना। दे तो दिया अब लेने जाओगे तो घंटा दिखा देगा (असभ्य)।

घंटा हिलाना—(१) फिजूल का काम करना, कुछ काम न करना। यहाँ क्या घंटा हिला रहे हो वहाँ जाकर काम करो। (२) पछताना, हाथ मलना। वह तो हाथ से निकल गया अब तुम घंटा हिलाओ अब हाथ न आवेगा (असभ्य)।

घंटी उठाना या बैठाना—गले की सूजन को गले की घंटी दबा कर मिटाना। बुढ़िया ने घंटी बैठा दी गला ठीक हो गया।

घट में बसना, बैठना, रमना या व्यापना—(१) हृदय में रहना। जाके घट में बसत राम हम तासों आस करें। (२) किसी बात का मन में जम जाना। उस दिन का उपदेश घट में रम गया अब मैं वैसे ही चलता हूँ।

घटका लगना—मरते समय कफ़ से गला रुँधना।

घटती का पहरा—बुरे दिन, गिराव या अवनति का समय। घटती का पहरा है वरना वह किसकी गाली सुनता।

घटाव पर होना—पानी की बाढ़ का कम होना, घटती का पहरा।

घटी आना या पड़ना—दे० घाटा आना।

घट्टा खुलना—दरार या छेद हो जाना। वर्षा से छत में घट्टा खुल गया है।

घट्टा पड़ना—अभ्यास होना, मश्क हो जाना। घट्टा पड़ गया है दो दो मन की बोरी उठा लेता है।

घड़ी गिनना—(१) मौके की बाट जोहना, चाह से वक्त जोहना। मैं वह घड़ियें गिन रही हूँ जब राम गद्दी पर बैठेंगे। (२) मरने की घड़ी होना, मौत पास खड़ी होना। मानहु मीचु घरी गनि लेई।

घड़ी तोला घड़ी माशा—अभी कुछ अभी कुछ, जरा देर में बात बदल जाना। आपकी बात का क्या विश्वास करें, घड़ी तोला और घड़ी माशा, आखिर कितना समझें।

घड़ी में घड़ियाल होना या बजना—(१) क्षण भर में मौत आना, मौत का क्या ठिकाना। अजी घड़ी में घड़ियाल बजता है कोई विश्वास नहीं कल हम ही न हों (२) दशा पलटते देर नहीं लगती।

घड़ा सायन पर होना—मरने के करीब होना।

घड़ों पानी पड़ जाना—बहुत लज्जित होना, नत ग्रीव होना। ज्यों ही मैंने पोल खोली बिचारे पर घड़ों पानी पड़ गया, फिर न बोला।

घन का होना—बहुत अधिक होना, बड़े घन के बाल हैं, या घन के जंगल हैं।

घन चक्कर में आना, पड़ना—फेर या संकट में फँसना। हम तो घन चक्कर में आ गये हैं क्या करें।

घन चक्कर होना—मूर्ख होना। क्या घन चक्कर हो अरे कुछ समझते भी हो या यौंही!

घपची बाँध कर पानी में कूदना—घुटनों को छाती से लगाकर हाथों में कस कर पानी में कूदना, एकदम काम में पड़ना। वह तो लड़ाई में घपची बाँधकर कूद पड़ा आव देखा न ताव और लड़की का सतीत्व बचा लिया।

घपले में पड़ना—(१) चक्कर या गड़-बड़ में होना। हम तो ऐसे घपले में फँस गये हैं न इधर की कह सकते हैं न उधर की। (२) भीड़ या शोर-गुल हल्ले-गुल्ले में पड़ना।

घमंड टूटना—अभिमान दूर होना। मेरे सामने अच्छे अच्छों के घमंड टूट गये तुम क्या चीज़ हो। **—निकलना**—घमंड दूर होना, ऐंठ चूरा-चूरा हो जाना। तुम्हारा सारा घमंड मैं दो थप्पड़ों में निकाल दूँगा!—**पर आना या होना**—अभिमान करना या इतराना। क्या घमंड पर आते हो तुम नहीं कर सकोगे।

घमसान करना, ठानना, मचाना—भारी युद्ध करना, लड़ाई

तहलका मचा देना। गोरा बादल ने घमासान ठान दिया और पद्मिनी को छुड़ा लाये।

घर-अपना समझना—कुछ शर्म करने की जगह न होना, आराम की तथा घर जैसी ही जगह। अपना ही घर समझिये जो आवश्यक हो निःसंकोच कह दीजिये।

—उठना—(१) घर की दीवार बनना। (२) घर बिगड़ जाना, कहीं दूसरी जगह चले जाना।

—उजड़ना—(१) कुटुम्ब नाश होना, संपत्ति आदि नष्ट होना। डाके के कारण हमारा तो घर ही उजड़ गया. कुछ भी तो न रहा। (२) घर के आदमियों का तितर-बितर होना या मर जाना। लड़के पढ़ लिख कर शहरों में चले गये, घर उजड़ ही गया समझो।

—करना—(१) निवास करना, रहना। उन्होंने जंगल में घर कर लिया है। (२) जमना, जगह करना, पसन्द आना। तुम्हारी बातों ने मेरे हृदय में घर कर लिया है, विश्वास करो मैं तुम्हारे हर तरह साथ हूँ। (३) अपने लिये जगह बनाना, करना। पैर ने जूते में घर नहीं किया है इसी लिये जूता कसा मालूम होता है। (४) छेद करना, बिल बनाना। कीड़े काठ में घर करते हैं। (५) घर का इंतजाम करना। अब तुम बड़े हुए घर करना सीखो। (६) किफायत से चलना। (७) अपना अलग बचाना या कंजूसी से जोड़ना। हमें घर करने की क्या जरूरत है जो कुछ है बाल बच्चों का है। (८) किसी स्त्री का खसम कर लेना। वह तो कहार के साथ अपना घर कर बैठी है। (आँख में घर करना अर्थात् हृदय में घर करना देखो 'आँख' के मुहाविरों में)।

घर कहना—(१) ठीक ठीक स्वर ताल के साथ साथ गाना। (२) चिड़ियों का मधुर स्वर से बोलना।

घर का—(१) अपना, निज का। घर का मकान, पैसा या बगीचा है। (२) आपस का, अपने आदमियों का। घर का मामला है, घर की बात है। (३) अपने संबन्धी, भाई बन्धु, सुहृद। तीन बुलाये तेरह आए नये गाँव की रीति, बाहर वाले खा गये घर के गावें गीत। (४) पति, स्वामी। घर के हमारे परदेस को सिधारे यातें दया करि बूझी हम रीति राह वारे की।

घर का अच्छा—धनवान, अच्छे खानदान का।

घर का आँगन हो जाना—(१)

खँडहर हो जाना, घर उजड़ जाना। (२) घर में संतान उत्पन्न होना।

घर का आदमी—कुटुम्ब का या बहुत समीपी आदमी। आप तो घर के आदमी हैं आपसे क्या छिपाना?

घर का उजाला—(१) कुल दीपक, कुटुम्ब की इज्जत, कीर्ति-तथा समृद्धि बढ़ाने वाला। लड़का तो घर का उजाला है कितने गरीब थे अब लखपति कर दिये हैं। (२) बहुत सुन्दर, मनोहर। (३) लाड़ला, बहुत प्यारा।

घर का काटे खाना या काट खाने दौड़ना—घर सूना या किसी बिना भयानक लगना। घर जाता हूँ तो घर काटने दौड़ता है अब उनके बिना अच्छा ही नहीं लगता।

घर का बोझ उठाना या सँभालना—गृहस्थ का खर्च या काम काज खुद करना। चौदह बरस का था जब से ही घर का बोझ सँभाला है।

घर का भेदी—छिपा हुआ भेद जानने वाला, भेद दूसरे से कह देने वाला। घर का भेदी लंका ढावे (कहावत)।

घर का भोला—बहुत सीधा सादा, बहुत मूर्ख। आप तो ऐसे ही घर के भोले हैं जो इतना नुकसान मान जावेंगे।

घर का न घाट का—(१) कहीं का न रहना, इधर उधर का न रहना। धोबी का कुत्ता घर का न घाट का (कहावत) (२) जिसके रहने का कोई स्थान निश्चित न हो। (३) बेकार, निकम्मा।

घर का रास्ता नापना लेना पकड़ना—अपने काम से काम, दूर होना, चले जाना। जाओ, घर का रास्ता नापो।

घर का रास्ता समझना, जानना—सहल सीधा काम। इस काम को घर का रास्ता न समझना।

घर का शेर, मर्द, बहादुर, या वीर—(१) सुरक्षित स्थान पर ही शेखी बघारने वाला, घर के बाढ़े। तुम घर ही के मर्द ही बाहर जबान तक पर ताला लग जाता है।

घर का नाम उछालना—(१) कीर्ति कमाना। तुमने खूब घर का नाम उछाला? (२) घर का नाम डुबोना।

घर का नाम डुबोना—घर की बदनामी कराना, कुल कलंकित करना। तुमने तो घर का नाम ही डुबो दिया न केवल तुम्हें बल्कि घर भर को लोग बुरा कहते हैं।

घर की—स्त्री, घर वाली। हमारे घर की तो बड़ी फूहर है।

घर की तरह बैठना—आराम से बैठना, निःसंकोच बैठना। घर की तरह बैठिये पैर ऊपर कर लीजिये !

घर की पूँजी—गाँठ का पैसा, निजका धन। जिसने घर की पूँजी उड़ा दी वह दूसरों की क्या परवा करेगा ?

घर की बात—(१) कुल से सम्बन्ध रखने वाली बात। (२) आपस की बात। (३) छिपी हुई बात। घर की बात है आपको कैसे बतादें ?

घर के आले लेते फिरना—घर के प्रत्येक स्थान कोने कोने और आले आले ढूँढ़ना।

घर के घर—(१) गुप्त रीति से, भीतर ही भीतर। घर के घर तुमने निश्चय कर लिया हमको बताया भी नहीं। (२) बहुत से घर। प्लेग ने घर के घर साफ़ कर दिये।

घर के घर बंद होना साफ़ हो जाना—घर के बहुत से आदमी मर जाना, उजड़ जाना, घरों के ताले लग जाना, संतान न बढ़ना। आग ऐसी लगी कि घर के घर बन्द हो गये।

घर के घर रहना—हानि लाभ कुछ न होना, मूल धन ज्यों का त्यों रहना। हम तो घर के घर रहे न कुछ गया न आया।

घर के बाढ़े—घर के मर्द, बाहर कुछ न कर सकने वाले। मिले न कबहुँ सुभट रन गाढ़े, द्विज देवता घरहिं के बाढ़े। ग्वालिन घर ही की बाढ़ी, निस दिन देखत अपने ही आँगन ठाढ़ी।

घर की खेती—अपने यहाँ उत्पन्न होने वाली वस्तु। बाल तो घर की खेती है दो महीने पीछे फिर हो जावेंगे।

घर को सिर पर उठाना—(१) कुटुम्ब के सब आदमियों को तंग कर देना। हम क्या कहें इसकी इन बातों से हम खुद दुखी हैं सारा घर सिर पर उठा रखा है। (२) बहुत शोर करना।

घर खाली छोड़ देना—(१) मौक़ा और साधन बाकी रखना। आपके लिये हमने एक घर खाली छोड़ दिया उस बहाने तुम मिल सकते हो। (२) गोट के लिये जगह छोड़ना। (३) जगह छोड़ना। (४) वार न करना या चूक जाना। तुमने जान कर घर खाली छोड़ दिया।

घर खोज मिटना—घर का नामो निशान भी न रहना।

घर खोना—घर का सत्यनाश

करना, संपत्ति सारी नष्ट करना। खड खनत जो और को ताकों कूप तयार।

घर घर होना—सब के यहाँ, स्थान स्थान पर। घर घर यही हाल है, सास बहू की नहीं बनती।

घर घर के हो जाना—बेठिकाने, कहीं के न रहना, मारे मारे फिरना। तेरे मारे यातुधान भये घर घर के।

घर घलना—(१) परिवार का नाश होना या बुरी हालत होना। (२) वंश में कलंक लगना। कहे ही बिना घर केते घलेजू।

घर घाट एक करना—तूल कलाम करना, बखेड़ा करना।

घर घाट देखना—(१) चाल ढाल, रीति रिवाज, आर्थिक हालत जाँचना। पहिले उनका घर घाट देख लो तब कुछ करो। (२) ढब या ढंग। वह और ही घर घाट का आदमी है। (३) ठौर ठिकाना। घर घाट देख कर संबन्ध जोड़ा जाता है।

घर घाट मालूम होना—(१) कुटुम्ब की उच्चता या घर-गाँव की बाबत मालूम होना। हमें आपके घर घाट सब मालूम हैं। (२) रीति-रिवाज, रंग ढंग, चाल-ढाल तथा रुपये-पैसे का ज्ञान। (३) तरीके, सहायक और चालाकी का ज्ञान। मुझे तुम्हारे सब घर घाट मालूम हैं मैं उन्हें बिगाड़ दूँगा।

घर घालना—(१) मोहित करना, वश में करना, प्रेम से व्याकुल करना। इसे सयानी हो जाने दो फिर तो न जाने कितने घर घालेगी। (२) कुल दूषित करना, घर बिगाड़ना। इस कुटनी ने न जाने कितने घर घाले हैं। (३) परिवार में अशांति फैलाना, हानि पहुँचाना, नाश करना। शराब ने न जाने कितने घर घाले हैं। (४) दुनिया का ज्ञान होना, चालाक होना, फंसाना। इन्हें क्या सिखाते हो इन्होंने कितने ही घर घाले हैं।

घर घुसना—(१) अंतःपुर में ही पड़ा रहने वाला, घर में ही बैठा रहने वाला। आप तो विवाह के बाद घर घुसने होगये दुकान पर भी तो नहीं आते। (२) घर तक में आने जाने वाला। वह बदमाश है उसे घर घुसना मत बनाओ।

घर चढ़कर लड़ने आना—लड़ाई करने के लिये किसी के घर जाना। वह सौत घर चढ़ कर लड़ने आई मैंने भी खूब ही पर्दे फाड़े सौत के, मैं खूब जानती हूँ वह कैसी है।

घर चलना—घर के ख़र्च का पूरा

पड़ना, निर्वाह होना। घर कैसा चल रहा है ? आनन्द है।

घर डुबोना—(१) घर भर की बदनामी कराना। (२) घर की संपत्ति नष्ट करना।

घर डूबना—(१) घर बरबाद होना। (२) कलंकित होना। (३) संपत्ति समाप्त हो जाना, नष्ट हो जाना।

घर जमाना—घर का सामान यथा स्थान लगना, घर ठीक होना, गुजारा ठीक चलना, घर स्थायी हो जाना। अब दोनों लड़के यहीं नौकर हो गये हैं घर जम गया है।

घर जाना—(१) घर का नाश होना। (२) घर के आदमियों का या स्त्री का कहीं जाना। घर काशी जा रहा है।

घर जुगुत—घर का प्रबंध।

घर तक पहुँचना—(१) माँ बहिन की गाली देना। घर तक मत पहुँचो मुझे कह लो जो कहना है। (२) घर के आदमियों तक से शिकायत करना।

घर तक पहुँचाना—(१) आखीर तक करना या आखीर करना, पूरा करना। जिस काम को उठाओ उसे घर तक पहुँचाओ। (२) कायल करना, बुद्धि ठिकाने लाना। झूठे को घर तक पहुँचा दिया, जितनी झूठ थी सब उड़ गई सच्ची सच्ची रह गई।

घर देखना, देख लेना पाना—(१) घर माँगना। यहाँ कुछ न मिलेगा दूसरा घर देखो। (२) और कोई पकड़ो, किसी और से कहो। हम कुछ न देंगे कोई और घर देखलो। (३) ढर्रा, तरीका मालूम हो जाना। बदमाश को ७००) देने का सोच नहीं उसके घर देख लेने का सोच है, कल को फिर मुझे ही पकड़ लेगा। (४) आदत या तरीका, मनुष्य को जान जाना। तुमने हमारा ही घर पालिया है इसलिये दबा लेते हो।

घर पड़ना—(१) पत्नी भाव से घर रहना। (२) प्राप्त होना, मोल मिलना। ५) मन तो घर पड़े हैं तुम्हें कैसे ४) दे दें।

घर फूँक तमाशा देखना—संपत्ति बरबाद करके मनोरंजन करना, हानि करके वाहियात मौज उड़ाना। हमने घर फूँक तमाशा देखा है ये बेचारे रुपया बहाने में क्या हमारी बराबरी कर सकेंगे ?

घर फोड़ना—घर में लड़ाई, उपद्रव और झगड़ा खड़ा करना।

घर बंद होना (१) गोटी चलने को जगह न होना। (२) घर में ताला लग जाना। (३) घर में कोई न रहना, सब मर जाना, चले

जाना। (४) किसी स्थान या घर से संबन्ध न रहना। उनके लिए अब घर बन्द है वह इधर झाँक भी नहीं सकते। (५) उन्नति का मार्ग न रहना। बिना बी० ए० पास किए कोई घर खुला हुआ नहीं है सब बंद हैं, अतः पास कर लो।

घर बड़े की सैर--कैदख़ाना, जेल जाना। तुझे बड़े घर की सैर कराके छोड़ूँगा।

घर बनना--(१) रुपये पैसे से घर पूर्ण होना, धनवान होना। सच पूछो तो लड़की से इनका घर बन गया, ५००) महीना कमाती है। (२) मकान की इमारत तैयार होना।

घर बिगाड़ना--(१) किसी की बहू बेटी को कुमार्ग पर ले जाना, किसी औरत को बहकाना। इस कुटनी ने बड़े बड़े शरीफ़ घर बिगाड़ दिए हैं। (२) घर में फूट फैलाना, लड़ाई करा देना। पति देवता को सिखा कर मेरा घर तो बिगाड़ ही दिया। (३) घर की समृद्धि नष्ट करना, उजाड़ना। क्यों फिजूल खर्ची करके अपना घर बिगाड़ रहे हो।

घर बनाना--(१) कहीं जमकर या स्थायी तौर पर रहना। उन्होंने तो दिल्ली ही अपना घर बना लिया है यहाँ आते ही नहीं। (२) रुपये पैसे से घर पूर्ण करना। (३) मकान तैयार करना। (४) रुपया बचा कर छिपा कर रखना। नौकरों पर कोई आँख रखने वाला नहीं वह अपना घर बना रहे हैं।

घर बरबाद होना--परिवार या समृद्धि नष्ट होना।

घर बसना--(१) दुलहा दुलहिन का समागम होना। (२) घर में बहू आना, ब्याह होना। (२) घर की दशा अच्छी होना। (४) घर आबाद होना, घर में लोगों का रहना।

घर बसाना--(१) पति को या पत्नि को मना कर घर रहने के लिये तैयार करना। (२) घर आबाद करना। (३) घर की दशा अच्छी करना, रुपये पैसे से भरा पूरा करना।

घर बैठना--(१) काम छोड़ना, काम पर न जाना। वह चार दिन कोई काम करता है फिर घर बैठ रहता है। काम नहीं होता तो घर बैठो। (२) जीविका न रहना, बेकार या बेरोज़गार रहना। आज कल घर बैठा है कोई काम दिलाओ। (३) घर ही में अर्थात् एकांत में बैठे रहना। (४) वर्षा आदि से मकान गिरना। लगातार २४ घंटों की वर्षा से कितने ही घर बैठ गए।

(५) किसी के घर पत्नी भाव से रहना। वह अब ठाकुर के घर बैठी है।

घर बैठी रोटी—बिना मिहनत के जीविका। मेरे घर बैठी रोटी लिये जाओ और क्या चाहिये ?

घर बैठे—(१) बिना हाथ पैर हिलाये, बिना परिश्रम। घर बैठे १००) मिलते हैं, कम हैं ? (२) बिना कहीं गए आए, जान पूछ किए बगैर, अवस्था या परिस्थिति पहचाने बिना। घर बैठे बातें बनाते हो वहाँ जाओ तो ज्ञात हो क्या बीतती है। (३) घर में ही, बिना जाने आने का कष्ट उठाये। पुस्तकों से घर बैठे विदेशों की सैर हो जाती है।

घर बैठे की नौकरी—बिना परिश्रम किए पैसा मिलना। घर बैठे की नौकरी है कुछ लिख दिया पैसे आ गए।

घर भरना—(१) घर को धन धान्य से पूर्ण करना, माल घर में लाना। उसने बेईमानी की कमाई से अपना घर भरा है। (२) घर का प्राणियों से भरना। बच्चों से घर भरा है। (३) घाटा पूरा होना, कमी पूरी करना। दोनों लड़कियें गरीब घर में हैं किस किसका घर भरूँ। (४) छेद मूँदना। चूहों के घर भर दो साँप का डर है।

घर में आना (कुछ)—प्राप्त होना, निजका लाभ। मेरे घर में क्या आता है ये तो सरकार के रुपये हैं।

घर में कहना—(१) स्त्री आदि से कह आना। मैंने घर में नहीं कहा है कि रात को न आऊँगा। (२) ठीक ठीक स्वर के साथ कहना। घर में कहो क्या गवैये के यही ढंग होते हैं ?

घर में घाम या धूप आना—बड़ी कठिनता का सामना होना। घर में घाम आई और समझो बरबादी हुई।

घर में डालना—किसी औरत को अपनी औरत बना लेना।

घर में पड़ना—(१) प्राप्त होना, मूल्य होना। घर में तो २) पड़ी है बेचते ४) हैं। (२) किसी के घर में पत्नी भाव से रहना।

घर में बैठे शिकार खेलना—घर बैठे रुपया कमाना, घर बैठे माल मारना। तुम्हारे ऐसे भाग्यवान घर बैठे शिकार खेलते हैं।

घर से—(१) निज का धन, पास से, पल्ले से। आपके घर से क्या जाता है खर्च होगा तो उनका होगा। (२) स्त्री। (३) पति। बहिन ! तुम्हारे घर से तो बहुत पंडित हैं।

घर से देना—(१) पास या पल्ले से देना। वह तुम्हारा रुपया देता ही नहीं है तब क्या मैं घर से दूँगा ? (२) मूलधन में से खर्च करना। फायदा तो क्या हुआ ५००) और घर से देने पड़े। (३) अपना रुपया खोना, खुद नुकसान उठाना। जमानत मत करो नहीं तो घर से देने पड़ेंगे।

घर से पाँव निकालना—(१) मर्यादा से बाहर होना, स्वेच्छाचार करना, इधर उधर घूमना। तुमने बहुत घर से पाँव निकाले हैं मैं अभी जाकर कहता हूँ। (२) बाहर जाना। बहू ने घर से पाँव निकाले और बाहर की हवा लगी।

घर से बाहर पाँव निकालना—(१) वित्त या शक्ति से अधिक कार्य करना। जिसने घर से बाहर पाँव निकाले वह उजड़ा।

घर से बेघर करना—घर से निकाल देना। क्यों बेचारे को १००) के लिये घर से बेघर करते हो।

घर सेना—(१) घर में ही पड़े रहना। (२) बेकार बिना काम धंधे के बैठे रहना। तुम घर सेते रहोगे या कुछ काम का भी विचार है।

घर होना—(१) गृहस्थी चलना, निर्वाह या गुज़र होना। ऐसे करतबों से कहीं घर होता है। (१) घर के प्राणियों में मेल होना, घर में सुख शान्ति रहना। कहीं कहीं के हैं परन्तु सब ऐसे रहते हैं कि एक घर है।

घर्रा चलना—मरते समय कफ़ के कारण साँस के साथ आवाज होना।

घर्राटा भरना, मारना, लेना—गहरी नींद में सोना। घर्राटे भर रहा है अब मत जगाओ।

घाँइया बताना—चकमा देना, धोखा या झाँसा देना। न देना हो तो साफ़ कहो, घाइयाँ क्यों बताते हो।

घाट घाट का पानी पीना—(१) बहुत घूम फिर कर तजुर्बा हासिल करना। उन्होंने घाट घाट का पानी पिया है वह चेहरे से पहचान लेते हैं। (२) बहुत जानकार होना, अनेकों जगहों का ज्ञान होना। उन्होंने घाट घाट का पानी पिया है, इस दफ़्तर में क्या काम ऐसा होगा जो वह न जानते हों। (३) सब जगह घूमना। मैं तो घाट घाट का पानी पीता हूँ मुझे यहाँ रहने की क्या जरूरत है ?

घाट धरना—जबरदस्ती करने के लिये मार्ग रोकना। घाट धर्‌यौ तुम यहै जानिकै करत ठगन के छंद।

घाट मारना—नाव या पुल का महसूल दिये बिना जाना। हमारा कई बार घाट मार चुके हैं हम नाव पर न चढ़ायेंगे।

घाट में आना—चक्कर में आना, फँसना। अब के आया है बेटा कूँडी के घाट में अब रुपये वसूल करके ही छोड़ूँगा।

घाट लगना—(१) नाव का किनारे पर पहुँचना। तूफान में कैसे घाट लगै नैया। (२) कहीं ठिकाना या आश्रय पाना। कहीं घाट लगे तो पता चले। (३) नाव चढ़ने के लिये पूरे आदमी होना। अब २१ हैं घाट लगा है चलो।

घाटा उठाना—नुकसान सहना, हानि में पड़ना। इस रोजगार में ५०००) का घाटा उठाया।

घाटा भरना—(१) कमी पूरी करना, हानि का मूल्य देना। (२) मूल धन में से रुपया देना।

घात चलाना—जादू टोना करना, मारण प्रयोग करना। क्या घात चलाओगे मरूँगा तब जब आयु शेष होगी।

घात पर चढ़ना या घात में आना—हत्थे चढ़ना, वश में आना। घात पर चढ़ गये तब तो ठीक ही कर दूँगा।

घात में फिरना—ताक में घूमना, अनिष्ट करने के लिये मौका ढूँढना। वह तुम्हारी घात में पकड़े गये तो बस, खतम।

घात में बैठना—हमला करने के लिये छिप कर बैठना। वे लोग पुल के नीचे मेरी घात में बैठे थे जैसे ही मैं निकला उन्होंने लाठी का वार किया।

घात में रहना—किसी के विरुद्ध कार्य करने के लिये मौके की ताक में रहना।

घात में होना—विरुद्ध कार्य के लिए समय की प्रतीक्षा में होना।

घात लगना—मौका मिलना, सुयोग प्राप्त होना। हमरिउ लागी घात तब हमहूँ देव कलंक।

घात लगाना—मौका ढूँढना, तदबीर करना, युक्ति भिड़ाना। केलि कै राति अघाने नहीं दिन ही में लला पुनि घात लगाई। (२) ताक में रहना, प्रतीक्षा में। शेर शिकार की घात लगा रहा है, डाकू लूटने की घात में लगा है।

घान उतरना—(१) कोल्हू में डाली हुई वस्तु का तेल या रस या कढ़ाई में से पकवान का निकलना पहिले घान उतरा था उसकी जलेबी दी हैं। (२) बार, तैयार की हुई वस्तु। पहिला घान तुम्हारा।

घाल न गिनना—पासंग बराबर भी न समझना, तुच्छ समझना।

रघुबीर बल गर्वित विभीषण घाल नहिं ताकहँ गिनै (तुलसी) चढ़हिं कुँवर मन करैं उछाहू, आगे घाल गनै नहिं काहू (जायसी) ।

घाव पर नमक छिड़कना—दुख के समय और चिढ़ाना, रंज में और रंज पहुँचाना । क्यों घाव पर नमक छिड़कते हो मैं तुम्हें भी मार बैठूँगा ।

घाव पूजना या भरना—घाव अच्छा होना ।

घाव हरा हो आना—दबा हुआ दुख फिर याद आ जाना, दुख की याद से दुखी होना । मैं जब उसकी फोटो देख लेता हूँ घाव हरा हो आता है ।

घास काटना या खोदना—(१) तुच्छ काम करना । करते क्या हैं घास काटते और कौन बाबू बन गये हैं । (२) व्यर्थ या निरर्थक प्रयत्न करना, तुमसों प्रेम कथा को कहिबो मनो काटिबो घास । (३) काम सँभाल कर न करना, जल्दी जल्दी करना । पढ़ते हो या घास काटते हो, धीरे धीरे पढ़ो ।

घास खाना—(१) पशु के समान हो जाना । (२) तुच्छ वस्तु पर गुजारा करना । हम तो घास खाकर दिन बिता रहे हैं ।

घास छीलना—(१) खुरपे से घास को काटना । (२) दे० घास काटना ।

घास फूस लाना—(१) बेकाम चीज़ लाना । योंही घास फूँस उठा लाते हो देखते नहीं अच्छी है कि खराब । (२) कूड़ा करकट ।

घिग्घी बँधना—(१) डर के मारे मुँह से साफ़ शब्द न निकलना । साहब के सामने जाते ही घिग्घी बँध गई कुछ भी न कह सके । (२) रोने में जोर से रुक रुक कर साँस निकलना, हिलकी बँधना ।

घिन खाना—नफ़रत करना, घृणा करना ।

घिरिया में घिरना—दुविधा, असमंजस या कठिनता में फँसना । हम तो ऐसे घिरिया में घिरे हैं कि कुछ नहीं कर सकते ।

घिस घिस के चलना—बहुत दिनों तक या खूब काम में लाना या चलना । मैं इस जूते को घिस घिस कर चलता हूँ साल भर हो गया फटता ही नहीं ।

घिस लगाने को नहीं—जरासी भी नहीं ।

घी का कुप्पा लुढ़काना—(१) बहुत नुकसान हो जाना, सारे धन की हानि हो जाना । तुम तो ऐसे मुँह लटकाये बैठे हो जैसे घी का कुप्पा लुढ़क गया हो । बड़े भारी धनी का मरना ।

घी के कुप्पे से जालगना—माल या धन की खूब प्राप्ति होने वाले स्थान पर पहुँचना।

घी के जलना, घी के दीए जलना—(१) खुशी होना। उसके मरने से आपके तो घी के दीये जलेंगे। (२) मनोरथ पूरा होना। (३) उत्सव होना, आनन्द मंगल होना। (४) धन, ऐश्वर्य, समृद्धि होना। वह बड़े आदमी हैं उनके यहाँ घी के दिए जलते हैं।

घी के दीए भरना—(१) आनन्द मंगल मनाना। भूप गहे ऋषिराज के पाय कह्यो अब दीप गहो सब घी के। (२) चैन की बंसी वजाना, मजे उड़ाना। बाप के मरने पर घी के दीपक भर रहा है।

घी खिचड़ी होना—खूब घुटना, बड़ी दोस्ती। आज कल तो वे दोनों घी खिचड़ी हो रहे हैं, क्या मेल खाया है ?

घी में होना (पाँचों अँगुली) फायदे और सुख में होना।

घुँघरू बाँधना—(१) नाचने में चेला बनाना। मैंने इसके घुँघरूँ बाँधे हैं, मैं तो उसका उस्ताद हूँ। (२) नाचने को तैयार होना।

घुँघरू बोलना—गले में से साँस के साथ कफ़ की आवाज़ आना।

घुँघरू सा लदना—शरीर पर बहुत फुंसी, चेचक या छाले आदि होना।

घुंडी खोलना—चित्त से दुर्भाव निकालना। बाबा मन की घुंडी खोल, तेरा होवेगा निस्तार।

घुटना टेकना—(१) घुटनों के बल बैठना। (२) झुक कर प्रार्थना करना। उसने मेरे सामने घुटने टेक दिये, मुझे दया आगई।

घुटनों में सिर देना—(१) सिर नीचा किए उदास बैठना, चिंता से मुँह लटकाये बैठना। (२) शर्मिन्दा या लज्जित होना।

घुटनों से लग कर बैठना—हर वक्त पास ही रहना।

घुट घुट कर मरना—पानी या हवा के बिना मर जाना। घर में भीतर वे थे बाहर चारों तरफ़ आग थी, बेचारे घुट कर मर गये। (२) अंदर अंदर दुखी होकर मरना।

घुटा हुआ—(१) पक्का चालाक या बदमाश। (२) पूरा तजुर्बेकार।

घुन लगना—(१) अनाज या पतली लकड़ी का पोला हो जाना। (२) किसी का अंदर ही अंदर क्षीण होना। लड़के के मरने के बाद उसे घुन लग गया और वह दुबली होती चली गई, आज बेचारी चल ही बसी।

घुमा घुमा कर पूछना, बातें करना—तर्क वितर्क से या हेर

फेर से (बार बार पूछना या) बातें करना।

घुमाव फिराव की बात—गोल मोल या पेचीली बात। घुमाव फिराव की बात मत करो साफ़ कहो असली किस्सा क्या है ?

घुल घुल कर काँटा होना—क्षीण और दुबला हो जाना, हड्डियें हड्डियें रह जाना।

घुल घुल कर मरना—बहुत क्षीण होकर दुख भोग कर मरना।

घुल घुल कर बातें करना—अभिन्न हृदय होकर या घनिष्टता से बातें करना। आज तो बड़ी घुल घुल कर बातें हो रही हैं आखिर क्या माजरा है ? घुट घुट कर बातें होना भी प्रचलित है।

घुल मिलकर—खूब ही मेल जोल से।

घुला हुआ होना—बहुत वृद्ध या भीतर से क्षीण और असाध्य। घुला हुआ बीमार है, बचना मुश्किल है।

घुस कर बैठना—(१) सामने न आना, छिप रहना। घुस कर क्यों बैठती है खुद पूछ न, तेरा क्या जेठ लगता है। (२) पास पास या सट कर बैठना।

घूँघट उठाना—(१) पर्दा फाश करना। (२) मुँह पर से पल्ला ऊपर करना। (३) आँख खोल, चेत। घूँघट उठा दिवाने सामने खुद ही श्याम खड़े हैं।

घूँघट उलटना—दे० घूँघट उठाना।

घूँघट करना निकालना, मारना—(१) घोड़े का पीछे की ओर गरदन मोड़ना। (२) पल्ला नीचा करना, मुँह छिपाना, परदा करना।

घूँघट काढ़ना—दे० घूँघट करना (२)।

घूँघट खाना—लड़ाई में पीठ दिखाना, युद्ध से मुँह मोड़ना।

घूँट फेंकना—(१) मुँह भर जाने लायक फेंक देना। (२) पीने से पहिले थोड़ा सा पृथ्वी पर डालना (देवता का अंश या नजर न लगे इस प्रयोजन से)।

घूँट लेना भरना—(१) थोड़ा-थोड़ा कर के पीना। घूँट मत लो, एक साँस में सब दवा पी जाओ। (२) वह आज कल दुख के घूँट भर रहा है।

घूँसों का क्या उधार ?—मार-पीट का बदला फौरन ले। घूँसों का क्या उधार आप मेरा बुरा करेंगे मैं तुम्हारा करूँगा।

घूम पड़ना—नाराज हो उठना, यकायक लड़ाई हो पड़ना। मैं तो समझाने गया था वे उल्टे मुझ पर ही घूम पड़े।

घूर घूर कर देखना—आँखें गड़ा गड़ा कर या टकटकी लगा कर देखना। क्यों घूर घूर कर देखते हो, रंडी है।

घोट घोट कर मारना—दुख दे दे कर मारना।

घोटना गला—मेहनत से कम मजदूरी देना, अधिक पैसा वसूल करना। क्यों गरीबों का गला घोटते हो, पाप की कमाई है।

घोड़ा बेच कर सोना—निश्चिन्त होकर सोना, गहरी नींद में सोना।

घोड़ा भर जाना—चलते चलते घोड़े का दम फूल जाना या भर जाना।

घोल पीना—(१) शरबत की तरह पीना। (२) कुछ भी न समझना। (३) सहज में मार डालना।

घोल कर पिला देना—बिना सिखाये दिमाग में बैठा देना, बिना याद किये पढ़ जाना मास्टर क्या घोल कर पिला देगा वह भी तो बता ही सकता है।

घोल कर पी जाना—(१) देखते देखते नाश कर देना। (२) कुछ न समझना। ऐसे ऐसों को तो मैं घोल कर पी जाऊँ।

घोले में डालना—(१) रोक रखना, खटाई में डालना। (२) टाल मटूल करना।

घोले में पड़ना—बखेड़े में पड़ना, ऐसे काम में फँसना जो जल्दी न मिटे।

घोलुआ घोलना—किसी काम में बहुत दिन लगाना। क्या घोलुआ घोल रहा है करना है तो शीघ्र ही कर डालो।

घोलुआ पीना—कड़वी वस्तु का पीना। मैंने बड़े घोलुए पिये हैं यह तो कुछ भी कड़वी नहीं।

च

चंग चढ़ना उमहना—पूर्ण यश होना, बढ़ी चढ़ी बातें होना, काफी रौब दौब होना। त्यौं पद्माकर दीजै निलाम क्यों चंग चबाइन की उमही है।

चंग पर चढ़ाना या चढ़ा देना—(१) बातें बना कर किसी को अपने अनुकूल बना लेना, किसी की प्रशंसा आदि कर के अपने मतलब का बना लेना। उसने तुम्हें चंग पर चढ़ा कर अपनी सिफारिश करा ली। (२) दिमाग़ बढ़ा देना, आसमान पर चढ़ा देना। तुमने उसे चंग पर चढ़ा

दिया है, वह अब अपने को कुछ समझने लग गया है।

चंगुल में पड़ना—वश में हो जाना, किसी के हाथ में चले जाना। हम तो उनके चंगुल में पड़ गये, वरना नुकसान न होता।

चंगुल में फँसना—काबू में आ जाना, पंजे या वश में होना। बदमाशों के चंगुल में फँस कर सब कुछ गंवा बैठोगे।

चंड-मुंड लड़ाना—दो आदमियों की आपस में लड़ाई करा देना। हम तो चंड-मुंड लड़ा कर सैल देखते हैं जो जीतेगा वही अपना हारा सो पराया।

चंडू खाने की गप—हवाई बातें, कोरी कल्पना की या बे मतलब कहानियें। चंडूखाने की गपें सुननी हों तो इनसे सुन लो, ऐसी बातें करते हैं जिनके सिर न पैर।

चंडूल (पुराना)—(१) बहुत चालाक या झगड़ालू। वह कब पीछा छोड़ने वाला है, पुराना चंडूल है। (२) बेवकूफ, भद्दा, बेडौल। किस पुराने चंडूल से बातें करते हो मुझे तो घृणा आती है।

चँदिया खाना—(१) बकवाद से दुखी होना, सिर खाना। मेरी चँदिया मत खाओ मैं नहीं सुनना चाहता। (२) सब कुछ लेकर दरिद्र बना देना। उसकी सेठ ने चँदिया खाली।

चँदिया खुजाना—(१) सिर खुजाना। (२) मार खाने के काम करना, जूते की चाह होना। तुम्हारी चँदिया खुजा रही है तभी ठाकुर साहब से भी ऐंठ कर बातें कर रहे हो।

चँदिया पर बाल न छोड़ना—(१) सिर गंजा कर देना, जूते लगाते लगाते बाल तक उड़ा देना। बकना लगाओगे तो इतना पीटूँगा कि चँदिया पर बाल तक न छोड़ूँगा। (२) सब कुछ ले लेना, कुछ न छोड़ना। चँदिया पर बाल तक न छोड़ेगा तुम दस पाँच रुपये कम कराना चाहते हो।

चँदियाँ मूँड़ना—(१) सिर मूँड़ना, हजामत बनाना। बाल काटने को कहा था उसने चँदिया ही मूँड़ दी। (२) खूब लूट लूट कर खाना। मैंने सेठ की चँदिया मूँड़ी, ऐसे कंजूस का यही इलाज। (३) खूब जूते लगाना।

चँदिया से परे सरक—पास से हट जा, सिर पर मत खड़ा हो।

चंद्रमा बलवान होना—किस्मत चेतना, अच्छा समय होना, भाग्यवान होना। आजकल उसका चन्द्रमा बलवान है, जहाँ जाता है काम बन जाता है।

चंपत बनना, होना—चले जाना, गायब हो जाना। वह तो अपना काम करके चंपत बना, पकड़ा मैं गया।

चंबल लगना—खूब जल चढ़ना, बाढ़ आना।

चक काटना—ज़मीन के हिस्से करना, भूमि की हद बाँध देना। मरते समय बुड्ढे ने ही चक काट दिया था, इतनी बड़े की और इतनी छोटे की है।

चक जमना—रंग जमना, अधिकार होना। उसका मुझ पर चक जमा है, ऐसा मत समझो।

चक बँधना—तार बँधना, खूब बढ़ना, एक पर एक अधिक होता जाना। यहाँ आकर काम करो, देखो रुपयों का चक बँध जाता है।

चकती लगाना (बादल में)—(१) अनहोनी करने की इच्छा करना या कराना। क्यों बादल में चकती लगाने जा रहे हो तुम्हारे बस का यह काम नहीं। (२) बहुत बढ़ चढ़ कर बातें कहना। बड़ाई करते हुए तो वे बादल में चकती लगाते हैं, आता जाता कुछ भी नहीं।

चकत्ता पड़ना—गोल निशान पड़ना धब्बड़ पड़ना। इतने जहरीले मच्छर हैं काटते ही चकत्ता पड़ जाता है।

चकत्ता भरना मारना—दाँतों से काटना, दाँतों से मास निकालना। उसने चिढ़ कर मेरी बाँह में चकत्ता भर लिया इससे खून आ गया है अब पट्टी बँधी है।

चकना चूर करना—चूर चूर कर डालना, तोड़ डालना, टुकड़े टुकड़े करना। उसने सारी तश्तरियें ऊपर से फेंक कर चकना चूर कर डालीं।

चक फेरी देना—चक्कर लगाना, चारों ओर घूमना। तुम कुछ करते भी हो या योंही शहर में चकफेरी देते फिरते हो।

चकमा उठाना—(१) रंजीदा होना। (२) किसी के धोखे में आ जाना। (३) नुकसान सहना।

चकमा खाना—भुलावे में आना, बहकाव में पड़ना, धोखा खाना। तुम जैसा चालाक चकमा खागया और रुपये दे बैठा यह आश्चर्य है।

चकमा देना—चक्कर में डालना, धोखा देना, फाँसना। मुझे तुम चकमा दोगे तो मुझ से ले क्या लोगे मेरे पास क्या हैं।

चकाचौंधी आना वा लगना—(१) अधिक रौशनी के सामने आँखें न ठहरना। (२) आश्चर्य में पड़ना। दृष्टि चकौंचौंध गई सब सुलझ गई, एकनते एक ऐसे

द्वारिका के भौन हैं। (३) बहुत घबरा जाना। (४) अचानक सिर पर चोट लगने से आँखों के आगे अँधेरा आ जाना।

चकाबू में पड़ना, फँसना—किंकर्तव्य विमूढ़ होना, फेर में पड़ना। हम तो ऐसे चकाबू में पड़ गये हैं कि निकल ही नहीं पाते एक न एक झगड़ा लगा ही रहता है।

चक्कर काटना—(१) गोलाई में घूमना। (२) इधर उधर घूमना, ढूँढ खोज में फिरना। तुम्हारे घर के कितने ही चक्कर काटे परन्तु तुम्हारा पता ही नहीं चलता।

चक्कर खाना—(१) पहिये की तरह घूमना। (२) घुमाव फिराव के साथ जाना, सीधे न जाकर टेढ़े मेढ़े जाना। यह रास्ता बहुत चक्कर खाकर गया है। उतना चक्कर कौन खाय, इस बगीचे से निकल चलो। (३) भटकना, हैरान होना, घंटों से चक्कर खा रहे हैं यह सवाल समझ में ही नहीं आता।

चक्कर देना—(१) परिक्रमा देना, गोल दायरे में घूमना। (२) दे० चक्कर खाना (२)। (३) दुखी करना, हैरान कर डालना, फिराना। क्यों मुझे चक्कर दे रहे हो कल तुम खुद ही ले आना, चार चार दफ़ा तो जाकर दिखाई फिर पसंद न आई इससे क्या लाभ। (४) सिर में घुमेरी आना, सिर में दर्द होना। मुझे चक्कर आ रहे हैं बोला नहीं जाता।

चक्कर पड़ना—(१) कमी होना, गलती होना, हिसाब ठीक न बैठना। ३०) थे २८) का तो हिसाब ठीक है २) का चक्कर पड़ता है, पता नहीं खर्च हुए या खो गए। (२) जाने में फेर पड़ना, अधिक मार्ग होना। इस रास्ते जाने में दो मील का चक्कर पड़ेगा। (३) सुदर्शन चक्र पड़ना यानी विपत्ति आना। तुम पर चक्कर पड़े, भगवान करे!

चक्कर बाँधना—(१) गोलाई का रास्ता बनाना, घूमना। (२) आना जाना, फेर बाँधना। २००) का ऐसा चक्कर बाँधा कि ५००) का माल भी दुकान में पड़ा रहता है और ७ दिन से ज्यादा उधार भी किसी का नहीं रहता।

चक्कर मारना—(१) हो आना, हो जाना। कभी कभी इधर भी चक्कर मार जाया करो। (२) घूमना, चारों ओर फिरना। दिन भर तो चक्कर मारते रहते हो, थोड़ा बैठ जाओ। (३) पहिये की तरह अक्ष पर घूमना। (४) वृत्ताकार परिधि में घूमना।

चक्कर में आना—आश्चर्य में

पड़ना, दंग रह जाना। बालक की अद्भुत वीरता देखकर सब लोग चक्कर में आगये।

चक्कर में डालना— (१) ऐसी स्थिति में डालना जिसमें सूझ न पड़े क्या करना चाहिये, कठिनता या दुविधा में फँसाना। हमको तो इस बात ने चक्कर में डाल दिया है, समझ में नहीं आता नौकरी छोड़ूँ या माफ़ी माँगूँ। (२) हैरान कर देना, समझ में न आना, आश्चर्य में डालना। सौ फीट ऊँचाई से आग में कूदना इस काम ने मुझे चक्कर में डाल दिया है।

चक्कर में पड़ना—(१) दुविधा में फँसना, असमंजस में हो जाना। (२) हैरान होना। (३) माथा खपाना। क्यों इनके चक्कर में पड़ते हो ये तो यों ही बकते रहेंगे कहाँ तक जवाब दोगे?

चक्कर लगाना—(१) परिक्रमा करना, मँडराना। (२) फेर लगाना, आना जाना। तुम यहाँ रोज एक चक्कर लगा जाया करो। (३) घूमना फिरना। हम बड़ी दूर तक का चक्कर लगा कर आ रहे हैं।

चक्की का पाट—(१) चक्की का एक पत्थर। (२) बदसूरत, जिसके मुख पर शीतला के दाग हों।

चक्र गिरना या पड़ना—वज्र पात होना, विपत्ति आना। ऐसा अधर्म करोगे तो चक्र ही गिरेगा।

चचा बनना—प्रतिशोध लेना, मज़ा चखाना, उचित दंड देना। तुमने तो मुझे पिटवाया ही है मेरे फंदे में कभी फँस गये तो चचा ही बना कर छोड़ूँगा।

चटकर जाना—(१) सब खा जाना, उड़ा देना, खो देना। वह बाप दादाओं की सारी जायदाद चट कर गया है, तुम्हारी क्या छोड़ेगा। (२) हज़म कर लेना. लेकर न देना। वह किसी का एक रुपया भी सीधे हाथ से नहीं देता जिसका लिया बस चट कर गया।

चट से करना, होना—फौरन, बहुत शीघ्र। बहुत सीधी है मैंने कहा ही था कि चट से उसने रुपये लाकर मुझे देदिये।

चटकाना (जूतियाँ)—यों ही मारे मारे फिरना, बेकार होना। करते धरते कुछ भी नहीं जूतियाँ चटकाते फिरते हैं।

चटकारे का—मुँह जलाने वाला, मजेदार, चरपरा। रायता बड़ा चटकारे का बना है।

चटकारे भरना—स्वाद आना, खाने को जी चाहना। तुम्हारी जीभ तो मिठाई के लिये चटकारे भरती है, तुम रोटियाँ क्यों खाओगे।

चटचट बलैया लेना—स्त्रियाँ

उँगली चटका कर बच्चे को नज़र न लगे या दूर हो यह प्रदर्शित करती हैं। मैं अपने प्यारे लल्लू की चट चट बलैंया लेती हूँ।

चटनी करना बनाना, कर डालना—(१) बहुत महीन पीसना। मैंने जौकुट करने को कहा था तुमने चटनी ही कर डाला। (२) बहुत पीटना, (कभी कभी) मार डालना, खा जाना। तुम अगर बोलोगे तो चटनी कर डालूँगा। (३) चूर चूर कर देना, पीस डालना।

चटनी होना—(१) खूब पिस जाना। (२) चाटने भर को होना। सेर भर तो चटनी को होता है आखिर इतना बड़ा कुनबा है काफी चाहिये। (३) चट हो जाना। (४) खतम हो जाना, उड़ जाना।

चटपट की गिरह— वह फंदा जिसे खींचने से फौरन गाँठ पड़ जाय। यह चटपट की गिरह स्काउटों को खूब लगानी आती है।

चटपट होना—(१) बहुत जल्दी चुक जाना। इतनी चटपट हुई कि जंकशन से दूसरा इंजन भी आ गया आदमी भी आगये, सवेरे देखो तो अनुमान भी नहीं कि यहाँ रेल लड़ी थी। (२) थोड़े ही देर में, बात की बात में मर जाना। बड़ी चटपट हुई कल तो जरा बुखार आया ही था।

चटाक पटाक करना—(१) चट चट शब्द करना। (२) बहुत शीघ्रता करना।

चटाके का—बहुत तेज़, प्रचंड। चटाके की धूप पड़ी और चटाके की प्यास लगी।

चटाता होना—घूस, रिश्वत या रुपया देना। वह हर एक अफसर को कुछ न कुछ चटाता है अतः उसका काम बन ही जाता है।

चट्टे बट्टे (एक ही थैली के)—(१) एक सी ही फितरत के। (२) आपस में बड़े मिले हुए बाहर से बड़े अलग। ये चारों एक ही थैली के चट्टे बट्टे हैं, जिससे कहो वही ऐसी जवाब देते हैं।

चट्टे बट्टे लड़ाना—दो में लड़ाई कराना, भिड़ा देना। तुमको चट्टे बट्टे लड़ाना खूब आता है।

चट्टी भरना—हानि पूरी करना, नुकसान देना। २००) से पहिले चट्टी भरी थी।

चट्टी धरना—दण्ड लगाना, सज़ा नियत करना।

चड्ढी देना—(१) बच्चों का खेल में हार कर पीठ पर चढ़ाना।

चढ़ना (सूरज या चाँद)—सूरज

या चाँद का उदय होकर कुछ ऊपर आ जाना। सूरज चढ़ने आया है, जाड़े हैं अतः कोई आठ बजे होंगे।

चढ़ना (दिन)—(१) दिन या वक्त व्यातीत होना। चार घड़ी दिन चढ़ा है। (२) दिन का प्रकाश फैलना। अरे! उठ दिन चढ़ आया है। (३) दिन होना, गर्भ के दिन। अभी कितने दिन चढ़े हैं? दो महीने।

चढ़ना (नस)—नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना। पैर की नस चढ़ गई है चला नहीं जाता।

चढ़ना (पाप)–(१) पाप के प्रभाव से बुद्धि ठिकाने न रहना। पाप सिर पर चढ़ कर पुकारता है। (२) पाप होना, पाप लगना। मैं यह काम न करूँगा मुझ पर पाप चढ़ेगा।

चढ़ना (रँग)—(१) फंदे में फँसना, आज कल सेठ पर उस चालाक का रंग चढ़ गया है सो पटड़ा होगा। (२) रंग का किसी वस्तु पर आना, खिलना। (३) प्रभाव होना। सूरदास खल कारी कामरि चढ़े न दूजो रंग।

चढ़ बढ़ कर या बढ़ चढ़ कर होना—बढ़िया या अधिक अच्छा होना। वह इससे बढ़ चढ़ कर है, सूरत भी इससे अच्छी है, माल भी अच्छा है।

चढ़ बजना—(१) बात बनना, पैर बाहर होना, खूब चलती होना। अधर रस मुरली लूटि करावति, आजुमहा चढ़ि बाजी वाकी जोइ कोइ करै विराजै।

चढ़ बनना—(१) मनोरथ सफल होना, मौका मिलना, सुयोग हाथ आना। आजकल अफसर के जाते ही उनकी खूब चढ़ बनी है।

चढ़ा उतरी लगाना—बार बार चढ़ना उतरना। ऊपर या नीचे एक जगह बैठ जाओ ये क्या चढ़ा उतरी लगा रखी है।

चढ़ा उपरी लगाना—एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करना। राम, श्याम में परीक्षा में प्रथम होने की चढ़ा उपरी लगी हुई है।

चढ़ा बढ़ा होना—(१) प्रसिद्ध होना। आजकल वह चढ़ा बढ़ा है। (२) धनमान आदि में ऊँचा होना। आजकल बज़ार भर में वही चढ़ा बढ़ा है।

चढ़ा लाना—हमले के लिये किसी को उसकी सेना सहित साथ लाना। वह नादिरशाह को दिल्ली पर चढ़ा लाया।

चढ़ावा बढ़ावा – उत्साह बढ़ाना, उकसाना, उत्तेजित करना। शाबाशी और चढ़ावे बढ़ावे से

आदमी शक्ति से अधिक भी काम कर डालता है।

चढ़ाना (धनुष)—(१. धनुष की डोरी को तान कर छोर पर बाँधना। (२) धनुष की डोरी को खींचना। (३) धनुष पर बाण चढ़ाना।

चतुराई छाँटना, छोलना, तौलना—चालाकी करना, चतुरता प्रकट करना, धोखा देना। जाहु चले गुन प्रकट सूर प्रभु कहा चतुराई छोलत हो। बहुनायकी आजु मैं जानी कहा चतुरई तौलत हो।

चद्दर पड़ना बिछना—(१) नदी के बहते हुए पानी का कुछ भाग एक दम समतल हो जाना। (२) चाँदनी में सारी छत पर सफेद कपड़ा सा बिछा हुआ दिखाई देना।

चने का मारा मरना—इतना कमजोर होना कि जरा सी (चने बराबर) चीज की मार से मर जाय। इस बीमारी ने तो उसे ऐसा कर दिया है कि बेचारा चने का मारा भी मर जाय।

चने चबवाना (नाकों)—बहुत ही दिक या तंग करना। मैं तुमको नाकों चने चबवादूँगा जब तुम माफी माँगोगे तब छोड़ूँगा।

चने नाकों चबाना—बहुत हैरान होना, दुखी होना। इस काम के करने में तो नाकों चने चबाने पड़े तब यह पूरा हुआ।

चने लोहे के चबाना- बहुत कठिन परिश्रम से कार्य करना।

चना लोहे का—दुष्कर तथा बहुत मुश्किल काम।

चपत जमाना, झाड़ना या धरना—थप्पड़ देना, तमाचा लगाना। ज्यों ही वह ऐंठकर बोला मैंने उसके पाँच सात चपत जमा दीं बस ठंडा हो गया।

चपाती सा पेट होना—कृशोदर, वह पेट जो निकला हुआ न हो। तुम कुछ खाते भी हो ? पेट तो तुम्हारा चपाती सा है।

चबाचबा कर बातें करना—बहुत बनकर बड़े धीरे धीरे ठहर ठहर कर शब्द बोलना। क्यों चबा चबाकर बातें करते हो जरा कहानी लिखनी आगई हैं तो अपने को दार्शनिक ही समझने लगे।

चबूतरे चढ़ना—कोतवाली जाना, पकड़ा जाना, कचहरी चढ़ना।

चबे को चबाना—किए हुए को फिर करना, पिष्ट पेषण करना। बरस पचासक लौं विषय में रत रहे तऊ न उदास भये चबे को चबाइये।

चमक देना, मारना—चमकना, झलकना। यह पालिश चमक तो

बहुत देती है। इस पर तो दूर से ही चमक मारती है।

चमकना (किसी की) किसी की धन, कीर्ति या पदवी में वढ़ती होना, दब दबा होना। आज कल तो राज्य भर में उनकी चमकती है।

चमड़ा उधेड़ना वा खींचना—(१) बहुत ही मारना। (२) चमड़े को शरीर से अलग करना।

चमड़ा सिझाना—चमड़े को मसाला डालकर मुलायम करना।

चमार चौदस मचाना—(१) चमारों का एक उत्सव। (२) चार दिन का जलसा, वह धूमधाम जो छोटे और दरिद्र लोग इतरा कर करते हैं। क्या चमार चौदस मचा रखी है, होश से वित्त के अनुसार काम करो।

चरणामृत लेना—(१) किसी महात्मा या पूज्य के पैर धोकर पीना। (२) कोई चीज बहुत थोड़ी मात्रा में पीना। तुम ये चरणामृत ले रहे हो या भंग, अरे और लो!

चरबाँक दीदा—(१) ढीठ, निडर, शोख। (२) बहुत चंचल-नेत्र। महा शैतान है चरबाँक दीदा है भीड़ में भी तो वहीं पहुँच जाती है।

चरबा उतारना (१) नक़शा उतारना, चित्र खींचना। (२) नक़ल करना।

चरबी चढ़ना—बहुत मोटा होना, शरीर में वायु से मोटाई आना।

चरबी छाना—शरीर में मेद बढ़ना। कोरी चरबी छा रही है वैसे एक थप्पड़ में गिर पड़ेगा।

चलता करना—(१) चुप चाप भगा देना। इन्हें यहाँ मत बैठाओ पुलिस आ रही है चलता करो। (२) हटा देना, भेजना। इस काग़ज़ को आज चलता करो। (३) निपटाना, झगड़ा दूर करना। किसी प्रकार भी हो इस मामले को चलता करो।

चलता पुरजा होना—चुस्त-चालाक, व्यवहार कुशल। वह बहुत चलता पुरजा है वहकाये में नहीं आ सकता।

चलते बनना—(१) चल देना, चुपचाप चले या भाग जाना। तुम तो वहाँ से चलते बने, पकड़े गये हम। (२) होशियार कहना, चालाकी की बातें करना। तुम तो बहुत चलते बनते हो, परन्तु उस समय तुमसे भी नहीं बोला गया।

चलता गाना—वह गाना जो शुद्ध राग रागनियों के अंतर्गत न हों; शीघ्र २ गाना। कोई चलता गाना सुनाओ पक्का गाना हमारी समझ में नहीं आता।

चलता लेखा व खाता—वह हिसाब जिसमें लेन देन अभी हो

रहा हो। चलता लेखा है अभी तो कुछ ले सकते हो कल बंद होगा फिर पिछला चुका दोगे तब मिलेगा।

चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाना—होते हुए कार्य में बाधा डालना। क्यों किसी की चलती गाड़ी में रोड़ा अटकाते हो अभी तो उसका काम हो जायगा नहीं फिर गया तो गया।

चलती हवा से लड़ना—बात बात पर लड़ना, ख़्वामख़ाह लड़ना।

चलन से चलना- उचित रीति से मर्यादा के अनुकूल काम करना। वह चलन से चलता है उसे घाटा नहीं होगा।

चलना (किसी की)—(१) बात मानी जाना। आजकल बिरादरी में उनकी चलती है। (२) निर्वाह होना, गुजर होना। इतने रुपये में हमारा नहीं चल सकता। (३) उपाय लगना वश चलना। अंगनिरख अनंग लज्जित सकै नहिं ठहराय, एक की कहा चले शत शत कोटि रहत लजाय।

चलना (दिल या मन)—(१) इच्छा या लालसा होना। बाजार में जिस वस्तु पर मन चला वही खरीद ली (२) मन चंचल होना, भोग की इच्छा होना। पराई स्त्री पर मन नहीं चलना चाहिये।

चलना (पेट)—(१) दस्त आना। ज्यादा खाओगे पेट चलने लगेगा। (२) गुज़र होना। इतने में पेट कैसे चलेगा?

चलना (मुँह)—(१) खाते ही रहना, खाते वक्त मुँह हिलना। जब देखो उसका मुँह चलता ही रहता है। (२) मुँह से बकवाद या अनुचित शब्द निकालना। तुम्हारा मुँह बहुत चलता है, तुमसे चुप नहीं रहा जाता।

चलना (मुँह पेट)—कै और दस्त होना।

चलना (हाथ)—अभ्यास होना, मारने के लिये हाथ उठाना, पीटना। तुम्हारा हाथ बहुत चल गया है इधर उधर से आये इस बेचारी को पीटना शुरू कर दिया।

चल निकलना—काम शुरू हो जाना, किसी कार्य में सफलता मिलना। अब तो तुम्हारा रोजगार चल निकला है।

चल बसना—मर जाना। चल बसे जो आदमी थे काम के, बाकी इन्साँ रह गये हैं नाम के।

चलते अपने—यथाशक्ति, भरसक। अपने चलत न आजुलगि अनभल काहुक कीन्ह। अपने चलते तो हम ऐसा कभी न होने देंगे।

चलाना (किसी को)—(चलनी के सारे मुहाविरे चलाना भी बन जाते हैं।)

चश्मपोशी करना—(१) आँख चुराना, सामने न होना। (२) सामने बड़ाई करना और असलियत छिपाना।

चहका देना वा लगाना—(१) आग लगाना। (२) चिढ़ाना, लगती हुई बात कहना। तुमने ही चहका दिया अब वह बकता ही रहेगा चुप न होगा।

चहल पहल होना—रौनक़ होना, धूम धाम होना। नुमायश के कारण आज कल खूब चहल पहल है।

चाँट मारना—जहाज के बाहरी तख्तों या पाल पर पानी छिड़कना।

चाँड सरना—इच्छा या काम पूरा होना। तोरे धनुष चाँड नहिं सरई, जीवत हमहिं कुँवरि को बरई।

चाँड सराना—लालसा मिटाना, इच्छा पूरी करना। पुरुष भँवर दिन चारि आपने अपनो चाँड सरायो।

चाँद का कुंडल वा मंडल बैठना—बहुत हलकी सी बदली में चाँद के चारों ओर सफेद घेरा सा होना।

चाँद (चाँदनी) का खेत करना—चंद्रमा के चारों ओर फैला हुआ प्रकाश, चंद्रमा निकलने के पहिले की आभा का फैलना।

चाँद का टुकड़ा—बहुत सुंदर, गोल गोल चमकदार मुँह। लड़का क्या है चाँद का टुकड़ा है।

चाँद चढ़ना—चंद्रमा का ऊपर आना, चंद्रमा निकल आना। चाँद चढ़ आया है अर्घ दे लो।

चाँदनी खिलना या छिटकना—चाँद का निर्मल प्रकाश फैलना। चाँदनी छिटक रही थी जैसे सफेद चादर ही बिछी हो।

चाँदनी मारना—(१) चाँदनी का बुरा प्रभाव पड़ने से घाव का अच्छा न होना। जख्म भरता ही नहीं चाँदनी मार गई है। (२) चाँदनी पड़ने पर घोड़े को एक रोग हो जाता है जिससे वे तड़प तड़प कर मर जाते हैं, यह रोग पुरानी चोट के कारण होता है।

चाँद पर थूकना—निर्दोष को दोष लगाना जिससे खुद की बदनामी हो। लड़का चाल चलन का बहुत अच्छा है आप अगर उसकी बुराई करते हैं तो चाँद पर थूकते हैं।

चाँद पर धूल डालना—किसी महात्मा आदि पर दोष लगाना, निर्दोष को कलंक लगाना। आप

चाँद पर धूल डालते हैं, ऐसे शान्त स्वभाव के खिलाफ तुम्हें कौन पूछेगा ?

चाँद सा मुखड़ा—बहुत सुंदर मुख, चमकता हुआ चेहरा।

चाँद पर बाल न छोड़ना—दे० उलटे छुरे से मूंड़ना, लूट लूट कर खाना।

चाँदी कटना--सुख आराम से दिन व्यातीत होना। भाई, आज कल तो चाँदी कटती है किसी चीज़ की परवा नहीं सब मौजूद है।

चार दिन की चाँदनी—थोड़े दिन का सुख आनन्द, क्षणिक समृद्धि। क्यों ऐंठे ऐंठे फिरते हो चार दिन की चाँदनी हैं फिर वैसे ही हो जाओगे, अँधेरी रात से।

चाँदी कर डालना—(१) जला कर खाक कर देना। तुम तो तमाखू को चाँदी कर डालते हो तब किसी को देते हो। (२) सब बेच बाच कर रुपये कर लेना। हमने सड़े गले माल तक की चाँदी कर डाली तुम इसके लिये कहते हो।।

चाँदी का जूता मारना, लगाना—रुपये की मार, धन देकर वश में करना। अजी चाँदी के जूते से बड़े बड़े जज जो चाहो सो फैसला लिख दें।

चाँदी काटना—खूब रुपया कमाना। आज कल तो चाँदी काट रहे हो, मोटर भी लेली है शान से चलते हो।

चाँदी खोलवाना—तालु या चाँद के बाल मुंडवाना। हमतो इतने बड़े थे तो जुल्फें रखना तो दूर चाँदी खोलवाया करते थे।

चाट पोंछ कर खाना—सब खाजाना बरतन में कुछ भी न छोड़ना। चाट पोंछ कर खाओ नीचे घी जमा हुआ है।

चादर रहना या चादर की लाज रहना—कुल की मर्यादा तथा इज्जत रहना। लाल बिनु कैसे लाज चादर रहैगी आज कादर करत आय बादर नये नये।

चादर से बाहर पैर फैलाना—(१) अपनी हद से बाहर जाना। (२) वित्त, शक्ति से अधिक खर्च करना। चादर से बाहर पैर फैलाओगे तो घाटा आवेगी ही।

चादर हिलाना—युद्ध रोकने का झंडा दिखाना, दुश्मन के सिपाहियों से घिरा हुआ होने पर आत्म समर्पण करने का झंडा दिखाना।

चाम के दाम चलाना—अपनी जबरदस्ती के भरोसे कोई काम करना, अन्याय करना। ऊधो अब कछु कहत न आवै, सिर पै सौति हमारे कुबजा चाम के दाम

चलावै। दिन चारिक सूं पिय प्यारे के प्यार सों चाम के दाम चलाय ले री।

चार आँखे करना नज़र से नज़र मिलना, साक्षात्कार होना। झूठ कहता और मुकरता है, इसपे फिर चार आँख करता है।

चार आँखे होना—आँखें मिलना, देखा देखी करना। अब वह हमारे सामने चार आँखें करते हुए झेंपता है।

चार उँगलियाँ तक सिर पर न रखना—(१) जरा भी परवा या ख्याल न करना। वह किसी के लिये चार उँगलियें तक सिर पर नहीं रखता। (२) झुक कर या सिर पर हाथ रख कर प्रणाम न करना।

चार के कंधेपर चढ़ना चलना, जाना—(१) मर जाना। कौन जानता है कब किस दिन चार के कंधे चढ़ चलें। (२) पालकी में बैठ कर जाना। महाराजाओं के नाई तक चार के कंधे चढ़ कर चलते थे।

चार चाँद लगना—(१) चौगुनी खूबसूरती होना। (२) चौगुनी कीमत या इज्जत हो जाना। तुम्हारे कामों ने तुम्हें चार चाँद लगा दिये हैं।

चार दिन की चाँदनी होना—थोड़े दिनों की ही दौलत होना। चार दिना की चाँदनी फेर अँधेरी रात।

चार पगड़ी करना—जहाज़ का लंगर डालना।

चार पाँच करना या लाना—(१) इधर उधर की बातें, हीला हवाला करना। (२) हुज्जत या तकरार करना। (३) बातें बढ़ाना। क्यों चार पाँच करते हो मैं अभी रुपये गिनाऊँगा।

चार मग़ज़—हकीमी में चार वस्तुओं के बीज—खीरा, ककड़ी, कद्दू, खरबूज़ा।

चारों फूटना—अँधा होना. बिलकुल ख्याल या सोच विचार न रहना। निस दिन विषय विलासनि विलसत फूट गईं तब चार्‌यौं।

चार पैसे होना—कुछ धन, सम्पत्ति। जिसके पास चार पैसे हैं उसके दुनिया में बहुत दोस्त हैं।

चारों खाने चित्त पड़ना या गिरना—(१) हाथ पाँव फैला कर पीठ के बल गिरना। (२) एकदम कोई शोक या खिलाफ बात सुन कर जकड़ बंद हो जाना, सकपका जाना। 'जहाज डूब गया' सुनते ही वह तो चारों खाने चित्त पड़ गया। बेचारे की उस दिन से चारपाई से पीठ लग गई है, आज

तक नहीं चलने फिरने लायक हुआ।

चारपाई पर पड़ना, धरना, पकड़ना या लेना, सेना—(१) खाट पर लेटना। (२) बहुत बीमार होना, बीमारी में खाट पर पड़े रहना। छः महीने से वे तो चारपाई पकड़े हुए हैं, रोग ही नहीं जाता। (३) सोना। तुम खाते ही चारपाई पकड़ते हो।

चारपाई से पीठ लगना या चारपाई से लगना—बीमारी के कारण चारपाई से उठ तक न सकना।

चाल उड़ाना—किसी की नकल करना, किसी की होशियारी खुद सीखना, समझना। उसने हमारी यह चाल उड़ाली और हमसे पहिले आप वैसी ही चीज़ बनाकर ले गये।

चाल चलना—(१) धोखे बाजी से काम पूरा होना। तुम्हारी एक चाल न चलेगी, यहाँ तुम से अधिक होशियार हैं। (२) चालाकी करना, धोखा देने की तैयारी करना। तुम हम से क्या चाल चलते हो, हम सब ताड़ लेते हैं।

चाल ठीक करना—(१) रफ़्तार ठीक करना। घड़ी की चाल ठीक करवानी है। (२) आचरण या आदत सुधारना। मैं तुम्हारी सब चाल ठीक कर दूँगा, ज़रा मुझे फ़ुर्सत मिले।

चाल मिलना—(१) आहट मिलना, चलने फिरने का शब्द सुनना। वह यहाँ नहीं है क्योंकि उसकी चाल तो मिलती नहीं। (२) पहिनावा उढ़ावा एकसा होना। (३) चालाकी को पहिचानना। इतना अधिक चलता पुर्जा है कि उसकी एक भी चाल बड़े बड़ों को नहीं मिलती।

चाल सुधारना—चाल चलन या आचारण ठीक करना। इस लड़के की चाल सुधार दो तो मैं बड़ा एहसान मानूँ।

चाला देखना—जाने का मुहूर्त देखना।

चालाकी खेलना—होशियारी से काम निकाल लेना, किसी को मत देना। उसने ऐसी चालाकी खेली मेरा रूप बना कर वहाँ चला गया और सब जेवरात ले आया।

चाव निकालना—इच्छा, लालसा पूरी करना। तुम भी अपना चाव निकाल लो, कहते थे तुझे बड़ा अच्छा घोड़े पर चढ़ना आता है।

चावल चबवाना—किसी वस्तु की चोरी हो जाने पर वहाँ उपस्थित आदमियों से मंत्र पढ़े हुए चावल

चबवाये जाते हैं, जो चीज़ चुराये होता है उसके मुख से खून आ जाता है, यह धमकी है इसके कारण चोर चीज़ें फेंक देते हैं। बताओ किसने ली है वरना फिर चावल चबवाये जायँगे।

चाशनी में पागना—मीठा करने के लिये चाशनी में डुबोना। सेव चाशनी में पागे हुए हैं।

चिउँटे की गिरह पेट में होना—बहुत थोड़ा खाना, थोड़े खाने की ही जगह पेट में होना। तुम्हारे पेट में क्या चिउँटे की गिरह है कुछ खाते भी हो?

चिउँटे के पर निकलना या लगना—मरने का समय आना, बहुत ऐंठना जिससे अपनी ऐंठ निकालने की सूचना देना। तुम्हारा क्या कसूर मरते वक़्त चिउँटे के भी पर निकल आते हैं अब तुम्हारी भी ठीक होने की इच्छा है?

चिउँटा गुड़ होना- एक दूसरे से चिपट जाना, गुत्थमगुत्था होना। ये तो दोनों लड़के चिँउँटा गुड़ हो गये हैं छूटते ही नहीं।

चिउँटी की चाल चलना—बहुत सुस्त चाल, मंद गति। तुम तो चिँउँटी की चाल चलते हो जरा कदम बढ़ा कर साथ साथ चलो।

चिंता नहीं—कोई खटके की बात नहीं, परवा नहीं। चिंता नहीं वह बुराई भी करके मेरा क्या बिगाड़ सकता है।

चिंता लगना सवार होना—किसी बात का सोच विचार या याद ध्यान बराबर बना रहना, फ़िक्र रहना। मुझे अब यही चिंता सवार रहती है कि घर का खर्च कैसे चले।

चिंदी चिंदी करना—छोटे छोटे टुकड़े करना। काग़ज़ की चिंदी चिंदी करके फेंकना चाहिये ताकि कोई पढ़ ही न सके।

चिकना देख फिसल पड़ना—(१) बाहरी खूबसूरती पर मोहित हो जाना, बनावटी चमक देख कर ही लेने की इच्छा करना। क्यों चिकना देख फिसलते हो इसमें कुछ है नहीं, दिखावट ही दिखावट है। (२) थोड़े से लाभ या धन पर अपने को गिरा देना। चिकना देख कर फिसल पड़े न भूल गये प्रतिज्ञा?

चिकना घड़ा होना—(१) किसी की बात का असर न होना, निर्लज्ज या बेहया होना। वह तो चिकना घड़ा है उससे कितना भी कहो वह नहीं समझता। (२) पेट में बात न पचना, क्षुद्र स्वभाव। वह चिकना घड़ा है उस पर पानी जरा भी नहीं

ठहरता, ऐसे से बात ही क्यों कहते हो ?

चिकने घड़े पर पानी पड़ना—अच्छी बात या उपदेश का प्रभाव न पड़ना।

चिकना चुपड़ा होना—बनठन कर रहना, सँवार सिंगार किए हुए। शहर के लड़के चिकने चुपड़े रहते हैं उनमें बल नाम को भी नहीं होता।

चिकनी चुपड़ी बातें करना—मीठी मीठी बातें जो धोखा देने को कही जायँ, दिखाने को प्रशंसा आदि करना। वह बड़ी चिकनी चुपड़ी बातें करता है, जरूर उसका कोई काम अटका है।

चिकना मुँह—(१) सुन्दर और सँवारा हुआ चेहरा। (२) मीठा बोलने वाला मुँह।

चिकने मुँह का ठग—देखने में बड़ा सीधा और मित्र सा वैसे काट करने और धोखा देने वाला। वह चिकने मुँह का ठग है तुमसे ही भला बना रहे और तुम्हारा ही चौपट कर डाले।

चिचड़ी सा चिमटना—पिंड न छोड़ना, साथ में बना ही रहना। वह मेरे से चिचड़ी सा चिमट गया है बहुतेरा कहता हूँ, परन्तु कहता है मेरा काम कर दो जब जाऊँगा।

चिट्ठा लड़ाना—झूठ बढ़ाना देना।

चिट्ठा बाँधना—लेखा तैयार करना, बजट तैयार करना।

चिट्ठा (कच्चा) खोलना—असलियत जाहिर करना, ऐसा वृत्तांत जिसमें गुप्त से गुप्त बात छिपाई न गई हो, छोटी से छोटी बात कहना। मैं तुम्हारा सारा कच्चा चिट्ठा खोल दूंगा नहीं तो १००) दो।

चिट्ठी करना—रुपये देने की लिखित आज्ञा या हुंडी करना। मुझे चिट्ठी कर दो मैं रुपये ले आऊं।

चिड़िया का दूध—असंभव वस्तु। चिड़िया का दूध नहीं है जो मिले ही नहीं।

चिड़िया नोचन होना—चारों ओर से तकाज़ा, और माँग होना। घर से रुपया आ जाता तो हम चिड़िया नोचन से छुट्टी पाते।

चिड़िया फँसाना—(१) किसी मालदार या काम निकल जाय ऐसे व्यक्ति को अपने दाँव पर चढ़ाना। रोज नई चिड़िया फँसा-कर १०) ५) रुपये ऐंठ ही लेता है। (२) किसी स्त्री को बहकाकर उसे सहवास के लिये राजी करना।

चिड़िया सोने की—(१) खूब धन देने वाला व्यक्ति। इस बार तो खूब सोने की चिड़िया पकड़ी है जब चाहते हो रुपया ले आते

हो। (२) खूब सुन्दर या बहुत प्यारा व्यक्ति। ये मेरी सोने की चिड़िया इसे हटाऊँगा क्यों दिल से।

चिढ़ निकालना—खिझाने या छेड़ने का ढंग निकालना। अगर इस बात से इतना नाराज होगे और चिढ़ोगे तो लड़के चिढ़ निकाल लेंगे।

चिढ़ाना (मुँह)—खिझाने या कुढ़ाने के लिये मुँह को टेढ़ा या विलक्षण करना। क्यों मुँह चिढ़ाते हो तुम भी तो भूल कर ठोकर खाते हो।

चितवन का वार करना—तिरछी निगाहों से घायल करना। चितवन को वार भयो पार भयो जियरा।

चितवन चढ़ाना—भौं चढ़ाना, कुपित होना, त्यौरी चढ़ाना। क्यों चितवन चढ़ाई है हम जानते हैं तुम चाहती हो वे आकर तुम्हें रूठा हुआ समझें, यही न ?

चित्त उचटना—जी न लगना, किसी बात से वैराग हो जाना। अब मेरा चित्त उचट गया है। न मैं पढ़ सकता हूँ न घर रह सकता हूँ, गंगा किनारे जाऊँगा।

चित्त करना—इच्छा होना, मन चाहना। ऐसा चित्त करता है यहाँ से चल दें।

चित्त चुराना—मन को खींचना, मोहित करना। मेरा चित्त चुरा लिया चितवन ने यार की।

चित्त देना—ग़ौर करना, मन लगाना। चित्त दै सुनो हमारी बात।

चित्त धरना—(१) याद रखना। मैंने, चित धारी कबहूँ बिसारी ना। (२) मन लगाना, ध्यान से। कहौं सो कथा सुनो चित धार, कहै सुने सो लहै सुख सार। (३) मन में लाना। प्रभू मेरे अवगुन चित न धरौ।

चित्त पर चढ़ना—(१) दिल में बैठ जाना, मन में बसना। तुम्हारे तो वही लड़का चित्त पर चढ़ा हुआ है। (२) याद आना, स्मरण होना। देखो चित्त पर नहीं चढ़ रही मुझे कल तो खूब याद थी।

चित्त बँटना—मन एक तरफ़ न रहना, विचार शक्ति दो ओर हो जाना। मैं इस समय इस बात को विचार नहीं सकता क्योंकि मेरा चित्त कई ओर बँटा हुआ है।

चित्त बँटाना—किसी का ख्याल इधर उधर कर देना, एकाग्र न होने देना। मुझे यह काम करने दो बार बार बीच में बोलकर चित्त मत बँटाओ।

चित्त में बैठना, जमना—किसी बात का मन में दृढ़ हो जाना,

पक्का हो जाना। अब हमरे चित बैठो यह पद होनी होउ सो होउ।

चित्त में होना या चित्त होना—इच्छा होना, जी चाहना। यह चित होत जाउँ मैं अब हीं यहाँ नहीं चित लागत।

चित्त लगना—(१) मुहब्बत होना, दिल खिच जाना। चित लाग्यौरी मेरो गुपाल सौं। (२) जी न ऊबना, मन लगना। अब तो मेरा चित्त काम में ही लग गया है। (३) बहुत देर तक स्थिर-मन रहना। मेरा चित्त यहाँ नहीं लगता, अब चलो।

चित्त लेना—(१) मन की थाह लेना, दिल में छिपी हुई बात पूछना। उसका तो चित्त लो वह क्या चाहती है। (२) इच्छा होना। अपना चित्त ले चले जाओ।

चित्त से उतरना—(१) भूल जाना। सूर श्याम चित सों नहिं उतरत वह बन कुंज थली। (२) निगाहों से गिरना, दिल में इज़्ज़त न रहना। प्रिय न रहना। अब मेरे चित्त से यह उतर गया है मैं कैसे स्वीकार करूँ?

चित्त से न टरना—हृदय में याद बनी रहना, दिल में जमना। सूर चित्त ते टरति नाहीं राधिका की प्रीति।

चिनगारी छूटना (आँखों से)—गुस्से से आँख लाल हो जाना।

चिनगारी छोड़ना—(१) जलाने भड़काने या क्रोध दिखाने वाली बातें कहना। तुम तो एक बार चिनगारी छोड़ देते हो फिर वह लड़ने लगते हैं जब चुप होते हैं फिर वही आग लगा देते हो।

चिनगारी डालना—(१) चिनगारी छोड़ना। (२) अग्नि लगा देना।

चिरागगुल पगड़ी गायब होना—अंधेरा या मौक़ा मिलते ही माल चुरा या उड़ा लेना।

चिराग गुल होना—(१) दीप बुझाना। (२) रौनक मिटना। चिराग गुल हुआ फिर चहल-पहल कहाँ। (३) वंश खतम होना। लड़के के मर जाने से बेचारे का चिराग़ ही गुल हो गया।

चिराग ठंडा करना—(१) दीपक बुझाना। (२) किसी का बल या शक्ति समाप्त कर देना।

चिराग तले अँधेरा होना—(१) उल्टी बात होना, रोक की जगह भी वह काम होना जिसकी रोक हो। दुनिया को दान देता है और उसका ही मित्र भूखों मर रहा है उसको पता ही नहीं, कैसे चिराग तले अँधेरा है। (२) किसी अच्छे मनुष्य द्वारा ही बुराई होना।

महामहोपाध्याय का लड़का ही जाति बंधन तोड़े यह तो चिराग़ तले अँधेरा है।

चिराग लेकर ढूँढ़ना—(१) बहुत ढूँढ़ खोज करना, खूब खोज कर हैरान होना। चिराग लेकर ढूँढ़ोगे तो भी ऐसा ईमानदार आदमी सारी दुनिया में न मिलेगा।

चिराग से चिराग जलना—(१) एक से दूसरे का काम निकलना। चिराग से चिराग जलता है आज मैं बीमार हूँ मेरा काम करदो, कल तुम्हें भी जरूरत पड़ेगी ही। (२) परस्पर लाभ पहुँचना, एक को दूसरे से फायदा होना।

चिलम चढ़ाना भरना—(१) तम्बाकू भरना। जरा चिलम चढ़ा लाओ। (२) गुलामी करना। सारी जिन्दगी तो तुम्हारी चिलमें भरी अब सहायता के लिये किससे कहूँ।

चिल्ले का जाड़ा—बड़ी जोरदार सर्दी। चिल्ले का जाड़ा चीं करवा के छोड़ता है।

चित चिहुँटना—चित्त में चुभना, दिल में काँटा सा लगना। लै चुभ की निकसै धँसे बिहँसै अंग दिखाय, तकि तकि चित चिहुँटै खरी ऐंड भरी अँगिराय।

चीरना (माल, रुपया आदि)—अनुचित रूप से धन कमाना। उसे बना कर ऐसा दाँव में फाँसा कि २००) चीर लाया।

चुकौता लिखना—भर पाई करना, सब प्राप्त होगया ऐसा क़ाग़ज़ पर लिखना। ३००) देकर चुकौता लिख दिया।

चुगली खाना, लगाना—किसी की बुराई शिकायत के तौर पर किसी से करना, बुराई करके किसी को भड़काना। मेरी चाहे जितनी चुगली अफ़सर से लगाओ वह मेरा विश्वास करता है।

चुटकी देना—चुटकी बजाना, अँगूठे से उँगली का अग्रभाग घिस कर शब्द निकालना जो मूरति जल थल में व्यापक निगम न खोजत पाई, सो मूरति तू अपने आँगन चुटकी दै दै नचाई।

चुटकी बजाना—चुटकी से संकेत करना। उसने ज्यों ही चुटकी बजाई मुझे सिपाहियों ने घेर लिया।

चुटकी बजाते में ही—देखते देखते, बहुत शीघ्र, बात की बात में। यह काम तो चुटकी बजाते होगा जरा सेठ जी आ जायँ।

चुटकी बैठना—किसी ऐसे काम का अभ्यास पड़ना जो चुटकी से पकड़ कर किया जाय। अब तो चुटकी बैठ गई है फूल का कलाबत्तू वाला हिस्सा ही नोचती है कपड़े पर हाथ भी नहीं आता।

चुटकियाँ (मीठी) लेना— १) हँसी उड़ाना, दिल्लगी उड़ाना। क्यों बेचारे की बेवकूफी पर मीठी चुटिकियाँ ले रहे हो। (२) चुभती, व्यंगभरी या लगती बातें कहना। हमारे कामों पर आप मीठी चुटकियाँ लेते हैं, क्या आप से सब काम ठीक ही होते हैं? (३) चुटकी भरना या चुटकी से नोंचना (४) चुटकी से खोदना। बार बार कर गहि गहि निरखत घूँघट ओट करो किन न्यारो, कबहुँक कर परसत कपोल छुइ चुटकि लेत हाँ हमहिं निहारो।

चुटकियों में होना—चटपट, शीघ्र ही। देखते रहो, अभी चुटकियों में यह काम होता है।

चुटकियों पर उड़ाना—दे० चुटकियों में उड़ाना।

चुटकियों में उड़ाना—(१) कुछ न समझना, परवा न करना। वह मेरा क्या कर सकता है, ऐसों को तो मैं चुटकियों में उड़ाता हूँ। (२) बात की बात में निबटाना, सहज समझना। ऐसे मामलों को तो मैं चुटकियों में उड़ाता हूँ।

चुटकी भरना—(१) चुटकी से नोचना या काटना। (२) चुभती या लगती बात कहना। (३) दे० चुटकी लेना।

चुटकी भरे लोहू टपकना— बहुत कोमल तथा गोरा होना। इतनी नाजुक और गुले अनार है कि चुटकी भरे लोहू टपकता है।

चुटकी लगाना—(१) रुपया बजाने के लिये दो उँगलियों पर अँगूठे से रख कर उछालना। चुटकी लगाओ तो पता लगे खरा है या खोटा। (२) रुपया पैसा चुराने के लिये उँगलियों से जेब फाड़ना, जेब काटना। ऐसी चुटकी लगाई कि मालूम भी न हुआ और माल तीर कर लिया। (३) दूध दुहने के लिये गाय भैंस का थन पकड़ना। (४) चुटकी से पत्तों को मोड़ कर दोना बनाना। सींक से पत्ते नहीं जोड़ते दिल्ली के हलवाई तो चुटकी लगाकर दोना बना लेते हैं। (५) कपड़े के थान को उँगलियों से फाड़ना, थान पर से कपड़ा फाड़ना। (६) किसी चीज़ को पकड़ने, नोचने, खींचने, दबाने के लिये अँगूठे और बीच की उँगली को मिला कर काम में लाना। नाखून से चुटकी लगाओ तो काँटा अभी निकल आवेगा।

चुटकी लेना—(१) दे० चुटकियाँ मीठी लेना। (२) अस्पष्ट ताना मारना। क्यों साहब चुटकियाँ क्यों लेते हो साफ़ ही कह डालो न मैं बुरा थोड़े ही मानता हूँ।

चुटकुला छोड़ना—(१) विलक्षण

या अनोखी बात कह बैठना, दिल्लगी की बात कहना। (२) लगती या चुभती हुई कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया ही मामला खड़ा हो जाय। उसने एक ऐसा चुटकुला छोड़ दिया कि दोनों आपस में लड़ पड़े।

चुटिया हाथ में होना—वश में होना, अधिकार में होना दबाव में होना। उसकी चुटिया तो मेरे हाथ में है तुम कहो वही करवा दूँ।

चुनना (दीवार में)—जीते जी मनुष्य को खड़ा करके उस पर ईंटों की जोड़ाई करना। गोविंद सिंह के मासूम लड़के सरहिन्द के नवाब ने दीवार में चुनवा दिये थे।

चुनौती देना—(१) चैलेंज देना, ललकारना। मैं तुम में से प्रत्येक को चुनौती देता हूँ जिसका जी चाहे मेरे से आकर लड़े। (२) दिल बढ़ाना, उत्साह भरना। तुम अगर उसे चुनौती न दो तो उसकी क्या ताक़त है कि वह मेरी बराबरी करे ?

चुल्लू भर पानी में डूब मरना—शर्म से मर जाना, बहुत अधिक लजित होना, मुँह दिखाने लायक न होना। जाओ चुल्लू भर पानी में डूब मरो, तुम्हारी नीच शक्ल मैं नहीं देखना चाहता।

चुल्लू में उल्लू होना—थोड़ी सी भाँग में सुधबुध भूलना, जरा से मादक द्रव्य में मदमस्त हो जाना। तुमतो चुल्लू में उल्लू हो गये कहते थे हमें नशा ही नहीं होता।

चुल्लुओं रोना--बहुत आँसू बहाना, बहुत रोना। वह तुम्हारी नाराज़ी पर चुल्लुओं रोई।

चुल्लुओं लोहू पीना—बहुत दुखी करना, दुख या चिंता से खून सुखाना। इसके पकड़े जाने के डर ने मेरा चुल्लुओं लोहू पी लिया है।

चुल्लू में समुद्र न समाना छोटे में बड़ी चीज़ या बात न समाना। कहीं चुल्लू में भी समुद्र समाता है उसके पेट में यह बात पचही कैसे सकती थी ?

चूड़ियाँ ठंडी करना या तोड़ना—पति के मरने पर स्त्री का अपनी चूड़ी तोड़ना या फोड़ना, विधवापन का निशान। बुड्ढा तो था और कुछ बरस बैठा रहता उसका क्या बिगड़ता था, इस बेचारी की भरी जवानी में चूड़ियाँ ठंडी कर दीं।

चूड़ियाँ पहनना—(१) औरत बनना यानी औरत जैसा वेष या चिह्न धारण करना। जब तुम

मर्द होकर इतना भी नहीं कर सकते तो चूड़ियाँ पहन लो। (२) डरपोक हो जाना। जब सिपाही आवे तो चूड़ियाँ पहिन कर बैठ जाना और कहना अबे मुए इधर जनाने हैं।

चूड़ियाँ बढ़ाना या बँधाना—चूड़ियाँ उतारना, हाथों से अलग करना (स्त्रियें चूड़ियों के साथ उतारना शब्द बोलना अपशकुन व बुरा समझती हैं, यह दो चूड़ियें बँध गई।

चूतिया चक्कर में—(१) व्यर्थ में। (२) बेवक़ूफी से। तुम क्यों चूतिया चक्कर में पड़ते हो यह तो आवारा है, तुम भी वही बनना चाहते हो?

चूना लगाना—(१) शर्मिन्दा करना, मात देना। हम समझते थे हम चालाक हैं अब तुमने हमारे भी चूना लगा दिया। (२) दिक करना, खूब धोखा देना। तुम्हारे भी किसी दिन ऐसा चूना लगाऊँ जो रोते रह जाओ, इस समय तो खैर जाने दो।

चूम कर छोड़ देना—(१) बिना काम लिये छोड़ देना। (२) कार्य आरंभ करके छोड़ देना।

चूलें ढीली होना—दे० अंजर पंजर ढीले होना (१, २)।

चूल्हा न जलना—(१) भोजन न बनाया जाना। (२) बहुत दरिद्र होना। कई कई दिन हो जाते हैं चूल्हा ही नहीं जलता, सब भूखे ही सो जाते हैं।

चूल्हा न्यौतना—घर के सब आदमियों को खाने का बुलावा देना। आज उनके यहाँ हमारा चूल्हा न्यौता था फिर खाना क्यों बनता?

चूल्हा फूँकना—भोजन बनाना। इतने महमान आये रहते हैं कि दिन भर चूल्हा ही फूँकने से फ़ुरसत नहीं मिलती।

चूल्हे में डालना—(१) नष्ट करना, फेंक देना। (२) दूर करना, हटाना। चूल्हे में डालो मैं नहीं देखती।

चूल्हे में पड़ना—(१) नष्ट भ्रष्ट होना। (२) कुछ भी होना। मेरी तरफ से चूल्हे में पड़े मुझे क्या?

चूल्हे से निकल कर भाड़ या भट्टी में पड़ना—एक आफ़त से बचा कर दूसरी उससे बड़ी विपत्ति में फँसना।

चेक काटना—चेक लिख कर (किताब में से काट कर) देना, बंक के नाम रुपये देने का रुक्का देना। इन्हें बंगाल बंक का चेक काट कर दे दो।

चेपी लगाना—काग़ज़ का टुकड़ा चिपकाना। चेपी लगाने से अक्षर उभर आते हैं।

चेला मूँड़ना—शिष्य बनाना, अपने गुरुपन के धोखे में फाँसना, अपना भक्त बनाना। बड़ा चालबाज साधु है जहाँ जाता है कोई न कोई चेला मूँड़ ही लेता है।

चेहरा उतरना—मुख पर उदासी या सूखापन होना, चिंता, लज्जा, रोग आदि के कारण चेहरे पर तेज न रहना। आज आपका चेहरा उतरा हुआ क्यों है?

चेहरा तमतमाना—मुख पर लाली होना। क्रोध, गरमी या तेज से उसका चेहरा तमतमा रहा था।

चेहरा बिगड़ना—मुँह का रंग फीका पड़ना। बीमारी के कारण उसका चेहरा बिगड़ गया है।

चेहरा बिगाड़ना—इतना मारना कि सूरत तक न पहचानी जाय। उसको किसी ने ऐसा मारा है कि उसका चेहरा बिगाड़ दिया है।

चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना—मुँह पर उदासी छाना, डर या रंज से मुख का रंग फीका पड़ जाना। आज चेहरे पर हवाइयाँ क्यों उड़ रही हैं, कोई ख़तरे की बात है?

चैन उड़ाना—आनन्द से समय बिताना, ऐश करना। तुम तो चैन उड़ा रहे हो तुम्हें क्या परवा।

चैन की बंशी बजना—मज़े में गुज़रना, सुख से जीवन बीतना।

चैन पड़ना—(१) शांति या सुख मिलना। (२) व्याकुलता मिटना। आज जब लड़का मिल गया तब मुझे चैन पड़ा है।

चैन से कटना—दे० चैन की बंशी बजाना।

चोंचें (दो-दो) होना—कहा सुनी हो जाना। कई दिनों से मुँह पर जवाब देना चाहता था आज हमारी उनसे दो दो चोंचें हो गईं।

चोट उभरना—चोट खाए हुए स्थान पर फिर से दर्द होना। बुढ़ापे में जवानी की चोट उभर आतीं हैं।

चोट खाना—(१) नुक़सान उठाना। इनके लिहाज़ से मैंने भी दुअन्नी की चोट खाई वरना मैं उसके बाप से वसूल कर लेता। (२) आघात या प्रहार सहना। साँप चोट खाकर फिर काटे बिना नहीं छोड़ता।

चोट खाली जाना—वार चूकना, निशाना न बैठना। तुम्हारी चोट खाली गई मेरी ठीक बैठी।

चोट बचाना—चोट न लगने देना। उसने लाठी की चोट बचाकर छुरी घुसेड़ दी।

चोटी का—चुना हुआ। सर्वोत्तम।

चोटी का पसीना एड़ी पर आना—कड़ा परिश्रम करना, जान लड़ा कर काम करना। बड़ा मेहनती है जब काम करता है तो फिर नही कुछ भी सुनता चोटी का पसीना एड़ी पर आ जाता है।

चोटी दबना या हाथ में होना—दे० चुटिया हाथ में होना।

चोर पड़ना—(१) चोरों का आकर कुछ चुरा ले जाना। (२) चोरों का आना। रात को तो हमारी गली में भी चोर पड़े थे, हल्ला मचाने पर भाग गये।

चोर पर मोर पड़ना—चालाक के साथ चालाकी करना, धूर्त से धूर्तता करना। यह बड़ा होशियार बनता था पर इस चोर पर मोर तुम्हीं पड़े हो।

चोर बैठना (मनमें)—दिल में खटका या संदेह होना। उनके मन में चोर बैठा था बस वही हुआ उनकी भी तलाशी ली गई।

चोरी चोरी, चोरी छिपे—छिपा कर, गुप्तरूप से। चोरी छिपे तो लाखों की कोकीन जर्मन से आती है।

चोरी लगना—चोरी करने का दोष या अपराध लगना। हमें २००) की चोरी लग गई क्या करें? ये भी भरने ही पड़ेंगे।

चोरी लगाना—चोर मानना, चोरी करने का अपराधी ठहराना।

चोला छोड़ना—प्राण त्यागना, मरना। महात्माजी ने कल चोला छोड़ दिया।

चोला बदलना—(१) मूर्ति धोकर चोला चढ़ाना। (२) शरीर त्याग करना अर्थात् मर कर दूसरा शरीर पाना। (३) नया रूप धारण करना। आज तो चोला बदला है वर्षा होगी, क्या बात है पहिले तो आप कोट पहिनते ही न थे।

चोली दामन का साथ—गहरा ताल्लुक, बहुत मेल। उन दोनों का तो चोली दामन का साथ है, एक आवेगा तो दूसरा अपने आप साथ होगा।

चौंर ढलना, ढुरना—सिर पर चँवर हिलाया जाना, महाराज जैसा होना। अजी वे बहुत बड़े आदमी हैं उन पर चौंर ढलते हैं, तीन करोड़ के महन्त हैं।

चौंर ढालना ढुराना—चँवर हिलाना। अप्सरायें चँवर ढुराती थीं।

चौंसठ घड़ी—हर समय, दिन-रात। चौंसठ घड़ी की गालियें हमसे नहीं सुनी जातीं।

चौकड़ी भूल जाना—कोई उपाय

न सूझना, घबरा जाना, यहीं तर्क कुतर्क करते हो वकील की जिरह पर सब चौकड़ी भूल जाओगे।

चौकन्ना होना—सजग या सावधान होना। बंदूकों की आवाज़ आई तो मैं चौकन्ना हो गया।

चौका खेलना, लगाना—(१) सत्यानाश करना। कियो तीन तेरह सबै, चौका चौका लाय। (२) लीप-पोत कर धोकर ठीक ठाक करना।

चौकी देना—(१) पहरा देना, रखवाली करना। (२) चौकी पर बैठाना, बैठने के लिये आसन देना। (३) आदर करना। वह मुई किसी को चौकी भी नहीं देती।

चौकी बिठाना—रखवाली के लिये सिपाही तैनात करना।

चौकी बैठना—पहरा होना।

चौकी भरना—(१) बारी पर पहरा देना। (२) देवी, देवता के दर्शनों को मन्नत, संकल्प के अनुसार जाना।

चौगुना (मन) होना—उत्साह होना, हिम्मत बढ़ना। इनाम मिलने से मन चौगुना हो गया, अब और अच्छा काम कर दिखाऊँगा।

चौचंद पारना—बुराई उड़ाना, बदनामी करना, चबाव करना।

चौथ का चाँद होना—भादों सुदी चौथ का चन्द्रमा, ऐसी वस्तु जिसके देखने से कलंक लगे। प्रातः काल उसका मुँह क्या देखा चौथ का चाँद देखा आज सारे दिन बुराइयें सुनी।

चौपट करना—सब बिगाड़ देना, बरबाद करना। उसने सारी जायदाद आदि चौपट कर डाली।

चौपट होना—सत्यानाश होना, नष्ट भ्रष्ट या तबाह होना। हमारा किया कराया सब चौपट कर दिया इसकी अक्ल को कहें भी क्या।

चौपहरा देना—चार चार पहर के अंतर पर घोड़े, आदमी आदि से काम लेना। हम तो चौपहरा देते हैं फिर बाद में कोई काम नहीं कराना चाहते।

चौमुखा दिया जलना—दिवाला निकालना (पहिले महाजन ऐसा करके दिवाले की सूचना देते थे)।

चौरंग उड़ाना या काटना—(१) ऊँट के बँधे हुए चारों पैरों को एक साथ काटना। (तलवार चलाने की वीरता की यह परीक्षा होती थी)। (२) तलवार आदि से कोई वस्तु बड़ी सफाई से काटना। (३) सब तरफ़ से किसी को निराश कर देना। तुमने मेरी बदनामी उड़ाकर मेरा चौरंग उड़ा दिया अब बाजार

में मुझे कोई एक पैसा भी नहीं देता।

चौरासी में पड़ना या भरमना—ममता में फँसना, आवागमन के चक्कर में फँसना। चौरासी में पड़ी आत्मा दुख ही दुख उठावे।

चौसर का बाज़ार—चौक बाजार। चौरस के बाजार सब ही शहरों में मशहूर हैं।

छ

छँटा हुआ—माना हुआ चालाक, प्रसिद्ध धूर्त, बदमाश। वह बड़ा छँटा हुआ है उसका क्या यकीन।

छँटे छँटे फिरना—अलग अलग रहना, साथ बचाना। छँटे छँटे क्यों फिरते हो मैं कोई लुच्चा तो नहीं हूँ जो तुम्हें दुनिया बुरा कहेगी।

छंद बंद बाँधना—बातों में फाँसना, कपट की चाल चलना हमेशा किसी को फँसाने के लिये छद बंद बाँधता ही रहता है।

छक्का पंजा चलाना—चाल बाज़ी करना। क्यों छक्का चलाते हो मैं एक न मानूँगा।

छक्का पंजा भूलना—किंकर्तव्य विमूढ़ होना, उपाय भूल जाना, कुछ न सूझना। तुम उनके तर्क के आगे सब छक्का पंजा भूल जाते हो।

छक्के छुटना—(१) होश उड़ना, अक्ल चकराना, दंग होना। छोटे से वकील से ही बैरिस्टरों के छक्के छूट गये। (२) साहस न रहना, घबरा जाना। नई सेना के आते ही शत्रुओं के छक्के छूट गये।

छक्के छुड़ाना—(१) पैर उखाड़ देना, अधीर कर देना। सिखों ने काबुलियों के छक्के छुड़ा दिये। (२) चकरा देना, विस्मित करना। उसने छ घंटे लगातार बोल कर बड़े बड़े नेताओं के छक्के छुड़ा दिये।

छछूँदर छोड़ना—हलचल मचा देना, आग लगाना। पंचायत फैसला कर चुकी थी कि उसने ऐसी छछूँदर छोड़ी कि सब फिर बिगड़ उठे और मामला बढ़ गया।

छठी का दूध निकालना—मेहनत से तंग कर देना। तुम तो मुझे ऐसा काम देकर छठी का दूध निकालते हो।

छठी का दूध याद आना—बड़ी मेहनत करना पड़ना, बचपन की सब खिलाई पिलाई भूल जाना।

बाप रे बाप, धूप में काम करते करते छठी का दूध याद आ गया।

छठी का राजा—पुराना रईस।

छठी में न पड़ना—(१) किस्मत में ही नहीं लिखा। (२) स्वभाव विरुद्ध। देना तो उसकी छठी में ही नहीं पड़ा है। (३) सिखाया ही न जाना।

छठे छमासे—कभी कभी, बहुत दिनों में। मैं छठे छमासे शराब पी लेता हूँ।

छड़ी छटाँक छड़ी सवारी—(१) अकेले (२) बिना सामान के। छड़ी सवारी रात में भी सफर करने में डर नहीं।

छत बँधना—बादल छा जाना।

छत्र छाँह में होना—संरक्षा या शरण में होना।

छनना गहरी—दे० गहरी छनना।

छन्न होना—सूख जाना, उड़ जाना।

छप्पर टूट पड़ना—(१) विपत्ति पड़ना। (२) बुराई या आघात आना।

छप्पर पर फूँस न होना—बहुत दरिद्र या कंगाल होना। लड़की ब्याह भी दी तो खायगी क्या उनके तो छप्पर पर फूँस तक नहीं।

छप्पर पर रखना—अलग रखना, जिक्र तक न करना। तुम अपनी घड़ी वड़ी छप्पर पर रखो, लाओ हमारा रुपया दो।

छप्पर फाड़कर देना—अचानक प्राप्त होना, घर बैठे पहुँचाना। भगवान छप्पर फाड़ कर देता है, कल रोटियों को तंग थे कि मार्ग में थैली पा गई।

छप्पर रखना—(१) एहसान या बोझ रखना। (२) कलंक या दोष सिर मढ़ना। मुझ पर क्यों छप्पर रखते हो मुझे क्या सरोकार है मैंने इतना कर दिया वह क्या कम है?

छम छाम हो जाना—बिल्कुल शांत हो जाना। बिल्ली के आते ही चूहे छमछाम हो गये।

छल छंद छलछेव करना—कपट या धोखे का करना।

छल छंदों से दूर रहना—चालाकी आदि से दूर रहना। मैं इन छल छंदों से दूर रहता हूँ मुझे बदनामी बुरी लगती है।

छल पिलाना—(१) कटोरे बजा बजा कर या वैसे ही राहगीरों को पानी पिलाना। (२) धोखे की चाल सिखाना।

छलनी कर डालना—(१) बहुत स्थानों पर छेद कर देना। (२) बहुत स्थानों पर फाड़ कर छेद कर देना।

छलनी में डाल छाज में उड़ाना—थोड़ी बात को बहुत बढ़ा देना। उससे मत कहना नहीं तो वह छलनी में डालकर

छाज में उड़ाता है, सारे शहर में बदनामी फैल जायगी।

छलनी हो जाना—(१) बहुत छेद हो जाना। तेजाब से तमाम धोती छलनी हो गई है। (२) बहुत स्थानों पर से घिस या फट जाना।

छलनी होना (कलेजा)—दे॰ कलेजा छलनी होना।

छलावा सा—बहुत चंचल। करते छटकि छूटी छलकि छलावा सी।

छलावा खेलना—इधर उधर छिपना, दिखाई देना। दे दो न क्यों छलावा खेलते हो मैं इसे छोड़कर ही घर चली जाऊँगी।

छाँह न छूने देना—(१) पास न आने देना। मैं ऊपर ऊपर की बात करता हूँ इसकी छाँह भी नहीं छूने देता। (२) पास न जाने देना। मैंने लड़के को उनकी छाँह भी नहीं छूने दी।

छाँह बचाना—पास न जाना, दूर ही रहना। उसके दाने निकल रहे हैं छाँह बचाना।

छाँह में कमाना—ठंडक में बैठकर धन प्राप्ति करना। हम भी पढ़ जाते तो क्यों हल चलाते कहीं छाँह में कमाते न।

छाँह में होना—(१) रक्षा या शरण में। मेरी छाँह में उसका कोई क्या बिगाड़ सकेगा ? (२) ओट में, छिपना। पंथ अति कठिन पथिक कोई संग नहीं, तेज भये तारागन छाँह भयो रवि है।

छाकटा होना—चालाक या बद-माश होना।

छाकटे बाजी चलना—धोखा देना। मुझसे भी छाकटे बाजी चलते हो ?

छाती उड़ीजाना—(१) जी मिच-लाना घबराना। (२) दुख या आशंका से व्याकुल होना।

छाती उमड़ आना—दे॰ छाती भर आना, याद से व्याकुल होना। पाती आई पीव की छाती उमड़ी जाय।

छाती करना—हिम्मत करना। कौन छाती कर सकता है कि रात में मरघट में जाय।

छाती का जम—(१) ढीठ या जिद्दी। (२) दुख दायक। (३) हरवक्त तंग करने वाला। ये छाती का जम मर जाय तो अच्छा, ऐसा बेटा भी व्यर्थ।

छाती कूटना—(१) शोक या दुख से छाती पीटना। (२) दे॰ छाती ठोकना।

छाती के किवाड़ खुलना—(१) ज्ञान हो जाना, हिए की आँख खुलना। (२) बहुत आनन्द होना। तुम्हारे आते ही मा की छाती के किवाड़ खुल गए उन्हें बहुत चिंता थी। (३) खुल कर

बातें होना। आज उनकी छाती के किवाड़ खुल गए, चलो बैर भाव मिटा। (४) जोर से चीख उठना। (५) छाती फटना।

छाती के किवाड़ खोलना—(१) कलेजा टुकड़े-टुकड़े करना। क्यों मेरे सामने मेरे बच्चे को मार कर मेरी छाती के किवाड़ खोलते हो। (२) अज्ञान, अंधकार मिटाना। (३) दिल की बातें खोल खोल कर कहना। (४) आनन्द देना।

छाती खोलना—(१) उदार चित्त होना दिल खोलना। दान के लिये छाती खोल देता है। (२) मन में मैल न होना। वह प्रत्येक मित्र के आगे छाती खोल कर रख देता है।

छाती छलनी होना—दुख झेलते झेलते जी ऊब जाना। अब मेरी छाती छलनी हो गई है मैं जीना नहीं चाहती।

छाती जलना—(१) ईर्ष्या होना। मेरी उन्नति देखकर तुम्हारी छाती क्यों जलती है? (२) संताप होना। उस दुष्ट को देखकर मेरी छाती जलती है। (३) कुढ़ना। मुझे अच्छे कपड़े पहिनते देखकर उसकी छाती जलती है। (४) हृदय व्याकुल होना। उसे देखने के लिये मेरी छाती जल रही है।

छाती जुड़ाना या ठंडी होना—दिल बाग़-बाग़ होना, इच्छा पूरी होना, मनोरथ सफल होना। अब प्रभु देखि जुड़ानी छाती। आज तुम्हें सुखी देख कर मेरी छाती ठंडी होगई है।

छाती ठुकना—(१) विश्वास होना। मेरी छाती नहीं ठुकती कि तुम जैसा कहते हो कर ही दोगे। (२) हिम्मत बँधना। तुम्हारी छाती ठुकती हो तो तुम रुपया लगाओ, मैं कुछ नहीं कहता कितना लाभ होगा।

छाती ठोकना—हिम्मत करके कहना, पक्की प्रतिज्ञा करना। मैं छाती ठोक कर कहता हूँ कि आज उसे पकड़ ही लाऊँगा।

छाती तले रखना—(१) बहुत प्यार से रखना। (२) बिल्कुल अपने पास ही रखना। मैंने इस लड़की को लड़के की तरह हमेशा छाती तले रखा है, इसे दुख मत होने देना।

छाती तले रहना—(१) आँखों के सामने रहना। (२) बहुत प्यारा होकर रहना।

छाती थाम कर रह जाना—(१) दिल मसोस कर रह जाना। (२) शोक से स्तब्ध होजाना। इस भारी वज्रपात को सुनकर सब लोग वहाँ छाती थामकर रह गये।

छाती देना—स्तन पिलाना, दूध पिलाना। तुम ऊपर का ही दूध पिलाती हो या बच्चे को कभी छाती भी देती हो ?

छाती निकाल कर चलना—अकड़ से, तनकर चलना। जवानी में सभी छाती निकाल कर चलते हैं।

छाती निकाल कर रख देना—दे० कलेजा निकाल कर रख देना।

छाती पक जाना—(१) दे० छाती छलनी होना। (२) स्तनों के अग्रभाग पक जाना। (३) छाती पत्थर की करना (१)।

छाती पत्थर की करना—(१) दिल सख़्त कर देना। प्रति दिन की आफ़तों ने मेरी छाती पत्थर की कर दी है। (२) भारी दुख सहने को दिल पक्का या मजबूत करना। छाती पत्थर की करके मैंने चीरा लगवाया है।

छाती पर झेलना—खुद दुख सहना, वार सहना। मैं सारे दुख अपनी छाती पर झेल कर तुझे पाला है।

छाती पर चढ़ कर ढाई चुल्लू लहू पीना—मारना, कठिन दण्ड देना, बदला लेना। भीम ने दुर्योधन की छाती पर चढ़कर ढाई चुल्लू लहू पीलिया तब उसे शान्ति हुई।

छाती पर चढ़ना या सवार होना—दुख देने के लिये मौजूद होना। तुम हर समय मेरी छाती पर चढ़े रहते हो. कभी तो सुखसे बैठने दो।

छाती पर धर कर ले जाना—मरते वक्त भी अपने साथ लेजाना, अपने साथ परलोक में ले जाना। कंजूस पेट काट कर रुपया जोड़ता है, परन्तु सब यहीं रह जाता है। क्या छाती पर धर कर ले जाता है ?

छाती पर पत्थर रखना–(१) दिल सख़्त कर लेना। (२) चुप-चाप कष्ट सह लेना। तुमने तो छाती पर पत्थर ही रख लिया है इतने कष्ट में भी उफ़ तक नहीं करते।

छाती पर बाल होना—(१) दयावान, उदार होना। छोटा तो छिछोरा है, परन्तु बड़े भाई की छाती पर तब भी बाल हैं। (२) हिम्मत होना, वीर होना। जिसकी छाती पर बाल हों वह सामने आवे।

छाती पर साँप लोटना—(१) जलन से दुखी होना, दिल जलना। जब मुझे गैर का खयाल आया, मेरी छाती पर साँप लोट गये। (२) कलेजा दहल जाना, डर होना यह काम करने का तो नाम

सुनकर भी छाती पर साँप लोटता है।

छाती पर मूंग या कोदों दलना—बहुत कष्ट या तकलीफ देना, किसी के सामने उसे जलाने का काम करना। मिलती हो दिखाकर हमें ग़ैरों के गले से, क्या फायदा छाती पे मेरी मूँग दले से।

छाती फटना या दरकना—(१) दे० छाती जलना। (२) बहुत दुख उत्पन्न होना। बच्चे का दुख देखकर तो छाती फटती है।

छाती पर फिरना—घड़ी घड़ी याद आना। मेरी छाती पे फिरता है, तुम्हारा वह शबाब।

छाती पर बने रहना—हर समय मौजूद या पास रहना। तुम मेरी छाती पर ही क्यों बने रहते हो, और कोई काम नहीं है?

छाती फुलाना—(१) घमंड करना, अभिमान दिखाना। (२) ऐंठ कर या अकड़ कर चलना। क्यों छाती फुलाते हो एक थप्पड़ में जान निकल जायगी।

छाती फाड़कर कमाना—दिल तोड़ कर परिश्रम करना, बहुत मेहनत से कमाना। भाई! हम छाती तोड़ कर कमाते हैं हम कैसे पैसे का ख्याल न करें?

छाती भर आना—(१) दुख से पिघल जाना। उसके घावो देख कर तो छाती भर आती है (२) मुहब्बत या दया से गद्‌गद् हो जाना। वारि विलोचन बाँचत पाती, पुलकि गात भरि आई छाती। (३) स्तनों में दूध आ जाना। बच्चे को जब भूख होती है छाती स्वयं भर आती है।

छाती मसोसना—दिल ही दिल दुखी होना। उसका कोई अपना न था बेचारी छाती मसोस कर रह गई, कुछ न कर सकी।

छाती में छेद होना—दे० छाती छलनी होना।

छाती से पत्थर टलना—(१) पुत्री का व्याह होना। (२) किसी बड़े भारी खटके वाले काम को करके निश्चिन्त हो जाना। लो चलो यह भी छाती से पत्थर टला दो महिने से इसके लिये भी रात दिन चैन न था।

छाती से लगा कर रखना—बहुत प्यार से अपने पास ही रखना।

छाती से लगाना—प्रेम से दोनो भुजाओं के बीच दबाना, गले लगाना। [] कलेजे के सब मुहाविरे कलेजे के बजाय छाती। शब्द लगाकर काम में लाये जा सकते हैं—छाती के बाकी मुहाविरे भी

'कलेजे' के मुहाविरों जैसे अर्थ में ही प्रयोग होते हैं।

छान डालना या मारना—बहुत ढूँढ खोज करना। गली गली छान मारी परन्तु तुम्हारा कहीं पता न मिला।

छान बीन करना—(१) बहुत विचार करना। (२) बहुत खोज कर के, एक एक चीज़ ढूँढ कर। पूरी छान बीन के साथ यह पुस्तक लिखी गई है।

छापा मारना—(१) दौड़ देना, चढ़ आना। पुलिस ने कल उनके घर छापा मारा और कुछ जब्त पुस्तकें उठा ले गई।

छिया छरद करना—बहुत घृणा करना।

छींकते नाक कटना—छोटी सी बात पर दण्ड देना, कहते ही पकड़ा जाना। वहाँ तो छींकते ही नाक कटी; मैंने जो जरा कहा मुझे भी गवाह बना लिया।

छींक होना—बुरा शकुन होना, न करने की सूचना। छींक होते ही क्यों जाते हो और लड़ाई हो जायगी।

छींका टूटना—बिना मेहनत चीज़ मिलना। बिल्ली के भागों छींका टूटा (कहावत) तुम चाहते ही थे कि वह न मिले।

छीछालेदर उड़ाना करना—(१) हँसी उड़ाना। (२) दुर्दशा करना पोल खोलना। भरी सभा में विचारे का ऐसा छीछालेदर उड़ाया कि शर्म से गर्दन नीची हो गई।

छीर डालना—कपड़े के छोरों पर झालर डालना। यह डुप्पटे पर छीर किसने डाले हैं।

छुछहँड़ दिखाना—इनकार कर देना, 'है ही नहीं' कहना। क्यों छुँछहड़ दिखाते हो हम जानते हैं तुम्हारे पास है, देखो! काम तुम्हें भी कभी पड़ेगा ही।

छुटा छरिंदा-(१) अकेला, निश्चिंत। वह तो छुटा छरिंदा है कुछ करना नहीं धरना नहीं। (२) स्वच्छन्द, आज़ाद। छुटा छरिंदा है जिसकी बहू बेटी निगाह पड़ी उसी पर हाथ डाल देता है।

छुट्टी पाना—(१) झंझट न रहना। भाई हमने तो अपना काम पूरा करके छुट्टी पाई। (२) निश्चिंत होना। (३) झंझट से बचना। तुम तो यह बहाना बना कर छुट्टी पाओगे तंग तो हमें होना पड़ेगा।

छुट्टी मनाना—(१) काम न करना, तुम हर रोज छुट्टी मनाते हो? (२) छुट्टी के दिन आनन्द से बिताना।

छुरियाँ कटखन में पड़ना—(१) खून के दस्त होना। (२) हाथ लगना और काम में आना। यहाँ

आम रखे थे न जाने किसके छुरियाँ कटाखन में पड़े।

छुरी कटारी दिखाना या बताना—मारने की धमकी देना। तुम क्या मुझे छुरी कटारी दिखाते हो मैं तुम से अधिक कसाई हूँ।

छुरी कटारी रहना—बैर होना, दुश्मनी रहना। उन दोनों में छुरी कटारी रहती है।

छुरी चलना—(१) चीरना छुरी से। (२) छुरियों से लड़ाई होना। जरा सी बात में वहाँ छुरियें चल जाती हैं।

छुरी चलाना—बहुत दुख देना, हानि पहुँचाना। क्यों छुरी चलाते हो इस गरीब पर।

छुरी तेज करना—नुकसान पहुँचाने की तैयारी करना। क्यों छुरी तेज करते हो वह तो पहले ही मरा हुआ है।

छुरी तेज होना—(१) हुकूमत होना, आज्ञा मानी जाना। आज कल उनकी छुरी तेज है। (२) किसी को नुकसान पहुँचाने की तैयारी होना।

छुरी फिरना—(१) छाती फटना। उसे सज़ा पाता देख मुझ पर छुरी फिरती है। नुक़सान या अनिष्ट होना।

छुरी (गले पर) फेरना—(१) बहुत ही हानि पहुँचाना। (२) मारना।

छूटना (प्राण, शरीर, नाड़ी)—मरना।

छू बनना या होना—चलता बनना, चुपचाप भाग जाना। पुलिस से पहिले ही वह छू बना।

छूछू बनाना—मूर्ख बनाना।

छूत उतारना—भूत प्रेत की छाया मंत्र से दूर करना।

छूमन्तर होना—(१) शांत होना। (२) गायब होना, उड़ जाना। मार खाते ही भूत छू मंतर हो गया।

छेड़ निकालना—चिढ़ाने वाली बात करना। उसने चिढ़ाने के लिये अच्छी छेड़ निकाली है।

छेद ढूँढना, निकालना—(१) बुराइयाँ ढूँढना। (२) पोल खोलना। क्यों किसी के छेद निकालते हो भीतर सब ही ऐसे हैं।

छै जाना—छेद का फटजाना। भारी झुमकी पहिनने से कान छै गये।

छोड़ना (किसी पर, किसी को)—(१) पीछे दौड़ना, पीछे लगा देना। मैंने ऐसे आदमी तुम पर छोड़ रखे हैं कि तुम्हारी एक एक मिनट की खबर रखते हैं। हिरन के पीछे कुत्ते छोड़ दिये।

(२) मादा पर नर पशु चढ़ाना। घोड़ी पर घोड़ा छोड़ दिया।

छोड़ना (किसी को) छोड़ कर—सिवाय। तुम्हें छोड़ मेरा कोई नहीं।

छोहाना—(१) बहुत प्रेम जाहिर करना। (२) दया या अनुग्रह करना। महन्त जी ने छोहा कर मुझे नौकर रख लिया। (३) क्रोधित होना। क्यों छोहाता है साड़े (साले) को मार दूँगा।

ज

जंगल जाना—टट्टी या पाखाने जाना। जंगल गये हैं फिर स्नान करके आप से मिलेंगे।

जंगल में मंगल करना, होना—निर्जन स्थान में चहल पहल होना। स्वामी जी की कुटिया से जंगल में मंगल हो गया है।

जँचा तुला होना—(१) बिलकुल ठीक, उपयुक्त, पूरी ही। बिल्कुल जँची तुली बात कही है। (२) सधा या मँजा होना। जँचा तुला बोलता है एक अक्षर इधर उधर करने पर वह मजा नहीं रहता। (३) अव्यर्थ (४) सुपरीक्षित। उसका काम जँचा तुला है, सैकड़ों दफ़ा हाथों से निकला हुआ है।

जंजाल में पड़ना, फँसना—उलझन में पड़ना, चक्कर में पड़ना, कठिनता सामने आना। हम तो विवाह करा कर जंजाल में फँस गये, गृहस्थी के कामों से ही पीछा नहीं छूटता।

जंजीर डालना—(१) पैरों में बेड़ी डालना। (२) बंधन में फाँसना। ऐसी जंजीर डाली है कि तीन बरस तक तो कुछ नहीं हो सकता—काग़ज़ लिख दिया है।

जंजीर बजाना—किवाड़ की कुंडी खट खटाना। देखो सेठानी जंजीर बजा रही हैं, पूछो क्या मँगाती हैं।

जंतरी खींचना—(१) तारों को जंते में डाल कर पतला लंबा बनाना। (२) सीधा करना, टेढ़ापन दूर करना।

जंदरा ढीला होना—(१) कल पुर्जे ढीले होना। (२) हाथ पैर बेकार होना, थकावट आना। दफ़्तर के काम से जंदरा ढीला हो जाता है।

जई डालना—अंकुर निकालने के लिये कोई जौ आदि को भिगोना। जई डाल दो दशहरे को आवश्यकता पड़ेगी।

जई लेना—अंकुरित होगा या नहीं, यह परीक्षा लेना। गेहूँ की जई ले लो तब खेत में लेना।

जक पड़ना. बँधना—(१) चैन पड़ना। तुम्हें किसी एक तरह जक नहीं पड़ती। (२) रट लगना, धुन लगना। तब पद चमक चक चाने चन्द्र चूड़ चख चितवत एक टक जक बँध गई है।

जकड़ बन्द करना—(१) कसकर बाँधना। (२) अच्छी तरह काबू में कर लेना मैंने उसके हस्ताक्षर कराकर जकड़ बंद कर लिया है, अब वह चूँ भी न करेगा।

जकड़ बन्द होना—अकड़ जाना, सुन्न होना। बेहोशी के बाद शरीर जकड़ बन्द सा हो जाता है।

ज़खम (ज़ख़्म) ताजा या हरा होना—(१) घाव भरा हुआ न होना। (२) गई हुई विपत्ति वा कष्ट का फिर लौट आना। मुझे जब उसकी याद दिला देते हो तो मेरा ज़ख्म हरा हो आता है।

जख़्म पर नमक छिड़कना—कष्ट में और कष्ट देना, दुखी को दुखी करना, जले को जलाना। क्यों चिढ़ाने की बातें करके मेरे जख़्म पर नमक छिड़क रहे हो।

जख़्म हरा करना—(१) घाव को ताज़ा करना। (२) दुबारा रंज या दुख पहुँचाना। (३) दुबारा विपत्ति लाना।

जग-हँसाई करना, कराना—ऐसा काम करना जिससे दुनिया पतित वा बेवक़ूफ़ समझ कर हँसी उड़ावे। क्यों जग-हँसाई कराते हो. ऐसा और भी कभी किसी ने किया है ?

जगह छोड़ना—(१) जहाँ बैठे हों वहाँ से सरकना, हटना। जगह छोड़ कर बैठो और भी आदमी तो बैठेंगे। (२) लिखने में सादा काग़ज़ छोड़ना। नया अनुच्छेद सदा दो अंगुल जगह छोड़ कर शुरू करो। (३) नौकरी छोड़ना। मैंने वह जगह छोड़ दी है, वहाँ रुपये कम मिलते थे। (४) रहने का स्थान बदलना। मैंने वह जगह छोड़ दी है दूसरे मुहल्ले में मकान ले लिया है। (५) दुकान का स्थान बदलना। वह जगह तो छोड़दी अब दुकान लेकर कहाँ बैठे हो ?

जगह जगह होना—(१) सब स्थानों पर, सब जगह। (२) थोड़ी थोड़ी दूर पर। जगह जगह लट्ठे गाड़ दिये गये।

जड़ उखाड़ना या खोदना—(१) बिल्कुल नाश कर देना। (२) हानि या बुराई करके किसी की स्थिति बिगाड़ना। मैंने उन्हीं

जड़ उखाड़ दी अब वह उससे एक पैसा भी न ले सकेंगे।

जड़ जमाना—दृढ़ करना, स्थायी करना। मैंने उसकी जड़ जमादी है अब जिन्दगी भर वहीं नौकरी कर सकता है।

जड़ पकड़ना—(१) मज़बूत होना। (२) जम जाना, बैठ जाना। तुम्हारी एक भी बात मेरे हृदय में जड़ नहीं पकड़ सकती, क्योंकि तुम झूठे हो।

जड़ पड़ना—(१) प्रारम्भ होना, सहारा होना। बुरे विचारों की जड़ ही न पड़ने दो। (२) नींव या बुनियाद पड़ना।

जड़ें ढीली करना—(१) विश्वास दूर करना, मान न रहने देना। मैंने उनकी जड़ें ढीली कर दी हैं अब वह इनकी कुछ न मानेगा। (२) स्थायित्व नष्ट करना।

जनम गँवाना—जीवन का समय व्यर्थ नष्ट करना। हमने तो बेकार बैठे बैठे जनम गँवा दिया कुछ भी तो न किया जो काम आता।

जनम (घुट्टी) घूँटी में पड़ना—बहुत ही आदत होना, आदी या अभ्यस्त भी ऐसा कि पीछा न छूट सके, बचपन से ही आदत होना। झूठ तो इनकी जनम घूँटी में पड़ा है, कोशिश करने पर भी सत्य नहीं बोल सकते।

जनम डुबोना—जिन्दगी बरबाद करना। क्यों पाप में पड़ कर जनम डुबोते हो।

जनम जनम—सर्वदा, हमेशा। जनम जनम मुनि जतन कराहीं अंत राम कहि आवत नाहीं।

जनम बिगड़ना—धर्म नष्ट होना। शराब पीने से जनम बिगड़ता है।

जनम में थूकना—घृणा पूर्वक धिक्कारना। बुरा काम करोगे तो सब तुम्हारे जनम में थूकेंगे।

जनम हारना—(१) व्यर्थ जीवन खोना। (२) दूसरे के वश में या दास होकर रहना। हमने तो उनके हाथों जनम हार दिया वे चाहे जो कहें करेंगे ही।

जब जब—जिस जिस समय, जब कभी। जब जब मैंने कहा उसने विरोध ही किया।

जब तब—कभी कभी, मौके बे मौके। जब तब वे यहाँ आ जाते हैं, रोज नहीं।

जब देखो तब—हमेशा, हर समय। जब देखो तब तुम यहीं खड़े रहते हो।

जब होता है तब—प्रायः बराबर। जब होता है तब तुम मार देते हो।

जबड़ा फाड़ना—मुँह खोलना या

फाड़ना, जँभाई आना, असभ्यता से जबड़ा फाड़ते हो मुँह पर हाथ रख लिया करो ।

ज़बान उलटना—(१) मुँह से शब्द निकलना । पाँच बरस का हो गया ज़बान ही नहीं उलटती । (२) कह कर मुकर जाना या बदल जाना । तुम्हारा क्या यकीन तुम तो ज़बान उलट जाते हो ।

ज़बान काट कर देना—(१) वायदा या प्रतिज्ञा करना । मैंने ज़बान काट कर दे दी है मैं अब आवश्य करूँगा । (२) कह तो दिया और क्या ज़बान काट कर दे दूँ ?

ज़बान काटना—अफ़सोस या पछतावा होना । बात ग़लती से कह गया अब ज़बान काटूँ तो झूठा बनूँ ।

ज़बान के नीचे ज़बान रखना या होना—कह कर मुकर जाना या बदल जाना । तुम ज़बान के नीचे ज़बान रखते हो, पहिले कुछ कहते थे अब कुछ कहते हो ।

ज़बान को मुँह में रखना—(१) चुप होना । (२) वेमौके बात न कहना, ज़बान को वश में रखना । ज़बान को मुँह में रखो यह बात अभी नहीं कहनी चाहिये ।

ज़बान खींचना—अनुचित या धृष्टता पूर्ण बातों के लिये कठोर दण्ड देना । गाली दी तो ज़बान खींच लूँगा ।

ज़बान खुलना—मुँह से शब्द निकलना । ज़बान खुले तो कुछ कहूँ ।

ज़बान खोलना—बोलना, मुँह से शब्द या बात निकालना ।

ज़बान घिसना या घिस जाना—कहते कहते थक जाना । ज़बान अपनी गई घिस खुदा खुदा करते, हैं दोनों हाथ मेरे थक गये दुआ करते ।

ज़बान चलना—(१) खाते ही रहना । (२) मुँह से अनुचित शब्द कहना । (३) जल्दी जल्दी कहना । तुम्हारी ज़बान चलती ही रहती है एक मिनट को भी तो बंद नहीं होती ।

ज़बान चलाना— (१) बोलना, बहुत जल्दी जल्दी बोलना । (२) अनुचित शब्द कहना । क्यों ज़बान चलाते हो चुप रहो ।

ज़बान चाटना—दे० ओंठ चाटना ।

ज़बान टूटना—(१) (बालक का) साफ़ बोलना शुरू करना । (२) ज़बान दुखना, ज़बान में तकलीफ़ होना (व्यंग्य) बोलने में क्या ज़बान टूटती है ?

ज़बान डालना—(१) प्रश्न करना, पूछना । ज़बान डालो तो उत्तर दूँ । (२) माँगना, याचना । मैं

उस नीच के आगे ज़बान न डालूँगा ।

ज़बान थामना या पकड़ना—(१) बोलने न देना, कहने से रोकना । ज़बान क्यों पकड़ते हो बात करने दो । (२) अशुद्ध उच्चारण या कथित शब्द पर तर्क करना । जब बात न काट सके तो जबान ही पकड़ने लगे, भला जल्दी में किससे ग़लती नहीं होती ?

ज़बान दबाकर कहना, दबी ज़बान से बोलना, कहना—(१) धीरे से या चुपके से कहना । ज़बान दबा कर क्यों कहते हो ज़ोर से कहो जो मैं भी तो सुन लूँ । (२) डरते, सहमते हुए कहना । बेचारे ने बड़ी दबी ज़बान से छुट्टी माँगी परन्तु उस निर्दय ने नहीं दी ।

ज़बान देना या हारना—वायदा, प्रतिज्ञा करना । हम ज़बान देकर नहीं टल सकते ।

ज़बान पर आना—कहने की इच्छा होना, मुँह से निकलना । मेरी ज़बान पर आयेगा वही कहूँगा, तुम्हें इससे क्या ।

ज़बान पर रखना, रहना—(१) चखना, स्वाद लेना । ज़बान पर रखो तो ज्ञात हो कि नमक कितना है । (२) याद रहना, कहते रहना । उसका नाम तुम्हारी ज़बान पर ही रहता है ।

ज़बान पर लाना—कहना, बोलना । मैं इस बात को ज़बान पर भी न लाऊँगा ।

ज़बान पर होना, धरा होना—(१) एक दम याद होना या स्मरण रहना । गाली तो उसकी ज़बान पर धरी रहती है । (२) प्रसिद्ध होना । पं० जवाहर लाल का नाम हर एक की ज़बान पर है ।

ज़बान बंद करना—(१) बहस या विवाद में हराना । उसने बड़े बड़े पंडितों की ज़बान बंद करदी । (२) बोलने न देना या बोलने से रोकना । (३) चुप होना । (४) इजहार लिखना । (५) बोलने से रोकना ।

ज़बान बंद होना—(१) बहस में हार जाना । (२) बोला न जाना, मुँह से शब्द न निकलना । (३) बोलने का अधिकार या आज्ञा न होना । तुम्हारी क्या ज़बान बंद थी तुम्हीं कह देते ?

ज़बान बदलना, बदल जाना—कह कर मुकर जाना । लिखा लो नहीं जबान बदल जावेगा ।

ज़बान पर होना—खूब याद या कंठस्थ होना ।

ज़बान बिगड़ना—(१) बुरे शब्द

कहने का अभ्यास होना। (२) ज़बान चटोरी होना। (३) खाने की कोई चीज़ अच्छी न लगना। बुखार में जबान बिगड़ जाती है, मुनक्का तक कड़वी लगती है।

ज़बान में (पर) काँटे होना—बहुत प्यास से जीभ सूखना। जबान में काँटे पड़े हैं पानी पिलाओ।

ज़बान में पड़ना—दे० ज़बान पर होना।

जबान में लगाम देना—गाली देने से रोकना या सोच समझ कर बोलने को कहना।

ज़बान में लगाम न होना—सोच समझ कर न बोलना, भला बुरा कह ही देना। उनकी ज़बान में लगाम नहीं हैं, वे तो उचित हो चाहे अनुचित बस कह ही डालते हैं।

ज़बान रोकना—(१) चुपकरना। वह कुछ विरोध में जरूर कहता, परन्तु मैंने ज़बान रोकदी। (२) ज़बान पकड़ना।

ज़बान लड़ाना—(१) बात चीत करना। (२) सवाल जवाब करना। (३) कोई काम करने के लिये कहना। (४) कुछ माँगना। तुम्हारा सब ज़बान लड़ाना फिजूल है।

ज़बान सँभालना—सोच समझकर बोलना, अनुचित न कहना। ज़बान सँभाल कर बोलो तुम बच्चे नहीं हो।

ज़बान सीना—दे० मुँह सीना।

ज़बान से निकलना—(१) न चाहते हुए कह देना। जब वह बात जबान से निकलगई तो मुझे पछतावा आया। (२) उच्चारण होना।

ज़बान से निकालना—(१) कहना। (२) उच्चारण करना, बोलना। उससे 'त्र' ज़बान से नहीं निकाला जाता।

ज़बान हिलाना—(१) जरा कह देना, मुँह से शब्द निकालना। तुम्हारे ज़बान हिलाने की देर है, काम तो कहते ही होगा। (२) बोलने की कोशिश करना। ये बच्चा ज़बान तो हिलाता है, बोल नहीं पाता।

ज़बानी जमा खर्च करना—बातें ही बातें करना, केवल कहना—करना कुछ नहीं। तुम केवल ज़बानी जमा खर्च करते हो कभी करके भी दिखलाया है?

जमना (दृष्टि)—नज़र का बहुत देर तक एक जगह ठहरना। बुढ़ापे में दृष्टि जमती नहीं।

जमना बात (मन में)—दिलमें बैठना, बात का मन पर पूरा प्रभाव पड़ना। यह बात मेरे मन में

जम गई है, अब मैं ऐसे ही करूँगा।

जमना रंग—असर हो जाना। तुम्हारे संगीत का खूब रंग जमा।

जमा कुल या कुल जमा, में—(१) सब मिलाकर, सब। वह कुल जमा पाँच रुपये लेकर घर से चले हैं। (२) अमानत के तौर पर रखा हो। उनका सौ रुपया बंक में जमा है।

जमाना (रंग) असर डालना, मुग्ध करना। एक बार तो रंग जमा दूँगा, कोई भी जगह से हिल जाय तो मेरा जिम्मा।

ज़माना देखना—खूब अनुभव या तजरबा होना, खूब होशियारी जानना। हमें क्या चलाते हो हमने जमाना देखा है।

ज़माने भरके होना—बहुत भारी, बहुत अधिक। वह जमाने भर का बदमाश है उससे क्या जीतोगे।

ज़माना जानता होना—दुनिया जानती होना, सब द्वारा जाना होना। उन्हें जमाना जानता है किसी से भी पूछ लो वही बता देगा।

ज़माना है—(१) समय है। (२) दुनिया है। अब क्या ज़माना है बाप बेटे में झगड़ा होता है।

जमा मारना—बेईमानी से किसी का धन या माल ले लेना या हज़म कर जाना। कहीं से जमा मार लाया होगा वरना दो लाख रुपया चार साल में कैसे कमा सकता है?

ज़मीन आसमान एक करना—दे० आसमान ज़मीन एक करना।

ज़मीन आसमान का फ़रक होना—दे० आसमान जमीन का अंतर।

ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाना—(१) बहुत शेखी बघारना, बहुत गप्पें लड़ाना। बातों में तो वह जमीन आसमान के कुलाबे मिला देता है, करने के नाम नानी मर जाती है। (२) बहुत परिश्रम या उद्योग करना। खूनी का पता लगाने में उसने जमीन आसमान के कुलाबे मिला दिये।

ज़मीन उठना—(१) खेत अन्न पैदा करने के लिये किराये पर देना। इस बार जमीन नहीं उठाई खुद ही कुछ बो देंगे। (२) खेत जोतने बोने लायक होना।

ज़मीन का पैबंद होना—खाक में मिल जाना, मर जाना। कभी हम भी जमीन का पैबंद होंगे, सदा कोई नहीं रहा।

ज़मीन का पैरों तले से खिसकना—भौचक्का रह जाना,

होश हवास जाते रहना। वारंट का नाम सुनते ही उसके पैरों तले की ज़मीन खिसक गई।

ज़मीन चूमने लगना—(१) नीचा देखना। बहुत मुकदमे बाज़ बनता था, मुझसे सामना पड़ते ही अब वह ज़मीन चूमने लगा है। (२) पटक खाना। क्या पहलवान हो एक लड़के से कुश्ती लड़ने में ही ज़मीन चूमने लगे। (३) औंधे गिरना। जरा से धक्के से वह जमीन चूमने लगा।

ज़मीन दिखाना—(१) नीचा दिखाना, मात देना। (२) कुश्ती में उल्टी पटक देना। इस पहलवान ने सब को ज़मीन दिखाई।

ज़मीन देखना—(१) नीचा देखना, हारना। तुम मुझे क्या ज़मीन दिखाओगे, मैंने अच्छे अच्छों के होश उड़ा दिये हैं। (२) पटक खाना। (३) औंधे गिरना।

ज़मीन पकड़ना—(१) कुश्ती में नीचे आकर ऊपर के पहलवान से उठाया न जाना। उसने ऐसी जमीन पकड़ी कि चित्त ही न किया गया। (२) जम कर बैठना। तुम तो चलने का नाम भी नहीं लेते, ज़मीन पकड़ लेते हो।

ज़मीन पर आ रहना—(१) किये पर बहुत पछताना। आखिर वह ज़मीन पर आरहे पहिले तो आसमान पर चढ़े रहते थे। (२) मुँह के बल गिरना।

ज़मीन पर चढ़ना—(१) घोड़ा तेज़ दौड़ाने का अभ्यास होना। (२) किसी काम का अभ्यासी होना।

ज़मीन पर पैर न रखना या पैर न पड़ना—बहुत इतराना या अभिमान करना, अकड़ कर फिरना। जब से एम० ए० पास हुआ है ज़मीन पर पैर ही नहीं रखता।

ज़मीन बाँधना—(१) कार्य की प्रणाली निश्चित करना। पहिले ज़मीन तो बाँधो फिर कहो हम फौरन करेंगे। (२) सुन्दर कल्पना करना। ज़मीन तो बड़ी अच्छी बाँधता है परन्तु शब्द जरा चुने हुये नहीं होते।

ज़मीन में समा जाना—(१) शर्म से जमीन में गड़ना, नीची नज़र ही होना। वह वेचारी पर्दा फाश होते ही ज़मीन में समाई जा रही थी।

ज़मीन से पीठ न लगना—(१) चैन न पड़ना, तड़पना। रात भर उसकी पीठ ज़मीन से नहीं लगी। (२) चित्त नहीं पाना।

जय मनाना—समृद्धि या विजय

चाहना। हम तो आपकी ही जय मनाते रहते हैं, भगवान आपको सफल करे।

ज़रदी छाना—चेहरा पीला हो जाना, खून न रहना या दुर्बलता होना। तुम्हारे चेहरे पर ज़रदी छा रही है कुछ इलाज करो।

ज़रब देना—(१) चोट लगाना पीटना। दगा देत दूतन, चुनौती चित्र गुप्तै देत, जम को जरब देत पापी लेत शिव लोक। (२) गुणा करना।

जरीब डालना—भूमि को जरीब से नापना।

जल उठना—(१) बहुत क्रोधित होना, नाराज होना। वह मेरी बात सुनते ही जल उठे और मारने को तैयार हो गये। (२) आग में लपटें निकलना।

जलकर पतंगा या खाक हो जाना या कोयला हो जाना—क्रोध से पागल हो जाना। तुम तो ज़रा ज़रा सी बातों पर जल भुन कर खाक हो जाते हो।

जलती आग बुझाना या जलती आग में पानी डालना—(१) आफ़त टालना। (२) झगड़ा मिटाना। उसने आकर जलती आग में पानी डाला वरना यहाँ खून हो जाते।

जलती आग में कूदना—विपत्ति में पड़ना। क्यों तुम जलती आग में कूदते हो ये दोनों तो एक हो जावेंगे तुम बुरे बनोगे।

जलती आग में घी डालना—लड़ाई या क्रोध और भड़काना। तुम चिढ़ाने की बातें कह कर और जलती आग में घी डालते हो!

जल थल एक होना—(१) खूब वर्षा होना। आज तो वर्षा ने जल थल एक कर दिया है। (२) पानी ही पानी नजर आना। (३) बाढ़ आना।

जल मरना—डाह, ईर्ष्या, द्वेष आदि से बहुत कुढ़ना और व्यथित होना।

जला जला कर मारना—बहुत दुख देना, सताना या तंग करना। क्यों मुझे जला जला कर मार रहे हो मैं विवश हूँ नहीं तो मजा चखा देता।

जली कटी पर आना या सुनाना—(१) खरी खरी सुनाना। (२) गाली गलौज करना। यह दिल्लगी नहीं अच्छी जली कटी पे न आ, हँसी हँसी में ही मुझको रुलायगा तू क्या? (३) द्वेष ईर्ष्या या डाह से लगती हुई बात कहना। तुम भी जली कटी पर आ गये तुम्हारा क्या बिगाड़ा था?

जली कटी या जली भुनी बात

कहना, सुनाना—दे० जली कटी पर आना या सुनाना।

जले पर नमक छिड़कना या लगाना—दे० ज़ख़्म पर नमक छिड़कना।

जले पाँव की बिल्ली—घुमक्कड़ स्त्री।

जले फफोले फोड़ना—बदला लेने के लिये दुखी को सताना, मरे को मारना। भाई तुम भी इस कंगाली में मेरे वारंट निकलवा कर जले फफोले फोड़ते हो।

जवानी उठना या उभरना—यौवन प्रारंभ होना, जवानी की उमर आना। अब तो उसे जवानी उठ रही है, निराली ही अदा है।

जवानी उतरना या ढलना—जवानी का समय समाप्त होना, उमर ढलना। हमारे कामों से तो जल्दी ही जवानी उतरने लगी।

जवानी चढ़ना—(१) जवानी उठना। (२) मद पर आना, मद मत्त होना। आज कल तो तुम्हें जवानी चढ़ी है छाती निकाल कर चलते हो।

जवाब तलब करना—(किसी घटना का) कारण पूछना, कैफ़ियत मांगना। दो दिन की देर होते ही उन्होंने जवाब तलब किया।

जवाल में पड़ना, फंसना—आफ़त सिर पर लेना। इस को रुपया देकर जवाल में फँस गये, रोज कचहरी जाना पड़ता है।

जवाल में फाँसना, डालना—आफ़त में फँसाना।

ज़हमत उठाना—मुसीबत सहना, दुख भोगना। माँ बच्चे के लिये बड़ी जहमतें उठाती है।

जहन्नुम में जाय—चूल्हे में जाय, हमें कोई संबन्ध नहीं, कुछ भी हो। जब वह मानता नहीं तो जहन्नुम में जाय।

ज़हर उगलना—(१) जली कटी कहना। तुम्हारा क्या छीन लिया है जो ज़हर उगलते हो। (२) चुभती या मर्म भेदी बात कहना जिससे सुनने वाला दुखी हो।

ज़हर करना या कर देना—(१) भोजन कड़वा कर देना। (२) खाने के समय झगड़ा आदि करके जी जला देना। खायँ क्या तुमने तो खाना जहर कर दिया शान्ति से खाने देतीं तो अच्छा लगता (३) असह्य कर देना। मेरे लिये उसने हर एक चीज़ जहर कर दी है।

ज़हर का घूँट पीना—गुस्सा जाहिर न होने देना, मन मसोस कर रह जाना। मैं सिर्फ तुम्हारी वजह से ज़हर का घूँट पीकर रह गया वरना उसका मुँह तोड़ देता।

ज़हर का बुझाया हुआ—बहुत

अनिष्ट कारक या उपद्रवी, बहुत खतरनाक। वह अगर आ गया तो खाक कर देगा क्योंकि वह तो ज़हर का बुझाया हुआ है, वह इन बातों का जानी दुश्मन है।

ज़हर की गाँठ—दे० विष की गाँठ।

ज़हर खाना (किसी पर)—किसी बात या आदमी के कारण ग्लानि, दुख, ईर्ष्या, लज्जा आदि से आत्महत्या पर उतारू होना। तुम्हारे इस नीच काम पर तो उन्हें ज़हर खा लेना चाहिये।

ज़हर देना—ज़हरीली, मार देने वाली वस्तु खिलाना या पिलाना। खर्चा नहीं चला सकते तो घर वालों को जहर दे दो, क्यों ?

ज़हर मिलाना—बात को अप्रिय कर देना, अपनी तरफ़ से बुरी बात जोड़ देना। मैं सीधी बात कहता, वह उसमें जहर मिलाकर जा लगाता, आखिर वे लड़ पड़े।

ज़हर में बुझा हुआ—(१) दे० जहर का बुझाया हुआ। (२) काम या बात को अप्रिय बनाना। आप जो बात कहते हैं जहर में बुझी हुई कहते हैं।

ज़हर लगना—बुरा या अप्रिय लगना। मुझे आज कल सब कुछ जहर लगता है।

जहाँ का तहाँ रह जाना—(१) पड़ा होना, पहिले वाले स्थान पर ही रहना (२) दब जाना, आगे न बढ़ना। लड़का बीमारी के कारण जहाँ का तहाँ रह गया अब क्या लम्बा होगा। (३) कुछ कार्रवाई न होना। मामला जहाँ का तहाँ रह गया है, अब गर्मियों में कुछ करेंगे।

जहाँ तहाँ होना—(१) कहीं कहीं। जहाँ तहाँ यह बूटी मिल पायेगी। (२) सब जगह। रहा एक दिन अवधिकर अति आरत पुरलोग, जहँ तहँ सोचहिं नारिनर कृस तनु राम वियोग। (३) इधर उधर। जहँ तहँ गईं सकल तब सीता कर मन सोच, मास दिवस बीते मोहि सीता कर मन सोच।

जहाज का कौआ या पक्षी होना—(१) दूर फिर कर एक ही आश्रय। सीता पति रघुनाथ जू तुम लग मेरी दौर, जैसे काग जहाज़ को सूझत और न ठौर। (२) बहुत बड़ा धूर्त।

जहूर में आना—प्रकट होना। अब जरा जहूर में आये हैं अब हम देखेंगे।

जागता हुआ—(१) प्रत्यक्ष, साक्षात, सामने। उसकी कलाएँ जागती हुई हैं। (२) चमकती हुई, उज्वल। उसका दिमाग़ बड़ा

जागता हुआ है, फौरन समझ जाता है।

जाता क्या है—(१) कुछ खर्च नहीं होता, कुछ नुकसान नहीं। तुम्हारा जाता ही क्या है नुकसान तो हमारा होगा।

जान आना—(१) जी ठिकाने होना। गर्मी से बेहोश था अब ज़रा शर्बत पीकर जान आई है। (२) शोभा बढ़ना, महत्व बढ़ जाना। तुम्हारे शब्दों से इस लेख में जान आ गई है। रंग फेर देने से तसवीर में जान आगई है।

जान कर अनजान बनना—जानते हुए किसी को चिढ़ाने, धोखा देने या अपना मतलब निकालने के लिये मूर्ख सा बनना।

जान का गाहक या जान का लागू बनना या होना—(१) बहुत तंग करना, पीछा न छोड़ना। तुम तो मेरी जान के गाहक बन गये हो शांति से नहीं बैठने देते, कोई न कोई झंझट छेड़ ही देते हो। (२) प्राण लेने की इच्छा होना, भारी शत्रु। वह तो मेरी जान का लागू बन गया अकेला मिलते ही मार डालेगा।

जान का रोग—(१) दुखदायी रोग, मरने पर ही पीछा छोड़ने वाला। तपेदिक जान का रोग है जान लेकर ही जाता है। (२) आफ़त होना, बहुत तंग करने वाला। तुम तो मेरी जान के रोग हो चैन नहीं लेने देते।

जान के लाले पड़ना—जी पर आ बनना, जीना दुश्वार होना। हमें अपनी जान के लाले पड़े हैं उनकी रक्षा क्या करें।

जान को जान न समझना—(१) प्राण जाने की परवा न करना। उसने जान को जान न समझा और मुझे दुश्मनों के बीच से ले ही आया। (२) बहुत परिश्रम करना। जान को जान न समझ कर रात दिन पिला ही रहता है, न खाने की परवा न पीने की, उसे तो काम ही काम सूझता है।

जान को जान न समझना (दूसरे की)—(१) बहुत निष्ठुर व्यवहार करना (२) मार डालने, बहुत दुख देने में कुछ न सोचना। वह जान को जान नहीं समझता यों ही काट डालता है।

जान को रोना (किसी की)—दुखी होकर बुरी बातें कहना, स्मरण करना। दुखदाता या दुख को याद करना। तुमने उसकी जीविका ली, वह अब तक तुम्हारी जान को रोता है।

जान खाना—(१) बार बार

कहना। क्यों जान खाते हो कह तो दिया कल ला दूँगा। (२) बार बार घेर कर दिक करना, तंग करना। भाई क्यों जान खाते हो एक काम कर लूँ जभी तो दूसरा करूँगा।

जान खोना—जान कर मरना, प्राण देना। उसने इस लड़की के पीछे जान खोदी।

जान चुराना—दे० जी चुराना।

जान छुड़ाना—(१) प्राण बचाना। जब काम करने का वक्त आता है तो लोग जान छुड़ाकर भागते हैं। (२) छुटकारा पाना, अप्रिय या दुखदायक वस्तु को दूर करना। इसे कुछ ले देकर जान छुड़ाओ।

जान छूटना—झंझट से अलग होना, छुटकारा मिलना। हमारी तो जान छूटी अब वहाँ रोज रोज न जाना पड़ेगा।

जान जाना—मरना, प्राण निकलना। सैकड़ों जानें जायँगी तब इस युद्ध का अंत होगा।

जान जोखों का काम होना—प्राण जाने का डर, बहुत कष्टप्रद। कुए में कूदना जान जोखों का काम हैं।

जान दूभर होना—(१) कठिन या असंभव होना। वहाँ जान बचना दूभर होता है। (२) जिन्दगी बोझ सी दिखाई देना, जीने की इच्छा न रहना। हमें अपनी जान दूभर है हम अब इस संसार में रहकर क्या करें? (३) जान बचना कठिन होना। हमें अपनी जान दूभर है तुम्हारा क्या इन्तजाम कर सकते हैं।

जान पर आ बनना या जान की नौबत आना—(१) प्राण जाने का भय होना। जब जान पर आ बनी तो मैंने भी पिस्तौल चलाई। (२) घोर आपत्ति आना। कल ही रुपये जमा करने हैं अब जान पर आ बनी है तब माँगने आया हूँ। (३) व्यग्रता या नाक में दम होना।

जान पर खेलना—प्राणों को संकट में डालना, जान जाने की परवा न करना। जान पर खेल कर वह लड़ाई के बीच में पहुँचा।

जान बचाना—(१) पीछा छुड़ाना। तुम जान बचाते फिरते हो कि तुम से कोई काम करने को न कह दे? (२) प्राण रक्षा करना। तलवार ने मेरी जान बचाई।

जान बूझ कर करना—भूल से नहीं बल्कि संकल्प करके। तुमने जान बूझ कर इस काम को बिगाड़ा है।

जान भारी होना—जीने की इच्छा न होना, जिन्दगी बोझ मालूम होना।

जान मार कर काम करना—बहुत परिश्रम करना। वह जान मार कर काम करता था यह यौंही बेगार टालता है।

जान मारना—(१) बहुत सख्त मेहनत कराना। उनके यहाँ कौन काम करने जाय ? दिन भर जान मार डालते हैं। (२) बहुत सिखाना, बार बार कहना पड़ना। इसके साथ जान मारो जब कहीं यह समझता है। (३) किसी को मार डालना।

जान में जान आना—चित्त स्थिर होना, कठिनाई का समाप्त होना। व्यग्रता दूर होना। डाकू पीछे पीछे भाग रहे थे जब मैं गाँव में पहुँच गया तब जान में जान आई।

जान सूखना—(१) होश हवास उड़ जाना। शेर को देखते ही मेरी तो जान सूख गई। (२) बहुत कष्ट होना। क्यों बेचारी को घर में बंद करके जान सुखा रहे हो। (३) बुरा लगना, खलना। किसी को कुछ देते देख तुम्हारी क्यों जान सूखती है।

जान से जाना—प्राण खोना, मरना। तुम अगर बीच में पड़ोगे तो जान से जाओगे मेरा क्या बिगड़ेगा।

जान से हाथ धोना या धो बैठना—प्राण गँवाना, मर जाना। तुम अगर झगड़े में पड़ोगे तो जान से हाथ धो बैठोगे।

जान हलाकान करना—दिक़, हैरान या तंग करना। क्यों बेचारे न्योले को बाँध कर उसकी जान हलाकान कर रहे हो।

जान हलाकान होना—तंग दिक़ या हैरान होना।

जान होठों पर होना—(१) प्राण कंठ में आना, प्राण निकलने पर होना। प्यास के मारे मेरी जान होठों पर है, पानी लाओ। (२) बहुत पीड़ा होना।

जा पड़ना—कहीं एक दम अचानक पहुँचना।

जामे में फूला न समाना—बहुत खुश होना। वह तो यह सुनकर जामें में फूला न समाएगा।

जामे से बाहर होना—(१) अत्यंत क्रोधित करना, आपे से बाहर होना। क्यों जामे से बाहर हुए जाते हो तुम्हीं बुद्धिमान थे तो खुद कर लेते। (१) दे० जामे में फूला न समाना।

जाल डालना या फेंकना—मछलियाँ पकड़ने या कोई चीज़ निकालने के लिये जल में जाल छोड़ना। जाल डाला ही था कि भारी हुआ, निकाल कर देखा तो एक लाश थी।

जाल फैलाना या बिछाना—(१) चिड़ियों आदि के लिये जाल जमीन पर लगाना। (२) किसी किसी को फँसाने के लिये युक्ति या आडम्बर करना। खूब जाल बिछा रखा है दिन भर में एक आध तो आही फँसता है बस हो जाती है मज़दूरी। (३) बहुत होना। भारत में बीमा कम्पनियों ने जाल बिछा रखा है।

जाल मारना—धोखा देना। तुम खूब जाल मारते हो।

जिगर का खून पीना—(१) दुख देना। क्यों जिगर का खून पी रहे हो। (२) दुख सहना। मन मसोस मसोस कर रहना, हर दम खून जिगर का पीना।

जिद चढ़ना, पकड़ना, पर आना हठ करना, अड़ना। क्यों जिद पकड़ते हो मैं न दूँगा।

जिन चढ़ना—गुस्सा या ज़िद चढ़ना। जब जिन चढ़ता है तो वह किसी की नहीं मानता।

ज़िन्दगी के दिन पूरे करना, भरना—(१) मरने वाला होना। हालत खराब है, जिन्दगी के दिन भर रहे हैं। (२) दुख के दिन काटना। क्या खुश हैं? जिन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं।

जिम्मे करना—भार सौंपना।

जिम्मे निकलना, होना—नाम ऋण होना। ५) तुम्हारे जिम्मे निकलते हैं।

जिम्मे डालना—कर्ज ठहराना या देना।

जिरह काढ़ना या निकालना—(१) पूछ ताछ करना, खोद खोद कर पूछना। (२) तर्क वितर्क करना।

ज़िल्लत उठाना, या पाना—(१) बेइज्जत होना। तुम्हारे लिये मैंने कितनी जिल्लत उठाई, पर तुम पर एहसान नहीं। (२) तुच्छ होना।

ज़िल्लत देना—(१) हतक करना, शर्मिन्दा करना। (२) अपमानित करना।

ज़िहन खुलना—बुद्धि का विकास होना। जिहन खुल गया है अब जल्दी समझ जाता है।

ज़िहन लड़ना—अक्ल पहुँचना। जिसका जिहन लड़ गया उसी ने सवाल निकाल लिया।

ज़िहन लड़ाना—बुद्धि दौड़ाना। क्यों जिहन लड़ाते हो कुछ समझ में न आवेगा।

जिहाद का झंडा—वह झंडा जो मुसलमान क़ाफिरों से लड़ने के समय लेकर चलते थे।

जिहाद का झगड़ा करना—क़ाफ़िरों से लड़ना। मुहम्मद गौरी

ने जिहाद का झण्डा करके सोमनाथ को लूटा।

जी अच्छा होना—नीरोग होना, चित्त स्वस्थ होना। दो तीन दिन से बुखार था आज जी अच्छा है।

जी आना (किसी पर)—प्रेम या आसक्त होना, प्राप्ति की इच्छा होना। जिस पर जी आवे ले जाओ। आगया जी किसी पे जी ही तो है, लग गई आँख आदमी ही तो है।

जी उकताना—मन न लगना, उचाट होना। मेरा जी उकता गया बैठे बैठे।

जी उचटना—मन हटना। अब तो इस काम से जी उचट गया है।

जी उड़ जाना—घबराहट या चंचलता होना, धैर्य न रहना। दवाई की गर्मी से जी उड़ा जा रहा है।

जी उदास होना—चित्त चिन्ता मय या खिन्न होना।

जी उलट जाना—(१) मन बदल जाना। (२) मन वश में न रहना, विक्षिप्त होना, होश हवास न रहना। उसका जी उलट गया है अब वहघर वालों से भी नहीं बोलता।

जी ऊपर तले होना—उबकाई आना, कै आने को होना। मेरा जी ऊपर तले हो रहा है मोरी पर ले चलो।

जी करना—(१) इच्छा होना। अब तो जी करता है यहाँ से चल दें। (२) हिम्मत, साहस, हौसला करना।

जी का बुखार निकालना—दिल के गुब्बार निकालना, कुछ कह कर मन की जलन मिटाना। तुम भी गालियाँ देकर, पीटकर अपने जी का बुखार निकाल लो।

जी का बोझ हलका होना—चिन्ता मिटना, खटका दूर होना आज परीक्षा हो गई अब जी का बोझ हलका हो गया।

जी की अमान माँगना—रक्षा की प्रतिज्ञा कराना। रुपया नहीं मैं तो जी का अमान माँगती हूँ।

जी की आलगना—पीछा छूटना या प्राण बचना कठिन होना। अब जी की आलगी तब मैं यह करने पर उतारू हुआ हूँ।

जी की जी में रहना—इच्छा पूरी न होना, सोची व चाही बात न कर पाना या न होना। हमारे तो जी की जी में ही रह गई आपकी कुछ भी सेवा न कर सके।

जी की निकालना—(१) मन की उमङ्ग पूरी करना, हविस पूरी करना। (२) हृदय के उद्गार निकालना। तुम भी जी की

निकाल लो फिर कहोगे कि लिहाज की थी।

जी की पड़ना—प्राण बचाना या पीछा छुड़ाना कठिन होना। तुम अपनी गाम्रो मोहि जी की परी है आय।

जी को जी समझना—दूसरे जीव के कष्ट को कष्ट समझना, क्लेश न पहुँचाना, दया करना। तुम दूसरे के जी को भी जी समझो तो इतना न मारो।

जी को मारना—(१) मन की इच्छाओं को रोकना। (२) संतोष करना। जिसने जी को मार लिया वह सोना हो गया।

जी खट्टा करना—दुर्भाव, बैराग, घृणा आदि उत्पन्न करना। तुम्हारे इन नीच कामों ने हमारा जी खट्टा कर दिया, अब हम दोस्त नहीं रह सकते।

जी खट्टा होना—मन फिर जाना, घृणा, वैराग आदि होना। उस एक बात से मेरा जी खट्टा हो गया।

जी को न लगना—(१) चित्त में अनुभव न होना, हृदय में संवेदना या सहानुभूति न होना। दूसरों की पीड़ा किसी के जी को नहीं लगती। (२) प्यारा लगना भाना। तुम्हारे जी को ऐसी चीज़ नहीं लगती।

जी खपाना—(१) तन्मय हो जाना, जी तोड़ कर किसी काम में लगना। हमने तो आपको प्रसन्न करने में जी खपा डाला पर आप खुश न हुए। (२) प्राण देना जान लड़ा देना। वह जो काम उठाता है उसी में जी खपा डालता है।

जी खुलना—हिचक या संकोच न रहना। यह कुछ शर्माती है जिनसे जी खुला हुआ है उनसे तो खूब बोलती है।

जी खोल कर कहना—(१) जितनी इच्छा हो, मन माना। जी खोलकर बुरा भला कहो, मुझे परवा नहीं। (२) बेधड़क, बिना संकोच या हिचक के। जो कुछ तुम्हें कहना है जी खोलकर कहो।

जी गँवाना—प्राण देना, जान खोना।

जी गिरा जाना—जी बैठा जाना, तबियत सुस्त या शिथिल होना। आज तो कुछ जी गिरा जा रहा है।

जी घबराना—(१) चित्त व्याकुल या व्यग्र होना। मुझे इतना काम करना पड़ेगा यह देख कर जी घबराता है। (२) मन न लगना, जी ऊबना। मेरा जी घबरा रहा है मुझसे नहीं लिखा जाता। (३) घृणा होना। तुम्हारी तो शक्ल देख कर जी घबराता है।

जी चलना—(१) इच्छा होना, चाहना। (२) चित्त मोहित होना जी आना। — (१) दिलेर, शूर। (२) दानी, उदार। (३) रसिक।

जी चाहना— अभिलाषा होना, इच्छा होना।

जी चाहे—यदि मन में आवे।

जी चुराना या छुपाना—(१) मोहित कर लेना, हृदय लेना। इन्दिरा ने मेरा जी चुरा लिया है। (२) काम से भागना, न करने की इच्छा करना। यह काम से जी चुराता है। छीन लेना मोह लेना। कभी वह लूटते हैं आदमी के दीन ओ ईमाँ को, कभी दिल छीन लेते हैं कभी जी छीन लेते हैं।

जी छोटा करना—(१) दिल उदास, निराश या निरुत्साह करना। (२) व्यय में संकोच या कंजूसी करना।

जी छोड़ना—(१) प्राण त्यागना। (२) हिम्मत हारना। कार्य में कठिनता आवे तो जी मत छोड़ो, सफलता अवश्य मिलेगी।

जी छोड़ कर भागना—(१) एक दम भागना। (२) हिम्मत हार कर काम से चले जाना। हाथ से मशीन चलाने बीस आदमी आये सब जी छोड़ कर भाग गये।

जी जलना—(१) ईर्ष्या होना। (२) कुढ़ना, क्रोध आना, मन में संताप होना। मुझे अपनी ये करतूतें मत सुनाओ मेरा जी जलता है।

जी जलाना—(२) ईर्ष्या उत्पन्न करना। (२) रंज पहुँचाना, दुखी करना। (३) कुढ़ाना या चिढ़ाना।

जी जानता है—कहा नहीं जा सकता, हृदय ही अनुभव कर सकता है। उसने इतनी मार खाई कि जी ही जानता होगा।

जी जान लड़ाना—(१) बहुत परिश्रम से करना। (२) दत्त चित्त होना, मन लगाना।

जी जान से चाहना—हृदय से चाहना। मैं जी जान से तुम्हारी सफलता चाहता हूँ।

जी जान से लगना—(१) सारा ध्यान लगा देना, तत्पर होकर करना। उसने इस काम में जी जान लगा कर मेहनत की है। (२) एक ही चिंता होना। उसे जी जान से लगी है कि मकान बन जाय।

जी टूट जाना—(१) निराशा या उत्साह भंग होना पस्त हिम्मत होना। उनकी बातों से हमारा जी टूट गया है अब कुछ न करेंगे (२) मन फीका हो जाना।

जी टँगा रहना, होना—चिंता या खटका लगा रहना। दो महीने

से पत्र भी नहीं आया जी टँगा हुआ है।

जी ठंडा होना—(१) संतुष्ट या शांत होना। उन्हें क्रोध नहीं उनका जी सदा ठण्डा है। (२) मनोभिलाष पूरी होना। वह यहाँ से निकाल दिया गया अब तो जी ठण्डा हो गया?

जी ठुकना—(१) मन को संतोष होना। (२) विश्वास होना। (३) हिम्मत बँधना। जी नहीं ठुकता कि मैं इसे कर सकूँगा।

जी डालना—(१) जीवित करना। (२) मरने से बचाना। वैद्य जी ने ही जी डाला है वरना मैं तो चल ही दिया था। (३) प्रेम करना, हृदय मिलाना। जी डाल दिया उनमें अब तुम्हें क्या दें?

जी डूबना—(१) बेहोशी होना, विह्वल होना। (२) घबराहट या बेचैनी होना।

जी ढहा जाना—दे० जी बैठा जाना।

जी तपना—दे० जी जलना। सुनि गज जूह अधिक जिउ तपा, सिंह जाति कहुँ रह नहिं छपा।

जी तरसना—(१) पाने के लिये अधीर या व्याकुल होना। तुम्हारे दर्शनों को जी तरसता है। (२) इच्छा पूरी न होना। जब तक बंगाल में रहे रोटियों को जी तरसता ही रहा।

जी तोड़ कर काम करना—दे० जान मार कर काम करना।

जी दहलना—आशंका या भय से जी काँपना, ठिकाने न रहना।

जी दान देना—प्राण रक्षा करना, प्राण बचाना।

जी दार होना—साहसी या बहादुर होना।

जी दुखाना—चित्त को कष्ट देना। व्यर्थ किसी का जी दुखाने से क्या लाभ?

जी देना—(१) प्राण खो देना। (२) दूसरे की प्रसन्नता या रक्षा के लिये प्राण तक प्रस्तुत करना। (३) बहुत प्रेम करना। वह तुम पर जी देता है तुम भागे फिरते हो।

जी दौड़ना—लालसा होना, मन चलना।

जी धँसा जाना—दे० जी बैठा जाना।

जी धक धक करना } भय आदि
जी धक धक होना } से कलेजा उछलना, जी धड़कना।

जी धड़कना— (१) हिम्मत न पड़ना। चार पैसे निकालते जी धड़कता है। (२) डर के मारे घबराहट होना। मेरा जी अब

तक धड़क रहा है कहीं यहाँ भी साँप न आजाय ?

जी निकलना—(१) प्राण छूटना। (२) भय से चित्त व्याकुल होना, प्राण सूखना। अब तो उधर जाते जी निकलता है। (३) प्राणांत कष्ट होना। तुम्हारा रुपया तो नहीं जाता, फिर क्यों जी निकलता है।

जी निढाल होना—चित्त स्थिर न रहना।

जी पकजाना—(१) कष्ट सहने के लिये कलेजा पक्का हो जाना। (२) चित्त दुखी होजाना या फिर जाना। नित्य तुम्हारी जली कटी बातें सुनते सुनते जी पक गया है।

जी पकड़ लेना—कलेजा थामना, असह्य दुख के वेग को दबाने के लिये छाती पर हाथ रखना।

जी पकड़ा जाना—माथा ठनकना, मन में खटका या संदेह होना। तार आते ही मेरा जी पकड़ा गया।

जी पड़ना—जान आना, मरे में जान आना।

जी पर आ बनना—प्राण बचाना कठिन होना।

जी पर खेलना—प्राणों को संकट में डालना, जान को आफ़त में डालना।

जी पानी करना—(१) चित्त में दया उत्पन्न करना। उसकी दुख भरी आवाज़ ने मेरा जी पानी कर दिया। (२) लोह-पानी एक करना, जान लेने देने की नौबत आना।

जी पानी होना—दया से भर आना।

जी पिघलना—(१) जी पानी होना। (२) मन में प्रेम का संचार होना। तुम्हारा कभी जी नहीं पिघलता जो मेरी ओर भी आजाया करो।

जी पीछे पड़ना—चित्त बँटना, एक ओर लग जाने पर कुछ दुख भूल जाना।

जी फट जाना—(१) प्रेम में अंतर पड़ना, दिल मिला न रहना। अब मेरा जी उनसे फट गया है। (२) चित खिन्न होना।

जी फिर जाना—मन हट जाना, अरुचि, घृणा वा वैराग्य होना। जी फिर जाने पर फिर वह बात नहीं रह जाती।

जी फिसलना—मन मोहित, आकर्षित, या अनुरक्त होना। तुम्हारा जी बाज़ारी स्त्री पर फिसल पड़ा है।

जी फीका होना—दे० जी खट्टा होना।

जी बँटना—(१) जी बहलाना, एक ओर चित्त लगने से दुख आदि भूल जाना। (२) ध्यान भंग होना, एकाग्र चित्त न होना। काम

करते समय यदि कोई बोलने लगे तो जी बँट जाता है।

जी बंद होना—दे० जी फिर जाना।

जी बढ़ना—(१) हिम्मत दुगनी होना। (२) चित्त खुश या उत्साहित होना।

जी बढ़ाना—(१) हौसला बढ़ाना, हिम्मत बँधाना। (२) उत्साह देना, उत्तेजित करना। इनाम देकर जी बढ़ा देने से बच्चा बड़ी मेहनत कर डालता है।

जी बहलना—(१) मनोरंजन होना, आनन्द अनुभव करना। थोड़ी देर खेलने से जी बहल जाता है। (२) चित्त के किसी विषय में लग जाने से दुख चिंता भूल जाना। मित्रों के यहाँ आजाने से जरा जी बहल जाता है, वरना दिन रात उसी का दुख बना रहता है।

जी बहलाना—(१) दे० जी बँटना। (२) मनोरंजन करना। जी बहलाने के लिये कभी ताश खेल लेते हैं।

जी बिखरना—(१) बेहोशी या मूर्छा होना। (२) चित्त ठिकाने न रहना, मन विह्वल होना।

जी बिगड़ना—(१) दे० जी ऊपर तले होना। (२) घृणा होना। गन्दगी देख कर जी बिगड़ जाता है।

जी बुरा करना—(१) कै करना। (२) घृणा या क्रोध करना, बुरी धारणा करना। उनके कामों ने मेरा जी बुरा कर दिया है, अब मैं उनसे बात भी नहीं करता। (३) दूसरे के ख्याल खराब करना। मेरी ओर से उन्होंने सेठ जी का जी बुरा कर दिया है।

जी बुरा होना—(१) ख्याल खराब करना। (२) कै होना।

जी बैठा जाना—(१) मूर्छा सी आना, चित्त ठिकाने न रहना, चित्त विह्वल होना। आज न जाने क्यों कमजोरी सी जान पड़ती है और जी बैठा जाता है। (२) मन मरना, उदासी होना। मेरा जी बैठा जाता है, मैं अब साधु ही बनूँगा।

जी भटकना—चित्त में घृणा होना, घिन मालूम होना।

जी भर आना—दया या दुख से आँसू तक, आ जाना। मेरा तो जी भर आता है जब मैं उसको भीख माँगता देखता हूँ, समय का फेर है वह एक दिन करोड़ पति था।

जी भरना—(१) तृप्त होना। जी भर गया अब न खाएँगे। (२) अधिक इच्छा न रहना। तुम्हारी बातों से जी भर गया, अब जाते हैं। (३) अभिलाषा पूरी होने पर संतोष, प्रसन्नता आदि होना। लो मैं आज यहाँ से चला जाता हूँ

अब तो तुम्हारा जी भरा। (४) रुचि के अनुकूल होना, मन मानना। इतने गंदे बरतन में पानी पीते हो न जाने कैसे तुम्हारा जी भरता है। (५) आशंका दूर करना, दिल जमई करना। यों तो घोड़े में कोई ऐब नहीं पर दस आदमियों से पूछ कर दिल भर लीजिए।

जी भर कर—दे० जी खोल कर (२)।

जी भरभरा उठना — रोमांच होना, हृदय के आवेग से चित्त विह्वल हो जाना।

जी भारी करना—चित्त दुखी या खिन्न करना।

जी भारी होना—तबियत अच्छी न होना।

जी भुरभुराना—दिल खिँचना, चित्त आकर्षित होना।

जी मतलाना या मिचलाना—क़ै करने की इच्छा होना। जी मतलाता है क़ै होगी।

जी मलमलाना—अफ़सोस, दुख या पछतावा होना। गाँठ से पैसे खर्चते हुए जी मलमलाता है।

जी मारना—दे० जी को मारना।

जी मिलना—एक सा स्वभाव होना, अनुकूल हृदय होना। जी मिल गया तो जिन्दगी गुज़र जायगी।

जी में आना—(१) मन में इच्छा होना, इरादा होना। तुम्हारे जी में आवे सो करो मैं नहीं रोकूँगा। (२) विचार होना, मन में भाव उठना। जी में आता है सब झंझट छोड़ दूँ।

जी में गड़ना या खुभना—(१) चित्त में जम जाना, मर्म भेदना, गहरा प्रभाव करना। (२) हृदय में अंकित होना। माधव मूरति जिय में खुभी।

जी में घर करना—(१) बराबर ध्यान बना रहना। मेरे जी में तो तुमने घर कर लिया तुम्हारे बिना पल भर भी चैन नहीं। (२) हृदय में विश्वास, योग्यता आदि जम जाना। तुमने तो उनके जी में घर कर लिया है, वे बस तुम्हारी बात ही पर चलते हैं।

जी में जलना — क्रोध से संतप्त होना, मन में कुढ़ना। (२) मन ही मन ईर्ष्या या डाह करना। वह जी में तो मुझ से जलता है, ऊपर से प्यार की बातें करता है।

जी में जी आना — चित्त शांत होना। जब वह सकुशल लौट आये तो जी में जी आया।

जी में जी डालना—(१) विश्वास दिलाना। (२) चिंता, खटका मिटाना।

जी में धरना या रखना—(१)

बैर रखना, मन में बुरा मानना। (२) ख्याल करना।

जी में पैठना—दे० जी में गड़ना या खुभना।

जी में बैठना—(१) सत्य प्रतीत होना, निश्चय होना। उन्होंने जो कहा जी में बैठ गया। (२) गहरा प्रभाव पड़ना। (३) हृदय में अंकित होना।

जी में रखना—(१) द्वेष रखना, बुरा मानना। उसे जो चाहो कहो वह जी में नहीं रखता। (२) गुप्त रखना। इस बात को जी में रखो, किसी से मत कहो। (३) ख्याल बनाए रहना।

जी रखना—(१) मन रखना, इच्छा करना। वह मुझ पर जी रखते हैं। (२) इच्छा पूरी करना। तो उनका भी जी रख दो, जैसे वह कहें कर दो।

जी रुकना—(१) हिचकना। (२) घबराना।

जी लगना—(१) प्रेम होना, आसक्त होना। जी लगा है उससे मैं तुम्हें क्या करूँ। (२) चित्त प्रवृत होना। पढ़ने में जी नहीं लगता।

जी लगाना—(१) तत्पर होना। जी लगाकर पढ़ो। (२) चिन्ता होना, कई दिन से पत्र नहीं आया उधर ही जी लगा है।

जी लगाना (किसी से)—प्रेम करना।

जी लरजना—जी काँपना।

जी ललचना, ललचाना—(१) चित्त आकर्षित होना। (२) लालसा होना, लालच होना। वहाँ की सुन्दर वस्तुओं को देख कर जी ललचा गया।

जी ललचाना—चित्त में लालच उत्पन्न करना, जी तरसाना। दूर से दिखाकर क्यों जी ललचाते हो, देना हो तो दे दो।

जी लुटना—मन मोहित या मुग्ध होना।

जी लुभाना—चित्त आकर्षित करना, होना।

जी लूटना—मन मोहित करना। माशूक ने जी लूट लिया।

जी लेना—(१) प्राण लेना। (२) इच्छुक होना। हमारा जी नहीं लेता कि ऐसा करें। (३) मन का भेद लेना। मेरा जी लेने को आयो हो, पर मैं न बताऊँगा।

जी लोटना—जी छट पटाना, ऐसी इच्छा कि रहा न जाय। उसके लिये जी लोटा जा रहा है।

जी सनसनाना, जी साँय साँय करना—(१) जी सन्न होना। (२) भय, आशंका, घृणा आदि से अंगों की गति क्षीण हो जाना।

जी सन होना—होश उड़ जाना,

स्तब्ध हो जाना। उसे सामने देखते ही जी सन हो गया।

जी से करना — ध्यान देकर, तत्पर होकर। जी से जो किया जायगा वह क्यों न अच्छा होगा।

जी से उतर जाना—(१) भला न जँचना, बेक़दर हो जाना। (२) चाह न रहना। (३) दृष्टि से गिर जाना। जो जी से उतर गया फिर पास न रखो।

जी से जाना - जान खो बैठना। बकरी तो जी से गई, खाने वाले को स्वाद ही न आया (कहावत)।

जी से जी मिलना—(१) मित्र होना। (२) चित्त से प्रेम होना। (३) हृदय के भाव एक होना।

जी हट जाना—(१) चित्त विरक्त होना। ऐसे कामों से अब मेरा जी हट गया है। (२) इच्छा न रहना।

जी हवा हो जाना—(१) प्राण निकल जाना। (२) जी घबराजाना, चित्त ठिकाने न रहना।

जी हाथ में रखना, जी हाथ में लेना—(१) किसी के भाव अपने प्रति अच्छे रखना, राजी रखना। मैं बड़े अफ़सर का जी हाथ में रखता हूँ, और नायब की परवा नहीं करता। (२) दिलासा दिए रहना, खटका पैदा न होने देना। मैंने उसका जी हाथ में रखा जब विश्वास हो गया तब उसे शोक समाचार सुनाया।

जी हारना—(१) दिल दे बैठना। (२) हिम्मत हारना। (३) काम से ऊब या घबरा जाना।

जी हिलना—(१) भय से दिल काँपना। (२) दया से चित्त उद्विग्न होना। उसके रोने से मेरा दिल हिलगया।

जीती मक्खी निगलना—(१) जान बूझकर कोई अनुचित कर्म करना या स्वीकार करना, सरासर बेईमानी करना। उससे रुपया लेकर मैं इनकार करूँ? इस तरह जीती मक्खी तो नहीं निगली जा सकती? (२) जान कर आपत्ति, संकट में पड़ना, धोखा खाना या बुराई में फँसना।

जीते जी—(१) मौजूदगी, जीवित रहते। उसके जीते जी तो ऐसा कभी न होने पावेगा। (२) जिंदगी भर। मैं जीते जी तुम्हारा उपकार न भूलूँगा।

जीते जी मर जाना (१) जीवन में ही मौत से बढ़ कर दुख पाना। (२) किसी भी कारण जीवन का सारा सुख चला जाना। पोते के मरने से हम तो जीते जी मर गए। (३) जिन्दगी से जब कोई लाभ न हो। मर्त्यु नाम को जब कोई लाभ नहीं तो

उनकी तरफ़ से तो बेटा जीते जी मर ही गया समझो।

जब तक जीना तब तक सीना—जिन्दगी भर (किसी काम में) लगे ही रहना है। पेट के वेट वेगारहिं में जब तक जियना तब तक सियना है।

जीना भारी होना—(१) जिन्दगी बहुत दुख भरी होना। (२) जिन्दगी के सुख न रहना।

जीना (अपनी खुशी)—अपने सुख से आनन्दित होना। वह अपनी खुशी जीता है दूसरों की तरफ़ से तो जैसा ही जीता वैसा मरा।

जीभ करना—बढ़कर बोलना या ढिठाई से जवाब देना।

जीभ खोलना—कुछ भी कहना। यहाँ जीभ खोली और पिटे।

जीभ थोड़ी करना—कम बोलना, बकवाद कम करना। थोड़ी जीभ करो, बको मत।

जीभ निकालना—(१) जीभ बाहर करना। (२) जीभ खींचना।

जीभ चलना, बढ़ाना—चटोरपन की आदत होना।

जीभ बंद करना—(१) बोलना बंद करना। (२) चुप रहना।

जीभ हिलाना—मुँह से कुछ बोलना। जरा भी जीभ हिलाई तो मालूम हो जायगा।

जीभ (छोटी)—गल शुंडी।

जीभ के नीचे जीभ होना—कह कर बदल जाना, दो जबान होना।

जीभ (कलम की)—कलम का वह भाग जो छील कर नुकीला करते हैं।

नोट—जबान के मुहावरे भी 'जीभ' शब्द के साथ बोल सकते हैं।

जीविका लगना—रोजी का ठिकाना होना, निर्वाह का उपाय होना।

जीविका लगाना—नौकरी लगवा देना, निर्वाह का उपाय करना।

जुकाम होना (मेढ़की को)—स्वभाव या अवस्था के विरुद्ध कार्य करना, नखरे होना। कल तो पैदल चलते थे आज मोटर बिना चला नहीं जाता, अब हम समझे मेढ़की को जुकाम हो गया है।

जुग टूटना—(१) मंडली तितर बितर होना। सेना पर आक्रमण होते ही उसके जुग टूट गए और भागने लगे। (२) मंडली में मेल न रहना। अब तो जुग टूट गए वरना पहिले सब एक मन थे।

जुग फूटना—जोड़ा खंडित होना, साथी का न रहना। बुढ़ापे जुग फूटा, जीना दुस्वार हुआ।

जुगत लगाना—ताल मेल बैठाना, तदबीर करना, ढंग रचना। मैंने १००) की तो जुगत लगा ली है बाकी १०) तुम दे दो।

जुल खेलना, देना—दम पट्टी देना, ठगना।

जुल्म टूटना—आफ़त आना। हम पर जुल्म टूट रहे हैं, रक्षा करो।

जुल्म ढाना—(१) अत्याचार करना। क्यों निर्दोष पर जुल्म ढाते हो। (२) अद्भुत काम करना। जुल्म ढा दिया, इतना भयंकर काम कर दिखाया।

जूठे हाथ से कुत्ता न मारना—बहुत कंजूस, मक्खीचूस होना। वह तुम्हें खाना क्या खिलायगा जो जूठे हाथ से कुत्ता भी नहीं मारता।

जूता उठाना—मारने के लिये जूता हाथ में लेना। गुस्से में उन्होंने मुझ पर जूता उठा लिया।

जूता उठाना (किसी का)—(१) हीन से हीन सेवा करना। वह तो लोगों के जूते उठाता फिरता है। (२) चाप लूसी, खुशामद करना। इस तरह जूते उठाने से तरक्की नहीं होगी।

जूता उछालना या चलाना—(१) जूतों से मार पीट होना। (२) लड़ाई-झगड़ा होना। उन दोनों मित्रों में खूब जूते चले।

जूता चाटना—मान का ध्यान न रख कर दूसरे की सेवा करना, खुशामद या चापलूसी करना।

जूते का आदमी, जूते का यार—बिना दण्ड या पिटने के भय के काम न करने वाला। वह तो जूते का यार है, सीधी तरह से काम न करेगा।

जूते से खबर लेना—जूते से मारना। न मानोगे तो जूते से खबर ली जायगी।

जूतों (में) दाल बँटना—लड़ाई झगड़ा या अनबन होना। चुगल खोर ने ऐसा भरा कि दोनों की जूतों दाल बन गई।

जूतों से आना
जूतों से बात करना } —जूते मारना। जरा सी बात पर वे जूतों से आते हैं जरा भी लिहाज़ नहीं कि लड़का बराबर का है।

जूतियाँ उठाना—नीच सेवा करना। वर्षों जूतियाँ उठाई हैं तब जाकर आज यह जगह मिली है।

जूती की नोक पर मारना—तुच्छ समझना, जरा परवाह न करना। इतना रुपया तो मैं जूते की नोक पर मारता हूँ, जो कहा है वही होगा।

जूती (की नोक) से—बला से, कुछ परवा नहीं। वह यहाँ नहीं आती हैं तो मेरी जूती की नोकसे।

जूती के बराबर न होना—बिल्कुल नाचीज़ या तुच्छ होना। मैं तो आपकी जूती के बराबरभी नहीं मुझ पर दया करो।

जूतियाँ चटकाते फिरना—(१)

फ़िज़ूल इधर उधर घूमना । क्यों जूतियाँ चटकाते फिर रहे हो घर नहीं बैठा जाता । (२) दीन या दुर्दशा ग्रस्त होकर, कुछ प्राप्ति की इच्छा में घूमना । आजकल एम० ए० बी ए० जूतियाँ चटकाते फिर रहे हैं हमें कौन पूछे ।

जूती पर रखकर रोटी देना—निरादर के साथ खाना-पीना देना या पालना । सास तो मुझे जूती पर रखकर रोटी देती है, सो भी एक वक्त ।

जूती बगल में दबाना-जूतियाँ उतार कर भागना जिससे पैर का शब्द न हो, चुपचाप खिसकना । ज्यों उन्होंने सुना हर एक को ५) ५) देने पड़ेंगे वे तो जूतियाँ बगल में दबाकर चल दिये ।

जेठा रंग—रँगाई में सबसे बाद का रंग ।

ज़ेब देना—शोभा बढ़ाना या देना । यों नखरे करना आपको ही ज़ेब देता है ।

जेल काटना—जेल में रह कर दंड भोगना । उसने इस अपराध में ७ बरस की जेलकाटी ।

जेहन लड़ाना—सोचना, विचारना ।

जैसे का तैसा होना—(१) पहिले जैसा रूप । वह साठ बरस का होगया परन्तु जैसे का तैसा ही बना हुआ है । (२) ज्यों का त्यों । दरजी के यहाँ अभी कपड़ा जैसे का तैसा रखा है । (३) न घटा न बढ़ा कोई फेर फार न हुआ । खाना जैसे का तैसा रखा है किसी ने नहीं खाया ।

जैसे को तैसा—(१) जो जैसा व्यवहार करे उससे वैसा ही व्यवहार करने वाला । (२) एक से स्वभाव का । जैसे को तेसा मिले, मिले नीच को नीच ।

जैसे जैसे—ज्यों ज्यों । जैसे जैसे रोग घटता गया शक्ति बढ़ती गई ।

जैसे तैसे—(१) बड़ी मुश्किल से । (२) किसी भी तरह से । खैर जैसे तैसे वह आ तो गये ।

जैसे बने, जैसे हो—जिस तरह संभव हो या बन सके । जैसे बने तुम तो चले ही आना ।

जोंक होकर लिपटना या जोंक की तरह चिपटना—इतना पीछे पड़ना कि पीछा छुटाना मुश्किल ।

जों तों करके—दे० जैसे तेसे ।

जोखिम उठाना या सहना
जोखिम में पड़ना
नुकसान सहना । मैं इस जोखिम में नहीं पड़ना चाहता ।

जोखिम में जान होना—जान जाने का डर होना

जोड़ उखड़ना—शरीर के किसी जोड़ का अपनी जगह से हटना ।

जोड़ का जोड़ मिलाना—जैसे को तैसा मिलाना।

जोड़ जोड़ धरना—कंजूसी से रुपया जमा करना। जोड़ जोड़ धर जाँयगे, माल जमाई खाँयगे (कहावत)।

जोड़ तोड़ करना, मिलाना—तदबीर करना। मैंने तो बहुतेरे जोड़ तोड़ मिलाये परन्तु वह तैयार ही न हुए।

जोड़ बाँधना—(१) कुश्ती के लिये दो पहलवानों को चुनना। (२) काम पर अलग अलग दो आदमी नियत करना (३) चौपड़ में दो गोटी एक ही घर में रखना।

जोड़ बैठना—शरीर के जोड़ का अपने स्थान पर आना। तेल मलने से घुटने का जोड़ बैठ गया, बस सूजन हट गई।

ज़ोर करना—(१) ताकत लगाना। (२) कोशिश करना। ज़रा ज़ोर करोगे तो काम बन जायगा।

ज़ोर टूटना—ताकत घटना, शिथिल होना। खींचते खींचते जोर टूट जाता है।

ज़ोर डालना—(१) दे० जोर देना। (२) दबाव डालना। तुम जोर डालोगे तो वह जरूर कर देगा।

ज़ोर देना—(१) ताकत लगाना। (२) बोझ डालना। जंगले पर ज़ोर दोगे यह टूट जायगा। (३) महत्व पूर्ण या जरूरी बताना। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सब साथ ही चलें। (४) आग्रह या हठ करना। तुम क्यों जोर दे रहे हो तुम्हारा क्या लाभ है?

ज़ोर पकड़ना या बाँधना—(१) प्रबल होना। अभी दवा करो वरना रोग जोर पकड़ जायगा। (२) तेज़ होना। इस फोड़े ने बड़ा जोर बाँधा है। (३) दे० जोर में आना। (४) दे० जोरों पर होना।

ज़ोर मारना या लगाना—(१) ताकत लगाना। (२) बहुत कोशिश करना। उन्होंने बहुतेरा जोर मारा पर वह नौकर नहीं हो पाया।

ज़ोर मारना या करना—प्रबलता दिखाना। आपकी मुहब्बत ने जोर मारा तभी आप यहाँ आये भी।

ज़ोर में आना—ऐसी हालत जिसमें सहज ही में उन्नति तथा वृद्धि हो जाय। आज कल जोर में आ रहा है शायद कुछ पदवी ही मिल जाय।

ज़ोरों पर होना—(१) पूरे बल पर। शहर में चेचक ज़ोरों पर है। (२) तेज़ होना। मुझे बुखार ज़ोरों

पर है। (३) उन्नत दशा में। कांग्रेस खूब जोरों पर थी।

जोश खाना—(१) आवेश में आना। (२) उबलना, खौलना।

जोश खून का आना—प्रेम उमड़ना। खून का जोश आही जाता है आखिर वो रो ही उठे और राज़ी हो गये।

जोश देना—उबालना। इस दवा को जोश देकर पियो।

जोश में आना—गुस्से या आवेश में हो जाना। तुम जोश में क्यों आगये शांति से बात करो।

जोश में लाना—(१) खूब गुस्सा चढ़ाना। (२) भड़काना।

जौहर खुलना—(१) खूबी जाहिर होना। (२) भेद खुलना। अदालत में जौहर खुले कि वे कितने कत्ल कर चुके थे।

जौहर खोलना—(१) गुण करतब या खूबी दिखाना। अपने जौहर खोलूँ तो तुम दंग रह जाओ।

जौहर होना—चिता पर जल मरना। जौहर भईं सब स्त्री पुरुष भए संग्राम।

ज्ञान छाँटना—जान कारी या या पांडित्य जताने के लिये लंबी चौड़ी बातें बनाना।

झ

झंडा खड़ा करना—(१) झंडा गाड़ कर सैनिकों को इकट्ठे होने का संकेत करना। (२) आडम्बर करना। (३) दे० झंडा गाड़ना।

झंडा गाड़ना / झंडा फहराना—(१) पूरी तरह काबू में आना। आज कल तो भारत में अंग्रेजी झंडा फहरा रहा है। (२) राज्य चिह्न स्वरूप झंडा स्थापित करना। आज तो दुश्मन ने क़िले पर झंडा गाड़ दिया, गई पुरानी बादशाहत।

झंडी दिखाना—(१) झंडी से संकेत करना। (२) इनकार करना। वक्त पर झंडी दिखा जाते हो।

झंडे तले आना—युद्ध आदि के लिये किसी के साथ होना। जो कांग्रेस के झंडे तले आया जेल गया।

झंडे तले की दोस्ती—राह चलते की जान पहचान।

झंडे पर चढ़ना—बहुत बदनामी लेना।

झंडे पर चढ़ाना—बदनाम कर डालना। उसने उन्हें झंडे पर

चढ़ा दिया जिधर जाते हैं उधर ही उँगलियें उठती हैं।

झंप देना—कूदना। करि अपनो कुल नास बनहि सो अगनि झंप दे आई।

झकसवार होना—जिद या धुन चढ़ना। उसे तो हर काम की झक सवार होती है फिर कुछ नहीं सोचता।

झख मारना—(१) वक्त खराब करना। आप सवेरे से यहाँ बैठे झख मार रहे हैं या कुछ किया भी। (२) लाचार होना। तुम्हें झख मार कर यह करना पड़ेगा। (३) कुढ़ना, सौबार झख मारो और वहाँ जाओ मिले या न मिले। (४) अपनी मिट्टी खराब करना। काम पूरा होना।

झझक निकलना—भय संकोच न रहना।

झझक निकालना—भय, संकोच या हिचक दूर करना। हम चार दिन में झिझक निकाल देंगे फिर यह निधड़क पढ़ेगा।

झट से दे० चट से।

झटक कर—(१) जबरदस्ती। (२) धोखा देकर। वह ५) झटक कर लेगया। (३) झोंके या तेजी से।

झटका उठाना, खाना—आफ़त या मुसीबत सहना।

झटका झेलना—(१) नुकसान सहना। बाजार बहुत गिर गया है इस मंदी के जो झटके झेल ले समझो उसके पास तरी है। (२) आक्रमण सहना। बचपन से ही इस बेचारे ने रोग के बड़े बड़े झटके झेले हैं तब बच पाया है।

झटके का माल—जबरदस्ती छीना या चुराया-उड़ाया हुआ माल।

झड़ना (फूल)—दे० फूल झड़ना।

झड़ बाँधना—खूब बोलना। जब बोलने लगता है तो झड़ बाँध देता है।

झड़बेरी का काँटा—लड़ने या उलझने वाला आदमी। उससे पीछा छुटाना मुश्किल हो जायगा वह तो झड़बेरी का काँटा है।

झड़ी बंधना, लगना—नन्हीं नन्हीं बूँदे पड़ती ही रहना।

झप खाना—पतंग का पेंदी के बल गिर पड़ना।

झपट लेना—(१) तेजी से बढ़ कर छीनना। (२) छीन लेना।

झपेट में आना / **झपेटे में आना**—(१) धक्का लगना या घिस्सा लगना। वह मोटर की झपेट में आगया, सख्त चोट आई। (२) दुख पहुँचना। (३) भूत प्रेत से ठुकराया जाना।

झमेले में फँसना—आफ़त में आना।

झराझर रुपया बरसना—खूब आमदनी होना।

झाँई बताना—(१) धोखा देना। (२) आँख बचाना। वह झाँई देकर निकल गया।

झाँई माई होना—नजरों से ग़ायब होना।

झाँवली देना—आँख से इशारा करना।

झाँवली में आना, झाँसे में आना—धोखे में आना। तुम किसी के झाँसे में मत आया करो, ये सब बेईमान हैं।

झाँसा देना बताना—धोखा देना। वह सिपाही को भी झाँसा दे गया।

झाड़ का काँटा—दे० झड़ बेरी का काँटा।

झाड़ना झटकना—जो कुछ किसी के पास हो ले लेना। झाड़ झटक कर कुल १०) लाया हूँ।

झाड़ होकर लिपटना—बुरी तरह चिमटना।

झाड़ा लेना—तलाशी लेना। जेल में घुसते ही झाड़ा ले लिया गया।

झाड़ू फिरना—सफ़या हो जाना, कुछ न रहना।

झाड़ू फेरना—बिल्कुल नष्ट कर देना।

झाड़ू मारना—(१) घृणा करना। (२) निरादर करना।

झाड़ू से बात करना—झाड़ू से मारना।

झापड़ कसना देना—थप्पड़ मारना।

झिड़की देना, खाना।—डाँट डपट करना, घुड़की देना—सुनना।

झुंड के झुंड—बहुत से।

झुंड में रहना—मंडली में रहना।

झुक झुक पड़ना— नशे में झूमना। अमी हलाहल मद भरे स्वेत स्याम रतनार जियत मरत झुकि झुकि परत जिहि चितवत इकवार।

झुर मुट मारना—कपड़े से इस तरह शरीर ढकना कि कोई पहचान न सके।

झुलसना (मुँह)— दे० मुँह झुलसना।

झूठ के पुल बाँधना—बहुत झूठ बोलना।

झूठ सच कहना या लगाना—(१) निन्दा करना; शिकायत करना। वह उनके बारे में झूठ सच लगाता फिरता है, बात ठीक नहीं है। (२) बातों में फँसना। झूठ सच लगाकर रुपया ले गया।

झूमना दरवाजे पर हाथी—हाथी रखना। झूमत द्वार अनेक मतंग जँजीर जड़े मद अंबु चुचाते।

झूमना (बादल)—बादलों का इकट्ठा होना।

झूम झूम कर—झुक झुक कर। झूम झूम कर पढ़ना, नाचना या भूत के कारण खेलना।

झूल पड़ना (गधे पर) अयोग्य व कुरुप का बढ़िया-बहुमूल्य वस्त्र पहिनना।

झोंक मारना—कम तोलना, डंडी मारना।

झोंकना (भाड़) (१) भाड़ में सूखे पत्ते फेंकना। (२) तुच्छ व्यवसाय करना। बारह बरस दिल्ली में रहे, भाड़ झोंकते रहे (कहावत)। (३) फेंकना। भाड़ में झोंक दो मैं क्या करूँगी इसका ?

झोंका खाना—आघात या वेग से किसी ओर बार बार झुकना। झोंका खाकर गिरना, नींद के झोंके खाना।

झोंके आना—ऊँघना।

झोंझ मारना—खुजली या चुल होना।

झोंटा देना, झोंटा मारना—पेंग मारना, झूला बढ़ाने के लिये धक्का देना।

झोंटा पकड़कर निकालना, घसीटना आदि—(स्त्री को अपमान से) सिर के बाल पकड़ कर ऐसा करना।

झोंटा झोंटी होना—एक दूसरे के सिर के बाल पकड़ कर लड़ना।

झोंपड़ा अंधा—पेट (फ़कीरी बो०)।

झोंपड़े में आग लगना—भूख लगना (फ़कीरी बो०)।

झोल निकालना—बच्चे देना।

झोल बैठाना—मुरगी के नीचे सेने के लिये अंडे रखना।

झोला मारना (किसी को)—(१) लकवा मारना। (२) सुस्त या बेकाम हो जाना।

झोली छोड़ना—(१) बुढ़ापे से चमड़ा झूलना। (२) मांस बढ़ना।

झोली डालना—भीख माँगने के लिये झोली उठाना।

झोली बुझाना—काम हो चुकने पर फिर दिखावे के लिये करने चलना, पीछे व्यर्थ कुछ करना। पंचायत तो हो चुकी अब क्या झोली मारने आयो हो।

झोली भरना—साधु को भर पूर भिक्षा देना।

ट

टंटा खड़ा करना—उपद्रव पैदा करना। तुम हर बात में टंटा खड़ा कर देते हो।

टक बँधना—स्थिर दृष्टि से देखना।

टक बाँधना—स्थिर दृष्टि होना।

टक टक देखना—बिना पलक गिराये देखना। वह मेरी सूरत को टक टक देखने लगा।

टक लगाना—आसरा देखते रहना। तुम किस की ओर टक लगा रहे हो वह कुछ न देगा।

टकटकी बंधना—स्थिर दृष्टि से देखना। टकटकी बंध गई और आँसू आ गए।

टकटकी बाँधना—टकटक देखना।

टकराते फिरना—मारे मारे फिरना, हैरान घूमना।

टकराना (माथा)—(१) घोर प्रयत्न करना, हैरान होना। (२) पैरों पर सिर रख कर विनती करना। कितना ही माथा टकराओ वह निर्दय है, दया की आशा ही नहीं।

टकसाल का खोटा—कम असल, नीच, अशिष्ट। वह टकसाल का ही खोटा है उपदेश सुधार ही नहीं सकते।

टकसाल चढ़ना—(१) टकसाल में परखा जाना। (२) पारंगत माना जाना। (३) निर्लज्ज होना। (४) बदमाशी में पक्का होना। वह टकसाल चढ़ चुके हैं वे पुलिस के बाबा के हाथ नहीं आ सकते।

टकसाल बाहर—(१) खोटा या अप्रचलित सिक्का। (२) (वाक्य या शब्द) जिसका प्रयोग प्रामाणिक या शिष्ट न माना जाय। वह विद्वान होकर भी टकसाल बाहर शब्द बोलता है।

टकसाली बात करना—पक्की या जँची तुली बात करना। बात बड़ी टकसाली करता है, काट नहीं सकते, माननी पड़ती है।

टकसाली बोली—नागरिक तथा सर्वसम्मत बोली।

टका पास न होना—दरिद्र या निर्धन होना। टका पास नहीं चले शादी करने।

टका सा जवाब देना—(१) खट से साफ़ इनकार कर देना। दो दिन के घोड़ा माँगा था, उन्होंने टका सा जवाब दे दिया। (२) साफ़ निकल जाना, कानों पर हाथ रखना या मैं बिलकुल नहीं जानता। मैंने पूछा कि तुम्हें मालूम है, उन्होंने टका सा जवाब दे दिया।

टका सा मुँह लेकर रह जाना—खिसिया जाना, छोटा सा मुँह लेकर रह जाना। बड़ी आशा थी, परन्तु जब इनकार कर दिया तो बिचारा टका सा मुँह लेकर रह गया।

टका भर—(१) जरा सा, थोड़ा सा। टका भर घी दे दो। (२) दो या एक तोले।

टका सी ज़बान हिलाना—फौरन कह दिया या इनकार कर दिया। टके सी जबान हिलादी खुद करो न ?

टके गज की चाल—थोड़े खर्च में गुजर।

टके गिनना—(१) हुके का गुड़ गुड़ बोलना। (२) रोजी का हिसाब करना।

टके सी जान—अकेला आदमी। देवर जी की टके सी जान है खुद ही पका खाते हैं।

टक्कर का—बराबरी का, समान। उनकी टक्कर का कोई विद्वान नहीं।

टक्कर खाना—(१) किसी वस्तु के साथ धक्का खाना। चट्टान से टक्कर खाकर नाव चूर चूर हो गई। (२) मारा मारा फिरना। नौकरी छूटने से वह बेचारा टक्कर खाता फिरता है। (३) प्रयत्न करना, बहुत कहना। सैकड़ों टक्कर खाकर मर गये पर वह टस से मस न हुआ।

टक्कर मारना—(१) आघात पहुँचाने के लिये जोर से सिर मारना। (२) माथा मारना। (३) उद्योग करना। लाख टक्कर मारो वह तुम्हारे हाथ नहीं आवेगा।

टक्कर लड़ना—दूसरे के सिर पर सिर मार कर लड़ना। दोनों मेंढे खूब टक्कर लड़ रहे हैं।

टक्कर लड़ाना—सिर से धक्का मारना।

टक्कर झेलना—(१) हानि उठाना, नुकसान सहना। (२) संकट या आपत्ति सहना। बड़ी टक्करें झेल कर सुख के दिन देखे हैं।

टक्कर लेना—(१) मुकाबिला करना, लड़ना-भिड़ना। उनसे अच्छे अच्छे टक्कर लेने में चकराते हैं। (२) समान होना। इस टोपी का काम सच्चे काम से टक्कर लेता है। (३) चोट या वार सहना। क्यों नाहक टक्कर ले रहे हो भाग चलो।

टक्कर लेना (पहाड़ से)—भारी शत्रु से सामना करना। तुमने इस बार पहाड़ से टक्कर ली है हज़ारों रुपयों का चूरा करना पड़ेगा।

टटोलना मन—दिल के भाव या विचारों का पता लगाना। वे मेरा मन टटोलने आये थे परन्तु मैंने अपना भेद न दिया।

टट्टर देना, लगाना—टट्टी या टट्टर बंद करना। बुढ़िया बेचारी झोंपड़ी का टट्टर देकर सो रहती थी।

टट्टी का शीशा—पतला शीशा।

टट्टी की आड़ या ओट में शिकार खेलना—(१) छिपकर किसी के विरुद्ध चाल चलना। टट्टी की ओट में क्यों शिकार

खेलता है सामने जाकर लड़े तो बताऊँ। (२) लोगों की निगाह बचाकर, छिपाकर कोई अनुचित काम करना।

टट्टी में छेद करना—खुल खेलना, प्रकट कुकर्म करना, लोक लज्जा छोड़ देना। अंकुस रहा न अब तेरे टट्टी में छेद कर।

टट्टी लगाना—(१) परदा या ओट करना। जनाने में टट्टी लगी है। (२) किसी के सामने भीड़ लगाना। यहाँ क्या टट्टी लगा रखी है, क्या कोई तमाशा हो रहा है?

टट्टी धोखे की—(१) वह टट्टी जिसकी ओट में शिकारी शिकार खेलते हैं। (२) बाहर से बुराई या असलियत का पता न लगे। उसकी दुकान आदि सब धोखे की टट्टी है, उसे भूलकर भी रुपया न देना। (३) देखने में सुन्दर पर जल्दी टूट या बिगड़ जाने वाली चीज़।

टट्टू पार होना—काम निकल जाना।

टट्टू भाड़े का—रुपया लेकर काम करने वाला। भाड़े का टट्टू है, मालिक के फायदे नुकसान से क्या अपने पैसे सीधे करने से काम।

टन हो जाना—फौरन मर जाना। लाठी सिर पर लगते ही टन हो गया।

टप से—फुर्ती से, झट से। बिल्ली ने टप से चूहा पकड़ लिया। टप से आओ।

टपक पकड़ना—यकायक आ जाना, तुम यहाँ बीच में कहाँ से टपक पड़े? (इसी अर्थ में आ टपकना भी चलता है)।

टपका टपकी लग जाना—पानी बरसने लगना, वर्षा होना।

टपका पड़ना—(१) गिरा पड़ना। (२) निकला पड़ना। तुम क्यों टपके पड़ते हो मैं ही जो कह दूँगा।

टपटप—जल्दी से।

टप्पा उलटना-दिवाला निकलना।

टप्पा खाना—फेंकी हुई वस्तु का जमीन से लगना फिर उछल कर आगे बढ़ना।

टप्पा देना—(१) लंबे लंबे डग बढ़ाना, कूदना। (२) अंतर या फर्क डालना।

टप्पे डालना, भरना, मारना—(१) दूर दूर बखिया देना, भद्दी सिलाई करना। (२) लंगर डालना।

टर टर करना—(१) जबानदराजी करना, ढिठाई से बोलते ही जाना। टरटर करता जायगा न मानेगा? (२) बकवाद करना। क्यों टरटर कर रहा है।

टर टर लगाना—व्यर्थ या झूठ मूठ बक बक करना, इस तरह बोलना जो अच्छा न लगे। क्यों टर टर लगाई है बात करने दो न।

टरक जाना, देना — चुप चाप चले जाना, खिसक जाना। जब काम का वक्त आता है तो कहीं टरक जाता है।

टर फिस करना — (१) शरारत करना। (२) शोखी दिखाना।

टर (टर) फिस होना—थोड़े दिन काम होकर फिर बैठ जाना। तुम्हारी टर टर फिस हो गई।

टल जाना (बात से)—वायदा पूरा न करना, मुकरना। तुम अपनी बात से टल जाते हो मैं कहूँगा तो जरूर करूँगा।

टल जाना—(१) चुपके से चले जाना। (२) हट जाना। मेरी आँखों के आगे से टल जाओ नहीं मैं मार बैठूँगा।

टस से मस न होना—(१) भारी चीज़ जरा न हटना। कई मन वज़न है दो आदमियों से तो टस से मस न होगा। (२) पकाने या गलाने का ज़रा असर न होना। (३) कहने का ज़रा प्रभाव न पड़ना, तनिक अनुकूल न होना। उसे बहुत लोभ दिखाया, पर वह टस से मस न हुआ।

टसुए बहाना— झूठ मूठ आँसू बहाना। क्यों टसुए बहा रही हो हम जानते हैं तुम्हें जितना सोच है।

टहल बजाना—सेवा करना।

टहल जाना—दे० टल जाना।

टही लगाना—जोड़ तोड़ लगाना।

टही में रहना—काम निकालने की ताक में रहना। वह अपनी टही में रहता है उसे तुम से क्या मतलब।

टहोका खाना — धक्का खाना। मैंने इनकी ठंडी साँस की फाँस का टहोका खाकर झुँझला कर कहा।

टहोका देना—ठेलना, धक्का देना।

टाँक रखना, लेना—(१) याद रखने के लिये लिख लेना। (२) रकम बही में दर्ज करना। (३) फर्क रखना। वह मेरी ओर से मन में टाँक रखता है।

टाँका चलाना — सीने के लिये आर पार सुई डालना।

टाँका भरना, मारना— सीना।

टाँकी खाना—जेल हो आना।

टाँकी बजना — (१) पत्थर पर टाँकी बजाना। (२) पत्थर की इमारत का काम होना।

टाँके उधड़ना, खुलना — भेद खुलना। उनके टाँके खुलगये।

टाँग अड़ाना—(१) फ़िजूल दखल देना। तुम क्यों बीच में टाँग अड़ाते हो जब तुम्हारी जरूरत ही नहीं। (२) विघ्न डालना। वह टाँग न अड़ाता तो मेरा काम बन जाता। (३) जिसका ज्ञान न हो उसकी बाबत कुछ कहना। जिस

बात को तुम नहीं जानते उसमें क्यों टाँग अड़ाते हो ?

टाँग तले से निकलना—हार मानना। तुम इसे कर डालो तो तुम्हारी टाँग तले से निकल जाऊँ।

टाँग तले से निकालना — (१) नीचा दिखाना, हराना। (२) सिखाना।

टाँग तोड़ना — (१) अंग भंग करना। (२) चलते चलते पैर थकना। (३) किसी काम का न रखना। उन्होंने तो ऐन वक्त पर धोखा देकर हमारी टाँग तोड़ दी अब कोई भी तो इन्तजाम नहीं हो सकता। (४) टूटे फूटे अशुद्ध वाक्य बोलना। क्या अंग्रेज़ी की टाँग तोड़ते हो।

टाँग पसार कर सोना—(१) निश्चिन्त, निर्द्वन्द्व सोना। (२) चैन से दिन बिताना। हमें क्या खटका है हम तो टाँग पसार कर सोते हैं।

टाँग बराबर—छोटा सा। टाँग बराबर लड़का ऐसी ऐसी बातें करता है।

टाँग से टाँग बाँध कर बैठना—सदा पास बैठे रहना, जरा देर को दूर न होना। तुम तो औरत के पास टाँग से टाँग बाँध कर बैठे रहते हो, क्यों न ?

टाँग से टाँग बाँध कर बैठाना—पास से न हटने देना।

टाँगें रह जाना—(१) लकवा या गठिया से पैर बेकार होना। (२) चलते चलते पैर दर्द करने लगना।

टाँगें लेना—(१) टाँग पकड़ना। (२) कुत्ते की तरह काटना। (३) पीछे पड़जाना, सिर होना।

टाँट के बाल उड़ना—(१) सिर के बाल झड़ना। (२) पास में कुछ न रहना। (३) मार खूब पड़ना।

टाँट के बाल उड़ाना—सिर पर मारते मारते बाल न रहने देना, बहुत मारना।

टाँट खुजाना — मार खाने की इच्छा होना।

टाँट गंजी कर देना—दे॰ टाँट के बाल उड़ाना। (२) खूब खर्च कराना। अदालत ने टाँट गंजी कर दी।

टाँट गंजी होना—(१) खूब मार पड़ना। (२) खर्च के मारे धुर्रे निकलना।

टाँड़ा लदना—(१) बिक्री का माल लदना। (२) कूच की तैयारी होना। (३) मरने की तैयारी होना।

टाँय टाँय फिस होना—(१) आरम्भ बड़ा पर फल कुछ नहीं। (२) बड़ी बढ़ चढ़ कर बातें या तत्परता दिखाना परन्तु अंत में

सब व्यर्थ। बहुत उछलते थे, सब टाँय टाँय फिस हो गई।

टाट उलटना—दिवाला निकलना, निकालना।

टाट करना—मस्तूल खड़ा करना।

टाट के (एक ही)—(१) बिरादरी के, (२) एक ही मंडली या विचार के।

टाट में पाट या मूँज का बखिया—भद्दी चीज़ में बढ़िया साज।

टापा देना—लंबे डग भरना या छलाँग मारना। राम नाम जाना नहीं आए टापा दीन।

टाल देना (किसी पर)—किसी के सिर मढ़ देना। जो काम उसके पास जाता है वह दूसरों पर टाल देता है।

टाल मारना—पहिये के किनारों को छीलना।

टाल मटूल करना—बहाना या हीला हवाला करना।

टाला बाला बताना या देना—(१) टालना। (२) धोखा देना। (३) बहाना करना।

टिक टिकी पर खड़ा करना—लड़ाई में हटने वाले चोट खाकर मरे हुवे मुरदों को तीन लकड़ियों पर खड़ा करना।

टिकी जमना, बैठना, लगना—प्रयोजन या उपाय सिद्ध होना। हमारी तो टिकी बैठ गई हमें दूसरे से क्या।

टिटकारी पर लगना—इशारे या आवाज़ पर लगना, पहचानना।

टिड्डी दल—बड़ा झुंड, भीड़ या सेना। तैमूर की सेना टिड्डी दल की तरह भारत पर चढ़ी और जहाँ गई वहीं सफाया कर दिया।

टिप टिप करना—बूँद बूँद गिरना, बरसना।

टिप्पन का मिलान—विवाह के लिये वर कन्या की जन्म पत्रियों का मिलान।

टिप्पस अड़ना, जमना, लगना—मतलब बनने का ढंग होना।

टिमटिमाना (आँख)—आँख बार बार थोड़ा थोड़ा खोलना बंद करना।

टिर्र फिर्र करना—शरारत, शोखी, दंगा करना।

टीकन देना—पौधे को सीधा सुडौल रखने के लिये थूनी लगाना।

टीका टिप्पणी करना—(१) विनोद करना। (२) आलोचना, बुराई भलाई करना। इस घटना के सम्बन्ध में लोग टीका टिप्पणी करने लगे।

टीका देना—माथे पर टीका लगाना।

टीका भेजना—तिलक संबंध भेजना, सगाई भेजना।

टीके का—अनोखा, विशेष। बहन ! वही कोई टीके का है जो सब कुछ रख लेगा।

टीम टाम रखना, करना—बनावटी तड़क भड़क करना।

टीस उठना—दर्द, पीड़ा होना।

टीस मारना—रह रह कर दर्द होना। घाव में टीस मार रही है।

टुंच भिड़ाना, लगाना—(१) थोड़ी पूँजी से व्यापार शुरू करना। (२) थोड़ी पूँजी से जुआ खेलना। टुंच लगाने को फिरते हैं मैं बेवकूफ हूँ जो खेलूँ।

टुंच लड़ाना—दे० टुँच भिड़ाना।

टुँडिया कसना बाँधना—मुश्कें बाँधना।

टुँडिया खींचना—मुश्कें बँधना, हथकड़ी पड़ना।

टुक टुक ताकना—एक टक देखना।

टुक सा—जरा सा। टुक सी नज़र इधर भी।

टुकड़ा तोड़ना—दूसरे के दिये भोजन पर गुज़र करना। वह तो ससुराल के टुकड़े तोड़ता है।

टुकड़ा तोड़कर जवाब देना—संकोच न करना, झट स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना। वह टुकड़ा तोड़ कर जवाब दे देगा क्यों माँग कर मुँह बिगाड़ते हो।

टुकड़ा देना—भिखमंगे को रोटी या खाना देना।

टुकड़ा माँगना—भीख माँगना। अब टुकड़ा माँगता फिरता है।

टुकड़ा सा जवाब देना या टुकड़ा तोड़ कर हाथ में देना—लगी लिपटी न रखना कोरा जवाब देना।

टुकड़ों पर पड़ना, रहना—पराई कमाई या रोटी पर गुज़र करना। वह ससुराल के टुकड़ों पर पड़ा है।

टुटरूँ टूँ—(१) सुन सान, अकेला, सब चले आगे मैं टुटरूँ टूँ रह गया। (२) तुच्छ, हीन।

टूट टूट कर बरसना—बहुत बरसना।

टूटना (पानी)—पानी कम होना। बहुत खिचाई से कुएँ का पानी टूट गया।

टूटना (बदन, अंग)—अँगड़ाई आना। आज तो बदन टूट रहा है कहीं ज्वर न आ जाय।

टूटी फूटी बात, बोली—(१) अशुद्ध बोली। मैं टूटी फूटी अँग्रेजी भी बोल लेता हूँ। (२) अस्पष्ट बात। अभी तीन बरस का है टूटी फूटी बात करता है। (३) छोड़ छोड़ या रह रह कर। बेहोशी सी है बोला नहीं जाता टूटी टूटी बात कर लेते हैं।

टूटी बाँह गले पड़ना—किसी अपाहिज आदमी का खर्च सिर पड़ना। बहन विधवा हो गई यह टूटी बाँह भी हमारे गले पड़ी।

टूम छल्ला—छोटा मोटा गहना।

टूम टाम—(१) गहना पत्ता। (२) बनाव सिंगार।

टूम देना—कबूतर को छतरी पर से उड़ाना।

टेंटें करना — (१) व्यर्थ बकवाद करना। क्यों टें टें कर रही है चुप बैठ न। (२) तोते की तरह बोलना।

टें बोलना या होना—दे० टन होना।

टेंट में कुछ होना—पास में कुछ रुपया पैसा होना।

टेक निभना, रहना—(१) जिस बात का आग्रह या हठ हो उसका पूरा होना। (२) प्रतिज्ञा पूरी होना। काम होगया हमारी टेक रह गई।

टेक गहना, पकड़ना, रखना—आग्रह करना, ज़िद् पर आजाना। तुम्हें तो अपनी टेक रखनी चाहे काम मट्टी हो जाय।

टेकना माथा — दंडवत, प्रणाम करना।

टेढ़ की लेना—नटखटी, शरारत, उजड्डुपन करना।

टेढ़ा पड़ना या होना—(२) ऐंठना, अकड़ना। वह जरासी बात में टेढ़ा पड़ जाता है। (२) कठोर व्यवहार करना, गुस्से होना। टेढ़े होने पर तो वह झट रुपया गिन देगा। जैसा तैसा, बहुत साधारण। हाँ, टेढ़ा मेढ़ा अनुवाद कर सकता हूँ।

टेढ़ी आँखें करना—(१) क्रोध की आँखें करना, बिगड़ना। उनसे बस नहीं चला मुझ पर आँखें टेढ़ी करने लगे। (२) भलमनसाहत से नहीं धूर्तता से ही काम बनना। टेढ़ी अँगुली घी निकलता है पीट दूँगा तो ठीक हो जायगा।

टेढ़ी आँखों से देखना—वैर की निगाह रखना, नुकसान पहुँचाने की इच्छा रखना। वह बड़ी टेढ़ी आँख से देखता है बचते रहना नहीं तो किसी दिन रोना पड़ेगा।

टेढ़ी खीर—मुश्किल काम, मुसीबत की खीर। यूनीवर्सिटी में प्रथम आना टेढ़ी खीर है।

टेढ़ी चितवन—तिरछी नज़र, भाव भरी दृष्टि। मुझे तेरी टेढ़ी सी चितवन ने मारा।

टेढ़ी सीधी सुनाना या टेढ़ी सुनाना—भली-बुरी, ऊँची-नीची, खरी-खोटी कहना। मुझे टेढ़ी सीधी सुनाओगे तो पीट डालूँगा भाई को दी है भाई से लो।

टेढ़े टेढ़े जाना—इतराना, घमंड करना। कबहूँ कमला चपला पाय के टेढ़े टेढ़े जात।

टेनी मारना-(सौदा) कम तोलना।

टेर करना — गुज़ारना, बिताना, काटना। जिंदगी टेर करते हैं।

टोक में आना—नज़र लगाने वाले आदमी के सामने पड़ जाना। बच्चा टोक में आगया।

टोकरे पर हाथ रहना—परदा न खुलना, इज्जत बनी रहना। भगवान ने टोकरे पर हाथ रखा है किसी को पता नहीं हम लाख के हैं या खाक के।

टोटका करने आना—थोड़ी देर भी न ठहरना। जरा बैठो, ऐसी क्या टोटका करने आई थी।

टोटका होना—बहुत जल्दी, चटपट हो जाना। दस मिनट में खाना तैयार, बहन! ऐसा क्या टोटका हो गया।

टोपी उछलना—निरादर होना।

टोपी उछालना—बेइज्जती करना। मेरी टोपी उछालने वाले पर जूते पड़ते हैं।

टोपी देना—टोपी पहनाना। हाथ खराब हैं जरा मेरे सिर पर टोपी दे दो।

टोपी बदलना—(१) भाई चारा करना। तुमने किससे टोपी बदली है। (२) राजा बदलना। अंग्रेजी राज की तीन टोपी बदल चुकी हैं। (३) राज्य बदलना। हिन्दुओं के बाद दो टोपी बदल-चुकी हैं।

टोपी बदल भाई—वह जिससे टोपी बदल कर भाई का संबन्ध जोड़ा हो।

टोरना (आँख)—लज्जा आदि से दृष्टि हटाना, आँख मोड़ना। सूर प्रभु के चरित सखियन कहत लोचन टोरि।

टोह मिलना—पता लगना। चोर की टोह मिल गई।

टोह में रहना—तलाश में रहना। मैं ईमानदार आदमी की टोह में रहता हूँ।

टोह लगाना, लेना—पता या सुराग़ लगाना।

टोह रखना—खबर, देख भाल रखना। मैं तुम्हारी खूब टोह रखता हूँ।

ट्रेन छूटना—रेल का स्टेशन से चल देना।

ठ

ठंडक पड़ना—सरदी फैलना। रात को तो ठंडक पड़ती है।

ठंडक लगना—सरदी का असर पड़ना। रात को ठंडक लगी।

ठंड चढ़ना—ज्वर से पहिले सरदी लगना। मुझे ठंड चढ़ रही है कुछ उढ़ा दो।

ठंडा करना—(१) दफन करना। (२) तोड़ना, फेंकना। चूड़ियाँ ठंडी करो। (३) बुझाना। आग ठंडी करो। (४) जल में विसर्जन करना। आज सरस्वती की मूर्ति को ठंडी करने ले जावेंगे। (५) क्रोध शांत करना। स्त्री ने आकर गलबाहीं

डालते ही उनको ठंडा कर दिया। (६) तसल्ली देना, ढाढस बाँधना। उन्हें समझा बुझाकर ठंडा किया। (७) हराना, दबाना। इस बार की चढ़ाई शत्रुओं को ठंडा कर देगी। (८) जोश मिटाना गरमी झाड़ना। अभी बहकने दो, जगह किसी खतरे में डाल कर सब ठंडा कर दूँगा।

ठंडा पड़ जाना, होना—(१) बे रौनक होना, मंदा होना। आज कल बाजार ठंडा पड़ गया है। (२) मरने के समीप होना। उसका तमाम बदन ठंडा पड़ गया है। (३) मर जाना। वैद्य जी! आपका बीमार तो ठंडा हुआ। (४) उदास होना, हिम्मत न रहना। फेल होना सुन कर ठंडा होगया, फिर न पढ़ा। (५) खुश होना। सुन कर ठंडे हो जाओ। (६) क्रोध शांत होना। उसका गुस्सा ठंडा भी बड़ी जल्दी पड़ता है।

ठंडी आग—(१) पाला, तुषार। (२) बरफ़, हिम।

ठंडी आना — (१) शीत काल आना। (२) ज्वर से पहिले ठंड लगना।

ठंडी करना (माता या शीतला)— चेचक की अंतिम पूजा करना।

ठंडी गरमी—उपर की प्रीति, बनावटी प्रेम का आवेश।

ठंडी ढलना – चेचक के दानों का मुर्झाना। ठंडी कल ढलगई।

ठंडी साँस खींचना—दुख की लम्बी साँस, आह भरना। तुम क्यों ठंडी सांस भरती हो तुम्हारे भी लड़का हो जायगा। तुम्हारे बिना सारी रात ठंडी साँस खीचते बीती।

ठंडे ठंडे—(१) हँसी खुशी से। ठंडे ठंडे घर चली आई यही बहुत। (२) बिना विरोध, चुप चाप। ठंडे ठडे यहाँ से चले जाओ नहीं तो कुटंत हो जाएगी। (३) सवेरे, धूप से पहिले। रात भर यहाँ सोओ सवेरे ठंडे ठंडे चले जाना।

ठंडी कढ़ाई — कढ़ाई में पीछे हलुआ बना कर बाँटने की रीति, (हलवाई, बनिये)।

ठंडी निकलना—चेचक के दाने होना।

ठंढी मार—भीतरी मार, ऊपर न दिखाई दे अंदर चोट आवे। ठंडी मार मारो रिपोर्ट भी करे तो सबूत न दे सके।

ठंडी मिट्टी—(१) ऐसा शरीर जिसमें जवानी जल्दी न मालूम दे। (२) ऐसा शरीर जिसमें कामोद्दीपन न हो। यह स्त्री तो ठंडी मिट्टी है।

ठकुर सुहाती बातें-करना—मुँह देखी या सिर्फ खुश करने वाली बातें करना। हमहु कहव अब ठकुर सुहाती।

ठग लगना—ठगों का आक्रमण करना या पीछे पड़ना। उस रास्ते में बहुत ठग लगते हैं।

ठगा सा रहना, रह जाना—चकित, भौचक्का, धोखा खाया हुआ। कहा ठगी सी रही वाला परचौ कौन विचार।

ठग मूरी खाना—मतवाला होना। बूझति सखी सुनत नहिं नेकहुँ तुही किधौं ठगमूरी खाई।

ठगलाड्डू खाना—मतवाला होना। सूर कहा ठग लाड्डू खायो, इत उत फिरत मोह को मातो कबहुँ न सुध कर हरि चित लायो।

ठग विद्या खेलना—धोखा देना, धूर्तता या छल करना। मुझसे क्या ठगविद्या खेलोगे।

ठट के ठट—झुंड के झुंड, बहुत से।

ठट लगना—(१) भीड़ होना। आदमियों के ठट लग गये। (२) ढेर इकट्ठे होना। अर्जियों के ठट लगे हैं।

ठट कर बातें करना—बना बना कर एक एक शब्द पर जोर देते हुए बात करना।

ठठरी होना—दुबला हो जाना। तुम तो ठठरी हो रहे हो, ऐसा क्या रोग लगा है।

ठट्ठा उड़ाना मारना लगाना—दिल्लगी करना, हँसी करना। तुम तो ठट्ठा उड़ा रहे हो मैं सच कह रहा हूँ।

ठट्ठे में उड़ाना—मज़ाक में उड़ाना, बात बहलाना। सोचने की बात है, ठट्ठे में मत उड़ाओ।

ठठेरे ठठेरे बदलाई—जैसे का तैसा व्यवहार, दो समान धूर्तों, बलवानों का व्यवहार। यह तो ठठेरे ठठेरे बदलाई है उसने दीवानी दावा किया दूसरे ने फौजदारी में धर घसीटा।

ठठेरे की बिल्ली—खटके की आवाज़ का अभ्यस्त। रात दिन सड़क पर आहट रहती है तब भी नींद आ जाती है, भाई ठठेरे की बिल्ली जो ठहरे।

ठनकना (माथा)—बुरा संदेह होना, खटका या बुरी आशंका होना। तार पाते ही माथा ठनका।

ठनका कर लेना (रुपया)—खरे करके, बजा कर लेना। रुपये ठनका कर लाया हूँ।

ठन जाना (किसी बात पर) ठनना—(१) उद्यत हो जाना, प्रारम्भ हो जाना। अब जो ठन गई तो ठन ही गई पूरा ही करेंगे। (२) बैर बँध जाना, लड़ाई होना।

उन दोनों में ठनी है देखें कौन जीते।

ठन ठन गोपाल—(१) अज्ञान, मूर्ख। निरे ठनठन गोपाल हो कुछ अक्ल से तो सोचा होता? (२) गरीब। हम पर क्या रखा है हम तो ठन ठन गोपाल हैं।

ठसाठस भरना—(१) खूब कस कर या ठूँस कर भरना। ठसाठस भरो ताकि और न आवे। (२) बहुत भीड़ होना। कमरा ठसाठस भरा था तिल भर जगह न थी।

ठह ठह कर बोलना—हाव भाव के साथ, एक एक शब्द पर जोर देकर, मठार मठार कर बोलना। ठह ठह कर बोलता है जैसे कोई नवाब हो।

ठहरना (मन)—चित्त स्थिर या शान्त होना। जबै आऊँ साधु संगति में कछुक मन ठहराइ।

ठहरना (किसी बात पर)—संकल्प या निश्चित विचार होना। क्या अब चलने की ठहरी? गप बहुत हुई, अब खाने की ठहरे।

ठहरा—है। वह तुम्हारा भाई ठहरा कहाँ तक खबर न लेगा। तुम घर के आदमी ठहरे तुमसे क्या छिपाना। वे अपने सम्बन्धी ठहरे उन्हें क्या कहें।

ठाट खड़ा करना—ढाँचा तैयार करना। आपने क्या ठाठ खड़ा किया बताओ।

ठाट खड़ा होना—ढाँचा तैयार होना।

ठाट पड़ा रह जाना—दुनियाँ की सम्पत्ति तथा सुख यहीं रह जाना। सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा।

ठाट बदलना—(१) वेश या रूप रंग नया दिखाना। आज खूब ठाट बदले हैं। (२) और का और भाव दिखाना। काम निकालने या श्रेष्ठता प्रकट करने के लिये झूठे लक्षण दिखाना। (३) रंग बाँधना, बड़प्पन जताना। क्या ठाट बदल कर काबू में किया है। पैतरा बदलना। ठाट बदल कर वार किया।

ठाट बाँधना—वार करने की मुद्रा से खड़े होना। उसने ठाट बाँध कर गहरा घाव दिया।

ठाट बाट से रहना—सजधज कर, बनठन कर रहना। रहता तो बड़े ठाट बाट से है मेरे खयाल में तो लखपती ही होगा।

ठाट माँजना—दे० ठाट बदलना।

ठाट मारना—(१) पर झड़झड़ाना। (२) मौज उड़ाना, चैन करना।

ठाट से कटना—मज़े से दिन

बीतना। अपनी तो ठाट से कटती है दूसरा मरे चाहे जिये।

ठाढ़ा देना—(१) स्थिर रखना, ठहराना। बारह वर्ष दयो हम ठाढ़ो यह प्रताप बिनु जाने, अब प्रगटे वसुदेव सुवन तुम गर्ग वचन परिमाने। (२) खड़े तैरना।

ठाला बताना—(१) बिना कुछ दिये चलता करना, धता बताना। मैंने तो उसे ठाला बताया रुपये नहीं दिये।

ठाले बैठे—खाली बैठे, काम धंधा न रहते हुए। बैठे ठाले यही किया करो, अच्छा है।

ठिकाना करना—(१) व्याह के लिये घर ढूंढना। इनका भी कहीं ठिकाना करो तो घर बसे। (२) आश्रय, नौकरी लगाना। इनके लिये भी ठिकाना करो, खाली बैठे हैं। (३) ठहरना, टिकना। वहाँ मित्र के यहाँ ठिकाना किया। (४) स्थान करना, जगह नियत करना। अपने सोने का ठिकाना करो, मेरी फिक्र छोड़ दो।

ठिकाना ढूँढना — (१) जगह तलाश करना। (२) रहने के लिये जगह ढूंढना। (३) नौकरी या काम धंधा खोजना। (४) कन्या के व्याह के लिये वर ढूंढना। घबराओ नहीं, इस साल तुम्हारे लिये भी ठिकाना ढूंढ दूँगी।

ठिकाना लगना— (१) ठहरने को जगह मिलना। सिपाही जो भागे तो बीच में और तो कहीं ठिकाना न लगा बुढ़िया के घर में जा घुसे। (२) नौकरी जीविका का प्रबन्ध होना। इस आदत से तुम्हारा कहीं भी ठिकाना न लगेगा। (३) पता लगना। तुम्हारा ठिकाना नहीं लगता कहाँ रहते हो।

ठिकाना लगाना—(१) ढूंढना, पता लगाना। मैंने उनका ठिकाना लगा लिया है रात को चलेंगे। (२) आश्रय या जीविका, नौकरी देना।

ठिकाने आना—(१) मतलब की या असली बात पर आना। अब तुम ठिकाने पर आये अब समझ जाओगे। (२) ठीक विचार या बहुत सोचने के बाद यथार्थ बात समझना। हाँ, इतनी देर बाद अब बुद्धि ठिकाने पर आई है। (३) वाँछित स्थान पर पहुँचना। जो कोउ ताको निकट बतावे, धीरज धरि सो ठिकाने आवे।

ठिकाने की बात—(१) ठीक, सच्ची बात। ठिकाने की बात बतलाओ इधर उधर की मत बको। (२) समझदारी या युक्ति युक्त बात। जरासा लड़का है परन्तु बात बड़ी ठिकाने की कहता है। (३)

पते की बात, भेद खोलने वाली बात। (४) होश से बात करना।

ठिकाने न रहना—चंचल हो जाना। बुद्धि ठिकाने न रही, होश भी ठिकाने न रहे।

ठिकाने पहुँचना—(१) ठीक जगह पहुँचाना। (२) मार डालना। (३) चीज़ लुप्त या नष्ट कर देना। वह तो ठिकाने पहुँचा दी अब क्या हो सकता है।

ठिकाने लगना—(१) ठीक स्थान पर पहुँचना। चलते चलते दस बजे ठिकाने लगे। (२) काम या उपयोग में आना, अच्छी जगह खर्च होना। बहुत दिनों से बेकार पड़ी थी, आज ठिकाने लगी अच्छा हुआ। (३) सफल होना। मेहनत ठिकाने लग गई।

ठिकाने लगाना—(१) मार डालना। सैकड़ों पथिक ठिकाने लगा दिये। (२) काम को आखीर तक पहुँचाना। कोई भी तो काम ठिकाने नहीं लगाते सब अधूरा छोड़ देते हो। (३) ग़ायब करना। कहीं ऐसा ठिकाने लगाओ जो ढूँढने पर भी न मिले। (४) आश्रय देना, नौकरी, जीविका आदि लगाना। इस बेचारे को भी कहीं दस पाँच के ठिकाने लगा दो। (५) खर्च कराना। २०) तो मेरे ठिकाने लगा दिया काम कुछ किया नहीं। (६) सार्थक या सफल करना। इतनी मेहनत की है इसे तो ठिकाने लगाओ। (७) काम या उपयोग में लाना। (८) अच्छी जगह खर्च करना। (९) ठीक जगह पहुँचाना। (१०) खो देना। कोई चीज़ दे दो पता नहीं कहाँ ठिकाने लगा आता है। (११) खर्च कर डालना। उन्होंने सब कमाई ठिकाने लगाई।

ठीक आना—(१) ढीला या कसा न होना। यह कोट मेरे ठीक आता है। (२) पूरा पूरा तथा शुद्ध याद होना। (३) दे० ठीक उतरना (२)।

ठीक उतरना—(१) तोल में पूरा होना। अनाज तोलने पर ठीक उतरा। (२) सुन्दर और जैसा चाहिये वैसा होना। इस काग़ज़ पर चित्र ठीक उतरता है।

ठीक करना वा बनाना—(१) दण्ड देकर राह पर लाना। मैं मार मार कर ठीक कर दूँगा। (२) तंग करना या दुर्गति करना। मैं उसे ठीक कर दिया है अब वह गाली न देगा। (३) घड़ी ठीक कर दो।

ठीक देना, लगाना—(१) मन में पक्का निश्चय करना। नीके ठीक दई तुलसी अवलंब बड़ी डर आखर दू की। (२) जोड़ निकालना।

ठीक लगना—भला जान पड़ना।

मुझे तुम्हारा यह काम ठीक लगता है।

ठीकरा फोड़ना—दोष या कलंक लगाना। करते तुम हो और ठीकरा उसके सिर फोड़ते हो।

ठीकरा समझना किसी काम को या किसी भी मूल्य का न समझना। पराए माल को ठीकरा समझना चाहिये।

ठीकरा होना—पानी की तरह बहाया जाना, अंधा-धुंध खर्च होना। रुपये तो इस काम में ठीकरे होंगे तब जीतोगे।

ठीकरे पकवाना — नीलाम करा देना, असबाब तक बिकवा देना। तुमने उस बेचारे ठीकरे पकवा दिये, ऐसा क्या बिगाड़ा था।

ठीहा होना — रहने की जगह होना। तुम्हारा कहीं ठीहा भी है, यों ही मुझे तो पता न लगा।

ठेंगा दिखाना—(१) दे० अँगूठा दिखाना।

ठेंगा बजना — (१) मार पीट, लड़ाई दंगा होना। खूब ठेंगा बजा मुझे बड़ी खुशी हुई। (२) कोशिश बेकार जाना। जिसका काम उसी को साजे, और करे तो ठेंगा बाजे।

ठेंगे से—बला से, कुछ परवा नहीं। मेरे ठेंगे से मुझे क्या कुछ भी हो।

ठेंठी लगाना (कान में)—न सुनना।

ठेकना—सेकना, रोटी बनाना। हम तो खुद ही ठेक लेते हैं और खा लेते हैं।

ठेका भरना—घोड़े का उछल कूद करना। मेरा घोड़ा ऊँची नीची जगह खूब ठेका भरता है।

ठेका भेंट—ठेकेदार द्वारा दिया हुआ नज़राना।

ठोंक ठोंक कर लड़ना—जबर-दस्ती, ताल ठोक कर लड़ना। दिन दिन देत उरहनो आवै ठुंकि ठुंकि करत लरैया।

ठोंकना पीठ—दे० पीठ ठोकना।

ठेपी मुँह में देना—चुप करा देना या होना। ५००) के ठेपी मुँह में दो तो गवाही न दूँगा (कहावत)।

ठोकना बजाना—जाँचना, परखना। लोग दमड़ी की हाँडी भी ठोक बजा कर लेते हैं।

ठोकर उठाना—हानि, आघात या दुख सहना।

ठोकर खाता फिरना—इधर उधर मारा फिरना। कुछ नहीं करता यों ही ठोकरें खाता फिरता है।

ठोकर या ठोकरें खाना—(१) रास्ते के कंकड़ आदि की चोट पैर में सहना। जो सँभल कर न चलेगा वह ठोकर खाकर ही गिरेगा। (२) असावधानी या भूल के कारण

हानि सहना। ठोकर खावे बुद्धि पावे (कहावत)। (३) धोके में आना, चूक जाना। ५) की ठोकर खा गये। (४) दुर्गति सहना, जीविका के लिए भटकना। यदि वह कुछ न सीखेगा तो आप ठोकर खायगा। (५) लात सहना, पैर का आघात सहना। बड़ी ठोकरें खाकर दरोग़ा बनते हैं।

ठोकर लगना—भूल चूक के कारण नुकसान होना। हमें तो इस बार गवाही देकर ऐसी ठोकर लगी अब कभी भूल कर भी गवाही न देंगे।

ठोकर लेना—ठेस या पैर में चोट खाना। घोड़े ने दौड़ते दौड़ते ठोकर ली और गिर पड़ा।

ठोकर देना, जड़ना — पैर से आघात देना, ठोकर मारना। मैंने ऐसी ठोकर जड़ी कि वह चित्त हो गया।

ठोकरों पर पड़ा रहना—वेइज्जत होकर, मार गाली खाकर गुज़ारना। हम तो ठोकरों पर पड़े रहते हैं दूसरी नौकरी मिले तो यहाँ से छोड़ें।

ठोड़ी पर हाथ धर कर बैठना—चिंता या सोच में बैठना। ठोड़ी पर हाथ धरे कैसे बैठे हो क्या विचार रहे हो।

ठोड़ी पकड़ना या ठोड़ी में हाथ देना—(१) प्यार करना। (२) मीठी बातों से क्रोध शान्त करना। (३) मिन्नतें खुशामदें करके मनाना। मैंने ठोड़ी में हाथ देकर कहा कि इस बार मान जाओ पर वह बड़ा निर्दय है।

ठोसा दिखाना-दे० अँगूठा दिखाना।

ठोसे से—दे० ठेंगे से।

ठौर कुठौर—(१) बुरे ठिकाने, वेजगह। क्यों पत्थर फेंकते हो, किसी के ठौर कुठौर लग गया तो जान को आ जायगा। (२) वे मौके, बुरे वक्त पर।

ठौर न आना—पास न फटकना। हरि को भजै सो हरिपद गावै, जनम मरन तिहि ठौर न आवै।

ठौर रखना—मार कर गिरा देना, मार डालना। दो आदमी तो वहीं ठौर रखे दो भागे उन्हें रास्ते में मार गिराया।

ठौर रहना—(१) जहाँ के तहाँ रह जाना। दस डाकू तो ठौर रहे, दो भाग गये। (२) मारे जाना।

ठौर (किसी के)—(१) किसी के स्थानापन्न। मुझे अपने पिता की ठौर समझो शरमाओ मत। (२) तुल्य। किबले के ठौर बाप बादशाह शाहजहाँ ताको कैद कियो मानो मक्के आग लाई है।

ठौर ठौर तोड़ देना—हड्डी हड्डी तोड़ देना, बहुत गहरी मार मारना।

ड

डंक जलना—बुरा होना। इसका डंक जले मुई ने मेरी शिकायत कर दी।

डंका देना, पीटना—(१) घोषित करना, चिल्ला चिल्ला कर सब को सुनाना। डंका दिया कि जो पकड़ेगा इनाम पावेगा। (२) मुनादी करना। (३) दे० डंका बजाना।

डंका बजना— शासन, अधिकार होना। अंग्रेज़ों से पहिले मुग़लों का डंका बजता था।

डंका बजाना--(१) खुशी मनाना। वहाँ होली का डंका बज रहा था कि मुग़ल सेना ने आक्रमण कर दिया। (२) राज्य या हुकूमत होना। और दस दिन डंका बजा लेने दो फिर तो गद्दी से उतारे जावेंगे। (३) अपने को नामी बनाना। वह अपने नाम डंका हर जगह बजाता है। (४) घोषित या प्रसिद्ध करना।

डंका डालना—(१) मुरगे का चोंच मारना। (२) मुरगे से मुरगे को लड़ाना।

डंड पड़ना—नुकसान या फ़िज़ूल ही खर्च होना। खेल तुम देखो डंड हम पर पड़े ?

डंड पेलना — (१) खूब डंड करना। (२) मज़े उड़ाओ। नहीं मिली तो इमली के पत्ते पर डंड पेलो।

डंड भरना—नुकसान के बदले में धन देना, जुरमाना या हरजाना देना। १००) डंड भरना पड़ा।

डंडा बजाते फिरना—मारे मारे फिरना, योंही घूमना। क्यों डंडे बजाते फिरते हो घर बैठो।

डंडी मारना—तराजू ऐसे झुकाना कि सौदा कम चढ़े।

डंडे देना—विवाह के बाद भादों बदी चौथ को बेटे वाले के यहाँ चाँदी के पत्तर चढ़े कलम दवात आदि भेजना।

डकार न लेना—(१) धन या वस्तु लेजा कर या उड़ाकर पता न देना या न लौटाना। वह हजारों रुपये खाकर भी डकार नहीं लेता। (२) कोई काम करके पता न देना। तुम्हारे पेट की माया तुम्हीं जानो तुम तो डकार तक नहीं लेते।

डग देना—कदम बढ़ाना, चलने में आगे की ओर पैर रखना। पुर ते निकसी रघुबीर बधू धरि धीर दिये मग में डग द्वै।

डग भरना—कदम बढ़ाना जरा लंबे डग भरो क्या धीरे धीरे चलते हो।

डगडगा कर पानी पीना—एक दम में बहुत सा पानी पी जाना।

डगर बताना—(१) उपाय बताना। (२) उपदेश देना। (३) रास्ता बताना। वे अच्छे अच्छों को डगर बता देते हैं।

डग मारना—लंबे पैर बढ़ाना, तेज चलना। चार डग मारी कि गाँव आया।

डटकर खाना—खूब पेट भर कर खाना।

डटा रहना—ठहरे रहना, जहाँ का तहाँ रहना। तुम मुकाबिले में डटे रहे तो जीत जाओगे।

डफली जितनी राग उतने—जितने लोग उतनी राय। भारत में एक मत नहीं अपनी अपनी डफली अपना अपना राग गाते हैं।

डब पकड़ कर कराना—गला दबा कर काम कराना। वह मेरा बड़ा दोस्त है यह काम तो मैं डब पकड़ कर करा लूँगा।

डब में आना—वश या काबू में आना। अब वह डब में आया है।

डबोना नाम—प्रसिद्धि नष्ट करना, कलंक लगाना। नीच कार्य करके तुमने बाप का नाम डुबो दिया।

डबोना लुटिया—महत्व, प्रतिष्ठा होना। लुटिया डबोदी अरे कुछ तो समझ कर कहते।

डबोना वंश—कुल में कलंक लगना। डूबा वंश कबीर का जब उपजा पूत कमाल।

डल का डल—ढेर का ढेर, बहुत सा।

डाँगर घसीटना—(१) चमारों की तरह मरा चौपाया घसीट कर ले जाना। (२) अपवित्र काम करना।

डाँट में रखना—वश या आज्ञा में रखना। बच्चे को डाँट में रखो नहीं बिगड़ जायगा।

डांट रखना (किसी पर) दबाव या शासन रखना। डाँट न रखोगे तो औरत सिर चढ़ेगी।

डाँड़ मारना—मेंड उठाना।

डाँडा होली का—लकड़ियों का ढेर जो होली जलाने के लिये बसंत पंचमी से रखा जाता है। बच्चे होली के डांड़े में पेड़ के पेड़ काट लाते हैं।

डाँड़ी मारना—कम तोलना।

डांवाडोल फिरना—दुविधा में घूमना।

डाक बैठाना, डाक लगाना—शीघ्र यात्रा के लिये जगह जगह चौकी लगाना। दिल्ली से कलकत्ते दो दिन में पहुँचते थे हर सात मील पर डाक बैठती थी।

डाक लगना—जल्दी खबर पहुँचाने या यात्रा के लिये रास्ते में जगह जगह आदमियों, सवारी आदि का प्रबन्ध होना। महाराजा

की डाक रात को लगती थी जब वह गंगा जाते थे।

डाढ़ गरम होना—(१) रिश्वत मिलना। हमारी डाढ़ गरम हो तो हम काम करा दें। (२) भोजन मिलना, बढ़िया ताजा खाना मिलना।

डाढ़ी का एक एक बाल करना—दुर्दशा करना, डाढ़ी उखाड़ लेना।

डाढ़ी को कलंक लगाना—श्रेष्ठ बुड्ढे को कलंक लगाना।

डाढ़ी छोड़ना — डाढ़ी बढ़ाना, डाढ़ी न मुड़वाना। आज कल छः महीने से डाढ़ी छोड़ रखी है।

डाढ़ी पेट में होना—मन का भेद न देना, छोटी अवस्था में गम्भीर ज्ञान होना।

डाढ़ी फटकारना—(१) हाथ से डाढ़ी के बाल झटकना। (२) संतोष और उत्साह प्रकट करना। ठाकुर साहब ने डाढ़ी फटकार कर कहा, मुझे कोई चिन्ता नहीं।

डाढ़ी रखना—डाढ़ी के बाल न मुंडवाना, डाढ़ी बढ़ाना।

डाढ़ें मार मार कर रोना—छाती पीट पीट कर, खूब चिल्ला कर रोना।

डाल रखना—(१) रख छोड़ना, रखे रहना। मैंने उसे घर डाल रखा है कल लादूँगा। (२) काम लेकर उसे हाथ न लगाना, रोक रखना, देर लगाना। करना है तो कर डालो यों ही क्यों डाल रखा है। (३) स्त्री बना रखना।

डाली देना, लगाना—डलिया में मेवे फल आदि सजा कर भेंट रूप भेजना।

डींग मारना, हाँकना—अपनी झूठी बड़ाई करना, बढ़ बढ़ कर बातें करना।

डीठ चुराना, छिपाना — नज़र छिपाना, सामने न देखना।

डीठ जोड़ना—चार आँखें करना।

डीठ बाँधना—माया या जादू कर के निगाह बाँध देना जिससे सामने की वस्तु ठीक ठीक न सूझे।

डीठ मारना—नजर डालना।

डीठ रखना—देख रेख रखना।

डीठ लगाना—नज़र लगाना।

डील डौल का होना — लंबा, ऊँचा, हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होना। डील डौल का आदमी है।

डुगडुगी पीटना—दे० डंका देना।

डुबकी खाना, मारना, लगाना—ग़ायब हो जाना। तुम तो ऐसी डुबकी मार गये पता भी न चला।

डुबोना-नाम-लुटिया - वंश—दे० डबोना।

डूब जाना—(१) मारे जाना। १००) हमारे भी डूब गये। (२) इज्जत, नाम न रहना। (३) कुछ न

हो सकना। तुम भी डूब गये छोटे से पिट गये। (४) छिप जाना, गायब होना।

डूबती नैया पार लगाना—दुखसे बचाना। मेरी डूबती नैया पार लगा दो मैं जन्म भर याद करूँगा।

डूबते को तिनके का सहारा होना—संकट में पड़े को थोड़ी सहायता भी बहुत होना। मुझ डूबते को तुम्हारे ५) के तिनके का सहारा भी बचा लेगा।

डूबना चुल्लू भर पानी में, डूब मरना — शरम के मारे मर जाना।

डूबना उतराना—(१) सोच में पड़ना। (२) चिंताकुल होना, जी घबराना। हम तो यों डूबते उतराते ही मर जायँगे।

डूबा नाम उछालना—गई इज़्ज़त फिर पैदा करना। उसने यह एक नामवरी का काम करके डूबा नाम उछाल लिया।

डूबना जी—(१) बेहोशी होना। (२) जी घबराना या व्याकुल होना।

डूबना नाम—बदनामी होना, प्रतिष्ठा नष्ट होना। हमारा नाम लड़की पर रुपया लेने से डूब गया।

डेढ़ ईंट की मस्जिद जुदा बनाना—मिलकर न काम करना।

डेढ़ चावल की खिचड़ी पकाना—अपनी राय बहुमत से अलग रखना।

डेढ़ चुल्लू लहू पीना — मार डालना। मैं सौत का डेढ़ चुल्लू लहू पीकर ही चैन से बैठूँगी।

डेरा डंडा उखाड़ना — अपना समान लेकर चला जाना। साधू जी ने अपना डेरा डंडा उखाड़ लिया।

डेरा डालना — ठहरना, सामान फैलाकर रहना। आज एक दोस्त के यहाँ डेरा डाला है कल तुम्हारे घर रहेंगे।

डेरा पड़ना—छावनी या टिकान पड़ना। भरि चौरासी कोस पड़े गोपन के डेरा।

डोब देना—डुबोना, गोते देना। नील का डोब दो तो कपड़ा सफेद होगा। कलम को डोब देना।

डोर पर लगाना—ढब पर लाना, अनुकूल बनाना। कई दिन समझा कर कहीं डोर पर लगाया है अब वह चला चलेगा।

डोर भरना—फलीता लगाना।

डोर मजबूत होना -- जिन्दगी बाकी रहना। अभी तो डोर मजबूत है अभी न मरेंगे।

डोर लगना—ध्यान या प्रेम होना। भगवान सों लगी डोर वही लगावे पार।

डोर होना—मोहित, लट्टू होना।
डोरा डालना—प्रेम में फँसाना, अपनी ओर खींचना। डोरा ही डाल रखा है, मनोरथ पूरा नहीं हुआ है।
डोरा लगना-प्रीति सम्बन्ध होना।
डोरी खींचना—पास बुलाने के लिये याद करना। जब भगवती डोरी खींचेगी तब जायेंगी।
डोरी लगना—पहुँचने या मिलने की ही याद या ध्यान रहना। अब तो घर की डोरी लगी हुई है।
डोरी ढीली छोड़ना—देख भाल, चौकसी कम करना। जहाँ डोरी ढीली की और बच्चा बिगड़ा।
डोरे छूटना—आँख लाल होना।
डोरे छोड़ना—सुरमा लगाना।
डोला देना—(१) बेटी को वर के घर लेजाकर व्याहना। (२) राजा या सरदार को भेंट की तरह अपनी बेटी व्याहना।
डोला निकालना—दुलहिन को विदा करना।
डोला लेना—भेंट में कन्या लेना।
डौंडी देना, पीटना — (१) दे० डंका देना। (२) सब किसी से कहते फिरना। घर में बात होती है यह शहर भर में डौंडी पीट देता है।
डौंड़ी बजना—(१) घोषणा होना। (२) चलती होना। (३) दुहाई फिरना, जय जयकार होना। लौंडी के घर डौंडी बाजी ओछौं निपट अजानो।
डौल डाल होना — आशा या स्वरूप होना। अभी तो तुम्हारे रुपये पट जायँगे ऐसा डौल डाल दिखाई नहीं देता।
डौल डालना — लग्गा लगाना, ढाँचा खड़ा करना। अब तो उसने कुछ डौल डाला है इस साल सारा काम हो जायगा।
डौल पर लाना—(१) काट छाँट कर सुडौल या दुरुस्त करना। (२) ऐसा करना जिससे कुछ मतलब निकल सके।
डौल से लगाना—क्रम से या इस तरह लगाना जो देखने में भावे। डौल से लगाओ जो गाहक देखते ही ले।
डौल बाँधना, लगाना— उपाय या युक्ति करना। कहीं से १००) का डौल बाँधो तो काम चले।
ड्योढ़ी खुलना—(१) दरबार या घर में आने या आने जाने की आज्ञा मिलना। मेरे लिये तो उनकी ड्योढ़ी सदा खुली ही रहती है।
ड्योढ़ी बंद होना — (राजा या रईस के यहाँ) आने जाने की मनाही होना। उनकी ड्योढ़ी बंद है अंदर से हुकुम आयगा तब जाना मिलेगा।

ड्योढी लगना—द्वार पर द्वारपाल बैठना जो बिना आज्ञा अंदर न जाने देता हो। अजी वह भी एक तरह के राजा ही है, ड्योढ़ी लगती है बिना आज्ञा लाट साहब भी नहीं जा सकते।

ढ

ढंग का होना—(१) खूबसूरत, वह लड़का कुछ ढंग का नहीं है। (२) व्यवहार चतुर, कार्य कुशल। आदमी तो बड़े ढंग का है, वह ग़लती नहीं कर सकता।

ढंग पर चढ़ना—काम निकलने के अनुकूल होना। कुछ रुपया उससे भी लेंगे परन्तु अभी वह हमारे ढंग पर नहीं चढ़ा है थोड़े दिन और ठहरो।

ढंग पर लाना—ऐसा बनाना (आदमी को) कि कुछ अर्थ सिद्ध हो सके। बड़ी मुश्किल से ढंग पर लाया हूँ अब वह तुम्हारा काम कर देगा।

ढंग बर्तना—दिखाऊ व्यवहार करना। वह बड़ा ढंग बर्तता है ताकि दूसरों को मालूम दे बड़ा सीधा है।

ढंग होना—आशा या स्वरूप होना। उनके देने के ढंग होते तो दावा ही क्यों करता।

ढंग से बर्तना—किफायत से खर्च करना।

ढँढोरा पीटना / **ढँढोरा फेरना**—ढोल बजाकर चारों ओर सूचना देना या मुनादी करना।

ढकोसला होना—ऊपरी दिखावट, कपट व्यवहार। उनका प्रेम ढकोसला है वे अंदर से इतना प्रेम नहीं करते जितना दिखाते हैं।

ढचर बाँधना—(१) ढकोसला करना। (२) बखेड़ा या टंटा बढ़ाना। तड़क भड़क रखना। उसने ढचर तो ऐसा बाँध रखा है जैसे लख पती है।

ढब की बात—उचित और मौके की बात। ढब की बात करो जो हो भी सके।

ढब डालना—(१) आदत डालना। मैंने पहिले से ही वह ढब डाला है कि वह कुछ न कह सके। (२) शऊर सिखाना, अच्छी आदत डालना। लड़के को ढब पर डालो क्यों बिगाड़ते हो।

ढब पर चढ़ना—ऐसी अवस्था जिससे मतलब निकल सके। अगर

वह ढब पर चढ़ गया तो बहुत काम निकलेगा।

ढब पर लगाना वा लाना—अपने मतलब का बनाना। मैं अब उसे ढब पर ले आया हूँ आप काम निकाल सकते हैं।

ढय पड़ना—उत्तर पड़ना, यकायक आकर ठहर जाना। तुम कहाँ ढय पड़े कोई चिट्ठी न पत्री।

ढरकना दिन—(१) दिन का उत्तरार्द्ध होना। (२) सूर्यास्त होना।

ढर्रा डालना— आदत, अभ्यास कराना। पहिले से ही ढर्रे पर डालोगे तो ठीक होगा।

ढलना जवानी— युवावस्था का जाता रहना।

ढलना दिन—शाम होना।

ढलना सूरज या चाँद-अस्त होना।

ढला हुआ साँचे में—(१) सुन्दर, सुडौल। (२) शुरु से ही होना। वह तो ढला ही ऐसे साँचे में है कि किसी के काम न आवे।

ढाई घड़ी की आना—चटपट मौत आना। मुई को ढाई घड़ी की आये।

ढाई चुल्लू लहू पीना—(१) दे० डेढ़ चुल्लू...। (२) कठिन दण्ड देना। तेरा ढाई चुल्लू लहू पीकर ही मुझे कल पड़ेगी।

ढाई दिन की बादशाहत—(१) दुल्हा बनना। (२) थोड़े दिनों का ऐश्वर्य भोग। ढाई दिन की बादशाहत में यह ज़ोर जुल्म ?

ढाक के तीन पात—(१) सदा का निर्धन। (२) परिवार थोड़ा। वही ढाक के तीन पात जो लड़के की बहू आई तो लड़की उतर गई घर में फिर पाँच के पाँच।

ढाक तले की फूहड़ महुए तले की सुघड़—धन वाली गुणवती निर्धन निर्गुणी। कुछ नहीं आता पर हैं तो सेठानी कोई बुराई नहीं कर सकता भाई ढाक...।

ढाड़ मारना—चिल्लाकर रोना।

ढाढ़स देना या बँधाना—वचनों से दुखी या निराश के चित्त को शांति करना, तसल्ली देना।

ढाल बाँधना—ढाल हाथ में लेना।

ढिंढोरा पीटना या बजाना—दे० डंका देना।

ढील देना ढीली छोड़ना—(१) बंधन ढीला करना। (२) अंकुश न रखना, स्वच्छंद करना। तुमने ज़रा ढील छोड़ी और यह सिर पर चढ़ा।

ढीली आँख—अधखुली, रस या मद भरी दृष्टि। ढीली अँखियन ही इतै गई कनखियन चाहि।

ढीला पड़ जाना—(१) कमजोर तथा सुस्त हो जाना। अब तो आप कुछ ढीले पड़ गये हैं क्या बहू यहीं है ? (२) गुस्सा कर रह जाना। (३) रहम आ जाना, नरम हो जाना।

ढुँढिया चढ़ना—मुश्कें बाँधना। उसने झट उसकी पगड़ी उतार ढुँढिया चढ़ाय मूछ डाढ़ी और सिर मूँड़ रथ के पीछे बाँध लिया।

ढेर करना—मार कर गिरा देना।

ढेर रहना—(१) गिर कर मर जाना। (२) थक कर चूर चूर हो जाना, बहुत शिथिल हो जाना। तुमने इतना भगाया कि हम तो ढेर रह गये।

ढेर होजाना—(१) गिर पड़ना। सारा मकान भूचाल में ढेर हो गया। (२) गिर कर मर जाना। (३) बहुत थक कर बैठ जाना।

ढोल पीटना या बजाना—(१) चारों ओर कह डालना, प्रकट करना। हमारे मामले का तुमने शहर भर में ढोल पीट दिया।

ढोला गाता रहना—मस्त होकर गाता फिरना। वह तो ढोला गाता फिरता है घर तो सिर्फ खाने के लिये आता है।

त

तंग आना, होना—घबरा जाना, थक जाना, दुखी होना। हम तो तुम्हारी आदतों से तंग आगये।

तंग करना—दुख देना, सताना। मुझ गरीब को क्यों तंग करते हो।

तंग रहना—दुखी, दरिद्र होना।

तंग हाथ होना—धनहीन या पल्ले पैसा न होना। आजकल हाथ तंग है आपके रुपये अगली फसल पर देंगे।

तंग हाल होना—(१) संकट में फँसा होना। (२) निर्धन होना। (३) बीमार होना। आजकल तो बड़ा तंग हाल है देख आओ बल्कि मदद करने जाओ।

तंग होना—ओछा, चुस्त होना। यह कोट कुछ तंग है।

तंत निकालना—सार ग्रहण करना। इन बातों से मैंने तंत निकाला कि तुम रुपया न दोगे।

तंदूर झोंकना—भाड़ झोंकना, निकृष्ट काम करना।

तकदीर का खेल होना—भाग्य में परिवर्तन होना कल वह करोड़ पति थे आज भीख माँगते हैं यह सब तकदीर के खेल हैं।

तक़दीर का मुँह फेर लेना—बुरे दिन आना, काम बिगड़ना। जिस कार्य में पहिले लाखों मिलते थे आज जाते हैं यह सब तकदीर के मुँह फेर लेने के कारण।

तक़दीर ठोकना—(१) सुख के बाद दुख होना। बेचारे अब तकदीर ठोकते हैं,—तब तो धनी

थे पढ़ना व्यर्थ समझते थे। (२) भाग्य को कोसना, बुरा कहना।

तकदीर लड़ना—भाग्य से विजय होना, काम बनना। तकदीर लड़ गई १०००) की लाटरी आगई।

तकदीर सीधी होना—बात बनना।

तक़दीर सोजाना—भाग्य खराब होना।

तकिया कलाम होना—किसी शब्द को बार बार कहने का अभ्यास होना। 'समझे' तो उनका तकिया कलाम है, हर बात में समझे जरूर कहते हैं।

तख्ता उलटना—(१) बने बनाये कार्य या इन्तजाम का बिगड़ जाना। सुबह जाकर देखा तो तख्ता ही उलटा हुआ था, रात को बैरी ने सिखा दिया सो वह बोलते भी न थे। (२) बना बनाया काम बिगाड़ना। तुमने तो तख्ता ही उलट दिया अब वह मेरी भी नहीं मानता।

तख्ता हो जाना—ऐंठ या अकड़ जाना। फकीर को रात में सर्दी लगी सुबह देखा तो तख्ता हो गया है।

तटस्थ होना—किसी की ओर न होना। मैं किसी के झगड़े में नहीं मैं तो तटस्थ हूँ।

तन की तपन बुझाना—(१) भूख मिटाना। (२) मुहब्बत की मुराद मिलना।

तन को लगना—(१) (खाने की चीज़ का) शरीर को पुष्ट करना। जब चिंता छूटे तब खाना पीना भी तन को लगे। (२) जी पर असर होना, हृदय में बैठना। चाहे कोई काम हो, जब तक तन को नहीं लगती तब तक पूरा नहीं होता।

तनमन मारना—इंद्रियों तथा इच्छाओं को काबू करना। विधवा को तन मन मार कर जीवन बिताना है।

तन मन से करना—दिल लगाकर, परिश्रम से करना। वह मालिक का काम तन मन से करता है।

तन में फूले न समाना—बहुत खुश होना। लड़का जज बन गया यह सुनकर वह तो तन में फूली न समाती थी।

तपन का महिना—बहुत गरमी वाला महिना। जेठ तपन का महिना है।

तपाक बदलना—नाराज़ होना, तेवर बदलना। उसने तपाक बदल कर कहा अब हद होगई मैं हीं सह सकता।

तपौनी का गुड़—(१) तपौनी की पूजा का गुड़ जो ठग लोग नए

साथी को खिलाते थे। (२) नए आदमी को मंडली में मिलाते समय दिया जाने वाला पदार्थ या काम। ये इलायचियें तपौनी के गुड़ हैं इन्हें खाओ तो मंडली वाले समझे जाओ।

तबला खनकना, ठनकना—(१) नाच रंग होना। दिन रात तबला ठनकता था आज वही भीख माँगते हैं। (२) तबला बजाना। खनकाओ तबला मैं गाता हूँ।

तबला मिलाना — गुल्लियों को ऊपर नीचे हटा कर पूरी पर समान तनाव डालना जिससे स्वर सब ओर एक सा निकले।

तबीअत आना—(१) लेने की इच्छा होना। फाउन्टेन पेन पर तबीअत आ गई है तो खरीद लो। (२) प्रेम होना, आशिक होना। जिस पर तबीअत आई उसके अंग लगो।

तबीअत उलझना—(१) प्रेम हो जाना, दिल फँसना। (२) जी घबराना।

तबीअत खराब होना — (१) जी मिचलाना। मेरी तबीअत कुछ खराब हो रही है इलायची दे दो। (२) बीमार होना। आजकल तबीअत खराब है अगले सप्ताह आवेंगे।

तबीअत फड़क उठना, फड़क जाना—उमंग आना, खुश होना, उत्साह होना। भूषण के कवित्तों और बिहारी के दोहों से तबीअत फड़क उठती है।

तबीअत फिरना—प्रेम न रहना, जी हटना। अब तो उनसे तबीअत ही फिर गई।

तबीअत बिगड़ना—दे० तबीअत खराब होना।

तबीअत भरना—(१) संतोष या तसल्ली होना। (२) तृप्त होना। बस अब तबीअत भर गई अधिक की कोई जरूरत नहीं। (३) संतोष करना। हमने अच्छी तरह उनकी तबीअत भरदी तब उन्होंने रुपये लिये। (४) मन भरना, इच्छा न रहना। अब इन कामों से हमारी तबीअत भर गई।

तबीअत पर जोर या बोझ डालना — खास ध्यान देना, तवज्जह करना। जरा तबीअत पर जोर डाला करो बढ़िया शायरी करने लगोगे।

तबीअत लड़ाना—दे० तबीअत पर जोर डालना।

तबीअत लगना — (१) ध्यान लगा रहना। कई दिनों से उनकी चिट्ठी नहीं आई, तबीअत इधर ही लगी है पता नहीं क्या कारण है। (२) मन में मुहब्बत होना।

तबीअत लगी है जिनसे उनके गले लगो तुम।

तबीअत लगाना—(१) परिश्रम करना, ध्यान लगाना। तबीअत लगा कर काम किया करो। (२) मुहब्बत में फँसना। तबीअत लगाई जिससे हम हो गये उसी के।

तबीअत होना—चाहना होना, दिल में अनुराग होना। मेरी तो उस पर तबीअत है, दिलासको तो दिला दो।

तमाचा जड़ना, लगाना—थप्पड़ मारना।

तमाचे से मुँह लाल करना—जोर से तमाचा मार कर गाल लाल कर देना।

तमाम होना—(१) मर जाना। वह तो तमाम हुए, रास्ते का काँटा गया। (२) पूरा होना। (३) ख़त्म होना। दे ले के किस्सा तमाम हुआ।

तमाशे की बात होना—अनोखी बात। क्या तमाशे की बात है वह मानता नहीं तुम मनाते हो।

तय पाना—निश्चित होना, ठहरना।

तरतीब देना—क्रम से रखना, सजाना। कमरे में हर एक चीज़ को तरतीब दी गई थी।

तरद्दुद में पड़ना—चिंता में पड़ना।

तरस खाना—रहम करना।

तरसा तरसा कर देना—थोड़ा थोड़ा करके, इच्छा से कम देना।

तरसा तरसा कर मारना—एक ही दम नहीं, धीरे धीरे सता सता कर मारना।

तरह उड़ाना—ढँग की नकल करना।

तरह देना—(१) टालमटूल करना, चकमा देना। वह मुझे तरह देकर आप चलता बना। (२) जाने देना, ख्याल न करना। इन तेरह ते तरह दिये बनि आवे साईं। (३) पूर्ति के लिये समस्या देना।

तराजू हो जाना—(१) तीर का घुसकर आधा इधर उधर हो जाना। (२) बराबर बराबर का सैनिक बल होना। दो घंटे हो गये न कोई हारता है न जीतता है तराजू हो गये हैं; कोई पलड़ा भी हलका भारी नहीं।

तरारा भरना—जल्दी जल्दी करना।

तरारा मारना—डींग हाँकना। क्यों तरारा मारते हो हम जानते हैं जितने वीर हो।

तल करना—नीचे दबा लेना, छिपा लेना (जुआरी)।

तलब करना—(१) बुला भेजना, पेश कराना। गवाह तलब करो। (२) माँगना, मँगाना। जवाब तलब कर लिया। तलमलाता

फिरना—बेचैन फिरना। बेचारा रुपये के लिये तलमलाता फिरता है कोई नहीं वक्त का साथी।

तलवा खुजलाना—यात्रा का अभ्यास होना, यात्रा करना। तुम्हारे बड़े तलवे खुजलाते हैं हर हफ़्ते कभी यहाँ जाते हो कभी वहाँ।

तलवा न टिकना, तलवा न भरना—जम कर न बैठना, पैर न टिकना।

तलवे चाटना—बहुत ही खुशामद करना। रोज मेरे तलवे चाटता है, पहिले ऐंठा फिरता था।

तलवे छलनी होना—चलते चलते पैर घिस जाना, बहुत दौड़ धूप करनी पड़ना।

तलवे तले आँखें मलना—दे० तलवों से आँखें मलना।

तलवे तले मेटना—रौंद डालना, कुचल कर नष्ट करना। सौत को तलवे तले मेट दूँगी तब पानी पीऊँगी।

तलवे तले हाथ धरना—खुशामद करना।

तलवे धो धो कर पीना—बड़ी श्रद्धा-भक्ति, प्रेम, सेवा भाव प्रकट करना।

तलवे सहलाना—बहुत सेवा, खुशामद करना।

तलवों में से तेल निकलना निकालना—(१) बहुत किफायत करना। (२) बहुत दूर जाने के लिये भी सवारी किराये न करना।

तलवों से आँखें मलना—(१) दे० तलवों तले मेटना। (२) बहुत प्रेम प्रकट करना। वह दिखाने को तो तलवों से आँखें मलता है जैसे मुझे ही सब कुछ मानता है। (३) बड़ी दीनता, आधीनता दिखाना।

तलवों से आग लगना—बहुत क्रोध चढ़ना।

तलवों से मलना—रौंदना, कुचल देना।

तलवों से लगना—(१) बुरा लगना, चिढ़ होना। (२) क्रोध चढ़ना।

तलवों से लगना सिर में जाकर बुझाना—सिर से पैर तक क्रोध होना, क्रोध में सारा शरीर काँपना।

तलवार का खेत—लड़ाई का मैदान। तलवार के खेत में जो काटेगा वह पावेगा।

तलवार का डोरा—बाढ़, धार।

तलवार का बल—(१) तलवार का टेढ़ापन। (२) चलाने की शक्ति। तलवार का बल ही विजय देता है।

तलवार का मुँह—धार।

तलवार का हाथ—(१) चलाने का ढँग। उसके तलवार के हाथ

तो बड़े सधे हुए हैं। (२) तलवार का वार। तलवार का हाथ जमा और मुक्त हुए।

तलवार की आँच या आग—तलवार की चोट का सामना करना। तलवार की आग से बचा तो दाग़ी न बचा तो गया।

तलवार के घाट उतारना—तलवार से मारना। सैकड़ों वीर तलवार के घाट उतार दिये।

तलवार खींचना — म्यान से तलवार निकालना।

तलवार जड़ना—तलवार मारना।

तलवार तोलना—तलवार सँभालना, वार पूरा बैठे इसका अंदाजा लगाना।

तलवार पर हाथ रखना—(१) तलवार की कसम खाना। मैं तलवार पर हाथ रख कर कहता हूँ, या तो मर जाऊँगा वरना छुड़ा कर लाऊँगा। (२) तलवार निकालने के लिये मूठ पकड़ना।

तलवार बरसना—ख़ूब तलवार चलना।

तलवार बाँधना—तलवार साथ रखना या कमर में बाँधना।

तलवार म्यान में करना—मारने की इच्छा न रहना। तलवार म्यान में करो महाराज! यह तो दूत है।

तलवार सूँतना, सौंतना—तलवार म्यान से निकालना।

तलवारों की छाँह में—(१) रण क्षेत्र में। (२) तलवार लिये हुए वीरों की रक्षा में। तलवारों की छाँह में रानी को वहाँ पहुँचाया।

तलाशी देना—घर-बार, कपड़ा-लत्ता आदि ढूँढने देना।

तलाशी लेना—गुम या छिपी वस्तु को पाने के लिये किसी के रखने ढकने के सब स्थान देखना। तुम तलाशी ले सकते हो मेरे पास नहीं है।

तले ऊपर—(१) उलट पलट, गड्ड मड्ड, ऊपर की नीचे, नीचे की ऊपर। सब काग़ज़ लगा कर रखे थे तुमने तले ऊपर कर दिये। (२) एक के ऊपर दूसरा। किताबों को तले ऊपर रख दो।

तले ऊपर के—आगे पीछे के, एक के बाद झट दूसरा। तले ऊपर के लड़के हैं इसी से लड़ा करते हैं। दोनों व्याह तले उपर के हैं एक से सीधे दूसरे में जाना है।

तले ऊपर जी होना—(१) दे० जी मचलना। (२) जी ऊबना, घबराना।

तले ऊपर होना—(१) उलट पलट हो जाना। (२) संभोग में प्रवृत्त होना।

तले की दुनिया ऊपर होना—(१) बहुत बदल जाना, उलट फेर हो जाना। (२) जो चाहे सो हो

जाना। चाहे तले की दुनियाँ ऊपर हो जाय मैं अब वहाँ न जाऊँगा।

तले की साँस तले और ऊपर की ऊपर रह जाना—(१) भौचक्का रह जाना। (२) डर से स्तब्ध रह जाना। ज्यों ही उन्होंने घुड़क कर आँख दिखाईं तो तले……।

तले बच्चा होना—पशु के साथ बच्चा होना। गाय के तले बछड़ा है।

तवा सा मुँह होना—काला मुँह होना।

तवा सिर से बाँधना—प्रहार सहने के लिये सुरक्षित होना। हमने तो पहिले ही तवा सिर से बाँधा हुआ है ताकि वार सह सकें।

तवे का हँसना—तवे के नीचे लगे कालिख का बहुत जलते जलते लाल हो जाना जो घर में विवाद होने का कुशकुन समझा जाता है।

तवे की बूँद होना—(१) कुछ असर न होना। तुम्हारा क्रोध तो तवे की बूँद है मैं क्या परवा करूँ ऐसों को तो यों ही जला डालूं। (२) क्षण स्थायी। (३) जिससे कुछ तृप्ति न हो। इतना दूध तो तवे की बूंद है इससे क्या पेट की आग ठंडी होगी।

तशरीफ़ रखना—(१) बैठना, विराजना। आइये, तशरीफ रखिये। (२) ठहरना, गए होना, रहना, वे आज कल दिल्ली तशरीफ़ रखते हैं।

तशरीफ़ लाना—आना, पधारना।

तशरीफ़ ले जाना—चले जाना।

तसबीह फेरना— माला जपना, फेरना।

तसमा खींचना—गला घोंटना, एक खास तरीके से गले में फंदा डाल कर मारना।

तसमा लगा न रखना—गरदन साफ़ उड़ा देना।

तसल्ली दिलाना—धैर्य, आश्वासन देना।

तसवीर बन जाना—चित्र लिखित सा, एक टक रह जाना। वह आये तो बनाने थे खुद तसवीर बन गये।

तह करना—कोई वस्तु एक सी मोड़ना, परत करना।

तह कर के रखना—रहने देना, जरूरत न होना। तह कर रखो क्या जरूरत है ऐसा जाड़ा नहीं है।

तह का सच्चा होना—(१) वह कबूतर जो घर पर आजाय, भूले नहीं। (२) दिल का सच्चा आदमी। बेचारे को झूँठ बोलना पड़ा बाकी है तह का सच्चा।

तह की बात—छिपी हुई, असली बात। तह की बात तो यह है कि उसके पास रुपया नहीं है।

तह को पहुँचना या तह तक पहुँचना—असली बात, रहस्य या गुप्त अभिप्राय जान जाना। वह इसकी तह को पहुँच गया है इसलिये निर्द्वन्द बैठा है।

तहकीकात आना—पता लगाने या जाँच करने आना।

तह जमाना या बैठाना—(१) भोजन पर भोजन किए जाना। ऐसी क्या तह जमा रहे हो कल भी तो खाना मिलेगा ही। (२) परत के ऊपर परत दबाना।

तह तोड़ना—(१) झगड़ा निबटाना। (२) कुँए का सब पानी निकाल लेना जिससे जमीन दिखलाई दे।

तह देना (किसी चीज़ की)—(१) हलकी परत चढ़ाना। बिस्कुट पर क्रीम की तह दी है। (२) हलका रंग देना। (३) अतर बनाने में जमीन या आधार देना। चंदन की तह दे दो तो वह खुशबू हो कि मज़ा आजाय।

तह मिलाना—जोड़ा लगाना, नर और मादा एक साथ रखना।

तह लगाना—चौपरत करके समेटना।

ताँतड़ी या ताँत सा होना—बहुत दुबला पतला। लड़का है तो ताँतड़ी सा पर जब चिपट जाता है तो आदमी के होश बिगाड़ देता है।

ताँता बँधना—एक के बाद दूसरा आता जाना। आज कल हमारे घर मेहमानों का ताँता बँधा है।

ताँता बांधना-पंक्ति में खड़ा होना।

ताँता लगना—तार न टूटना, एक पर एक चला चलना। दे० ताँता बँधना।

ताक झाँक करना – मौका देखना।

ताक पर धरना या रखना—(१) उपयोग न करना। तुम अपनी किताब ताक पर रखो, मुझे इसकी जरूरत नहीं। (२) पड़ा रहने देना। किताब ताक पर धरी और खेलने निकल गया।

ताक पर रहना या होना—पड़ा रहना, व्यर्थ जाना। यह दस्तावेज़ ताक पर रह जायगी और उसकी डिगरी हो जायगी।

ताक भरना—सैयद, पीर आदि पर मनौती की पूजा चढ़ाना (मुसल)।

ताक में रहना—मौका देखते रहना। मैं इस ताक में हूँ कि इसे नीचा दिखाऊँ।

ताक रखना — घात में रहना, मौका देखते रहना। वह बदमाशों की ताक रखता है, जो मिला वही मारा।

ताक लगाना—घात लगाना।

तागा डालना—तागना, दूर दूर

पर सिलाई करना। रजाई में तागा डाल दो।

ताज़ा करना—(हुक्का-१) हुक्के का पानी बदलना। (२) फिर छेड़ना। दबा दबाया झगड़ा क्यों ताज़ा करते हो। (३) याद दिलाना। फिर रंज ताज़ा क्यों करते हो मैं रो पड़ूँगा।

ताजा होना—(१) नए सिरे से, फिर से शुरू होना। उनके आने से मामला फिर ताज़ा हो गया। (२) फिर चित्त में आना, याद आजाना।

ताजिया ठंडा होना—(१) ताजिया दफ़न होना। (२) किसी बड़े आदमी का मर जाना। (३) हिम्मत और उम्मीदें ख़तम होना। कहिये कैसे ताजिये ठंडे से हो गये अभी तो एक ही वार हुआ है।

ताड़जाना—भाँप लेना, अंदाज से समझ जाना। मैं पहिले ही ताड़ गया कि तुम इस लिये आए हो।

तातील मनाना—दे० छुट्टी मनाना।

तान उड़ाना—(१) मज़े से बिताना। (२) गीत गाना, अलापना।

तान कर तमाचा देना—जोर से थप्पड़ मारना।

तान कर सोना—आराम से सोना आनन्द से रहना। वह तो तान कर सोता है किसी की परवा नहीं करता।

तान की जान होना—खुलासा सारांश। तान की जान यह है कि मैंने उसे झँपा दिया।

तान तोड़ना—(१) लय को खींच कर झटके से ठहरना। (२) आक्षेप या बौछार छोड़ना। जिस पर तान तोड़ते हो वह मेरा घनिष्ठ मित्र है, सँभल कर बातें करो।

तान भरना, मारना, लेना—गाने में लय के साथ सुरों को खींचना।

ताना बाना करना—हेरा फेरी करना, व्यर्थ इधर से उधर जाना। क्या ताना बाना कर रहे हो तुम्हारा काम न बनेगा।

ताना मारना—चुभती हुई बात कहना।

तार टूटना—लगातार, चलता हुआ काम बंद होना। जहाँ माल का तार टूटा और दुकान डूबी।

तार तार करना—धज्जियाँ धज्जियाँ या सूत सूत अलग करना। तार तार कीन्हीं फारि सारी जरतारी की।

तार देखना—पक्की चाश्नी का चुटकी पर तार बना कर देखना।

तार बँधना—सिलसिला, क्रम जारी होना। सवेरे से जो रोने का तार बँधा है वह अब तक नहीं टूटा।

तार बाँधना—बराबर करते जाना। गालियों का तार बाँध दिया है चुप्पी नहीं होती।

तार बैठना, जमना—काम बनाने में सुभीता होना। अब तो कुछ तार जमा है कुछ समय से काम खूब चल रहा है।

तार लगना—क्रम बँधना, जारी होना। मेहमानों का तार लग गया है एक गया दूसरा आया।

तार लगाना—दे० तार बाँधना।

तारीफ़ करते मुखसूखना / **तारीफ़ के पुल बाँधना**—खूब तारीफ़ करना।

तारीख डालना—(१) दिन नियत करना। (२) तिथि, मास आदि लिखना।

तारा डूबना—(१) नक्षत्र अस्त होना। (२) शुक्रास्त होना (इसमें मंगल कार्य नहीं किये जाते)

तारा हो जाना—(१) बहुत ऊँचा हो जाना। पतंग तो तारा हो गई है। (२) बहुत दूर हो जाना। दिल्ली के विद्युत-दीप कई मील से तो तारे हो जाते हैं।

तारे खिलना — तारे निकलना, टिमटिमाना। बादल नहीं हैं, तारे खिल रहे हैं।

तारे गिनना — बेचैनी से रात काटना। तुम्हारी याद में रात सारी तारे गिनते काटी।

तारे छिटकना — स्वच्छाकाश में तारे टिमटिमाना।

तारे तोड़ लाना—(१) बड़ी कठिनाई का काम करना। (२) चालाकी का काम करना। तुम तो सच मुच तारे तोड़ लाये भला और किस की ताक़त थी कि वहाँ से यह ले आता।

तारे दिखाना—(१) (मुसलमानियों में) छटी के दिन ज़च्चा को बाहर लाकर तारे दिखाना। (२) आँखों में अंधेरा छा जाना। ऐसा थप्पड़ मारा कि तारे दिखा दिये।

तारे दिखाई देजाना—कमजोरी की वजह से आँखों के आगे तिरमिरे छाजाना।

तारे सी आँखें होजाना—स्वच्छ चमकती आँखें होना। रोज काजल डालता है तारे सी आँखें हो गई हैं।

तारों की छाँह— बहुत सवेरे। तारों की छाँह यहाँ से चल देंगे।

तारीख टलना—और आगे का दिन नियत होना। मुकदमे की वह तारीख टल गई।

तारीख पड़ना—दिन नियत होना। बीस दिन आगे की तारीख पड़ी है।

ताल ठोंकना—लड़ने को ललकारना।

ताल बेताल—(१) जिसका ताल ठिकाने से न हो। (२) मौक़े बे मौक़े।

ताल मेल खाना या बैठना—प्रकृति आदि का मेल होना। उन दोनों का ताल मेल खाता है, दोनों एक से हैं।

ताल से बेताल होना—(गाने-बजाने में) नियम बाहर हो जाना या उखड़ जाना।

ताला जकड़ना—ताला लगा कर बन्द करना।

ताला तोड़ना—वस्तु चुराना (ताला तोड़कर)। उसने ताला तोड़ा वह पकड़ा गया।

ताला भिड़ना—(१) ताला बन्द होना। (२) तहस नहस होना। भिड़जावे राम तेरा ताला, मो पै पीसने का दुख डाला।

ताला भेड़ना—ताला लगाना।

ताली पीटना, बजाना—हँसी उड़ाना। क्यों बेचारे की ताली पीटते हो तुम भी तो कभी फिसलते हो।

ताली बज जाना—(१) हँसी उड़ाई जाना। (२) निरादर होना। ज्यों ही व्याख्यान देने खड़े हुये उनकी ताली पिट गई।

ताली न बजना (एक हाथ से)—बैर या प्रीति एक ओर से ही न होना। दोनों में ही खोट होगा एक हाथ से ताली नहीं बजती।

तालू से जीभ न लगना—बोलते, चुप न रहना। एक पल को जीभ तालू से नहीं लगती चबर चबर करती ही रहती है।

ताव आना—(१) उचित गरम होना। अभी ताव नहीं आया पूरियाँ मत डालो। (२) गुस्सा आना।

ताव खाना—(१) आँच में गरम होना। (२) गुस्सा करना।

ताव खा जाना—(१) आँच के कारण अधिक गरम होना या जल जाना। चाशनी ताव खागई अतः कड़वी सी है। (२) खौलाई, तपाई या पिघलाई वस्तु का बहुत ठंडा होना। (३) कई बार गरम करनी पड़ना। कई ताव खाकर यह पकी है। (४) क्रोध में आजाना। इतनी बात सुनते ही ताव खागया और लड़ने को तैयार हो गया।

ताव चढ़ना—(१) ऐसी इच्छा होना कि काम चटपट हो जाय। (२) कामोद्दीपन होना।

ताव दिखाना—अभिमान भरा क्रोध दिखाना।

ताव देना—(१) आँच पर या में गरम करना। (मूँछों पर २) अभिमान से ऐंठना। मूँछन पै ताव दै दै कूदि परे कोट में।

ताव पर—इच्छा हो उसी समय। तुम्हारे ताव पर तो रुपया नहीं मिल सकता।

ताव में आना घमंड भरे क्रोध में आना। ताव में आकर कहीं चीजें मत फेंक देना।

तिनक जाना—नाराज होना, रूठ जाना, झुँझला उठना। तुम ज़रा ज़रा सी बातों पर तिनक जाती हो, सोचो तो सही मेरा क्या कसूर है?

तिनका तोड़ना—(१) सम्बन्ध तोड़ना। हमने तिनका तोड़ जवाब दिया इससे उसने भी तिनका तोड़ दिया। (२) बच्चे को नज़र न लगे इस लिये तिनका तोड़ कर बलाय लेना।

तिनका दाँतों में पकड़ना वा लेना—विनय दीनता पूर्वक करना, गिड़ गिड़ाना। तुम्हें दाँतों तले तिनका लेना पड़ेगा तब क्षमा करूँगा; ऐसे ही नहीं।

तिनका न रहना—(१) कुछ भी न रहना। उसके एक तिनका नहीं रहा खाय क्या। (२) साफ़ हो जाना, झाड़ फिर जाना। तिनका नहीं रहा है, कैसी सफ़ाई की।

तिनका भी न तोड़ सकना—बहुत कमज़ोर होना। बेचारी अब तो तिनका भी नहीं तोड़ सकती, खाट से लग गई है।

तिनका सिर से उतरना, उतारना—एहसान न रखना। वक्त पर ज़रा सी मदद की थी उनका भी तिनका सिर से उतारना है।

तिनके का सहारा—(१) बहुत थोड़ा सहारा। (२) थोड़ा ढाढ़स बँधाने वाली बात। तुम्हारा तो तिनके का भी सहारा नहीं, कभी यह भी नहीं कि सौदा भी लादिया करो।

तिनके की ओट पहाड़—छोटीसी बात में बहुत बड़ी बात का छिपा होना। कौन जानता है इस ज़रा सी फूट में महान भारत का नाश तिनके की ओट पहाड़ छिपा है।

तिनके को पहाड़ करना—थोड़ी सी बात को बहुत बढ़ा देना। मैंने यों तो नहीं कहा था, जो तुमने तिनके का पहाड़ कर दिया।

तिनके को पहाड़ कर दिखाना—बहुत बढ़ाकर कहना या बनाना। मुमताज़ की ज़रा सी प्रार्थना पर शाहजहाँ ने तीन करोड़ का ताज़ खड़ा कर दिया, तिनके का पहाड़ कर दिखाया।

तिनके चुनना—पागल होना, व्यर्थ काम करना। वह लड़का तो अभी से तिनके चुनने लगा, अब क्या याद कर सकेगा।

तिनके चुनवाना—(१) पागल बनाना। (२) मोहित करना। तुमने घर के सामने तिनके चुनवाये पर कृपा न की।

तिरछी चितवन, नजर—बिना सिर फेरे बगल की ओर दृष्टि।

लोगों की दृष्टि बचाकर प्रेमी लोग तिरछी नज़र से ताकते हैं।

तिरछी बात, तिरछा वचन—कड़वी या अप्रिय बात। हरि उदास सुन वचन तिरीछे।

तिल का ताड़ करना—बात का बतंगड़, तिनके को पहाड़ करना। इससे उनकी ज़रा भी बुराई की तो यह उनसे तिल का ताड़ बनाकर कहेगा।

तिल को ओझल, ओट पहाड़ होना — दे० तिनके की ओट पहाड़।

तिल चाटना—मुसलमानों में विदा के समय दूल्हा वधू के हाथ पर रखे हुए काले तिल चाटता है जिससे दूल्हा सदा वश में रहे यह ज्ञात हो। जब क्यों तिल चाटे थे अब निकाह के बाद ऐंठते हो।

तिल चावले बाल होना—दे० खिचड़ी बाल।

तिल तिल—(१) थोड़ा थोड़ा। तिल तिल दोगे तो भी बहुत होगा। (२) ज़रा ज़रा सा भी। मैं तिल तिल रखवा लूँगा।

तिल धरने को जगह न होना—तनिक भी स्थान न होना। इतनी भीड़ है कि तिल धरने को भी जगह नहीं।

तिल भर—(१) क्षण भर, थोड़ी देर। (२) ज़रा सा। तिल भर भूमि न सकेउ छुड़ाई।

तिलस्म तोड़ना—कठिन रहस्य या स्थान का पता लगाना। दिल्ली के व्यभिचार के अड्डों का पता लगाना तिलस्म तोड़ना है।

तिलांजलि—बिल्कुल त्याग देना। झूठ को तो तुमने तिलांजलि दे दी है न?

तिसपर—(१) इतना होने पर भी। इतना मना किया तिस पर भी वह चल ही गया। (२) ऐसी अवस्था में भी। हमारी चीज़ भी ले गये तिस पर हमीं को बातें सुनाते हो। (३) इसके बाद। तिस पर वह कहने लगा मैं ला दूँगा।

तिहाई मारी जाना—फ़सल नष्ट होना।

तीखे होना—गुस्सा दिखाना। मुझ पर क्यों तीखे होते हो जिसने गाली दी है उसे मारो।

तीन तेरह करना, होना—अलग अलग, तितर-बितर, बारह बाट करना, होना। भगवान! तुम्हें भी तीन तेरह करदे मिलकर एक दिन भी कहीं न रह सको।

तीन तेरह में न होना—(१) किसी के झगड़े में न होना, तटस्थ होना। मैं तुम्हारे तीन तेरह में नहीं हूँ मेरी ओर से कुछ भी करो। (२) किसी गिनती में न होना, जिसे कोई न पूछे।

तीन पाँच करना—(१) हुज्जत,

घुमाव फिराव करना। देना है तो देदो तीन पाँच क्यों करते हो? (२) पाजीपन करना। तीन पाँच करोगे तो पिटोगे।

तीनों लोक नजर आना-(व्यंग्य) —(१) आँखों के आगे अँधेरा छा जाना। सिर पर ऐसी लाठी मारी कि तीनों लोक नज़र आ गये। (२) बहुत आनन्द मिलना। थोड़ी सी तो (भंग) पियो देखो तीनों लोक यहीं नज़र आ जायेंगे।

तीया पाँचा करना—तै करना, निबटाना। इस झगड़े का भी शीघ्र तीया पाँचा कर दो तो ठीक है।

तीर चलाना—युक्ति भिड़ाना। तीर तो गहरा चलाया था पर वार खाली गया वे माने ही नहीं।

तीर सा लगना— चुभना, बुरी लगना। उनकी बात तो मेरे कलेजे में तीर सी लगी।

तीस मारखाँ बनना, होना— वीरता की शोख़ी बघारना, होना। आप बड़े तीस मारखाँ हैं जो डाकू से छीन लावेंगे (व्यंग्य)।

तुक जोड़ना, मिलाना — (१) भद्दी कविता बनाना। (२) छंद के अंतिम अक्षरों का मेल बनाना। मैं क्या कविता करता हूँ, तुक जोड़ लेता हूँ और कुछ नहीं।

तुक्का सा—ऊपर उठा हुआ। जब देखो रास्ते में तुक्कासी बैठी रहती है।

तुनतुना बँधना—रौब दौब होना। अभी तो तुनतुना बँधा है कोई मेरी बात नहीं टाल सकता जो काम निकालना है निकाल लो।

तुमताम करना— गाली गलौज करना। सँभल कर बात करो तुम ताम करोगे मुँह तोड़ दूँगा।

तुरई का फूलसा—जल्दी खर्च हो जाने वाला, चटपट चुक जाना। सौ रुपये तो तुरई के फूल से देखते देखते उठ गए।

तुर्रा करना—(१) कोड़ा मारना। (२) कोड़ा मार कर घोड़ा बढ़ाना।

तुर्रा यह कि—इस पर इतना और। मोटर भी दें और तुर्रा यह कि तेल भी हमारा हो।

तुर्रा होना (किसी बात का)— (१) एक में दूसरी बात और बढ़ाई जाना। (२) असली बात के साथ एक और बात होना।

तुरी चढ़ाना या जमाना—भाँग पीना।

तुल जाना (काम या बात पर) करने पर उतारू होना, उद्यत होना। वह इस पर तुल गये हैं कि तुम क्षमा माँगो अब माँगनी ही पड़ेगी।

तू तड़ाक, तू तुकार, तू तू मैं मैं करना — कहा सुनी, अशिष्ट शब्दों में वाद विवाद होना। न जाने किस बात पर वे तू तड़ाक

तक कर बैठे, अच्छा हुआ बीच करा दिया।

तूती की आवाज़ कौन सुनता है (नक्कार खाने में)—(१) शोर गुल में बात सुनाई नहीं पड़ती। (२) बड़े बड़े लोगों के सामने छोटों की कोई नहीं सुनता। वहाँ बड़े बड़े दिमाग़दार बैठे थे वहाँ नक्कार खाने में हमारी तूती की आवाज कौन सुनता।

तूती बोलना—प्रभाव होना, चलती होना। शहर में तुम्हारी ही तूती बोल रही है मजाल क्या जो कोई बात टाल जाय।

तू तड़ाक से बोलना—अशिष्टता से या बहुत बराबरी प्रेम से बात करना। तू तड़ाक से बोलते हो, पढ़े लिखे होने का यही लाभ है?

तू तू मैं मैं होना—बातों में लड़ाई हो जाना। आज उनसे तू तू मैं मैं हो गई।

तूफान जोड़ना, बाँधना, बनाना झूठा कलंक या दोष लगाना। मैं तो उन्हें बचाने गया था, लोगों ने जाने क्या तूफ़ान जोड़ दिया कि औरत को यह भी उड़ाना चाहता था।

तूफ़ान बरपा करना—तूल तमील करना, जल्दी मचाना, झंझट खड़ा करना। तुमने भी तूफान बरपा कर दिया, ज़रा ठहरो हाथमत फुलाओ।

तृण गहना या पकड़ाना—दे० तिनका दाँतों में पकड़ना।

तृण गहाना, पकड़ना—नम्र करना वशीभूत करना। कहौ तो वाकों तृण गहाय कै जीवत पायन पारौं।

तृण टूटना—बहुत सुंदर होना। आजु की बानिक पै तृण टूटत कहि न जाय कछु स्याम तोहि रत।

तृण तोड़ना—(१) संबन्ध या नाता मिटाना। भुजा छुड़ाइ तोरि तृण ज्यों हित करि प्रभु निठुर हियो। (२) सुन्दर वस्तु को नज़र न लगने के उपाय करना। स्याम गौर सुन्दर दोउ जोरी, निरखत छवि जननी तृण तोरी।

तेरा मेरा करना—(१) चीज़ के लिये झगड़ना। चार चार पैसे की चीज़ पर तेरा मेरा करते हो बस यही मित्रता है? (२) मोह ममता में फँसना।

तेल उठना या चढ़ना—तेल की रस्म पूरी होना। तिरिया तेल हमीर हठ न चढ़े न दूजी बार।

तेल चढ़ाना—तेल की रस्म पूरी करना। करि कुल रीति कलस थापि तेल चढ़ावहिं।

तेल निकालना—बहुत शारीरिक परिश्रम कराना। ढाई आने पैसे देता है और इतना काम कि धूप में खड़े खड़े तेल निकाल लेता है।

तेली का वैल होना—(१) हर वक्त काम में लगा रहना। बेचारा इधर से उधर तेली के वैल की तरह हर वक्त घूमता रहता है, फिर भी गालियें मिलती हैं। (२) काला चश्मा लगाना।

तेवर चढ़ना, तेवर पर बल चढ़ना—ऐसी दृष्टि जिससे क्रोध प्रकट हो। क्यों ऐसा क्या बिगड़ गया जो तेवर चढ़ रहे हैं?

तेवर बदलना या बिगड़ना—(१) मौत के चिह्न जाहिर होना। (२) खफ़ा, नाराज हो जाना। (३) वे मुरौवत हो जाना। अब तो तेवर बदल गये पता नहीं कब क्या हो जाय।

तेवर बुरे नज़र आना—प्रेम में फ़र्क पड़ना। पहिले तो मुझे बहुत (पवित्रता से) प्यार करते थे परन्तु अब तो कुछ तेवर बुरे नज़र आते हैं।

तेवर मैले होना—निगाह से खेद, क्रोध या उदासीनता दिखना। क्यों तेवर मैले हो रहे हैं ऐसी क्या बात?

तोड़ना (कमर, कलम, किला, गढ़, तिनका, पैर, मुँह, रोटी, सिर, हिम्मत)—क्रमशः इन्हीं शब्दों के मुहावरों में देखिये।

तोड़े उलटना (किसी के आगे) सैकड़ों हजारों रुपये देना। माली ने फ़ौरन तोड़े उलट दिये और कहा जितना चाहे धन लेजा परवा नहीं।

तोते उड़जाना (मुँह के)—बोला न जाना। उनके आते ही तुम्हारे मुँह के तोते उड़ जाते हैं, आखिर उनसे क्यों दबते हो?

तोते उड़जाना (हथों के)—घबरा जाना, सिट पिटा जाना। डाकुओं के नाम सुनते ही बंदूकची के हाथों के तोते उड़ गये।

तोता पालना—दोष, दुर्व्यसन; रोग को जान बूझ कर बढ़ने देना। फोड़ा क्या तोता पाल लिया है खुद भी तो मिटाने की कोशिश नहीं करते।

तोते की तरह आँखें फेरना, बदलना—बहुत वे मुरव्वत होना। ये वक्त पर किसी भारी मित्र के भी काम नहीं आता फौरन तोते की तरह आँखें बदल जाता है।

तोते की तरह पढना—बिना समझे बूझे रटना। तोता सा पढ़ा दिया वैसे लेक्चर देता है पर आता जाता कुछ नहीं।

तोबा करना—न करने की प्रतिज्ञा करना। रात को मय पी सुबह को तोबा करली।

तोबा तिल्ला करना, मचाना—रोते-चिल्लाते, दीनता दिखाते तोबा करना।

तोबा तोड़ना—'न' की प्रतिज्ञा करके भी वही काम फिर करना।

तोबा से (करके) कहना—अभिमान छोड़ कर कहना।

तोबा बुलवाना—चीं बुलवाना, इतना तंग करना कि 'न' कहना पड़े।

तोप के मुँह पर रख कर उड़ाना—प्राण दण्ड देना। ऐसे आये कहीं के लाट साहब जो न मानेंगे तो तोप के मुँह पर रख कर उड़ा देंगे।

तोहमत का घर या टट्टी—व्यर्थ कलंक लगने की जगह।

तोंद निकल आना—पेट बड़ा हो जाना।

तौर बे तौर होना—(१) रंग ढंग या लक्षण खराब होना। इस औरत के तो तौर बेतौर हैं इससे बचते रहना (२) अवस्था, दशा खराब होना। भगवान ही मदद करे, उनके तो तौर बेतौर हो गए हैं।

तौल तौल के पड़ना लगना—खूब मार (जूते) पड़ना। ऐसे पड़े तौल तौल के, जन्म भर याद रखेगा।

त्यौरी चढ़ना या बदलना—दे० तेवर चढ़ाना।

त्यौरी चढ़ाना, बदलना—दे० तेवर चढ़ाना।

त्यौरी में बल डालना—त्यौरी चढ़ाना। त्योरियों में बल डाले फिरता है मानो मुझे खा ही डालेगा।

त्यौरी में बल पड़ना — क्रोध झलकना। मैंने ज्योंही गुरुजी की बेइज्जती की बात कही उसकी त्योंरियों में बल पड़ गये मैं समझ गया इसे उनसे प्रेम है।

त्यौहार मनाना—आनन्द उत्सव मनाना। दुश्मन को जेल हुई तुम तो त्योहार क्यों न मनाओगे ?

त्राहि त्राहि करना, मचाना—दया, रक्षा या शरण के लिये प्रार्थना करना। त्राहि त्राहि मची हैं वहाँ हो रहा अंधेर है।

त्रिशंकु रहना, होना—बीच में होना, न इधर के रहना न उधर के। हम तो त्रिशंकु की तरह बीच में लटक रहे हैं, क्या करें ?

त्रेता के बीजों में मिलना—सत्यानाश होना। भगवान तुम्हें त्रेता के बीजों में मिलावे।

थ

थक कर चूर होना—बहुत शिथिल हो जाना। हम तो चलते चलते थक कर चूर हो गये, हम से अब कुछ नहीं होगा।

थपोड़ी पीटना या बजाना—हँसी दिल्लगी ज़ोर ज़ोर से उड़ाना। क्यों थपोड़ी पीट रहे हो वह बिगड़ उठेगा।

थप्पड़ कसना, देना, लगाना—तमाचा मारना। दो थप्पड़ कस दिये, मुँह सूज गया।

थरथर करना काँपना। वह जाड़े के मारे और मैं डर के मारे दोनों थर थर कर रहे थे।

थरथरी छूटना, बँधना—डर के कारण काँपना। गिगिया गया थर थरी बँध गई।

थल बैठना या थल से बैठना—(१) आराम से बैठना। (२) स्थिर तथा शांत भाव से बैठना।

थलथल करना—मोटाई के कारण अंग का झूल झूल कर हिलना। चलने में उसका पेट थलथल करता है।

थल बेड़ा लगना—ठिकाना या आश्रय होना।

थल बेड़ा लगाना—(१) आश्रय ढूँढ़ना (२) सहारा देना। मैंने उनका मंदिर में थल बेड़ा लगा दिया है।

थान अच्छे का घोड़ा—प्रसिद्ध स्थान या अच्छी जाति का घोड़ा। यह अच्छे थान का घोड़ा है ऐब दार नहीं।

थान का टर्रा होना—(१) वह घोड़ा जो बँधे बँधे नटखटी करे। (२) गली या घर पर ही शेर होने वाला। वह बस थान का ही टर्रा है बाजार में उसे दस गाली भी दो तो सीधा चला जाता है।

थान का सच्चा—सीधा पशु या घोड़ा, अपने खूँटे पर या घर पर आजाने वाला।

थान में आना—(घोड़े का) धूल में लोटना।

थाना चढ़ आना—सिपाहियों का किसी मकान पर छापा मारना।

थाना बिठाना—पहरा चौकी बिठाना। **थाने चढ़ना**—थाने में रिपोर्ट करना।

थाप देना (किसी की)—कसम खिलाना। तुझे देवी थाप तू सच्ची सच्ची कह।

थाली का बैंगन—बे पेंदी का लोटा, लुढ़कू। उसका कुछ विश्वास नहीं थाली का बैंगन है क्या ख़बर उधर ही लुढ़क जाय।

थाली (का) जोड़—थाली कटोरा।

थाली फिरना—बहुत भीड़। वहाँ थाली फिरती ही (उसे भी नीचे

पहुँचने को जगह नहीं) हम कैसे जायँ।

थाली बजना—थाली बजा कर साँप का विष आदि के दूर करने के मन्त्र पढ़े जाना।

थाली बजाना — साँप के विष उतारने के मंत्र, या बच्चे होने पर उसके डर दूर करने के लिये, थाली बजाने की रीति करना।

थाह डूबते को मिलना—आफ़त में सहारा मिलना।

थाह मिलना—(१) गहराई का पता चलना। (२) दिल के विचार या धन सम्पत्ति की तादाद का पता चलना (३) जल में जमीन तक पहुँचना।

थाह लगना—दे० थाह मिलना।

थाह लेना—(१) गहराई का पता लगाना। (२) कोई वस्तु कितनी या कहाँ तक है पता चलाना।

थिगली लगाना—जहाँ कठिन हो वहाँ भी पहुँच कर काम करना, युक्ति लगाना।

थिगली लगाना बादल में—कठिन या असंभव काम कर डालना।

थुड़ी थुड़ी करना — धिक्कारना, निन्दा करना।

थू थू करना—घृणा प्रकट करना। तुम्हारे इस काम पर दुनिया थू थू कर रही है।

थूथू होना—निन्दा होना। लड़की पर रुपया लेने से चारों ओर थू थू हो गई।

थूक उछालना, बिलोना व्यर्थ बकना। क्यों थूक बिलोते हो चुप रहो।

थूक कर चाटना—(१) कह कर पूरा न करना, मुकर जाना। (२) दी हुई लौटा लेना।

थूक लगाकर छोड़ना—तंग कर के, नीचा दिखाकर या दंड देकर छोड़ना।

थूक लगा कर रखना—कंजूसी से जमा करना।

थूक लगाना — हराना, नीचा दिखाना, चूना लगाना।

थूकना भी नहीं—ध्यान तक न करना, पसंद ही न करना। हम तो ऐसी चीज़ पर थूकें भी नहीं।

थूक देना — घृणा पूर्वक त्याग देना।

थूकों सत्तू सानना—कंजूसी व किफ़ायत से काम करना। थूकों सत्तू नहीं सनते दिल खोल कर खर्च करोगे जीतोगे वरना हारोगे।

थूथनी फैलाना — मुँह फुलाना, नाक भौं चिढ़ाना।

थैला करना—मार कर ढेर करना, मारते मारते ढीला करना।

थैली कटना या काटना—(१) रुपये की गठरी या जेब कतरना।

तुम्हारी क्या ऐसी थैली काट ली जो तुम बुरा कहते हो। (२) खूब खर्च करना। मौके पर बनिया थैली काट देता है खोलता नहीं।

थैली खोलना—रुपया देना। दान के काम में थैली का मुँह खोल देते हैं।

थोक करना—इकट्ठा करना, जमा करना।

थोड़ा थोड़ा होना—लज्जित संकुचित होना।

थोड़ा ही—नहीं, बिल्कुल नहीं। हम थोड़ा ही जायँगे, जो जाय उससे कहो।

थोथी बात होना—भद्दी या व्यर्थ बात, केवल बातें ही। यह सब थोथी बातें ही काम की कुछ नहीं।

द

दंगल में उतरना—(१) कुश्ती लड़ने के लिये अखाड़े में आना। (२) गृहस्थी होना, अब जरा दंगल में उतरे हो अब मालूम होगा कैसे खर्च से विजय पाते हो। (३) मुकदमा लड़ाना।

दंड ग्रहण करना—सन्यास लेना।

दंड डालना—(१) जुरमाना करना। (२) कर महसूल लगाना।

दंड पड़ना—नुकसान उठाना। लाभ उन्होंने उठाया दण्ड हम पर पड़ा।

दंड भरना—(१) जुरमाने की रकम देना। (२) दूसरे का नुकसान पूरा करना। उनकी चीज़ तो पहिले से ही टूटी हुई थी हमारे हाथ में आकर दो टुकड़े हो गई, हमें उसका पूरा दण्ड भरना पड़ा।

दंड भुगतना, भोगना—(१) सज़ा सहना, नुकसान उठाना, व्यर्थ कष्ट उठाना। अपराध तुम्हारा और दण्ड भुगतना पड़ा हमको।

दंड सहना—नुकसान, घाटा सहना। हम क्यों १००) का दण्ड सहें हम तो पूरे रुपये लेंगे।

दई का घाला—अभागा, कम्बख़्त। जननि कहत दई की घाली! काहे को इतरात।

दई का मारा, दई मारा—ईश्वर का मारा हुआ, अभागा।

दई दई—हे दैव! रक्षा के लिये ईश्वर की पुकार। दई दई आलसी पुकारा।

दक़ीका बाक़ी न रखना—सब उपाय कर लेना, कोई तरकीब न छोड़ना। मुझे नुकसान पहुँचाने में तुमने कोई दक़ीका बाकी नहीं रखा।

दत्तक लेना—दूसरे के पुत्र को गोद लेकर अपना पुत्र बनाना। कोई बच्चा नहीं हुआ आखिर दत्तक लिया, वंश का नाम तो चले।

दफ़ा करना, दफ़ा दफ़ान करना—बे इज़्ज़त करके दूर हटाना। ये हमारे सामने इस तरह ज़बान चला रहा है दफ़ा करो इसे यहाँ से।

दफ़ा लगाना—क़ानून का नियम आरोपित करना। उस पर फौजदारी में चोरी की दफ़ा लग गई है।

दफ़्तर खोलना—लंबा चौड़ा वृत्तान्त सुनाना। अब यहाँ ही दफ़्तर खोल बैठे, यह बात सब के सामने कहने लायक है?

दबकी मारना — छिप जाना, अदृश्य हो जाना। वह झट दबकी मार गया आज तक पता नहीं चलता।

दबा बैठना, लेना—अनुचित रूप से धन, वस्तु आदि हड़पना, लेना। वह बेचारी विधवा की सारी सम्पत्ति दबा बैठे, तब अमीर हैं।

दबी आवाज़—(१) धीमी आवाज़। (२) डरते हुए। सत्य कहने में किसका डर जो दबी आवाज से बोलते हो।

दबी ज़बान से कहना—(१) साफ़ साफ़ न कहना। (२) डर आदि के कारण कहना। मुझे दबी ज़बान से यह कहना ही पड़ा कि मैं अपराधी हूँ।

दबे दबाके रहना—शांति पूर्वक, चुपचाप रहना, विरुद्ध कारवाई या उपद्रव न करना। हम तो दबे दबाये रहते हैं उभरेंगे तो मार डाले जायँगे।

दबे पाँव (पैर) उतरना, चलना — ऐसे चलना जिसमें आहट या पैछल न हो, चुप चाप उतरना। वह तो दबे पाँव वहाँ से चला (खिसक) गया मालूम भी न हुआ।

दबे पाँव निकल जाना — चुपचाप चले जाना। दबे पाँव निकल गये वरना बड़े पिटते।

दम अटकना—(२) साँस रुकना, खास कर मरते वक्त साँस रुकना। दम उखड़ना। (१) दे० दम अटकना। (२) दमे या खाँसी का दौरा होना।

दम उलझना—जी घबराना व्याकुल होना।

दम उलटना—(१) दे० दम उलझना। (२) दे० दम घुटना।

दम के दम—क्षण भर। वे यहाँ दम के दम बैठे, फिर चले गये।

दम के दम में—अति शीघ्र। दम के दम में वह तैयार कर लाया।

दम खाना—(१) दिक या तंग करना। क्यों दम खाते हो चल तो रहा हूँ। (२) किसी पदार्थ का

बन्द मुँह के बर्तन में भाफ द्वारा पकाया जाना । (३) ठहरना, विश्राम लेना । दम खाओ अभी ला देता हूँ । (४) छल फरेब में फँस जाना ।

दम खिंचना—दे० दम अटकना ।

दम खींचना—(१) न बोलना, चुप रह जाना । दम क्यों खींच गये बोलते क्यों नहीं ? (२) साँस खींचना, साँस ऊपर चढ़ाना ।

दम खुश्क होना—बहुत भय के कारण चुप हो जाना, सांस तक न लेना, स्तब्ध रह जाना । मास्टर को देखते ही लड़के का दम सूख गया ।

दम गनीमत होना—जीवित रहने के कारण अच्छी बातों या आदर का कारण होना । शहर में अब तो कोई अच्छा पंडित नहीं, पर फिर भी आपका दम गनीमत है ।

दम घुटना—हवा की कमी से या और कारण से साँस रुकना । खिड़कियें खोल दो दम घुटता है ।

दम घोंटना—(१) बहुत कष्ट देना । क्यों बेचारे का दम घोंटते हो गरीब है । (२) साँस न लेने देना । गले में रस्सी डाल कर दम घोंट दिया ।

दम घोंट कर मारना—(१) बहुत कष्ट देना । (२) गला दबाकर या हवा न पहुँचने देकर मारना । सब दरवाज़े बन्द कर दिये क्या दम घोंट कर मारोगे ?

दम चढ़ना—(१) बहुत परिश्रम से साँस जल्दी जल्दी चलना । भागते भागते दम चढ़ गया । (२) दमे के रोग का दौरा होना ।

दम चुराना—(१) जान बूझ कर साँस रोकना । बन्दर मार खाने के समय दम चुराता है ताकि मारने वाला उसे मुरदा समझे । (२) जी चुराना, बहाने से काम करने से अपने को बचाना । काम के नाम तो दम चुरा जाते हो, ताकि करना न पड़े ।

दम झाँसा देना या दम पट्टी पिलाना—धोखा या फरेब करना न देता दिल न देता दिल न देता, अगर दिलदार दम झाँसा न देता ।

दम टूटना, उखड़ना—(१) साँस बन्द होना, प्राण निकलना । (२) साँस शीघ्र चलने के कारण काम न कर सकना । तैरने और दौड़ने में दम टूट जाने पर फिर ज़रा भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता ।

दम तोड़ना—अंतिम साँस लेना या झटके से प्राण छोड़ना । रेल के साथ भाग कर स्टेशन पहुँचते ही घोड़े ने दम तोड़ दिया ।

दम दिलासा देना—झूठी आशा देना।

दम देना—धोखा देना, बहकाना, फुसलाना।

दम नाक में आना, करना—बहुत तंग, दुखी या परेशान होना करना। तुम काम क्या कराते हो नाक में दम कर डालते हो एक आदमी एक साथ क्या क्या कर डाले।

दम निकलना—वियोग में प्राण त्याग सा कष्ट होना। उसी को देख कर जीते हैं जिस पर दम निकलता है।

दम पचना—परिश्रम करने में साँस न फूलने का अभ्यास होना।

दम पर दम—(१) बराबर। दम पर दम शैतान बना जा रहा है। (२) थोड़ी थोड़ी देर पर। दम पर दम क़ै आरही है।

दम फूँकना—किसी चीज में मुँह से हवा भरना।

दम फूलना—दे० दम चढ़ना।

दम न मारना—(१) कुछ न बोलना। (२) ज़रा विश्राम न करना। दम न मारा कि चलने का हुक्म हो गया।

दम पर आ बनना—(१) प्राण भय होना। (२) आफ़त आना। वह एक दम सारे रुपये माँग बैठा, अब दम पर आ बनी। (३) हैरानी, व्यग्रता होना।

दम फड़क उठना या जाना—सुन्दरता, गुण आदि देख कर हृदय प्रसन्न होना।

दम फ़ना होना—होश फ़ाख्ता होना। देने के नाम तो उनका दम फ़ना होता ही फिर पुलिस को देख कर तो दम फ़ना ही हो गया।

दम बंद करना—जबर्दस्ती बोलने से रोकना।

दम बंद होना—बिल्कुल चुप रह जाना। मेरे डर से तो उनका दम बन्द होता है।

दम बदम—दे० दम पर दम।

दम भरना — (१) प्रेम, मित्रता आदि का पक्का विश्वास रखना। जो मुहब्बत का दम भरते थे या जो दोस्ती का दम भरते (विश्वास-दिलाते) थे, कंगाली में कोई घर भी नहीं फटकते थे। (२) दौड़ने या परिश्रम के कारण साँस फूलना, थकना। इतनी सीढियाँ चढ़ने में दम भर गया जरा बैठ जायँ फिर चढ़ेंगे। (३) कुश्ती लड़ा कर थकाना, साँस फूलना। दम भरा पहलवान पिछड़ा। (४) भालू का हाथ या लकड़ी पर मुँह रख कर सांस खींचना। रीछ दम भरता है जिससे क्रोध शांत हो, भोजन

पचे। (५) किसी स्वर का देर तक उच्चारण करना। (६) कबूतर का पेट में हवा भरना।

दम मारना—(१) ज़रा सुस्ताना, विश्राम करना। इतना काम है कि दम मारने की भी फ़ुर्सत नहीं। (२) दखल देना। यहाँ कोई दम मारने वाला भी नहीं। (३) कुछ कहना, चूँ करना। आपकी क्या ताकत है जो मेरी बात में दम भी मार सकें। (४) मंत्र आदि द्वरा झाड़ फूँक करना।

दम में दम आना—घबराहट दूर होना, चित्त स्थिर होना। पा गई तो दम में दम आया।

दम लगना — गाँजे, चरस का धुंआ खींचना।

दम लगना, मारना—गांजे तम्बाकू आदि का धुआँ खींचना। हुक्के में दम मार लें, चलते हैं अभी।

दम लेना—(१) ठहरना, दम लो, अभी चलते हैं। (३) विश्राम करना, सुस्ताना। वहाँ पहुँच कर ही दम लूँगा।

दम में आना—धोखे, जाल में फँसना। दम में आ गये रुपये गँवा बैठे?

दम में लाना—दे० दम झाँसा देना या दम देना।

दम ले रहना, लेकर बैठना—चुप होना या टाल जाना। कुछ कह न सके हिम्मत न पड़ी दम लेकर बैठ गये।

दम में दम रहना — जिन्दगी रहना। दम में दम रहा तो कभी यह भी दिखा ही देंगे।

दम साधना—(१) सांस रोकना, सांस की गति रोकने का अभ्यास। तैराकों को भी प्राणायामी लोगों की तरह से ही दम साधना पड़ता है (२) चुप होना, मौन रहना। रुपयों का नाम सुन कर वे दम साध गये। इस मामले में अब हम भी दम ही साधेंगे, क्यों व्यर्थ बीच में पड़ें?

दम सूखना—दे० दम खुश्क होना या दम फ़ना होना।

दम ही दम में रखना—झूठी आशा बँधाये रहना।

दमड़ी के तीन होना—(१) बहुत सस्ता, कौड़ियों के मोल होना। (२) दरिद्र या अप्रतिष्ठित हो जाना। (३) बेकार होना। उन जैसे दमड़ी के तीन तीन होगये हैं, जो कभी लाट बने फिरते थे।

दमड़े करना—बेचकर दाम खड़े करना।

दर किनार रहा—दूर की बात है, कुछ चर्चा नहीं। देना तो रहा दर किनार मैं बात भी न करूँगा।

दर दर फिरना—(१) बुरी हालत होकर घूमना। (२) कार्य सिद्धि

या पेट पालने के लिये घर घर घूमना यह कुत्ता दर दर फिरे दर दर दुर दुर होय, एक हि दर का हो रहे तो दुर दुर करे न कोय।

दर दर मारे मारे फिरना—दे० दर दर फिरना।

दरखास्त गुजरना, पड़ना—अर्जी पेश किया जाना।

दरखास्त देना—प्रार्थना पत्र भेजना। मैंने बंदूक की दरखास्त दी है।

दरगुजर करना—टाल देना, मुआफ़ करना, जाने देना।

दर पेश होना—सामने आना, उपस्थित होना। मामला दर पेश है।

दरबार करना—(१) राजसभा में (राजा या और किसी का) बैठना, आना जाना।

दरबार खुलना—राजसभा में आने जाने की आज्ञा होना। उनका दरबार गरीब अमीर सब के लिये हर दम खुला है।

दरबार बंद होना—दरबार में जाने की रोक होना।

दरबार बर्खास्त होना—राज सभा समाप्त होना।

दरबार बाँधना—(१) रिश्वत निश्चित करना। (२) बड़े आदमी द्वारा कोई काम सदा के लिये हाथ में लिया जाना।

दरबार लगना—राजसभा सर्दारों का इकट्ठा होना।

दरवाजे की मिट्टी खोद या ले डालना—बार बार घर पर आना। उसने तो मेरे दरवाजे की मिट्टी ले डाली, कई बार माँगने आया।

दराँती पड़ना—फ़सल कटना शुरु होना।

दर्जा उतारना—ऊँचे से नीचे दर्जे में कर देना।

दर्जा चढना—नीची से ऊँची श्रेणी में जाना।

दर्जा चढ़ाना—श्रेणी या पद ऊँचा करना।

दर्जी की सुई होना—हरकाम का आदमी। टाइप, शौर्ट हैण्ड, डाक्टरी, चिट्ठी—पत्री, मुनीमी कोई काम करालो वह तो दर्जी की सुई है।

दर्द आना—तकलीफ़ मालूम होना। रुपया देते दर्द आता है।

दर्द उठना—पीड़ा पैदा होना।

दर्द करना—पीड़ित होना।

दर्द खाना—(१) कष्ट या पीड़ा सहना। उसने क्या दर्द खाकर नहीं जना जो प्यारा न हो। (२) रहम, तरस या दया करना। दर्द खाओ, मुझ दुखिया के हाल पर।

दर्द लगना—पीड़ा शुरू होना।

दर्शन देना—देखने में आना।

दर्शन पाना—देखना।

दर्शन मिलना—साक्षात्कार होना।

दर्शन होना—मिलना।

दल दल में फँसना—(१) कीचड़ में फँसना। (२) खटाई में पड़ना। दोनों दलों की दला दली में चुनाव का काम दल दल में फँस गया। (३) मुश्किल या दिक़्क़त में पड़ना।

दलबादल खड़ा होना—बड़ा भारी शामियाना या खेमा गड़ना।

दलबादल से चढ़ना—बहुत सी सेना लेकर चढ़ाई करना।

दलेल बोलना—सज़ा के तौर पर क़वायद कराना।

दवा को न मिलना—थोड़ा सा भी न प्राप्त होना। असली शहद तो दवा को भी नहीं मिलता।

दवा को न होना—ज़रा भी न होना।

दवा देना—औषध खिलाना, मिलाना।

दस्तक देना—किवाड़ खटखटाना।

दस्तक बाँधना, लगाना—व्यर्थ का खर्च जिम्मे डालना।

दस्त लगना—पाख़ाना बार बार होना।

दस्तखत लेना—किसी का नाम उसी के हाथ से लिखाना।

दस्तबरदार होना—अधिकार छोड़ देना, बाज आना। अगर तुम मकान से दस्तबरदार हो जाओ तो १०००) और दें।

दहलना कलेजा, जी—हृदय काँपना, दिल धक धक करना।

दहना कमर पेंच—(पालकी के कहार का) दाहिनी ओर घूमना।

दहलीज़ का कुत्ता—पिछ लग्गू।

दहलीज की मिट्टी ले डालना—दे० दरवाजे की मिट्टी ले डालना।

दहलीज़ झाँकना—द्वार पर आना। मैं तो सौत की दहलीज़ भी न झाकूँ।

दहाड़ मारकर रोना, मारना—चिल्ला चिल्ला कर रोना। ऐसी दहाड़ मार कर रोते हो जैसे बड़ा ही मारा गया हो।

दहिने होना—(१) शुभ होना। (२) अनुकूल होना, प्रसन्न होना। (३) लाभदायक होना। आज कल तो सेठ जी ही दाहिने हैं उन्हीं की रोटी खाते हैं।

दही का तोड़—दही का पानी।

दही दही करना—चीज़ मोल लेने के लिये लोगों से कहते फिरना। वे अपनी किताब के लिये मित्रों से दही दही करते फिरते हैं।

दाँत उखाड़ना—(१) मसूड़े से दाँत अलग करना। (२) मुँह तोड़ना, कठिन दण्ड देना। एक भी गाली दी तो दाँत उखाड़ लूँगा।

दाँत काटी रोटी होना—गहरी दोस्ती। राम और श्याम की तो दाँत काटी रोटी है।

दाँत काढ़ना—दे० दाँत निकालना।

दाँत किटकिटाना, किचकिचाना – (१) दाँत पीसना। (२) अत्यंत क्रोध से दाँत पीसना।

दाँत किर किराना—(१) रेत, कंकड़ी आदि पड़ने के कारण दाँत किसकिसाना। (२) खाली दाँत रगड़ना। सोते में दाँत किरकिराना अपशकुन है।

दाँत किर किरे होना—हार मानना, हैरान हो जाना।

दाँत कुरेदने को तिनका न रहना—सब कुछ चला जाना।

दाँत खट्टे करना—(१) खूब हैरान करना। (२) लड़ाई में परास्त करना। राजपूतों ने कई बार मुसलमानों के दाँत खट्टे कर दिये।

दाँत खट्टे होना—हार जाना, हैरान होना। उसके कई बार दाँत खट्टे हो चुके हैं वेचारा क्या बराबरी करेगा।

दाँत गड़ना—दे० दाँत लगना।

दाँत चबाना—क्रोध से दाँत पीसना। दाँत चबात चले मधुपुरतें धाम हमारे को।

दाँत जमना—दाँत निकलना।

दाँत झाड़ देना—(१) दाँत तोड़ डालना (२) कठिन दण्ड देना। अब के हँसा तो तेरे दाँत झाड़ दूँगा।

दाँत तले उँगली दबाना—(१) दंग या चकित होना। पुरानी भारतीय शिल्पकला को देख बड़े बड़े अंग्रेज दाँतों तले उँगली दबाते हैं। (२) (इस) इशारे से मना करना। (३) अफ़सोस करना। मुझ निर्दोष को शान्ति से दण्ड पाता देख उन्होंने भी दाँत तले उँगली दबाई।

दाँत तालू में जमना—बुरे दिन या शामत आना। किसके दाँत तालू में जमे हैं जो ऐसी बात मुँह से निकाल सके।

दाँत तोड़ना—(१) हैरान करना। (२) कठिन दण्ड देना। (३) परास्त करना। अलादीन के दाँत तोड़ि निज धर्म बचायो।

दाँत दिखाना—(१) हसना। (२) डराना, घुड़कना। मुझे क्या दाँत दिखाते हो, मैं गीदड़ भबकियों से नहीं डरता। (३) अपनी बड़प्पन दिखाना। (४) असमर्थता प्रकट करना। पहिले से तो कहते थे, परन्तु मौके पर हिः हिः करके दाँत दिखा गये।

दाँत देखना—घोड़े बैल आदि की उम्र का अंदाजा करने के लिये दाँत देखते हैं।

दाँत न लगाना—दाँतों से न कुचलना। दाँत न लगाना, योंही निगल जाना।

दाँत निकलना—बच्चों के दाँत प्रकट होना।

दाँत निकालना—(१) दाँत उखाड़ना। (२) ओठों को कुछ हटा कर दाँत दिखाना। (३) व्यर्थ हँसना। क्यों दाँत निकालते हो सीधे बैठो। (४) दीनता दिखाना, गिड़गिड़ाना। वह दाँत निकाल माँगने लगा, तब कैसे न देते। (५) टें बोलना, डर या घबराहट से मुँह बा देना। (६) फट जाना, उधड़ना। जूती का दाँत निकालना, दीवार का दाँत निकालना।

दाँत निकोसना, निपोरना—दे० दाँत निकालना।

दाँत पर न रखा जाना—(१) अत्यंत खट्टा होना। (२) दाँत में पीड़ा के कारण न खाया जाना।

दाँत पर मैल न होना—अत्यंत दरिद्र होना। उसके तो दाँत पर मैल नहीं तुम्हें क्या देगा?

दाँत पीसना—अत्यंत क्रोध से दाँत पर दाँत रख कर हिलाना। दाँत पीस कर मारने दौड़े।

दाँत बँधवाना—हिलते दाँत तार से कसवाना।

दाँत बजना—दाँत कट कट बजना। सरदी से दाँत बजने लगे।

दाँत बजाना—दाँत किट किटाना।

दाँत बनवाना—हड्डी, सीप आदि के दाँत लगवाना।

दाँत बैठजाना—नीचे ऊपर के जबड़ों का सट जाना। लकवे से दाँत बैठ गये।

दाँत मसमसाना, मीसना—दे० दाँत पीसना।

दाँत रखना—(१) वैर से लेने का विचार रखना। (२) क्रोध या द्वेष भाव रखना। (३) लेने की चाह रखना। तुम उस लड़की पर दाँत रखते हो पर वह तुम्हें न मिलेगी।

दाँत रहना—प्राप्ति इच्छा। भारत पर सदा से विदेशियों का दाँत रहा है।

दाँत लगना—(१) दाँत चुभने से घाव होना। (२) लेने की गहरी चाह होना। जब उन का दाँत इस मकान पर लगा है तो वह कैसे बच सकता है।

दाँत लगाना—(१) दाँत धँसाना। (२) लेने की चाह रखना, प्राप्ति के प्रयत्न में रहना।

दाँत से दाँत बजाना—काँपने में दाँत पर दाँत पड़ना। सरदी ऐसी कि दाँत से दाँत बजाती थी।

दाँत होना—(१) प्राप्ति की इच्छा होना। जिस वस्तु पर तुम्हारा दाँत है वह कब तक रह सकती है। (२) क्रोध, द्वेष आदि भाव होना। जिस पर तुम्हारा दाँत है वह कब तक बच सकता है।

दाँता किलकिल होना—गाली-गलौज, कहा-सुनी। मुझे रोज की दाँता किलकिल अच्छी नहीं लगती, एक दिन झगड़ा मुकाओ।

दाँता पडना—हथियार की धार में गड्ढे हो जाना।

दाँती बैठना, लगना—दाँतों का ऐसा मिल जाना कि मुँह जल्दी न खुल सके।

दाँतों उँगली काटना—दे० दाँत तले उँगली दबाना।

दाँतों चढ़ना—(१) बुरी नज़र का निशाना बनाना। (२) किसी को खटकना।

दाँतों चढ़ाना—(१) बुरी नज़र डालना। (२) पीछे पड़ा रहना। (३) आक्षेप करते रहना।

दाँतों पर रखना—चखना। दाँतों पर रखो तो स्वाद आवे।

दाँतों पर होना—दाँत निकलने की उम्र होना।

दाँतों में जीभ सा होना—शत्रुओं से घिरा रहना। विभीषण ने कहा मैं तो दाँतों के बीच में जीभ की तरह रहता हूँ।

दाँतों में तिनका लेना—हा हा खाना, गिड़गिड़ाना। दाँतों में तिनका लेकर जा और कह मैं, तुम्हारी गऊ हूँ, वह तुझे क्षमा कर देंगे।

दाँतों में पसीना आना—बहुत मेहनत पड़ना। खेत में कुदाल चलाते चलाते दाँतों में पसीना आ गया।

दाँतों से उठाना—बड़ी कंजूसी से जोड़ना। एक दाना भी गिरे तो वह दाँतों से उठावे।

दाँतों से हाथ काटना—(१) गुस्सा उतारना। (२) बहुत पछताना।

दाई से पेट छिपाना रहस्य जानने वाले से बात छिपाना। ऐब न अपना तुझको जताना, है दाई से पेट छिपाना।

दाखिल करना—देना, भर देना। जुरमाना दाखिल कर दिया।

दाखिल होना—अदा कर देना, लाकर जमा करना।

दाग़ देना—क्रिया-कर्म करना कलंक या बदनाम करना। पुत्र होत मर जाय जो कुल में दाग़ लगावे।

दाढ़ गरम करना—(१) अच्छा भोजन मिलना। (२) रिश्वत देना। पुलिस की दाढ़ गरम किये बिना कुछ न होगा।

दाढ़ न लगाना—दाँत से न कुचलना।

दाढ़ मारकर रोना—दे० दहाड़ मार कर रोना। वह ऐसी दाढ़ मार कर रो रही है मानों कोई मर गया हो।

दाढ़ा फूँकना—जलन पैदा करना।

दाद चाहना—(१) अत्याचार के

प्रतिकार की प्रार्थना करना। (२) सराहना चाहना।

दाद देना—(१) न्याय करना। देव तो दया निकेत देत दाद दीन की पै मोरिये अभाग मेरी बार नाथ ढील की। (२) सराहना, वाह वाह करना। दाद देना तो अलग रहा नुक्ता चीनी करते हैं, ये है बुड्ढे शायरों का हाल।

दाने को मुहताज—अति दरिद्र होना।

दाने दाने को तरसना—अन्न का कष्ट सहना।

दाना पानी उठना—जीविका न रहना। दिल्ली से दाना पानी उठ गया जभी तो चले गये वरना २० वर्ष यहीं रहे थे।

दाना पानी के हाथ—भाग्याधीन है। सुख दुख दाना पानी के हाथ है।

दाना पानी छोड़ना—न खाना न पीना, उपवास करना। २१ दिन के लिये दाना पानी छोड़ा है।

दाना बदलना—एक पक्षी का दूसरे पक्षी की चोंच में दाना डालना।

दाना भराना—चिड़ियों का बच्चों के मुँह में चारा डालना।

दाने का माल—वह बरतन जिसकी नक्काशी उभारी नहीं जाती।

दाब तले होना—वश में होना। मैं किसी की दाब तले नहीं, जो जी में आवेगा करूँगा।

दाब दिखाना—अधिकार या भय जताना। मुझे क्या दाब दिखाते हो मैं तुम्हारी तनखाह नहीं पाता। (१) हक या माल न देना। (२) जबरदस्ती कब्जा कर लेना। वह हमारी जायदाद दाब बैठा है।

दाब मानना—डर या वश में रहना। लड़का किसी की दाब नहीं मानता, शरारती है।

दाब में रखना—वश या शासन में रखना। लड़के को दाब में रखो नहीं तो बिगड़ जायगा।

दाब में रहना—काबू में होना। मैं तुम्हारी दाब में नहीं रहता।

दाब में लाना—वश में करना।

दाब में होना—अधीन या वश में होना।

दाम उठना—कीमत मिलना, बिकना। इसके पूरे दाम उठे।

दाम करना—(१) कीमत तै करना। कितने दाम कर दिये २) के बजाय ५)? (२) सौदा करना। झट से दाम कर लो मैं दे दूँगा।

दाम खड़ा करना—किसी भाव भी बेचना। तुमने तो इसके अच्छे दाम खड़े किये, मैं कहाँ बेचता।

दाम चुकाना—(१) कीमत देना। (२) कीमत ठहराना। दाम चुका

कर लिया करो यहाँ के दुकानदार चौगुनी कीमत बोलते हैं।

दाम दाम भर देना—कुछ (ऋण) बाकी न रखना, कौड़ी कौड़ी चुका देना।

दाम दाम भर लेना—कौड़ी कौड़ी ले लेना। उसने दाम दाम भर लिये एक पैसा न छोड़ा।

दाम देने आना—कीमत देनी पड़ना। मुझसे जरा सी टूट गई, सारे दाम देने आये।

दाम भरना—नुकसान रूप कीमत देना। हमें सारी के दाम भरने पड़े, टूटी आधी थी।

दाम भर पाना—कीमत मिलना।

दाम में लाना—धोखे में फँसाना। तुम क्या दाम में लाओगे, मैं तुमसे ज्यादा होशियार हूँ।

दामनगीर होना—पीछे लगना, ऊपर आ पड़ना। बला दामनगीर हुई, पीछा न छूटा।

दायर करना—मुकदमा चलाना। उसने मेरे ऊपर दावा दायर किया है।

दायर होना—पेश होना। अपील दायर होगी, मुकदमा एक तरफ़ा दायर हुआ है।

दायें बाएँ होकर निकल जाना—आँख बचा कर या धोखा देकर निकल जाना।

दायें होना—अनुकूल या प्रसन्न होना। भगवान दायें हों तो काम स्वयं बने।

दाल गलना—(१) दाल पक जाना। (२) मतलब निकलना, युक्ति चलना। हमारी दाल तब गले जब मंत्री विरोध न करे।

दाल चप्पू होना—गुत्थमगुत्था होना, लिपट कर एक हो जाना। दोनों पतंगें दाल चप्पू हो गईं, कटती कैसे।

दाल छूटना—खुरंड अलग होना। शीतला की दाल तो छूट गई।

दाल जूतियों बटना—खूब लड़ाई झगड़ा होना, अनबन होना। दोनों भाइयों में जूतियों दाल बटी, हमने सैल देखी।

दाल दलिया—(१) रूखा सूखा भोजन। (२) अंतिम फैसला। इस का कुछ दाल दलिया कर डालो तो फिर दूसरे काम में लगें।

दाल बँधना—(१) अक्स का इकट्ठा होकर पड़ना। (२) खुरंड पड़ना।

दाल भात का कौर समझना—सरल या आसान जानना। यह भी दाल भात का कौर समझे हो जो हड़प लोगे, मुकदमे में जीतोगे तब ले सकोगे।

दाल में कुछ काला होना—(१) खटका या संदेह होना। (२) बुरा हाल होना। जरूर दाल में कुछ

काला है नहीं तो उनके सामने क्यों न आये।

दाल रोटी चलना—गुज़र होना।

दाल रोटी से खुश होना—खाने पीने का कष्ट न होना। जमा जथा तो नहीं है हाँ दाल रोटी से खुश हैं।

दाँव करना—धात में लगना, मौका तकना।

दाँव खेलना—धोखा देना, चाल चलना। कितने ही दाँव खेले परन्तु काम न बना सके।

दाँव चलना—(१) शतरंज की गोटी या ताश के पत्ते आदि रखना। (२) चाल चलना।

दाँव चूकना — मौका खोना, सुअवसर निकलना। दाँव चूकते ही उसने मात दी, देखते रह गये।

दाँव ताकना—अवसर या मौका ढूँढ़ना, देखते रहना।

दाँव देना—(१) खेल में हारने पर नियत दंड देना, परिश्रम करना (लड़के)। तुम्हारे संग कहो को खेले दाँव देत नहिं करत रुनैया? (२) दे० दाँव खेलना।

दाँव पर चढ़ना—(१) वश में होना, अनुकूल झुकाव होना। सेठ जी मेरे दाँव पर चढ़े हैं तुम्हारी एक न चलेगी।

दाँव पर चढ़ाना — मतलब के मुआफ़िक बनाना।

दाँव पर रखना—बाज़ीपर लगाना।

दाँव पर लाना—दे० दाँव पर चढ़ाना। दाँव पर लाकर उसी से सारा काम करा लिया।

दाँव फेंकना—जुए की कौड़ी आदि डालना।

दाँव में आना — दे० दाँव पर चढ़ना।

दाँव लगना — मौका, अनुकूल अवसर मिलना। दाँव लगते ही वह उड़ा ले गया।

दाँव लगाना—(१) दे० दाँव पर रखना। (२) दे० दाँव ताकना।

दाँव लेना—(१) खेल में हारने वाले से नियत दंड लेना। (२) बदला लेना। अब लैहौं वह दाँव छाड़िहौं नहिं बिनु मारे।

दावा खारिज होना—मुकदमा हारना, हक़ साबित न होना।

दावा जमाना, ठोकना—मुकदमा चलाना।

दाहिना हाथ होना—बहुत सहायक या मान्य कार्यकर्ता होना। तुम तो मेरे दाहिने हाथ हो तुम्हारे बिना क्या कर सकता हूँ।

दाहिना होना—अनुकूल या प्रसन्न होना। राम भये जिहि दाहिने सबै दाहिने ताहि।

दाहिनी देना—दाहिनी तरफ़ से प्रदक्षिणा करना।

दाहिनी लाना—प्रदक्षिणा करना।

पंचवटी गोदहि प्रणाम करि कुटी दाहिनी लाई।

दिन आना—(१) समय पूरा होना। (२) अंतिम समय आना। उसके दिन आगये समझो जो ऐसी बातें करता है।

दिन काटना—समय बिताना। क्या सुखी हैं? दिन काट रहे हैं।

दिन गँवाना—फ़िज़ूल वक्त खोना। क्यों बैठे बैठे दिन गवाँ रहे हो कुछ काम करो।

दिन को तारे दिखाई देना—दुख से बुद्धि ठिकाने न रहना। मुझसे विरोध करोगे तो दिन को तारे दिखाई देने लगेंगे।

दिन को दिन रात को रात न समझना—अपने आराम का ध्यान तक न करना, दिन रात काम में लगना। जिनके लिये मैंने दिन को दिन और रात को रात न समझकर कष्ट सहे वही अब विरोध कर रहे हैं।

दिन चढ़ना—(१) गर्भ के दिन होना। कितने दिन चढ़े हैं, दो महीने? (२) सूर्योदय के बाद समय बीतना।

दिन छिपना, डूबना—सूर्यास्त होना।

दिन जाना—(१) आनन्द में समय बीतना। तुम्हारे पास रह कर तो दिन जाते मालूम भी नहीं होते। (२) समय बीतना। वह दिन गये जब हमारी पूछ थी।

दिन टलना—(१) मौत के बिस्तरे पर पड़ने वाले का समय गुज़रना। (२) गर्भ के चिन्ह ज़ाहिर होना।

दिन ढलना—तीसरा पहर, संध्या होना। दिन ढले चलेंगे दो घंटे में दिन डूबते तक पहुँच जावेंगे।

दिन दहाड़े, दिहाड़े, या धौले—सब के जागते देखते हुए, दिन के समय। दिन दहाड़े उनके यहाँ दस हज़ार की चोरी हो गई।

दिन दिन, दिन पर दिन—हर रोज़, नित्य प्रति। दिन दिन वह कंजूस बन रहा है।

दिन दूना रात चौगुना होना, बढ़ना—बहुत जल्दी और बहुत ज्यादा बढ़ना, उन्नति करना। वह तो दिन दूना रात चौगुना मोटा हो रहा है, सात दिन में दस सेर वजन बढ़ गया।

दिन धरना, धराना—दिन निश्चित करना, कराना।

दिन निकलना—(१) सूर्योदय होना। दिन निकले तक मत सोओ। (२) समय न रहना। वे दिन निकल गये जब मैं भोला था।

दिन पड़ना—संकट आना। दिन पड़ने पर मित्र भी नहीं पूछते।

दिन पूरे करना—जैसे तैसे गुज़ारा करना। भाई जीवन के दिन पूरे

कर रहे हैं वरना क्या रखा है दुनिया में।

दिन बिगड़ना—बुरे दिन आना।

दिन बहुरना, फिरना—अच्छे दिन फिर आना। जब दिन फिरेंगे तो बनते देर न लगेगी।

दिन भरना—दे० दिन पूरे करना।

दिन भारी होना, रहना—कठिन समय आना। ऐसे ही ग्रह पड़े हैं यह दिन कुछ भारी हैं।

दिन भुगताना—दे० दिन काटना।

दिन होना—सूर्य आकाश में होना। अभी दिन है चले जाओ।

दिनों का, के फेर होना—दशा बदलना। दिनों का फेर है जो जमीन पर पैर न रखते थे आज नंगे पाँव भाग रहे हैं।

दिनों से उतरना—जवानी ढलना।

दिन रो रो कर काटना—दुख से दिन बीतना।

दिमाग़ आसमान पर चढ़ना, होना—बहुत अभिमान होना, ऐंठे रहना। उनका तो दिमाग़ आसमान पर है वह तुमसे बात भी नहीं करेंगे।

दिमाग़ ऊँचा होना—(१) दे० दिमाग़ आसमान पर होना। (२) बहुत बुद्धिमान होना। बहुत ऊँचा दिमाग़ है ऐसी बात कहता है जो बीस वकील भी न बता सकें।

दिमाग़ का अर्क निचोड़ना—बुद्धि से बहुत काम लेना। घंटों दिमाग़ का अर्क निचोड़ा तब समझ में आया।

दिमाग़ को कौड़ियों के मोल खरीदना—मेहनत से लिखी पुस्तक पर कम रुपये देना।

दिमाग़ खाना, चाटना—(१) बहुत बोलकर किसी को दुखी करना। तुम तो दिमाग़ खाए डालते हो मुझसे यह बकवाद नहीं सुनी जाती। (२) सोचने से सिर दर्द होना, बुद्धिक्षीण होना। रात को काम करना दिमाग़ चाट जाता है।

दिमाग़ खाली करना—(१) मगज पच्ची करना, अधिक बुद्धि-व्यय करना। तुम्हें समझाने के लिये तो दिमाग़ घंटों खाली करें तब समझोगे। (२) दे० दिमाग़ खाना।

दिमाग़ चढ़ना—दे० दिमाग़ आसमान पर चढ़ना।

दिमाग़ झड़ना—घमंड दूर होना। एक ही चक्कर में दिमाग़ झड़ गया।

दिमाग़ न पाया जाना, न मिलना—दे० दिमाग़ चढ़ना।

दिमाग़ परेशान करना—दे० दिमाग़ खाली करना।

दिमाग़ में खलल होना—पागल होना।

दिमाग़ में रहना—ऐंठ में रहना।

दिमाग़ लड़ाना—बहुत विचार करना। बहुत देर तक दिमाग़ लड़ाया फिर क्या था सारी बात समझ में आगई।

दियासलाई लगाना—जलाना, किसी काम की चीज़ न होना। अश्लील किताबें दियासलाई लगाने लायक हैं।

दिल अटकना—दे० जी लगना।

दिल अटकाना—दे० जी लगाना।

दिल आना—दे० जी आना।

दिल उकताना—दे० जी उकताना।

दिल उचटना—दे० जी उचटना।

दिल उचाट होना—दे० जी उचाट होना।

दिल उठाना—दे० जी हटाना।

दिल उमड़ना—दे० जी भर आना।

दिल उलटना—दे० जी घबराना।

दिल कड़ा करना, कड़वा करना दे० जी कड़ा करना।

दिल कबाब होना—दे० जी जलना।

दिल का कँवल खिलना—चित्त प्रसन्न होना।

दिल का गवाही देना—(१) संभावना या औचित्य का निश्चय होना। हमारा दिल गवाही देता है कि वह जरूर आवेगा। (२) उचित अनुचित, होना न होना मानना। उनके साथ अकेले जाने के लिये हमारा दिल गवाही नहीं देता।

दिलका बादशाह—(१) बहुत उदार। (२) मन मौजी, लहरी। वह तो जी का बादशाह है देने पर आवे तो सैकड़ों दे दे।

दिल का बुखार निकलना—दे० जी का बुखार निकलना।

दिल की आग खुलना—मन के बुखार निकलना। आग खुली दिल की न किसी पर, घुल गई जान अंदर ही अंदर।

दिल की कली खिलना—जी खूब खुश होना। तुम्हें देखते ही मेरे दिल की कली खिल जाती है।

दिल की गाँठ खोलना—मनमुटाव या ईर्ष्या दूर करना। उन्होंने आकर दोनों के दिल की गाँठ खोल दी और मेल करा दिया।

दिल की लगी बुझाना—हृदय के दुख को दूर करना। मेरे दिल की लगी बुझाएगा दिल का रागी।

दिल का भर जाना—दे० जी भर जाना।

दिल की दिल में रहना—दे० जी की जी में रहना।

दिल की फाँस—मन की पीड़ा दुख। वही सिखाता था चला गया दिल की फाँस निकल गई।

दिल कुढ़ना—चित्त दुखी होना।

तेरी यह करतूतें देख मेरा जी कुढ़ता है।

दिल कुढ़ाना—चित्त दुखी, रंजीदा करना।

दिल कुम्हिलाना—मन दुखी या शोकाकुल हो जाना।

दिल के दरवाजे खुलना—जी का हाल मालूम होना। उसे विश्वास हो गया कि मैं किसी से न कहूँगा तब उसके दिल के दरवाजे खुले, और उसने असली भेद कहा।

दिल के फफोले फूटना—हृदय के उद्गार निकलना।

दिल के फफोले फोड़ना—जली-कटी, भली-बुरी कहकर हृदय के उद्गार निकालना, मन ठंडा करना।

दिल को (में) करार होना—हृदय में शांति, धैर्य या संतुष्टि होना। मुझे दिल में करार हो जो तुम मेरी क़सम खालो कि न कहोगे।

दिल को मसोसना—शोक, क्रोध आदि को दबा रखना। दिल को मसोस रह गये, बेबसी ठहरी।

दिल को लगना—दिल पर प्रभाव पड़ना, जी में बैठना। बस यह बात मेरे दिल को लग गई और मैं बदल ही तो गया।

दिल खटकना—दे० जी खटकना।

दिल खट्टा होना—दे० जी खट्टा होना।

दिल खिलना—चित्त प्रसन्न होना।

दिल खुलना—दे० जी खुलना।

दिल खोलकर—दे० जी खोल कर।

दिल चलना, चलाना—दे० जी चलना, चलाना।

दिल चीर कर देखना—भीतरी हाल मालूम करना। मेरा दिल चीर कर देखो मैं कितना दुखी हूँ पर प्रकट किस पर करूँ, कोई साथी नहीं।

दिल चुराना—दे० जी चुराना।

दिल छीन लेना दिल जमना—(१) काम में जी या ध्यान लगना। तुम्हारा दिल तो जमता नहीं, तुम काम कैसे करोगे ? (२) चित्त संतुष्ट होना, जी भरना। अगर तुम्हारा दिल जमे तो तुम हमारे साथ चलो। (३) रुचि अनुकूल होना। जिस चीज़ पर दिल जमे उसे खरीदो।

दिल जमाना—ध्यान देना, चित्त लगाना। करना है दिल जमाकर करो वरना मत करो।

दिल जलना—दे० जी जलना।

दिल जलाना—दे० जी जलाना।

दिल जान से लगना—दे० जी जान से लगना।

दिल टूटना—दे० जी टूटना।

दिल टूट जाना—दे॰ जी टूट जाना।

दिल ठिकाने लगाना—मन को सहारा देना, शांत करना, व्याकुलता दूर करना।

दिल ठिकाने होना—धैर्य, संतोष, स्थिरता होना।

दिल ठुकना—जी॰ ठुकना।

दिल ठोकना—मन को पक्का करना, दृढ़ करना।

दिल डूबना—दे॰ जी डूबना।

दिल ढूँढना—मन की बातों का पता लगाना। जो औरत के दिल को ढूँढ़ ले वह समझो, सुखी है।

दिल तड़पना—प्रेम की व्याकुलता, बेचैनी या घबराहट होना। दिल तड़प कर रह गया जब याद आई आपकी।

दिल तोड़ना—हिम्मत या उत्साह भंग करना। बेचारी का दिल तोड़ दिया अब परीक्षा न देगी।

दिल थामना—सहना, धैर्य या संतोष धारण करना। हाथ निकले अपने दोनों काम के दिल को थाम उनका दामन थाम के।

दिल दहलना—दे॰ जी दहलना।

दिल दुखना—दे॰ जी दुखना।

दिल दुखाना—दे॰ जी दुखाना।

दिल देखना—मन के भेद का पता लगाना, मन टटोलना। हमें क्यों की कोई जरूरत नहीं, खाली तुम्हारा दिल देखते थे।

दिल देना—आशिक होना।

दिल दौडाना—दे॰ जी दौड़ाना।

दिल धक धक करना—दे॰ कलेजा धक धक करना।

दिल धड़कना—दे॰ कलेजा धड़कना।

दिल धुकड़ पुकड़ करना—दे॰ कलेजा धुकड़ पुकड़ करना।

दिल पक जाना—दे॰ कलेजा पक जाना।

दिल पकड़ लेना, पकड़ कर बैठ जाना—दे॰ कलेजा पकड़ लेना।

दिल पकड़ा जाना—दे॰ जी पकड़ा जाना।

दिल पकड़े फिरना—ममता-मुहब्बत से विकल होकर घूमना।

दिल पर नक्श होना—जी में बैठ जाना, जम जाना। उसकी बात मेरे दिल पर नक्श हो गई कि मामला वैसा ही होगा।

दिल पर मैल आना—दिल फट जाना, मन मोटाव, प्रीति-भंग होना। अब वह उस तरह प्रेम से बातें नहीं करते कुछ दिल पर मैल आगया है।

दिल पर साँप लोटना—दे॰ कलेजे पर साँप लोटना।

दिल पर हाथ रखना—(१) संतोष देना। मैंने पूछा हाथ यह

क्यों मेरे दिल पर रख दिया, मुस्करा कर बोले, हां, कुछ तो समझ कर रख दिया। (२) सत्य, जो दिल में हो। दिल पर हाथ रख कर कहो क्या तुम दोषी नहीं हो?

दिल पर हाथ रखे फिरना—दे० दिल पकड़े फिरना।

दिल पसीजना— दे० दिल पिघलना।

दिल पाना—मन की थाह पाना। मैंने उसका दिल पा लिया है वह और कुछ नहीं थोड़ा सा रुपया चाहता है।

दिल पीछे पड़ना—दे० जी पीछे पड़ना।

दिल फ़िरना, फ़िर जाना—दे० जी फिर जाना।

दिल फीका होना—दे० जी खट्टा होना।

दिल फेरना—(१) घृणा दिला देना। (२) खिलाफ़ कर देना। मेरी ओर से उनका दिल फेर दिया है, अब वह मुझसे बोलते तक नहीं।

दिल बढ़ना—दे० जी बढ़ना।

दिल बढ़ाना—दे० जी बढ़ाना।

दिल बहलाना—दे० जी बहलाना।

दिल बाग़ बाग़ होना—बहुत खुश होना। दाग़ की शायरी दिल बाग़ बाग़ करती है।

दिल बुझना—उत्साह या उमंग न रहना। आफ़तें सहते सहते दिल बुझ गया है अब न चाह है न हिम्मत।

दिल बुरा होना } —दे० जी
दिल बेकल होना } बुरा होना।

दिल बैठा जाना—दे० जी बैठा जाना।

दिल भटकना—चित्त चंचल, व्यग्र होना। दिल न फिरे दुनिया में भटकता, कोई रहे काँटा न खटकता।

दिल भर आना—दे० जी भर आना।

दिल भरना—दे० जी भरना।

दिल भारी करना—दे० जी भारी करना।

दिल मर जाना—दिल का जोश हिम्मत, इच्छा उमंगें आदि जाती रहना।

दिल मसोस कर रह जाना—दे० कलेजा मसोस कर रह जाना।

दिल मसोसना—दे० दिल को मसोसना।

दिल मारना—दे० मन मारना।

दिल मिलना—दे० जी मिलना, मन मिलना।

दिल में आग लगना—मन को जलाना। तूही दिलों में आग लगाये, तूही दिलों की आग बुझाये।

दिल में आना—दे० जी में आना।

दिल में काँटा सा खटकना—बुरा लगना।

दिल में खुभना, गड़ना—दे० जी गड़ना खुभना।

दिल में गाँठ, गिरह, पड़ना—दे० गाँठ मन में पड़ना।

दिल में घर करना—दे० जी में घर करना।

दिल चुटकियाँ, चुटकी लेना—दे० चुटकी लेना।

दिल में चुभना—दे० जी में गड़ना।

दिल में चोर बैठना—दे० मन में चोर बैठना।

दिल में जगह करना—दे० जी में घर करना।

दिल में दिल डालना—(१) अपना सा दूसरे का दिल बनाना। (२) किसी के दिल पर अपना असर डालना।

दिल में फफोले पड़ना—चित्त को कष्ट, दुख पहुँचना।

दिल में फरक आना } **दिल में बल पड़ना** }—सद्भाव में अंतर आना, मन मोटाव होना। दिलों में बल पड़ने पर मेल होना असम्भव है।

दिल में रखना—दे० जी में रखना।

दिल मैला करना—दे० मन मैला करना।

दिल रंखना—दे० जी रखना।

दिल रुकना—दे० जी रुकना।

दिल लगना—दे० जी लगना।

दिल लगाना—दे० जी लगाना।

दिल ललचना—दे० जी ललचना।

दिल लेना—(१) प्रेम में फँसाना। दिल लेके चले जाओगे कैसे जियेंगे हम। (२) मन की असली बात जानना। मैं उनका दिल ले चुका हूँ उनकी इच्छा यह नहीं है।

दिल लोटना—दे० जी लोटना।

दिल सम्हालना—मनको वश में रखना। जोश था मेरे दिल में जहाँ तक, मैंने सम्हाला दिल को वहाँ तक।

दिल से उठना—करने की इच्छा स्वयं उत्पन्न होना।

दिल से उतरना, गिरना—(१) आँखों से गिरना, मान न रहना। (२) अच्छी न लगना। यह चीज़ मेरे दिल से इतनी उतर गई है जितना कि वह मेरे दिल से गिर गया है।

दिल से उतारना—भुलाना, चाह न रखना। उसने मुझे अपने दिल से उतार दिया है।

दिल से दूर करना—भुला देना, ध्यान छोड़ देना। यह ख्याल ही दिल से दूर करदो कि वह तुम्हें मिल जायगी।

दिल से धुआँ उठना—आह

निकलना । आँसू जारी हैं मेरी आँखों से, आह का दिल से धुआँ उठता है ।

दिल हटजाना — दे० जी फिर जाना ।

दिल हाथ में रखना—प्रसन्न या वश में रखना । उसका दिल तो मैं हाथ में रखता हूँ चाहे जो करा लूँ ।

दिल हाथ में लेना—किसी को प्रसन्न कर अधिकार में, वशीभूत करना । दो दिन में मालिक का दिल हाथ में ले लूँगा फिर तो मेरा ही राज होगा ।

दिल हिलना—दे० जी दहलना ।

दिल ही दिल में—मन ही मन, चुपके से । वह दिल ही दिल में जलता है मुँह से मीठा बना है ।

दिलोजान से—दे० जी जान से ।

दिल्लगी उड़ाना — (१) हँसी करना । वह तुम्हारे कार्यों को महत्व देना तो दूर रहा, दिल्लगी उड़ाता है । (२) हँसी कह कर बात टाल देना । आप तो योंही दिल्लगी उड़ाया करते हैं ।

दिल्लगी में—हँसी में, योंही । मैंने दिल्लगी में उन्हें यहाँ से जाने को कहा था वह नाराज़ होकर चले गये ।

दिवाला निकलना — दिवाला होना ।

दिवाला निकालना, मारना— ऋण चुकाने में असमर्थ, दिवालिया बन जाना ।

दिसावर उतरना—विदेश में भाव सस्ता हो जाना । बाँसों का दिसावर उतर गया है, अब यहाँ भी सस्ते हो गये हैं ।

दीठ उठाना—ताकने के लिये आँख ऊपर करना ।

दीठ उतारना, झाड़ना—मंत्र द्वारा नज़र दूर करना ।

दीठ करना—ताकना, देखना ।

दीठ खाजाना—बुरी दृष्टि से शारीरिक हानि । बच्चे को ज़रा सजा कर भेजो बस उसकी दृष्टि खा जाती है ।

दीठ गड़ाना, जमाना—एक टक देखना ।

दीठ चुराना—(शर्म या डर से) सामने न आना ।

दीठ चूकना—नज़र न पड़ना । दीठ चूकते ही चुराली ।

दीठ जलाना—नज़र उतारने के लिये राई नोन का टोटका करना ।

दीठ जुड़ना—देखा देखी होना, साक्षात्कार होना ।

दीठ जोड़ना—आँख मिलाना, देखा देखी करना ।

दीठ पर चढ़ना—(१) निगाह में जँचना, पसंद आना । (२) खटकना । मुझे फलता फूलता तो वह कभी नहीं देख सकते हर

समय दीठ पर चढ़ा रहता है। (३) दे० दीठ खाजाना।

दीठ फिरना—(१) आँखों का दूसरी ओर देखने में लगना। (२) प्रेम या ध्यान न रहना। मेरी ओर से दीठ फिरी है, न जाने क्या कसूर हुआ।

दीठ फिसलना—चमक दमक के कारण नज़र न ठहरना, आँखों में चकाचौंध होना।

दीठ फेंकना—दूरी पर नज़र डालना, ताकना।

दीठ फेरना—(१) नज़र हटा लेना, दूसरी ओर देखना। (२) कृपा दृष्टि न रखना। क्यों दीठ फेरली है, क्या है गुनाह मेरा ?

दीठ बचाना—(१) दे० दीठ चुराना। (२) न दिखाना, छिपाना। दीठि बचाय सलोनी की आरसी में चिपकाइ गयो बहराइ कै।

दीठ बाँधना—जादू से नज़र को बाँधना जिससे और का और दिखाई दे।

दीठ बिछाना—(१) बड़ी श्रद्धा से स्वागत करना। (२) उत्सुकता से आने की प्रतीक्षा करना।

दीठ भर देखना—जी भर कर देखना।

दीठ मारना—(१) आँख से इशारा करना। (२) आँख के इशारे से रोकना।

दीठ मारी जाना—देखने की शक्ति न रहना।

दीठ मिलना मिलाना—दे० दीठ जुड़ना, जोड़ना।

दीठ में आना } दिखाई पड़ना।
दीठ में पड़ना } तुम्हारी दीठ में आवे तो तुम ले आना।

दीठ में समाना—हृदय में ध्यान बना रहना।

दीठ लगना—(१) देखा देखी से प्रेम होना। दीठ लगी वे पड़े घायल हैं

दीठ लगाना—ताकना। नहिं लावहिं पर तिय मन दीठी।

दीठ लड़ना—घूराघूरी होना।

दीठ लड़ाना—घूरना, आँखें आँखों के सामने किए रहना।

दीठ से उतरना, गिरना—श्रद्धा, विश्वास या प्रेम पात्र न रहना।

दीठ होना—इच्छा होना, दृष्टि शक्ति होना।

दीदा दलेल समझना—बेहया बेशर्म समझना। सब को दीदा दलेल समझा है, क्या मुलाक़ात खेल समझा है ?

दीदा धोना—बेशर्म होना। खौफ़ दिलों से खोदिये जिसने, शरम से दीदे धो दिये जिसने।

दीदा फोड़ना—आँख फोड़ना।

दीदा लगना—मन लगना। यहाँ इसका दीदा नहीं लगता, क्योंकि काम करना पड़ता है ?

दीदे का पानी ढल जाना—बुरे काम में शर्म न रहना, आँखों में लिहाज़ न रहना।

दीदे निकालना—(१) आँखें क्रोधित करना। कैसे भैंस के से दीदे निकाल रही है मानो खा जायगी। (२) अंधा करना। ये दोनों दीदे निकाल लूँगी सौत के।

दीदे पटम होना—आखें फूट जाना।

दीदे फाड़ कर देखना—टकटकी बाँधकर या आँख खूब खोल कर देखना।

दीदे मटकाना—हाव भाव सहित आखें चलाना।

दीन दुनिया भूल जाना—कुछ सुध न रहना, ज़रा ख्याल न रहना। उसके पीछे वह दीन दुनिया को भूल गया है, दीवाना हुए फिरता है।

दीमक खाया—(१) दीमक की खाई वस्तु की तरह गड्ढेदार। (२) अंदर से खोखला। मेरा शरीर तो खाँसी और चिन्ता की दीमक ने खा डाला है। (३) दीमक के कीड़े का खाया हुआ।

दीमक का चाटना—दीमक द्वारा खाया जाना। किताब के पन्ने दीमक चाट गई।

दीए का हँसना—दे० चिराग़ का हँसना।

दीया जलना—दे० चिराग़ जलना।

दीया जलाना--दिवाला निकालना।

दीया जलने के समय—दे० संध्या के समय।

दीया ठंढा करना,--दीया बुझाना।

दीया ठंढा होना—घर में रौनक न रहना।

दीया दिखाना — दे० चिराग दिखाना।

दीया बढ़ाना—दीया बुझाना।

दीया बत्ती करना—दीया जलाने का सामान करना, चिराग़ जलाना।

दीया बत्ती का समय—सूर्यास्त का समय।

दीया ले कर ढूँढना—छानबीन करना।

दीये में बत्ती पड़ना—दीया जलाने का समय होना।

दीये से फूल झड़ना — गुल झड़ना।

दीवाना होना—(किसी वस्तु वा व्यक्ति के लिये) व्यग्र, हैरान होना।

दीवार उठाना—दीवार बनाना, ऊँची करना।

दीवारें चाटना—दिन काटना।

दुआ माँगना—प्रार्थना करना।

दुआ लगना—आशीर्वाद का फल मिलना।

दुकान उठाना—दुकान या कारबार बंद करना।

दुकान करना—व्यापार शुरू करना, दुकान खोलना। पानों की दुकान की उसमें भी घाटा आया।

दुकान खोलना—(१) दे० दुकान करना। (२) दुकान के किवाड़ खोलना।

दुकान चलना--सौदा खूब बिकना। आजकल तो दुकान अच्छी चल रही है १०) रोज का नफ़ा है।

दुकान बढ़ाना—(१) दुकान के किवाड़ बंद करना। दुकान तो रात को ११ बजे बढ़ाता हूँ।

दुकान लगाना—(१) बिक्री की चीज़ें ठीक ठीक रखना। दुकान तो नौकर लगाता है मैं तो देर में आता हूँ। (२) दुकान बंद करना। दुकान लगाकर रात को आऊँगा। (३) चीज़ें फैलाकर रखना। वह लड़का जहाँ बैठता है दुकान लगा देता है।

दुख उठाना—तकलीफ़ सहना।

दुख देना—कष्ट पहुँचाना।

दुख पड़ना—संकट, विपत्ति आना।

दुख पहुँचना—दुख होना।

दुख पहुँचाना—दुखित करना।

दुख पाना—आपत्ति, संकट, कष्ट सहना।

दुख बटाना— दुख के समय सहायता देना, साथ देना। दुख बटाओगे दुआ पाओगे।

दुख बिसराना—(१) शोक रंज की बात भूलना। (२) जी बहलाना। दुख बिसराने के लिए ज़रा खेल में मन लगाता हूँ।

दुख भरना—कष्ट के दिन गुज़ारना।

दुख भुगतना, भोगना—दुख उठाना।

दुख लगना—खेद या रंज होना।

दुखड़ा पड़ना—स्त्री का विधवा होना।

दुखड़ा पीटना—बड़े दुख से जीवन गुजारना। जब से इस घर में आई हूँ दुखड़ा पीटती हूँ एक दिन सुख से नहीं बिताया।

दुखड़ा रोना—दुख की कहानी कहना। वह दिन रात यही दुखड़ा रोता है कि बहू खराब है।

दुखाना जी—मन में दुख पहुँचाना। बुरा भला कह कर क्यों बिचारी का जी दुखाते हो।

दुग दुगी में दम होना—प्राण गले में आना।

दुनिया के परदे पर—संसार भर में।

दुनिया की हवा लगना—संसारी विषयों का ज्ञान होना। दुनिया की हवा लगी लड़का बिगड़ा।

दुनियादारी की बात—दिखावे की बनावटी बात। दुनियादारी की बात रहने दो ठीक ठीक मतलब बतलाओ।

दुनिया भर का—बहुत अधिक। वह दुनिया भर का चालाक है इस लिये दिखावे का दुनिया भर का बखेड़ा फैला रखा है।

दुनिया से उठजाना, दुनिया के परदे से उठजाना—मर जाना।

दुनिया से चल बसना—मर जाना।

दुपट्टा तान कर सोना—मजे से दिन बिताना, निश्चिंत सोना।

दुपट्टा बदलना—सहेली बनाना।

दुविधा में डालना—संदेह दिलाना, अनिश्चित दशा में करना।

दुविधा में पड़ना—सोच या संदेह में होना।

दुम के पीछे फिरना—साथ साथ लगा रहना।

दुम दबा कर भागना, चल देना—डरपोक कुत्ते की तरह चल देना, भागना। मैं तो ऐसा दुम दबा कर भागा कि घर आकर ही दम लिया।

दुम दबा जाना—(१) डर से भाग जाना। (२) भय से कोई काम या इरादा छोड़ना। बस जेल का नाम सुनते ही दुम दबा गये, उन्हें देखो जो फांसी के तख्ते पर चढ़ते हैं।

दुम में घुसना—गायब हो जाना। एक चाँटे में सारी बदमाशी दुम में घुस जायगी।

दुम में घुसा रहना—खुशामद के मारे साथ लगे रहना।

दुम में रस्सा बाधूँ—नटखट चौपाए की तरह बाँधू (विनोद)।

दुम हिला कर बैठना—साफ़ करके बैठना। कुत्ता भी दुम हिला कर बैठता है तुम तो आदमी हो, कपड़े झाड़ कर बिछाओ।

दुम हिलाना—प्रसन्नता या चाहना प्रकट करना। तुम क्यों दुम हिलाते हो तुम्हें न मिलेगी।

दुर दुर करना—तिरस्कार या घृणा पूर्वक हटाना।

दुर दुर फिट फिट—बेइज़्ज़ती।

दुरा गौन देना—लड़की को दूसरी बार सुसराल भेजना।

दुरा गौन लाना—बहू को दुबारा लाना।

दुरुस्त करना—(१) चाल सुधारना। (२) दंड देना। दो थप्पड़ों में दुरुस्त कर दूँगा।

दुलत्ती छाँटना, झाड़ना—दोनों लातें मारना।

दुलत्ती फेंकना—दोनों लात चलाना।

दुशाले में लपेट कर मारना, लगाना—मीठे शब्दों में आक्षेप करना या बुरा भला कहना। शरीफ़ को दुशाले में लपेट कर ही लगाने चाहिये और उजड्ड को साफ़ साफ़।

दुह लेना—(१) सार खींच लेना। (२) धन हर लेना। बेचारे भोले रईस को खूब दुह लिया खाने से तंग करके छोड़ा।

दुहाई देना—रक्षा या बचाव के लिये पुकारना। हम बचाने वाली कौन हैं, राजा दुष्यंत की दुहाई दे वही बचावेगा। किसी ने आकर दुहाई दी कि मेरी गाय चोर लिये जाता है!

दुहाई फिरना — (१) राजा के नाम की घोषणा होना। बैठे राम राजसिंहासन चहुँदिसि फिरी दुहाई। (२) प्रताप का डंका होना। मीड़ि डारे राजा सब दुहाई फेरी रब की। (३) जयजयकार।

दूज का चाँद होना, उलटना—बहुत दिनों बाद दर्शन होना, कम दिखाई पड़ना। आप तो दूज का चाँद हो गये हैं महिने हो जाते हैं, दर्शन ही नहीं होते।

दूध उगलना, उलटना—बच्चे का दूध पीकर कै कर देना।

दूध उछालना—ठंडा करने के लिये धार बाँध कर बार बार बर्तनों में डालना।

दूध उतरना—स्तनों में दूध भर जाना। दूध उतरता ही नहीं, क्या कारण है?

दूध का दूध पानी का पानी करना—ठीक ठीक न्याय करना। दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया कसूर जिसका था सज़ा उसे ही मिली।

दूध का बच्चा होना—दूध पीने वाला बच्चा।

दूध का सा उबाल—शीघ्र शांत होजाने वाला क्रोध, उत्साह आदि मनोवेग। तुम्हें तो दूध का सा उबाल उठता है, करो तो अभी वरना फिर कभी नहीं।

दूध की मक्खी—तुच्छ, तिरस्कृत पदार्थ।

दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकना—तुच्छ समझ कर निकाल बाहर करना। उन्होंने उसे एक दम दूध की मक्खी की तरह घर से बाहर निकाल फेंका।

दूध की बू मुँह से आना—अनुभव, ज्ञान हीन, भोला होना। तुम अभी क्या जानों दूध, अभी तुम्हारे मुँह से दूध की बू आती है।

दूध के दाँत—सब से पहिले दाँत।

दूध के दाँत न टूटना—बच्चा ही

होना। अभी तो दूध के भी दांत नहीं टूटे वह क्या बात करेगा।

दूध चढ़ना— (१) दूध कम निकलना। (२) दूध गर्म करना।

दूध चढ़ाना—कई दिनों से इसकी माँ का दूध चढ़ गया है। (२) दूध की मात्रा बढ़ाना। (३) दूध का भाव तेज़ होना।

दूध चुराना—लेना या दूध कम निकलना। दुहने में देर हो गई गाय ने झट दूध चुरा लिया।

दूध छुड़ाना—दूध पीने की आदत छुड़ाना।

दूध डालना—दे० दूध उगलना।

दूध तोड़ना— (१) गाय आदि का दूध देना बन्द या कम कर देना। (२) गरम दूध को ठडा करने के लिये हिलाना।

दूध पड़ना—अनाज में रस पड़ना।

दूध पिलाना— बालक का मुँह स्तनों से लगा कर उसे दूध पीने देना।

दूध पीता बच्चा—गोद का बच्चा।

दूध भर आना—माता के, प्रेम के कारण या जब बच्चे को भूख लगती है, स्तनों में दूध आजाना।

दूध मूत करना — बचपन में पालना। सारे दूध-मूत किए बड़े हुए तो काम न आए।

दून की लेना, हाँकना—शेखी हाँकना, बढ़ चढ़ कर या गप्प कहना। वह तो दून की हाँकता है ऐसा भी कहीं हो सकता है ?

दून की सूझना शक्ति से बाहर की बात सूझना। तुम्हें तो दून की सूझती है, इतना तो तुम दस बरस में भी न कर पाओगे।

दूर करना - (१) अलग करना। (२) मिटाना। कपड़े का धब्बा दूर करो। हमने बुरे आदमियों को पहिले ही दूर कर दिया।

दूर की कहना—समझदारी से होने वाले फल को बताना। उसने बड़ी दूर की कही थी कि आगे यह होगा, बात ठीक थी।

दूर की बात होना—(१) भविष्य की बात। (२) सूक्ष्म भेद। (३) मुश्किल काम, तुम्हारे लिये यह दूर की बात है।

दूर की सुनाना — बड़ों को गालियाँ देना। मेरी तुम्हारी लड़ाई है, मुझे कुछ कह लो, दूर की मत सुनाओ।

दूर की सूझना – सूक्ष्म बात का ख़्याल आना। बहुत दूर की सूझी ठीक है होगा भी ऐसा ही, मैं भी समझ गया।

दूर क्यों जाइए, जायँ पास में ही देखिये। दूर क्यों जायँ अपने घर का हाल भी तो ऐसा ही है।

दूर खींचना—घमंड करना। दूर इतना आपको मुझसे न ए खूं खार

खींच, एक दिन इससे तो तू मेरी कत्ल की तलवार खींच ।

दूर तक पहुँचना—(१) बड़ों को गाली देना । (२) आगे चल कर आने वाली बात कहना ।

दूर दूर करना—घृणा, तिरस्कार करना ।

दूर पहुँचना—(१) दूर की बात सोचना । शक्ति के बाहर । तुम तो दूर पहुँच जाते हो अरे जो बन सके वह तो करो ।

दूर भागना रहना—पास न जाना । हम तो नीच लोगों से सदा दूर भागते हैं ।

दूर होना—(१) हट जाना । (२) मिटजाना, नष्ट होना । दूर हो मुए ।

दृग डालना देना—देखना ।

दृग फेरना—नाराज़ रहना । दृग फेर लिये उनने जबते, तब ते यह हाल बुरो ही भयो है ।

दृष्टि आना—दिखाई देना ।

दृष्टि उठाना
दृष्टि करना
दृष्टि गड़ाना, जमाना
दृष्टि चलाना
दृष्टि चुराना
दृष्टि चूकना
दृष्टि जुड़ना
दृष्टि जोड़ना
दृष्टि देना
दृष्टि पड़ना
— आँख के सारे मुहावरे देखिये

दृष्टि पथ में आना
दृष्टि पर चढ़ना
दृष्टि फेंकना
दृष्टि फेरना
दृष्टि फिसलना
दृष्टि बचाना
दृष्टि मारना
दृष्टि मिलना
दृष्टि मिलाना
दृष्टि बाँधना
दृष्टि बिछाना
दृष्टि भर देखना
दृष्टि में आना
दृष्टि में पड़ना
दृष्टि में समाना
दृष्टि रखना
दृष्टि लगना
दृष्टि लगाना
दृष्टि से उतरना, गिरना
दृष्टि लड़ाना
— मुहावरे में देखिये

देखना सुनना—पूरा पता लगना । बिना देखे सुने कैसे सम्मति दे दूँ ?

देखने में—(१) बाहर से, साधारण व्यवहार से । देखने में तो वह बहुत सीधा है पर अंदर काला है । (२) रूप रंग में । देखने में बहू बड़ी सुन्दर है ।

देखते देखते—(१) सामने । (२) तुरंत । देखते देखते वह जान बूझ कर । देख भाल कर कौन कुएँ में गिरता है ।

देखते रह जाना—चकित हो जाना, हक्का बक्का रह जाना। उसने देखते देखते सर्दियों में आम मँगा दिये मैं देखता रह गया।

देखते हुए—रहते हुए, सामने। मेरे देखते हुए ऐसा कुकर्म नहीं हो सकता।

देखना चाहिए, देखा चाहिये, देखिये, देखो—कौन जाने (क्या होगा?) आने के लिए, उन्होंने कह तो दिया है, देखना चाहिए, आते हैं या नहीं।

देख लेंगे—उपाय या प्रतिकार करेंगे। हम देख लेंगे, उनकी शक्ति भर (कितनी शक्ति है) वे कर डालें।

देखा जायगा—(१) फिर विचार करेंगे।(२) पीछे जो कुछ करना करेंगे। अब तो इन्हें टालो, फिर देखा जायगा।

देखो—(१) ध्यान दो। देखो, इसी रुपये के लिये लोग कितना तरसते हैं। (२) सावधान रहो। देखो, फिर कभी ऐसा न होने पावे। (३) सुनो, इधर आओ।

दे मारना—जमीन पर गिरा देना, पटक देना।

देव लोक को सिधारना—मर जाना।

देशावर आना—अन्य देशों से माल आना।

देह छूटना—मौत होना।

देह धरना—जन्म लेना। देह धरे का यह फल भाई, भजिय राम सब काम बिहाई।

देह बिसारना—शरीर की सुध न रखना, होश हवास न रखना।

दैयन कै—बड़ी मुश्किल से, राम राम करके।

दैव लगना—बुरे दिन आना, ईश्वर कोप होना।

दो आँसू डालना, गिराना, बहाना—कुछ रोना। हम भी उसके शोक में सम्मिलित होकर दो आँसू डाल आवें।

दो एक—कुछ, थोड़े से। दो एक बातें करके चले आवेंगे।

दो कौड़ी का आदमी होना—(१) गरीब। (२) किसी काम का नहीं, नालायक। वह दो कौड़ी का आदमी है, उससे भेद न कहना।

दो कौड़ी की इज्जत होना—बेइज़्ज़त होना।

दो कौड़ी की बात कर देना—बात को बिगाड़ देना, बात बदल जाना। तुमने यह कह कर मज़ा किरकिरा कर दिया, दो कौड़ी की बात कर दी।

दो चार—कुछ। दो चार आदमी चले आये, बस।

दो चार होना—मुलाकात होना।

दो टूक कहना, जवाब देना—सच, खरी कहना, साफ़। हम से

दो टूक कहते हैं बुरी लगे चाहे भली।

दो दिन का—कुछ समय का।

दो दिन का मेहमान होना—(१) जाने वाला। (२) मरने वाला।

दो दो दाने को फिरना—खाना तक माँगते फिरना, दरिद्र होना।

दो दो बातें करना—कहना सुनना। आज दो दो बातें कर ले दिल साफ़ हो जाय।

दो दो मुँह या गाल हँस लेना—थोड़ा हँस लेना।

दो नावों पर पैर रखना - दोनों तरफ़ होना। दो दो नावों पर पैर नहीं रख सकते या तो हमारे ही साथ चलो या उनके साथ।

दो सिर होना—मरने से न डरना, फालतू सिर होना। किसके दो सिर है जो तलवार के सामने जाय।

दोना चढाना -- प्रसाद भोग लगाना। मंदिर में दोना चढ़ाऊँगी।

दोना देना — (१) दे० दोना चढ़ाना। (२) अपने थाल में से भोजनप्रसाद देना।

दोना खाना, चाटना — बाज़ार की चीज़ खाना। घर खाना न बने तो दोने चाटते फिरो।

दोनों की चाट पड़ना—बाजारी चाट का चस्का पड़ना।

दोपहर ढलना—दिन में दो तीन बजे का वक्त।

दोष देना लगाना — अवगुण, नुक्स बताना।

दौड़ मन की—कल्पना, सूझ।

दौड़ धूप करना— बहुत उद्योग करना।

दौड़ मारना लगाना—(१) जल्दी जाना। (२) दूर तक जाना। मामा जी के यहाँ तक की दौड़ लगाते (पहुँचते) हो?

दौर चलना—शराब पिया जाना।

दौरे पर रहना, होना — बाहर जाँच आदि के लिये जाना।

दौरा सुपुर्द करना होना—सेशन-जज के पास भेजना, भेजा जाना।

दौलत का मेंह बरसना—खूब संपत्ति आना। मेंह कहीं दौलत का बरसता, है कोई पानी को तरसता।

द्राविड़ी प्राणायाम खींचना—सीधी बात को बहुत घुमाना, सोचना। एक बात को लेकर द्राविड़ी प्राणायाम खींच जाते हो।

द्वार खुलना—उपाय, मार्ग निकलना। अब द्वार खुल गया इस बहाने मैं सीधा चला जाऊँगा।

द्वार द्वार फिरना— (१) काम बनाने के लिये घर घर जाना। (२) घर घर भीख माँगना। (३)

घर घर फिरो इससे एक घर ही जो बैठो।

द्वार लगना-(१) दरवाजा बंद होना। (२) उपाय न रहना। (३) किवाड़ के पीछे छिपकर देखना, सुनना।

द्वार लगाना — किवाड़ बंद करना।

द्वारा (किसी के)— (१) करने से। (२) सहायता से। (३) उपयोग से।

ध

धँधले आते हैं (किसी को)— छल छंद का अभ्यास है।

धँसना जी (मन) में—(१) दिल में जमना। लाख समझाओ उसके दिल में एक नहीं धँसती। (२) बराबर ध्यान रहना। मन मँह धँसी मनोहर मूरति टरति नहीं वह टारे।

धक धक जी करना— दे० कलेजा धक धक करना।

धक हो जाना (जी)—(१) चौंक उठना। (२) जी दहल जाना।

धक होना धक से होना (जी)— (१) घबराहट होना। (२) भय होना, दहल जाना।

धक्का खाना—(१) धक्का सहना। (२) नुकसान उठाना।

धक्के खाते फिरना — मारे मारे फिरना। वह तो नौकरी छुट गई अब धक्के खाते फिर रहे हैं।

धक्के देकर निकालना – बे इज्जती से निकालना। वह दरबार से धक्के देकर निकाला गया।

धचका उठाना—घाटा सहना।

धज्जियाँ उड़ना—(१) टुकड़े टुकड़े हो जाना। (२) निंदा, दुर्गति होना दोषों का खूब उधेड़ा जाना।

धज्जियाँ उड़ाना (१) खंड खंड करना। (२) बोटी काट डालना। (३) निन्दा आदि करना। सब के सामने सभा में उनकी धज्जियाँ उड़ाई गईं।

धज्जियाँ लगना—चीथड़े पहिनने की नौबत आना।

धज्जियाँ लेना—दोष निकालना, बनाना, दुर्गति करना।

धज्जी हो जाना—(१) दुर्बल हो जाना। (२) फट कर टुकड़े टुकड़े हो जाना।

धड़ धड़ाता हुआ—(१) शीघ्रता से शब्द करती हुई। गाड़ी धड़ धड़ाती हुई निकल गई। (२) बेधड़क, निःशंक। तुम धड़धड़ाते भीतर चले जाना, कोई न रोकेगा।

धड़ में डालना, उतारना—पेट में डालना। जरा सी शराब धड़ में डाली और नशा चढ़ा।

धड़ रह जाना – लकवा मारना, शरीर सुन्न हो जाना।

धड़ से शिर अलग होना—सिर कटना।

धड़कना छाती या दिल—दिल काँपना, भय या आशंका से हृदय में धड़कन होना।

धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ—(१) बिना रुकावट के। (२) बिना भय संकोचन के। जो कहना हो धड़ल्ले के साथ कहो, कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

धड़ा उठाना—तोलना।

धड़ा करना—(१) तराजू के पलड़े बराबर करना।

धड़ा बाँधना — (१) दे० धड़ा करना। (२) कलंक लगाना। (३) दल बाँधना।

धड़ाके से—(१) शीघ्र। (२) बिना रोक टोक। धड़ाके से कर डालो, डरो मत। (३) धड़ धड़ करते हुए।

धड़ियों होना—ढेरसा, बहुत।

धड़ी धड़ी करके लुटना, लूटना सब कुछ लुटना, लूटना।

धत होना– चल देना।

धता करना– हटाना, चलता करना। उसे पुलिस से पहिले ही धता कर दिया था।

धता बताना—(१) दे० धता करना। (२) बहाना करके टालना, पीछा छुड़ाना वह अच्छे अच्छों को धता बता देता है, आप क्या वसूल करेंगे।

धतूरा खाए फिरना—उन्मत्त घूमना, दीवाना बना फिरना। सूरदास प्रभु दरसन कारन मानहुँ फिरत धतूरा खाए।

धन उड़ाना–(१) जल्दी खर्च डालना। (२) सम्पत्ति दबा लेना, चुरा लेना। उड़ाया हुआ धन यों ही उड़ाया जाता है।

धन कुट्टी करना—बहुत पीटना, कचूमर निकालना। क्यों बेचारे बच्चे को धन कुट्टी किए देती हो।

धनिये की खोपड़ी में पानी पिलाना—प्यास से मारना, बहुत तंग करना। बेचारी को पानी भी धनिये की खोपड़ी में पिलाया जाता है, दुखी है।

धनी धोरी — (१) वारिस, अधिकारी। इस वस्तु का कोई धनी धोरी नहीं। (२) धन मर्यादा वाला।

धनी बात का होना– सत्य प्रतिज्ञ होना। वह बात का धनी है, कह देगा तो करेगा भी।

धनी मानी—धनवान, इज्जतदार।

धन्ना सेठ (का नाती) होना—बहुत धनी (व्यंग्य) हम जानते हैं

तुम्हीं एक धन्ना सेठ के नाती हो न जो खर्च की परवा नहीं ?

धप्पा मारना—माल धोखे से उड़ाना। धप्पा मार कर लाए हैं, कमाया क्या है ?

धप्पा लगना—(१) चाँटा लगना। (२) नुकसान होना।

धब्बा नाम में लगना, लगाना—बदनामी का काम करना।

धब्बा रखना (किसी पर)—कलंक लगाना।

धमकना (आ, जा)—एकदम पहुँच जाना। मैं कह ही रहा था कि वह आ धमका, बात अधूरी रह गई।

धमकी में आना—डराने में आकर (काम कर बैठना) तुम उनकी धमकियों में मत आओ।

धमा चौकड़ी मचाना—ऊधम मचाना। क्या धमा चौकड़ी मचाई है, तेरी शायद कि शामत आई है।

धरती का फूल—(१) कुकर मुत्ता। (२) मेढक। (३) नया अमीर।

धरती बाहना—(१) जोतना। (२) परिश्रम करना।

धरती में (पर) पांव न रखना—घमंड में भरे, ऐंठे, फिरना।

धरन खिसकना, टलना, डिगना, सरकना—गर्भाशय की नस का हट जाना।

धरना देना—अड़ कर बैठना, न हटना।

धर दबाना, दबोचना—(१) जबरदस्ती वश में कर लेना। कुत्ते ने बिल्ली को धर दबोचा। (२) तर्क या वाद विवाद में हराना, गलती पकड़ना।

धर पकड़ कर—जबरदस्ती, जैसे तैसे। धर पकड़ कर कहीं काम होता है ?

धराढका—बचा कर रखी वस्तु। चूल्हा मत चढ़ाओ धरा ढका ही खालेंगे।

धरा रह जाना—व्यर्थ रह जाना। सब तर्क वक्त पर धरे रह जाते हैं, जब डंडा पड़ता है।

धर्म कमाना—धर्म के काम करना।

धर्म खाना—ईमान उठाना, धर्म की कसम खाना।

धर्म बिगाड़ना—(१) धर्म के विरुद्ध काम करना। (२) सतीत्व नष्ट करना।

धर्म में आना—आत्मा को ठीक जान पड़ना। जो धर्म में आवे करो।

धर्म रखना—धर्म बचाना। घरा में धर्म राखौ, माला राखौ गर में।

धर्म लगती कहना—धर्म का

ध्यान रख कर, उचित, सत्य कहना। हम तो धर्म लगती कहेंगे चाहे बुरी लगे चाहे भली।

धर्म से कहना—सत्य, उचित कहना। धर्म से कहना असली बात क्या है ?

धाक बँधना—आतंक, रौब छाना। शहर भर में उनकी धाक बँध गई, वही नेता बने।

धाक बांधना — रौब, दबदबा जमाना। जहाँ जाते हैं अपनी धाक बाँध देते हैं।

धागा भरना—तागा भर कर रफू करना।

धागे धागे करना—चिथड़े चिथड़े चीर चीर करना।

धाड़ पड़ना—जल्दी होना। ऐसी क्या धाड़ पड़ी है जो अभी चले चलें।

धातु गिरना—प्रमेह, पेशाब के साथ वीर्यपात होना।

धाय पूजना—दूर रहना, हाथ जोड़ना। धाय पूजे इस नौकरी से।

धार चढ़ाना—देवता पर या नदी में जल, दूध धार बाँध कर डालना।

धार टूटना—लगातार-गिरना बंद होना।

धार देना—(१) दूध देना। (२) फायदा पहुँचाना। हमें क्या धार देते हो जो हम रोटी खिलावें।

धार पर मारना—परवा न करना, तुच्छ समझना। क्या लोभ दिखाते हो, हम ऐसे रुपये धार पर मारते हैं।

धार बँधना—(१) धार बन कर गिरना। (२) मंत्र बल से अस्त्र की तेज़ी चली जाना।

धार बाँधना—(१) तरल पदार्थ को धार बना कर गिराना। (२) मंत्र बल हथियार की धार निकम्मी कर देना।

धावा बालना—चढ़ाई की आज्ञा देना। फौरन किले पर धावा बोल दिया।

धावा मारना — जल्दी जल्दी चलना। ऐसी धूप में चार कोस का धावा मार कर आ रहे हैं।

धींगा धींगी करना—(१) जबरदस्ती करना। (२) शरारत करना।

धुँधले का वक्त—अँधेरे के समय, सुबह या शाम को।

धुआँ उठना—आह निकलना। क्या करूँ हाय, कलेजे से धुआँ उठता है।

धुआँ काढ़ना निकालना—बढ़ बढ़ कर शेखी हाँकना। जस अपने मुँह काढ़े धुआँ, चाहेसि परा नरक के कुआँ।

धुआँ देना—(१) धुआँ देना। यह

तेल बड़ा धुआँ देता है। (२) धुआँ पहुँचाना, लगाना। गन्धक का धुआँ दो मच्छर मर जावेंगे।

धुआँ रमना—धुआँ भरा रहना।

धुआँ सा मुँह होना—मुख मलीन होना, रंगत बिगड़ना। शर्म के मारे मुँह धुआँ सा हो गया।

धुआँ होना—काला पड़ना।

धुएँ उड़ाना, बखेरना—दे० धज्जियाँ उड़ाना।

धुएँ का धौरहर—वालू की भीत, जल्द मिटने वाला आयोजन। ये संसार धुएँ का धौरहर क्षण भर में मिटि जैहै।

धुएँ के बादल उड़ाना—(१) गप्पें हाँकना, बड़ी बड़ी झूठी बातें बनाना। तुम काम कुछ नहीं करते धुएँ के बादल उड़ाते रहते हो। (२) हुक्का ही पीते रहना।

धुकधुकी धरकना—जी धकधक करना। मिलनि विलोकि भरत रघुबर की, सुरगन सभय धुकधुकी धरकी।

धुन का पक्का—काम में लग जाय तो पूरा ही करे। वह धुन का बड़ा पक्का है, जी में आगया तो कर ही डालेगा।

धुन बाँधना—ख्याल में जमाना। अब तो काम की धुन बाँध ली, कर ही डालेंगे।

धुन समाना, सवार होना—करने का ध्यान होना। अब तो कमाने की धुन सवार है, और कुछ नहीं।

धुरसिर से—बिलकुल शुरू से। बना बनाया काम बिगाड़ दिया, अब हमें फिर धुर सिर से करना पड़ेगा।

धुरें उड़ाना, उड़ा देना बखेरना—(१) टुकड़े टुकड़े कर डालना। (२) छिन्न भिन्न करना। (३) दुर्गति करना। (४) बहुत मारना पीटना।

धूनी जगना, लगना—(साधुओं के पास की) आग जलना।

धूनी जगाना, लगाना—(१) साधुओं का अपने पास आग जलाना। (२) विरक्त, योगी होना। धूनी लगा भये सन्यासी, भोग वृत्ति तौहू नहिं छूटी। (३) शरीर तपाना।

धूनी देना—धुआँ पहुँचाना, उठाना। इन मिर्चों की धूनी दो तो भूत छोड़ेगा।

धूनी रमाना—दे० धूनी जगाना।

धूप खाना—धूप में गर्म होना, तपना। जाड़े में लोग धूप खाते हैं। थोड़ा धूप खा लो तो काँपना दूर होगा।

धूप खिलाना—धूप में रखना।

धूप चढ़ना—दिन चढ़ना।

धूप दिखाना, देना—धूप में

रखना। कपड़ों को धूप दे दो नहीं कीड़ा लग जायगा।

धूप निकलना—सूर्योदय के पीछे प्रकाश, ताप फैलना।

धूप पड़ना — सूर्य ताप अधिक होना।

धूप में बाल, चूँड़ा सफेद करना—बूढ़ा होने पर भी अनुभव न होना। हमने भी दुनिया देखी है, बाल धूप में नहीं सफेद किए।

धूप लेना—दे० धूप देना।

धूप डालना ऊधम करना, हल्ला गुल्ला करना। सारे शहर में डाँकुओं ने धूम डाल रखी थी।

धूप धड़का मचाना—हल्ला गुल्ला, शोर। बरात में खूब धूम धड़का मचाया।

धूरा करना, देना—शीत से अंग सुन्न होने पर गरम राख आदि की बुकनी मलना।

धूरा देना—बहकाना। औरत को धूरा देकर ज़ेवर ले गया।

धूल उड़ना (कहीं)—(१) सन्नाटा होना। जहाँ कल नुमायश की चहल पहल थी आज वहाँ धूल उड़ रही है। (२) बरबादी, नाश होना।

धूल उड़ना (किसी को)—(१) बदनामी होना। (२) हँसी उड़ना। कल सभा में उनकी खूब धूल उड़ी।

धूल उड़ाना (किसी की)—(१) बुराइयों को ज़ाहिर करना। बदनामी करना (२) हँसी करना।

धूल उड़ाते फिरना—बुरी हालत, मारे मारे फिरना। क्यों इधर से उधर धूल उड़ाते फिर रहे हो कोई सहायता न देगा।

धूल की रस्सी बटना—असम्भव करने का प्रयत्न करना। धूल की भी कहीं रस्सी बटी जाती है, तुम्हारी मेहनत फिज़ूल है।

धूल चाटना — (१) बहुत गिड़गिड़ाना। (२) बड़ी नम्रता दिखाना। उनके सामने धूल भी चाटो तो भी दया न करें।

धूल छानना—दे० खाक छानना।

धूल झड़ना—मार पड़ना (विनोद) ऐसे घूँसों से क्या होता है, कोट की धूल झड़ती है।

धूल झाड़ना—(१) मारना, पीटना (विनोद)। आप मारते हैं या कोट की धूल झाड़ते हैं। (२) सेवा, खुशामद करना। वह तो अमीरों की धूल झाड़ता फिरता है।

धूल डालना—दे० खाक डालना।

धूल फाँकना—दे० खाक फाँकना।

धूल बरसना—रौनक न रहना। अब तो वहाँ धूल बरस रही है, कल तक चहल पहल थी।

धूल में मिलना—दे० खाक में मिलना, मिलाना।

धूल में मिलाना } बहुत फेरे
धूल ले डालना } करना । उसने दरवाजे की धूल ले डाली ।

धूल समझना—तुच्छ मानना ।

धूल सिर पर डालना—पछताना । पदमिनि गवन हंस गए दूरी, हस्ति लाज मेलहिं सिरधूरी ।

धूल होना (पैर की)—नाचीज़, तुच्छ होना ।

धोखा उठाना — विश्वास करके नुकसान सहना, असावधानता से हानि होना । अच्छी तरह जान लिया करो, नहीं तो धोखा उठाओगे ।

धोखे की टट्टी होना—(१) वह परदा जिसकी ओट में शिकार खेलते हैं । (२) असली बात छिपाने वाली चीज़ । मैं उनके आगे से धोखे की टट्टी हटाता हूँ । (३) दिखाऊ चीज़, बारहरी बनावट भर । यह धोखे की टट्टी है, पास जाकर देखो कुछ भी सौन्दर्य नहीं ।

धोखा खड़ा करना या रचना — जाल फैलाना, माया रचना । यह तो धोखा खड़ा किया हुआ है, रुपया इकट्ठा करके झट भाग जावेगा ।

धोखा खाना— ठगा जाना, किसी के छल या कपट के कारण भ्रम में पड़ जाना, नुकसान उठाना । औरन धोखा देत जो आपहिं धोखा खात ।

धोखा देना—(१) भुलावा देना, छलना । लोगों को धोखा देने के लिए यह सब ढंग रचा है । (२) भ्रम में डालना, विश्वास घात करना । हमको मित्रों ने धोखा दिया, इसी से सब कुछ खो बैठे । (३) अकस्मात मर कर, नष्ट होकर दुख पहुँचाना । इस बुढ़ापे में वह पुत्र को लेकर दिन बिताते थे, उसने भी धोखा दिया कल चल बसा । (४) चिमनी कमजोर है किसी दिन धोखा देगी ।

धोखा पड़ना — और का और होना ।

धोखा लगना—(१) कसर, त्रुटि होना । (२) धोखा दिखाई देना । मुझे तो धोखा लगता है, कहीं वही न हो ?

धोखा लगाना—कमी करना । मैं कहने में कोई धोखा न लगाऊँगा, करना उसके हाथों हैं ।

धोती बाँधना—(१) धोती पहनना । मुद्रा श्रवन जनेऊ काँधे, कनक पत्र धोती कटि बाँधे । (२) तैयार होना ।

धोती ढीली करना, होना—डर लगना, भय-कंपन । सिपाही आते देख दुकनदार की धोती ढीली हो गई । क्रोध या अनन्द की वजह से आपे से बाहर हो जाना ।

धो बहाना — न रहने देना, छोड़ना। गंगा में पाप धो बहाए।

धोब पड़ना—धोया जाना। कपड़े पर कई धोब पड़े पर रंग न गया।

धोबी का कुत्ता—निकम्मा, व्यर्थ घुमक्कड़। धोबी का कुत्ता घर का न घाट का (कहावत)।

धोबी का छैला—(१) दूसरे के माल पर इतराने वाला। (२) मांग कर कपड़े पहनने वाला। वह धोबी के छैले हैं, यह कपड़े उनके न समझो।

धोया धाया (दूध का)—(१) निर्दोष निष्कलंक। (२) निर्लज्ज, धृष्ट। (३) निष्पक्ष। आप तो बिल्कुल दूध के धोये धाये हैं आप ऐसी बातों में शामिल नहीं (व्यंग्य)।

धोवन पैर का होना—मुकाबिले में तुच्छ होना। हमारे सेठ के सामने यह सेठ पैर का धोवन भी नहीं।

धौंक लगना, धौंका लगना—लू लगना।

धौंकनी लगना—दम फूलना, साँस चढ़ना। भागते भागते धौंकनी लग गई।

धौंस की चलना—चाल चलना, रौब से काम निकालना।

धौंस पट्टी में आना—रौब या बहकावे में आकर करने को तैयार हो जाना। इनकी धौंस पट्टी में मत आओ मालिक खुद कहे तो करना।

धौंस बाँधना—(१) खर्चा सिर मढ़ना। काम अपने गये धौंस हम पर बाँधी। (२) रौब जमाना।

धौंसा देना, बजाना—चढ़ाई का डंका बजाना। जरासंध असुर सेना ले धौंसा दे चला।

धौल कसना, जमाना—थप्पड़ मारना।

धौल खाना — थप्पड़ सहना, खाना।

धौल धूर्त होना—पक्का चाल बाज़। ऊधो ! हम यह कैसे मानें। धूर्त धौल लंपट जैसे पट हरि तैसे औरन जाने।

ध्यान आना—विचार पैदा होना, याद आना।

ध्यान छूटना—एकाग्रता नष्ट होना। अप्सरा गान से ऋषि का ध्यान छूटा।

ध्यान जमना—(१) चित्त एकाग्र होना। (२) विचार स्थिर होना। यही ध्यान जमा कि ध्यान जमे तो कर डालें।

ध्यान जाना—दृष्टि पड़ना, याद आना। मेरा ध्यान उधर गया तो उसे खड़ी ही पाया।

ध्यान दिलाना — (१) याद दिलाना। (२) सुझाना, चेताना।

मुझे ध्यान दिला दिया तो कर डालूँगा।

ध्यान देना—(१) गौर करना, चित्त लगाना। ध्यान देकर काम करो, ठीक होगा।

ध्यान धरना—भगवान की ओर चित्त लगाना।

ध्यान में डूबना, मग्न होना—सब कुछ भूल कर एक ओर लगना। ध्यान में मग्न है शरीर का भी ध्यान नहीं।

ध्यान में लगना—मन लगा कर मग्न होना। लगि कपोल के ध्यान, मग्न भये पिया प्रिया में।

ध्यान रखना—याद रखना, विचार बनाए रखना। वहाँ जाओ तो हमारी नौकरी का भी ध्यान रखना।

ध्यान रहना—याद रहना। ध्यान रहा तो जरूर लाऊँगा।

ध्यान लगना, लगाना—मन में ख्याल, याद रहना। मुझे हर दम तुम्हारा ध्यान लगा है।

ध्यान से उतरना—याद न रहना।

ध्यान बँधना—(१) लगातार ख्याल रहना। उसे जिस बात का ध्यान बँधा बस उसी में लगा। (२) चित्त लग जाना, एकाग्र होना। हमें उसी का ध्यान बँधा है।

ध्यान पर चढ़ना, ध्यान में आना—(१) चिन्ता, परवा न करना। (२) न सोचना, समझना। ऐसी बातों पर तो वह ध्यान ही नहीं धरता।

ध्यान बँटना—ख्याल इधर से उधर हो जाना। तुम बातें करते हो तो मेरा ध्यान बटता है।

ध्यान बँटाना—चित्त लगा न रहने देना।

ध्वनि उठना—शब्द उत्पन्न होना, फैलना। अकाल से पहिले हमारे कुएँ से ध्वनि उठती है।

न

नंगा करना, कर देना—(१) कपड़ा जेवर उतार लेना। (२) बेइज्जत करना। (३) लूट लेना।

नंबर दागना, लगाना—स्त्री प्रसंग करना।

नक्क तोड़े उठाना तोड़ना—अनुचित्त अभिमान नखरा सहना, करना।

नकसीर भी न फूटना—कुछ हानि न होना।

नकसीर फूटना—नाक से खून बहना।

नकाब उलटना—घूँघट हटाना। नकाब उलटते ही देखा तो मर्द था।

नकेल हाथ में होना—वश, कहे में होना। जो चाहूँ कराऊँ नकेल हाथ में है।

नक्कार खाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है—दे० तूती की आवाज़…।

नक्कारा बजा कर—डंके की चोट, खुल्लमखुल्ला। नक्कारा बजा कर करते हैं चोरी छिप्पे नहीं।

नक्कारा बजाते फिरना—सब से कहते फिरना। तुम तो ज़रा सी बात का शहर भर में नक्कारा बजाते फिरते हो।

नक्कारा हो जाना—बहुत फूलना।

नक्कू बनना — (१) अपने को बहुत बड़ा समझना। (२) सब से निराला काम करना। नक्कू बन कर काम न चलेगा दुनिया में दुनिया की तरह रहो।

नक्श करना, कराना (मन में)—निश्चय कराना, जमाना। यह बात उनके मन में नक्श कर दी है, वे वैसे ही करेंगे।

नक्श बैठना, बैठाना—अधिकार, रंग जमना, जमाना।

नक्श बिगड़ना—अधिकार न रहना, रंग उखड़ना।

नक्श होना—मन में जम जाना, निश्चय होना।

नक्शा खिंच जाना—रूप रंग ठीक ठीक ध्यान में आना। कल की सी बात है मेरी आँखों में नक्शा खिंच गया है, वे यहाँ खड़े थे।

नक्शा जमना—रंग, प्रभाव होना। शहर के रईसों में उनका नक्शा जमा हुआ है।

नक्शा जमाना — प्रभाव, रंग डालना।

नक्शा तेज़ होना—दे० नक्शा जमना।

नखरा बघारना — नाज़-नखरा करना।

नख शिख से—सिर से पैर तक। वह नख-शिख से सुन्दर है।

नखास पर चढ़ाना, भेजना—बेचने बाजार में भेजना।

नख़ास की घोड़ी, नखास वाली—वेश्या, खानगी।

नग बैठाना—नग जड़ना।

नगीना सा—बहुत सुन्दर छोटा सा।

नगीना होना—छोटा सा सुन्दर। सिया सोने की अँगूठी राम सांवरो नगीना है।

नचा मारना — बहुत फिराना। ज़रा सी चीज़ के लिये व्यर्थ सैकड़ों चक्कर लगवाये, नचा मारा।

नज़र आना—दिखाई देना। नज़र

आता है कोई अपना न पराया मुझको।

नज़र उतारना—बुरी नज़र का दोष हटाना।

नज़र करना—(१) भेंट करना। यह अंगूठी नज़र करता हूँ आप को। (२) देखना। नज़र उधर की तो वह खड़ा था।

नजर खाना, खाजाना—बुरी नज़र लगना।

नजर जलाना, झाड़ना—नज़र का प्रभाव दूर करना।

नजर पड़ना—दिखाई देना। मेरी नज़र उन्हीं पर पड़ी।

नज़र पर चढ़ना—पसंद आना। जो चीज़ नज़र पर चढ़ी खरीद ली।

नजर फिसलना—चकाचौंध से दृष्टि न जमना।

नजर फेंकना—(१) दूर तक देखना। (२) सरसरी तौर से देखना।

नजर बंद रखना—हिरासत, कारागार में रखना, कहीं जाने आने न देना।

नजर बाँधना—जादू से दृष्टि बाँधना।

नजर में आना—दिखाई देना। कोई नज़र में आयगा तो भेज दूँगा।

नजर में तोलना—देख कर गुण आदि की परीक्षा करना।

नजर रखना—मेहरबानी करना। नजर रखिये कहीं नौकरी मिल जाय।

नजर लगना, लगाना—बुरी दृष्टि का असर होना।

नजर होना, हो जाना—(१) दे० नजर लगना। (२) भेंट चढ़ जाना, किसी के लिये जान दे देना।

नोट—'दीठ' के मुहावरे 'नज़र' शब्द लगा कर काम में लाये जाते हैं।

नज़र से नजर दोचार होना,—दे० आँख से आँख मिलना।

नजर से निकलना—देखने में आना। यह पुस्तक कई बार नज़र से निकल चुकी है।

नजरों से गिरना—मन में इज्जत न रहना, घृणा हो जाना।

नथना फुलाना, फूलना—क्रोध करना, आना।

नथनों में दम करना—दे० नाक में दम करना।

नदी नाव संयोग—इत्तिफ़ाक से मिल जाना।

नन्हा सा—बहुत छोटा। नन्हा सा बच्चा नन्हा सा हाथ।

नब्ज़ चलना—नाड़ी में गति होना।

नब्ज़ छूटना, न रहना—प्राण न रहना, नाड़ी में गति न रहना ।

नमक अदा करना—मालिक का कार्य करना, उपकार का बदला चुकाना ।

नमक कटे पर छिड़कना—दे० कटे पर नमक···।

नमक का सहारा—जरा सा भी सहारा । इतना बड़ा हो गया इसका नमक का भी सहारा नहीं ।

नमक का हराम होना—(१) कुछ न खाना । (२) कुछ प्राप्ति न करना । मुझे उनका नमक भी हराम है, मैंने रुपये नहीं लिये ।

नमक खाना—(किसी का) दिया खाना । बरसों से उनका नमक खाया है, आज अगर उन्होंने गाली भी दे दी तो क्या हुआ ।

नमक फूट फूट कर निकलना—नमक हरामी, कृतघ्नता का दण्ड मिलना ।

नमक मिर्च मिलाना, लगाना—बात को बढ़ा कर कहना । मैंने तो ज़रा सी बुराई की थी उन्होंने नमक मिर्च लगा कर उनसे कही ।

नमदा बाँधना—दण्ड दिलाना, जेल भिजाना । मैंने उसका नमदा बाँध दिया अब जेल में सड़ रहा है ।

नमाज़ कज़ा होना— वक्त पर नमाज़ न पढ़ी जाना ।

नमाज़ पढ़ना—ईश्वर प्रार्थना करना ।

नया करना—(१) नया फल आदि मौसम में पहिली बार खाना । (२) फाड़ फूड़ देना । (व्यंग्य) इसे जो पहिनाओ नया करके रख देता है ।

नया गुल खिलना—(१) अनोखी बात, कारण बताना । (२) विचित्र खबर उड़ाना । तुम्हारे आने से एक नया ही गुल खिला, हमें मालूम न था कि यह कारण था ।

नया पुराना करना—(१) पुराना हिसाब चुकता करके नया शुरू करना । (२) पुराने के स्थान पर नया करना, रखना । नौकरों को नया पुराना करने से काम बिगड़ेगा ।

नया राग या रंग लाना—नया झगड़ा तैयार करना ।

नये सिरे से जन्म पाना, लेना—मरते मरते बचना ।

नरक होना—नरक भोगने का दण्ड मिलना ।

नरम-गरम उठाना—भली-बुरी बात, सुख-दुख सहना । जीवन निर्वाह में नरम-गरम सभी उठानी पड़ती हैं ।

नल चलना—जादू के बल से चोर का पता लगाना (?)

नल, नला टलना—पेशाब की नाली में नस डिगने से पीड़ा होना।

नशा उतरना—अभिमान दूर होना, नशा न रहना। दो थप्पड़ों में सब नशा उतर जायगा।

नशा उतारना, झाड़ना—ऐंठ दूर करना।

नशा किर किरा हो जाना—(१) मज़ा बिगड़ना। नाच में मस्त थे तुम बीच में आ गये नशा किर किरा हो गया।

नशा चढ़ना—नशा होना।

नशा छाना—मस्ती चढ़ना। तुम्हारी आँखों में नशा छा रहा है, मुझे देखने से नशा चढ़ गया है।

नशा जमना—खूब नशा होना। थोड़ी सी भंग से तो नशा जमता ही नहीं।

नशा टूटना — नशा दूर होना, उतरना।

नशा हिरन हो जाना—बीच में ही नशा न रहना। खूब पीये हुए गाली बक रहा था, ज्यों ही सिपाही ने हाथ पकड़ा सारा नशा हिरन हो गया।

नशीली आँखें—मदमत्त आँखें, यौवन में मस्त आँखें।

नशे में चूर होना—(१) खूब गहगड्ड नशा होना। (२) धुन सवार होना। जो मुहब्बत के नशे में चूर हैं, क्या करें बेबस हैं और मजबूर हैं।

नश्तर लगना, देना, लगाना—फोड़ा आदि चीरा जाना, चीरना, इंजेक्शन लगना, लगाना।

नस चढ़ना, नस पर नस चढ़ना—नस का बल खाना या स्थान से इधर उधर होना जिससे पीड़ा-सूजन हो।

नस नस फड़क उठना—बहुत खुशी होना। आपकी कविता से नस नस फड़क उठती है।

नस नस में—सारे शरीर में। तुम्हारी नस नस में शरारत भरी पड़ी है।

नस भड़कना—(१) दे॰ नस चढ़ना। (२) पागल होना। क्या नस भड़क गई है जो ऐसी बातें करते हो?

नसें ढीली पड़ना, होना—(१) थकावट आना। (२) पुंसत्व की कमी होना।

नसीब आज़माना—
नसीब खुलना, चमकना, जागना }
दे॰ किस्मत के मुहावरे।

नसीब लड़ जाना
नसीब होना— } मिलना, प्राप्त होना। गरीबों को आराम कहाँ नसीब होता है।

नसीहत करना—(१) उपदेश। शिक्षा देना। (२) डाँटना, मला-

मत करना। बच्चों को बुरे कामों पर नसीहत न दोगे तो बिगड़ेंगे ही।

नहार तोड़ना—सुबह कुछ खा लेना।

नहार मुँह—बिना कुछ खाए।

नहार रहना—भूखे रहना, न खाना।

नहीं तो—वरना, अगर ऐसा न किया तो। आप बुला लीजियेगा नहीं तो मैं न चलूँगा।

नहीं सही—न हो तो चिंता, परवा नहीं। खूब धन है न पढ़े नहीं सही।

नाक ऊँची होना—इज्ज़त होना, मान रहना। इज्ज़त इसी बात में ऊँची है कि पुरुषाओं के मार्ग पर चलो।

नाक कटना, कटाना, काटना—इज्ज़त चली जाना, न-रहना या न रहने देना। अगर विवाह की धूम धाम में कोई कमी रह गई तो हमारी नाक कट जायगी।

नाक काट कर चूतड़ों तले रख लेना—दुनिया की शर्म छोड़ देना, अपमान की परवा न करना। हमारे नाक है ही कहाँ वह तो पहिले ही काट कर चूतड़ों तले रखली है, तभी वेहयाई की बातें करने आये हैं।

नाक कान काटना—(१) सख्त सज़ा देना। (२) हरा देना।

नाक का बाल होना—पूर्ण प्रभाव होना, जिसकी सलाह से काम होता हो। मंत्री जी तो राजा की नाक का बाल हो रहे हैं, उनके बिना क्या हो सकता है।

नाक की सीध में—ठीक सामने। नाक सीध में चले जाओ उन्हीं के घर पहुँचोगे।

नाक घिसना—बहुत बिनती, मिन्नतें करना। वह रोज यहाँ आकर नाक घिसता है कि नौकर रखलो।

नाक चढ़ना—गुस्सा आना।

नाक चढ़ाना—(१) क्रोध से नथने फुलाना। (२) घृणा करना, नापसंद करना। मेरी चीज़ों पर वह नाक चिढ़ाता है, वह तो बढ़िया चीज़ पसंद करता है।

नाक चोटी काट कर हाथ देना—(१) कठिन दण्ड देना। (२) दुर्दशा करना।

नाक चोटी काटना—कठिन दण्ड देना।

नाक चोटी में गिरफ़्तार—अपनी इज्ज़त का हर वक्त ख्याल होना।

नाक तक खाना,—बहुत खाना खाना।

नाक तक भरना—(१) बरतन खूब मुँह तक भरना। (२) खूब ठूँस ठूँस कर खाना। पेट में जरा जगह नहीं नाक तक भर रहा है।

नाक न दी जाना—अति दुर्गंध आना।

नाक पर उँगली रख कर बात करना—नाज़-नखरे से, औरतों की तरह बात करना।

नाक पर गुस्सा होना—शीघ्र ही क्रोध आना।

नाक पर दीया बाल कर आना—मुख उज्वल करके, सफलता प्राप्त करके आना।

नाक पर दीवा बालना—फौरन काम हुआ चाहना। तुम तो नाक पर दीवा बालते हो, ठहरो धीरे धीरे हो जायगा।

नाक पर पहिया फिर जाना—चपटी नाक होना।

नाक पर मक्खी न बैठने देना—(१) ज़रा भी अहसान न लेना। (२) खरी आदत होना। (३) बहुत साफ़ रहना।

नाक पर रख देना—फौरन सामने रखना। वह रुपयों के लिए बिगड़ने लगा मैंने फौरन वहाँ से लाकर उसकी नाक पर रख दिये।

नाक पर सुपारी तोड़ना—खूब तंग करना।

नाक फटने लगना—असह्य दुर्गंधि आना। उस मुहल्ले में जाते तो नाक फटने लगती है।

नाक बैठना—नाक चपटी होना।

नाक भौं चढ़ाना, सिकोड़ना—अरुचि, नापसंदगी जाहिर करना। मैले कपड़े देखकर नाक भौं क्या चढ़ाती हो, एक दिन तुम भी तो गरीब थीं।

नाक जान या दम आना, करना—तंग या हैरान. होना, करना। तुमने फिरा फिरा कर नाक में दम कर दिया, पर वह न मिला।

नाक में तीर करना, डालना, होना—(१) बहुत तंग करना, हो जाना। (२) वश में करना, होना।

नाक में बोलना—ङ ङ करके बात करना।।

नाक में सुतली पिरोना—(१) आँखों पर पट्टी बाँध कर ले जाना। (२) बहुत सताना। (३) वश में करना। हमारी तो नाक में सुतली पिरो रखी है, बैल की तरह कोल्हू में काम कराता है।

नाक रखना }
नाक रख लेना } इज्जत बचा लेना। ऐन मौके पर सहायता देकर बिरादरी में हमारी नाक रख ली।

नाक रगड़ना—दे० नाक घिसना।

नाक लगाकर बैठना—बड़ा इज्जत वाला बनना।

नाक सिकोडना—घृणा करना। सुनि अघ नरकहु नाक सिकोरी।

नाकों आना—दुखी होना।

नाकों चने चबवाना—खूब परेशान, हैरान, तंग करना।

नाखून नीले होना—मरने के लक्षण होना।
नाखून लेना—(१) नख काटना। (२) घोड़े का ठोकर खाना।
नाग खेलाना—खतरे, प्राण भय का काम करना।
नागा करना, देना—बीच डालना। रोज नहीं एक दिन नागा करके आया करो।
नाच दिखाना — (१) सामने नाचना। (२) उछलना कूदना। (३) अनोखे आचरण करना।
नाच नचाना—(१) जैसा चाहना काम कराना। जो कुछ जा के मन आवे सोई नाच नचावे। (२) दिक, हैरान करना।
नाज़ उठाना—नखरे सहना।
नाड़ी खोलना—संभोग करना।
नाड़ी चलना—दे० नब्ज चलना।
नाड़ी छूटजाना—दे० नब्ज छूटना।
देखना, धरना, पकड़ना—अँगूठे की नस से रोग ज्ञान करना।
न बोलना—(१) प्राण न रहना। (२) मूर्च्छा आना (३) नाड़ी में गति न होना।
नाता टूटना—संबन्ध न रहना।
नादिरशाही हुक्म होना—जी में आवे से हुक्म देना, जोर जुल्म करना।
नाधना (काम में)—लगाना।
नानी याद आना, मरजाना—(१) होश ठिकाने आ जाना। हरमोहन की नानी तो थाने वालों को देखते ही मर गई। (२) दुख में पड़ कर पहिले समय की याद आना।
नाम उछालना—निंदा, बदनामी कराना। बुरे काम करके खूब बाप दादा का नाम उछाला है।
नाम उठना, उठजाना—(१) नाम, चिन्ह, यादगार मिट जाना। पुरानी इमारतों के सड़क में आ जाने से बनाने वालों का नाम ही उठ गया। (२) मर जाना।
नाम कमाना — बड़ाई, प्रसिद्धि पाना। भले कामों से नाम कमाओ।
नाम कर जाना — स्मारक, याद गार छोड़ जाना। वह धर्मशाला बना कर नाम कर गये।
नाम करना — (१) दे० नाम कमाना। (२) काम को पूरी तरह न करना। पढ़ते क्या हैं नाम करते हैं, याद तो अक्षर नहीं। (३) दूसरे को दोष लगाना। आप चुरा कर दूसरे का नाम करते हैं।
नाम का—नाम धारी। इस नाम का कोई आदमी यहाँ नहीं। (२) कहने भर को, काम या उपयोग को नहीं। वह तो नाम के राजा हैं, हुकूमत तो अँग्रेज ही करते हैं।
नाम के लिये—(१) थोड़ा सा। (२) दे० नाम का।

नाम को—(१) ज़रा सा। नमक तो नाम को डाला है फीकी है। (२) दे० नाम का।

नाम को नहीं—ज़रा सा नहीं। (२) एक भी नहीं। मैदान में नाम को पेड़ नहीं।

नाम चढ़ना, चढ़ाना — नाम लिखा जाना, लिखना।

नाम चमकना—बड़ाई फैलना।

नाम चलना — यादगार बनी रहना। संतान से नाम चलता है।

नाम चार को—(१) नाम को। वह तो नाम चार को यहाँ आता है काम तो करता नहीं। (२) बहुत थोड़ा।

नाम ज़द करना—चुनना, मनोनीत करना।

नाम जपना—(१) नाम बार बार लेना, रटना। बेचारी तुम्हारा ही नाम दिन रात जपती है। (२) ईश्वर, देवता आदि का नाम बार बार लेना।

नाम डालना—नाम लिखना। १००) मेरे नाम डाल दो।

नाम डूबना—(१) यादगार न रहना। (२) नाम कलंकित होना। वंशों के नाम डूब गये पर चित्तौड़ का नाम न डूबने पाया।

नाम देना—(१) नाम करण करना। (२) देवता के नाम का मंत्र देना।

नाम धरना—(१) बदनामी होना। ऐसा काम मत करो जो दस आदमी नाम धरें। (२) नाम करण करना, नाम रखना। (३) चीज़ का मूल्य कहना। तुम अपनी चीज़ का नाम धरो फिर मैं मोल कहूँगा। (४) दोष निकालना। हमारी पसंद की हुई चीज़ में तुम नाम नहीं धर सकते।

नाम धराना—(१) नाम करण कराना। (२) बदनामी कराना।

नाम न लेना—बचना, चर्चा तक न करना। उसने मुझे बहुत दुखी किया है अब उसका नाम भी न लूँगा।

नाम निकलना, निकालना—(१) किसी विशेषता के लिए प्रसिद्ध होना करना। मिठाई में नुकती बनाने के लिए तो उसका नाम निकला हुआ है। (२) चुराने वाले का नाम प्रकट होना। ज्योतिषी ने चोर का नाम निकाल दिया। (३) नाम प्रकाशित होना। गज़ट में नाम निकला है। (४) नामावली से नाम कटना।

नाम पड़ना—(१) नाम होना। कोठी का क्या नाम पड़ता है? (२) नाम रखा जाना (३) बही में नाम लिखा जाना।

नाम पर जान देना, मरना, मिटना—शोहरत, यश चाहना।

नाम पर धब्बा लगना—कलंक या बदनामी होना। नाम पर धब्बा न आवे, छिप कर करो यदि बुरा काम करना ही है तो।

नाम बाकी रहना—(१) प्रसिद्धि मात्र रह जाना। अब तो केवल नाम बाकी है कि रईस हैं, है कुछ नहीं। (२) यादगार बनी रहना।

नाम बिकना—नाम की प्रसिद्धि से क़दर होना। चीज़ तो कुछ अब अच्छी नहीं पर इसका तो नाम बिकता है।

नाम बिगाड़ना—(१) नाम को छोटा करके या बुरा करके बोलना। (२) बदनामी कराना। (३) बदनाम करना।

नाम बेच डालना—इज्जत या लियाक़त के खिलाफ़ काम करना।

नाम मात्र—दे० नाम को।

नाम मिटना—(१) यश, स्मारक न रहना। (२) नाम तक भी न रहना। गुलामी का संसार से नाम ही मिट गया।

नाम रखना—(१) नाम निश्चित करना। (२) कीर्ति बनाये रखना। (३) बदनामी करना। (४) दोष निकालना। क्यों बेचारे का नाम रखते हो ऐसे मामूली अवगुण सब में हैं।

नाम लगना. लगाना—अपराध, कलंक सिर मढ़ा जाना, मढ़ना। किया किसी ने नाम लगा हमारे।

नाम लेकर—(१) नाम के प्रभाव से। बाप का नाम लेकर भीख माँगेगा, उसे भी डुबायेगा। (२) स्मरण करके। भगवान का नाम लेकर कूद पड़ो, जरूर मिलेगा।

नाम लेना—(१) नाम पुकारना। (२) देवता आदि का नाम जपना। सुबह शाम दो नाम ले लेते हैं। (३) गुण गाना। इस उपकार के बदले हम सदा आप का नाम लेते रहेंगे। (४) चर्चा करना। फिर जाने का नाम लेते हो? (५) दोष लगाना, बदमानी देना। क्यों किसी का नाम लेते हो न मालूम यह काम किसने किया है?

नाम से—(१) चर्चा से। मुझे उसके नाम से घृणा है। (२) जिम्मेदारी सम्बन्ध बता कर जितना रुपया चाहो मेरे नाम से ले लेना। (३) हक़दार, मालिक बना कर। वह लड़के के नाम से जायदाद खरीद रहा है। (४) नाम के प्रभाव से। तुम तो अपने बड़ों के नाम से भीख माँग खाओगे। (५) नाम लेते ही। वह मेरे नाम से काँपता है।

नाम से काँपना—नाम सुनते डर जाना।

नाम से बिकना, नाम से पुजना—नाम की प्रसिद्धि से आदर पाना।

[४८६०]

नाम ही नाम रह जाना—केवल प्रसिद्धि ही रह जाना। अब तो नाम ही नाम रह गया है, पल्ले कुछ नहीं है।

नाम होना—(१) कलंक लगना। बुराई कोई करे नाम हो हमारा। (२) नाम प्रसिद्ध होना। काम तो दूसरे करते हैं नाम उसका होता है।

नार नवाना—(१) गर्दन झुकाना। (२) शर्म से दृष्टि नीची करना।

नारियल तोड़ना—मुसलमानों में ऐसा करके 'गर्भ में लड़का है या लड़की' यह शकुन निकालते हैं।

नाल काटा है ?—बड़ी बूढ़ी, दाई होना। मेरे लौंडे का नाल काटा है ? जो मैं मानूँ।

नाल गढ़ा है—(१) स्थान पर अधिकार, दावा होना। यहाँ क्या हमारा नाल गड़ा है जो सर्वदा रहेंगे। (२) स्थान से बहुत प्रेम होना। ऐसा क्या नाल गढ़ा है जो वहाँ जाऊँगा ही, गया गया न गया गया।

नालिश करना, दागना—अभियोग लगाना।

नाव पार लगा देना—काम बना देना।

नाव में खाक, धूल उड़ाना—(१) व्यर्थ कलंक लगाना। (२) बे सिर पैर की बात कहना।

नाव सूखे में नहीं चलती—बिना खर्च काम नहीं होता।

नाह नूह करना—नाहीं करना।

निकट किसी के—(१) किसी से। तुम्हारे निकट माँगने आऊँ तो न देना। (२) समझ में। (३) लिये। तुम्हारे निकट तो यह काम कुछ भी नहीं।

निकल चलना — (१) उन्नति होना। उनका व्यापार निकल चला है। (२) अति घमंड करना।

निकल जाना—(१) चला जाना। वह बहुत दूर निकल गये.। (२) न रह जाना। नुमायश में सब माल निकल गया। (३) घट जाना। ५ में से ३ निकल गये। (४) भाग जाना। (५) न पकड़ा जाना। चोर भी निकल गया उसी के साथ औरत भी निकल गई।

निकल पड़ना—(१) बाहर आना। (२) चल देना। (३) बहुत क्रोधित होना।

निकाल डालना—काट लेना।

निकाल देना—(१) कम करना। (२) दूर करना। इसे निकाल दो यहाँ से।

निकाल लाना, लेना—स्त्री को भगा लाना।

निकाह पढ़ाना—विवाह करना।

निगाह—के मुहावरे वही हैं जो 'दीठ' 'नज़र' और 'आँख' के हैं।

निगाह बानी करना—रखवाली, निरीक्षण करना।

निगोड़ा नाथा होना—लावारिस होना।

निचला बैठना—(१) चंचलता न करना। (२) शिष्टता से बैठना।

निछक्के में—एकान्त में।

निछावर करना, होना—वारना, त्यागना, किसी के लिये प्राण त्यागना।

निजका—खास अपना।

निज करके—निश्चय, जरूर।

निन्नानवे के फेर में आना, पड़ना—धन बढ़ाने की चिंता में होना।

नियम का पालना—कायदे के अनुकूल व्यवहार करना।

नियम का भंग—कायदे के विरुद्ध करना।

निरने, निरन्ने मुँह—बिना कुछ भी खाए। दवा निरन्ने मुँह न पियो।

निशान उठाना, खड़ा करना—(१) अगुआ बनना। बगावत का निशान उसने ही उठाया। (२) आन्दोलन करना।

निशान देना—(१) पता बताना। (२) पहचान बताना।

निशाना करना, बनाना—हथियार का लक्ष्य बनाना।

निशाना बाँधना—ठीक वार के लिये अस्त्र साधना।

निशाना मारना, लगाना—ताक कर वार करना।

निशाना साधना—(१) निशाना बाँधना। (२) ठीक ठीक वार करने का अभ्यास करना।

निशाना होना—लक्ष्य, निशाना बनना।

निसबत देना—तुलना, बराबरी करना।

निसा भर—जी भर के।

निहाल करना, कर देना—धनवान बना देना, खुश करना।

निहाल होना—धनवान, खुश होना।

निहोरा मानना—एहसान समझना।

नींद उचटना, उचट जाना—नींद दूर होना, न रहना।

नींद का दुखिया—बहुत सोने वाला, सदा सोने की इच्छा वाला।

नींद खराब करना—सोने में बाधा डालना।

नींद खुलना—आँख खुलना, जागना।

नींद खोना, गँवाना—नींद न रहना, नींद में हर्ज करना।

नींद पड़ना—नींद आना।

नींद भर सोना—इच्छा भर सोना।

नींद मारना, **नींद लेना** } खूब सोना।

नींद हराम करना, **नींद हराम होना** } सोने न देना, सोना तक

छूट जाना। इम्तहान की तैयारी में नींद हराम हो गई है।

नीका लगना—(१) सुहाना, अच्छा मालूम होना। (२) सजना। यह साड़ी नीकी लागति है, और डुपट्टा नाहीं।

नीचा-ऊँचा दिखाना—(१) शर्मिंदा करना। (२) हराना।

नीचा-ऊँचा सुनाना—दे० ऊँचा-नीचा सुनाना।

नीचा खाना—(१) तुच्छ, अपमानित होना। (२) हारना। (३) लज्जित होना।

नीचा दिखाना—(१) घमंड दूर करना, मान भंग करना। (२) तुच्छ बनाना। (३) हराना। (४) झेंपाना। क्यों बेचारे को नीचा दिखाते हो यह तो भोला भाला लड़का है।

नीचा देखना—दे० नीचा खाना।

नीची दृष्टि से देखना—कदर न करना, तुच्छ समझना। उसे सब नीची दृष्टि से देखते हैं, काम ही ऐसे करता है।

नीठ नीठ करके—(१) बड़ी मुश्किल से। (२) किसी न किसी तरह।

नीयत डाँवा डोल होना, डिगना—दे० ईमान डिगना।

नीयत बदल जाना—(१) इरादा दूसरा हो जाना। (२) दे० नीयत बद होना।

नीयत बद होना—(१) बुरे विचार होना। इस लड़की पर उसकी नीयत बद है। (२) बेईमानी सूझना।

नीयत बाँधना—मन में ठानना, संकल्प करना।

नीयत बिगड़ना—दे० नीयत बद हो जाना।

नीयत भरना—दे० जी भरना।

नीयत में फर्क आना—दे० नीयत बद होना।

नीयत लगी रहना—ध्यान या इच्छा रहना। हमारी नीयत इस घड़ी पर लगी है, दे दो।

नीर ढल जाना—दे० आँखों का पानी ढलना।

नीर ढलना—आँसू बहाना।

नील का खेत होना—कलंक का स्थान होना।

नील का टीका लगाना—बदनामी उठाना, लेना। क्यों एक बुरा काम करके नील का टीका लगाते हो।

नील का माँट बिगड़ना—(१) बनते समय नीले रंग का खराब हो जाना। (२) अभागा, भाग्यहीन होना। (३) अनोखी बात सुनने में आना।

नील की सलाई फिरवा देना—अंधा कर देना।

नील घोटना — झगड़ा मचाना, अकारण उलझना।

नील डालना – गहरी मार मारना। मारे बेतों के पीठ पर नील डाल दिये हैं।

नील बिगड़ना—(१) चाल-चलन बिगड़ना। (२) चेहरे का रंग उड़ना। (३) बे सिर पैर की बात फैलना। (४) समझ पर पत्थर पड़ना। (५) कुदिन, शामत आना। (६) घाटा, दिवाला होना।

नीला करना—(१) खूब पीटना। मारते मारते नीला कर दिया। (२) कलंकित करना।

नीला पड़ना—नीला हो जाना।

नीला पीला हो जाना—(१) चेहरे का रंग काला हो जाना। (२) आकृति बिगड़ जाना।

नीला पीला होना—बहुत गुस्सा आना, बिगड़ना। मुझ पर क्यों नीले पीले होते हो, जिसने कहा है उसे मारो।

नीलाम पर चढ़ना—नीलाम हो जाना, होना।

नीवँ का पत्थर—(१) असली सहारा। ये तो संस्था की नींव के पत्थर हैं, हजारों रुपये देते हैं। (२) प्रारम्भिक कार्य, सहारा। गर्भ क्या स्त्री को वश में करने की नींव का पत्थर है। (३) मकान के नीचे का सब से पहिला पत्थर।

नीवँ जमाना, डालना, देना—(१) दीवार की जड़ जमाना। (२) आरम्भ करना, सूत्र पात करना। क्लाइव ने अंग्रेजी राज्य की नींव डाली। (३) गर्भ स्थित करना।

नीवँ पड़ना—(१) मकान बनना शुरू होना। नींव तो पड़ गई है जल्दी तैयार हो जायगा। (२) आधार खड़ा होना। (३) आरम्भ होना। झगड़े की नींव नये राज्य की नींव के साथ ही पड़ी।

नीवँ भरना—दीवार के लिए खुदे गड्ढे में कंकड़-पत्थर भरना।

नीव होना—आदि कारण, सहारे होना। तुम्हीं इस झगड़े की नीव हो, तुम्हें ही मारेंगे।

नुकता चीनी करना — दोष निकालना। तुम हर एक के काम में नुकता चीनी करते हो, कोई पसंद ही नहीं आता।

नुकसाना उठाना—हानि, घाटा सहना।

नुकसान करना—(१) हानि देना। (२) अस्वस्थ करना। आलू हमें नुकसान करता है।

नुकसान पहुँचना—हानि होना।

नुकसान पहुँचाना—घाटा, हानि देना।

नुकसान भरना—घाटा, हानि पूरी करना। १००) का नुकसान पल्ले से भरना पड़ा।

नुत्फा ठहरना—गर्भ रहना।

नुत्फाहराम होना—नीच होना। बदमाशी, बेईमानी जो कुछ करे थोड़ा वह तो नुत्फा हराम है।

नुसखा लिखना—दवाएँ लिखना।

नुसख़ा बाँधना—वैद्य के लिखे अनुसार दवाएँ देना, पंसारी की दुकान करना।

नूर का तड़का—बहुत सवेरा। नूर के तड़के चले जाना, रात को आराम करो।

नूर बरसना—शोभा, ज्योति, खूबसूरती खूब होना।

नेकी और पूछ पूछ—उपकार में पूछने की क्या ज़रूरत। नेकी और पूछ पूछ देना है तो दे दो, नाहीं कौन करता है?

नेकी बदी—भलाई-बुराई। नेकी-बदी खुदा सब का फल देता है।

नेग करना—(१) शुभ मुहूर्त में शुरू करना। जरा नेग कर दिया अब चाहे जब कर डालना। (२) दे० नाम करना।

नेग लगना—(१) रीति-रवाज के अनुसार इनाम देना। यहाँ ५०) नेग लगेगा। (२) सार्थक होना। पैसा नेग लगा यही उचित था।

नेजा हिलाना—बरछा, बल्लम फिराना।

नोक की लेना—गर्व दिखाना, डींग हाँकना। वह बड़ी नोक की लेता है, यों कर डालूँगा यों कर डालूँगा वक्त पै कुछ नहीं।

नोक बनाना—रूप सँवारना।

नोक रह जाना—आन, प्रतिष्ठा, टेक निभ जाना। १००) बाँट दिये तो नोक रह गई, ये भी कोई रईस हैं।

नौकरी देना, बजाना—सेवा या नौकरी में लगना। १० से ५ तक नौकरी देता हूँ।

नौकरी से लगना—नौकर होना।

नौ दो ग्यारह होना—चल देना, भाग जाना। चोर थे हमको देखते ही नौ दो ग्यारह हुए।

नौनिध बारह सिद्ध होना—मनसा, इच्छा पूरी होना। हमारे तो जब नौनिध बारह घर बैठे सिद्ध होते हैं।

नौबत आ जाना—दशा, हालत हो जाना। अब तो भूखे मरने की नौबत आ गई है।

नौबत को पहुँचना—दशा को प्राप्त होना। अब तो इस नौबत को पहुँचे हैं कि पानी भी नहीं पचता।

नौबत झड़ना, बजना, बजाना—(१) खुशी मानना, मनाना। (२)

प्रताप की घोषणा होना, दबदबा दिखाना।

नौबत बजा कर, की टकोर—(१) डंके की आवाज। (२) डंके की चोट, खुले आम। मर्‌यौ अफ़जल तिन फिर नौबत बजाय कै।

प

पंख जमना—(१) भाग जाने, न रहने के लक्षण होना। इस नौकर के भी पेट भर रोटी मिलते ही पंख जम गये हैं, अब न रहेगा। (२) बुरे रास्ते पर जाने के ढंग होना। बाज़ार में फिरने से औरतों के पंख जम जाते हैं। (३) शामत, मौत आना। क्यों पंख जमे हैं, चींटी की तरह मरोगे क्या?

पंख न मारना—अगम्य होना। वहाँ तो चिड़िया भी पंख नहीं मारती आदमी तो क्या।

पंख लगना—दे० पंख जमना।

पंखा करना—पंखे से हवा करना।

पंच की दुहाई—सब से दुख, अन्याय दूर करने की पुकार।

पंच की भीख—(१) सब की कृपा, आशीर्वाद। (२) सर्वोपकार का चन्दा।

पंच परमेश्वर—दस आदमियों का कहना ईश्वर वाक्य के तुल्य है।

पंचत्व प्राप्त होना—मरना। सब एक दिन पंचत्व को प्राप्त होंगे।

पंच बदना, मानना—झगड़ा निबटाने वाला स्वीकार करना। दोनों ने मुझे पंच माना, तब फैसला किया है।

पंजर-पंजर ढीला होना—थकान, कमजोरी या बुढ़ापे से शरीर शिथिल हो जाना।

पंजर होना—दुबला-पतला, कंकाल सा होना। बीमारी से पंजर हो गया है।

पंजा करना, लड़ाना—हाथ की अँगुलियों में अँगुलियें डाल कर मरोड़ने का यत्न करना।

पंजा फेरना, मोड़ना, लेजाना—पंजा लड़ाने में दूसरे का पंजा मरोड़ना।

पंजा फैलाना, बढ़ाना—हथियाने, लेने का उद्योग करना। पंजा तो सब ने फैलाया माल तो वारिस को ही मिलना था।

पंजा मारना—झपाटा मारना।

पंजे झाड़ कर पीछे पड़ना—सिर हो जाना, हाथ धोकर पीछे पड़ना।

पंजे में आना—(१) मुट्ठी, पकड़ में आना। पंजे में आया शिकार। (२) वश में, अधिकार में। मैं तुम्हारे पंजे में नहीं आ सकता।

पंजे में लाना—वश में करना।

[४६६५]

पंजे से छूटना, निकलना—वश, अधिकार में से निकल जाना। मेरे पंजे से छूटना मुश्किल, छूट जाय तो जीना मुश्किल।

पंजों के बल चलना—घमंड करना। संभल के रहो पंजों के बल मत चलो, ज़मीन पर पैर रखो।

पंथ गहना—मार्ग या संप्रदाय ग्रहण करना। बिछुरत प्राण पयान करेंगे, रहे आजु, पुनि पंथ गहो।

पंथ दिखाना—(१) मार्ग दिखाना। (२) उपदेश देना। तर गई पंथ दिखायो प्रभु जी!

पंथ देखना निहारना—प्रतीक्षा करना, मार्ग देखना। ऊँचे चढ़ चढ़ पंथ निहारूँ, रोई रोई अँखियाँ राती।

पंथ लगना—पीछा करना, तंग करना। नाहक माया पंथ लगी मो, कैसे हूँ नहिं छोड़ै।

पंथ पर लगाना, लाना—ठीक मार्ग, उचित कार्य का ध्यान दिलाना।

पंथ सेना—आसरा, मार्ग देखना।

पका पकाया मिलना—बिना परिश्रम प्राप्त होना।

पकवाई देकर कच्ची खाना—मूल्य देकर भी काम खराब होना।

पक्का करना—(१) तैयार करना। उसे जमानत देने को पक्का कर लिया है वा (२) तै, निश्चय करना। (३) बलवान बनाना।

पकड़ धकड़ होना—गिरफ़ारी होना। **पकड़ पकड़ना**—तर्क में बात पकड़ना।

पकड़े जाना—कैद होना, हराम-कारी का इलज़ाम लगना। **पकड़ में आना**—(१) चाल में फँसना। (२) कच्ची बात करना। **पक्का कागज**—कानूनी या स्टाम्प का काग़ज। बिना टिकट के पक्का कागज़ नहीं होता।

पक्का-काम होना—असली सोने, चाँदी का काम। इस साड़ी पर पक्का काम है। **खाना**—घी में पका भोजन। **घर**—चूने ईंट से बना घर। **चिट्ठा**—ठीक जँचा चिट्ठा। **पान होना**—बहुत बूढ़ा होना। **पानी**—(१) औटाया हुआ पानी। (२) स्वास्थ्य प्रद जल। पक्का पानी है कोई हानि नहीं। **बही**—ठीक जंचे हुए हिसाब की बही। **रंग**—(१) स्थायी, न छूटने वाला रंग। (२) काला रंग। लड़के का रंग पक्का है, लड़की गोरी है।

पक्की कर लेना—(१) जाँच करना। (२) वायदा कराना।

पक्की बात होना—विश्वास योग्य होना।

पक्ष-करना—तरफ़दारी करना। भाई का पक्ष करके नौकर को ही बुरा बताते हैं। **ग्रहण करना**—दे० पक्ष लेना।

गिरना—हार होना । तीस वोटों से उनका पक्ष गिर गया। निर्बल पड़ना—मत की पुष्टि न होना। गवाही तथा प्रमाण न होने से पक्ष निर्बल पड़ गया। प्रबल पड़ना, होना—दलील, मत पक्की होना। उनके पक्ष में हम हैं उन्हीं का पक्ष प्रबल है। में होना—(१) ठीक या अच्छा समझना। (२) मत की ओर होना। लेना—(१) सहायक होना। वे जिसका पक्ष लेंगे निभायेंगे अंत तक। (२) तरफ़दारी करना। **पख फैलाना, निकालना** नुक्स, बुराई निकालना। **पख लगाना**—विघ्न डालना। **पगड़ी-अटकना**—बराबरी, मुक़ाबिला होना। दोनों की पगड़ी अटकी है देखें राजा किसको मंत्री चुने। उछलना—दुर्दशा होना। भरी सभा में बेचारे की पगड़ी उछली। उछालना—(१) दुर्दशा करना। (२) हँसी उड़ाना। भरी सभा में बुड्ढों की पगड़ी उछालते हो। उतरना-इज्जत बिगड़ना। -की शरम रखना—वेइज्जती का काम न करना। -उतारना-(१) इज्जत खराब करना। (२) ठगना, लूटना। वह पगड़ी तक उतार लेता है। बग़ल में ले लेना—इज्जत बचा लेना। बँधना—(१) मिला के अधिकार मिलना। पगड़ी भतीजे के सर बँधी। (२) प्रतिष्ठा मिलना। ऊँचा पद प्राप्त होना। बांधना—(१) ऊँचा अधिकार देना। (२) उत्तराधिकार देना। -फेर कर रखना-वायदे से फिर जाना। -बदलना—मित्रता, भाई पन स्थापित करना। वे दोनों पगड़ी बदले दोस्त हैं।—में खाक डालना—(१) धिक्कारना। (२) वेइज़्ज़ती करना। -में फूल रख जाना—बदनामी करा जाना। —रखना—(१) इज्जत बचाना। आपने वक्त पर मदद देकर हमारी पगड़ी रख दी। (२) गिड़गिड़ाना, नम्रता दिखाना। कितनी बार उसके पैरों पर पगड़ी रखी पर उसे दया न आई।

पग पसारना—मरना।

पच मरना—यत्न करते करते थक जाना।

पचा बैठना—हड़प जाना, ले कर न देना। तुम पचा बैठे हो पराया माल, दिल की नालिश करेंगे हाकिम से।

पच्चर अड़ाना—अड़ंगा लगाना, बाधा डालना। तुम क्यों बने बनाये काम में पच्चर अड़ाते हो। -ठोंकना-(१) खूँटा ठोकना, कष्ट देने के लिये विघ्न डालना तंग करना। मैं भी तुम्हारे ऐसी पच्चर

ठोकूंगा जो काम ही न बने। (२) आड़ा होना, रोकना। **मारना**—बनता, हुआ काम बिगाड़ना, भाँजी मारना। गरीब के काम में पच्चर मत मारो।

पच्चर लगाना—दे० पच्चर अड़ाना।

पच्ची हो जाना—बिल्कुल मिल जाना। कबूतर इतना ऊँचा उड़ता है कि अंबर में पच्ची हो जाता है।

पछड़ जाना—(१) पीछे रह जाना। (२) हार जाना। (३) गिर जाना।

पछाड़ खाना—बेसुध हो गिरना। खबर सुनते ही पछाड़ खाने लगी।

पछाड़ें खाना—गिर गिर पड़ना।

पजावे का पजावा खड्ड हो जाना—(१) घर के सब आदमियों का बिगड़ जाना, (२) सब काम खराब हो जाना।

पचा बैठना—हजम कर जाना, हड़प लेना। तुम पचा बैठे हो पराया माल, दिल की नालिश करेंगे हाकिम से।

पट उघरना, खुलना—(१) मंदिर का द्वार खुलना। (२) ज्ञान होना। **—पड़ना**—(१) कुश्ती में नीचे पड़ना। (२) औंधा पड़ना। (३) न चलना, धीमा पड़ना। मेरे बिना रोजगार पट पड़ा है। (४) तलवार औंधी गिरना। **—बंद होना**—(१) मन्दिर का द्वार बन्द होना। (२) ज्ञान होना। धन के मद में उसके पट बन्द थे अब खुले हैं जब घाटा आया है। **—मारना**—किवाड़ बन्द करना। **—लेना**—कुश्ती में उल्टा गिराना। अखाड़े में उतरते ही उसने पट-लिया हालाँकि इतना बड़ा पहल-वान था।

पटका पकड़ना—पल्ला पकड़ लेना, किसी वजह से जबरदस्ती कहलाने के लिये मजबूर करना।

पटका बाँधना—तैयार होना, लड़ने के लिये।

पटकनी देना—नीचे गिराना, किसी मनुष्य को उठा कर पृथ्वी पर गिराना।

पटरा कर देना, फेरना—(१) चौपट, नाश कर देना। एक कुपुत्र ने सारा घर पटरा कर दिया। (२) खड़ी चीज़ को गिरा कर ज़मीन के बराबर कर देना। (३) मार कर गिरा देना। लड़ाई में सैकड़ों पर पटरा फेर कर पद्मिनी को बचा लाये। (४) अधि-कार छीन लेना। (५) लूट लेना।

पटरा होना—(१) नष्ट हो जाना। (२) मर जाना। हैजे से लाखों घर पटरा हो गये। (३) ज़मीन में मिल जाना।

पटरी जमना—(१) मेल होना। (२) अपनी कोशिश चल जाना।

पटरी जमाना—(१) घोड़े पर रान जमाकर बैठना। (२) संधि का यत्न या संधि करना। (३) काम बनाना।

पटरी बैठना—पटना, मन मिलना। हमारी उनकी पटरी कभी न बैठेगी।

पट से बोल उठना—बिना सोचे, फौरन कह डालना। तुम पट से बोल उठे, उसने बात पकड़ ली, देखो काम बिगड़ गया न ?

पट्टम होना—नाश हो जाना।

पट्टा तुड़ाना—(१) आज़ादी चाहना, बंधन से भागने की इच्छा करना।

पट्टी का गाँव—कई मालिकों का एक गाँव।

पट्टीदारी अटकना—ज़मीन के अधिकार में हिस्सा होना। मेरी क्या पट्टीदारी अटकी है जो मैं लड़ूँ।

पट्टीदारी करना—(१) बराबरी करना। (२) ज़मीन में हिस्से के कारण, बराबर का अधिकार जताना।

पट्टी देना—(१) घोड़े को लम्बा दौड़ाना (२) बहकाना।

पट्टी पढ़ना, पढ़ाना—(१) सीखना, बहकाना। उसे मेरे विरुद्ध पट्टी पढ़ा भी दो तो भी वह मेरा क्या कर सकेगा ? (२) शिक्षक का पाठ पढ़ाना।

पट्टी आँखों पर बाँध लेना—चश्मपोशी करना, टाल जाना। जानते हैं कि शराब पीता है पर लाचारी से आँखों में पट्टी बाँध ली है, कहते नहीं।

पट्टा लिखवा लेना—वादा करवा लेना।

पट्टी में आना—बातों या बहकावे में आना। बदमाश की पट्टी में आ गये।

पट्टा चढ़ना—(जाँघ में) नस पर नस चढ़ना।

पट्टे पर हाथ न धरने देना—पास न आने देना।

पट्टों में घुसना—बहुत गहरा दोस्त बनना। तुम तो उनके पट्टों में घुसे हुये हो, उनसे काम करा लो।

पड़ जाना—लेट जाना, बीमार हो जाना। दो घंटे मेहनत की इसी से पड़ गये।

पड़ता खाना, पड़ना—खर्च-मुनाफ़ा मिलना। इस भाव बेचने में पड़ता नहीं खाता।

पड़ता निकालना, फैलाना, बैठना—खर्च-मुनाफे के अनुसार भाव निकालना। पड़ता फैला लो ३।।) पड़ती है ३।।)।। बेच रहे हैं।

पड़ता रहना—औसत होना।

पड़ताल करना, पड़ना—जाँच करना, होना।

पड़ती उठना—(१) काश्तकार

मिलना। यह पड़ती भी इस बार १००) में उठगई। (२) पड़ी हुई ज़मीन के जोतने का प्रबन्ध होना। –उठाना–(१) खाली पड़ी जमीन को खेती के काम में लाना। (२) जोतने का बन्दोबस्त करना। –छोड़ना–खेत को खाली ही छोड़ देना। इस फ़सल में पड़ती छोड़ दोगे तो आगे की फ़सल में बहुत नाज पैदा होगा।–पड़ना–(१) बंजर जमीन होना। (२) उजाड़, बर्बाद होना।

पड़ा पाना—सरलता से मिल जाना, बिना परिश्रम पाना।

पड़ाव डाल देना — दे० डेरा डालना।

पढ़ा देना—(१) सिखा देना। तुम क्या चतुर हो मैं तुम्हें अभी १० बरस पढ़ा दूँ। (२) आगाह कर देना।

पड़ाव मारना—ठहरे हुए यात्रियों को लूटना, छापा मारना। (२) बड़ा भारी कार्य करना। ऐसा कौनसा पड़ाव मारा है, दो निहत्थे ही तो पीटे हैं। (३) हिम्मत का कार्य करना।

पड़ा होना—(१) एक जगह बने रहना। तीन दिन से वे यहीं पड़े थे, आज गये हैं। (२) उपयोग में न आना, धरा रहना। बरसों किताब पड़ी रही देखी तक नहीं। (३) बाकी रहना। सारी किताब पढ़ने को पड़ी है।

पड़ी क्या है?—कुछ मतलब नहीं, क्या प्रयोजन है। तुम्हें क्या पड़ी है जो दूसरों के लिये कष्ट उठाओ।

पड़े वह जाने—दुख भुगतने पर ही ज्ञात होता है। जिस पर पड़े वह जाने, तुम्हें क्या पता कि हम कितने दुखी हैं।

पड़े रहना—निकम्मा, लेटे रहना। दिन भर पड़े रहते हो कुछ किया ही करो।

पड़ोस करना — समीप रहना। पड़ोस तो आपका किया, माँगने किससे जाऊँ।

पढ़ंत पढ़ना—जादू मंत्र पढ़ना।

पढ़े जिन्न को शीशे में उतारना —बड़े चालाक को फँसाना।

पतंग काटना — (१) पतंग की डोरी काटना। (२) प्रभाव या सम्बन्ध हटा देना। मैंने सेठ के यहाँ से उनकी पतंग काट दी।

पतंग होना—काम के लिये बहुत दौड़ धूप करना।

पतंगे लगाना—(१) शरारत करना। (२) चिढ़ाना, दिल जलाना।

पत उतारना, लेना—बेइज्जती करना।

पत रखना—इज्जत बचाना।

पतला पड़ना — दुर्दशाग्रस्त, अशक्त, दीन होना। पहिले भारी क्रोध था, अब कुछ पतले पड़ने से शांत हो गये हैं।

पतला हाल होना—(१) दुर्दिन आना। निर्बल, वे ताकत होना। पहिले ही दिन सारी ताक़त घट गई, शेख़ जी का आज पतला हाल है।

पतलून से बाहर होना—आपे में न रहना, जोश में आजाना। क्यों पतलून से बाहर हो रहे हो दो थप्पड़ों में ठीक कर दूँगा।

पताका उड़ना—(१) राज्य हो जाना। किसी समय यहाँ राजपूतों की पताका उड़ती थी। (२) सर्व श्रेष्ठ होना। आज उत्तर भारत में पंडित जी की ही पताका उड़ रही है। (३) शोहरत या धूम होना। उनकी दान वीरता की पताका चारों ओर उड़ रही है।

पताका उड़ाना—(१) विजयी होना, झंडा फहराना। (२) प्रधान, मशहूर होना। (३) राज करना।

पताका गिरना, पतन या पात होना—(१) हार हो जाना। दिन भर खूब ही लड़े और विजय से शत्रु की पताका गिर गई।

पताका फहराना — दे० पताका उड़ना, उड़ाना।

पते की कहना, सुनाना—भेद बताना। उसने बड़ी पते की कही थी अन्त में ठीक वही हुआ।

पते की बात—भेद खोलने वाली बात।

पत्तल—(एक के खाने वाले)- गहरे दोस्त। वह दोनों एक पत्तल के खाने वाले हैं।

पत्तल खोलना—पत्तल बाँधने की पहेली का उत्तर दे देना।

पत्तल झाड़ कर चल देना—मतलब साध कर चले जाना।

पत्तल डालना, पड़ना—भोजन के लिये पत्तल बिछना।

पत्तल परसना, लगाना—(१) पत्तल पर खाना रखना। (२) भोजन सहित पत्तल रखना।

पत्तल बाँधना — पहेली कहकर उत्तर देने से पहिले न खाने की कसम देना।

पत्तल में (खाना और) छेद करना—भलाई करने वाले के साथ बुराई करना। दस साल से मेरा नमक खारहा है फिर भी जिस पत्तल में खा रहा है उसी में छेद करना चाहता है।

पत्तल बनाना—(१) पत्तल बनाना, पत्तों को सीक से जोड़ना। (२) पत्तल में पदार्थ रखना। (३) पदार्थ भरी पत्तल सामने रखना।

पत्ता खड़कना—आने की आहट,

खटका होना। पत्ता खड़का बंदा भड़का (कहावत)।—**तोड़कर भागना**—बड़े जोर से भागना। वह आपको आते देख पत्ता तोड़ भागा। —**न हिलना**—हवा न चलना। गर्मी बहुत है, पत्ता हिलता नहीं, दम घुट रहा है। —**लगना**—पत्ते से लगे रहने से फल में दाग़ पड़ना।—**हो जाना**—काफ़ूर हो जाना, भाग जाना, चम्पत होना।

पत्रे खोलना—भेद, पोल खोलना, ऐब जाहिर करना। चुप रहो अगर और बकोगे तो मैं भी तुम्हारे पत्रे खोल दूंगा।

पत्थर का कलेजा, दिल, हृदय—दे० कलेजा पत्थर का।—**का छापा** लिथो की छपाई। पुरानी पुस्तक पत्थर के छापे की हैं। —**की छाती** दे० कलेजा पत्थर का। —**की लकीर** पक्की, स्थायी अमिट। ओछों की दोस्ती पानी की लकीर सज्जन की मित्रता पत्थर की लकीर है।—**के देवता**—कुछ न बोलना, चुप चाप रहना। तुम्हें लेजा कर क्या करूँ पत्थर के देवता हो।—**को जोंक लगना**—असंभव बात करना। कृपण से दान दिलाना, निर्दय को दया लाना, मूर्ख को समझाना पत्थर को जोंक लगाना है।—**चटाना**—पत्थर पर घिस कर तेज़ करना। छुरी को पत्थर चटा कर काम में लाओ।—**छाती पर धरना**—लाचारी से दुख झेलना, सहना। —**ढोना**—(१) बहुत परिश्रम करना। बड़े घर पढ़िये पत्थर ढो ढो मरिये। (२) फिज़ूल मेहनत करना। —**तले से हाथ निकालना**—मुसीबत से छूटना।—**तले हाथ आना, दबना**—(१) संकट में फँसना। (२) लाचार, मजबूर होना, जब्र दस्त के पंजे में फँसना, हत्थे पड़ना।—**निचोड़ना**—(१) स्वभाव विरुद्ध कार्य कराना। (२) पत्थर को जोंक लगाना।—**पड़ना**—(१) नष्ट होना। अक्ल पर क्या पत्थर पड़े थे जो न सोचा। (२) इच्छा पूरी न होना। जहाँ जाता हूँ यही पत्थर पड़ते हैं, कोई साथी नहीं। (३) दुख पड़ना। —**पड़े** चौपट, नष्ट होजाय।—**पर दूब जमना**—निराशा में आशा, असंभव में संभव होना। बंध्या के पुत्र होना पत्थर पर दूब जमना है। —**पसीजना पिघलना**-निर्दय को दया, कृपण में दानेच्छा होना। सैकड़ों प्रार्थनाओं के बाद पत्थर पसीजा है, सो भी कुल १००) दिये।—**पानी होना**—निर्दय को दया आना।—**बरसना**—ओले पड़ना।—**मारे भी न मरना**—मरने

के सामान होने पर भी न मरना, बेहयाई से जीना।–**लुढ़काना**–(१) भारी और बेजोड़ शब्द बोलना, लिखना। (२) किसी का बुरा चाहना।–**सा खींच या फेंक मारना**–असह्य, लट्ठमार, कड़ी बात कहना।–**से भाग्य (नसीब) फूटना**–(१) बेहद भाग्य बुरे होना। (२) संगदिल से बैर बँधना।–**से सिर फोड़ना या मारना**–(१) असम्भव के लिये प्रयत्न करना। (२) मूर्ख को समझाना।

पत्थर हो जाना–(१) जमकर सख्त हो जाना। (२) चुप्पी साधना, न टलना।

पत्थर होना–(१) तोल में बहुत भारी होना। (२) निर्दय कठोर दिल होना। (३) न टलना, न हिलना। (४) बहरा बन जाना।

पथ्य से रहना–परहेज़ से रहना।

पथ्य होना–अनुकूल या लाभदायक होना। नशेबाज को नशा भी पथ्य है।

पनाह देना–आश्रय देना, रक्षा करना।

पनाह माँगना–(१) दूर रहने की इच्छा करना। आप दूर रहिये मैं आप से पनाह माँगता हूँ। (२) सहारा, रक्षा चाहना।

पनाह लेना–शरण में पहुँचना, सहारा पाना।

पनीर चटाना–काम निकालने के लिये खुशामद करना।

पनीर जमाना–(१) ऐसी बातें करना जिससे आगे बहुत काम निकलें। (२) अधिकार के लिये आरंभिक कार्य करना। पनीर तो जमा लिया है लाला लौटे और काम बना।

पपड़ा जाना–फट जाना। मेरे होठ गर्मी से पपड़ा गये हैं।

पपड़ी छोड़ना–पतली तह का सूख कर चिटकना। शीतला ने पपड़ी छोड़ दी है।

पयाल गाहना, झाड़ना–(१) व्यर्थ श्रम करना। (२) ऐसे की सेवा जिससे लाभ की आशा न हो।

पर और बाल निकालना–(१) ऊधम मचाना। (२) सीधा सादा न रहना। अब तो उसके पर और बाल निकल आये हैं अब वह तुम्हें भी चला दे।

पर-कट जाना–(१) शक्ति का सहारा न रहना। उनके मरने से हमारे तो पर कट गये वरना अब तक तो बीस बार विलायत को उड़गये होते (२) साहस या पहुँच न होना।–**काट देना**–अशक्त असमर्थ कर देना।–**कैंच करना**–पंख कतरना।–**जमना**–(१) पर निकलना। (२)

चालाकी-चतुरता सूझना, आना। शहर में रहने से साल भर में ही लड़के के पर जमगये अब वह धोखे देता है, खाता नहीं।–जलना—(१) हिम्मत न होना। (२) पहुँच न होना। वहाँ जाते हुए बड़े बड़ों के पर जलते हैं तुम्हारी क्या गिनती है। (३) लाचारी से सामना न कर सकना।—झाड़ना—(१) पुराने पर गिराना। (२) पंख फटफटाना।–टूट जाना–दे० पर कट जाना।–टूटना—दे० पर जलना।–बाँध लेना—अधिकार या वश में कर लेना। जायदाद बहू के नाम करके पर बाँध लिये हैं।—न मारना—कोई जा न सकना। जनाने में चिड़िया भी पर नहीं मार सकती।–निकलना—(१) पंख-युक्त होना। (२) इतराना, बढ़कर चलना।—पुरज़े झड़ना—शक्ति ही न रह जाना। –मारना—(१) उड़ना। (२) जा सकना, पहुँच होना; आने-जाने का मौका मिलना।–लगजाना—(१) तरक्की होना, फैलना। (२) शेखी में आ जाना (३) जल्दी उड़ना, हालत ही बदल जाना। —लगना–(१) प्रसिद्ध होना। बुराई के बड़ी जल्दी पर लग जाते हैं। (२) समझ आना। अभी इसके पर नहीं लगे हैं वरना यह तो चालाकों के चूना लगायेगा। —लेना—पर कतरना। कबूतर के पर लेलो।

परचा देना—(१) परिचय बताना। (२) लिखकर देना।

परचा माँगना—(१) प्रमाण देने के लिये कहना। (२) देवता से शक्ति दिखाने की प्रार्थना करना।

परचा लेना—(१) जाँच-परीक्षा लेना। (२) ललचाना। (३) अपने मनका बना लेना। दाग में परचा ही लूँगा बातों बातों में उन्हें, शर्त है बस यह कि उनका सामना होने लगे।

परछाईं न पड़ना—कुछ भी पता न मिलना। असली तो क्या परछाईं भी न पा सकोगे।–पड़ना—संगत-सोहबत का असर होना। तुम पर भी सेठजी की परछाईं पड़ गई इसीलिये कंजूस हो गये हो। –से डरना—(१) बहुत डरना। (२) पास तक आने से डरना। (३) कोई लगाव न चाहना।—से भागना—बहुत घृणा करना। वह तो बुरे कामों की परछाईं से भागता है। (घृणा, आशंका से)।

परदा उठाना, खोलना—(१) छिपी बात प्रकट करना। (२) शर्म छोड़ना।

परदा उठा देना—(१) घूँघट की

रीति न रखना। (२) बे शरम हो जाना।

परदा डालना ढकना—छिपाना, न कहना। उन्होंने मेरे ऐबों पर परदा डाल रखा है।

परदा पड़ना—(आँख या बुद्धि पर) दिखाई न देना, समझ में न आना।

परदा फाश करना—भेद प्रकट करना। उसके पेट में बात नहीं पचती वह परदा फाश कर देगा।

परदा रखना—(१) भेद छिपाना, बुराई न प्रकट होने देना। (२) परदे के भीतर रहना। स्त्रियाँ मरदों से परदा रखती हैं। (३) छिपाव रखना।

परदा रख लेना, रह जाना—(१) इज़्जत बचा लेना, शर्म बात रह जाना। (२) भेद न खुलने पाना।

परदा लगाना—सामने न होना। पहिले तो मारी-मारी फिरती थी अब परदा लगा है।

परदा होना—(१) स्त्रियों के सामने न होने का नियम होना। उनके घर बच्चों से भी परदा है। (२) छिपाव होना। तुम तो सब हाल जानते ही हो तुमसे क्या परदा है।

परदे-परदे—छिपे छिपे।

परदे बिठाना—(स्त्री को) परदे के भीतर रखना।

परदे में चाहना—दिल ही दिल में इच्छा करना।

परदे में छेद होना—परदे के भीतर व्यभिचार होना।

परदे में रखना—(१) स्त्रियों को किसी के सामने न होने देना। (२) छिपाकर रखना।

परदेश में आना—घर पर नहीं, दूसरे देश में रहना। अंग्रेज अधिक तर परदेशों में ही छा रहे हैं।

परले दरजे, सिरे का—अत्यंत। बहुत अधिक। वह तो परले दरजे का बदमाश है। परले सिरे का मूर्ख है।

परले पार होना—(१) अंत तक पहुँचना। (२) समाप्त होना। काम का परले पार होना गङ्गा नहाना है।

परवा न करना—ख्याल न करना, अनादर करना।

परवान चढ़ना—पूरी आयुतक पहुँचना; विवाहित होना।

परलोक गामी होना, सिधारना—मरना।

पर व बाल निकलना—(१) होश सँभालना। (२) झगड़ा खड़ा करना।

परवाना होना — निछावर होना जान देना।

परवाह करना—धारा में बहाना। मुर्दे को परवाह कर दो।

पराकाष्ठा को पहुँचना—अत्यंत, बहुत अधिक होना। अब तो अत्याचार पराकाष्ठा को पहुँच चुका है।

पराक्रम चलना—उद्योग हो सकना। बुढ़ापे में पराक्रम नहीं चलते।

पराया समझना—(१) भेद भाव रखना। (२) भला बुरा समझना। देखो अपना पराया समझो वरना धोखा खाओगे।

पराए बिरते पर शिकरा पालना—दूसरे के भरोसे काम करना।

पराए माल पर दीदे लाल होना—दूसरे के माल पर या सहारे इतराना।

परिन्दा पर नहीं मारता—कोई आ जा नहीं सकता। आदमी की क्या चलाई वहाँ परिन्दा भी पर नहीं मारता।

परे बैठना, रहना—अलग रहना।

परे बैठाना—(१) हटकर बैठाना। (२) दूर रखना, घृणा करना। बगल में बिठाने वाले भी गरीबी में परे बैठाने लगे।

पर्वत को राई गिनना—बड़े को छोटा कठिन को सहज समझना। दिल में जिनके हैं तेरी बड़ाई गिनते हैं वह पर्वत को राई।

पलंग को लात मार कर खड़ा होना—(१) बहुत भारी बीमारी सहकर अच्छा होना। (२) संतान उत्पत्ति के बाद सुख से होना। गरीब औरतों को तो मजदूरी करनी पड़ती है वह तो बच्चे के दस दिन बाद ही पलंग को लात···।

पलंग तोड़ना—व्यर्थ पड़े रहना, घर में बेकार बैठे रहना। यों ही पलंग तोड़ते हो, किसी की नौकरी ही क्यों न करलो।

पलंग लगाना—बिस्तर-बिछौना बिछाना। तुमको पलंग लगाना तक तो आता नहीं।

पलक झपकना (१) ज़रा सो रहना। (२) डर हो जाना। भूत को देखते ही पलक झपक गई।

पलक झपकते—थोड़ी देर में, क्षणभर में। पलक झपकते ही उसका पता न चला।

पलक पसीजना—दया-रहम आना, आँसू आना। गरीबों के दुख पर अमीरों के पलकें भी नहीं पसीजते।

पलक बिछाना—(१) प्रेम से आदर, स्वागत करना। आइये आपके लिये पलकें बिछी हैं। (२) राह में टकटकी लगी होना।

पलक भँजना, भाँजना—आँखों

या पलकों से संकेत करना, पलक गिराना।

पलक मारना—(१) आँख बंद करना। (२) आँख से इशारा करना, सैन मारना। मैंने तो जेब से निकाल ही लिये थे पर उसने पलक मारदी।

पलक लगाना—सोना, आँख बन्द करना। पलक लगाओ नींद आ जायगी।

पलक से पलक लगना—बहुत थोड़ी सी नींद आना, नींद आना। पलक से पलक लगा ही था कि तुम आगये।

पल की (के) पल में—थोड़ी ही देर में। पल में परलय होयगी बहुरि करोगे कब।

पलकों से जमीन झाड़ना, तिनके चुनना, नमक उठाना—श्रद्धा प्रेम से सेवा सुश्रूषा करना; सुख देना। मैं आपके लिये पलकों से तिनके चुनूँगा।

पलट आना—लौट आना। तो पलट आते मैं और तरीका बताता।

पलट जाना—मुकर या बात बदल जाना। वह झूठा है बात झट पलट जायगा।

पलटा खाना—(१) नीचे-ऊपर हो जाना। (२) कह कर बदल जाना; इन्कार करना। उसका विश्वास नहीं वह पलटा खा जाता है।

पल मारते, मारने में—दे० पलक झपकते।

पलटा लेना—(१) बदला लेना। (२) लौटा लेना। (३) बदलवा लेना। दुकनदार पलट लेगा तुम पलटा लाओ।

पलस्तर उड़ाना—बहुत मारना; बुरी हालत करना। पीटते पीटते बदमाश का पलस्तर उड़ा दिया, पलेथन निकाल दिया।

पलस्तर ढीला करना, बखेरना बिगाड़ना, बिगाड़ देना—तंग, दुखी कर देना। अदालत तक चलो सब पलस्तर बखेर दूँगा देखें क्या सबूत देते हो।

पलस्तर बिगड़ना, बिगड़ जाना ढीला होना—(१) तंग दुखी होना। (२) नसें ढीली हो जाना।

पल्ली-पल्ली जोड़ना—थोड़ा थोड़ा इकट्ठा करना, बड़ी मुश्किल से मालदार बनना। बंदा जोड़े पल्ली पल्ली लुकमान लुढावे कुप्पे (कहावत)।

पलीता चाटना—(१) बंदूक या तोप का न चलना। (२) कढ़ाई के घी तेल का आँच से भड़कना।

पलेथन निकलना, निकालना—दे० पलस्तर उड़ाना।

पल्ला आना—समीप घुसे आना।

पल्ला छूटना, छुड़ाना — पिंड छुड़ाना, छुटकारा पाना। घंटों खड़ा रहना पड़ता है, पल्ला छुटाना भारी होता है।

पल्ला झुकना—पक्ष बलवान होना। उनका पल्ला झुका हुआ है, तुम कैसे बराबर हो सकते हो?

पल्ला पकड़ना — (१) सहारा लेना। भगवान का पल्ला पकड़ो वह बचायेगा। (२) रोक लेना। पल्ला पकड़ लिया आने ही न दिया।

पल्ला पसारना—(१) माँगना, हाथ फैलाना। (२) दुआ-प्रार्थना करना। मैं गरीबनी और किस के आगे पल्ला पसारूँ मुझे तो तुम्हीं से आस है।

पल्ला भारी होना — एक ओर अधिक बल या सबूत होना। जिधर पल्ला भारी होगा उधर की कहेंगे।

पल्ला लेना—दे० पल्ला पकड़ना।

पल्ले पर आना—ज़िद पर आना। पल्ले पर आ गया तो जिन्दा न छोड़ेगा।

पल्ले पड़ना—(१) हिस्से में आना। अच्छा अच्छा वे ले गये ये हमारे पल्ले पड़ा। (२) हाथ लगना। (३) दे० पल्ले बँधना।

पल्ले पर रहना, होना — ओर होना। मगर जिसके पल्ले पर अल्लाह हो, न हारे न भटके न गुमराह हो।

पल्ले पार होना—तोड़ कर निकल जाना, पार होना।

पल्ले से बँधना—(१) गले पड़ना मैं न कर सकूँगा मेरे पल्ले न बँधे तो अच्छा। (२) विवाह में आना। (३) जबरदस्ती मिलना।

पल्ले बाँधना—(१) व्याह देना। (२) गाँठ बाँधना, याद रखना। (३) तह करना, बन्द करना। (४) ऊपर या जिम्मे लेना, करना। कहीं आने जाने का नहीं छोटे छोटे बच्चे पल्ले बाँध गयी हैं।

पवन का भुस होना—उड़ जाना, महत्व न होना। मेरो कह्यो पवन को भुस भयो, काहू न दीनो कान।

पशम उखाड़ना—कुछ हानि न कर सकना।

पशम न उखाड़ना—कुछ न कर सकना।

पशम पर मारना—परवा न करना।

पशम न समझना—कुछ भी न समझना।

पसंगा भी न होना—कुछ भी बराबर न होना, बहुत तुच्छ होना।

पसंद आना — भाना, रुचना, अच्छा लगना।

पसंद करना — चाहना, इच्छा करना।

पसली फड़कना या फड़क उठना—(१) खबर हो जाना। (२) खबरदार हो जाना। (३) देखने को व्याकुल होना। पसली फड़क रही थी कल से तुम्हारी कसम तुम आ गये न।

पसलियाँ ढीली करना, पसली तोड़ना— बहुत भीतरी मार मारना।

पसीने की जगह लोहू बहाना— किसी की थोड़ी सी तकलीफ़ में जान की भी परवा न करना, बहुत प्रेम करना। क्यों डरते हो तुम्हारे पसीने की जगह मैं लोहू भी बहा दूँगा।

पसीने पसीने होना-बहुत लज्जित होना (स्त्री)।

पसो पेश करना—देर करना, आगा पीछा सोचना, देर करना।

पसीने (गाढ़े की कमाई)— दे० १६१७ मु०।

पस्त करना—पीछे हटाना, हरा, देना

पसो पेश करना—हिचकिचाना देर करना। पसो पेश क्यों करते हो नाराज़ होंगे तो हो जाने दो।

पहरा अच्छा, हलका या बुरा, भारी—नौकरी या रखवाली का ऐसा होना।

पहरा देना—रखवाली करना। कहाँ तक २४ घंटे पहरा देता आँख झपकी वह भागा।

पहरा पड़ना—दे० पहरा बैठना।

पहरा बदलना-रखवाला बदलना। आठ घंटे में पहर बदलो वरना ये थक जाँयगे।

पहरा बैठना, बैठाना—रखवाली, चौकसी, रक्षा के लिये सिपाही बैठाना। उनपर पहरा बैठा है आ-जा नहीं सकते।

पहरे में डालना देना बैठाना— दे० पहरा बैठाना।

पहरे में रखना—(१) दे० पहरा बैठना। (२) बंधन, जेल या हवालात में रखना। बेईमान रुपये नहीं देता था अब पहरे में रखवा दिया है।

पहरे में होना-(१) रखवाली पर (२) वश में होना। मालिक मेरे पहरे में हैं पर मैं भी तो उनके पहरे में हूँ बिना आज्ञा जा नहीं सकता।

पहल निकालना,—कोने बनाना।

पहली बिस्मिल्लाह ग़लत—काम होते ही बिगड़ना।

पहलू गरम करना (किसी का)—बगल में बैठना।

पहलू गरम करना (किसी से)— बगल में बैठाना।

पहलू दबाना—सेना या क़िले पर

किसी ओर से आक्रमण करना, टूटना।

पहलू निकालना—मौक़ा, तरीका निकालना। छोटे वकील ने ऐसा पहलू निकाला कि साफ़ जीत गये।

पहलू पर होना—सिद्धान्त पर होना।

पहलू बचाना—(१) जी चुराना। (२) आँख बचाकर या कतरा कर निकल जाना। तुमने पहलू बचाया इसीलिये मैंने पुकारा।

पहलू बसाना (१) गोद में बैठना। (२) समीप में जा बसना।

पहलू में बैठना, बैठाना—बगल में या जंघाओं पर बैठना, बैठाना।

पहलू में रहना—पास रहना।

पहलू लिये हुए होना—मतलब की चीज़ पाना। जो था वही दिल लिए हुए था, अपना पहलू लिए हुए था।

पहाड़ उठाना—भारी काम पूरा करना या सिर पर लेना। थोड़ा काम लो पहाड़ मत उठाओ।

पहाड़ कटना—(१) भारी काम पूरा होना। (२) विपत्ति दूर हो जाना। आज साल भर में पहाड़ कटा निश्चिंत हुए।

पहाड़ काटना, पहाड़ के पत्थर ढोना—(१) असंभव काम कर डालना। (२) कठिन काम करना। यह तो पहाड़ काटना है मुझसे न होगा।

पहाड़ गुजरना—सहा न जाना, नागवार गुजरना। मुझे उनके ताने पहाड़ गुजरते हैं।

पहाड़ टालना—विपत्ति दूर करना, संकट से पीछा छुड़ाना। ज्यों त्यों करके पहाड़ टाला नहीं तो दिन रात काम करना पड़ता।

पहाड़ टूटना, टूट पड़ना—भारी विपत्ति आना। गरीबी में पहाड़ टूटा ५००) का खर्च आ पड़ा।

पहाड़ से टक्कर लेना—(१) बड़े से बैर करना। (२) ऊँचे की बराबरी करना। वह २५ लाख के आसामी हैं उस पहाड़ से क्या टक्कर लें।

पहाड़ हो जाना—भारी होना, न कटना। वियोग के दो दिन भी पहाड़ हो गये।

पहुँचने वाला—जो जा सके।

पहुँचा पकड़ना—(१) बरजोरी रोकना। (२) तरकीब या उपाय करना। ऐसा पहुँचा पकड़ूँ कि जज भी मात खा जाय।

पहुँचा हुआ—सिद्ध, पारंगत, ईश्वर ज्ञानी। यह चालाकी में पहुँचे हुए हैं वह भक्ति में।

पहुनाई करना — स्वागत-आदर करना। हम तो सूखी रोटियों से ही पहुनाई कर सकते हैं।

पहेली बुझाना—चक्करदार बात करना, मतलब को घुमा फिरा कर कहना। ऐसी पहेली बुझाता है कि आदमी चक्कर में आ जाये।

पाँचों उँगली घी में होना—खूब लाभ ही लाभ, आनन्द होना, अच्छी बन आना। नवाब के सेक्रेटरी हो पाँचों उँगली घी में हैं भाई!

पाँचों उँगली बराबर नहीं—सब एक से नहीं। दो लड़के अच्छे हैं तो एक बुरा भी है, पाँचों···।

पाँचों सवारों में नाम लिखाना—बड़े लोगों में बताना, गिनाना। ५० हज़ार ब्याह में लगावोगे बिक जाओगे, हाँ नाम ज़रूर पाँचों सवारों में लिखा लोगे।

पाँचों से बाहर होना—तीन लोक से मथुरा न्यारी।

पाँसा उलटना—कार्य का फल बदल जाना।

पाई करना — केस बिगाड़ना। कम्पोज़ीटर सारा केस पाई कर गया (प्रेस)।

पाक करना—(१) पवित्र बनाना। (२) खतम करना। अजी किस्सा पाक करो ऐसे आदमी से क्या ताल्लुक़।

पाक करना (झगड़ा)—(१) झगड़ा मिटाना। (२) मार देना। (३) चिन्ता दूर करना।

पाक होना—साफ़, दूर होना, खत्म होना।

पाकट गरम करना—रिश्वत, घूँस लेना। कचहरी और पुलिस वाले खूब पाकट गरम करते हैं।

पाखंड फैलाना—धोखे का जाल डालना। ढोंगी ने पाखंड फैलाया है साधू नहीं है।

पाखाना निकलना, फिर देना—(१) डर से गू निकलना। (२) बहुत डरना।

पाखाना फिरना—विष्ठा, गू त्यागना।

पाखाना लगना—टट्टी जाने की इच्छा होना।

पाखाने जाना—दे० पाखाना फिरना।

पाजामे से बाहर होना—जोश में आना।

पाट देना—मालामाल कर देना, ढेर कर देना।

पाटा फेरना—नाश कर देना। सारी इज्जत पर पाटा फेर दिया।

पाठ पढ़ना—सीखना, बहकाये में आना।

पाठ पढ़ाना (उलटा)—उल्टी शिक्षा देना।

पाताल की खबर लाना—बहुत दूर की खबर लाना।

पादर रकाब होना—रवाना होना।

पान उठाना—बीड़ा उठाना, भारी

काम करने की प्रतिज्ञा करना। उसने पान उठा लिया और कहा कि बिना लाये मुँह न दिखाऊँगा।

पान कमाना—उलट पुलट कर पान का गला अंश दूर करना।

पान खिलाना—मँगनी, सगाई करना।

पान चीरना—व्यर्थ के काम में समय बिताना। पान चीर रहे हैं, करते क्या? करना ही नहीं चाहते।

पान देना—वायदा कराना, पक्का कराना, हामी भरवाना।

पान-पत्ता } **पानफूल** } (१) मामूली भेंट। गरीबों के पास पान फूल ही तो हैं। (२) कोमल वस्तु।

पान फेरना—दे० पान कमाना।

पान बनाना—(१) पान कमाना। (२) चूना कत्था लगा कर बीड़ा बनाना।

पान लेना—दे० बीड़ा उठाना।

पानदान का खर्च—वह रकम जो स्त्रियों को पान तथा अन्य निजी खर्च को दी जाय, साधारण खर्च।

पानी आना (मुँह में)—(१) पाने का लोभ होना। (२) चखने के लिए जीभ ललचाना। आशा होते ही कि मिल सकती है मुँह में पानी आ गया।

पानी आना—(१) पसेब, लार निकलना। (२) मेह पड़ना, पड़ने वाला होना। (३) कुएँ आदि में सोता खुलना। (४) घाव, आँख में पानी भर आना या गिरना।

पानी उठाना—(१) पानी सोखना। मुलायम आटा खूब पानी उठाता है।

पानी उतर जाना—(१) बहाव कम होना। (२) चमक (मनुष्य, मोती, शीशे की) न रहना। (३) शर्म न रहना।

पानी उतरना—(१) उतार होना, बाढ़ घटना। (२) इज्जत या चेहरे का नूर बिगड़ना। (३) अंडकोश बढ़ना। (४) नजला आखों में।

पानी उतारना—वेइज्जत करना।

पानी करना—(१) दया ला देना, द्रवित करना। दुख की वह तस्वीर खींची कि पत्थर के दिल को पानी कर दे। (२) सरल, सहल कर देना। मैंने इस काम को पानी कर दिया। (३) क्रोध दूर कर देना। (४) शर्मिन्दा करना।

पानी का आसरा—सहायता की आशा। सेवा तो सेवा उनसे पानी तक का आसरा नहीं।

पानी का हगा मुँह को आना—ऐब खुलजाना, किए का फल मिलना।

पानी काटना—(१) बहाव एक से दूसरी तरफ़ करना। अपने खेत से मेरे खेत में पानी काट दिया। (२) तैरने में हाथ से पानी हटाना।

वहाव के रुख पानी नहीं काटा जायगा।

पानी का बतासा, बुलबुला—क्षणभंगुर, थोड़ी देर रहने वाला। क्रोध तो पानी का बुलबुला है हमेशा न रहेगा।

पानी की तरह बहाना—उड़ाना, लुटाना, वे विचारे खर्चना। लाखों रुपये पानी की तरह बहा दिये।

पानी की धोंकनी लगना—बहुत प्यास लगना।

पानी की पोट—(१) वह साग जिसमें पानी का अंश अधिक हो। (२) जिसमें पानी ही पानी हो।

पानी की लहरें गिनना—असंभव काम करना।

पानी के मोल—बहुत सस्ता। गाँव में घी भी शहर के पानी के मोल होता है।

पानी के घड़े पड़ना—दे० घड़ों पानी पड़ना।

पानी के मोल बिकना—बहुत सस्ता बिकना।

पानी के रेले में बहना—(१) नष्ट कर देना। जवानी तो पानी के रेले में बहा दी। (२) कौड़ियों में लुटाना।

पानी खुलना—वर्षा बन्द होना।

पानी गले तक आ जाना—हद हो जाना।

पानी चढ़ना—(१) पानी ऊँचाई पर जाना। नल में पानी ही नहीं चढ़ता। (२) पानी बढ़ना। गंगा में पानी चढ़ा। (३) सींचा जाना।

पानी चढ़ाना—(१) बहुत पानी पीना। सेर भर पानी चढ़ा गये। (२) खेत सींचना। (३) पानी चूल्हे पर रखना, गर्म करना। पानी चढ़ा दो जो नहाने के वक्त तक गर्म हो जाय। (४) पानी ऊँचाई पर ले जाना।

पानी चलाना—(१) आँसू बहाना। (२) पानी फेरना।

पानी चुराना—घाव में पानी जाना।

पानी छानना—खूब सावधानी से परीक्षा करना। वह पानी को भी छान लेते हैं तब विश्वास करते हैं।

पानी छूटना—कुएँ में कम पानी जो निकाला न जा सके।

पानी छूना—पीठ धोना।

पानी छोड़ना—पानी निकालना। घाव पानी छोड़ता है।

पानी टूटना—(१) कुएँ में पानी कम हो जाना। हमारे कुएँ का पानी टूट गया है। (२) मेंह रुकना।

पानी ढलना—रौनक नूर जाता रहना। अब वह खूबसूरत नहीं, पानी ढल गया।

पानी तोड़ना—(१) जल्दी जल्दी

खूब खींच कर कम पानी कर देना। कुएँ का पानी तोड़ दो तो बदबू जाय। (२) पानी काटना (नाविक)।

पानी थामना—(१) धार पर चढ़ाना (नाविक)। (२) पानी रोकना।

पानी दम करना—दुआ पढ़ कर पानी पर फूँकना।

पानी दिखाना—पशु को पानी पिलाना।

पानी देना—(१) तर्पण करना, पितरों को जलांजलि देना। (२) सींचना। वृक्ष में पानी दो तो पनपे। (३) चमकाना।

पानी देवा न नाम लेवा—खानदान में कोई न रहना। आज भारत के सम्राट् मुगलों का कोई पानी देवा है न नाम लेवा है।

पानी न माँगना—चटपट मरना। ऐसे साँप ने (तलवार ने) काटा कि पानी भी न माँग सका।

पानी पड़ना—(१) वर्षा होना। (२) शर्मिन्दा होना। इस बात से उन पर पानी पड़ गया।

पानी पड़ा—ढीला ढाला। कनकौवा पानी पड़ा है, डोर ढीली है।

पानी पढ़ना—पानी चुल्लू में ले मंत्र पढ़ना। पानी पढ़कर छिड़का तो भूत भागा।

पानी पर नीव डालना, देना, होना—पक्का, दृढ़ आधार न होना। ऐसा काम मत करो जिसकी पानी पर नीव हो।

पानी पानी करना, होना—बहुत लज्जित करना, होना। यह सुनकर वह पानी पानी हो गया।

पानी पीकर जात पूछना—काम करने के बाद सोचना कि यह ठीक था या नहीं, पीछे औचित्य पर विचार करना।

पानी पी पी कर कोसना—हर समय गाली देते रहना।

पानी फिरना, फिर जाना—(१) काम बिगड़ना, चौपट होना। इस एक बात से सारे काम पर पानी फिर गया। (२) ताज़गी आ जाना।

पानी फूँकना—मंत्र पढ़ कर पानी पर फूँकना।

पानी फूटना—(१) उबाल आना। (२) बाँध या मेंड़ तोड़ कर पानी निकलना। मेरे खेत में पानी फूट गया, फसल खराब हो गई।

पानी फेरना, फेर देना—बात बिगाड़ देना, बना काम बिगाड़ना, चौपट कर देना।

पानी बचाना—इज्जत बचाना। आपने मेरा ऐन मौक़े पर पानी बचा लिया भगवान भला करे।

पानी बाँधना—(१) बहाव रोकना। (२) जादू से जलस्तम्भ करना।

पानी बुझाना—ईंट, लोहा आदि गरम करके पानी में डालना। पानी तबीब दे है हमें क्या बुझा हुआ, है दिल ही जिन्दगी से हमारा बुझा हुआ।

पानी भरना (किसी के सामने)—(१) शर्मिन्दा या वश में होना। उनकी बुद्धि के आगे अंग्रेज़ पानी भरते हैं। (२) पानी खींचना। (३) फोड़े में पानी भरना।

पानी भरी खाल—अनित्य शरीर। तुलसी को भलो पै तुम्हारे ही किए कृपाल कीजे न विलंब बलि पानी भरी खाल है।

पानी मरना—(१) सूखना। (२) दोषी सिद्ध होना। मामले में तुम्हारे सिर पानी मरता है। (३) पानी चुराना, नीव में पानी चुराना। नीव में पानी मरता है दिवार गिर पड़ेगी। (**किसी के सिर पानी मरना**) किसी का दोषी सिद्ध होना।

पानी में आग लगना, लगाना—(१) असंभव का संभव होना, करना। उनके परिश्रम ने पानी में आग लगा दी। (२) बिना कारण झगड़ा उठना, खड़ा करना। क्यों पानी में आग लगाते हो दोनों का नाश होगा तुम्हें क्या मिलेगा।

पानी में फेंकना, बहाना—खराब कर देना, खो देना। सैकड़ों रुपये पानी में बहाये तब जीते।

पानी रखना—इज्जत बचाना।

पानी लगना—(१) पानी जमना। (२) ठंढक से दाँतों में टीस होना। (३) किसी जगह के गुण से शरारत सूझना। (४) कहीं रहने से स्वास्थ्य बिगड़ना। (५) संग-साथ का असर पड़ना। दिल्ली का पानी लग गया लड़का चंट हो गया है।

पानी लेना—(१) इज्जत खराब करना। (२) पानी ले कर जाना।

पानी सर से ऊँचा हो जाना—झगड़ा वश से बाहर हो जाना या बढ़ जाना। अब कुछ फैसला नहीं पानी सर से ऊँचा हो गया है।

पानी से पतला—(१) तुच्छ। (२) बहुत बदनाम। (३) अति सरल। यह काम मेरे लिये पानी से भी पतला है।

पानी से पहिले पुल बाँधना—फिजूल मेहनत करना, कष्ट उठाना।

पानी होकर बह जाना—बरबाद हो जाना।

पानी होना—(१) गल कर द्रव होना। बरसात में बंद नमक भी पानी हो गया। (२) क्रोध उतर जाना। मुझे देखते ही वह पानी हो गये। (३) धीमा, मंद पड़ जाना।

नोटः—पानी के साथ कच्चा, पक्का, भारी, हलका, भभके का, आदि विशेषण लगाते हैं, जिनके अर्थ अति सरल हैं।

पाप उदय होना—(१) पुराने पापों का फल मिलना। भयंकर रोग के बहाने पाप उदय हुए हैं। (२) दुख मिलना।

पाप कमाना, बटोरना—बहुत पाप करना। जन्म भर पाप बटोरे एक तो पुण्य कर दें।

पाप कटना—(१) दुख दाई वस्तु या दुख दूर होना। (२) झगड़ा, जंजाल हटना।

पाप काटना—(१) पाप से छुड़ाना। (२) जंजाल हटाना। तुमने ही यह पाप काटा। मैं चाहता था कि उसका पाप कटे मैं दुखी था, अतः सम्बन्ध तोड़ा।

पाप की गठरी (पोट) सिर पर रखना—बहुत पापी होना।

पाप गले पड़ना या पीछे लगना—बिना इच्छा बाधा झंझट सिर पड़ना।

पाप पड़ना—कठिन होना, शक्ति से बाहर होना। सहिबे को ग्रीषम दिननु परयौ परौसिन पाप।

पाप बिसाना—बवाल में पड़ना।

पाप मोल लेना—जानबूझ कर जंजाल में फँसना। वायदा करके तो मैंने पाप मोल ले लिया। नटखट लड़के को नौकर रख कर पाप बिसा लिया।

पाप लगना—पाप, दोष होना। दुख देने से पाप लगता है।

पापड़ बहुत बेलना—दे० बहुत पापड़ बेलना।

पापड़ बेलना—बहुत दुख, मेहनत पड़ना। बड़े पापड़ बेल कर यह काम कर पाया हूँ।

पापी कुआँ—जिस कुए में कई आदमी गिर कर मर गये हों।

पापोश पर मारना, पापोश के बराबर समझना—(क्रमशः) ठुकराना, तुच्छ समझना।

पाबंद करना—नौकर रखना, रोकना। उसे पाबंद कर लो उसका घोड़ा भी फिर अपने ही यहाँ आयेगा।

पाबंदी होना—बंधन, नौकरी। मैं सिर्फ़ ८ घंटे का पाबन्द हूँ फिर कुछ भी करूँ तुम्हें क्या?

पार उतर जाना—दे० पार उतरना १, २, ३, ४,। (५) काम साध कर अलग होना। तुम तो ले देकर पार उतर गये बेचारा गरीब फँस गया।

पार उतरना—(१) उस पार पहुँचना। (२) काम पूरा करना। छः महीने की भगदौड़ के बाद मुकदमे के पार उतरे। (३) सफलता मिलना। (४) मर मिटना

(स्त्री) मैं तो इस दुख से पार उतरूँ भगवान करे।

पार उतारना—(१) उद्धारना। रघुबर पार उतारिए अपनी ओर निहारि। (२) ठिकाने लगाना, मारना। (३) दूसरे किनारे लगाना। (४) पूरा कर देना।

पार करना—(१) दे० पार उतरना, उतारना। (२) दुर्गम मार्ग तै करना। खैबर पार करना कठिन है।

पार पाना—(१) अन्त तक पहुँचना। (२) जीतना। बड़ा चालाक है उससे पार न पा सकोगे।

पार बसाना—बस चलना, संभव होना। जब (जहाँ) तक पार बसावे झूठ न बोलो।

पार लगना—(१) उस पार होना। (२) काम पूरा होना। (३) निर्वाह होना। ऐसे ही आलसी रहे तो कैसे (जीवन बेड़ा) पार लगेगा? (४) काम होना। तुम्हारा काम हम से पार न लगेगा।

पार लगाना—(१) उद्धार करना हरि मोरी नैया पार लगाओ। (२) पूरा करना। (३) दूसरे किनारे लगाना। (४) निर्वाह करना।

पार हो जाना—(१) तैर कर पार होना। (२) छुटकारा पाना। (३) अपना काम करके अलग हो जाना। वह तो काम बना कर पार हुए मैं अकेला रह गया।

पार होना—(१) मतलब निकाल कर दूर होना। काम बने या न बने वह तो रिश्वत लेकर पार हुआ। (२) अलग हो जाना। घाटा देखा तो हिस्सा ले मैं तो पार हुआ। (३) दूसरे किनारे पहुँचना। मशक पर बैठ हुमायूँ पार हुआ। (४) दूसरी ओर निकलना। कटार कलेजे के पार हो गई। (५) काम पूरा कर चुकना। लड़की ब्याह के बाप बेटी दोनों पार हुए।

पारा उतरना उतारना—क्रोध दूर होना, करना। दो थप्पड़ों में पारा उतर जायगा।

पारा चढ़ना, तेज़ होना—क्रोध आना।

पारा पारा करना—टुकड़े टुकड़े करना।

पारा पिलाना—(१) वजनी बनाना। (२) पारा भरना।

पारा भरा होना—बहुत भारी होना। संदूक में क्या पारा भरा है? बड़ा वजन है।

पाल डालना—अधपके फलों को फूस-अनाज में पकने के लिये दबाना। पाल डाले आम हैं।

पाला जीतना—पक्ष जीतना। उन्होंने पाला जीत लिया कबड्डी में तुम हारे।

पाला पड़ना—(१) काम, वास्ता पड़ना। बड़े नीच से पाला पड़ा, तंग कर डाला। (२) वश में आना। (३) विवाह हो जाना। अच्छे के पाले पड़ी जो रोटी भी न दे। (४) बर्फ़ गिरना। (५) नाश हो जाना। सारी उम्मीदों पर पाला पड़ गया।

पाला मार जाना, मारना—पाला, बर्फ़ पड़ने से फ़सल नष्ट होना।

पाले पड़ना—वश में आना। परेहु कठिन रावण के पाले।

पाँव अड़ाना—व्यर्थ बीच में पड़ना, विघ्न डालना। हमारी उनकी बातें हैं तुम क्यों पाँव अड़ाते हो।

पाँव आगे बढ़ाना—हद से बाहर होना। पाँव आगे बढ़ाया तो जान गई समझो।

पाँव उखड़ जाना, उठ जाना—(१) पैर न जमना। अधिक गहरा पानी था पाँव उखड़ गये। (२) उच्चता से गिरना। थोड़े दिनों तो समाज में उनकी धूम रही फिर पाँव उखड़ गये, पूरी योग्यता न थी। (३) विचार बदल जाना। ज्यों ज्यों किया कठिन होता गया अंत में पाँव उखड़ गये। (४) लड़ाई में ठहर न सकना। इस बार की लड़ाई में मुग़लों के पाँव उखड़ गये, वे बुरी तरह हारे।

पाँव उखाड़ना—(१) हरा कर भगा देना। सिखों ने पठानों के पाँव उखाड़ दिये। (२) बात पर ठहरने न देना।

पाँव उठा कर चलना—जल्दी चलना। पाँव उठा कर चलो यों पैर घिसते हुए न पहुँचोगे।

पाँव उठाना—(१) जाने लगना। उन्होंने पाँव उठाया ही था कि मैं पहुँच गया। (२) जल्दी जल्दी चलना। जरा पाँव उठाओ सुस्त मत चलो।

पाँव उड़ाना—(१) दुश्मन के आघात से पैर बचाना। (२) पैर काट देना।

पाँव उतरना—(१) पैर का जोड़, गट्टा उखड़ना। (२) पैर समाना। छत में पैर उतर गया सारी पोली थी।

पाँव कट जाना—(१) संसार से उठ जाना। आज यहाँ से उसके पाँव कट गये, बेचारा बुरी मौत मरा। (२) अन्न जल उठना। (३) आना जाना बंद होना। मैंने उस घर से उनके पाँव ही काट दिये, बहू बेटी का खतरा था।

पाँव काँपना—काम के विचार से डर लगना। अफ़सर के घर जाने में पाँव काँपते हैं।

पाँव का खटका—चलने की आहट, शब्द। पाँव का खटका पाते ही कमरे में सब सँभल गए।

पाँव की जूती—तुच्छ सेवक। मैं तो उसे पाँव की जूती समझता हूँ।

पाँव की जूती सिर को लगाना—नीच का सिर चढ़ना, छोटे का बड़े के सामने पड़ना।

पाँव की ठुकराई का सर पर चढ़ना—दे० उपर का मु०।

पाँव की मेंहदी न घिस जायगी—कुछ हानि न होगी, जाने में पैर मैले न होंगे।

पाँव खींचना—न जाना, न घूमना। अब तो व्यर्थ घूमने से पाँव खींचो।

पाँव गाड़ना—(१) जम कर खड़ा होना, ठहरना, लड़ना। (२) बात पर स्थिर रहना। जो कह दो पाँव गाड़ कर करो, वरना बदनामी होगी।

पाँव गोर में लटकाना—मरने वाला होना।

पाँव घिसना—चलते चलते थकना। क्यों बार बार जाकर पाँव घिसते हो वह रुपये न देगा।

पाँव चप्पी करना, चूमना—पूजा, मान करना, खुशामद करना। तुम्हीं पाँव चूमो मुझे गर्ज़ नहीं।

पाँव चलना—दे० पाँव उठाना।

पाँव चप्पी करना—खुशामद करना, पाँव दबाना।

पाँव छुटाना—पीछा छुटाना।

पाँव छूटना—रजस्वला होना।

पाँव छोड़ना—रुका मासिक धर्म कराना।

पाँव जमना, जमाना—(१) न हटना, खड़ा रहना। (२) स्थिर हो जाना। अभी से उसे हटाने की कोशिश करो पाँव जम गये तो कुछ न कर सकोगे।

पाँव जमीन पर न रखना—(१) घमंड करना। (२) खुशी से उछलना।

पाँव जोड़ना—झूले में दो आदमियों का रस्सी में पैर उलझाना, पाग या पैंग जोड़ना।

पाँव टिकना, टिकाना—(१) खड़ा होना। पानी गहरा है पाँव नहीं टिकते। (२) विराम करना।

पाँव टूटना—चलते चलते थकना, हैरान होना। चलते चलते पाँव टूट गये हुक्के का दुख पाया।

पाँव ठहरना—(१) पैर न जमना। बहाव जोर पर है पाँव नहीं ठहरते। (२) स्थिरता होना। किसी नौकरी पर पाँव भी ठहरे?

पाँव डगमगाना—(१) लड़खड़ाना, पैर ठीक न पड़ना। लक्ष्मण झूले पर हवा में पाँव डगमगाते थे। (२) दृढ़ न रहना।

पाँव डालना—काम में पड़ना। इस व्यापार में पाँव डाला और फँसे।

पाँव डिगना—फिसलना स्थिर न

रहना। सत्य से पाँव डिगे और विश्वास गया।

पाँव तले की चींटी—दीन जीव। आप लखपती हैं मैं मजदूर तो पाँव तले की चींटी हूँ।

पाँव तले की धरती सर की जाती है—मर्म भेदी दुख से धरती कंपी जाती है।

पाँव तले की मट्टी निकल जाना—सन हो जाना, स्तब्ध हो जाना, होश उड़ना। शेर को देखते ही पाँव तले··· ।

पाँव तले मलना—बहुत तंग, पामाल करना, रौंदना।

पाँव तोड़ना—(१) हिम्मत हराना। काम की भयंकरता दिखा-कर मेरे पाँव तोड़ दिये। (२) बहुत दौड़ धूप करना। सारे बाज़ार में पाँव तोड़े मुझे तो मिला नहीं। (३) तंग करना।

पाँव तोड़ कर बैठना—(१) अचल होना, भारत में गुलामी पाँव तोड़ कर बैठी है। (२) हार कर बैठना। सैकड़ों बार गये नहीं मिला अंत में पाँव तोड़ कर बैठना पड़ा।

पाँव थरथराना—साहस, हिम्मत न होना। आगे आगे तुम चलो मेरे तो पाँव थरथराते हैं।

पाँव दबना—बेबस होना। क्या करें पाँव दबा था वरना मैं बेइज्ज़ती क्यों सहता।

पाँव दबाना, दाबना—(१) पाँव पलोटना, हाथ से दबाव डालना। (२) सेवा करना। उनके पाँव दबाओ दो शंका समाधान करें।

पाँव धरती पर न रखना—(१) इतराना, बहुत घमंड होना। (२) फूला न समाना। जब से मैनेजर हुए हैं धरती पर पाँव नहीं रखते।

पाँव धरती पर न रहना—(१) घमंड होना। (२) बहुत खुश होना।

पाँव धरना—(१) पधारना। (२) (काम में) आगे होना। आप पाँव धरिये हम पीछे चलेंगे। (३) (किसी का) पैर छूकर प्रणाम करना, विनती करना, हा हा खाना। (४) शुरू करना। ऐसे काम में पाँव भी मत धरो।

पाँव धो धोकर पीना—(१) इज्जत करना, पूजा-सेवा करना। गुरु के पाँव धोकर पियो विद्या आ जायगी। (२) खुशामद करना।

पाँव न धुलाना—नीच समझना।

पाँव न होना—साहस, दृढ़ता न होना। झूठ के पाँव नहीं होते।

पाँव निकलना—बदचाल-चलन की बात फैलना। बहू-बेटी के पाँव निकले और घर डूबा।

पाँव निकालना—(१) इतरा कर

चलना। (२) बेकहा होना। अब वह आज्ञा नहीं मानता उसने पाँव निकाल लिये हैं। (३) व्यभिचार करना। (४) सीमा से बाहर होना। (५) वापिस ले लेना। कम्पनी डूबती देखी तो हमने तो पाँव निकाल लिये एक पैसा नुकसान न हुआ। (६) चालाक होना। पहिले बड़ा सीधा था अब बाप के बाद पाँव निकाले हैं। (७) (किसी काम से) अलग होना। मैंने तो उस जंजाल से पाँव निकाल लिया।

पाँव पकड़ना—(१) विनती करना। (२) सिर झुकाना। (३) आदर से आग्रह करना। पाँव भी पकड़े पर दया न आई।

पाँव पखारना—पैर धोना।

पाँव पड़ना
पाँव पर गिरना } (१) पैरों पर सिर धरना। (२) बड़ी दीनता से विनय करना। मैं तुम्हारे पाँव पड़ूँ मुझ को क्षमा करो।

पाँव पर पाँव रख कर बैठना, सोना—(१) लापरवाह, असावधान होना। पाँव पर पाँव धरे बैठे हो पता है बाहर क्या हो रहा है? (२) बिना काम के आराम से बैठना। तुम्हें तो यों ही १००) मिल जायँगे पाँव...।

पाँव पर पाँव रखना—अनुसरण, नकल करना। पुत्र पिता के पाँव पर पाँव रखता है।

पाँव पर सिर झुकाना
पाँव पर सिर रखना }
गिड़गिड़ाना, प्रार्थना करना। लाख पाँव पर सिर रखो मैं न छोड़ूँगा।

पाँव पसारना—(१) ठाठ बाट या आडम्बर बढ़ाना। हैसियत से आगे पाँव पसारे और दिवाला निकला। (२) पैर फैलाना। (३) आराम से सोना। (४) मरना। बुढ़िया ने कल रात ८ बजे पाँव पसार दिये।

पाँव पाँव चलना—पैदल चलना।

पाँव पीटना—(१) घोर प्रयत्न करना। बहुत पाँव पीटे पर एक न चली। (२) मृत्यु का दुख भोगना, छटपटाना। बेचारा पाँव पीट पीट कर मर गया पानी भी न मिला।

पाँव पीट पीट कर मरना—बहुत दुख झेल कर मरना।

पाँव पूजना—(१) वर का पूजन करना। (२) बहुत पूज्य मानना। हम तो उनके पाँव पूजते हैं उन्हीं के चेले हैं।

पाँव फसना—झंझट में पड़ना।

पाँव फिसलना—रपटना। काई पर पाँव फिसला और गिरे।

पाँव फूँक फूँक कर रखना—भय व सावधानी से चलना। एक

बार नुकसान उठा लिया अब पाँव फूँक फूँक कर रखते हैं।

पाँव फूलना—(१) थक जाना। (२) डर से व्याकुल होना। आग लगी सुनते ही पाँव फूल गये पहुँचना भारी हो गया।

पाँव फेरने जाना—(१) नाश करने जाना। 'तुम तो पाँव फेरने गये थे बना बनाया नाश कर आये। (२) प्रसव के बाद मायके जाना।

पाँव फैला कर सोना—निश्चिन्त, बेखटके रहना।

पाँव फैलाना—(१) आग्रह करना। (२) अधिक पाने की इच्छा करना। इतने रुपये मिल चुके अधिक पाँव मत फैलाओ।

पाँव बढ़ाना—(१) आगे बढ़ना। पाँव बढ़ाओ खा थोड़े ही जायगा। (२) जल्दी चलना। (३) अधिकार शक्ति बढ़ाना। दिल्ली के पाँव बढ़ गये हैं।

पाँव बाहर निकालना—(१) दे० पाँव निकालना। (२) बढ़कर चलना। योग्यता से बाहर पाँव न निकालो।

पाँव बिचलना—(१) पैर रपटना, फिसलना। पाँव बिचला और गये खड्ड में। (२) ईमान, सत्यता डिगना। दुख में पाँव न बिचले। (३) पक्कापन न रहना।

पाँव बीच में होना—जिम्मेदार होना। मेरा पाँव बीच में है अतः जमानत दे दी है।

पाँव बीच से निकाल लेना—वास्ता न रखना, अपना जिम्मा उठा लेना।

पाँव भर जाना—पैर थकना, थकावट से पैर बोझ से दिखना।

पाँव भारी होना—(१) गर्भवती होना। (२) आगमन बुरा होना। बहू का पाँव भारी है जब से आई घर बिगड़ता ही गया।

पाँव भी न धुलवाना — तुच्छ सेवा योग्य भी न समझना।

पाँव मुरीद—अति आज्ञाकारी। वह तो स्त्री का ऐसा पाँव मुरीद है कि उससे बिना पूछे कुछ नहीं करता।

पाँव में क्या मेंहदी लगी है—ऐसे क्या मेंहदी लगा कर बैठे हो जो छूटने के डर से नहीं चल सकते (व्यंग्य)।

पाँव में पर लगना—बहुत तेज़ चलना। ऐसे क्या पाँव में पर लगे हैं जो पाँच मिनट में जा पहुँचे।

पाँव में बेड़ी पड़ना—(१) बंधन या चक्कर में फँसना। (२) विवाहित होना, घर का भार सिर पर होना। पाँवों में बेड़ी पड़ी हैं कहीं नहीं आ जा सकते।

पाँव में सनीचर, घनचक्कर होना—मारे फिरने की आदत या भाग्य होना। वह एक जगह नौकरी नहीं कर सकता उसके पाँव में ही सनीचर है।

पाँव में सिर देना—मिन्नत करना।

पाँव रखने का ठिकाना न होना—रहने को जगह न होना। सारी छत चू रही थी पाँव रखने को कहीं ठिकाना न था।

पाँव रगड़ना—(१) घोर यत्न करना (कुछ हाथ न आना)। (२) छटपटाना। पीड़ा बहुत है पाँव रगड़ते रात गुजरी।

पाँव रह जाना—पैर मारे जाना, शक्ति न रहना, थकावट होना। पाँव रह गये हैं जा आ नहीं सकते।

पाँव रोपना—अड़ना, संकल्प करना। पाँव रोप दिया कि लेकर ही जाऊँगा।

पाँव लड़खड़ाना--दे० पाँव काँपना।

पाँव लगना—(१) पैर छूना, प्रणाम करना। (२) विनती करना।

पाँव लगा होना—बहुत बार आना-जाना होना, थोड़ा या सरल होना, आदत होना।

पाँव लेना—पैर छूना, आज्ञा पालना, निवेदन करना।

पाँव समेटना—(१) मरना। (२) व्यर्थ घूमना, छोड़ना। हमने तो पाँव समेट लिये अब कहीं नहीं जाते। (३) लगाव न रखना। हमने पाँव समेटा हम किसी की ओर नहीं। (४) पैर खींचना, सकोड़ना।

पाँव सकोड़ना—पैर फैला न रहने देना।

पाँव से पाँव बाँध कर रखना—(१) पास रखना। (२) चौकसी करना, रखना। अब मैं उसे पाँव से पाँव बाँध कर रखूँगा।

पाँव सोजाना—पैर सुन्न होना, या झन्ना उठना।

पाँव न होना—शक्ति-दृढ़ता न होना, न ठहरना।

पाँव हाथ निकालना—हैसियत से बढ़ कर चलना।

पासंग भी न होना, पासंग बराबर भी न होना—बहुत कम या कुछ भी न होना। वह इनके सामने पासंग भी नहीं।

पास आना या जाना—समागम करना।

पास करना—(१) लिहाज़, रियायत करना। तुमने मेरा ज़रा भी पास नहीं किया। (२) परीक्षा में उत्तीर्ण होना। (३) काम दुरुस्त होना। साहब ने काम पास कर दिया।

पास न फटकना—निकट न

जाना। तुम उसके पास भी न फटक सकोगी।

पास पास—(१) आपस में निकट। (२) लगभग।

पास फटकने न देना—न मिलने देना।

पास बैठना—(१) साथ रहना, करना। भले आदमियों के पास बैठना अच्छा है। (२) पहुँचना। जैसा बोया वैसे पेड़ के पास बैठो। (३) निकट बैठना।

पास बैठने वाला—(१) मुसाहिब। (२) संगत, मेल जोल वाला। पास बैठने वाला भी बड़ा ही आदमी होगा।

पास फटकना—निकट जाना।

पास रहना—(१) संयोग करना। (२) अधिकार में रहना। मेरे पास रह जाओ तो सब सिखा दूँ।

पासा उलटना या पलटना—(१) दाव फिरना। (२) हारना बिगड़ना। काम बनते बनते पासा पलट गया। (३) फल या भाग्य उल्टा होना।

पासा पड़ना—(१) भाग्य अनुकूल होना। जिन्दगी में पासा पड़ गया तो मज़ा चखा ही दूँगा। (२) जीत का दाव पड़ना। एक पासा पड़ा और सौ जीते। (३) अच्छा अवसर मिलना। कोई पासा पड़े तो उनसे कहूँ।

पासा फेंकना—भाग्य की जाँच करना। सौ रुपये का पासा फेंका है देखो शायद कुछ बन जाय।

पिंड छोड़ना—(१) तंग न करना, साथ न लगा रहना, जान बचाना, दूर बचना। (२) सम्बन्ध, या पीछा छोड़ना।

पिंडा अछूता होना, कोरा होना—अक्षत योनि होना।

पिंडा फीका होना—देह गरम, थोड़ा बुखार या तबियत खराब, होना (स्त्री)।

पिचकारी छूटना, निकलना—पतली चीज़ का जोर से निकलना। सिर से लोहू की पिचकारी छूटी।

पिचकारी छोड़ना—द्रव पदार्थ को जोर से निकालना। पान खाकर पीक की पिचकारी छोड़ी।

पिचकारी देना—एनीमा करना।

पिछला दिन—बीता हुआ कल।

पिछाड़ी मारना—(१) लात मारना। (२) पीछे से हमला करना।

पिछला पहर—दोपहर या आधी रात के बाद। पिछले पहर जो नींद खुली तो दीवा बलता ही देखा।

पिछली रात—(१) आधी रात के बाद। (२) गत रात्रि। पिछली रात दिल्ली गुज़ारी आज यहाँ आ गये।

पिछले पाँव फिरना—आते ही चले जाना।

पिटारी का खर्च—(१) पान्दान का खर्च। (२) व्यभिचार की कमाई।

पिट्टना या पिट्टस पड़ना—रोना धोना या हाय हाय होना। वही रुपया था खो गया इसी का तो पिट्टना है।

पिण्डपड़ना—(१) पीछे पड़ना। टोपी उसने फाड़ी पिंड मेरे पड़ते हो। (२) तैयार होना।

पित्त उबलना, खौलना—बहुत क्रोध आना। गाली सुनते ही पित्त उबल गया, और थप्पड़ मार दिया।

पित्त गरम होना—क्रोध बहुत, जल्दी आना। जरा सी बात पर पित्त गर्म हो जाता है।

पित्त डालना—वमन, कै उल्टी होना।

पित्तर पानी पड़ना--होश न रहना।

पित्ता उबलना, खौलना—बहुत गुस्सा आना। तुम्हारी बातें सुनकर मेरा पित्ता खौल उठता है।

पित्ता निकालना—(१) बहुत काम कराना, सताना। सारे दिन घुमा के पित्ता निकाल लेता है। (२) डाँटना। इतना तो काम कर दिया फिर भी पित्ता निकालते हो।

पित्ता पानी करना, होना—काम करते करते पानी पानी हो जाना। दिन भर के काम से पित्ता पानी हो जाता है।

पित्ता पानी पड़ना—किसी की हानि से दिल में ठंडक पड़ना। वह मर गया अब तो पित्ते पानी पड़ा न?

पित्ता मारना—(१) कठिन काम से न ऊबना। बड़ा पित्ता मारो तो यह काम होवे। (२) गुस्सा न रहना, दबा जाना। बुढ़ापे में पित्ता मार के बैठ रहना पड़ता है।

पित्ता मार काम—(१) मन मार कर किया जाने वाला काम। (२) हमेशा बैठे का काम।

पित्ते ले डालना—तंग कर देना।

पिये हुए होना—शराब के नशे में होना।

पिनाक होना—(किसी काम का) अति कठिन होना।

पिल पड़ना—लग जाना। काम में पिल पड़ा तो हो ही गया।

पिलाना, पिला देना—बात कानों में या जी में भर देना।

पिस जाना—(१) शरमिन्दा होना। (२) बरबाद होना या मुसीबत झेलना। (३) आशिक हो जाना।

पिसान होना—दब कर चूर होना। कनस्तर के नीचे चूहा पिसान हो गया।

पीं बोलना—बोझ से दब कर आवाज़ निकलना।

पीछा करना—(१) भगाना, खदेड़ना। पुलिस ने चोरों का दो मील तक पीछा किया। (२) साथ लगे रहना। (३) दिक़, तंग करना। इतना पीछा मत करो दुखी होकर मना न कर दे।

पीछा छुड़ाना—(१) संबन्ध तोड़ना। हमने तो अब उनसे पीछा छुड़ा लिया। (२) छुटकारा पाना। बिना करण बताये पीछा नहीं छुड़ा सकते।

पीछा छूटना—(१) संबन्ध या दुख देने वाली वस्तु का अंत होना। मरा तो तकलीफ़ से तो पीछा छूटा। (२) छुटकारा मिलना। बिमारी से पीछा छूटे तो काम करूँ।

पीछा छोड़ना—(१) दिक़ या तंग करना बंद करना। (२) साथ, सहारा संबन्ध छोड़ना। (३) देर के कारण छोड़ देना।

पीछा दिखाना—(१) हार कर भाग जाना। दो घंटे की लड़ाई में पीछा दिखा गये। (२) मुकरना। तब तो बढ़ बढ़ कर कह रहे थे उनके सामने पीछा दिखा गये। (३) धोखा देना। ऐन मौक़े पर ऐसा पीछा छुटाया कि विश्वास उठ गया।

पीछा देना—(१) पीछे पीछे जाना। (२) मनै कर जाना, भरोसा देकर सहायता न देना।

पीछा पकड़ना—(१) साथी बनना, बनाना। चालाक का पीछा पकड़ो तो चालाक बनो। (२) सहारा बनाना। बड़े आदमी का पीछा पकड़ो तो इज्ज़त होगी।

पीछा भारी होना—(१) बाद में दुख उठाना। (२) पीछे से घेरना। शत्रु आगे बढ़ रहा था पीछा भारी देखा तो लौट पड़ा। (३) अच्छी सहायता होना। राय साहब मित्र हैं अतः उनका पीछा भारी है।

पीछे चलना नकल करना, नेता या गुरु मानना। सैकड़ों लोग गाँधी जी के पीछे चल रहे हैं।

पीछे छूटना—(१) भेद लेने के लिये जासूस लगाना। कई आदमी उनके पीछे छूटे हैं कि उनके चाल चलन की रिपोर्ट दें। (२) रास्ते में पीछे रह जाना। (३) भागे हुए आदमी को पकड़ने को नियुक्त होना। (४) किसी विषय में घट जाना।

पीछे छोड़ना (किसी को)—आगे बढ़ जाना, अधिक होना। आज का विज्ञान पुरानी खोजों को पीछे छोड़ गया है।

पीछे छोड़ना, भेजना—(१) पकड़ने के लिये दौड़ाना, भेजना। (२) भेदिये लगाना।

पीछे डालना—(१) पीछा करना। चोर के पीछे घोड़ा डाल दिया।

(२) थोड़ा थोड़ा बचा कर जमा करना। बुरे वक्त के लिये जरूर कुछ न कुछ पीछे छोड़ना चाहिये।

पीछे डालना (धन)—रुपया बचाना। कमाई में से कुछ कुछ पीछे डालो जो बुढ़ापे में काम आवे।

पीछे दौड़ाना—(१) जाते हुए को लौटाने के लिये भेजना। नौकर को पीछे दौड़ाया तब आये (२) भागे हुए को पकड़ने के लिये आदमी दौड़ाना।

पीछे पड़ना (व्यक्ति के)—(१) बार बार कहना। पीछे पड़ोगे तो कुछ करा लोगे। (२) मौक़े मौक़े पर बुराई करते ही रहना। तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो बेचारे के पीछे पड़े हो।

पीछे पड़ना (काम के)—करने पर तुल जाना। जो वह इस काम के पीछे पड़ गया तो करके ही दम लेगा।

पीछे पड़ा रहना—(१) कहते रहना। (२) तंग करते रहना। पीछे पड़े रहोगे तो यह मर जायगा।

पीछे लगना—(१) नकल, अनुकरण करना। भले के पीछे लगो जो भला सीखो। (२) बुरे से संबन्ध होना। हमारे तो यह रोग पीछे लगा है वरना हम तो कर देते। (३) किसी मतलब से साथ साथ घूमना। पीछे लगे रहोगे तो दया आ जायगी।

पीछे लगाना (अपने)—(१) सहारा देना, साथ कर लेना। कई संबन्धियों को अपने पीछे लगा लिया वे सुख से रहते हैं। (२) रोग आदि अकारण होना। बहुत दिनों तक होना। क्यों यह आफ़त पीछे लगा ली?

पीछे लगाना (दूसरे के)—(१) साथ लगाना, मत्थे मढ़ना। आप तो निकल गये और मेरे पीछे आफ़त लगा दी। (२) लगाना, भेजना। आदमी पीछे लगा दो पता तो चले ये कहाँ जाते हैं।

पी जाना—चुप्पी लगाना, तरह दे जाना, सह जाना, दर गुजर करना। उस समय तो मैं पी गया मौके पर बदला लिया।

पीटना (बात को)—पश्चात्ताप या हाय हाय करना। सोच कर कहते तो अब क्यों पीटना पड़ता।

पीटना (व्यक्ति को)—मरने पर सिर धुनना।

पीठ का—दे० पीठ पर का।

पीठ का कच्चा, सच्चा—(१) सवारी में दुख या सुखदायी घोड़ा। (२) उम्र में छोटा या पक्का घोड़ा।

पीठ की खाल या पीठ उधेड़ना—पीठ पर खूब मार लगाना। कल

स्त्री की पीठ की खाल उधेड़ दी निशान पड़े हैं।

पीठ खाली होना—सहारा, सहायक न होना। अगर मेरी पीठ खाली न होती तो क्या मुझे वह पीट देता?

पीठ चारपाई से लग जाना—उठ बैठ न सकना। बीमारी के कारण पीठ चारपाई से लग गई है।

पीठ ठोंकना—(१) शाबासी देना, बड़ाई करना। (२) हिम्मत बढ़ाना। (३) प्यार जताना। कुत्ते की पीठ ठोकी वह मुँह चाटने आया।

पीठ तोड़ना–दिल तोड़ना, हिम्मत तोड़ना। बच्चे की पीठ मत तोड़ो जितना चाहे पढ़ने दो मैं खर्च दूँगा।

पीठ दिखा कर जाना—प्रेम, मोह छोड़ जाना। जैसे पींठ दिखा कर जाते हो वैसे ही शीघ्र मुख भी दिखाना।

पीठ दिखाना–दे० पीछा दिखाना।

पीठ देना—(१) जाना, विदा होना, मुँह मोड़ना। पिता जी ने पीठ दी और हमने ऊधम मचाना शुरू किया। (२) भाग जाना। शत्रु पीठ दे गया लड़ाई में जम न सका। (३) साथ न देना। ऐसे मौक़े पर पीठ दोगे तो क्या मित्रता? (४) सो जाना, लेटना।

पीठ देना—(किसी की ओर) (१) मुँह फेरना। मेरी ओर से पीठ देकर खाना खाती है। (२) लापरवाही, उपेक्षा, घृणा, नापसंदगी दिखाना। बदसूरती देख कर मैंने तो पीठ दी।

पीठ पर—बाद, एक ही माता द्वारा जन्म क्रम में पीछे। इस लड़के की पीठ पर लड़की थी वह मर गई।

पीठ पर की–एक के बाद दूसरी। एक दूसरे के पीठ पर की सात सन्तानें हैं।

पीठ पर खाना—भागते हुए पीछे मार खाना। कहो साहब पीठ पर खाई उनसे न जीत सके न?

पीठ पर हाथ फेरना—दे० पीठ ठोकना।

पीठ पर होना—(१) सहायक, सहारा होना। पीठ पर कोई होता तो मैं क्यों दुख से यों भटकता। (२) बड़े से छोटे होना। मेरी पीठ पर लड़की हुई थी वह मर गई।

पीठ पीछे—अनुपस्थिति, परोक्ष में। पीठ पीछे बुराई मत करो।

पीठ फेरना—(१) चले जाना, भाग जाना। क्लेश से दुखी होकर घर से ही पीठ फेर ली। (२) मुँह

फेरना, इच्छा न दिखाना। जब पूछा पसंद है ? तो पीठ फेर ली।

पीठ फोड़ डालना—बहुत पीटना। सारी पीठ फोड़ डाली खूनम खून हो रही है।

पीठ लगना—(१) लेटना, पड़े ही रहना। बीमारी के कारण छः महीने पीठ लगी रही। (२) चित्त होना, पछाड़े जाना। ऐसा पछाड़ा कि ज़मीन से पीठ लगी। (३) पीठ पर घाव होना। घोड़े की पीठ लग गई है।

पीठ लगाना—(१) कुश्ती में पछाड़ना। (२) घोड़े या बैल को ऐसा कस कर लादना कि पीठ में घाव हो जाय।

पीनक में आना—(१) अफ़ीमची का नशे में ऊँघना। (२) ऊँघना (व्यंग्य) क्यों क्या पीनक में आ गये या सुन रहे हो ?

पीर न आना—किसी के दुख से दुखी न होना। अमीरों को गरीबों की पीर नहीं आती।

पीला पड़ना, होना—(१) रंग, लाली न रहना (शरीर में)। बेचारा बिमारी से पीला पड़ गया है। (२) भय से चेहरा सफ़ेद होना। मेरी शक्ल देखते वह पीला पड़ गया।

पीली फटना—पौ फटना, उषा होना। पीली फटते तक दस मील पहुँचेंगे।

पीलू पड़ना—कीड़े पैदा होना। अमरूद में पीलू पड़ गये हैं।

पीस कर पी जाना—नष्ट-भ्रष्ट, बरबाद कर देना। राक्षस हूँ तुझे तो पीस कर पी जाऊँ।

पीस डालना—(१) नाश कर देना। (२) अति कष्ट देना, सताना पतिव्रता को पीस डालो आह न करेगी।

पीसना पीसना—(१) बहुत मेहनत करते जाना। विधवा माँ पीसना पीस कर पालती है। (२) क्या पीसना पीस रहे हो जल्दी करो न ?

पुकार पड़ी होना—धूम होना, माँग होना। इस दवाई की बड़ी पुकार पड़ी है सारा जलसा माँगता है।

पुचारा फेरना—(१) नाश करना। उसने सारे धन पर पुचारा फेर दिया। (२) बहकाना। उस बेवकूफ़ पर बुचारा फेरो तो रुपये ऐंठो।

पुचारे में आ जाना—धोके में आ जाना। उस नीच के पुचारे में आकर कई हज़ार बिगाड़े।

पुजापा फैलाना—(१) बखेड़ा, आडम्बर करना। (२) बिना क्रम के वस्तु फैला रखना।

पुटकी पड़ना—विपत्ति या मृत्यु आना (स्त्री का शाप)।

पुट्ठे पर हाथ न रखने देना—(१) सवार को पास न आने देना। (घोड़ा)। (२) छूने न देना। बहुत होशियार लड़की है पुट्ठे पर हाथ नहीं रखने देती।

पुतला बाँधना—बदनामी करना। साइमन कमीशन का भारत में पुतला बाँधा गया।

पुतलियाँ फिरना—(१) घमंड करना। (२) मर जाना।

पुतलियों में घर करना—आँखों में बसना। प्यारे तुमने तो मेरी पुतलियों में घर किया है, कहाँ जाते हो।

पुतली का तारा—दे० आँखों का तारा।

पुतली फिर जाना—(१) आँख का ढेला फिर जाना (मरने का चिन्ह) (२) घमंड होना। बड़ा होते ही जब वह कमाने लगा पुतलिएँ फिर गईं।

पुनि पुनि—बार बार।

पुरखे तर जाना—पुरुषाओं को उत्तम गति मिलना, कृतकृत्य होना। महात्मा घर पधारे तो पुरखे तर गये।

पुरज़े निकालना—(१) हद से बढ़ना। अब तो उन्होंने भी पर पुरज़े निकाले हैं खुदा खैर करे। (२) पुराने काग़ज़ खोजना।

पुरज़े पुरज़े उड़ाना, करना—टुकड़े टुकड़े करना, धज्जियाँ धज्जियाँ करना। बदमाश तेरे पुरज़े पुरज़े उड़ा दूँगा नहीं तो बता दे।

पुरज़े पुरज़े होना—टुकड़े टुकड़े होना, धज्जियाँ होना। सारा का सारा पुरज़े पुरज़े हो गया।

पुरवट नाधना—चरस की रस्सी में बैल जोतना। पुरवट नाधा ही था कि बैल खिंचे और कुएँ का आदमी कुएँ में गिरा।

पुरवट हाँकना—पुर खींचने वाले बैलों को चलाना। पुरवट हाँकते हुए किसान बैलों को नहची में ले जाता है।

पुरवना (बल)—शक्ति, सामर्थ्य पूरी लगाना, होना। बल पुरवो तो खिंचे।

पुरवना (साथ)—साथ देना। पुरवहु साथ तुम्हार बड़ाई।

पुराना खुर्रांट,-पुरानी खोपड़ी—बहुत अनुभवी। पुराना खुर्रांट है लड़कों की बातों में नहीं आ सकता।

पुरानी लकीर पीटना — पुराने नियमों का अंध भक्त होना। भारतीय पुरानी लकीर पीटते आ रहे हैं।

पुराना घाघ— चालाक बुड्ढा,

अनुभवी। वह पुराना घाघ है सब रास्ते जानता है।

पुल टूटना—(१) पुल गिर पड़ना। (२) भीड़ होना। महात्मा जी के दर्शन के लिये मनुष्यों का पुल टूट पड़ा।

पुल बाँधना—(१) ढेर लगाना। (२) बहुत बढ़ाकर कहना। उसने तो बड़ाई के पुल बाँध दिये। (३) सीमा बनाना। पुल बाँध दिया कि इससे आगे न करो।

पुराना धुराना होना—निकम्मा, खराब होना। पुराना धुराना कपड़ा हो तो दे दो।

पूँछ पकड़ कर चलना—(१) पिछ लग्गू बनना (व्यंग्य)। हर बात में अमीरों की पूँछ पकड़ कर चलते हो। (२) सहारा लेना, निर्भर होना। क्यों तुम तो उनकी पूँछ पकड़ कर चलते हो न? जब वह आवें तब ही चलोगे।

पूछना (बात न)—ध्यान न देना, आदर न करना। स्वागत तो दूर वह तो किसी की बात तक नहीं पूछता।

पूँजी खोना, गँवाना,—घर का रुपया व्यापार में खोना। सारी पूँजी फिल्म खरीदने में खोदी अब विज्ञापन को भी पैसे नहीं।

पूँजीदार, पूँजी वाला—व्यापार में धन देने वाला। दुकान के पूँजीदार तुम बनो काम मैं करूँगा।

पूछ गछ होना—आव भगत, सलाह आदि होना। बुड्ढों की पूछ गछ नहीं हुई वहू मंत्री है न।

पूरा उतरना—(१) अच्छी तरह हो जाना। काम पूरा उतरे तो जान में जान आवे। (२) तोल में ठीक बैठना। (३) पक्की, सच्ची बात होना। तुमने कहा था वही पूरा उतरा, बात ठीक थी।

पूरा पड़ना—(१) पूरा हो जाना, कमी न होना। सेर भर आटे में पूरा पड़ गया गो आदमी छः थे। (२) बाधा न होना। सौ रुपये में भी पूरा पड़ जाय तो बहुत समझो।

पूरा होना—संपन्न, पक्का, दृढ़। यों नंगा-भूखा नहीं पूरा है पर कंजूसी मान मारती है।

पूरी उतरना—जाँच तोल में जैसी कही वैसी ही होना।

पूरे करना—समय बिताना दुखं सुखं। भाई हम तो जिन्दगी के दिन पूरे कर रहे हैं।

पूरे दिनों से होना—बालक होने के दिन होना।

पूरे होना—(दिन) मरने का समय आना। अब उसके दिन पूरे हो गये, मर गया।

पूले तले गुजरान करना—बुरी हालत में झोंपड़ी में दिन काटना।

पैंदे के बल बैठना—(१) हार

मानना। लड़ने को चले थे पर एक ही लाठी में पेंदे के बल बैठे। (२) पालती, पलथी मार कर बैठना।

पेंदे का हलका—ओछा। वह कह देगा पेंदे का हलका है।

पेच उठाना—रंज उठाना। मरने दो तुम क्यों पेंच उठाओ।

पेच काटना, लड़ाना—पतंग की डोरी काटना, लड़ाना।

पेच खाना—दिल दिल में दुखी होना।

पेच खेलना—एक पतंग की डोर दूसरी में काटने को उलझाना।

पेच घुमाना—मन बदल देना, विचार फेरना। मैंने पेच घुमा दिया तो वह एक पैसा दिवाल नहीं।

पेच डालना—(१) फाँसना। (२) बाधा डालना। ऐसे पेच डाले कि पतंग काट दी।

पेच ताव खाना—नाराज़ होना। पेच ताव तो ऐसे खाते हो जैसे हम तुम्हारे बाप के नौकर हैं?

पेच पड़ना—उलझाव में पड़ना। कठिनाई पड़ना। पतंग की डोरी दूसरी में उलझना।

पेच में आना—दे० चक्कर में फँसना।

पेच हाथ में होना—विचार बदल सकना। पेच तो मेरे हाथ है मैं घुमाऊँगा तभी वह आयेगा।

पेट का कुत्ता—रोजी, पेट के लिये सब कुछ करने वाला। पेट का कुत्ता है चार पूरी खिला दो अपना बना लो।

पेट काटना—खाने में से बचाना। पेट काट के इसके पढ़ने का खर्च दिया है।

पेट का धंधा—(१) रोटी बनाने का झंझट। पेट का धंधा करते हैं क्योंकि स्त्री नहीं है। (२) आजीविका निर्वाह मार्ग, मज़दूरी। सब पेट के धंधे हैं कोई मुफ्त नहीं बाँटता।

पेट का पानी न पचना—(१) रह न सकना। बिना सब हाल कहे पेट का पानी नहीं पचता। (२) रहा न जाना।

पेट का पानी न हिलना—कुछ भी कष्ट-परिश्रम न होना। जरा सा काम है इससे तो पेट का…।

पेट का हलका होना—ओछा, कह देने वाला। उससे गुप्त बात मत कहना वह पेट का ओछा है।

पेट की आग—भूख। बिना खाये पेट की आग नहीं बुझती।

पेट की आग बुझाना—भोजन करना।

पेट की खबर न लेना, बात न पूछना—खाने-पीने की न पूछना, न प्रबन्ध करना। दिन भर काम

ही काम भाई ! पेट की भी खबर ली ?

पेट की चोट्टी — गर्भ होने पर लक्षण न दिखें।

पेट की बात — मन की, छिपी बात। पेट की बात स्त्री से भी नहीं कहता।

पेट की मार देना, मारना— भोजन न देना। पेट की मार मारने से शेर भी वश में हो जाता है।

पेट के लिये दौड़ना—गुज़र के लिये श्रम उठाना। पेट के लिये दौड़ते हैं वरना वहाँ कौन जाय।

पेट को धोखा देना—(१) दे० पेट काटना।

पेट को लगना—भूख लगना, खाने की चाह होना। पेट को लगेगी तो खुद कमायेगा।

पेट खलाना—दीनता, भूखा पन दिखाना।

पेट गड़ना, गुड़गुड़ाना — बद-हजमी से पेट में गड़गड़ होना। पेट गुड़गुड़ाता है चूरन खालो।

पेट चलना—दस्त होना। कल से पेट चल रहा है कुछ दवाई दो।

पेट छँटना—पेट की मोटाई, मल या गर्भाशय का मल दूर होना। अब तोंद नहीं है, पेट छँट गया है।

पेट छूटना—दस्त होना।

पेट जलना—(१) जोर की भूख लगना। मेरा पेट जल रहा है खाना जल्दी दो। (२) गुस्सा आना। ऐसी बातें मेरे सामने मत करो मेरा पेट जलता है।

पेट जारी होना—दस्तों की बीमारी होना।

पेट ठंडा रहना — संतान जीवित रहना, बच्चों से सुख मिलना। भगवान करे पेट ठंडा रहे, बच्चे जियें।

पेट गदराना—गर्भ लक्षण होना।

पेट दिखाना—(१) रोग या गर्भ पहचनवाना। (२) भूखापन कहना। पेट दिखा कर रुपये माँगे तब दिये।

पेट देना —दिल की कहना। हर किसी को पेट न दो।

पेट न भरना—इच्छा पूरी न होना। कुछ भी दे दो उसका पेट नहीं भरता।

पेट पकड़ कर भागना—(१) पाखाने की तरफ़ दौड़ना। (२) डर कर भागना।

पेट पकड़े या थामे फिरना—दुखी, तंग या परेशान होना। तुम्हारे पीछे पेट पकड़े फिरते हैं तुम्हें दया नहीं आती।

पेट पतला होना —धन की तंगी, लाचारी या कंजूसी होना।

पेट पाटना—खाने से पेट भरना।

पेट पर पट्टी बाँधना — भूखे रहना। १०) न सही ५) ही सही पेट पर पट्टी तो नहीं बाँधी जा सकती।

पेट पानी होना—(१) पतले दस्त आना। (२) डरना। पुलिस का आना सुनकर पेट पानी हो गया।

पेट पालना—(१) मतलबी होना। वह तो अपना पेट पालता है और का चाहे नाश हो जाय। (२) जैसे तैसे गुज़ारा करना।

पेट पीटना—बेचैन होना। क्यों पेट पीटते हो अभी दे जायगा।

पेट पीठ एक होना पेट पीठ से लगना—(१) भूख से पेट अंदर धस जाना। (२) निर्बल होना। बेचारे का बुरा हाल है पेट पीठ से लगा है

पेट पोंछना—अंतिम संतान।

पेट फटना—(१) हँसते हँसते व्याकुल होना। (२) हसद, रश्क, स्पर्धा होना। (३) अधीर होना। क्यों पेट फटा जाता है दो दिन ठहरो हो जायगा।

पेट फूलना—(१) जलन होना। दाता दे भंडारी का पेट फूटे। (२) जानने पाने के लिये आकुल होना। न बताओगे तो चैन न पड़ेगा पेट फूलने लगेगा।

पेट बढ़ना—(१) बहुत खाना। (२) दूसरों का हड़प लेना।

पेट भर जाना— (१) उकता जाना, घबरा जाना। (२) मालदार हो जाना।

पेट बँधना, बाँधना—आवश्यकता से कम, नियमित भोजन करना, अभ्यास करना।

पेट भरना—(१) खूब खाना। (२) सन्तुष्ट होना। उनका पेट भरो उन्हें मनाओ।

पेट मसोसना—भूखा रहना। पेट मसोस कर पाँच रुपये बचाये थे।

पेट मारना—(१) दे० पेट काटना। (२) आत्महत्या करना। संखिया खाकर पेट मार कर क्यों मरते हो, मेहनत करो।

पेट मार कर मर जाना—आत्महत्या करना।

पेट में घुसना—मतलब के लिये मुहब्बत बढ़ाना, भेद लेना। उसने मेरे पेट में घुस कर धोखा दिया।

पेट में आँत न मुँह में दाँत—बहुत बूढ़ा।

पेट में खल बली पड़ना, पानी होना—चिन्ता, घबराहट होना। यह सुनते ही पेट में पानी हो गया।

पेट में चूहों का दौड़ना, कलाबाजी खाना, फुदकना—भूख या चिन्ता बहुत होना। 'बर्खास्त होगा' सुनते ही पेट में…।

पेट में चींटे की गिरह होना—

बहुत कम खाना। तुम्हारे पेट में तो चींटे की गिरह है एक पूरी में ही पेट भर गया?

पेट में डाढ़ी होना—बच्चे का बहुत बुद्धिमान होना। बड़ा लड़का मूर्ख है छोटे के पेट में डाढ़ी है।

पेट में डालना—(१) खाना, इच्छा न होते खाना। पेट में डाल लिया फिर जाने कब मिलता। (२) भेद न खोलना। अभी यह बात पेट में डालो कहो मत।

पेट में पाँव होना — चाल बाज़ होना। उसके पेट में पाँव है वह जाकर जरूर शिकायत कर देगा।

पेट में पानी न पचना — भेद न छुपा सकना।

पेट में बल पड़ना—हँसी से पेट दुखना। ऐसी हँसी आई कि हँसते हँसते पेट में बल पड़ गये।

पेट में रखना — गुप्त रखना। कहना मत पेट में रखना।

पेट में होना—(१) दिल में इच्छा, विचार होना। मेरे पेट में तो पहिले से ही थी वक्त आते ही कर डाली। (२) पास में होना। तुम्हारी पुस्तक इन्हीं लोगों के पेट में है।

पेट मोटा हो जाना—रिश्वत, घूँस बहुत लेना। पुलिस वालों के पेट मोटे हो जाते हैं।

पेट रहना—गर्भ हो जाना।

पेट लगना, लगजाना—भूख से पेट अन्दर धँस जाना। उपवास करते करते पेट लग गया है।

पेट से पाँव निकालना—(१) ऐंठना, अब तुम भी पेट से पाँव निकालने लगे? (२) बुरे काम करना। पेट से पाँव मत निकालो घर दर बिक जायँगे।

पेट से निकालना — गई चीज़ उगलवाना, वापिस पाना। न मुझसा होता न उनके पेट से निकालता, वह तो हज़म कर चुके थे।

पेट से होना—गर्भवती होना।

पेटा खाली होना—अन्दर कुछ न होना। कहने को लखपती हैं पर पेटा खाली है।

पेटा छोड़ना—उड़ती गुड्डी की डोर का बीच में ढीला होना, झूल जाना।

पेटा तोड़ना—(१) गुड्डी की झूलती डोर तोड़ना। (२) अंदरूनी नुक़सान पहुँचाना। इस चोरी ने पेटा तोड़ लिया पैसा भी पास न रहा।

पेटी उतरना—सिपाही की नौकरी छूटना। दरोग़ा की पेटी उतर गई।

पेटी पड़ना—पेट तोंद बढ़ना।

पेड़ लगना, लगाना—(१) पौधा जमना, जमाना। (२) काम शुरू करना। पेड़ उन्होंने लगाया फल हमने खाये।

पेश आना—(१) होना, सामने आना। ऐसा हादिसा पेश आया कि दंग रह गया। (२) बर्ताव करना। भले आदमी से अच्छी तरह पेश आता है।

पेश करना—(१) भेंट करना। यह छड़ी उसने पेश की थी। (२) दिखाना, सामने रखना। चोरों को हमारे सामने पेश करो।

पेश चलना, जाना — वश या जोर चलना। जहाँ तक मेरी पेश चलेगी बिगड़ने न दूँगा।

पेश पाना—जीतना, सफल होना। इस चाल बाज से कोई पेश नहीं पा सकता।

पेशवाई करना—(२) अगमानी करना। (२) रक्षा के लिये साथ जाना।

पेशाब करना, पेशाब भी न करना—कुछ न समझना, घृणा करना। मैं उनकी चीज़ पर पेशाब भी न करूँ।

पेशाब की धार पर मारना— अति तुच्छ समझना।

पेशाब की राह बहा देना—रंडी बाज़ी में ख़र्च कर देना।

पेशाब निकल पड़ना या खता होना—बहुत डरना, इतना कि पेशाब निकल जाय। हाथ में कोड़ा देखते ही पेशाब निकल पड़ता था।

पेशाब बंद होना—बहुत डरना, इतना कि पेशाब बन्द हो जाय। डर के मारे पेशाब बन्द हो गया।

पेशाब का या से चिराग जलना— बहुत रौब, प्रताप होना। उन्हें कौन 'ना' कर सकता है उनके पेशाब से चिराग जलता है।

पैंग बढ़ाना—मेल जोल डालना। उनसे पैंग तो बढ़ा रहे हो पर उस कोर्टशिप में कुछ है नहीं।

पैगाम डालना—सम्बन्ध का सन्देश भेजना।

पैंडा मारना — पीछे पड़ना, तंग करना।

पैंड़े पड़ना—दे० पीछे पड़ना।

पैज पड़ जाना—हठ या लाग डाट होना। उन्हें पैज पड़ गई है करके ही मानेंगे।

पैतरा बदलना—(१) पटा चलाने में इधर उधर ढब से पैर रखना। (२) मौक़े के अनुसार वार बदलना। बड़ा भोला सा था पर मौक़े पे ऐसा पैतरा बदला कि देखते रह गये।

पैतरे बदल कर चलना - ऐंठ कर चलना। ये नख़रे! पैतरे बदल कर चलती हो!

पैदा करना—(१) कमाना। (२) उत्पन्न करना। हज़ारों पैदा किए।

पैदा होना—(१) आमदनी होना। उन्हें हज़ार रुपये महीने की पैदा है। (२) उत्पन्न होना।

पैर छूटना—रज अधिक जाना।
नोट—पैर और पाँव के एक ही मुहावरे हैं।

पैरा हुआ—होशियार, पारंगत। वह इन सब कामों में पैरा हुआ है ख़तरा नहीं खा सकता।

पैबंद लगाना — बिगड़ी हुई या अधूरी बात सुधारना, बात में बात जोड़ना। तुम खूब पैबंद लगा रही हो; उन्हें ही कहने दो न!

पैमाना भर जाना—दे० प्याला भर जाना।

पैसा उठना, उठाना—अंधाधुंध, फिजूल खर्च करना। व्याह में बड़ा पैसा उठा।

पैसा कमाना—धन पैदा करना। ठेकेदारी में बड़ा पैसा पैदा किया।

पैसा खींचना—धन इकट्ठा करना। मेरी नाबालग़ी में बड़ा पैसा खींचा।

पैसा डूबना—घाटा होना। हमारा तो सब पैसा डूब गया, वह दिवाला जो हो गया।

पैसा ढो ले जाना—एक देश के धन को दूसरे देश ले जाना। अंग्रेज़ बड़ा पैसा ढो ले जा रहे हैं।

पैसा लगाना — धन कमाने के लिए धन खर्चना। जितना पैसा लगाया था उससे दुगना कमाया।

पैसा धोकर उठाना—देव पूजा के निमित्त पैसा धोकर अलग रखना।

पैसा पैसा करना—धन कमाने की ही चिन्ता में रहना।

पैसे के तीन धेले भुनाना—किफायत से खर्च करना, थोड़े में बुद्धि से बहुत काम निकालना। वह पैसे के तीन धेले भुनाता है रुपये में डेढ़ का माल लावेगा।

पैसे पर रखकर बोटियाँ उड़ना—हद दरजे की तकलीफ़ देना।

पैसे पैसे को तरसना — बहुत ग़रीब होना। वही आप आज पैसे पैसे को तरस रहा है।

पैसा समेटना—पैसा बहुत कमाना। उसे शराबी बना कर इसने बड़ा पैसा समेटा है।

पौं बोलना—हार मानना, दिवाला होना। एक साल के खर्चे में पौं बोल गये।

पोत पूरा करना—कमी, काम ज्यों त्यों पूरा करना। चाहे भूखे हो जायँ पोत तो पूरा करेंहीगे।

पोत पूरा होना—कमी पूरी होना।

पोता फेरना — लूटना, बर्बाद करना। सारी जायदाद पर पोता फेर दिया।

पोदना सा—नन्हा सा। पोदना सा लड़का है उछलता ऐसा है।

पोल खुलना—भंडा फूटना, भीतरी बुरी हालत जाहिर होना। कैसे सेठ थे आज पोल खुली जब पकड़े गये।

पोल खोलना—भेद खोलना, भंडा फोड़ना। तुमने पोल खोल दी वरना वह यहाँ भी उल्लू बनाता।

पौन चलाना, मारना — जादू, टोना करना।

पौन बिठाना—किसी के पीछे भूत-प्रेत लगाना।

पौने सोलह आना—अधिक भाग में, अधिकतर। पौने सोलह आने तो यह बात ठीक निकलेगी।

पौफटना—सुबह होना।

पौबारह पड़ना—जीत का दाव पड़ना।

पौबारह होना—(१) दे० पौबारह पड़ना। (२) अपनी बन आना। अब तौ पौबारह है बाप मर गया है।

प्याज़ के से छिलके उतार कर रख देना—बुरीगत बनाना, बुरा-भला सुनाना। बकेगा तो प्याज़ के छिलके उतार दूँगा।

प्याला देना—शराब पिलाना।

प्याला बहना — गर्भ गिरना।

प्याला पीना—(१) दे० प्याला भर जाना। (२) शराब, भंग पीना। (३) जहर पीना। प्याला पीकर सो जाना।

प्याला भर जाना—उम्र तमाम होना, दिन पूरे हो जाना। भर गया प्याला टरक गये दुनिया से।

प्याला भरना—मौत के दिन आ जाना।

प्यास बुझाना — जलन ठंडी करना। मेरी प्यास कौन बुझावे।

प्यास लगना — पीने की इच्छा होना।

प्यास मराना — पीने की इच्छा दबाना, रोकना।

प्यासा मरना—मरते वक्त पानी तक न मिलना। बहुत प्यास होना।

प्रपंच फैलाना — आडम्बर, छल करना, बहकाना। उसने ऐसा प्रपंच फैलाया कि मानो बड़ा भारी वैद्य है।

प्रस्थान धरना—(१) जाने के लिये दुपट्टा सुपारी रखना। (२) रवाना होना।

प्रसाद पाना—(१) खाना, भोजन करना। (२) फल पाना।

प्राण उड़ जाना—(१) बहुत डर या घबरा जाना। (२) भौचक्का, हक्का-बक्का रह जाना। शराब खाने में पिता जी को आते देख मेरे प्राण उड़ गये।

प्राण कंठ में होना—मरने वाला होना।

प्राण खाना—तंग करना, मग़ज चाटना। मेरे प्राण मत खा किसी और से माँग, मैं कभी न दूँगा।

प्राण गले या मुँह को आना—(१) मरने की हालत होना। (२) बहुत दुख होना।

प्राण जाना, छूटना, निकलना—मर जाना।

प्राण छुटाना—दे० जान छुड़ाना।

प्राण डालना — जीवित करना। उसने जादू से इसमें प्राण डाल दिये।

प्राण तजना, त्यागना, छोड़ना—मरना, मरने को होना। दुरजोधन लों देखियत तजत प्राण यह बाल।

प्राण देना—(१) किसी के काम से दुखी हो मरना। हार कर उसने शर्म से प्राण दे दिये। (२) किसी को प्राणों से ज्यादा प्रेम करना। वह तुझ पर प्राण देता है।

प्राण निकलना—(१) मरना। (२) डर से होशहवास जाते रहना। साँप देखते ही मेरे प्राण निकल गये।

प्राण पयान होना—मर जाना। प्राण पयान होत को राखा।

प्राण मुट्ठी या हाथ में लिये फिरना, रहना—जान देने पर उतारू होना, जीवन की आशा न करना। वह तुम्हारे लिये प्राण भी मुट्ठी में लिये फिरता है।

प्राण बचाना — (१) जीवन बचाना, रक्षा करना। मुझ डूबती के तुमने प्राण बचाये। (२) पीछा छुड़ाना। बड़ा गप्पी है बड़ी मुश्किल से प्राण बचा कर आया हूँ।

प्राण रखना—जिलाना, मरते से बचाना। वैद्य जी ने मेरे प्राण रख दिये।

प्राण लेकर भागना—बचने के लिये ज़ोर से भागना। भेड़िया आते देख मैं तो प्राण लेकर भागा और पेड़ पर जा चढ़ा।

प्राण लेना—(१) जान लेना, मार डालना। (२) अति दुखदायी। लड़का क्या है प्राण लेवा पैदा हुआ है।

प्राण हरना—(१) मारना। कौन के प्राण हरैं हम यों दृग कानन लागि मतो चहैं बूझन। (२) अति दुख देना, बहुत सताना। मिलत एक दारुण दुख देहीं, बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं।

प्राण हारना—(१) मर जाना। गढ़ प्राप्ति के लिए प्राण तक हार दिये। (२) हिम्मत टूट जाना। क्यों इतने ही में प्राण हार गये?

प्राणों का मुँह को या गले को आना—(१) मरने ही वाला होना। (२) बहुत कष्ट होना। जेल की मार से प्राण मुँह को आ जाते हैं।

प्राणों पर आ पड़ना, बनना—जीवन का खतरे में पड़ना। मेरे प्राणों पर बनी और वे हँसने लगे।

प्राणों पर खेलना—जान जाने का खतरा उठाना। प्राणों पर खेल कर आग में से निकाला।

प्राणों पर आ पड़ना, बीतना—(१) जान जाने का डर होना।

जब प्राणों पर आ बने तो धर्माधर्म मत देखो। (२) मर जाना। डूबते को बचाने गया सो खुद के प्राणों पर बीती।

प्राणों में प्राण आना—डर कम होना, जी ठिकाने आना। जब तुम आ गये तो प्राणों में प्राण आये वरना मैं मरी जाती थी।

प्राणों से हाथ धोना—मर जाना। उससे लड़े तो प्राणों से हाथ धोओगे।

प्राणी दोनों — पुरुष-स्त्री। दोनों प्राणी सुख से रहते हैं।

प्राप्त होना—मिलना। मुझे एक पैसा भी प्राप्त नहीं हुआ।

प्रूफ उठाना—कापी की नकल या अक्षरों का जोड़ काग़ज पर देना।

फ

फंका करना—नाश कर देना। बाप दादा की सारी कमाई को फंका किया।

फंद कटना—दे० पीछा छूटना।

फंका मारना—चूर्ण को मुँह में डालना। फंका मारे बड़ा स्वाद है।

फंदा देना लगाना—(१) धोखा, जाल फैलाना। (२) गाँठ लगा के फंदा लगाना।

फंदा पड़ना—(१) फँसना। अब के फंदा पड़ा है देखें कैसे बचो? (२) जाल पड़ना।

फंदा लगना—जाल, धोखा चलना। फंदा लग गया तो सौ दो सौ ले ही आऊँगा।

फंदे में पड़ना, फँसना—(१) धोखे या वश में आ जाना। (२) संकट में पड़ना। हम तो भाई बुरे फंदे में फँसे जीना दुश्वार हो रहा है।

फँस जाना (किसी से)—प्रेम संबन्ध या अनुचित सम्बन्ध होना। वह एक नाइन से फँस गया है।

फगुआ खेलना — दे० फाग खेलना।

फक्कड़ होना — (१) बदजबान होना। (२) अकेला होना। फक्कड़ आदमी है परवाह क्या है।

फक कराना—सम्बन्ध तोड़ना। मैं क्यों डूब कर जान दूँ मैंने डोरी फक करा दी।

फक पड़ जाना (रंग)—डर के चिन्ह मुख पर होना, घबरा जाना। मुँह फक पड़ गया बोला तक न गया।

फकीर होना—(१) साधु बनना।

(२) गरीब हो जाना। मुकदमे बाजी में फ़कीर हो गया।

फगुआ मनाना—स्त्री पुरुषों का रंग से खेलना। लोचन आजहि फगुआ मनाइ, छाँडइ नचाइ हा हा कराइ।

फजीलत की पगड़ी—बहुत पढ़े लिखे पन का चिन्ह, विद्वत्ता-चिन्ह।

फटकना पछोरना—(१) छाज में अनाज साफ़ करना। (२) खूब जाँचना। (३) कपड़े धोने को पत्थर पर मारना।

फटकने न देना—पास न आने देना। मा को पास भी न फटकने दो।

फटका न खाना—फौरन मर जाना।

फटकार खाना—(१) तड़फना। (२) बुराई सुनना, लानत-मलामत, धिक्कार सहना। मैं क्यों फटकार खाऊँ, चला आया।

फटकार बताना — बुरा भला कहना। जिसका कसूर उसे फटकार बताओ।

फटकार बरसना (मुँह पर)—चेहरा फीका पड़ना।

फटकार बरसना — गाली-गलौज होना, थू-थू होना।

फटके चलना—(१) अलग चलना, रहना। बुरे दोस्तों से फटके चलो। (२) घृणा जाहिर करना।

फट पड़ना—(१) एकदम आक्रमण करना या क्रोध करना। (२) बहुत होना। जाने रुपया कहाँ से फट पड़ा है वेशुमार लुटा रहा है। (३) सहसा पहुँचना। तुम यहाँ कहाँ से फट पड़े?

फटफट होना — झगड़ा होना। दोनों मित्रों में फट फट हुई।

फट से—तुरन्त, झट।

फटा जाना, पड़ना — वेदना या कष्ट बहुत होना। दर्द से सिर फटा पड़ रहा है।

फटियल रहना — (१) अलग रहना। (२) फटे कपड़े रहना।

फटे में पाँव देना — झगड़े में पड़ना। **फटे हालों रहना**—दरिद्र, बुरी हालत होना।

फट्टा लौटना, उलटना — टाट उलटना, दिवाला निकलना।

फड़क उठना—प्रसन्न होना, प्रफुलित होना। मेरी कविता सुन कर फड़क उठोगे।

फड़क जाना—वेचैन होना, खुश होना, आशिक हो जाना। मोहित होना।

फफोले फूटना, फोड़ना—दिल की जलन, बुखार निकलना, निकालना। पुरानी बातों से जरा फफोले फूट जाते हैं वरना, दुख में वेचैन है।

फफ्फस होना—देखने में मोटा ताजा पर अन्दर बल न होना।

फब जाना—सुन्दर लगना। टोपी भी फब गई और बात भी मौके पर कही फब गई।

फबती उड़ाना — हँसी उड़ाना। क्यों बेचारे सीधे साधे की फबती उड़ाते हो।

फबती कसना, कहना—हँसी भरी चुभती बात कहना। ऐसी फबतियें कसीं कि मजाक़ में हार मान गया।

फरक फरक होना—(१) हटो बचो होना। चल्यो राम मन्दिर की ओरा, फरक फरक माच्यो मग सोरा। (२) अन्तर होना। दोनों के स्वभाव फरक फरक हैं।

फरागत करना, पाना, होना—(१) पूरा करना या होना। (२) चिन्ता दूर होना। रुपये देकर फरागत पाई।

फरार होना—भागना, चल देना। कैदी जेल से फरार हो गया।

फ़र्ज़ करना—(१) मान लेना। (२) आज्ञा देना या तरीका बताना। (३) कल्पना या भावना करना। फर्ज करो मैं न करूँ तो क्या होगा।

फर्द में नाम चढ़ाना, लिखना—सूची या लिस्ट में लिखना, भर्ती करना। न्यौते की फर्द में तुम्हारा नाम नहीं चढ़ाया।

फर्राटा मारना, भरना—तेजी से दौड़ना। एक फर्राटा मारा और पहुँचा।

फलना फूलना—इच्छा पूरी होना, सफल होना। तुम फलो फूलो यह माँ की दुआ थी।

फल आना, फूलजाना—(१) परिणाम, नतीजा निकलना। (२) वृक्षों में फल आना।

फल पाना, मिलना—कार्य का परिणाम होना। मुझे जो दुख दिया है उसका फल तो मिलेगा ही।

फली के दो टूक करना, तोड़ना—(१) तनिक काम करना। बहू फली के दो टूक भी नहीं करती सास को ही सब काम करना पड़ता है। (२) संबन्ध तोड़ना।

फस फसाकर बैठ जाना—कच्ची दीवार का पानी के असर से पृथ्वी में समा जाना।

फाँका मारना—चीज मुँह में डालना, फाँकना। सारे चूरन का फाँका मारा तो दस्त हो जायेंगे।

फाँड़ा पकड़ना—(१) पक्का पकड़ना। (२) स्त्री का किसी पुरुष को भरण-पोषण का जिम्मेदार ठहराना।

फाँड़ा बाँधना, कसना—तैयार, मुस्तैद होना। फाँड़ा कसके मारने चला।

फाँद पड़ना—कूद पड़ना । तुम क्यों दूसरे की बातों में फाँद पड़े ।

फाँद मारना—फँदा डालना, जाल बिछाना ।

फाँस चुभना—दिल में बात खटकना । मेरे दिल में वह फाँस चुभी है बदला लेकर छोड़ूँगा ।

फाँस निकलना—काँटा या झंझट दूर होना । उसकी नौकरी छूटी फाँस निकली बहुत दुख देता था ।

फाँस निकालना, निकाल देना—खटके की या कष्टकर वस्तु दूर करना । राजा से शिकायत करके यह भी फाँस निकाल ही दो ।

फाँस रखना—वश या बंधन में रखना । ऐसा फाँस रखा है कि किसी की नहीं सुनता ।

फाँस लाना—धोके से पकड़ लाना । डाकू को फाँस लाये वरना हाथ न आता ।

फाँसी खड़ी होना—(१) फाँसी तैयार होना । हत्यारे के लिये फाँसी खड़ी है समझे ? (२) प्राण जाने का डर होना । जाते क्यों नहीं ऐसी क्या फाँसी खड़ी है ?

फाँसी चढ़ना—प्राण दण्ड पाना । वे हँसते हँसते फाँसी चढ़ गये ।

फाँसी देना, लगाना—गले में फंदा डाल कर मार डालना । डाकू ने फाँसी लगा कर मार डाला ।

फाका पड़ना—अनशन, उपवास होना । गरीबी के घर में फाके पड़े हैं ।

फाकों का मारा—भूखों मरना । फाकों मारा आया था अब माल पल्ले है तो ऐंठता है ।

फाग खेलना—(१) आनन्द-उत्सव मनाना । (२) होली को रंग-रलियाँ करना । (३) उड़ाना । वे रुपये से

फाफा कुटनी—दुष्ट, एक से दूसरे की बुराई करने वाली कुटनी बुढ़िया ।

फाड़खाना—क्रोध में बोलना । मुझे फाड़ खाने को दौड़े ।

फायदे का—लाभ, फायदा देने वाला । फायदे का काम करो नुकसान का नहीं ।

फाल बाँधना—उछल कर लाँघना ।

फाल भरना — कदम रखना । हिरन ने दो फाल भरीं और ओझल हो गया ।

फाश (परदा) करना—दे० परदा फाश करना ।

फालिज गिरना—अंग सुन्न पड़ना । दायें अंग पर फालिज गिर गया है ।

फावड़ा चलना—खेत में काम करना, कठिन काम करना । ऐसा क्या फावड़ा चलाते हो आराम से लिखते हो और कमाते हो ।

फावड़ा बजना, बजाना—(१) खोद गिराना । चूँ की तो मकान पर फावड़ा बजा दूँगा । (२)

दुख दायी होना। छाती पर फावड़ा बज रहा है तो भी तुम शिकायत नहीं करते।

फिक्र करना—(१) पहिले से ही सोचना। लड़की के व्याह की फिक्र करो। (२) सोचना। (३) चिन्ता का दुख। फिक्र तो करते ही नहीं चाहे जो हो। (४) विरुद्ध षड़यंत्र करना।

फिक्र लगना—चिन्ता, खटका रहना। मुझे व्याह की फिक्र लगी है।

फिटकार लगना—शाप ठीक उतरना। उस मुई की फिटकार लगी बच्चा बीमार हो गया है।

फिट्टा मुँह—उतरा हुआ चेहरा। इस फिट्टे मुँह वहाँ जायगी?

फिरकी की तरह फिरना—इधर उधर काम करते ही रहना, एक जगह चैन न पड़ना। मेरी बीमारी में बिचारी फिरकी की तरह फिरती थी।

फिरकी सी घूमना—इतना प्रेम है कि मेरी बीमारी में फिरकी सी घूमती थी, बड़ी सेवा की।

फिर क्या है?—फिर क्या पूछना है, सब बात ठीक है, कुछ कसर नहीं। फिर क्या है अभी चलो।

फिर जाना—आकर लौट जाना। कई बीमार फिर गये वैद्य जी घर पर न थे।

फिरना—(किसी ओर) झुकना, प्रवृत्त होना। अगर इस काम की ओर फिर गये तो लाखों लगा देंगे।

फिरना—(जी) जी उचट जाना। इस काम से दिल फिर गया अब न करेंगे।

फिरना (सिर)—बुद्धि भ्रष्ट होना, अक्ल फिरना। तुम्हारा सिर फिर गया है? मालूम है किससे कह रहे हो?

फिर कर न देखना—घृणा दिखाना, वापिस न आना। मैं अब उसकी तरफ़ फिर कर भी न देखूँ जाना तो दूर रहा।

फिर पड़ना—क्रोध करना। तुमसे बस न चला मुझ पर फिर पड़े और पीट डाला।

फिसल जाना—(१) आशिक होना, जी आजाना। (२) कायदे से फिर जाना। क्यों फिसल गये न? मैंने पहले ही कहा था न कर सकोगे।

फिसल पड़ना—आशिक होना। क्यों! नाइन पर ही फिसल पड़े न?

फिस हो जाना, होना-(टाँय टाँय फिस)—(१) अधिक धूम अंत कुछ नहीं। हजारों खर्चे पर जरा सी बात पर फिस हो गई। (२) कुछ न रह जाना, हवा हो जाना।

फिसलना (जी)—मन लुभाना।

उन पर फिसल गया जी कोठे पे जो रहती हैं।

फीका पड़ जाना—(१) रंग उड़ जाना। (२) रौनक जाती रहना। अब कुछ चेहरा फीका पड़ गया है क्या बात है ?

फुरती करना—जल्दी करना। ऐसी फुरती करता है घंटों का काम मिन्टों में कर देता है।

फुरसत पाना—(१) छुट्टी पाना। काम से फुरसत पाकर तुम्हारे घर आऊँगा। (२) नौकरी से छूटना। मैंने वहाँ से तो फुरसत पाई अब कहीं जगह ढूँढ़ो।

फुरसत से—(१) खाली वक्त में। फुरसत से करना जल्दी क्या पड़ी है। (२) धीरे धीरे।

फुरहरी लेना—काँपना, थरथराना, उसके तो नाम से फुरहरी लेती है।

फुलासरे में आ जाना—(१) धोखा उठाना। फुलासरे में आ गये उसने बड़ाई की रुपया लेके चम्पत बना। (२) हिमायत की ऐंठ में आना। किसी के फुलासरे में न आना मैं उसे भी ठीक कर सकता हूँ।

फुरेरी आना, लेना—कँप कँपी आना, कँपकँपाना।

फुलझड़ी छोड़ना — झगड़ा उठाना। फुलझड़ी तो तुमने ही छोड़ी थी यार !

फुसला लेना—बहकाना। बेचारी औरत को फुसला लिया और भगा ले गया।

फूँक देना—(१ जला देना। (२) मंत्र आदि से भूत भगाना। (३) फैलाना, डालना। उन्होंने एक ही लैकचर में जान फूँक दी। (४) उड़ाया लुटा देना। इस काम में हजारों रुपये फूँक दिये।

फूँक देना—(१) जला देना। (२) उड़ा देना, खर्च कर देना। लाखों रुपये फूँक दिये जब छूटा।

फूँक निकल जाना—मर जाना। बुड्ढा था एक धक्के में फूँक निकल गई।

फूँक सरक जाना—दे० प्राण उड़ जाना।

फूँक फूँक कर पैर रखना—सावधानी से चलना या काम करना।

फूँकना (कान में)—धीरे से कहना, बहकाना। कान में फूँक दो कि लड़ने आया है जो देखते ही सर कटवा दें, नहीं पोल खुल जायगी।

फूँसड़ा हो जाना—कपड़े का तार तार हो जाना। सारी धोती फूँसड़ा हो गई और लादो न।

फूट आना—अंकुर, फुंसी निकलना।

फूट डालना—विरोध पैदा करना।

हममें फूट डाल कर अपना काम बनाओगे।

फूट निकलना—शरीर पर फुंसी आदि होना। उनके कोढ़ फूट निकला है।

फूट पड़ना—(१) झगड़ा, विरोध होना। (२) रोग का शरीर में निकलना। (३) अलग अलग होना।

फूट फूट कर रोना—बहुत विलाप करना। भारी जेवर खोया जभी फूट फूट कर रो रही थी।

फूट बहना—रो पड़ना। बेचारी सुनते ही फूट बहने लगी।

फूट बहना—पानी का दीवार या बाँध तोड़ कर बहना।

फूट सा खिल जाना—टुकड़े टुकड़े हो जाना। एक लाठी में ही सिर फूट सा खिल गया।

फूटी आँख का तारा—एक, कई में से बचा प्यारा, लड़का। बुढ़िया की फूटी आखों का तारा है।

फूटी आखों न देख सकना—(१) दे० फूटी आँखों न भाना। (२) बुरा मानना, कुढ़ना। किसी की उन्नति तो वह फूटी आँखों...।

फूटी आखों न भाना—तनिक न सुहाना, बहुत बुरा लगना। बुड्ढों को नया फैशन फूटी आँखों नहीं भाता।

फूटे मुँह से न बोलना—परवा न करना, बात तक न करना। मैं उनके घर गया फिर भी वह फूटे मुँह से न बोले।

फूल आना—फूल लगना। पेड़ों पर फूल आ रहे हैं।

फूल उतारना—(१) फूल तोड़ना। माली सवेरे फूल उतार लेता है। (२) सिर के बालों में से फूल निकालना।

फूल कर कुप्पा होना—बहुत खुशी या नाराजी से मुँह फुलाना। वह व्याह की सुनते ही फूल कर कुप्पा हो गई।

फूल चढ़ाना—फूलों से पूजा करना। महन्त पर फूल चढ़ाते हैं।

फूल चुनना—फूल (तोड़ कर) इकट्ठा करना। कुछ फूल चुन लाओ।

फूल जाना, फूल बैठना—नाराज़ हो जाना। सास को मनाने गई वह और फूल बैठी, चूल्हे में जाय।

फूल जाना,—(१) सूजना। (२) मोटा हो जाना। (३) खुश होना।

फूल झड़ना—मुँह से मीठी, प्यारी बात निकलना। इतनी प्यारी आवाज़, उनके मुँह से तो गाली भी फूल सी झड़ती हैं।

फूल झड़ जायँगे?—इतना नाज़ुक कि कर ही नहीं सकता। वे कैसे करेंगी फूल झड़ जायेंगे।

फूल नहीं पँखड़ी सही—जो मिले वही ठीक। रानी नहीं लौंडी सही फूल नहीं पँखड़ी सही।

फूल पड़ना—(१) आग का पतंगा पड़ना। (२) सफेद धब्बे पड़ना।

फूल सा—हल्का, सुन्दर, कोमल। 'फूल सा कुमार मेरा कैसे लड़ेगा'।

फूल सूँघ कर रहना—बहुत कम खाना। आप खाना नहीं खातीं फूल सूँघ कर रहती हैं? (व्यंग्य)

फूलों के दिन—नौजवानी, उठती उम्र। फूलों के दिनों में मैंने भी घायल किये थे।

फूलों का गहना—हार, नाजुक, दिखावे का। लड़की फूलों का गहना है ऐसी और न मिलेगी।

फूलों में तुलना—बहुत लाड से पाली जाना। मेरी रानी तो फूलों से तुली है जरा ध्यान रखना!

फूल पान सा—बहुत कोमल।

फूल करना—बुझाना (दीप)। फूल कर दो और सो जाओ।

फूल पड़ना—गुल, जली बत्ती होना। दीवे में फूल पड़ा है उजाला इस लिये ही कम है।

फूलना फलना—रुपये पैसे, सन्तान से खुश होना। पुत्र कई हैं फूल फल रहा है।

फूला फिरना—घमंड में रहना। तुम जो फूले फिरते हो वह बात नहीं चलेगी।

फूला फिरना—(१) घमंड में घूमना। क्या फूले फिरते हो सारी ऐंठ निकल जायगी। (२) प्रसन्न घूमना।

फूले अंग न समाना—बेहद खुश, होना। खुशी के मारे आपे से बाहर होना। राम का आना सुन भरत फूले अंग न समाये।

फूला फूला फिरना—खुश खुश आनन्द में घूमना। फूली फिरत रोहिणी मैया नखसिख किए सिंगार।

फूली फूली खाना—बेफ़िक्री से गुजारना। माँ बाप हैं तब तक फूली फूली खालो पीछे मालूम पड़ेगी गृहस्थी में क्या मुश्किल है।

फूस में चिंगारी डालना—शान्ति या मेल में झगड़ा, फूट पैदा करना।

फेंट कसना, बाँधना—(१) तैयार होना। आज कहाँ के लिये फेंट कसी है? (२) पक्का इरादा करना।

फेंट धरना, पकड़ना—जाने न देना। कई बार आना चाहा पर उसने फेंट पकड़ ली कैसे आता?

फेर की बात—घुमाव फिराव की बात। मेरे से तुम्हारी एक भी फेर की बात न चलेगी।

फेर खाना—घूम कर आना। इस रास्ते बहुत फेर खाकर पहुँचोगे।

फेर दिनों का—बुरे दिन आना। दिनों का फेर है क्या करें?

फेर देना—लौटा देना। भाजी आवे तो फेर देना, रखना मत।

फेरना माला—(१) माला जपना। (२) बार बार नाम लेना। मैं तो आपकी ही माला फेरता हूँ।

फेरना हाथ—(१) उड़ा लेना। रंडी ने रईसों पर हाथ फेरा, भिखारी किया। (२) इधर उधर छूना। हाथ फेरोगे काट खायगा। (३) प्यार से हाथ रखना। शाबासी दी हाथ फेरा।

फेर निन्नानवे का—रुपया बढ़ाने या जोड़ने का चस्का। गृहस्थी होकर निन्नानवे के ही फेर में पड़ोगे ?

फेर पड़ना, या पड़ जाना—(१) कमी या हानि, होना, फर्क होना। जरा सी देर में १००) का फेर पड़ गया। (२) घुमाव का रास्ता होना। उस रास्ते आने में दस मील का फेर पड़ा।

फेर फार की बात—(१) चालाकी की बात। (२) टालने की बात। मैं लेकर हटूँगा फेर फार की बात मत करो।

फेर बाँधना—सिल सिला, उपाय, ढंग होना। सौ रुपये से ही ऐसा फेर बँधा है कि ५००) का माल दुकान में पड़ा रहता है।

फेर में आजाना—बुरे दिन हो जाना। उनके फेर में आकर सब गवाँ बैठे।

फेर में डालना—असमंजस, चक्कर में डालना। उसने यह बात कह कर और फेर में डाल दिया।

फेर में पड़ना, आना—(१) धोखा खाना। उसके फेर में पड़े बरबाद हुए। (२) घाटा सहना। हजार के फेर में हम भी पड़ गये। (३) कठिनाई आ जाना। **कुफेर**—बुरी हालत, बुरे दिन। **सुफेर**—अच्छे दिन।

फेर फार करना—अंतर डालना, बदलना, परिवर्तन करना। फेर फार डाल कर रुपये चटका लिए।

फेर लेना—वापिस लेना। दूकान दार ने किताब फेर ली।

फेरी पड़ना—(१) ब्याह होना। जिससे फेरी पड़ी उसे तो निभाओ। (२) परिक्रमा करना। मंदिर की फेरी पड़ी हैं।

फेरी फिरना—चक्कर लगाना, घर घर भीख माँगना।

फेरे डालना—ब्याह करना। लड़के के फेरे डाल दूँ फिर फिकर नहीं।

फैज को पहुँचना—करनी का फल पाना। जेल गये, फैज को पहुँचे।

फैज पहुँचाना—दान-धर्म करना, लाभ होना। वह कंजूस मुझे क्या फैज पहुँचायेगा।

फैला पड़ना—प्राप्ति के लिए हठ करना। बच्चा फैला ही पड़ता है दे दो न !

फोकट का—बिना मेहनत या दाम का। क्या फोकट का माल है जो तुम्हें दे दें ?

फोकट में—अनायास, मुफ़ में, बिना खर्चे या कुछ करे। फोकट में आया है तुम ले लो।

फोटोलेना-कैमरेसे तस्वीर खींचना।

फौं फौं करना—क्रोधित होना, साँप की तरह फुंकार मारना।

ब

बंद बंद जुदा करना—हड्डी हड्डी टूटना, पुरज़े पुरज़े करना। पीटते पीटते बंद बंद जुदा कर दूँगा।

बंद बंद टूटना—जोड़ जोड़ में दर्द होना। इतनी मेहनत करनी पड़ी कि बंद बंद टूट रहा है।

बंद बंद ढीले करना—खूब पीटना; थका मारना, कमजोर कर देना।

बंद बाँधना—मेंड़ बाँधना, गिरह लगाना; मंसूबा बाँधना; रोक थाम करना।

बंद में गिरह देना—याद के लिए गाँठ बाँधना।

बंदर घुड़की, भबकी-कोरी धमकी, डराने के लिए डाँट डपट। मैं तुम्हारी बन्दर भबकी से नहीं डरता।

बंदूक छतियाना—निशाना ठीक करना, चलाने को तैयार होना।

बंधन ढीला करना—खूब मारना पीटना।

बक बक, बक-झक करना—(१) बुरा-भला कहना। (२) व्यर्थ की बातें करना। बक बक की तो पीट डालूँगा।

बखिया उधेड़ना—भेद खोलना। मैंने बहुत बात छिपायी पर उन्होंने बखिया उधेड़ दिया।

बखेड़ा खड़ा करना—झगड़ा-झंझट तैयार करना। उन्हें बरबाद करने को ही यह बखेड़ा खड़ा किया है।

बगल में ईमान दबाना, रखना—बेईमानी करना। ईमान तो हमारी बगल में रखा है मुख में नहीं हैं जो सच बोलें।

बगल में दबाना—ले लेना, अधिकार करना। काग़ज़ बगल में दबाये और चल दिये।

बगल में धरना—बगल में छिपाना, छीन लेना। बगल में धर लो फिर न देना।

बगल में मारना—बगल में दबाना। धोती बगल में मारी और नहाने चले।

बगल में मुँह डालना—लज्जित करना, होना। मेरे सामने देखो अब क्यों बगल में मुँह डालते हो?

बगल सूँघना—पछताना। जब न हो सका तो बगल सूँघने लगे।

बगल हो जाना—एक ओर हट जाना। मैं तो बगल हो गया चोट उसके लगी।

बगला भगत—कपटी, छली, दिखावे का ही सच्चा। तीर्थ पर बहुत से माल चुराने वाले बगला भगत भी होते हैं।

बगली घूँसा — छिपी दुश्मन (स्त्री)।

बगली घूँसा—वह घूँसा जो बगल में होकर मारा जाय।

बग़ली डूबना—पूँजी नष्ट होना।

बगलें झांकना—(१) जवाब न दे सकना। (२) शर्मिन्दा होना। जब उसने भी कहा झूँठ है तो बगलें झाँकने लगे। (३) बचाव का रास्ता ढूँढ़ना। वह मारने दौड़े मैंने भी लट्ठ उठा लिया अब तो वे बगलें झाँकने लगे।

बगलें बजाना—(१) खूब खुशी मनाना। बगलें बजाते घर आये और प्रसाद बाँटा। (२) हँसी उड़ाना। उनकी सूरत देखी और बगलें बजाने लगे।

बघारना (शेखी) दे० बड़ाई मारना।

बचन डालना—माँगना। जीवन भर में आज ही वचन डाला है।

बचन छोड़ना, तोड़ना—वायदा, प्रतिज्ञा पूरी न करना।

बचन देना—दे० ज़बान देना।

बचन निभाना, पालना, पूरा करना—जो कहना वही करना।

बचन में बाँधना—वायदा, प्रतिज्ञा कराना। कैकेयी ने वचन में बाँध लिया।

बचन लेना—प्रतिज्ञा कराना।

बचन हारना—(१) दे० ज़बान देना। (२) कह कर न करना। वचन हारने में वीरता नहीं।

बच रहना—(१) छूटना। (२) जूठन रहना। खाने से यही बच रहा है।

बचाव करना—(१) रक्षा का उपाय करना। (२) हिफ़ाजत करना। (३) खर्च न होने का उपाय करना। अपने रुपयों का बचाव करा मेरे रुपये उठवा दिये।

बच्चों का खेल—सरल कार्य। कठिन काम है, बच्चों का खेल नहीं।

बछिया का ताऊ, बाबा—मूर्ख, सीधा सादा, बुद्धू। वह क्या खबर लायेंगे वह तो बछिया के ताऊ हैं।

बचा लाना—(१) रक्षित ले आना। (२) बाक़ी ले आना। बाँट भी आये और बचा भी लाये।

बजा कर—डंका पीट कर, खुल्लम खुल्ला। देऊँ भरत कहँ राज बजाई।

बजाना ठोकना—खूब परखना। ठोक बजा लो फिर कहो खोटा था।

बजा लाना—(१) पूरा करना।

अभी हुक्म बजा लाता हूँ। (२) करना। आदाब बजा लाता हूँ।

बटाऊ होना—(१) सार्थक होना। (२) चल देना। भए बटाऊ नेह तजि बादि बकत वे काज।

बटेर का जगाना—रात को बटेर के कान में आवाज़ देना (बटेर बाज़)।

बटेर का बह जाना—दाना न मिलने से बटेर दुबला होना।

बट्टा काटना—दलाली, डिसकाउंट निकालना।

बट्टा लगना—(१) कटौती होना। (२) ऐब लगना।

बट्टा लगाना—कलंक लगाना। बड़ों के नाम पर बट्टा मत लगाओ।

बट्टे खाते लिखना—नुकसान में लिखना। उससे पैसा न पटा तो बट्टे खाते लिखा।

बड़ाई देना—आदर करना।

बड़ाई मारना—डींग हाँकना। क्यों बड़ाई मारते हो हम जानते हैं तुम कितने बड़े हो।

बड़ा करना-पालन करके होशियार करना।

बड़ा नाम करना — यश, नाम फैलाना।

बड़ा बोल मारना—घमंड की, बढ़ बढ़ कर बातें करना। बहुत बड़े बोल मारते थे अब पछताते हैं।

बड़ा रास्ता पकड़ना — (१) मारना। (२) दूर का सफ़र करना। अब के बड़ा रास्ता पकड़ा है साल भर में लौटेंगे।

बड़ी बड़ी बातें करना, दून की लेना, हांकना — दे० बड़ाई मारना।

बतासे सा घुलना—(१) दुबला होना। (२) जल्दी खतम हो जाना। महीने ही भर में मरा बतासा घुल गया।

बतीसी दिखाना — (१) दाँत दिखाना। (२) बेहूदा हँसी हँसना।

बतीसी बजना—(१) सर्दी से दाँत खट खट बजना। (२) कहा सुनी होना। सास बहू की खूब बतीसी बजती है।

बतोले न दे—चालाकी, टालमटूल, धोखा न कर (स्त्री)।

बदन चुराना—शरम से शरीर छिपाना, सकोड़ना (स्त्री)।

बदन टूटना—जोड़ जोड़ में दर्द होना।

बदन फूल जाना—फोड़े फुंसी होना।

बदन बिगड़ना—कोढ़ होना।

बदन में खाज पैदा होना—अपने हाथों खराब होना।

बदला देना—बुरे का बुरा भले का भला करना।

बदला लेना—बैर निकालना। खूब

बदला लिया अब तुम्हारा बुरा न सोचेगा।

बदा होना–कहा, लिखा होना। जो भाग्य में बदा है वह मिलेगा ही।

बदी चेतना—बुराई चाहना। बदी चेतोगे बदी मिलेगी।

बदी पर आना—बुराई करने को तैयार होना।

बधिया बैठना—काम बिगड़ना। उन्होंने सहायता न दी तो बधिया बैठ गई नहीं तो गाड़ी अभी तो चलती ही।

बन आना—(१) मौक़ा मिलना, भाग्य खुलना। मेरी बन आई तो मैं भी झपट ही लूँगा। (२) इच्छा पूरी होना।

बन कर खेल बिगड़ना—काम होते होते बिगड़ जाना।

बन के बैठना—तैयार, ताक में बैठना। बन के बैठे हैं वार करेंगे।

बन पड़ना—(१) हो सकना। जो मुझसे बन पड़ा मैंने किया। (२) सुधरना।

बना बनाया—तैयार, पूरा, ठीक। सब बना बनाया है तुम्हारी देर है।

बना रहना—(१) जीवित रहना। बुड्ढे बने रहें तो अच्छा है शादी देख लेंगे। (२) उपस्थित रहना। जब देखो द्वार पर ही बना रहता है। (३) स्थित होना। यहीं पर बने रहो हटो मत। (४) उन्नति होना। देते रहो, बने रहो।

बनियों का सा चलना—कंजूसी और किफ़ायत से करना।

बबूल के पेड़ बोना—काँटे बोना, बुरा करना। बोये पेड़ बबूल के आम कहाँ ते खाँय।

बम चख मचाना—हल्ला-गुल्ला गाली-गलौज करना।

बम फूटना—कुएँ की तह में से पानी उबलना।

बम बोलना—कंगाल, दिवालिया होना। अब क्या रखा है बम बोल गई।

बरस दिन का दिन—सालाना पर्व, त्यौहार। होली बरस दिन का दिन है आज परदेस जाते हो?

बरस पड़ना—फटकारना, क्रोध में बकना। तुमसे कुछ न कहा मुझ पर बरस पड़े।

बरसों झूलना–बहुत दिन फिराना, आशा में फँसाना। सुनार ने बरसों झुला दिये तब चीज़ दी।

बराबर करना, होना—(१) पूरा कर देना। ले दे कर हिसाब बराबर करो। (२) नाश कर देना, मिटाना। बाप दादा तक का नाम बराबर कर दिया।

बराबरी करना—(१) सामने, मुकाबिले पड़ना। (२) नकल

करना। तुम्हारी बराबरी वह करे जो टाँग उठा कर मूते।

बल खाना—ऐंठना, टेढ़ा होना। बात बात पर बल खाना कोई तुमसे सीखले।

बल खोलना—सुलझाना।

बल निकालना—सीधी करना. ऐंठन दूर करना।

बल पड़ना—(१) विरोध पड़ना। (२) सिकुड़न होना। सुनते ही माथे में बल पड़ गये।

बला करे—नहीं करता। मेरी जाय बला, मैं क्यों जाऊँ और मेरी पूछे बला मैं क्यों पूछूँ, नहीं पूछता।

बला का—कमाल का, बहुत बढ़ा चढ़ा। बला का बोलने वाला है।

बलाय लेना—(किसी का रोग दुख) मंगल कामना करते हुए अपने ऊपर लेना।

बला से—कुछ परवा, चिन्ता नहीं। मेरी बला से मरे चाहे जीवे।

बला पीछे लगना—(१) आफ़त में पड़ना। मेरे पीछे तो बला लग गयी चैन ही नहीं। (२) तंग करने वाले आदमी, झंझट का साथ होना।

बलि जाना—न्योछावर होना।

बड़ी बात नहीं—कुछ कठिन नहीं।

बड़ी बात होना—बड़ा का कार्य बना। उन्हें वश में कर लिया बड़ी बात हुई।

बड़े बाप का बेटा होना—(१) बहुत धन-मान वाला होना। (२) अनोखा होना। तुम्हीं तो बड़े बाप के बेटे हो जो सब से आगे बैठोगे?

बढ़ चलना—हद से बाहर काम करना, घमंड करना। नौकरी लगते ही बढ़ कर चलने लगे!

बढ़ बढ़ कर बोलना—बघारना (शेखी)।

बढ़ावे में आना—उत्साह देने, बड़ाई करने से टेढ़े काम में प्रवृत्त होना।

बलिहारी जाना—कुरबान जाना, न्यौछावर होना।

बलिहारी लेना—प्रेम दिखाना दे० बलैया लेना।

बलिहारी है!—मैं तो मोहित हो गया। अति सुन्दरता, शील, योग्यता आदि को देख कर कहते हैं; विरोधी गुणों पर व्यंग्य में भी।

बलैया लेता हूँ—निछावर जाता हूँ, बलिहारी है!

बलैया लेना—दे० बलाय लेना।

बसंत फूलना—(१) सरसों फूलना। (२) जर्दी छाना। कमजोरी इतनी है कि उठते बैठते आँखों के सामने बसंत फूलता है।

बस चलना—हो सकना, अधिकार होना। मेरा बस चले तो मैं आज बेच दूँ।

बस में करना, लाना—(१)

मोहना। मोहन मोहि बस कर लीन्हों। (२) दाँव में काबू में लाना।

बसना (घर किसी का)—गृहस्थी बनना, स्त्री घर में आना। किसी का घर बसे तो अच्छा बिधवा का जीवन क्यों व्यर्थ जाय।

बसना (घर में)—(१) सुख से गृहस्थी में रहना। (२) स्त्री बन कर रहना। वह चमार के घर में बस गई है।

बसना (मन में)—स्मृति, ध्यान, दिल में रम जाना। बालम आय बसौ मेरे मन में।

बसाना (घर)—किसी की स्त्री बन कर रह जाना।

बसाना (मन में)—दिल में रखना। मन में बसा ली है मूरत तुम्हारी।

बसंत की खबर होना—

बसेरा करना—(१) ठहरना, डेरा डालना, रहना, बस्ती में से दिया खदेरी जंगल किया बसेरा। (२) घर बनाना।

बसेरा देना—(१) ठहराना। (२) आश्रय देना। (३) बसना।

बसेरा लेना—रहना, बसना।

बस्ता बाँधना—काग़ज़-पत्र बाँध कर उठने की तैयारी करना।

बहक चलना—दे० बढ़ चलना।

बहकी बहकी बातें करना—(१) नशे में चूर जैसी बातें करना। (२) बढ़ी चढ़ी बातें करना।

बहक कर बोलना—(१) जोश, अभिमान में कह डालना। सभा में बहक कर बोल गये, मौके पर सिटपिटा गये। (२) मद में चूर बोलना।

बहका ले जाना—धोखा देकर भगा ले जाना, बहू बेटी को बहका ले जाते हैं।

बहती गंगा में हाथ धोना, बहती नदी में पाँव पखारना—अच्छा मौका पाकर काम कर लेना। ऐसे चलते काम में तुम लाभ उठा लो, बहती गंगा में हाथ धोलो फ़िर पता नहीं मौका मिले या नहीं।

बह चलना—(१) पानी सा पतला होना। दाल बह चली। (२) बातों में आकर साथ चल देना। आगये बहकाये में बह चले।

बहता हुआ जोड़ा—बहुत अंडे देने वाला (कबूतर का) जोड़ा।

बहा बहा फिरना—(१) कमीना बन जाना। बाप के मरते ही वह बहा बहा फिरने लगा। (२) द्रव पदार्थ बहुत होना। दूध बहा बहा फिरता था।

बहरा पत्थर, बज्र बहरा—बिल्कुल कम सुनने वाला। खूब जोर से बोलो यह बज्र बहरा है।

बहार पर आना—(१) जवानी

पर आना। (२) फूल खिलना, देखो, आई है कैसी बहार, बहार लूटना। (१) सैर करना। चलो इस बार कश्मीर की बहार लूटैं। (२) रौनक मिटाना। (३) ऐश करना, उसकी बहार तो लूटली अब खोखला जान छोड़ दी।

बहाली करना—उसी स्थान पर करना। बाबू ने निकाला बहू जी ने नौकर को बहाल कर दिया।

बही पर चढ़ना, टकना—हिसाब में लिखा जाना।

बहुत अच्छा—(१) ऐसा ही होगा। (२) कोई परवाह नहीं, देखेंगे। बहुत अच्छा करो दावा देखें क्या कर दोगे ?

बहुत करके—(१) प्रायः, अक्सर। (२) संभव है, सोलह आना, बहुत करके जुर्माना होगा सज़ा नहीं।

बहुत खूब—(१) वाह वाह ! (२) बहुत अच्छा। बहुत खूब ! अच्छा हुआ ले आये जरूरत भी थी।

बहुत दूर की सूझना—(१) भविष्य की कहना। बहुत दूर की सूझी ऐसा ही होगा। (२) ऊँची कल्पना करना।

बहुत नन्हा तत्ता होना—नाराज होना। ऐसे क्यों बहुत नन्हें तत्ते होते हो फिर कभी ला दूँगा।

बहुत पाँव पीटना—अति प्रयत्न करना। कितने ही पाँव पीटो दौलत तो तुम्हें मिलेगी नहीं।

बहुत पापड़ बेलना—बहुत ठोकरें खा चुकना, दुख उठा चुकना।

बहुत है—(व्यंग) कुछ नहीं।

बहुत रूप भरना—नया नया रूप दिखाना।

बाँट पड़ना—हिस्से आना।

बायें हाथ का खेल होना—अति सरल। ये तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है यों ही कर डालूँगा।

बाँदी का बेटा या जना—(१) दोगला। (२) तुच्छ। (३) अति आज्ञाकारी। वह तो मेरी बाँदी के बेटा है मुँह से निकलतेही कर देगा।

बाँस पर चढ़ना, चढ़ाना—(१) बदनाम होना, दुनिया के सामने बाँस पर चढ़े, कुल डुबोया। (२) बहुत बढ़ावा देना। (३) मिजाज़ बढ़ाना, घमंडी कर देना।

बाँसों उछलना—(१) बहुत खुश होना। लौटरी आते ही बाँसों उछलने लगा। (२) ऊँची लहरें आना। समुद्र बाँसों उछल रहा था।

बाँसा फिर जाना—नाक टेढ़ी होना (मरने का समीपी चिन्ह)।

बाँह की छाँह लेना—शरण में आना। वीर की बाँह की छाँह में कैसे इज्जत बिगड़ेगी ?

बाँह चढ़ाना—(१) सम्हल कर तैयार होना। बाँह चढ़ा लो लड़ने आ रहा है। (२) करने को तैयार होना।

बाँह टूटना—सहायक न रहना, छोटे भाई के मरने से मेरी बाँह टूट गई।

बाँह देना—सहायता देना। कीन्ह सखा सुग्रीव कहँ दीन बाँह रघुवीर।

बाँह पकड़ना—(१) सहारा देना। बड़े न बूड़न देत हैं जाकी पकड़ें बाँह। (२) विवाह करना। (३) मौका। राह पड़े जाने या बाँह पकड़े जाने (क०)।

बाँह बुलन्द होना—(१) बलवान, साहसी होना। (२) उदार, दानी हाथ होना। उनकी बाँह बुलन्द थी हजारों लाखों दिये।

बाईं बोल—रक्षा, सहायता का वादा।

बाई का झोंक—(१) क्रोध, आवेग। कभी कभी बाई झोंक आ जाती है, बक देते हैं। (२) वायु-प्रकोप।

बाई चढ़ना—(१) वायु-प्रकोप होना (२) घमंड आदि में व्यर्थ बातें करना।

बाई पचना—(१) वायु का प्रकोप शांत होना। (२) घमंड टूटना।

बाई पचाना—शेखी मिटाना।

बाग ढीली करना—पर्वाह छोड़ देना, ढील देना। जवान है, बाग ढीली की और बिगड़ा।

बाग बाग होना—बहुत खुश होना। मुझे देख कर बाग बाग हो जाती हैं।

बाग मोड़ना—किसी ओर घुमाना। महमूद गज़नवी ने सेना की बाग हिन्द की ओर मोड़ी।

बाग हाथ से छूटना—अधिकार न रहना। मुँहजोर होते ही बाग हाथ से छूट गई।

बाज आना—(१) तोबा करना। (२) खोना। हम १० से बाज आये। (३) दूर होना, बुरी संगत से बाज आओ।

बाज़ करना—रोकना, मना करना। देखिवे ते अँखियान को बाज कै लाजिकै भाजिकै भीतर आई।

बाज़ रखना—रोकना।

बाज रहना—दूर रहना। बाज़ रहो बदमाशियों से।

बाजार करना—खरीदने बेचने जाना। इतवार को मुरसान का बाज़ार करते हैं मंगल को यहाँ का।

बाजार गर्म होना—(१) जोरों पर होना। सन् ३० में गिरफ़्तारी का बाजार गर्म था। (२) व्यापार, काम, खरीद-बिक्री खूब होना।

बाजार तेज होना—(१) माँग

बहुत होना (२) मूल्य बढ़ना। (३) काम खूब चलना।

बाजार दिखाना—वेचने ले जाना, बाजार तो दिखाते कोई तो लेने वाला मिलता ही।

बाजार भाव लेना, पीटना—(१) चलते दामों लेना। (२) खूब पीटना।

बाजार में डंका पीटना—खुल्लम-खुल्ला कहना।

बाजार मंदा होना—(१) माँग कम होना। (२) दाम घटना। (३) काम कम चलना।

बाजार लगना—(१) बिकने को चीज़ रखी जाना। (२) बाज़ार में दुकान खुलना, ११ बजे बाजार लगे तब जाना।

बाजार लगाना—चीजों को इधर उधर सजाना।

बाजी खाना—हारना।

बाजी बदना, लगाना—शर्त करना। पाँच रुपये की बाजी बदी थी कि कौन जल्दी पहुँचे।

बाजी मारना—जीतना, दाँव जीतना। दौड़ में बाजी मारली।

बाजी ले जाना—आगे बढ़ जाना। झूठ बोलने में पिता से भी बाजी ले गये।

बाट करना—रास्ता खोलना।

बाट देखना—इन्तजार करना। बहुतेरी बाट देखी नहीं आये तो अकेला चला गया।

बाट पड़ना—(१) हरण होना, डाका पड़ना। (२) रास्ते में आ तंग करना।

बाट पारना, मारना—रास्ते में लूटना।

बाट रोकना—बाधा देना।

बाट लगाना—(१) मार्ग दिखाना। (२) काम का ढंग बताना। (३) मूर्ख बनाना। ऐसे ऐसे चालाकों को तो बाट लगा दूँ।

बाटली चापना—रास्ता खींच तम्बू तानना।

बाढ आना—नदियों में बहुत पानी आना।

बाढ़ उड़ाना—कतार बाँध कर बन्दूकों के फैर करना।

बाढ़ दगना—लगातार तोप छूटना।

बाढ़ पर होना—उन्नति तरक्की करना।

बाढ़ पर चढ़ना—(१) धार तेज होना। (२) तैयार हो जाना। मेरे शिकायत करते ही वह बाढ़ पर आ गया और उसे निकाल दिया। (३) धोखे में फँसना।

बाढ़ रखना—धार रखना। चक्कू पर बाढ़ रख दो।

बात अंचल में बाँध रखना—हमेशा याद रखना।

बात आइना होना—साफ़ साफ़ ज़ाहिर होना, समझना। उनकी बात मेरे दिल पर आइना हो गई कि जरूर यही था।

बात आना—(१) दे० बात उठना। (२) दोष लगना। मुझ पर बात आई तो इन्कार कर दूँगा।

बात आई गई होना—रफ़ा दफ़ा होना, भूल जाना।

बात उठना—प्रसंग, चर्चा होना। तुम्हें सभापति बनाने की बात उठी उन्होंने उड़ा दी।

बात उठाना—(१) न मानना। (२) मानना, मान रखना। (३) कड़वी बातें सहना। बरसों बातें उठाईं और फल यह मिला। (४) चर्चा छेड़ना।

बात उड़ना—चर्चा फैलना। बात उड़ गई तो बुरा होगा।

बात उलटना—(१) जवाब देना। बड़ों की बात मत उलटो। (२) कहकर पलट जाना। विश्वास क्या बात उलट जाता है।

बात कहते—क्षण भर में, कहते ही। बात कहते ही कर डालो।

बात काटना—(१) खंडन, कहे के विरुद्ध कहना। (२) बीच में बोल उठना। बुरी आदत है उसे कह लेने दो बात मत काटो।

बात का धनी या पूरा होना—सत्य-प्रतिज्ञ, कह कर करने वाला।

बात कान पड़ना—सुनना। बात कान पड़ते ही फैल जायगी।

बात का बतंगड़ करना—मामूली बात को बढ़ा देना। झटपट कह डालो तुमने बात का बतंगड़ कर दिया।

बात का बतंगड़ बन जाना, बनाना—थोड़ी से बहुत बढ़ा देना, बढ़ जाना।

बात का सिर पैर न होना—बेठिकाना, बेमौज़ू बात करना।

बात की तह तक पहुँचना—असली बात या प्रारम्भ तक जान लेना। मैं बात की तह तक पहुँच गया हूँ तभी बेफ़िक्र हूँ।

बात का हेटा—बे एतबार।

बात की बात में—तुरंत, क्षण भर में। बात की बात में क्वेटा ढेर हो गया।

बात खाली जाना—कहना व्यर्थ होना। स्त्री की बात खाली न जायगी, करनी पड़ेगी।

बात खटाई में पड़ना—दे० खटाई में पड़ना, झगड़े में पड़ना।

बात खुलना—छिपी बात जाहिर होना। अब बात खुली कि इसलिये कहा था।

बात खोना—(१) साख बिगड़ना, विश्वास उठाना। (२) इज्जत गँवाना। रुपये दे दो बात मत खोओ।

बात कहे की लाज होना — कहे को निभाना।

बात गढ़ना—झूठ कारण, प्रसंग, बात बना लेना। पूछा कि क्यों नहीं गये ? झट बात गढ़ ली और सुना दी।

बात गई गुजरी होना—भूली बिसरी होना। थोड़े दिनों में बात गई गुजरी हो जायगी, सब भूल जावेंगे।

बात गाँठ या आँचल में बाँधना—कहे को याद रखना, न भूलना। आँचल में बाँध कभी भूल जाओ।

बात गोल कर जाना—साफ़ साफ़ न कहना।

बात घूंट जाना—दे० बात पी जाना।

बात घुलना—बात झंझट में पड़ना या बहुत दिन लगना।

बात चबा जाना—कहते कहते रुक या बदल जाना। आपस में कुछ कह रहे थे मेरे पहुँचते ही बात चबा गये।

बात चलना - चलाना — ज़िक्र आना, छेड़ना। तुम्हारी बात ही नहीं चलाई पूछते क्या ?

बात छेड़ना—चर्चा करना। मैंने बात छेड़ी उन्होंने काट दी।

बात जाती रहना—साख, इज्जत, वायदे का इतबार जाता रहना।

बात जमाना— दिल में बैठ जाना।

बात टल जाना — भूली बिसरी होना।

बात टलना—कहा व्यर्थ जाना। मेरी बात टल सकती है ? जो कहूँगा होकर रहेगा।

बात ठहरना, ठहर जाना—(१) मामला तै हो जाना। (२) व्याह स्थिर होना।

बात टालना—(१) कहे की पर्वा न करना। (२) पूछी बात का जवाब न देना।

बात डुबो देना—इज्जत गवाँ देना, उसने सारे घर की बात डुबो दी।

बात दर्पण होना— हाल साफ़ साफ़ जाहिर होना।

बात दुलखना — बात दिल में खटकना।

बात दब जाना—स्थापित होना, भूली या छोड़ी जाना।

बात दुहराना—(१) पूछी हुई बात फिर कहना। (२) उलट कर जवाब देना। बड़ों की बात दुहराते हो ?

बात न आना—मुँह से शब्द न निकलना। बहुत सीधा है बिचारे से बात नहीं आती।

बात न करना—घमंड से न बोलना। बात भी नहीं करते ऐसे लाट साहब बन गये हैं।

बात न पूछना—इज्जत, स्वागत न

करना। बुरे बदनाम की कौन बात पूछे ?

बात निकालना—बात चलाना।

बात नीचे डालना—अपनी बात का खंडन होने देना। हजार खर्च कर दूँगा पर बात नीचे न डालूँगा।

बात पक्की करना—(१) मामला पूरी तरह तै करना। (२) वायदा कराना, उन्होंने पक्की बात कर दी कल दे देंगे।

बात पकड़ना—(१) तर्क, हुज्जत करना। (२) कहने वाले की बातों का उलटा अर्थ कहना।

बात पचना—दिल में रख छोड़ना। तुम्हें बात नहीं पचती, कह देते हो।

बात पर जाना—(१) कहने का विश्वास करना। उसकी बात पर जाओगे तो धोखा खाओगे। (२) कहने का ख्याल करना।

बात पर बात आना—एक सिलसिले में दूसरा जिक्र आना। बात पर बात आ गई अतः कह दी।

बात पलटना—(१) कह कर बदल, मुकर जाना। (२) प्रश्न के शब्दों में ही जवाब देना।

बात पल्ले में बाँधना—खूब याद रखना। उस दिन से बात पल्ले में बाँध ली अब कभी न दूँगा।

बात पाना या लेना—(१) छिपी बात, गूढ़ार्थ जान लेना। (२) असल समझना।

बात पड़ना—(१) प्रसंग आना (२) मौक़ा पड़ना।

बात पी जाना—दे० सुनी अन सुनी करना। (२) बुरी बात सह जाना। उस वक्त तो बात सह गया फिर बदला लिया।

बात पूछना—(१) क़द्र करना। (२) सुख दुख का ध्यान, खबर रखना। मैं बीमार पड़ा था तो तुमने बात पूछी थी? जो सेवा करूँ।

बात फूटना—(१) मुँह से निकलना। (२) छिपी बात का फैलना।

बात फेंकना—ताने मारना, व्यंग्य छोड़ना। तुम्हारे बहाने हम पर बात फेंकी।

बात फेरना—(१) समर्थन करके बड़ी करना। (२) प्रसंग उड़ाकर दूसरी बात छेड़ना। उन्हें क्यों सुनाते? उनके आते ही बात फेर ली।

बात बड़ी करना होना—बात की इज्जत करना।

बात बढ़ना, बढ़ती चली जाना—विवाद, झगड़े रूप में हो जाना। पहिले यों ही कहा सुनी हो रही थी धीरे धीरे बत बढ़ गई।

बात बढ़ाना—(१) विवाद, झगड़ा

करना। क्यों बात बढ़ाते हो फैसला कर लो। (२) किसी का समर्थन करना।

बात बदलना—मुकरना, बदलना।

बात बनना—(१) इज़्ज़त होना। (२) काम ठीक हो जाना। लोग हँसी उड़ाते, तुम्हारे आने से बात बन गई। (३) साख रहना।

बात बन पड़ना—(१) कह सकना। (२) इज़्ज़त मिलना। (३) मामला तै हो जाना।

बात बनाना, सँवारना—(१) काम बनाना। वह तो सारा काम बिगाड़ चुका था तुमने आकर बात बना दी। (२) इज्जत बनाना। (३) झूठी या बढ़ाकर कहना।

बात बना लेना—यश, मान पा लेना।

बात बहना—चर्चा फैल जाना।

बात बात में—(१) हर बात में। बात बात में झूठ बोलता है। (२) बार बार। (३) हर काम में। बात बात में बिगड़ उठते हो।

बात बात में मोती पिरोना—सखुन साज़ी करना, लफ़्फ़ाजी दिखाना।

बात बिगड़ना—(१) काम न बनना। तुम्हारे जाने से बात बिगड़ गई वरना दस्तख़त हो जाते। (२) मामला चौपट हो जाना। (३) इज़्ज़त जाना (४) हैसियत जाना।

बात बिगाड़ना—(१) काम बिगाड़ना। (२) इज़्ज़त गँवाना। (२) बदनाम करना।

बात मात करना—चाल न चलने देना, चाल में न आना, न फँसना।

बात मारना—(१) ताने मारना। (२) डींग हाँकना। (३) और और कहना असली दवा जाना।

बात मुँह पर लाना—कह बैठना, चर्चा कर बैठना। ऐसी बात कभी मुँह पर भी न लाना।

बात में पख निकालना—एतराज करना।

बात में बात निकालना—कहने में गलती पकड़ना।

बात में फूल झड़ना—दिलचस्प होना, आप पसंद होना।

बात रखना—(१) हठ करना। अपनी ही बात रखोगे या मेरी भी मानोगे? (२) इज्जत रखना। (३) कहे अनुसार करना। कहा है तो खचेंगे बात जो रखनी है।

बात रखना—किसी की (१) कहना मानना। (२) मन की सी कर देना। (३) किसी पर दोष लगाना।

बात रख लेना—बिगड़ने न देना।

बात रह जाना—(१) मान रह जाना। (२) याद रह जाना। (३) प्रार्थना स्वीकार होना।

बात बनाना—(१) व्यर्थ की, झूँठ मूठ की बातें करना। (२) बहाना करना। क्यों बातें बनाते हो वह तो वहीं था। (३) खुशामद करना। कितनी बातें बनाई तब खुश हुए। (४) डींग हाँकना।

बात मिलाना—(१) बातें बनाना। (२) हाँ में हाँ मिलाना, सुहाती बातें करना।

बात लगना—ब्याह आदि का प्रस्ताव होना।

बात लगाना—(१) निंदा, किसी के विरुद्ध कहना। उसने मालिक से जाकर बात लगाई कि मैंने तोड़ा। (२) ब्याह ठीक करना।

बात लाना—विवाह का प्रस्ताव लाना। नाई बात लाया है, ब्याह करोगे?

बात हलकी, देरी होना—विश्वास, इज़्ज़त, पसंदगी न होना।

बात हारना—वायदा कर देना। उनसे बात हार दी वरना तुम्हें दे देता।

बात है—सच नहीं, कहने भर को है।

बातें छाँटना, बातें बघारना—(१) शेखी जताना, शेखी मारना। क्यों बातें छाँटते हो क्या हम तुम्हारी हालत नहीं जानते? (२) व्यर्थ बोलना।

बातें सुनाना—ऊँच नीच, भली-बुरी, कड़वी बातें कहना।

बातों आना—दे० बातों में आना।

बातों का तार बाँधना—बके जाना, कहे जाना।

बातों का धनी—कहने को खूब करने को कुछ नहीं।

बातों की झड़ी बाँधना—लगातार, बात पर बात कहते जाना। कितने ही किस्से याद हैं, बातों की झड़ी बाँध देते हैं।

बातों पर जाना-बातों बातों में—बात चीत करते हुए। बातों बातों में वह सब कुछ कह गया।

बातों में आना—धोके में फँस जाना। और आती हैं ऐसी घातों में, मैं न आऊँगी तेरी बातों में।

बातों में उड़ाना—(१) हँसी में टालना। (२) टालमटूल देना।

बातों में धर लेना—किसी की बातों से ही उसे फँसा लेना। अदालत में ज्यादा कहोगे तो वकील बातों में धर लेगा।

बातों में फुसलाना—सिर्फ बातों से संतुष्ट करना।

बातों में लगाना—बात चीत में किसी का ध्यान लगाये रखना।

बातों में बहलाना, फुसलाना—केवल बातों से संतुष्ट करना। लिख कर दो बातों में मत बहलाओ।

बाद बढ़ाना—झगड़ा बढ़ाना।

बाद मेलना—शर्त, बाजी, बदला, लगाना। बाद मेलि कै खेल पसारा।

बादल उठना, चढ़ना — किसी दिशा से बादल आना। दक्षिण से बादल उठा है वर्षा होगी।

बादल घिरना, छाना—घटा घिर आना। सारे आकाश में बादल छा गए हैं।

बादल गरजना—बादलों से कड़-कड़ाहट, घनघोर निकलना। जो बादल गरजते हैं बरसते नहीं।

बादल छँटना फटना — बादल टुकड़े टुकड़े होना।

बादलों से बातें करना — बहुत ऊँचे उठना। पतंग तो बादलों से बातें कर रही है।

बाधा डालना, देना — विघ्न, रुकावट खड़ी करना। बने बनाये काम में बाधा मत डालो।

बाधा पड़ना, पहुँचना — रोक, हानि होना। तुम्हारे मना कर देने से बड़ी बाधा पहुँची।

बाना (मुँह किसी वस्तु के लिये) — लेना चाहना। क्यों मुँह बाते हो तुम्हें न मिलेगा।

बाना निकलना—बात निकलना।

बानी बोलना—ताना मारना।

बानी मानना — (१) मनौती मानना। (२) प्रतिज्ञा करना।

बाप का—पुरखाओं का। तुम्हारे क्या बाप का माल है जो न बिगाड़ो कहते हो?

बाप तक (पहुँच) जाना— बाप की गाली देना या अशक्यता दिखाना। तू क्या तेरा बाप नहीं कर सकता। अजी! बाप दादा तक क्यों पहुँचते हो?

बाप दादा—पुरखा।

बाप बनाना—(१) आदर करना। (२) खुशामद करना। बड़ा मत-लबी है वह गधे को बाप बना ले।

बाप दादा का नाम डुबोना— खान्दानी इज़्ज़त को खोना।

बाप माँ—रक्षक। मेरे तो बाप माँ आप ही हैं।

बाप रे—दुख या आश्चर्य सूचक वाक्य। बापरे! यह क्या हुआ।

बाँय देना—(१) बचा जाना। (२) ध्यान न देना। (३) फेरा देना। चौंसठ कूआ बाँय दिवावे, तो भी निन्दक नरकहि जावे।

बायन देना—छेड़ छाड़ करना। भले भवन अब बायन दीन्हा, पावहुगे फल आपन कीन्हा।

बायाँ देना—(१) कतरा, बचा जाना। रास्ते में मिलें तो बायाँ दे जाना। (२) जान कर छोड़ना। बायों दियो विभव कुरुपति को।

बायाँ पाँव पूजना — धाक, हार मानना। तुम्हारा बाँया पाँव पूजें तुम जीते हम हारे।

बायें हाथ का काम, खेल— अति सरल काम यह तो मेरे बाँयें

हाथ का खेल है यों ही कर डालूँगा।

बायें होना — नाखुश या विरुद्ध होना। बुरे दिनों में सब बायें।

बार करना — जहाज़ से बोझ उतारना (जहाज़ी)।

बारबार—फिर फिर, पुनः पुनः। बारबार बूझैं तुम कौन होजू!

बार लगाना—देर लगाना। बड़ी बार लगी कहाँ रह गये थे?

बारनिश करना—रोगन, चमक चढ़ाना।

बारह पानी का—बारह बरस का सूअर।

बारह बच्चे वाली—सूअरी।

बारह बाट करना, घालना—तितर बितर करना।

बारह बाट जाना, होना—(१) अलग अलग होना। फूट पड़ते ही सारा घर (घर के आदमी) बारह बाट हो गया। (२) नष्ट भ्रष्ट होना।

बारह पत्थर बाहर करना—सीमा से निकालना।

बारात उठना—बारात चल देना। नौ बजे बारात उठेगी।

बारेतें—(१) बचपन से। (२) जलाने से।

बारीकी निकालना—सूक्ष्म, हर कोई न समझ या देख सके ऐसी बात खोजना।

बारी बाँधना—आगे पीछे वक्त नियत करना। बारी बाँधलो एक दिन मैं एक दिन तू।

बारी बारी से — क्रम से, आगे पीछे। बारी से आओ एक साथ नहीं।

बारी रहो—किनारे चलो (पा० क०)।

बारूद गोली—(१) लड़ाई का सामान। (२) तैयारी, सामग्री। गोली बारूद तैयार कर लूँ फिर मुकदमा लड़ाऊँगा।

बाल आना, होना—(१) बाल उगना। (२) बच्चा होना। (३) लकीर पड़ना; टूटने का असर होना।

बाल की खाल खींचना—सूक्ष्म भेद निकालना। तुम भी ऐसा तर्क करते हो कि बाल की खाल खींच लेते हो।

बाल धूप में सफेद होना—बूढ़ा होकर भी तजुरबेकार न होना। जाओ भी तुम्हारे बाल भी धूप में ही सफेद हुए, ये भी नहीं समझ सकते?

बाल न खिसना (नहाते)—कष्ट न होना। नित उठि यहै मनावत देवन न्हात खसै जनि बार।

बाल पकाना (किसी काम में)-बुड्ढा होना, खूब अनुभवी होना। वे इस काम की रग रग जानते

हैं, उन्होंने इसी में बाल पकाये हैं।

बाल बराबर लगी न रखना—कोई कोर कसर न करना।

बाल बराबर न समझना—तुच्छ, कुछ भी न परवा करना।

बाल बाँका न होना—कुछ न बिगड़ना। उससे मेरा बाल भी बाँका नहीं हो सकता।

बाल बाँधा निशाना उड़ाना—ठीक निशाना लगाना। बाल बाँधा निशाना था, वह बात ऐसी चुभती थी कि कहते ही उसने दे दिये।

बाल बाल बचना—थोड़ी कसर रहना। उन्होंने जो गोली मारी, मैं बाल बाल बचा।

बाल लेना—बाल नोचना, सिर मूँडना।

बाला बाला—(१) बचा ही। (२) ऊपर ही ऊपर। तुमने हम से कहे बिना बाला बाला अर्जी भेज दी। (३) बाहर बाहर। तुम बाला ही बाला चले गये मेरे यहाँ न आये। (४) ऐसे कि किसी को पता न लगे।

बाला भोला—बहुत सीधा।

बालू की भीत—शीघ्र नष्ट होने वाली, वे भरोसे। ओछे जन की प्रीति अरु बालू की भीत बिनसत बार न ला गई।

बाव भड़कना—बकना, सौदाई हो जाना।

बाव रसना, सरना—पाद आना।

बावन गज का—चालाक, बदमाश। लंका में सब बावन गज के, लो ये भी यही माँगते आये।

बावन तोले पाव रत्ती—बिल्कुल ठीक। आपकी हरेक बात बावन तोले…।

बावन वीर—बहुत वीर या चतुर।

बासी कढ़ी में उबाल आना—(१) बुढ़ापे में जवानी की उमंग। (२) असमर्थ में समर्थता। (३) समय जाने पर इच्छा।

बासी मुँह—(१) सवेरे सवेरे बिना खाये। बासी मुँह दवा पियो।

बाहर आना, होना—सामने आना, प्रकट होना।

बाहर करना—दूर करना, हटाना।

बाहर का—पराया, बेगाना।

बाहर बाहर—अलग अलग, ऊपर ऊपर, बिना मिले। यहाँ आये पर बाहर बाहर चले गये।

बिकना (किसी के हाथ)—गुलाम होना। नौकरी की है बिके नहीं जो २४ घंटे करें।

बिखरना—हठ करना, नाराज होना। बस इतनी बात पर बिखरने लगीं!

बिगड़ बैठना—लड़ने लगना, रूठना।

बिगाड़ होना—नुकसान होना। तुम्हारा क्या बिगाड़ हुआ जो नाराज़ होते हो ?

बिजली कड़कना—बिजली कड़के मेहा बरसे।

बिजली गिरना, पड़ना—कुटी में बिजली पड़ी वह मर गये।

बिध मिलाना—जमा खर्च या जन्म पत्री मिलाना। २) का फर्क है विधि नहीं मिलती।

विपद का खुल खेलना — खूब विपत्ति आना।

बिरादरी से खारिज, बाहर होना—जात बाहर होना। अछूत के घर खाओगे बिरादरीबाहर होगे।

बिन ढूँढ़ते फिरना—बचने का मौका ढूँढ़ना। अगर उससे लड़े तो थोड़ी देर में बिल ...।

बीच (बिचाव) करना—(१) झगड़ा मिटाना। (२) लड़ने से रोकना। गुत्थम गुत्था हो रही थी मैंने बीच किया।

बीच खेत—(१) सब के सामने खुले मैदान। (२) अवश्य ही।

बीच बीच में—कभी कभी, थोड़ी थोड़ी देर या दूरी पर।

बीच पड़ना—(१) मध्यस्थ होना। बुरे के बीच पड़े गालियें खाईं। (२) बदलना। परै न प्रकृतिहि बीच कोटि जतन कोइ करै।

बीच पाखा, डालना—(१) भेद करना। (२) बदलना।

बीच में कूदना, पड़ना—(१) पंच बनना। (२) जिम्मेदार बनना। बीच में कूदोगे तो घाटा भरना पड़ेगा।

बीच में देना, बीच देना — (१) मध्यस्थ बनाना (२) साक्षी बताना।

बीछी चढ़ना- बीछू का जहर सा चढ़ना। राम गमन सुनि बीछी चढ़ गई।

बीच रखना—भेद,छिपाव करना। क्यों साहब ! जिगरी दोस्तों से भी बीच रखते हो ? नहीं बताओगे ?

बीच में रख कर कहना—शपथ खाना। कुरान बीच में रख कर कहो।

बीड़ा उठाना—दे० पान उठाना।

बीड़ा देना— दे० पान देना।

बीस बिस्वे—अधिक निश्चित, संभवतः। बीस बिस्वे तो कल ही मिल लूँगा।

बुकटा भरना—नौचना (स्त्री) निगोड़ी ने ऐसा बुकटा भरा कि छाती में अबतक मेरी दर्द है।

बुखार निकालना—दे० मु० २८५२।

बुड़भस लगना—बुढ़ापे में मसखरी सूझना (स्त्री)।

[६३७५]

बुझाना जहर में—शस्त्रों को जहरीला बनाना। तुम्हरी तो बातें भी जहर में बुझी हैं।

नोट—बुद्धि के मुहावरे 'अक्ल' में देखो।

बुरा फँसना—विपत्ति में पड़ना।

बुरा मानना—बैर रखना, खार खाना।

बूँटा सा क़द—ठिगनी (स्त्री)।

बूँद भर—जरा सा।

बूँदें गिरना, पड़ना—थोड़ी वर्षा होना।

बूर का लड्डू—देखने में अच्छा, बड़ा पर बे काम।

बेंत की तरह काँपना—थर थर काँपना। लड़का अपको देखते ही बेंत की तरह काँप जाता है।

बेगार टालना—बिना मन लगाये काम (ठीक न) करना। बनाया है या बेगार टाली है?

बेच खाना—खो देना। शर्म तो बेच खाई है, बड़ा बेशर्म है।

बे चिराग करना—घर उजाड़ना। बेचिराग कर दूँगा बैर मत बाँधो।

बेटा बनाना—गोद लेना। मुझे अपना बेटा बनालो देखो कैसी सेवा करूँ।

बेटी रोटी करना—विवाह संबन्ध करना।

बेटे वाला—वर का पिता।

बेड़ा उठाना—कष्ट कर काम कन्धे लेना। सारे गाँव को रोटी देने का बेड़ा उठाया है।

बेड़ा डूबना—दुख में पड़ नाश होना। पापी का बेड़ा मझधार में डूबे।

बेड़ा पार करना, लगाना—संकट से छुड़ाना, सहायता कर के काम पूरा करना। प्रभुजी बेड़ा पार लगाओ।

बेड़ापार होना—संकट, कष्ट से छूटना। यह काम हो जाय तो बेड़ा पार होगया समझो।

बेड़ा बाँधना—लोग इकट्ठे करना।

बेतुकी हाँकना दे० बेसिर पैर की बात ·।

बे तै करना—अबे तबे बोलना।

बेनुक़त सुनाना—गाली देना, खरी खरी सुनाना। मैंने साले को बेनुकत सुनाईं।

बेपर की उड़ाना—झूठी या बेढंगी बातें फैलाना कहना। बेपर की उड़ाते हो, ऐसा भी कहीं हो सकता है।

बे पेंदी का लोटा—बहकावे में आजाने वाला। उसमें गाँठ की अक्ल नहीं वे पेंदी के लोटे हैं चाहे जिधर लुढ़क जाते हैं।

बे भाव की पड़ना—बहुत फटकार या मार पड़ना। यहाँ से तो ऐंठते गये पर वहाँ बेभाव की पड़ीं।

बेरुख होना—प्रेम न करना।

बेल बढ़ना—वंश बढ़ना। एक

से वेल बढ़ी आज उसी कुटुम्ब में बीस हैं।

बेल मँढे चढ़ना—अंत ठीक ठीक होना ।

बे लगाम होना—अनुचित भी कहदेना । वे लगाम है सबके सामने भी कह देता है।

बे सिर पैर की बातें करना—वेढंगी वेसिर पैर की कहते हो भला कहाँ दिल्ली कहाँ बम्बई।

बेहयाई का जामा, बुरका पहनना, ओढ़ना—बेशर्म होना।

बैठ रहना—(१) देर लगाना। बाजार जाकर ही बैठ रहे। (२) निराश होना। (३) नौकरी छोड़ना। दो दिन तो आये फिर बैठ रहे।

बैठते उठते—सदा, हर दम। बैठते उठते वही रट लगी रहे।

बैठना उठना—(१) संग में समय बिताना। (२) संग रहना, मेल होना। उसके यहाँ मेरा बैठना है मैं कह दूँगा।

बैठे बिठाये—(१) व्यर्थ, अकारण। (२) अचानक, एकाएक। बैठे बिठाये इस आफ़त में पड़गये।

बैठे बैठे—(१) बेकार, बेमतलब। (२) अचानक। बैठे बैठे क्या सूझी कि बम्बई चल दिये। (३) अकारण।

बैठे बैठे सूखना—सुख मिलते दुर्बल होना।

बैठे रहना—काम न करना।

बैठे रहो—(१) चुप रहो। बैठे रहे तुम्हें क्या मतलब। (२) अलग रहो।

बैर काढ़ना, निकालना—बदला लेना।

बैर ठानना—शत्रुता करना। मेरे से बैर ठानोगे तो पिस मरोगे।

बैर डालना—दुश्मनी पैदा करना।

बैर पड़ना—दुख देना। मेरे बैर क्यों पड़े हो मैंने क्या बिगाड़ा है?

बैर बढ़ाना—शत्रुता के काम करना। कई काम करके और बैर बढ़ा लिया है।

बैर बिसाहना, मोललेना—बैरी पन पैदा करना। मेरी बुराई करके व्यर्थ बैर बिसाहा।

बैर मानना—दुश्मनी रखना।

बैर लेना—बदला लेना। लैहों बैर पिता तेरे को जैहो कहाँ पराई।

बैस चढ़ना—जवानी आना।

बोझ उठना, उठाना—भारी काम सिर पर लेना, मैंने गृहस्थी का बोझ उठा रखा है।

बोझ उतरना—कठिन पूरा होना।

बोझ उतारना—(१) दे० बेगार टालना। (२) खटका मिटाना। सब रुपया जमा करके दावे का खटका मिटाओ। (३) कठिन काम से छुटकारा देना।

बोझ होना—(१) आफ़त होना।

(२) कठिन होना। लड़की के ब्याह का बोझ है।

बोटी बोटी काटना—टुकड़े टुकड़े करना।

बोटी बोटी फड़कना — अति चंचल तथा शरारती होना।

बोतल चढ़ाना — शराब पीना। दो बोतल चढ़ा गया पर नशा न हुआ।

बोतल पर बोतल चढ़ाना—बहुत मद्य पीना। बोतल पर बोतल चढ़ाई बेहोश होते ही!

बोरिया बधना उठाना — चल देना।

बोरी बाँधना—चल देना। महाराज यहाँ से बोरी बाँधो।

बोल उठना — एकाएक कहने लगना। बीच में क्यों बोल उठे?

बोल जाना—(१) हार मान लेना। इतनी दौड़ में बोल गये? (२) दिवाला होना। (३) सिटपिटा जाना। (४) पुराना होना। यह जूता चार महीने ही में बोल गया। (५) बाकी न रहना। मिठाई बोल गई और मँगाओ। (६) मर जाना (अशिष्ट)।

बोलती मारी जाना — मुख से शब्द न निकलना।

बोल-बाला रहना, बोल बाला होना — (१) सम्मान और आदर होना। वह जब तक जिये उनका बोल बाला ही रहा। (२) प्रसिद्धि होना। (३) बात की साख होना। अभी तो बोल बाल है किसी से लाख मँगा लूँ।

बोल मारना—ताना देना। बुरे दिनों में तुम भी बोल मारो, हँसी उड़ाओ!

बोलि पठाना—बुला भेजना। भूप बोलि पठये मुनि ज्ञानी।

बोली कसना, छोड़ना, बोलना, मारना—ताना, व्यंग्य, उपहास करना। अब मुझ पर भी बोली कसने लगे?

बोह लेना—गोता लगाना।

ब्याह पीछे बरात—अवसर पीछे काम।

ब्यौंत खाना, फैलना—(१) पूरा हिसाब किताब बैठाना। (२) ठीक ठीक व्यवस्था इन्तज़ाम बैठना।

ब्यौंत बखानना—बहाना करना। लोगन बूझत ब्यौत बखानो।

ब्यौंत बाँधना—आयोजन करना। १००) का तो ब्यौंत बाँध लिया है ५०) की कसर है।

ब्रहम लगना—ब्राह्मण प्रेत चढ़ना।

ब्रह्माण्ड चटकना—(१) खोपड़ी फटना। (२) अधिक गरमी या ताप से सिर में पीड़ा होना।

ब्रह्मा बनना — बनाने वाला या आदि कर्ता बनना। हर काम के ब्रह्मा बन बैठते हो।

भ

भंग के भाड़े में जाना—व्यर्थ में जाना। कूँडी सोटा भंग के भाड़े में गया।

भंग छानना—भाँग की पत्ती पीस पीना।

भंडा फूटना—पोल, भेद खुलना।

भंडा फोड़ना—दे० पोल खोलना।

भँवर में पड़ना—(१) आपत्ति चक्कर में फँसना। (२) घबरा जाना। ऐसे भँवर में पड़े हैं कि बचने का रास्ता ही नहीं मिलता।

भगत बाज़—(१) लौंडे नचाने वाला। (२) लौंडों का स्वाँग बनाने वाला।

भगल गाँठना, निकालना—षड-यंत्र रचना।

भटका फिरना—खोज में मारे मारे फिरना।

भट्टी दहकना—खूब आय होना (व्यंग्य)।

भद्र होना—सिर मूँछ मुँड़ना।

भद्रा उतरना—हानि होना।

भद्रा लगाना—बाधा पैदा करना।

भनक पड़ना—हमारे कान में भनक पड़ गई थी कि तुम जाओगे।

भभकी देना—घुड़की देना, रौब दिखाना।

भभकी में आना—रौब में डर कर आना। मैं तुम्हारी भभकी में आने वाला नहीं।

भभूका बनना, होना—क्रोधित होना। सुनते ही वह तो आग भभूका बन गये।

भभूके उठना—लपटें उठना।

भय खाना—डरना।

भरती करना—जोड़ना, मिलाना।

भरती का—रद्दी, स्थान पूरा करने को रखा जाय। लेख में एक शब्द भरती का न हो।

भर नज़र देखना—अच्छी तरह देखना।

भर पाना—मिल जाना। मैंने सारे रुपये भर पाये की रसीद लिखदी।

भरम खुलना—भेद खुलना।

भरम खोना—विश्वास खोना। वह जानता है मैं लखपती हूँ और मैं उसका भरम नहीं खोना चाहता।

भरम गँवाना—भेद खोलना या विश्वास तोड़ना। घर का भरम तो सब के सामने नहीं गँवाया जाता।

भरम बिगाड़ना—दे० भंडा फोड़ना।

भरमार कर देना—अधिकता करना। जरूरत पर रुपयों की भरमार कर दी।

भरा पूरा—(१) सुखी, संपन्न। (२) त्रुटि रहित, पूर्ण।

भरे बैठे हैं—तैयार हैं।

भला करना—लाभ पहुँचना।

भले ही—चाहे, ऐसा हुआ करे।

भले ही वे जान से मारदें मैं न कहूँगा।

भाँग खा जाना, पी जाना—नशे, पागलपन, नासमझी की बातें करना।

भाँग न होना (घर में भूँजी)—अति दरिद्र होना।

भाग खड़ा होना—दे० पाँव उखड़ जाना।

भाँजी मारना—चुगली शिकायत करना।

भाँडा फूट जाना—भेद खुल जाना।

भाँड़े भरना—पछताना।

भाँड़े में जी होना—दिल लगा होना।

भाग्य के मुहावरों के लिये 'क़िस्मत' के मुहावरे देखें—

भाड़ झोंकना—फिजूल समय गँवाना, तुच्छ काम करना। बारह बरस दिल्ली में रहे बस भाड़ झोंका, अक़्ल न आयी।

भाड़ में जाय—न रहे, जाता रहे मुझे क्या।

भाड़ में झोंकना—(१) जलाना। (२) फेंकना। (३) त्यागना। भाड़ में झोंको हम क्या करेंगे इसका?

भाड़े का टट्टू—थोड़े दिन तक का। तुम भाड़े के टट्टू तो हो नहीं जो जल्दी जाने की सोची, स्वतंत्र हो।

भाड़े पड़ना—हवा की ओर नाव चलाना।

भाड़े फेरना—हवा के रुख नाव फेरना।

भाप भरना—चिड़ियें बच्चों के मुँह में भाप भरती हैं।

भाप लेना—बफारा लेना पानी की गर्मी से अंग सेकना। दो दिन भाप लोगे तो दर्द न रहेगा।

भार उठाना, उतरना, उतारना—दे० बोझ उठाना आदि।

भारी पैर होना—गर्भ होना।

भारी भरकम—बड़ा, भारी, मूल्यवान। कोई भारी भरकम ही खरीदने वाला हो जब भारी भरकम चीज़ ख़रीदे।

भारी रहना—(१) नाव रोकना (मल्लाह)। (२) धीरे धीरे चलना (कहार)। (३) चुप रहना (दलाल)।

भारी होना—कठिन होना। बहुत भारी बात है समझ कर करना।

भारी (पेट, सिर, गला) होना—पेट में अपच, सिर में दर्द और गला भर्राया हुआ होना।

भाव उतरना, गिरना—दाम घटना।

भाव चढ़ना—तेज़ी होना।

भाव ताड़ना—(१) दिल की समझना। (२) भविष्य की तेजी मंदी सोचना।

भाव देना—(१) मन के भाव प्रकट करना। (२) कविता की सामग्री देना। (३) तेजी मंदी लिख देना।

भाव बताना—काम न करके सिर्फ नखरा जाहिर करना।

भाव बहना—एकसा भाव होना, तेजी या मंदा होता चला जाना।

भावें न होना—परवा न होना। यहाँ घर लुट रहा है उसके भावें नहीं है।

भिड़ के छत्ते को छेड़ना—भयंकर से वैर बाँधना।

भिनकना मक्खियाँ—(१) अति गंदा होना। उसके घर मक्खियें भिनकती हैं। (२) अति असमर्थ हो जाना।

भीगी बिल्ली होना—दब जाना, चुप होना। मतलब निकलाते वक्त तो बिलकुल भीगी बिल्ली बन जाता है।

भीड़ चीरना—भीड़ इधर उधर हटा कर मार्ग बनाना।

भीड़ छँटना—बहुत अधिक आदमी न रहना।

भीड़ पड़ना—(१) जल्दी होना। ऐसी क्या भीड़ पड़ी है कल कर लेना (२) आफ़त आना। ऐसी क्या भीड़ है जो अभी चलें।

भीत में दौड़ना—असंभव, सामर्थ्य से बाहर करना। 'नाह दिवाल की राह न धावो'।

भीत के बिना चित्र बनाना—बे सिर पैर, अप्रमाण की बात।

भीतर का कूँवा—अच्छा, उपयोगी पर निरर्थक। सूरदास प्रभु बिन जोबन घर भीतर को कूप।

भीतर बैठ कर देखना—असलियत पहचानना। सब तो रईस बताते हैं पर मैंने तो भीतर बैठ कर देखा है वह कितना रईस है।

भीतर ही भीतर—मन ही मन हृदय में। भीतर ही भीतर सब मुझसे कुढ़ते हैं।

भीम के हाथी—जाकर न लौटने वाले। अब मन भयो भीम के हाथी सुपने अगम अपार।

भुगत लेना—निपट लेना। आप दे दो उनसे तो मैं भुगत लूँगा।

भुज में भरना—आलिंगन करना। पिय भुजभरि अब कंठ लगाऊँ।

भुजा उठाना—प्रतिज्ञा करना। मैं भुजा उठाकर कहता हूँ कि मरते दम तक साथ दूँगा।

भुन भुन करना—कुढ़ कर बुड़बुड़ाना।

भुरकुस निकलना—(१) चूर चूर होना। (२) पिटने में हड्डी हड्डी चूर चूर होना। (३) नष्ट होना।

भुरकुस निकालना—(१) चूर चूर करना। (२) नष्ट करना।

(३) किसी काम का न छोड़ना।

भुरता कर देना—कुचल, दबा कर चूर चूर कर करना। मारते मरते भुरता कर दूँगा।

भुस के मोल मलीदा होना—बेकद्री होना।

भूख मरना—बिना खाये भूख न रहना। बारह बजे तक भी खाना न मिले तो मेरी भूख मर जाती है।

भूख लगना—खाने की इच्छा होना।

भूखा रहना—कुछ न खाना। भूखा रह कर काम करता रहा।

भूखे प्यासे-बिना खाये पिए। महिनों भूखे प्यासे बिताए आखिर मर गया।

भूखों मरना—भूख में भोजन न मिलने का कष्ट उठाना।

भूत उतारना—ऐंठ, हठ (पीटकर) दूर कर देना। कहो तो अभी तुम्हारा भूत उतार दूँ?

भूत चढ़ना—(१) धुन, हठ होना। तुम्हें तो भूत चढ़ता है फिर किसी की भी तो नहीं सुनते। (२) बहुत क्रोध आना।

भूत बनना—(१) काम में डूबना, लगना। दिन भर भूत बना रहता हूँ रात को तो आनन्द करूँ? (२) नशे में चूर होना। (२) क्रोध में आना। जब वह भूत बनते हैं तो सब चीज़ फेंक देते हैं।

भूत बनकर लगना—पीछा ही न छोड़ना। भूत बन कर पीछे लगा है एक पल चैन नहीं लेने देता।

भूत सिर पर सवार होना—दे० भूत चढ़ना।

भूमि होना—पृथ्वी पर गिरना। वीर मूर्छि तब भूमि भयो जू।

भूल के करना—भ्रम में कर बैठना। भूल कर तुम्हारे साथ आगया यह पता होता तो कभी न आता।

भूल के न करना—कभी भी, कैसे भी न करना। भूल कर भी तुम्हारे पास न आऊँगा।

भूल के आना—गलती से आना। भूल के यहाँ आ गया मुझे तो वहाँ जाना था।

भेजा खाना, भेजा पकना-दे० सिर खाना।

भेड़ियाधसान—बिना फल सोचे दूसरों के पीछे चलना। अपनी समझ से भी काम लो भेड़िया धसान में नुकसान ही होगा।

भैंस काटना - गरमी, उपदंश होना (बाजारू)

भौंह चढ़ाना, तानना—नाखुश होना। मुझे देखते ही भौंह चढ़ाली, मैं समझ गया क्रुद्ध हैं।

भौंह ताकना-रुख, मौका देखना। भौंह तक कर अमीरों का काम करो, सफल होंगे।

भौंह जोहना—खुश करने को इशारे पर चलना, खुशामद करना।

भौंह दिखाना—डर दिखाना। मुझे क्या भौंह दिखाते हो मैं डरने वाला नहीं।

भौचक रह जाना--हक्का बक्का, स्तम्भित हो जाना। मैं तो यह देख कर भौचक रह गया तिलकधारी के ये काम।

म

मंजिल मारना—(१) बड़ा काम करना। (२) बहुत दूर पैदल चलना। तुम ५० मील आये यह मंजल मारी मै कंजूस से रुपये लाया यह मंजल मारी।

मंझा देना—माँजना, लेस चढ़ाना।

मंडल बाँधना—(१) गोलाई में चलना। मंडल बाँध कर नाची। (२) घेरना। बादल मंडल बाँध कर बरसे। (३) चारों ओर अँधेरा छा जाना। (४) षड़यन्त्र रचना। मेरे खिलाफ़ दुश्मनों ने मण्डल बाँधा है।

मंडी लगना—बाज़ार, पेंठ खुलना।

मंत्र देना—(१) चेला बनाना। (२) सलाह देना।

मंत्र फूँकना--(१) मंत्र का जादू करना। (२) सिखा, बहका देना। उन्होंने मत्र फूँक दिया नहीं तो वह तो तैयार था।

मक्खन मला जाना (कलेजे पर)—बैरी की हानि देख दिल खुश होना।

मक्खियाँ भिनकना—दे० भिनकना मक्खियाँ।

मक्खी जीती निगलना—(१) जान कर हानिकर काम करना। (२) पाप, दोष को ध्यान न देना। मरे पीछे कुछ भी नीचता करना जीते जी ते मुझसे जीती...।

मक्खी नाक पर न बैठने देना—(१) मान-रक्षा के लिये न दबना। बेटा! मक्खी नाक पर न बैठने देना चाहे हानि हो जाय। (२) एहसान न लेना।

मक्खी की तरह निकाल फेंकना—बिल्कुल अलग कर देना।

मक्खी छोड़ना और हाथी निगलना—छोटे पापों से बचना बड़े करना। झूठ नहीं बोलते और डाका डालते हो यानी मक्खी छोड़ते हाथी निगलते हो?

मकदूर चलना—वश, काबू होना।

मक़दूर से बाहर पाँव रखना—शक्ति, योग्यता से बढ़ कर काम करना।

मक्खी चूस होना—बहुत कंजूस होना। एक पैसा नहीं खर्चता बड़ा मक्खी चूस है।

मक्खी मारना—कुछ न करना। बैठे बैठे मक्खी मारते हो कुछ काम धंधा करो न?

मक्खी की मक्खी मारना—व्यर्थ का काम करना।

मग़ज उड़ना, भिन्नाना—बदबू, शोर से दिमाग़ खराब होना। मेरा तो इस कमरे में मग़ज भिन्ना गया।

मग़ज उड़ाना—दे० सिर खाना।

मग़ज के कीड़े उड़ाना—बहुत बकना।

मग़ज खाना—दे० सिर खाना।

मग़ज खाली करना—दे० मग़ज पचाना।

मग़ज खौलना—(१) क्रोध से (२) बहुत काम होने से (३) गर्मी से, दिमाग ठीक न रहना। सवेरे एक मिनट की फ़ुर्सत नहीं मिली दिमाग खौल रहा है, अब मत पूछो।

मग़ज चलना—(१) बहुत घमंड होना। किसी की परवा नहीं बड़ा मग़ज चलने लगा है! (२) पागल होना।

मग़ज चाटना—दे० मगज खाना।

मग़ज पचाना—(१) दे० सिर खपाना। (२) समझाने के लिये बहुत बकना। इतनी मग़ज किसी गधे से पचाता तो वह भी सीख जाता!

मगर अगर करना—आना कानी करना। मेरे से मगर अगर मत करो अभी दो कहीं से भी दो।

मज़मून बाँधना—नये विचार, कोई विषय, पद्य या गद्य में लिखना। क्या मजमून बाँधा है बसंत दूल्हा है? कमाल!

मज़मून मिलना, लड़ना—दो अलग अलग कवियों या लेखकों के भाव मिल जाना।

मजल मारना—दे० मंजिल मारना।

मज़ा आ जाना—(१) दिल्लगी का सामान मिलना। अगर आप यहाँ गिरें तो मज़ा आजाय।

मज़ा उड़ाना, लूटना—आनन्द, ऐश प्राप्त करना।

मज़ा किरकिरा होना—रंग में भंग पड़ना। तुमने बीच में बोलकर गाने का मज़ा किरकिरा कर दिया।

मज़ा चखाना—अपराध का दंड, वैर का बदला देना। तुमने भी तो मुझे तंग किया था यह उसी का मज़ा चखो।

मज़ा पड़ना—चाट, चसका, आदत पड़ना। सिनेमे का मज़ा पड़ गया है उधार लेकर भी वहाँ जाता है।

मज़ा लेना, देखना—तमाशा, दिल्लगी देखना। आप बैठे मज़ा ले रहे हैं उसमें लड़ाई हो रही है।

मज़े का—अच्छा, उत्तम, बढ़िया।

मजे पर आना—जोबन, अच्छी दशा में आना। क्यों मजे पर आ रहे हो न ?

मज़े में, से—सुख, आनन्द से।

मज़ाक उड़ाना—दिल्लगी करना। क्यों बेचारे का मज़ाक उड़ाते हो तुम भी तो फिसलते हो।

मझधार में छोड़ना—(१) ऐसी हालत में जब इधर का रहे न उधर का छोड़ना। (२) अधबीच में छोड़ना।

मझधार में पड़ना—मुसीबत में फँसना। नैया मेरी मझधार पड़ी, भगवन पार लगाओ ना !

मटकी देना—मटकाना। आँख की मटकी देकर चला गया।

मटिया मेट कर देना—सत्यानाश, तहस नहस करना।

मढ़ आना—घिर आना। दसहू दिसि मेघ महा मढ़ि आये।

मत में आना—समझ में आना। तुम्हारे मत में आवे तुम भी कर डालो।

मत मारी जाना—बुद्धि न रहना।

मतलब का यार—स्वार्थी।

मतलब गाँठना निकालना—स्वार्थ साधना।

मतलब हो जाना—(१) इच्छा पूरी होना। (२) बुरा हाल होना। (३) मर जाना। सब मतलब हो गया बेचारे का।

मत्था टेकना—सिर झुकाना। महन्त जी के आगे राजा महाराजा मत्था टेकते हैं तू क्या चीज़ है !

मत्था मारना—दे० सिर खपाना।

मथानी पड़ना, बहना—खलबली मचना। ग्वालियर में बही मथानी औ कंधार मथा भै पानी।

मद पर आना—(१) उमंग आना। (२) काम से गरमाना। (३) युवा होना।

मदद पहुँचना—कुमक, सहायता मिलना। तुम्हारे थोड़े से रुपयों से मुझे बहुत मदद पहुँची।

मदद बाँटना—मजदूरी बाँटना। आज मदद बटेगी पैसे ले जाना।

मन अटकना, उलझना—प्रेम होना। उनसे मन अटक गया अब उनके हो रहेंगे।

मन आना—(१) दिल आना, तबियत आना। (२) समझ पड़ना। मन आ जाय तो हजार ख़र्च दें क्या परवा है ?

मन कच्चा करना—हिम्मत टूटना, तोड़ना। मन क्यों कच्चा करते हो अब नहीं फिर सही कभी तो होगा परवा नहीं।

मन का मारा—दुखी चित्त वाला।

मन करना—इच्छा होना। मन करता है तुम्हें...।

मन का मैला—कपटी, घाती।

मन की मन में रहना—इच्छा अधूरी रह जाना, मेरे मन की मन में रह गई वे चले गये।

मन के लड्डू खाना—व्यर्थ आशा में खुश होना। मन मोदक नहिं भूख बुझाई।

मन खट्टा होना—घृणा हो जाना, अच्छा न लगना। उसने एक बार धोखा दिया उससे मन खट्टा हो गया।

मन खराब होना—(१) दिल फिरना। (२) नाराज होना। (३) बीमार होना।

मन खोलना—छिपाव छोड़ना।

मन टटोलना—थाह लेना, दिली बात जानना। आओ बातों बातों में उसका मन टटोलें।

मन डोलना—(१) मन चंचल होना। (२) लोभ आना।

मन चलना—इच्छा होना। बीमारी में बदपरहेजी पर मन चलता है।

मन टूटना—दे० हिम्मत टूटना।

मन ढलना—किसी की तरफ़ इच्छा होना। रईस है जिसकी तरफ़ मन ढल गया वही मालामाल हो जायगा।

मन देना—(१) जी लगाना। मन देकर सेवा करो। (२) ध्यान देना। मैं जानता था तुम मन देकर नहीं सुन रहे।

मन देना (किसी को)—आसक्त, मोहित होना।

मन धरना—दे० मन लगाना।

मन बढ़ना—साहस, उत्साह बढ़ना, नित के बैर से बैरी का मन बढ़ा।

मन बिगाड़ना—(१) इच्छा हट जाना। (२) कै आना। (३) पागल होना।

मन बूझना—मन की थाह लेना। तुम्हारा मन बूझने को मैंने ऐसा कहा था।

मन मानना—शान्ति, संतोष होना, समझ तो यही लूँ पर मन नहीं मानता।

मन फट जाना—घृणा हो जाना।

मन फेरना—चित्त हटाना। हम से मन फेर लिया झाँकते नहीं।

मन बढ़ाना—दे० हिम्मत बढ़ाना।

मन बहलाना—दे० २६२४ मु०।

मन भर जाना—(१) तृप्त हो जाना। (२) अधिक इच्छा न रहना। हमें बहुत रुपये की तृष्णा नहीं सौ में ही बस मन भर जायगा।

मन भरना—(१) तृप्ति, संतोष होना। पेट भर गया है पर मन नहीं भरा। (२) विश्वास, प्रतीति होना। आपने वादा कर लिया मेरा मन भर गया अब मैं दे दूँगा।

मन भाना—अच्छा लगना, पसंद

आना। मेरे मन नहीं भाती तो क्यों लूँ?

मन माना—यथेच्छ, जो चाहे सो। मनमाना रुपया लो मना नहीं है।

मन भारी करना—दुखी, उदास होना। क्यों रो रो कर मन भारी करती हो।

मन मानना — (१) तसल्ली, संतोष होना। मन माने तो न पूछूँ। (२) विश्वास, निश्चय हो। क़सम खाओ तो मेरा मन माने। (३) दे० मन भरना। (४) प्रेम, अनुराग होना। सखीरी! श्याम सो मन मान्यो।

मन मार कर बैठ जाना
मन मार कर रह जाना } उत्कृष्ट इच्छा दबा जाना। इच्छा होती है कि इसे क़त्ल कर दूँ पर फाँसी के डर से मन मार कर रह जाता हूँ।

मन मारना—(१) उदास, दुखीचित्त होना। दूसरों के महल देखकर मन मार बैठ रहते हैं। (२) इच्छा दबाना। मन को मारो तो विजय पावो।

मन मिलना—(१) मित्रता होना। (२) प्रेम होना। जब मन मिले हैं तो विवाह न रुक सकेगा। (३) एक सी प्रकृति, प्रवृत्ति होना। मन मिले तो मित्रता भी रहे।

मन में आना—(१) भाव, इच्छा पैदा होना। कितनी गालियें दीं पर उसके मन एक न आई। (२) ध्यान में आना। मन में आया कि छोड़ ही क्यों न दूँ। (३) भला लगना। मेरे मन में नहीं आई नहीं उसी से विवाह कर लेता।

मन में जमना, बैठना—(१) जँचना, ठीक प्रतीत होना। अपनी बात उनके मन में जमा दो वह रुपया दे ही देंगे। (२) ध्यान में आना।

मन में ठानना—निश्चय, संकल्प कर लेना।

मन में बसना—दे० बसना (मन में)।

मन में भरना—दिल में जमाना, विश्वास जमाना। उसके मन में भर दी बस वह चला गया।

मन में रखना — (१) छिपाये रखना, न कहना। मन में रखना कहना मत। (२) याद रखना। आज की बात मन में रखना इसका बदला लेकर छोड़ूँगा।

मन में लाना — सोचना, ध्यान देना। जरा तो मन में रहम लाओ।

मन मैला करना—खिन्न, असंतुष्ट, दुखी, अप्रसन्न होना। जरा सी बात पर मन मत मैला करो, बैर मत ठानो जू!

मन मोड़ना—विचार इधर से हटा कर उधर करना। मुझ से मन मोड़ के उनसे मिले।

मन मोहना — किसी को मोहित करना प्रेमी बनाना। मेरा मन मोह लिया कहीं का न छोड़ा रे!

मन में कहना — मन ही मन सोचना। मन में कहने लगा कि एक हम हैं किसान और एक यह शाही महल…।

मन मोटा होना (किसी का)—वैराग्य होना।

मन मोटा होना (किसी से)—अनबन, बैर होना। मन मुटाव में क्या रखा है?

मन रखना—मन में आई बात पूरी करना। जेवर लाकर मेरा मन रख दो तो किसी दिन तुम्हारा भी मन रख दूंगी।

मन लगना — (१) मनोविनोद होना। चले जाते हैं उनकी खेल कूद में मन लग जाता है। (२) दे० २६५४ मु०।

मन लगाना—(१) दे० २६५५-६। (२) उदासी मिटाना। मन लगाने को यह खेल रचा है वरना शौक में क्या धरा है।

मन लेना—दिल की बात का पता लगाना। मैंने उसका मन लिया था हजार से ज्यादा न देगा।

मनसूबा बाँधना—ढंग सोचना। मैंने मनसूबा बाँधा कि वह गाली दे बैठे तो मैं पीट डालूँ।

मन से उतरना—अच्छी न लगने लगना, दिल से घृणा होना।

मन से उतारना—(१) पहिला सा आदर न रहना। (२) याद न रहना। मन से न उतरी तो जरूर ला दूँगा।

मन हरना—मोहित करना, अपनी ओर खींच लेना। ऐसी बहू जो मन हरि लेई।

मन हरा होना—दिल खुश हो जाना।

मन हाथ में लेना—वश में करना। जैसे कहूँगी वैसे करेंगे जरा हाथ में मन ले लूँ।

मन ही मन—भीतर भीतर, अन्दर अन्दर, चुपचाप। मन ही मन क्यों गाली देंगे।

मन होना — इच्छा होना। मन होता तो मैं ही जा कर लाता।

मनुहार करना—विनती, खुशामद करना। सबै करति मनुहारि उधौ कहियों हो जैसे गोकुल आवें।

मन्नत उतारना, बढ़ाना—पूजा का संकल्प पूरा करना।

मन्नत मानना—प्रतिज्ञा करना कि फलां काम होने पर यह पूजा करेंगे।

मयस्सर आना — मिलना। गाँव

वालों को यह ऐश मयस्सर नहीं आते।

मरजाना—(१) प्रेमी हो जाना, मोहित होना। क्यों ? बाज़ारू पर मर गये न ? (२) नाश हो गया। सारे रुपये डूब गये मर गये न हम तो।

मरना (किसी के लिये)—हैरान होना, कष्ट सहना।

मरना (किसी पर) — लुब्ध, आसक्त होना।

मरना (किसी बात के लिये)—दुख सहना।

मरना जीना—दुख-सुख, शादी गमी।

मरना (पानी) — (१) पानी दीवार की नीव में जाना। (२) कलंक, दोष का संदेह आना। पानी तुम्हारी तरफ़ मरता है सफ़ाई दो।

मरने की छुट्टी न होना—दिन-रात काम में फँसे रहना। मिलूँ कैसे मुझे मरने तक की तो छुट्टी नहीं।

मर पचना—बरबाद हो जाना। हम तुम्हारे लिये मर पचे तुम और बुराई देते हो !

मरम्मत करना—(१) टूटी फूटी चीज़ बनाना। (२) पीटना। बकोगे तो मरम्मत कर दूँगा।

मर मिटना — जान तक देना। किला लेंगे या मर मिटेंगे।

मरहला डालना — झगड़ा खड़ा करना।

मरहला तय करना—कठिन काम पूरा करना। दो में से एक मरहला तो तय कर लिया, आधा जीते।

मरहला पड़ना, मचना—झमेला, कठिनता पड़ना।

मरा जाना—(१) व्याकुल होना। सूद देते देते किसान मरे जाते हैं। (२) उत्सुक होना, उतावली करना। मिल जायगी मरा क्यों जाता है।

मरातिब तै करना—आने वाले सब झगड़े मिटाना।

मरूकरि के, मरूकरि — बड़ी मुश्किल से अँसुआ ठहरात गरौ घहरात मरुकरि आधिक बात कही।

मरूरा देना—मरोड़ना, उमेठना।

मरे को मारना—दुखी को दुख, अशक्त को आफ़त में फँसाना। उस बेचारे को दंड देना मरे को मारना है।

मरोड़ करना (मन में)—कपट करना।

मरोड़ की बात—पेचदार बात।

मरोड़ खाना—(१) चक्कर खाना। (२) उलझन में पड़ना।

मरोड़ गहना—क्रोध करना।

मरोड़ी करना — खींचा तानी करना।

मर्द आदमी—(१) वीर, बहादुर।

मर्द आदमी है लेकर ही आयेगा। (२) सभ्य, भला। मर्द आदमी है कहेगा तो पूरा ही करेगा।

मर्याद रहना—(१) इज्जत रहना। (२) बरात को तीसरे दिन भोजन कराना।

मलना दलना—(१) चूरा कर देना। दलमल दिये राक्षस सब। (२) मसल देना।

मलना (हाथ)—(१) पछताना। (२) क्रोध करना। लाल हो गये हाथ मलने लगे पर हाथ मल कर ही रह गये।

मलार गाना—गाना दे० मल्हार गाना।

मलाल निकालना—दबा हुआ दुख दूर करना। मौका मिला है पीट कर मलाल यों निकाल लूं।

मलिया बाँधना—रस्सी मोड़ कर बाँधना (लश्करी)।

मलिया मेट करना — बरबाद करना।

मलोले आना—दुख, पछतावा होना। बड़े बड़े मलोले आते हैं कि मैंने क्यों भेजा (स्त्री)।

मलोले खाना — दुख उठाना। उन्होंने मलोले खाकर कहा (स्त्री)।

मलोले निकालना—दे० मलाल निकालना (स्त्री)।

मल्हार गाना—खुश होकर कुछ कहना। दिन भर मल्हार गाते हैं, चिन्ता है नहीं।

मवास करना — बसेरा करना। मधुपन कीन्हों आइ महत मवासो है।

मवासी तोड़ना — (१) किला तोड़ना। (२) जय करना।

मशाल लेकर, जलाकर ढूँढ़ना—खूब खोजना। मशाल लेकर ढूँढोगे तो भी ऐसा लड़का न मिलेगा

मशीख़त बघारना—शेखी बघारना।

मष्ट करना, **मष्ट धारना**, **मष्ट मारना** — चुप रहना, साधना।

मस भींजना—मूँछ, रेख निकलना। अभी मसैं ही भीजी थी नौजवान ही था।

मसविदा बाँधना—युक्ति, उपाय सोचना। मसविदा बाँधा कि प्यार से लावें और मार दें।

मसान जगाना — मुरदा सिद्ध करना। कपट सयान न कहत कछु जागति मनहुँ मसान।

मसान पड़ना— सन्नाटा होना। सरदी फिर अँधेरी, सारे बाज़ार में मसान पड़ता है।

मस मसा जाना—अन्दर अन्दर क्रोधित होना।

मसूकर के—बड़ी मुश्किल से।

रसखानि तिहारी सौं ऐरी जसोमति भागि मसूकरि छूटन पाई।

मसौदा गाँठना—दे० मसविदा बाँधना।

मस्ती झड़ना, झाड़ना—मतवालापन, ऐंठ दूर होना, करना।

मस्ती निकालना—कामना निकालना।

महरें बँधना—वर की ओर से वधू को धन नियत करना।

महसूल मारना—भाड़ा, कर न देना।

महीन काम—आँख-सावधानी का काम। सुई का महीन काम है।

महीना चढ़ना—एक मास का गर्भ होना।

महीने से होना—रजवती होना।

महेर डालना—(१) अड़चन डालना। (२) देर लगाना।

माँग उजड़ना—पतिमरना (स्त्री)

माँग कोख से सुखी रहना—पतिवती संतान वती होना (स्त्री)।

माँग जलना, जली—राँड।

माँग पट्टी करना—कंघी करना, बाना।

माँग पारना—माँग निकालना। अब तो स्त्रियें टेढ़ी माँग पारती हैं।

माँग बाँधना—कंघी चोटी करना।

माँग भरना—माँग में मोती, सिंदूर भरना।

माँग से ठंडी रहना—पतिवती रहना।

माँझ पड़ना, होना—बीच, अंतर पड़ना।

माँ बहिन करना—(१) आदर से बोलना (स्त्री) (२) माँ बहिन की गाली देना।

माइँन में थापना—पितरों सा आदर करना।

माई का लाल—(१) उदार व्यक्ति (२) शूर-वीर। है कोई माई का लाल जो जान हथेली पर ले ?

माट का माट बिगड़ा है—सब की बुद्धि मारी गई है।

माट बिगड़ जाना—स्वभाव असाध्य बिगड़ जाना।

मात खाना—हारना। कहिये खायी न मात ! कहा था न जीतोगे।

मात जाना—(१) न्यौछावर होना (२) हार जाना।

माथा कूटना—दे० माथा पीटना।

माथा खपाना, खाली करना—मगज-पच्ची करना, बहुत समझाना, सोचना।

माथा घिसना—खुशामद करना। कई बार माथा घिसा तब प्रसन्न हुई।

माथा टेकना—सिर झुका प्रणाम करना।

माथा ठनकना—हानि या कष्ट का पहिले ही जान, आशंका होना।

मेरा माथा ठनका था कि कहीं गिर न पड़े, वही हुआ।

माथा पीटना—सिर पर हाथ मार कर दुख शोक प्रकट करना। दुखद समाचार सुन माथा पीटते पीटते बे होश हो गई।

माथा मारना—माथा खपाना।

माथा मारना—विशेष मेहनत करना। कितना ही माथा मारो मूर्ख नहीं समझता।

माथा रगड़ना—दे० माथा घिसना।

माथे चढ़ना, धरना—दे० सिर चढ़ना।

माथे टीका होना—कोई विशेषता होना। क्या तुम्हारे ही माथे टीका है जो हर बात पर अधिकार जताते हो?

माथे पड़ना—जिम्मेदारी आना। वह तो चल दिये सारा काम मेरे माथे पड़ा।

माथे पर बल आना, पड़ना—चेहरे से क्रोध दिखना। गाली दीं, सुनते ही माथे पर बल आ गये।

माथे मढ़ना—दे० सिर मढ़ना।

माथे मानना—सादर स्वीकार करना। माथे मानि करब हम सोई।

माथे मारना—घृणा या तुच्छ भाव से देखना। उस ओछे से क्यों तक़ाजा करवाते हो, उसकी चीज़ उसके माथे मारो।

मान मथना—शेखी, गर्व, मान भंग करना। बहुत ऐंठते थे सारा मान मथ डाला गया।

मान मनाना—रुठे को मनाना। मानिनी को मान मना लाये।

मान मोरना—मान, रूठना छोड़ना।

मान रखना—इज्जत बचाना। न बोले, मान रख लिया, नहीं तुम्हारा भी सामना करता।

माफ़ करना—क्षमा करना।

माफी चाहना—क्षमा माँगना। मैं न आ सका माफी चाहता हूँ।

मामला करना—(१) बात पक्की करना। (२) फैसला करना। (३) मुकदमा चलाना। न दोगे तो अदालत में मामला कर दूँगा।

मामला किरकिरा होना—तै हुआ/वा किस्सा बिगड़ना।

मामला पक्का करना—बात तै करना। १००) में मामला पक्का किया।

मामला बनाना—(१) काम ठीक, बात पक्की करना। (२) काम साधना अपना मामला बना कर चलते बने। (३) संभोग करना।

मामी पीना—अपना दोष न मानना, मुकर जाना।

मारकंडेय की आयु होना—बड़ी उम्र होना।

मारके की बात, काम—ख़ास, बड़ी बात या काम। ये मारके की

बात है कह दोगे तो साफ़ छूटोगे।

मार खाना—नुकसान सहना काट खाना। ५) की तो हमने भी मार खाई।

मारग मारना—पथिक लूटना।

मारग लगना, लेना—रास्ता लेना, चले जाना। जाओ, तुम्हें क्या मतलब अपने मारग लगो।

मारना (गोली)—(१) बंदूक की गोली से मारना। (२) जाने देना, ध्यान न देना। गोली मारो क्या तुच्छ बात है।

मारना देना—(१) पटकना। (२) पछाड़ना। जमीन पर दे मारा, मर गया।

मारना (गाल)—बढ़ बढ़ कर बोलना।

मारना (जादू)—जादू करना।

मारना (डींग)—अपनी बड़ाई, बढ़ बढ़ कर बातें, बड़ी बड़ी असंभव बातें करना। क्यों डींग मारते हो तुम्हारा बाप नहीं कर सकता।

मार बैठना—पीटने लगना। जो बोले तो मार बैठूंगा।

मार मार करना—जल्दी मचाना। क्यों मार मार करते हो बहुत वक्त है पहुँच ही जायेंगे।

मार से भूत भागता है—पिटने के डर से सब ऐंठ, शरारत दूर हो जाती है।

मार लाना—अनुचित रूप से धन लेकर भाग आना। तुम्हारा क्या मार लाया था जो तुम यह कहते हो।

मार लेना—कठिनता गई जीत ही सा लिया। मार लिया बस अब की पेशी पर मुकदमा ख़तम।

मारा जाना—(१) कत्ल हो जाना। (२) धन न मिलना। १००) हमारा भी मारा गया।

मारा मारा फिरना—व्यर्थ, बुरे हाल इधर उधर घूमना। क्यों मारे मारे फिरते हो नौकरी नहीं मिलती तो मजूरी करो।

मारा वह—लो अब काम बना। वह मारा अब तो जीतने ही वाले हैं।

माल उगलवा लेना—धन ले ही लेना। मैं तो अच्छे अच्छे बदमाशों से माल उगलवा लूँ।

माल उड़ाना—(१) बुरी तरह खर्चना। सारा माल शीघ्र उड़ा दिया। (२) माल हड़प लेना, अनुचित रूप से लेना। सेठ की बीमारी में नौकरों ने खूब माल उड़ाया। (३) बढ़िया खाना। कहिये दावत में क्या क्या माल उड़ाये?

माल काटना—(१) किसी को बुरे कामों में डाल कर, डरा कर या और बहाने से धन झपटना, लेना। लाला तो शराबी है यार लोग खूब

माल काटते हैं। (२) रेल, माल गोदाम या जेब से चुराना।

माल चीरना—लालच या डर दिखाकर लेना। कोई झगड़ा पीछे लगा कर माल चीरो।

माल टाल—(१) बढ़िया भोजन। क्या माल टाल है कटोर दान में? (२) धन संपत्ति।

माल तीर करना—किसी बहाने माल कहीं अपनी जगह पहुँचा देना।

माल निगलना—किसी का धन न देना।

माल पचाना — रुपया हड़पना। तुम उसके हक़ का माल पचा गये मैं तुम्हारा माल निगल गया, क्यों दे दूँ?

माल मता—संपत्ति। मेरा मालमता लेकर चम्पत हुए।

माल मारना—दूसरे का माल दबा बैठना। हक़ था सो दे दिया और क्या किसी का माल मारोगे?

माला फेरना—जप, भजन करना।

मावा निकालना—कचूमर निकालना, खूब पीटना।

माशा तोला होना — तोल में बिलकुल पूरा।

मास नोचना, नोच २ कर खा जाना—तंग कर कर के वसूल करना। तुमने तो हमें भूखा नंगा ही कर दिया मास तक नोच खाया।

माहुर का फल—देखने में सुन्दर पर बुराई भरा।

माहुर की गाँठ—(१) अति विष भरी। (२) अति क्रूर, दुष्ट मनुष्य।

मिजाज आना — घमंड होना। सौत को मिजाज आ गया बोली भी नहीं।

मिजाज खराब, गर्म होना, बिगड़ना—नाख़ुश, अप्रसन्न होना। आज उनका मिज़ाज बिगड़ा हुआ है, मार बैठेंगे।

मिजाज न मिलना — घमंड में बातें ही न करना। आज कल तो मिज़ाज ही नहीं मिलते ओहदा पाकर ऐंठ गये हैं।

मिजाज पाना—(१) स्वभाव जानना। (२ अनुकूल, प्रसन्न देखना। मिजाज ही नहीं पाये जाते जब बोलो तभी घुड़क देते हैं।

मिजाज पूछना—(१) हाल पूछा। मैंने मिजाज पूछे तो बोले बुरा हाल है। (२) खबर लेना, दंड देना। रोज रूठ जाती है किसी दिन इकट्ठे मिजाज पूछ लूंगा।

मिजाज बिगाड़ना—(१) क्रोध, अभिमान पैदा करना। रुपया भलों के भी मिजाज बिगाड़ देता है। (२) ऐंठ निकालना। किसी दिन

सारे मिजाज बिगाड़ दूंगा, क्या ऐंठते हैं।

मिजाज में आना—(१) घमंड, ऐंठ करना। ज़रा बड़ाई कर दी तो मिजाज में ही आ गये। (२) समझ में आना। आपके मिजाज में आवे तो आप भी चलिये।

मिजाज सीधा होना—(१) घमंड मिटाना। (२) प्रसन्न होना।

मिट्टी अजीज होना—प्यारा, सुन्दर स्थान होना। जन्म भूमि की मिट्टी भी अजीज होती है आदमी तो क्या।

मिट्टी करना—नष्ट करना। तुमने सारा मज़ा मिट्टी कर दिया।

मिट्टी के मोल—दे० पानी के मोल। वह मोटर तो मिट्टी के मोल बिक रही है।

मिट्टी खराब करना—(१) बुरी हालत करना। (२) नष्ट करना।

मिट्टी खराब होना—(१) दुर्दशा होना। क्यों बुढ़ापे में घर से निकाल कर उसकी मिट्टी खराब करते हो। (२) इज्जत जाना।

मिट्टी खराबी—नाश, बरबादी।

मिट्टी छुए सोना होना—भाग्य प्रबल होना। जब अच्छे दिन आयें तो मिट्टी छुए सोना होता है।

मिट्टी ठिकाने लगाना—लाश का गाड़ी या जलायी जाना।

मिट्टी डालना—(१) छोड़ देना। क्या करते हो? मिट्टी डालो इस काम पर। (२) दोषों पर परदा डालना, छिपाना।

मिट्टी ढह जाना—बुढ़ापे के चिन्ह होना।

मिट्टी पकड़ना—जमीन पर जम जाना। पहलवान ने मट्टी पकड़ली चित्त ही न हो सका।

मिट्टी पलीद करना—दुर्दशा करना। इस बुड्ढे को वहाँ ले जा कर क्यों मिट्टी पलीद करते हो?

मिट्टी में मिल जाना, मिलना—(१)मरना। इक दिन मिट्टी में मिल जाना क्या तू गर्व करे। (२) बरबाद होना।

मिट्टी में मिलाना—बरबाद करना। मुकदमे बाजी ने उसे मिट्टी में मिला दिया।

मिट्टी होना—(१) खराब होना। (२) गंदा, मैला होना।

मिट्ठू बनना (अपने मुँह से)—अपनी बड़ाई अपने आप करना।

मिट्ठू बनाना मियाँ)—(१) बड़ाई कर कर के फुला देना। मियाँ मिट्ठू बना के तो कोई काम करा लो। (२) तोते सा पढ़ाना।

मिती काटना—सूद काटना।

मिती चढ़ाना—तिथि लिखना।

मिती पूजना—हुन्डी भुगतान का अंतिम दिन आना। इस हुन्डी की

मिती पूजे दो दिन हो गये, पर रुपया नहीं आया।

मिर्चें लगना, मिर्चें सी लगना—बुरी लगना, जलन होना। तुम्हें कोई गालियाँ देता हो तो मिर्चें लग जाती हैं और मैं चुप रहूँ ?

मिल्लत का — मिलनसार। बड़ी मिल्लत का आदमी है।

मिसरा लगाना — समस्या पूर्ति करना।

मिसरी की डली—बहुत मीठी। पढ़ाई कोई मिसरी की डली नहीं है।

मिसिल उठाना—पुस्तक के फर्मों को क्रम से लगाना (दफ्तरी)।

मिसिली चोर—वह चोर जिसकी बदमाशी की मिसलें भरी हों।

मिस्सी काजल करना— बनाव सिंगार, काजल मिस्सी लगना।

मीआद काटना—जेल भुगतना। महिने में मिआद काट कर आया फिर सुलटूंगा।

मीआद बोलना—कैद सुनाना।

मीजा पटना, मिलना—स्वभाव मिलना। मीज पटे तो मेल हो।

मीठा होना—लाभ या आनन्द मिलना। हमें क्या मीठा है जो रोज घर पर हाजिर हों ?

मीठा मुँह करना—दे० मुँह मीठा करना।

मीठी चुटकियाँ लेना — हँसी उड़ाना, किसी को दुख देकर खुश होना।

मीठी छुरी—विश्वास घातक, कपटी। यह मीठी छुरी है तुम दोनों को लड़ा देगा।

मीठी मार—भीतरी मार। अंदर बहुत चोट है बाहर निशान तक नहीं ऐसी मीठी मार मारो।

मीन मेख निकालना — (१) दोष निकालना। (२) दे० मेख करना। तुमसे भी तो बिगड़ता हैं उसी के काम में क्यों मीन मेख निकालते हो।

मीनाकारी छाटना — व्यर्थ दोष निकालना। उसने मर खप कर इतना अच्छा काम किया तुम अपनी मीनाकारी छाँटते हो।

मुँडकरी मारना - घुटनों में सिर दे० दुखी बैठना।

मुंड्डो का—हरामी (बाजारी गाली) विधवा व्यभिचार से पैदा पुत्र।

मुंतकिल करना—दूसरे को देना बड़े बेटे के बजाय छोटे को घर मुंतकिल कर दो।

मुँह आना—(१) मुँह में छाले पड़ना। (२) हुज्जत करना। क्यों इस बेशर्म के मुँह आते हो कहीं गाली न दे बैठे।

मुँह उज्जला होना—प्रतिष्ठा, इज्जत रह जाना। उस कलंक से मुँह उजला हो तब बात।

मुँह उजाले उठे—बहुत सवेरे। मुँह उजाले उठ कर चल दिये।

मुँह उठा कर कहना—जो मुँह में आवे कह देना। यों ही मुँह उठा कर कह दिया बाप से भी पूछा?

मुँह उठाये चले जाना—बे धड़क चले जाना। मुँह उठाये चले जाओ कोई नहीं रोक सकता।

मुँह उतरना—(१) उदासी छाना। जेब टटोलते ही मुँह उतर गया, मैं समझा रुपये खो गये। (२) चेहरे पर रौनक न रहना।

मुँह करना—मुलाहजा, लिहाज करना। गरीबों का कौन मुँह करता हैं, सब अमीरों की मानते हैं।

मुँह का कच्चा—(१) घोड़ा जो लगाम का झटका न सह सके। (२) झूठा। (३) कह देने वाला। गुप्त बात इससे न कहो यह मुँह का कच्चा है।

मुँह का कड़ा—(१) घोड़ा जो सवार की इच्छानुसार चले। (२) सख्त, तेज। (३) उद्दंडता से बातें करने वाला।

मुँह काला करना (अपना)—(१) अनुचित संभोग करना। (२) बदनामी करना। क्यों यह काम करके मुँह काला करते हो।

मुँह काला करना (दूसरे का)—दूर करना। चल हट मुँह काला कर यहाँ से।

मुँह की खाना—(१) मुँह सामने बुरा उत्तर सुनना, बातों में हारना। वकील ने मुँहकी खाई जवाब न बना। (२) थप्पड़ खाना। (३) बेइज्जत होना। (४) शर्मिन्दा होना। (५) धोखा खाना। (६) बुरी तरह हारना।

मुँह की बात छीनना—दूसरा कहने वाला हो वही आप पहिले ही कह देना। मुँह की बात छीनना असभ्यता है।

मुँह की मक्खी न उड़ा सकना—बहुत कमजोर हो जाना। बीमारी में ऐसा हो गया है कि मुँह…।

मुँह के बल गिरना—(१) ठोकर खाना। (२) धोखा खाना। (३) बुरी तरह बेइज्जत होना। बड़ा चढ़ा था अब मुँह के बल गिरा।

मुँह खराब करना—गंदी भद्दी बात कहना। क्यों गाली देके मुँह खराब करते हो।

मुँह खुलना—उद्दंडता से बोलने की आदत पड़ना। बहुत मुँह खुला है पिट जाओगे।

मुँह खुश्क हो जाना—दे० मुँह सूखना।

मुँहखोल कर रह जाना—कहते कहते शरमा जाना। क्यों मुँह खोल कर क्यों रह गई? कहो।

मुँह खोलना—(१) बोलना। (२) गाली, बुरी बातें कहना। मैं मुँह खोलूँगी तो बाप दादा बखानूँगी। (३) घूँघट हटाना।

मुँह चढ़ाना—(१) उद्दंड बनाना। नौकर को मुँह चढ़ा रखा है यह बुरा है। (२) मुँह फुलाना।

मुँह चलना—(१) खाना। (२) व्यर्थ बातें बनाना।

मुँह चलाना—(१) भोजन करना। (२) बकना। क्यों मुँह चलाती है? चुप रह। (३) गाली देना। (४) दाँत से काटना।

मुँह चाटना — खुशामद करना। कुछ गर्ज़ होगी इस लिए मुँह चाटते हो।

मुँह चिढ़ाना—चिढ़ाने के लिए टेढ़ा मुँह दिखाना।

मुँह चूम कर छोड़ देना — शर्मिन्दा करके छोड़ देना।

मुँह छूना, छुआना—(१) नाम मात्र को कहना। मुँह छूने को निमंत्रण दे गये थे। (२) दिखौआ बात करना।

मुँह जहर होना – मुँह कड़वा होना।

मुँह जुठारना—नाम मात्र को खाना, चखना। मुँह जुठार लो खाओ चाहे मत, दिल तो खुश हो जायगा।

मुँह जोड़ना—पास पास मुँह कर के बात करना।

मुँह जोहना—आशा से मुँह की ओर देखना। मेरा क्या मुँह जोहते हो मैं न दूँगा।

मुँह झटक जाना— चेहरा उतर जाना।

मुँह झुलसना—(१) मुँह में आग लगाना। (गाली, स्त्री) (२) दे ले कर दूर करना। कितनी देर से माँग रहा है इसका भी मुँह झुलस दो।

मुँह टेढ़ा करना — चेहरे से नाराजी दिखाना। मुँह टेढ़ा करते हुए 'हाँ' कहा।

मुँह डालना—(१) पशु का खाने को चीज़ में मुख डालना। (२) मुर्गी का लड़ना।

मुँह ढाँकना—मरने पर रोना। (मुसलमान)।

मुँह तक आना (१) कही जाना, जबान पर आना। मुँह तक आ कर रह गई, न कही। (२) लबा-लब भरना।

मुँह ताकना –(१) पाने की आशा से मुँह जोहना। एक टुकड़ा न दिया मुँह ताकता रह गया (२) टकटकी से देखना। (३) लाचारी से देखना। (४) शर्मिन्दा होकर देखना। सब मुँह ताकते रहे उसने कप जीता। (५) कुछ न करना। हाथ लगाओ मुँह क्या ताकते हो।

मुँह तो देखो — योग्यता तो देखो।

मुँह तोड़ (कर) जवाब देना— ऐसा जवाब जो दूसरा बोल न सके। जब मैंने मुँह तोड़ जवाब दिया तो चुप हो गये।

मुँह थकना, थकाना—कहते कहते थक जाना।

मुँह थुथरना—मुँह फुलाना, क्रोध नाराजी दिखाना। मुँह थुथा के बैठ गई या करती है ?

मुँह दर मुँह कहना—सामने कहना अब तो मुँह दर मुँह कह गये कि तुम्हें दी थी।

मुँह देखना—(१) खाट से उठते ही दर्शन होना। आज किसका मुँह देखा था जो बुरा दिन बीता ! (२) सामने जाना। (३) आश्चर्य से देखना। (४) दर्पण में देखना।

मुँह देख कर बात करना, कहना—खुशामद करना। मुँह देखकर बात कहते हो, तुम्हें क्या गर्ज़ है ?

मुँह धो रखना, लेना—आशा न रखना। मुँह धो रखो, अब रुपये न पटेंगे।

मुँह न देखना—(१) घृणा करना। मैं मुए का मुँह न देखूँ। (२) न मिलना जुलना।

मुँह न फेरना—(१) सामने खड़े रहना। (२) 'ना' न करना। उसने फाँसी से भी मुँह न फेरा।

मुँह देखे का—दिली नहीं केवल दिखावटी। मुँह देखे की बड़ाई है, पीछे सब बुरा कहते हैं।

मुँह निकल आना—रोग, दुर्बलता, शर्म से चेहरा उतर जाना।

मुँह पकड़ना—न बोलने देना। कहो न, कोई तुम्हारा मुँह पकड़ता है ?

मुँह पड़ना — साहस, हिम्मत होना। उनके सामने माँगने को मुँह नहीं पड़ता।

मुँह पर—सामने। मुँह पर गाली दो मुँह पर झूठ बोलो।

मुँह पर जाना—(१) कहने का लिहाज करना। तुम्हारे मुँह पर जाता हूँ नहीं तो इसे अभी ठीक कर देता। (२) बात का विश्वास करना।

मुँह पर थूकना — बेइज्जत या शर्मिन्दा करना। बुरा करोगे तो दुनिया मुँह पर थूकेगी।

मुँह पर न रखना—स्वाद भी न लेना। तुम्हारे हाथ का खाना मुँह पर भी न रखा।

मुँह पर नाक न होना—शर्म न होना। कितना ही शर्मिन्दा करो उनके मुँह पर नाक तो है ही नहीं।

मुँह पर पानी फिर जाना—चेहरा खुश होना। जब लड़का जेल से छूट आया तब मुँह पर पानी फिरा।

मुँह पर बात आना—(१) कहना चाहना। (२) कुछ कहना। यह बात मुँह पर भी न आने पावे।

मुँह पर फेंकना—नाखुश होकर देना। नहीं मानता तो मुँह पर फेंक आओ।

मुंह पर बरसना—चेहरे आकृति से दीखना। मुँह पर बरसता है वह अमीर है।

मुँह पर बसन्त फूलना, खिलना—चेहरा पीला, भयभीत, उदास होना। क्या आपत्ति है जो मुँह पर बसन्त फूल रहा है ?

मुँह पर फेंकना, मारना—नाराज़ी से देना। रोज तक़ाजा सहते हो जो कुछ है मुँह पर मारो।

मुँह पर मुरदनी छाना—(१) चेहरा पीला होना। (२) मौत के आसार होना। (३) डर, शर्म, उदासी मुँह पर छाना। जेल का नाम सुनते ही मुँह पर मुरदनी छा गई।

मुँह पर मोहर करना—दे० मुँह पकड़ना।

मुँह पर रखना—(१) सामने रखना (२) तमाचा मारना। ज्यों ही गाली दीं मैं तो झट मुँह पर रख आया।

मुँह पर लाना—वर्णन करना। अपनी की हुई नेकी मुँह पर मत लाओ।

मुँह पर हवाई उड़ना—दे० मुँह फक होना।

मुँह पर हाथ रखना—कहने से रोकना। मैंने मुँह पर हाथ रखा नहीं तुम तो कह ही देते।

मुँह पसार कर दौड़ना—पाने के लालच में चाहना से बढ़ना। ऐसे मुँह पसार कर दौड़े कि सब तुम्हें ही मिल जाय।

मुँह पसार कर रह जाना—(१) शरमा कर रह जाना। (२) चकित हो जाना। मेरे जादू के खेल देख मुँह पसार कर रह गये।

मुँह पाना—रुख, इच्छा देखना। उनका मुँह पाते ही मैंने कह दी।

मुँह पेट चलना—क़ै दस्त होना।

मुँह फक होना—शर्म या डर से मुँह पीला पड़ना। मुझे देखते ही उनका मुँह फक हो गया।

मुँह फटना—चूने आदि से मुँह में घाव होना।

मुँहफट होना — अनुचित, ओछी तथा कड़वी भी कह देने वाला। सभ्यता सीखो मुँहफट मत बनो।

मुँह फाड़ कर कहना—बेशर्मी से

कहना। हमने मुँह फाड़ कर भी कहा पर वे न समझे।

मुँह फिरना, फिर जाना—(१) मुँह टेढ़ा, कुरूप हो जाना। ऐसा थप्पड़ दूँगा जो मुँह फिर जायगा। (२) लकवा मार जाना। (३) बराबरी, सामना करने लायक न रहना। घंटे भर की लड़ाई में ही शत्रु का मुँह फिर गया।

मुँह फुलाना, फुला कर बैठना—चेहरे से नाराजी दिखाना। घर में जिसे न दो वही मुँह फुला कर बैठ जाती है।

मुँह फूँकना—(१) मुँह भुलसना (स्त्री गाली)। ऐसे नौकर का तो मुँह फूँक दे। (२) मुरदा जलाना (उपेक्षा)। (३) दे ले कर दूर करना।

मुँह फूलना—नाराज़गी होना। मैं कुछ कहूँगा तो तुम्हारा मुँह फूल जायगा!

मुँह फेरना—(१) हराना। विवाद में वह तर्क किये कि विपक्षी का मुँह फेर दिया। (२) पीठ करना। मेरे मुँह फेरते ही फिर बकने लगा। (३) उपेक्षा जताना। मन (४) हटाना। ऐसे कामों से मुँह फेरा।

मुँह फैलाना—ज्यादा लेना, चाहना। मुँह मत फैलाओ औक़ात से ज्यादा न मिलेगा।

मुँह फोड़ कर खाना—बेशरम होकर खाना (स्त्री)।

मुँह बनना, बन जाना—ऐसा चेहरा जिससे नाराजी दिखे। थोड़ी चीज़ दो तो मुँह बना जाता है, फिर मनाओ।

मुँह बंद करना, कर लेना, होना—चुप करना, होना। शास्त्रार्थ में उनके सामने बड़े बड़े पंडितों ने मुँह…।

मुँह बनवाना—योग्यता, सुन्दरता प्राप्त करना। पहिले जैसा मुँह बनवाओ तब पृथ्वीराज जैसी हजामत करा लेना।

मुँह बाँध कर बैठना—चुपचाप बैठना। पिटने के डर से मुँह बाँधे बैठा रहा।

मुँह बाना—(१) मुँह खोलना। (२) जँभाई लेना। (३) बेहूदे पन से हँसना। (४) अपनी हीनता सिद्ध होने पर भी हँसना।

मुँह बिगड़ना—(१) मुँह का स्वाद खराब होना। इसे खाने से तो मुँह बिगड़ गया। (२) आकृति, चेहरा खराब होना।

मुँह बिगाड़ना—(१) स्वाद खराब करना। (२) मारपीट कर चेहरा बिगाड़ना। मारते मारते मुँह बिगाड़ दूँगा। (३) असंतोष, अप्रसन्नता

जताना। मुँह क्यों बिगाड़ते हो और दे दूँगा। (४) लड़ाई, कड़वी बातें। मुँह बिगाड़ मत करो फिर कभी ले लेंगे। (६) शर्मिन्दा करना, गर्व चूर्ण करना। रुपये नाक पर मार कर सेठ जी का मुँह बिगाड़ दिया।

मुँह भर आना—(१) कै आना। (२) मुँह में पानी भर आना।

मुँह भर के—(१) जी चाहे जितना। मुह भर के माँगो, खूब मिलेगा। (२) लबालब। (३) पूरी तरह से।

मुँह भरना—(१) रिश्वत देना। दरोगा जी का मुँह भरो तो काम बने। (२) खिलाना। (३) न बोलने देना।

मुँह भर बोलना—अच्छी तरह। मेरे से मुँह भर बोलते भी नहीं।

मुँह भराई देना—रिश्वत देना।

मुँह बुरा बनाना—चेहरे से नाराजी दिखाना। मुँह क्यों बनाती हो अच्छा बनवा दूँगा।

मुँह मारना—(१) खाने की चीज़ में मुंह लगाना। (२) दाँत से काटना। (३) जल्दी जल्दी खाना। (४) चुप कराना। मेरा मुँह मार दिया कहने न दिया। (५) रिश्वत देना। (६) कान काटना। यह कपड़ा रेशम का भी मुँह मारता है।

मुँह मीठा करना—(१) देकर खुश करना। नौकरी मिलते ही मुँह मीठा करूँगा। (२) मिठाई खिलाना।

मुँह मीठा होना—(१) मिठाई मिलना। (२) सगाई होना। (३) लाभ होना। हमारा मुँह मीठा हो तो काम करा दें।

मुँह मुलाहिजे का—जान पहचान का। यह हमारे मुँह मुलाहिजे का आदमी है, घर तो इसका पता नहीं।

मुँह में आना (बात)—कहना चाहना। जो मुँह में आया कह दिया।

मुँह में कालिख लगना—बहुत बदनामी होना।

मुँह में खून लगना—चस्का पड़ना। एक दिन रुपये मिल गये अब मुँह में खून ही लग गया।

मुँह में जबान न होना—बोलने की ताक़त होना। राजा से कहने के लिये किसी के मुँह में जबान नहीं।

मुँह में तिनका लेना—दीनता आधीनता प्रकट करना। मुँह में तिनका लेकर कहो मैं तुम्हारी गऊ हूँ।

मुँह में पड़ना (बात)—सुना

कहा जाना। तुम्हारे मुँह बात पड़ी और फैली।

मुँह में पानी भर आना—(१) जी ललचाना। मिठाई देखते ही मुँह में पानी भर आया। (२) ईर्ष्या होना।

मुँह में बोलना — धीरे बोलना। मुँह में ही बोला होगा मैंने तो सुना नहीं।

मुँह में लगाम देना—थोड़ा, ठीक तरह, सोच समझ कर बोलना।

मुँह में लगाम न होना—बे समझे बक देना। उसके मुँह में लगाम नहीं बाप के सामने गाली देता है।

मुँह मोड़ना—(१) काम करने में आगा पीछा करना। पहिले वादा किया अब मुँह मोड़ते हो? (२) विमुख, विरुद्ध होना। तुम ही मुख मोड़ लोगे तो हमारा सहारा ही कौन रहेगा।

मुँह रखना—लिहाज, ध्यान, इज्जत रखना। एक बार मुँह रख दिया दुबारा क्या मुँह लेकर कहूँ।

मुँह लगना—(१) सिर चढ़ना। मुँह लगा नौकर बुरा। (२) सामने बोलना। नीच के मुँह मत लगो।

मुँह लगाना — (१) दे० मुंह चढ़ाना। (२) अधिक आदर करना। उसे अधिक मुँह मत लगाओ, वह ओछा है। (३) सिर चढ़ाना।

मुँह लाल करना—(१) थप्पड़ मार कर मुँह लाल करना। (२) पान खिलाकर मुँह लाल करना।

मुँह लाल होना—गुस्से में मुंह लाल पड़ना।

मुँह सँभालना — बुरी बातों से रोकना। मुँह सँभाल कर बोलो, गाली क्यों देते हो।

मुँह सफेद होना—दे० मुँह फक होना।

मुँह सिकोड़ना—दे० मुँह टेढ़ा करना।

मुँह सीना — बोलने से रुकना, रोकना।

मुँह सुजाना—(१) थप्पड़ मार कर लाल करना। (२) मुँह फुलाना। मुँह क्यो सुजाती हो तुम्हें भी ला दूँगा।

मुँह सूखना—(१) गला, जबान सूखना, काँटे पड़ना। (२) डर या शर्म से चेहरा फीका पड़ना।

मुँह से दूध की बू आना, दूध टपकना—अनजान, बालक होना (हास)। तुम क्या जानो तुम्हारे मुंह से तो अभी दूध की बू आती है।

मुँह से निकालना—कहना। ऐसी बात मुँह से मत निकालो जिससे पकड़े जाओ।

मुँह से फूटना—बोलना, कहना। कुछ मुँह से भी फूटो कि यह चाहता हूँ।

मुँह से फूल झड़ना—प्यारी बातें निकलना। लखपती है पर गरीबों से बात करते हुए भी मुँह से फूल झड़ते हैं।

मुँह से बात छीनना—दे० ६८६६।

मुँह से भाप न निकलना—डर से सन्न होना।

मुँह से लार गिरना, टपकना—बहुत लालच होना। उस माल को देखते ही मुँह से लार टपकने लगी।

मुँह से लाल झड़ना — सुन्दर, शुद्ध, प्यारे प्यारे शब्द निकलना। बोलते क्या हैं मुँह से लाल झड़ते हैं।

मुँह लेकर रह जाना—काम न होने पर शर्मिन्दा होना। जब उन्हों-ने भी झिड़क दिया तो अपना सा मुँह लेकर रह गये।

मुँह निकल आना (इतना सा)—दे० मुँह उतरना।

मुँहा मुँही होना—(१) कहा सुनी होना। फूट पड़ते ही मुहा मुही होने लगी। (२) आपस में चूमना।

मुअम्मा खुलना, हल होना—गुप्त भेद, रहस्य प्रकट होना।

मुकद्मा लड़ना—मुकदमे के पक्ष में यत्न करना।

मुकद्दर आजमाना — दे० मु० १४१७।

मुकद्दर चमकना — दे० मु० १४२१।

मुकर्रर सिकर्रर — कई बार। मुकर्रर सिकर्रर मत करो इस बार ही कर डालो।

मुकाबले पर आना, जमना—विरोध या लड़ने के लिये सामने आना। मुकाबिले पर तो जमता नहीं यों क्या मज़ा चखाऊँ ?

मुकाम बोलना—सरकारी अफसर का ठहरना। कलक्टर साहब कल यहाँ मुकाम बोलेंगे।

मुकाम देना—मातम पुरसी को जाना।

मुक्का चलाना, मारना—मुक्के से चोट पहुँचाना, आक्रमण करना।

मुक्का सा लगना—दिल को दुख पहुँचना। बुरी खबर का एक मुक्का सा लगा अभी तक दुख है!

मुखातिब होना—(१) किसी तरफ़ मुख करना। (२) किसी की ओर घूम कर बातें करना। इधर मुखा-तिब हों तो अर्ज करूँ।

मुग्ध रहना—(१) चुप रहना। (किसी की बाबत)। (२) भेद न खुलना।

मुजम्मा लगाना—(१) रोक या आड़ लगाना। तुम मुजम्मा न लगाते तो वह अभी कर देता।

मुजम्मा लेना—आड़े हाथों, खबर लेना।

मुटाई चढ़ना—(१) मोटा होना। (२) अधिक शेखी आना। क्यों

मुटाई चढ़ी है साले तेरी भी मुटाई झाड़ दूँगा।

मुटाई झड़ना—शेखी मिटना।

मुट्ठा गरम करना—रुपया, रिश्वत देना। पहिले मुट्ठी गरम करो तो काम बने।

मुट्ठी बंद होना—रहस्य, भेद ज्ञात न होना। घर में फूट नहीं है इसी से मुट्ठी बंद है।

मुट्ठी में धरा रखा या होना—पास होना। मेरी क्या मुट्ठी में रखा है जो बता दूँ?

मुट्ठी में—वश में। अभी तो वे मेरी मुट्ठी में है काम करा दूँगा।

मुद्दत काटना—(१) थोक माल की कीमत वक्त से पहिले देने पर बाकी दिनों की व्याज काटना। (२) वक्त बिताना।

मुफ़्त में—(१) व्यर्थ, वेफायदा। इस वेचारे की जान मुफ़्त में गई। (२) वेदाम। यह घड़ी मुफ़्त में मिली है।

मुरंडा करना, होना—सुखाना, सूखना। चार दिन की मेहनत में मुरंडा हो गये।

मुरचंग झाड़ना — आनन्द-चैन करना (व्यंग्य)।

मुरदा उठना—(१) मर जाना (गाली) भगवान करे उसका मुरदा उठे (स्त्री)।

मुरदा करना—(१) पीटते पीटते मार देना। (२) किसी लायक न छोड़ना।

मुरदे का माल—लावारिस माल।

मुरदे की हड्डियाँ उखाड़ना—पुरानी बातों, झगड़ों को फिर से कहना। वह बेचारा कैसा ही था अब क्यों मुरदे की हड्डी उखाड़ते हो व्यर्थ है, करा सो भरा।

मुरदे से शर्त बाँध कर सोना—बहुत, घड़घप्प सोना।

मुराद पाना—इच्छा पूरी होना। लड़का हुआ मुराद पाई।

मुराद माँगना—इच्छा पूरी होने की प्रार्थना करना। भगवान से मुराद माँगो वह पूरी करेगा।

मुराद मानना—दे० मन्नत मानना।

मुरादों के दिन—जवानी। मुरादों के दिन हैं हमें भी मिले कुछ।

मुरौवत तोड़ना—रुखाई से व्यवहार करना, लिहाज न करना।

मुर्दनी छाना (चेहरे पर)—(१) मौत के चिन्ह होना। (२) उदासी, निराशा होना। फेल का नाम सुनते ही चेहरे पर मुर्दनी छा गई।

मुलतानी करना—मुलतानी रंग में रँगना।

मुश्किल आसान होना—विपत्ति, कठिनाई दूर होना।

मुश्कें कसना—हाथों को पीठ पीछे बाँध गठरी सा करना।

मुहरा लेना — मुकाबिला करना,

सामने होकर लड़ना। उनसे मुहरा लेना छाती वालों का काम है।

मुहर्रम की पैदाइश होना—सदा दुखी, चिन्तित रहना। भाई कभी सुख न मिला, मुहर्रम की पैदाइश रहे।

मुहर्रमी सूरत—रोनी सूरत। ऐसी मुहर्रमी सूरत है, देख लो तो रोटी न मिले।

मूँग दलना (छाती पर)—देखो २६१६।

मूँग की दाल खाने वाला—निर्बल, डरपोक।

मूँछ उखाड़ना—कठिन दंड देना घमंड चूर करना। बकोगे तो मूँछें उखाड़ लूँगा!

मूँछ ऐंठना—मूँछें घमंड में आकर मरोड़ना। क्या मूँछें ऐंठते हो, क्या कर सकोगे?

मूँछें नीची होना— शर्मिन्दा, बेइज्जत होना। बेटे के बुरे कामों से उनकी भी मूँछें नीची हो गई हैं।

मूँछों पर ताव देना, हाथ फेरना-वीरता की अकड़ दिखाना।

मूँड़ कर खाना — बेवकूफ़ बना कर रुपया ऐंठना। नाबालिग को मूँड़ कर खा गये।

मूँड़ चढ़ना—दे० सिर चढ़ना।

मूँड़ चढ़ाना—दे० सिर चढ़ाना।

मूँड़ मारना—(१) सिर खपाना। (२) बहुत हैरान होना, यत्न करना। मूँड़ मार मर जावो तबहू न पावोगे।

मूँड़ मुड़ाना—संन्यासी होना।

मूँड़ो काटे — सिर कटे (गाली स्त्री)।

मूँड़ी मरोड़ना—(१) गला घोंट कर मारना। (२) धोखे से हानि पहुँचाना।

मूँढे पर बैठना — वेश्या बनना (पंजाब में वेश्या मूँढे पर बैठती हैं)।

मूठ करना—तीतर बटेर पक्षी को मुट्ठी में लेना।

मूठ चलाना, मारना — जादू करना। भरि गुलाल की मूठि सों गई मूठि सी मारि।

मूठ मारना—(१) कबूतर मुट्ठी में पकड़ना। (२) हस्तक्रिया करना।

मूठ लगाना—जादू-टोने का असर होना।

मूत की धार न सूझना—कुछ न दिखना।

मूत की धार पर मारना—वस्तु लेने की इच्छा न करना।

मूत देना—डर से घबरा जाना।

मूत निकल पड़ना—डर से बुरी दशा होना।

मूली गाजर समझना — अति तुच्छ मानना।

मूसलों ढोल बजाना—खूब प्रसिद्ध करना। क्यों बिचारे की बदनामी करने को मूसलों ढोल बजाते हो।

मेंढकी को ज़ुकाम होना—अयोग्य को हौसला होना।

मेख ठोंकना—(१) हाथ पैर में कील ठोंकना। (२) दबाना। ऐसी मेख ठोकी है कि जन्म भर को ज़ेर कर लिया है। (३) तोप का मुँह बंद कर देना।

मेख मारना—(१) कील ठोंकना। (२) भाँजी मारना। व्याह में मेख मार दी वह रुक गया। (३) काम में रुकावट डालना।

मेदा कड़ा होना — कब्ज-रोग होना।

मेदा साफ़ होना — मल साफ़ होना।

मेल करना—संधि, मित्रता करना।

मेल खाना, बैठना, मिलना—(१) पटरी बैठना, संगत-साथ निभना। मेरा आपका मेल नहीं खा सकता। (२) दो वस्तुओं का परस्पर उपयुक्त होना। जम्पर का रंग साड़ी के रंग से मेल नहीं खाता।

मेल होना—संधि, सुलह होना।

मेष करना—मीन मेख करना, आगा पीछा, संकल्प विकल्प करना।

मेंहदी लगी है ?—क्या पैर काम में नहीं लाए जा सकते।

मेंहदी बाँधना—मेंहदी की पत्ती पीस बाँधना।

मेंहदी रचना — मेंहदी का रँग खिलना।

मेंहदी रचाना—मेंहदी लगाना।

मेंहदी लगाना—(१) मेंहदी को पानी में घोल कर लगाना। (२) उसकी पत्ती पीस हथेली या तलवे में लगाना।

मेहमानी करना—खूब गत बनाना, पीटना (व्यंग्य)। नंद महरि की कानि करति हों नतरु करति मह मानी।

मैदान करना—(१) लड़ना, युद्ध करना। (२) खुली जगह छोड़ना। (३) ढा देना।

मैदान छोड़ना—लड़ाई से हटना। उन से लड़ना आसान नहीं। बड़े बड़े वीर मैदान छोड़ गये।

मैदान मारना—(१) खेल, बाजी, जीतना। (३) विजय करना।

मैदान में आना—लड़ने को सामने आना। मैदान में आओ जैसा कि वीर करते हैं फिर बोलो क्या बात है।

मैदान में आना—सामने, लड़ने आना। मैदान में आकर कहे तो पूछूँ क्या बात हैं।

मैदान साफ़ होना—रास्ते में रोक न होना।

मैदान हाथ आना, पाना—युद्ध

में विजय होना। मैदान सिक्खों के हाथ आया।

मैदान होना—युद्ध होना।

मैल रखना (मन में)—द्वेष, जलन होना।

मैल होना हाथ की—तुच्छ वस्तु। रुपया हाथ का मैल है।

मैले सिर से होना — रजस्वला होना।

मोटा आसामी—धनवान। यह तो मोटा आसामी फाँसा लाख पर हाथ मारेगी।

मोटाई उतरना—पाजीपन छूटना, शेखी टूटना।

मोटा झोटा—घटिया, साधारण। गाँव में मोटा झोटा खाना मोटा झोटा पहनना बस यह है।

मोटा दिखाई देना—कम दिखना, सिर्फ मोटी चीज़ दिखना।

मोटा भाग्य—भला भाग्य। सहज संतोषहि पाइये दादू मोटे भाग।

मोटा पेट होना — भारी भरकम होना, धनवान होना।

मोटी बात—मामूली बात। मोटी बात है हरकोई जानता है कि झूठ बुरा है।

मोटी चुनाई—बे डौल पत्थरों की जोड़ाई।

मोटा शिकार-मोटी चिड़िया—दे० मोटा आसामी।

मोटाई चढ़ना—पाजी, बदमाश, घमंडी होना।

मोटाई झड़ना—(१) बदमाशी छूटना। (२) ऐंठ निकलना।

मोटी भूल — भद्दी, भारी भूल। ऐसी मोटी भूल तुमसे नहीं होनी चाहिये।

मोटे हिसाब से—अंदाज या अट-कल से।

मोटे तौर पर—साधारणतया।

मोती गरजना—मोती चटकना, कड़कना या उसमें बाल पड़ना।

मोती ढलकना—रोना (व्यंग्य)। रोती हो या गालों पर मोती ढलक रहे हैं।

मोती पिरोना — (१) रोना (व्यंग्य)। (२) सुन्दर साफ़ लिखना। (३) प्रिय बोलना। (४) बहुत बारीक काम करना।

मोती बींधना—(१) मोती में छेद करना। (२) संबन्ध होना।

मोती रोलना—थोड़े परिश्रम से बहुत कमाना।

मोतियों से मुँह भरना—खुश हो कर बहुत धन देना।

मोम करना—रहम दिलाना।

मोम का हो जाना—बहुत दया आ जाना।

मोम की नाक—(१) अस्थिर मति। (२) जिसका जरा देर में मिजाज बदले।

मोम की मरियम—बड़ी नाज़ुक स्त्री।

मोम होना—दया आना, पिघलना। दुखी दशा देखते ही वह मोम हो गये और रोने लगे।

मोमियाई निकालना—(१) खूब मारना पीटना। (२) बड़ी मेहनत कराना।

मोरचा खाना—जंग जमना।

मोरचा जीतना—बैरी की रक्षक सेना जीतना।

मोरचा बँदी करना—सेना नियुक्त करना, रोक लगाना।

मोरचा बाँधना—दे० मोरचा बन्दी करना।

मोरचा लेना—युद्ध करना। राजपूतों से मोरचा लेना टेढ़ी खीर थी।

मोरी छूटना—दे० पेट चलना।

मोरी पर जाना—पेशाब करने जाना (स्त्री)।

मोल करना—(१) वस्तु का मूल्य तै करना। मोल करो क्या माँगता है। (२) उचित से अधिक मूल्य कहना।

मोहड़ा मारना—काम सब से पहिले कर डालना।

मोहड़ा लगाना—अन्न की बोरी का मुँह खोल कर रखना (अन्नव्यापारी)

मोहनी डालना—मोहित करना, जादू सा करना। उसने तो ऐसी मोहनी डाली है कि दिन भर वहीं रहते हैं।

मोहनी लगना—जादू सा लगना, मोहित होना। मुख देखत मोहिनी लागत रूप न बरन्यौ जाई।

मोहरा लेना—(१) सेना का सामना करना। (२) भिड़ना।

मौक़ा देखना, तकना—दाँव देखना, ठीक अवसर देखना।

मौक़ा देना—समय देना। दो दिन का मौक़ा दो तो मैं ला दूँ।

मौक़ा पड़ना—(१) दुख संकट पड़ना। मौक़ा पड़े पर काम न आई तो दोस्ती क्या। (२) आवश्यकता होना। मौक़ा पड़ेगा तो खरीद लेंगे।

मौक़ा पाना—(१) फ़ुरसत मिलना। मौक़ा पाऊँगा तो कर दूँगा। (२) उचित समय पाना।

मौक़ा मिलना—(१) समय मिलना। मौक़ा नहीं मिलता आऊँ कैसे। (२) घात पाना।

मौज आना—उमंग में भरना, धुन होना।

मौज उठना—उमङ्ग उठना।

मौज खाना—हिलोरें, लहरें आना (लश्करी)।

मौज पाना—मरजी इच्छा जानना। आपकी मौज पाऊँ तो एक माल लाऊँ?

मौज मारना—(१) लहराना। दरिया मौजें मार रहा है। (२) आनन्द भोगना।

मौज में आना—स्वयं इच्छा उमंग उठना। अपनी मौज में आती खरीद लाते, मैंने मँगाया तो नहीं लाये।

मौजूद रहना—(१) पास रहना। तुम भी मौजूद रहना शायद काम पड़ जाय। (२) ठहरे रहना। आप मौजूद रहोगे तो मैं जल्दी लौट आऊँगा।

मौत आना—मरने को होना। दुख में मौत नहीं आती।

मौत का तमाचा—मौत की याद दिलाने वाला काम, घटना।

मौत का पसीना आना—अभी मरने वाला, मरने के लक्षण होना।

मौत के दिन पूरे करना—अति कष्ट कर दिन जिनमें मृत्यु ही संभव हो बिताना।

मौत बुलाना—मरने लायक काम करना।

मौत सिर पर आना खेलना—(१) मरने को होना। मौत सिर पर खेल रही है और तुम अला बला खा रहे हो। (२) कुएँ में क्यों झाँकते हो क्या मौत सिर पर खेल रही है? (३) प्राणों का भय। (४) बुरे दिन आना।

मौत से लड़ कर आना—मरते मरते बच जाना, बुरी हालत में जीना।

मौन खोलना—चुप्पी के बाद बोलना।

मौन गहना—चुप ही रहना। तुमने तो वहाँ जाकर मौन ही गह लिया, कुछ तो कह देते।

मौन तजना—बोलने लगना। तुम मौन तजो कुछ तो बोलो।

मौन धरना, धारण करना—चुप हो जाना।

मौन बाँधना—चुप होना। नाहिं तो मौन बाँध होइ गूँगा।

मौन लेना—चुप्पी धारना। जब देखा यहाँ कोई बात न सुनेगा तो मौन ले लिया।

मौन सम्हारना—मौन धारना, साधना।

मौर बँधना—विवाह के समय सिर पर मुकुट बँधना।

मौर बाँधना—मँजरी निकलना।

मौसर आना—मिल सकना। मुझे जीवन में कभी यह चीज़ मौसर नहीं आई है।

म्याँऊ का मुँह—खतरे की जगह। मुख्य या कठिन काम। म्याऊँ का मुँह कौन पकड़े? इधर उधर को तो सब तैयार हैं।

म्याऊँ म्याऊँ करना—डर से धीरे धीरे बोलना, बोल बंद करना।

म्याँव म्याँव करना—डर से बोला न जाना। जब मालिक ने फटकारा तो म्याँव म्याँव करने लगे।

य

यद्वा तद्वा—(१) जैसे तैसे। (२) कुछ न कुछ।

यम लोक भेजना—मार डालना।

यश कमाना, लूटना—नाम पैदा करना। दान देकर यश कमाया।

यश गाना—बड़ाई करना। टुकड़े खायेंगे यश गायेंगे।

यश मानना—बड़प्पन मानना।

यह बात ही क्या है—मामूली है, कोई कठिन नहीं।

यहाँ का बाबा आदम ही निराला है—यहाँ रंग ढँग, नियम ही अजीब है जैसा और कहीं नहीं।

यह वह—टाल मटूल। तुम्हारी यह वह न चलो।

यहाँ का यहीं—(१) इसका इसी जगह (२) दुनिया का दुनिया ही में। सब धन यहाँ का यहीं रह जाता है।

यहाँ सब कान पकड़ते हैं—किसी की उस्तादी नहीं चलती।

यातायात करना, लगा रहना—(१) जन्म मरण होता रहना। जब तक मोक्ष न होगी जीव यातायात करेगा ही। (२) जाना आना लगा रहना।

याद करोगे—पीछे पछताओगे।

याद में न देखना—होश में न देखना। हमने तो अपनी याद में इन्हें जवान नहीं देखा।

यार बनना—(१) दोस्त बनाना। (२) मुहब्बत में फँसना। (३) मतलबी होना। जब वही यार बना तो यह क्यों चूकें।

यार मारी करना—यार बन कर धोखा देना।

यारी कुट करना—दोस्ती छोड़ना। हमारी तुम्हारी यारी कुट।

यारी गाँठना—दोस्त बनाना। मतलब के लिये सब से यारी गाँठो।

युग धर्म—समय के नियम, रीति।

युग युग—बहुत दिनों तक। युग युग जिये युगल जोड़ी यह पिये प्रेम मकरन्द।

युग युगान्तर से—बहुत दिनों से।

युद्ध माँडना—लड़ना। संधि के बजाय युद्ध माँड दिया।

यों न यों—जैसे बने वैसे, जैसे हो तैसे।

यों ही देना—मुफ़्त देना। इतनी तो मैं योंही दे देता।

यों ही सही—इस तरह भी मंजूर।

यौवन उभरना—(१) जवानी आना। (२) सौन्दर्य झलकना। (३) रौनक पकड़ना।

यौवन ढलना—जवानी बीतना।

यौवन पर आना—दे० यौवन उभरना।

र

रंग आना, चढ़ना—(१) चेहरे पर रौनक आना। (२) रंगीन होना। कपड़ा आदि (३) मज़ा मिलना।

रंग उखड़ना—(१) रौब, धाक न रहना। पहिले रुपया बरसता था पर अब उनका रंग ही उखड़ गया है। (२) आनन्द नाश होना।

रंग उड़ना, उतरना—(१) रंग का फीका पड़ना। (२) नशा दूर होना। (३) बहकाने में न रहना। (४) डर या शर्म से चेहरे पर रौनक न रहना।

रंग खेलना—रंग डालना। खेलत रंग परस्पर हिल मिलि।

रंग चढ़ना—प्रभाव पड़ना। उनका रंग चढ़ गया तो समझो हजार दो हजार का पानी होगा।

रंग जमना—(१) रंग चढ़ना। (२) ठीक जँचना। (३) बाहर आना। महफिल में रंग जमा हुआ था। (४) मस्ती होना। भंग का रंग जमा है। (५) धाक जमना। महफिल में रंग जम जाय मेरा तो रुपये हजार ले लो। (६) जीत की गोटी बैठना।

रंग जमाना—(१) रंग चढ़ाना। (२) बुनियाद डालना। (३) रोब में लाना। कैसा रंग जमा कर काम निकालता हूँ। (४) असर डालना।

रंग चूना—(१) रंग झलकना। चेहरे से रंग चू रहा है। (२) यौवन उमड़ना।

रंग टपकना—दे० रंग चूना।

रंग डालना फेंकना—होली खेलना. एक दूसरे पर रंग डालना।

रंग ढंग देखना—चाल-ढाल परखना। लड़की के रंग-ढंग तो अच्छे नहीं।

रंग देना—फँसाने के लिये प्रेम जताना। रंडी अभी रंग दे रही है एक पैसा नहीं लेती फिर इकट्ठे वसूल करेगी।

रंग निकलना, निखरना—(१) रंग चटकीला होना। (२) चेहरे का रंग गोरा होना।

रंग पकड़ना, रंग पर आना—जवानी पर आना। रंग पर आवेगी तब तो परी सी जँचेगी।

रंग फक पड़ जाना—डर से घबड़ा जाना।

रंग फीका पड़ना, होना (१)—रंग हलका होना। (२) चेहरे की रौनक न रहना।

रंग फीका रहना—पूरा प्रभाव न पड़ना।

रंग बँधना—(१) रौब गाँठना।

रंग बाँधना—(१) रौब गाँठना। (२) झूठा ढोंग रचना।

रंग बदलना—(१) नाराज़ होना। अभी बड़े प्रसन्न थे जरा देर में रंग बदल गये। (२) हालत बदल जाना। अब रंग बदल गये हैं वह हाल नहीं है।

रंग बरसना—खूब शोभा होना। आज तो यहाँ रंग बरस रहा है, शोभा हो रही है।

रंग बिगड़ना—(१) बुरा हाल होना। अनघड़ सुघड़ समाज में आये बिगड़े रङ्ग। (२) रङ्ग खराब हो जाना। (३) रौब न रहना। (४) शेखी किरकिरी होना।

रंग बिरंगा—कई रङ्ग का।

रंग मचाना—(१) खूब लड़ना, मारकाट करना। (२) धूम मचाना। असवारी में रङ्ग मचावे, मन के संग तुरङ्ग चलावे।

रंग मारना—अन्य रङ्ग की गोटी मारना।

रंग में ढलना—विचार के अनुसार चलना। लड़का उस बदमाश के रङ्ग में ढलगया है, सुधारो।

रंग में भंग करना—आनन्द, मज़ा बिगाड़ना।

रंग में भंग पड़ना—भोग, आनन्द, हँसी में विघ्न पड़ना।

रंग रचाना—(१) विवाह या अन्य खुशी का सामान करना। (२) रङ्गीन करना।

रंग रलियाँ मचाना, करना—भोग, आनन्द में मस्त होना।

रंग रलना—आमोद प्रमोद करना।

रंग लाना—(१) हालत करना। रङ्ग लाती है जवानी रूप मिलजाने के बाद। (२) बुराई करना। (३) जाल फैलाना। (४) तंग करना।

रंग है—वाह, शाबाश।

रंगत आना—आनन्द होना।

रंगा सियार होना—ढोंगी होना। गेरुए कपड़ों पर मत भूलो यह रंगा सियार है।

रंजक उड़ाना—(१) तोप-बन्दूक छूटने के लिये बत्ती बारूद जलाना। (२) पादना (बाजारू)।

रंजक चाट जाना—बारूद जल कर रह जाना पर तोप-बन्दूक न छूटना।

रंजक देना—गाँजे चरस का दम लगाना।

रंजक पिलाना—तोप-बन्दूक की प्याली में जरा बारूद रखना।

रकाब पर पैर रखना—जाने को तैयार होना। जब आते हैं रकाब पर पैर रखे ठहरते तो हैं ही नहीं।

रक्त के मुहावरे 'खून' में देखो

रक्त पात होना—खून बहना। दिल्ली के लिये बड़ा रक्त पात हुआ है।

(किसी पर) रख कर कहना—(१) अन्य के बहाने अन्य से कहना। उस पर रख कर वह मुझे गाली दे रहे थे (२) पूरी बात न कहना।

रख लेना—न लौटाना, न देना दबा लेना। आपने मेरे लिये भेजी उन्होंने खुद ही रख ली।

रग उतरना—(१) क्रोध ठंडा होना, जिद उतरना। (२) हठ न रहना (३) आँत उतरना।

रग खड़ी होना—कोई रग फूलना

रग चढ़ना—(१) जिद पड़ना। (२) क्रोध आना।

रग दबना—दबाव मानना। तुम्हारी रग उन्हीं से दबती है, मेरा कहा तो मानते ही नहीं।

रग फड़कना—(१) रग फड़कने से बुरा-भविष्य दिखना।

रग रग फड़कना—चुल बुला होना। उसकी रग रग फड़कती है।

रग रग में—शरीर भर में व्याप्त। तुम्हारी रग रग में बदमाशी भरी है।

रगड़ पड़ना—बहुत मेहनत पड़ना। दो सौ मील सफ़र ! मोटर साइकिल पर !! रगड़-पड़ी हो गया बीमार।

रगड़ान देना—रगड़ना, घिसना।

रग पट्ठे से परिचित, वाकिफ़ होना—खूब आदत पहचानना।

रग रेशे में—अंग अंग में। रग रेशे में बदमाशी भरी पड़ी है।

रग रेशे से वाकिफ़ होना—नस नस पहचानना।

रचि रचि—बना बना के।

रत्ती भर—जरा सा। रत्ती भर नमक देदो काफ़ी है।

रत्ती रत्ती—सारा, जरा जरा सा। मैं उसके घर का रत्ती रत्ती हाल जानता हूँ।

रपट्टा लगाना, मारना—(१) झपटना, दौड़ना। (२) फिसलना।

रफू चक्कर बनना, होना—भाग जाना। दरोगा को देखते ही सब रफू चक्कर हो गये।

रबदा पड़ना—खूब बरसना।

(रास) रमाना—रास जोड़ना। श्रीकृष्ण गोपियों को जोड़ रात भर नृत्य क्रीड़ा कर रास रमाते।

(भभूत) रमाना—देह में राख मलना, लगाना।

(मन) रमाना—मन बहलना, दुख चिंता से हटा कर प्रसन्न करना।

रवाभर—ज़रा सा, कण बराबर।

रवाज देना—रीति चलाना। उन्होंने वेश्या नचा कर ब्याहों में नाच कराने को रवाज दिया।

रवाज पकड़ना—प्रचार होना, जारी होना। अब तो यह रवाज पकड़ गया है कि...।

रस भीजना, भीनना—(१) चीज़ के आनन्द का वक्त आना। (२) यौवन आना। ह्याँ उनके रस भीजत त्यों दृग ह्वाँ उनके मसि भीजत आवै।

(हिस्सा) रसद—बँटने पर हिस्से अनुसार लाभ।

रसना खोलना—बोलना शुरू करना।

रसना तालू से लगना—चुप होना। रसना तालू सों नहिं लावत पीवै पीव पुकारे।

रस रस, रसे रसे—धीरे धीरे। रस रस सूख सरित सर पानी।

रस लेना—मज़ा लूटना।

रसातल में पहुँचना—बरबाद होना। इज्जत उनकी रसातल को पहुँच जायगी।

रसीद करना—(१) थप्पड़ जड़ना। मैंने उसके मुँह पर एक चपत रसीद किया। (२) भेजना। जहन्नुम रसीद करो साले को।

रसीद काटना—प्राप्ति पत्र देना।

रसोई चढ़ना—खाना बनना।

रसोई तपना—भोजन बनाना।

रस्सी का साँप बनना—झूठी बात की भयंकर धूम मचना।

रह चलना, जाना—(१) जाने का ध्यान छोड़ना। (२) कारण वश न जा सकना।

(किसी) के रहते—होते हुए। मेरे रहते तुम्हें क्यों चिंता ?

रहने देना—(१) जाने देना, ध्यान न देना। (२) रद्दोबदल न करना।

रह जाना—(१) कुछ कार्रवाई न करना। तुम्हारा लिहाज़ करके रह गये वरना मज़ा चखा देते। (२) लाभ न उठा सकना। सब पा गए तुम रह गए (३) अंग को लकवा मारना या शिथिल पड़ना। लिखते लिखते हाथ रह गया। (४) पीछे छूटना। (५) बचना। सब लुट गया यही रह गया।

रह रह के—(१) घड़ी घड़ी, बार बार। (२) पछता पछता कर। रह रह के मुझे वही बात याद आती है।

रहा जाना—शान्ति, संतोष होना। मेरे से न रहा गया बोल पड़ा।

रस्सी ढीली छोड़ना—लगाम ढीली करना, मुहलत, रियायत देना।

राई काई करना—टुकड़े टुकड़े करना।

राई काई होना—टुकड़े टुकड़े होना। पवन के झोंकों से बादल राई काई हो गये।

राई नोन (आँखों में)—ईश्वर करे तेरी नजर मुझे न लगे (स्त्री)

राई नोन उतारना—नजर लगे बच्चे पर राई नोन को उतार करके आग में डालना, नजर दूर करना।

राई भर—रवा भर।

राई रत्ती—सब कुछ। राई-रत्ती भी हाल मुझ से छिपा नहीं है।

राई रत्ती करके—थोड़ा थोड़ा करके। राई-रत्ती करके अंधे का सब माल ले गये।

राई से पर्वत करना, होना—थोड़ी बात बढ़ जाना। तुम तो राई का पहाड़ कर देते हो, मैंने इतना नहीं कहा था।

राग अलापना—(१) अपनी ही बात कहते रहना। मेरी भी सुनते हो या अपना ही राग अलापे जाते हो?

राछ घुमाना—वर की पालकी को कुएँ या जलाशय की परिक्रमा कराना।

राज काज—राज का प्रबंध। राजा ने राज काज सँभाला।

राज देना—राजा बनाना। भाई को राज दे बन चल दिये।

राज पर बैठना—सिंहासन पर बैठना, राजा बनना। जब से राज पर बैठा, लड़ता ही रहा।

राज रजना—(१) राज्य करना। (२) राजों सा सुख भोगना।

राज रजाना—खूब सुख देना। तुम्हारी बेटी सेठ के घर राज रजायेगी।

रात की रात—(१) रात भर। (२) एक ही रात। (३) आज की रात। रात की रात वहाँ रहे सवेरे चल दिये।

रात दिन—हर समय।

रात दिन का रोना—हमेशा की खटपट या तकलीफ़।

रात दिन बराबर होना—रात को भी आराम न मिलना।

राम जाने—(१) मुझे नहीं मालूम (२) भगवान साक्षी है। राम जाने मैं सच कह रहा हूँ।

राम नाम सत्य है—मरने के बाद कहते हैं।

राम राम करके—बड़ी कठिनता से। राम राम करके उनसे इतना करवाया वरना बिल्कुल तैयार न थे।

राम राम करना—(१) राम नाम जपना। (२) नमस्कार करना।

राम राम होना—मिलना, भेंट होना। कभी कभी बजार में राम राम होती है, घर तो आते नहीं।

राम राम हो जाना—मर जाना।

राम शरण होना—(१) वैरागी होना। (२) मर जाना। राम राम कहि राम कहि राम शरण भए राउ।

राय कायम करना—निर्णय, निश्चित विचार करना।

राल गिरना, चूना, टपकना—बहुत इच्छा होना। किसी के पास कोई अच्छी चीज़ देखी और तुम्हारी राल टपकी।

राशि आना—पक्ष में अनुकूल होना।

राशि बैठना—गोद बैठना।

राशि मिलना—(१) दो का एक राशि में जन्मना। (२) मेल खाना।

रास कड़ी करना—लगाम खींचना।

रास बैठाना, लेना—(१) गोद लेना। (२) जन्म पत्री मिलना। दोनों की रास बैठ गई अब विवाह हो जायगा।

रास में लाना—वश में करना। रास में लाओ नहीं मुँह जोर हो जायगा।

रास्ता काटना—(१) रास्ते चलने में मनाही होना। (२) सामने इधर से उधर जाना। बिल्ली रास्ता काट गई, मैं न जाँउगा। (३) एक छोड़ दूसरे रास्ते जाना।

रास्ता देखना—इन्तज़ार, प्रतीक्षा करना।

रास्ता नापना—(१) बार बार आना जाना। कुछ काम है तभी तो रास्ता नापता है (२) जाना। हटो अपना रास्ता नापो।

रास्ता पकड़ना—(१) चले जाना। (२) किसी रास्ते से जाना। ऐसा रास्ता पकड़ो जो जल्दी हो जाय।

रास्ता फूटना—एक में दूसरा रास्ता निकलना। दो रास्ते फूटते हैं, तुम सीधे हाथ जाना।

रास्ता बताना—(१) तरीक़ा, तरकीब बताना। मैं रास्ता बता दूँगा उससे सब रुपये मिल जावेंगे। (२) धोखा देना।

रास्ते पर आना—(१) ठीक हो जाना। (२) राय मानना। ठोकर खा कर भी तो मेरे कहे रास्ते पर आये। (३) नेक बन जाना। (४) वश में होना।

रास्ते पर लाना—ठीक करना। लड़का बिगड़ा है रास्ते पर लाओ।

राह ताकना, देखना—इंतजार करना। राह देखते फूटी आँखें।

राह पड़ना—(१) नियम हो जाना, रास्ता बन जाना। अब तो यह राह पड़ गई है कोई कुछ नहीं कहता। (२) डाका पड़ना।

राह लगना—(१) पीछे पीछे चलना। (२) रास्ता पकड़ना। (३) थका होना। राह लगी है इसी से सोगया है।

राही करना—पथिक बनाना, अनुगामी बनाना।

राही होना—चल देना। लेकर ज़रो वो माल जो था दरकार, राही हुआ छोड़ छाड़ घर वार।

रिजक मारना—जीविका, रोटी, निर्वाह, रोजी में विघ्न डालना।

रुख देना—ध्यान देना।

रुख फेरना, बदलना—(१) नाराज़ होना। अब रुख वदल गया है मदद न करेंगे। (२) मुँह फेरना। (३) दूसरी तरफ ध्यान देना।

रिस मारना—(१) क्रोध रोकना। लाचार हूँ रिस मार कर बैठ रहती हूँ। (२) रिसमारे डालती है। इन कामों को देखकर तो जल जाती हूँ, बड़ी रिस मारे डालती है।

रुख मिलाना—,मुँह सामने करना।

रुपया उठाना—रुपया खर्च करना। बड़ा रुपया उठाया पर अच्छा न हुआ।

रुपया उड़ाना—रुपया व्यर्थ बहुत खर्चना। उन्होंने रुपया उठाया नहीं उड़ाया है, वरना इतने रुपये खर्च नहीं था।

रुपया जोड़ना—रुपया इकट्ठा करना। कितना ही रुपया जोड़ो, मरने पर सब व्यर्थ है।

रुपया ठीकरी करना—खूब खर्च करना। व्याह में रुपया ठीकरी कर दिया एक लाख उठा।

रुपया पानी में फेंकना—(१) व्यर्थ खर्च करना। (२) बहुत दाम दे देना। ये तो रुपया पानी में फेंका ये चीज़ दो दिन भी न चलेगी।

रुस्तम का साला—बड़ा वीर (व्यंग्य)।

रुस्तम (छिपा)—देखने में सीधा, निर्बल पर बड़ा वीर।

रू से—अनुसार। ईमान की रू से कहो क्या बात है, कानून की रू से दण्ड मिलना ही चाहिये।

रूई का गाला—बहुत कोमल सफ़ेद। खरगोश तो रूई का गाला है।

रूई की तरह तूम डालना—(१) उलट पलट डालना। (२) खूब खबर लेना। (३) एक एक दोष खोल दिखाना। जाने कब से दबाये बैठा था गुस्सा आया तो उसने रूई की तरह तूम डाला।

(४) खूब नोचना । (५) गाली देना ।

रूई की तरह धुनना—बहुत पीटना ।

रूई सा — बहुर नरम, कोमल ।

(अपनी) रूई या सूत में उलझना–काम काज में फँसना ।

रूखा पड़ना, होना—(१) मुरौवत तोड़ना। (२) क्रोधित, नाराज़ होना।

रूखा सूखा—बुरा-भला रूखा सूखा खायकर ठंडा पानी पी ।

रूप भरना—(१) वेष बनाना। दिन में दस रूप भरती हैं। (२) स्वाँग रचना ।

रूप लेना–देह, रूप धारण करना ।

रूप हरना—लज्जित करना । अपने सरूप रति रूपहि हरति है ।

रूमाल पर रूमाल भिगोना—बहुत आँसू बहाना ।

रेख आना, भीजना, भीनना—मूँछें उगना । हमरे आई बड़ी बड़ी मुछवा तुमरे भींगत रेख ।

रेख खींचना, खींचना—(१) लकीर खेंचना । (२) पक्की तरह करना ।

रेल पेल करना—ढेर लगाना, बहुत करना । खाने पीने की चीजों की रेल पेल करदी ।

रेल पेल होना, रेला होना—बहुत भीड़ होना ।

रोंगटे खड़े होना—डर या दुख से शरीर के बाल खड़े हो जाना, जी दहलना ।

रोग का घर—रोग की जड़ । रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हाँसी ।

रोकड़ मिलना—जमाखर्च ठीक बैठना ।

रोज़गार चमकना—खूब व्यापार चलना । रोजगार चमक जाय तो साल भर में ही जीवन भर की रोटियाँ निकलती हैं ।

रोज़गार चलना — काम जारी रहना, काम में लाभ रहना ।

रोज़गार छूटना—बेकार होना ।

रोज़गार लगना—गुज़र का इन्तजाम होना

रोज़गार लगाना—कोई काम, नौकरी दिलाना।

रोज़गार से होना—पैसे कमाना, काम में कमाता होना।

रोज़ा खोलना—दिन भर की भूख के बाद शाम को खाना ।

रोज़ा टूटना—उपवास पूरा न रहना, खंडित होना ।

रोज़ा तोड़ना—व्रत पूरा न करना ।

रोज़ी चलना—खाने पहिनने को मिलना ।

रोज़ी चलाना—खाने कपड़े का खर्च देना, प्रबन्ध करना ।

रोटियाँ तोड़ना—बैठे बैठे, मुफ्त में रोटी खाना ।

रोटियाँ निकलना—निर्वाह लायक आमदनी। अजी रोटियाँ निकल आती हैं बिक्री क्या है।

रोटियाँ लगना—इतराना। साहब के नौकर को रोटियाँ लग गई हैं, ऐंठ के बोलता है।

रोटी का पेट—रोटी का तवे की ओर का भाग।

रोटी की ख़ाक झाड़ना—खुशामद करना। क्या करें रोटी की ख़ाक तो झाड़नी पड़ती ही है नहीं खाँय कैसे।

रोटी की पीठ—पिछली बार सिकने वाला भाग।

रोटियों का मारा—भूखा। अन्न बिना दुखी।

रोटियों के लाले पड़ना—रोटी रोटा को तरसना।

रोटी कपड़ा—खाना पहनना।

रोटी कमाना — जीविका, रोजी प्राप्त करना।

रोटी को तरसना, रोना—भूखे मरना। नौकरी छूटी तो रोटी को तरसोगे।

रोटी दाल चलना—गुजर होना।

रोटी दाल से खुश—खाने कपड़े से निश्चिन्त।

रोटी पोना—(१) खाना बनाना। (२) रोटी बेलना।

रोटी पर रोटी रख कर खाना—सुख से निर्वाह करना।

रोड़ा अटकाना—बाधा डालना।

रोते आँचल भीगना—बहुत रोना। इतना दुख हुआ कि रोते आँचल भीग गया।

रो धो कर काम चलाना—जैसे तैसे, मुश्किल से निभाना।

रोना कलपना, धोना—(१) अफसोस करना। अब रोने धोने से क्या बनता है। (२) कुहराम मचाना।

रोना गाना—गिड़गिड़ाना, दुख भरी प्रार्थना करना।

रोना पीटना—विलाप करना।

रो बैठना—निराश होना। रुपयों को रो बैठो वह न देगा।

रो रो कर—(१) बड़े दुख से, मुश्किल से। इतना भी रो रो कर किया है। (२) धीरे धीरे।

रो रो कर घर भरना—बहुत रोना।

रोने का तार बाँधना—बराबर, ज़ार बेज़ार रोना। चुपही नहीं होती रोने का तार ही बाँध दिया।

रोना रोना—दुखड़ा सुनाना। यहाँ तो आकर अमीर भी अपना रोना रोते हैं।

रोना पड़ना, रोना पीटना पड़ना—शोक छाना। घर घर रोना पीटना पड़ा है।

रोपना हाथ — माँगने को हाथ फैलाना।

रोब जमाना—बड़प्पन की धाक बैठाना।

रोब दिखाना—बड़प्पन के प्रभाव की चेष्टा करना।

रोब मिट्टी में मिलना—प्रभाव न रहना।

रोब में आना—(१) बड़प्पन से डरना, भय मानना। (२) बड़प्पन देख प्रभावित होना। उनके रोब में आ कर शिकायत कर दी पर उनकी शिकायत न चली।

रोम रोम में—सारे शरीर में।

रो रो कर घर भरना—बहुत विलाप करना। खिलौना न लाये तो रो रो कर घर भर देगा।

रोयाँ खड़ा होना—रोमांच होना। खुशी, रञ्ज व आश्चर्य में रोयें खड़े हो जाते हैं।

रोयाँ न उखड़ना—कुछ हानि न होना।

रोयाँ पसीजना—तरस, दया आना।

किसी पर रोशन होना—प्रकट, मालूम होना।

ल

लंगर बाँधना—(१) पहलवानी करना। (२) ब्रह्मचारी रहना।

लंगर, लँगोट कसना, बाँधना—लड़ने को तैयार होना।

लंगर (लंगोट) देना, आगे रखना—पहलवानी को शिष्य बनना।

लंगर करना—(१) उद्यम मचाना।

लंगोटिया यार—पक्का, बचपन का मित्र। लँगोटिया यार का प्रेम अनुपम होता है।

लंगोटी पर फाग खेलना—थोड़े साधन से बहुत आनन्द लूटना, धन खर्चना।

लंगोटी बँधवाना—बहुत दरिद्र कर देना। मुक़दमे ने लंगोटी बँधवा दी।

लंगोटी बिकवाना—क़तई कंगाल कर देना।

लंबा करना—(१) भगा देना, चलता करना। दौड़ आती सुनते ही चोर लंबा किया। (२) चित कर देना।

लंबा बनना, होना—नौ दो ग्यारह होना।

लंबी तानना—निश्चिन्त हो सोना। मैंने तो लंबी तानी पीछे कुछ हो।

लंबी साँस लेना—ठंडी, दुख भरी साँस खींचना।

लकड़ी चलना—लाठियों से मार पीट होना।

लकड़ी सा—अति दुबला।

लकड़ी होना—(१) सूख जाना। बीमारी में लकड़ी हो गया। (२) सूख कर कड़ा होना। रोटी लकड़ी हो गई।

लकवा मारना, मारा जाना—किसी अंग में जान न रहना।

लकीर का फकीर—पुरानी अशुद्ध रीति को भी मानने वाला।

लकीर पर चलना, पीटना—वे समझे किसी रीति को मानना।

लग चलना—संग या पीछे चलना। इन्हीं से लग चलो वहीं पहुँचोगे।

लगा कर कहना—अन्य पर डाल कर अन्य पर आक्षेप करना।

लगाना बुझाना—किन्हीं में लड़ाई कराना।

लगाम चढ़ाना, देना — कहने, बोलने से रोकना।

लगाम लिए फिरना — ढूँढ़ते फिरना। बच्चे को सँभालो वरना लगाम लिए फिरोगे।

लगी को बुझाना — इच्छा पूरी करना।

लज्जा करना—उच्चता का ध्यान, लिहाज करना। पद की लज्जा करो बुरे न बनो।

लट छिटकाना—बाल फैलाना।

लट पड़ना—बाल उलझना, बाल चिमटना।

लटकती चाल—बलखाती चाल। भृकुटी मटकन पीत पट चटक लटकती चाल।

लटिया करना—सूत का लच्छा, आँटी बनाना।

लटी मारना—गप्प मारना।

लट्टू होना—(१) मोहित होना। ब्याह ही ते कान्ह भए हैं लट्टू तब ह्वै है कहा जब होइगो गौनो। (२) मिलने को भटकना।

लट्ठ लिए फिरना—उलटा करना। अक्ल के पीछे लट्ठ लिये मत फिरो, मेरी मानो।

लड़ मिलाना—मित्रता करना।

लड़ में रहना—साथियों में रहना।

लड़कों का खेल—(१) दे० बच्चों का खेल। (२) व्यर्थ, बे महत्व का काम।

(राह का) लड़का—अनाथ, बे सहारे।

लड़का लड़की—संतान, औलाद।

लड़खड़ाना (जीभ)—(१) रुक रुक कर बोलना। (२) टूटे टूटे, अस्पष्ट बोलना।

(हिसाब) लड़ाना—(१) लेखा उतारना। (२) सुभीता होना। हिसाब लड़ालें जो गाड़ी मिलती होगी तो पहुँचेंगे। (३) युक्ति

सोचना । हिसाब लड़ाओ कैसे सिफ़ारिश पहुँचावें ?

लड़ाई का मैदान—संघर्ष क्षेत्र। यह दुनिया लड़ाई का मैदान है।

लड़ाई पर जाना—लड़ने जाना।

लड्डू खाना—खुशी मनाना, दावत खाना।

लड्डू खिलाना—दावत देना। काम बन गया तो लड्डू खिलायेंगे।

लड्डू फोड़ना—सेठ मरेगा तो पंडित जी लड्डू फोड़ेंगे अच्छा ही है।

लड्डू मिलना—लाभ होना। तुम्हें क्या लड्डू मिलेंगे जो बुरा चाहते हो।

लत्ते लेना—आड़े हाथों लेना। घर में घुसते ही श्री मती जी ने लत्ते ले डाले, आखिर उधार साड़ी ला कर दी।

लथाड़ खाना—(१) पिछड़ना। (२) फटकार खाना। (३) नष्ट किया जाना।

लथाड़ में पड़ना—हैरानी में पड़ना।

लप लप करना—(१) लचकना। (२) चमचमाना।

लप से—लौकी तेज़ी से, झट से।

लपक कर—(१) तेज़ी से पहुँच कर (२) फौरन।

लपझप चाल—फुरती की, बेढंगी। चपलता की चाल।

लपलपाना—चखने की आतुरता। मिठाई के लिए जीभ लपलपाती है न ?

लबड़ धों धों चलना—बेईमानी गड़बड़।

लय देखना—ठीक स्वर, तर्ज में गाना।

ललचाना (जी)—पाने की इच्छा होना।

ललाट में लिखा होना—भाग्य में होना। जो ललाट में लिखा होगा तो सब कुछ मिलेगा।

लव भर—नाम मात्र को। लव भर भी डर नहीं।

लहना चुकाना, साफ़ करना—कर्ज़ लौटाना।

लहर देना, मारना—रह रह कर पीड़ा होना।

लहर लेना—समुद्री लहरों में नहाना।

लहर साँप काटे की—रह रह कर होश आना।

लहर आना—आनन्द आना।

लहर मारना—टेढ़े सीधे जाना। साँप लहर मारता चलता है।

लहू लुहान होना—खून से लथ पथ। सारे हाथ लहू लुहान थे।

लाख टके की बात—अति उपयोगी, कीमती बात।

लाख से लीख होना—बहुत

ज्यादा से बहुत कम होना। रहे जो लाख भये ते लीखा।

लाख का घर राख होना—धनवान घर बिगड़ना।

लाज रखना—मान, लिहाज बचाना।

लाठी चलना—लाठी से मार पीट होना। गाँव में खूब लाठी चली, कई तो जान से गये।

लाठी चलाना—लाठी से मारना। लड़के ने बड़ी अच्छी लाठी चलाई कई को बिछा दिया।

लाठी बाँधना—लाठी संग रखना।

लात खाना—(१) मार खाना। (२) ठोकरें खाना।

लात चलाना—पैरों से मारना।

लात जाना—दूध न देना। हमारी गाय तो लात गयी वरना दही की क्या कमी थी।

लात मारना—त्याग देना। नौकरी को लात मारदी और सन्यासी हो गया।

लात मार कर खड़ा होना—प्रसव या बड़ी बीमारी से अच्छा होना।

लाद निकलना—तोंद बढ़ना।

लाम बाँधना—बहुत सामान या लोग इकट्ठे करना।

लार टपकना—दे० ७४४७।

लार लगाना—(१) पंक्ति की पंक्ति लगाना। गाड़ियों की लार लगादी, बरात क्या फौज थी (२) फँसाना।

लाल अँगारा—अत्यंत क्रोध। यह सुनते ही लाल अँगारा हो गये।

लाल आँखें दिखाना, निकालना—डरावनी, क्रोध भरी आँखों से देखना।

लाल उगलना—मीठी, सुन्दर बातें कहना। बातें करने में तो लाल उगलते हैं।

लाल पड़ना, होना
लाल पीले होना
लाल हो जाना } क्रोध से तमतमाना।

लाल होना—सुन्दर चेहरा खुश, निहाल होना।

लालच देना—लोभ दिलाना, दिखाना।

लालाभय्या करना—प्रेम आदर से बोलना।

लाले पड़ना—मिलने को तरसना।

लाव चलना—पुर या चरस से पानी खींचना, खेत सींचना।

लाव उठाना—(१) गिरवीं रख उधार देना। (२) तकावी बाँटना।

लास करना—डाँड़ जमा कर नाव ठहराना।

लासन देना—मस्तूल से रस्सी लपेटना।

लासा लगाना—चिपक, लोभ से फँदे में फँसाना। उन्हें फँसाने के लिये लासा लगा रखा है।

लाहौल पढ़ना—(१) घृणा करना। (२) 'लाहौल' कहकर न करने का वादा करना।

लिखत पढ़त होना—काग़ज़ लिख कर बात पक्की करना।

लिखना (नाम)—उधार लिखना। यह रुपये मेरे नाम लिखो खर्च खाते नहीं।

लिखना-पढ़ना—शिक्षा पाना।

लिखा-पढ़ा—शिक्षित।

लिखाना-पढ़ाना—(१) लिखवा लेना। (२) शिक्षा देना।

लिफ़ाफ़ा खुल जाना—भेद प्रकट हो जाना। कितना ही छिपाओ किसी दिन तो लिफ़ाफ़ा खुल ही जायगा।

लिफ़ाफ़ा बदलना—चटकीला वेष बनाना।

लिफ़ाफ़ा बनाना—(१) बाहरी ठाठ रखना। (२) ढोंग-ढकोसला रचना।

लिवा लाना—आदमी को साथ लेकर आना।

लिहाज़ उठना, टूटना—पक्ष, मुलाहिज़ा, ध्यान न रखना।

लिहाड़ी लेना—बुराई, हँसी उड़ाना।

लीक करके, खींच कर—पक्की तरह, प्रतिज्ञा पूर्वक।

लीक खिंचना—(१) पक्की होना। (२) नियम हो जाना। (३) विश्वास, मान होना।

लीक पड़ना—रास्ते की लकीर पर चलना।

लीक पीटना, लीक लीक चलना—परम्परा की रीति-नियम पालना।

लीद करना—घोड़े, गधे, हाथी, ऊँट आदि का मल त्याग करना।

लीप पोत कर बराबर करना—सत्यानाश करना। बड़ी कठिनता से तैयार की कुपुत्र ने लीप पोत कर बराबर कर दी।

लुक छिपकर—छिपाकर।

लुटना (घर)—धन हरण होना,

लुटिया डुबोना—नाश करना, कलंक लगाना। बाप दादों की लुटिया डुबो दी।

लुढ़कना पुढ़कना—गिरना पड़ना।

लुत्फ़ उठाना—आनन्द लाभ पाना।

लू लगना, मारना—गर्म हवा से ज्वर आदि होना, सूख जाना।

लूक लगाना, लूका लगाना, लूकी लगाना—आग छुआना, लगाना। मारि मुलूक में लूक लगायो।

लूट खाना—(१) बहुत ही धन हड़प जाना। (२) किसी न किसी तरह धन ले लेना।

लूता, लूती लगाना—आग लगाना।

लू लू बनाना — हँसी करना, बेवक़ूफ़ बनाना। लोगों ने खूब उसे लू लू बनाया।

लेकचर झाड़ना—धूम धाम से व्याख्यान देना (व्यंग्य) जहाँ जाते हैं लेक्चर झाड़ना शुरू कर देते हैं।

लेखनी उठाना — लिखना शुरू करना।

लेखा जाँचना—हिसाब देखना, लगाना।

लेखा डेवढ़ करना—(१) लेन देन पूरा करना। (२) चौपट कर देना।

लेखा पूरा या साफ़ करना—हिसाब चुकाना।

लेखा डालना—हिसाब खोलना।

लेखे (किसी के)— विचार से, लिख। हमारे लेखे तो तुम और वह एक से हो।

लेट जाना (खेती)—बहुत पानी या हवा से फसल पृथ्वी पर पड़ना।

लेट जाना (गुड़)—अधिक आग से गुड़ चिपचिपा गीला होना।

लेन देन न होना—संबन्ध, प्रयोजन न होना। ऐसे लोगों से लेन देन ही नहीं है।

लेना (सिर, कंधे, ऊपर) जिम्मेदार बनना।

ले आना—साथ लाना।

ले उड़ना—(१) लेकर भाग जाना। (२) थोड़ी बात को बहुत बना लेना

लेने के देने पड़ना—(१) बहुत कठिन समय आना, जान पर आ पड़ना। अगर वहाँ से न भागता तो लेने के देने पड़ जाते। (२) लाभ की जगह हानि होना।

ले चलना—(१) उठाकर चलना। (२) साथी बनाना, साथ में लेना।

ले जाना—लेकर जाना। किताब ले जाओ, अब काम नहीं है।

ले डालना—(१) नाश करना। (२) हटाना। (३) पूरा करना।

ले दे करना — डुज्जत, कोशिश करना। बहुत ले दे की तो एक रुपया मिला।

ले डूबना—दूसरे का भी नाश करना। एक का दिवाला निकला सैकड़ों को और ले डूबा।

ले देकर—(१) कठिनता से प्राप्त। ले देकर यही एक लड़का था सो तुम ले चले (२) सब हिसाब करके, बजार का सब ले देकर यह मकान बचा। (३) कुल मिलाकर। जेवर आदि सब ले देकर हजार का होगा।

लेना देना—देने लेने का व्यवहार। हमारा उनसे लाखों का लेना देना चलता है।

लेना एक न देना दो—कोई मत-

लब नहीं। मैं क्यों बीच में पड़ूँ मुझे लेना एक न देना दो, लड़ने दो उन्हें।

ले निकलना—(१) ले ही लेना। भला आदमी रईस के घर से कुछ न कुछ ले ही निकलता है। (२) लेकर चलदेना। वह उसकी लड़की को ही ले निकला।

ले पड़ना—(१) अपने संग गिराना।

ले पालना—गोद लेना। अनाथालय से एक बच्चा ही ले पालो तो अच्छा है।

ले बैठना—(१) संगी को भी नष्ट कर देना। एक का दिवाला कइयों को ले बैठा। (२) बोझ लिये नाव डूबना। (३) सब नष्ट करना। यह व्यापार सारे काम ले बैठेगा। यह दीवार पड़ोस के मकान भी ले बैठी।

ले भागना—लेकर भाग जाना।

ले मरना—(१) लेकर ही टलना। जाऊँगा तो कुछ न कुछ ले ही मरूँगा, बिना लिये थोड़े ही टलूँगा। (२) दे० ले डूबना।

(कान में) लेना—सुनना। मेरी बात ही कान में नहीं लेते मैं क्या करूँ।

ले—(१) तेरी इच्छा ऐसी है तो ले, (वही सही) मैं दे देता हूँ। (२) ले। (न हुआन) और माँगले। (३) न मानेगा तो ले बिल्कुल ही न करूँगा।

लेव चढ़ना—मोटा होना (व्यंग्य)

लोचन भर आना — आँसू आजाना।

लोट होना, होजाना—(१) दीवाना बनना। (२) आशिक होना। उनको देखते ही लोट हो जाओगे, ऐसी हसीन हैं।

लोट जाना—(१) बेहोश होना। (२) मर जाना। एक फायर में सात लोट गए।

लोट पोट करना—लेटना।

लोटा, लुटिया डुबाना—(१) सारा खराब कर देना (२) कलंक लगाना।

लोढ़ा डालना—बराबर करना।

लोढ़ाढाल—बिल्कुल नष्ट।

लोथ गिरना—मरकर गिरना।

लोथ डालना—मार कर गिराना।

लोथ पोथ—(१) सना हुआ, लथपथ (२) शिथिल।

लोथारी डालना—लंगर से थाह लेकर किनारे लगाना।

लोथारी तानना-लोथारी लंगर से थाह देख ठीक रास्ते नाव लेजाना।

लोन खाना—नमक खाना, दास होना।

लोन निकलना—नमक हरामी, होने का बुरा फल मिलना।

[७५६४]

लोन न मानना—कृतघ्न, नमक हरामी होना।

(जले पर) लोन लगाना—जले को जलाना।

लोन सा लगना—बुरा लगना चुभना।

लोहे के चने—बहुत कठिन काम।

लोहे के चने चबाना—दुस्साध्य काम करना।

लोहा गहना—लड़ना, लड़ने को हथियार उठाना।

लोहा बजना—घमासान लड़ाई होना।

लोहा बरसना—तलवार चलना।

लोहा मानना—(१) हारना। (२) बड़प्पन मानना।

लोहा लेना—युद्ध करना।

व

वकालत चमकना, चलना—वकीली के काम में खूब कमाना।

वकालत जमना—वकील को अपने काम में निश्‍चित रूप से कमाने लगना।

वक्त आ पहुँचना—मरने का समय समीप आना।

वक्त काटना—(१) दुख का जैसे तैसे समय बिताना। (२) दिल बहलाना। सिनेमा देख कर वक्त काटते हैं।

वक्त की चीज़—मौक़े की, काम की वस्तु। वक्त की चीज़ गई।

वक्त खोना–(१) अवसर चूकना। (२) समय बरबाद करना।

वक्त ताकना—(१) समय का ध्यान रखना। (२) मौका, दाँव देखना।

वक्त पर—जरूरत के समय।

वक्त हाथ से देना—अच्छा समय खो देना।

वजूद पकड़ना—जाहिर होना, अस्तित्व बनना।

वजूद में आना—उत्पन्न तथा प्रकट होना।

वजूद में लाना—उत्पन्न करना।

वज्र पड़े—नाश हो (स्त्री)।

वनवास देना—जंगल में रहने की आज्ञा देना।

वनवास लेना—जंगल में रहने लगना।

(किसी का) वबल पड़ना—दुख देने का फल मिलना, दुखी की आह पड़ना।

(किसी वस्तु को) वर्षा होना—(१) बहुत गिरना। (२) खूब मिलना।

वश में होना (किसी के)—

(१) आधीन होना। (२) दबाव, आज्ञा मानना।

वश होना (किसी पर)—अधिकार, प्रभाव होना।

वश कर—(१) अधीन। (२) जैसा चाहे या कहें वैसा।

वश चलना—हो सकना, शक्ति से कर सकना।

वसीला पैदा करना—आमदनी, सफलता का रास्ता पाना।

वसीला रखना—संबन्ध रखना। मैं रुपयों का वसीला नहीं रखता।

वसूल पाना—जो लेना हो वह पा जाना।

वहशत उछलना—धुन, सनक होना।

वहशत बरसना—(१) उजड्डता जाहिर होना। (२) चेहरे पर दुख उदासी छाना।

वाक़ा होना—घटना, वृत्तान्त होना।

वाजिबी बात—उचित, सच्ची बात।

वाजिबी खर्च—जरूरी, उचित खर्च।

वाणी फुरना—वचन निकलना।

वादा आना—(१) नियत समय आना। (२) अंत समय आना।

वादा पूरा होना, वादा पूरा करना—इक़रार, प्रतिज्ञा पूरा करना, होना।

वादा टालना—कह कर वैसे ही न करना।

वादा खिलाफ़ी करना—वचन देकर न पालना।

वादा रखाना—इक़रार कराना।

वापस आना—लौट कर आना।

वापस करना—(१) फेरना, लौटाना। किसी काम की चीज़ नहीं वापस कर दो। (२) खरीद कर लौटाना। (३) लौटा लेना। (४) लेकर फिर दे देना।

वापस जाना—आकर चले जाना। वह आया था, तुम नहीं मिले वापस गया।

वापस होना—(१) उलटे फिर जाना। (२) खरीदी वस्तु को देकर मूल्य लेना। (३) दी वस्तु मिलना। दे तो दूँ यदि आपसे वापिस होने की आशा हो। (४) ली हुई वस्तु दे देना।

वार मिलना—मौका, समय मिलना।

वार खाली जाना—(१) चोट न बैठना। (२) चाल में न फँसना।

वारने जाना—निछावर होना।

वार पार करना—(१) सारा फैलाव तै करना। (२) छेद दूसरी ओर तक करना।

वार पार होना—(१) सारा

फैलाव तै हो जाना। (२) छेद दोनों ओर होना।

वारा जाना, वारा होना—बलिहारी होना। तेरी सूरत पै हौं वारी जाऊँ।

वारियाँ जाऊँ—निछावर होजाऊँ (स्त्री) तेरे प्यार पर मैं वारियाँ जाऊँ।

वास्ता पड़ना—काम पड़ना। मेरा उनसे कभी वास्ता ही नहीं पड़ा मैं कैसे जानूँ वे कैसे हैं।

वास्ता पैदा करना—मेल, मिलने का ढंग निकालना। कोई वास्ता पैदा करो उसके बहाने मिलो।

वास्ता रखना—लगाव, मेल रखना। अब मैं तुमसे कोई वास्ता नहीं रखूँगा।

वाह वाही लूटना, लेना—बड़ाई पाना माल लुटा कर वाह वाही लूटी।

विचल-चल होना—द्विविधा, चंचलता होना। बड़ा उत्साह था पर विघ्नों ने चल-विचल कर दिया कैसे पूरा करें।

विधना के अच्छर—कर्म रेख, भाग्य।

विधि बैठना
विधि मिलना } (१) दे० मेल खाना। (२) युक्ति चलना। विधि बैठी तो झपट ही लूँगा।

विपत्ति उठाना—दुख शोक सहना।

विपत्ति काटना—दुख के दिन बिताना।

विपत्ति झेलना—संकट सहना।

विपत्ति डालना—कष्ट पहुँचाना।

विपत्ति ढहना—आपत्ति आपड़ना।

विपत्ति में डालना—झंझट दुख में फँसना।

विपत्ति में पड़ना—आफ़त में फँसाना।

विपत्ति भुगतना, भोगना—दुख-शोक सहना।

विपत्ति मोल लेना
विपत्ति सिर पर लेना } झंझट में पड़ना, आफत में फँसना।

विश्वास जमाना—यकीन सचाई बैठाना। मैंने विश्वास जमा लिया है तभी तो वह मुझे सब सौंप देता है।

विश्वास दिलाना—सचाई पैदा करना। कई संकट झेलकर यह विश्वास दिला दिया है कि मैं उसका भला चाहता हूँ।

नोट—विष के लिए 'जहर' देखो--

विष की गाँठ, पुड़िया—बुराई की जड़। विष की गाँठ यही है इसी ने लड़ाई कराई है।

विष बोना—बुराई करना। उसके लिये विष बोओगे तो बैर बँधेगा।

(किसी का) वेश धारण करना—सूरत तथा पहनाव वैसा ही बनाना। उसका वेश धारण

करके मैं उनसे भी रुपये ले आया, पहचाना नहीं गया।

वैर बाँधना—बैरी बनाना। उनसे वैर बाँधना मौत का मुँह देखना है

वैर बिसाहना—(१) वैर बाँधना (२) झगड़ा जिम्मे लेना। तुम्हारा एक बार साथ देकर वैर बिसाह लिया।

व्यवस्था देना—शास्त्र विधान बताना, नियम लगाना।

श

शंख बजना—(१) दिवाला निकलना। (२) जय होना।

शंख बजाना—आनन्द मनाना। द्रोण मरे सुनते ही पांडवों ने शंख बजाया।

शऊर पकड़ना—तहजीब, ढंग तथा अक्ल आना। अब तो पहिले नमस्ते करता है लड़का शऊर पकड़ने लगा है।

शकल बनाना—चेहरा, रूप बनाना। चित्र की शकल अभी नहीं बनाई।

शकल बिगाड़ना—(१) सूरत खराब करना। (२) खूब पीटना। चुप रह, वरना शक्ल बिगाड़ दूँगा।

शकुन देखना, विचारना
शगुन विचारना, लेना }—
शुरू करते वक्त की बुरी भली घटना या लक्षण सोचना। नाक से शकुन विचारा अच्छा था पर बिल्ली ने रास्ता काटा यह बुरा शगुन था।

शगूफा खिलना—बीच में अनोखी बात खुलना, होना।

शगूफा खिलाना—अनोखा काम कर बैठना।

शपथ—के लिये 'कसम' देखिये।

शफ़क़ फूलना—आकाश में लाली फैलना।

शरम खाना—(१) हया, व्रीड़ा से न कर सकना। (२) संकोच करना। आपके सामने आने में शरम खाती है।

शरम रखना, रहना—इज्ज़त बचाना, रहना। वह भी तो शर्म रखते हैं फिर कैसे गाली सुनेंगे?

शरम से गड़ना—लज्जा या गैरत से नीचे होना।

शरम से पानी पानी होना—बहुत शर्म आना। वह शर्म से पानी पानी होगये और बोले माफ़ करदो।

शरमिंदगी उठाना—लज्जित होना। तुम्हारी वजह से हमें भी शरमिंदगी उठानी पड़ी।

शर्त बाँधना, लगाना—(१) बाजी लगाना। (२) जिम्मा लेना।

शहद लगा कर अलग होना—चस्का, आग लगा कर दूर होना।

शहद लगा कर चाटना—व्यर्थ रखना। वह तो भाग गया अब प्रोनोट को शहद लगाकर चाटो।

शाख निकलना—(१) ऐब-दोष दिखाई देना। (२) झगड़ा-बखेड़ा निकलना।

शाख निकालना—(१) एक में दूसरा काम निकालना। (२) विघ्नडालना। (३) ऐब, अड़ंगा लगाना।

शाख लगना—घमंड होना।

शाख लगाना—(१) पेड़ होने को डाली गाड़ना। (२) सींगी लगाना। (३) पैर बढ़ाना, सम्मान करना।

शागिर्द करना—चेला शिष्य बनाना।

शान घटना; जाना—इज्जत आबरू में फर्क आना। वहाँ जाने से क्या शान घटती है ?

शान मारीजाना
शान में फर्क आना, बट्टा लगना }—बड़प्पन, इज़्ज़त में कमी आना। अगर चले चलोगे तो क्या शान में बट्टा लग जायगा ?

शान में कहना (किसी की)—बाबत या सामने कहना। भले की शान में बुरी बात मत कहो।

शाम फूलना—सूरज छिपने की लाली छाना।

शामत का घेरा, मारा—आफ़त का मारा।

शामत सवार होना, सिर पर खेलना—बुरेदिन आना। तेरे सिर पर शामत खेल रही है।

शिकंजे में खिँचवाना—कोल्हू में पिलवाना, तेल निकालना।

शिकंजे में खींचना—बहुत दुख देना। तुमने मुझे बहुत सताया था अब मैं भी तुम्हें शिकंजे में खींचूँगा।

शिकस्त खाना—हारना।

शिकस्त देना—हराना।

शिकायत करना—चुपचाप निन्दा करना।

शिकायत रफ़ा करना—दुख मिटाना। वैद्य जी ने सारी शिकायत रफ़ा कर दी।

शिकार आना—(१) मारने के लिये जीव मिलना (२) आसामी फँसना।

शिकार करना—(१) जानवर मारना। (२) स्वार्थ खूब साधना।

शिकार खेलना—अहेर करना।

शिकार हाथ लगना—आसामी मिलना। एक शिकार हाथ लगा इसी से काम बनेगा।

शिकार होना—(१) वश में आना। उनका शिकार होना और बीमारी का शिकार होना एकसा है,

दुबला करके छोड़ते हैं। (२) प्रेम में फँसना। हम कटीली आँखों के शिकार हुए।

शिकारी ब्याह—गंधर्व विवाह।

शिगाफ़ देना, लगाना—(१) चीरा लगाना। (२) कलम चीरना।

शिगूफ़ा खिलना — चुटकुला, अनोखी मनोरंजन की बात होना।

शिगूफ़ा खिलाना—मनोरंजन के लिये कोई नया झगड़ा उठाना।

शिगूफ़ा छोड़ना—(१) चुभती अनोखी बात कहना। (२) तमाशे के लिए मामला पैदा करना।

शिगूफ़ा फूलना—अनोखी बात, मामला तैयार हो जाना।

शिष्टाचार करना—मारना पीटना। बहुत बढ़ कर बोल रहा है ज़रा शिष्टाचार करदो।

शिस्त बाँधना—निशाना लगाना।

शीराज़ी खुलना, टूटना—(१) सिलाई उधड़ना टूटना। (२) इंत-जाम बिगड़ना।

शील तोड़ना—मनुष्यता न रखना, निर्दय निठुर होना।

शील न होना (आंखों में)—संकोच, नम्रता न होना। बेहया की आँखों में शील तो है ही नहीं।

शीश महल का कुत्ता—पागल, दीवाना।

शीशा बाशा—बड़ी कोमल, नाज़ुक।

शीशी सुंघाना—बेहोश करना।

शेखी किरकिरी होना—घमंड मिटना।

शेखी झड़ना, निकलना—नीचा देखना।

शेखी बघारना, मारना, हाँकना—डींग हाँकना, बड़ाई मारना।

शेर की आँख से देखना—शत्रुता की दृष्टि से देखना।

शेर करना (चिराग)—रोशनी बढ़ाना।

शेर होना—निर्भय, उद्दंड बनना।

शैतान उठाना—(१) तूफान उठाना झगड़ा खड़ा करना। (२) ऐब लगाना (३) शोर मचाना।

शैतान का कान में फूँकना—बुरी भावना में फँसना।

शैतान का धक्का—बुरी वृत्ति।

शैतान का बच्चा—नीच।

शैतान की आँत—बहुत बड़ी। पगड़ी है कि शैतान की आँत?

शैतान की खाला—लड़ाक स्त्री।

शैतान चढ़ना, लगना—भूत सवार होना। सर पे शैतान के एक और भी शैतान चढ़ा।

शोभा देना—अच्छा लगना।

शोरे की पुतली—बहुत गोरी स्त्री।

शौक करना—उपयोग, भोग करना।

शौक चर्राना, पैदा होना—इच्छा होना।
शौक पूरा करना, मिटाना—कामना मिटाना।
शौक फ़रमाना—चखना, उपभोग करना।
शौक से—आनन्द से, स्वेच्छानुसार।
श्रम पाना—करते करते थकना।
श्राद्ध करना-अंतिम यादगार करना।
श्री करना—(१) आरम्भ करना। (२) माथे पर रोली का टीका लगाना।
श्रुतिपथ में आना—सुनना।
श्वास खींचना, चढ़ाना- सांस रोकना।
श्वास छूटना—मरना।
श्वास रहते—जीते जी।

स

सँकरे में पड़ना—आफ़त में फँसना।
संकल्प विकल्प में पड़ना—दुविधा में पड़ना।
संग लगना—साथ हो चलना, लेना।
संग लगाना—साथ ले लेना, लेजाना।
संग लेना—साथ ले चलना।
संगत करना—(१) नर्तकियों साथ तबला आदि बजाना। (२) साथ रहना। साधु संगत करो।
संझा बत्ती करना—दीवा जलाना।
संसार की हवा खाना— दुनिया का रंग ढंग देखना, अनुभव प्राप्त करना।
संसार की हवा लगना—बालक हो जाना, दुनियाबी दिखावट, रंग ढंग आ जाना।
संसार त्यागना—(१) मरना। (२) वैरागी होना।
संसार से उठना—(१) मरना। (२) समाप्त होना। नियम न रहना। यह प्रथा अब संसार से उठ गई।
संसार से नाता तोड़ना, त्यागना—विरक्त होना।
संसारी होना—गृहस्थी बनना।
सकता पड़ना—छंदों में यतिभंग होना।
सखुन डालना—(१) पूछना, प्रश्न करना। (२) कुछ माँगना। सखुन उन्हीं पर डाले जो हँस हँस राखें मान।
सखुन देना—वादा करना।
सचमुच—वास्तव में।

सटका या सपाटा मारना—बहुत जल्दी (दौड़ कर) जाना।

सटर पटर लगाना—(१) बखेड़ा फैलाना। (२) छोटे मोटे काम करना। (३) मेल बैठना।

सट्टा बट्टा लगाना—कार्य सिद्धि के साधन, आदमी जुटाना।

सट्टी मचाना—हल्ला करना। क्लास में लड़कों ने सट्टी मचा रखी है।

सट्टी लगाना—चीज़ें फैलाना। किताबें इकट्ठी करके रखो क्या सट्टी लगाई है।

सड़क काटना निकालना—(१) सड़क बनाना। (२) कोई प्रशस्त मार्ग प्रस्तुत करना।

सत पर चढ़ना—पति की चिता पर जलना।

सत पर रहना—पतिव्रता रहना।

(बे) सतर करना—नंग, बेइज्जत करना।

सती होना—(१) मरे पती के साथ चिता में जलना। (२) मर मिटना।

सतीत्व बिगाड़ना—स्त्री की इज्जत बिगाड़ना।

सत (सत्य) छोड़ना—(१) साहस छोड़ना। (२) सत्य से विचलित होना। सत मत छोड़े बावले सत छोड़े पत जाय।

सत्कार करना—मारना पीटना। जरा सत्कार कर दो तो सीधे हो जायेंगे।

सत्ता चलना, चलाना—अधिकार होना, जताना।

सत्तू सीधा बाँध कर पीछे पड़ना—पूरी तैयारी से काम में लगना। तुम्हें फँसाने के लिये सत्तू बाँध कर पीछे पड़े हैं।

सत्य डिगना, डोलना—(१) धर्म जाना : (२) धैर्य न रहना। (३) ईमान बिगड़ना। लाख लोभ दिखाया गया पर उसका सत्य न डिगा।

सत्य पर रहना—ईमान, धर्म पर दृढ़ रहना।

सदके जाऊँ—निछावर हो जाऊँ।

सदा देना, लगाना—भीख के लिए पुकारना।

सन से निकल जाना—सन आवाज के साथ निकल जाना। कान के पास से गोली सन से निकल गई। **[जी] सन हो जाना**—(१) ठक से रह जाना। (२) घबड़ा जाना। (३) चुप हो जाना।

सनक चढ़ना, सवार होना—धुन होना।

सनीचर आना—बुरे दिन आना।

(मीन की) सनीचरी—सब को खराब समय।

सन्न मारना-सन्नाटा खींचना, मारना—एक बारगी चुप हो

जाना। उनके लेक्चर देते वक्त सब सन्नाटा मार गये।

सन्नाटा बीतना—उदासी, मलीन मन समय बीताना।

सन्नाटे का—सन सन करते हुए लगते हुए। सन्नाटे की हवा चल रही है।

सन्नाटे के साथ, से—बड़ी तेज़ी से। तीर सन्नाटे से निकल गया।

सन्नाटे में आजाना—हक्का बक्का हो जाना। उसकी बातें सुनते ही सन्नाटे में आ गया।

सपना होना—देखना भी दुर्लभ। बचपन की वह बातें सपना होगई हैं।

सपर जाना—मरजाना।

सपाटा भरना, लगाना, मारना—खूब दौड़ लगाना।

सफ़ाई कर देना—(१) बरबाद कर देना। (२) खा डालना। (३) चुका देना। (४) मार डालना।

सफ़ाई देना—निर्दोषी प्रमाणित करना। कितनी भी सफाई दो मैं तो जेल भेजूँगा।

सफ़ाया करना—बराबर, बर्बाद कर देना।

सफ़ेद रंग पड़जाना—फीका, बेरौनक होना।

सफ़ेदी आना—बुढ़ाया आना।

सबक देना—शिक्षा देना, वसीहत देना। दिया है वह सबक़ तुमने कि अबतक याद करते हैं।

सबक पढ़ाना—दे० पट्टी पढ़ाना।

सब मिलाकर—कुल।

सब को एक लाठी से हाँकना—सब के साथ एकसा व्यवहार करना।

सब्ज़ बाग़ दिखाना—(१) झूठी आशा दिलाना। (२) बढ़ावा देना। (३) धोखा देना।

सब्ज बाग़ नज़र आना—बड़ी आशाओं में होना।

सब्र पड़जाना—आह का फल मिलना। गरीब का नाश किया उसका सब्र पड़ा है जो तुम्हार लड़का मरा।

सब्र कर बैठना—धैर्य से सहना।

सब्र समेटना—शाप या आह लेना। लाचारों को दुख देकर उनका सब्र मत समेटो।

समझ पर पत्थर पड़ना—समझ में न आना। तुम्हारी समझ पर क्या पत्थर पड़ गये जो न सोचा।

समझाना बुझाना—अपनी राय में लाना।

(एक) समान—एक जैसे। दोनों एक समान हैं, अन्तर नहीं।

समाँ बँधना—संगीत आदि से महफिल का एकाग्र होना। जब वह गाने खड़ी हुई तो एक समाँ बँध गया।

सर करना—(१) फायर करना। (२) जीत लेना, काबू में करना।

हमारी टीम ने सब को सर कर लिया।

सर पट दौड़ना, फेंकना, डालना—घोड़े का तेज़ दौड़ना। मैंने जो सरपट घोड़ा फेंका तो झट मोटर से आगे।

सरता बरता करना—मिल-जुल कर काम चला लेना। सफ़र में सरता बरता कर थोड़े कपड़ों से काम चला लिया।

सरफ़राज़ करना—धन्य करना (व्यंग्य)।

सरसों फूलना—पीला पीला दिखना। मनमोहन ने छबि दिखलाई सरसी फूली आँखों में।

सराय का कुत्ता—मतलब का यार। सराय के कुत्ते हो मैं दूँगा मेरे पैर दाबोगे नहीं किसी और के सही।

सराय की भटियारी—बेशर्म, लड़ाकी स्त्री। सौत सराय की भटियारी है, उन्हें मैं पसन्द हूँ, वे आते हैं।

सर्द होजाना—(१) मर जाना। (२) चुप होजाना। मेरी डपट सुनते ही वह सर्द होगया।

सर्द खाना—जाड़े का असर होना।

सर्द होना—(१) ठंडा पड़ना। (२) मंद, धीमा होना। (३) चुप, उत्साह-रहित होना।

सर्दी चढ़ना—जाड़े से बुखार आना।

सर्दी पड़ना—जाड़ा होना।

सर्राफ़ के से टके—बिना हानि का सौदा। हम तो ऐसा व्यवहार चाहते हैं कि सर्राफ़ के से टके चाहे जब भुनालें।

सलतनत बैठना—इन्तजाम ठीक होना।

सलाई फेरना—आँखें फोड़ना।

(दूर से) सलाम करना—पास न जाना। ऐसे लोगों को दूर से सलाम करो ये बुरे हैं। हसने उनकी मज़ाक उड़ाई।

सलाम कर के चलना—नाराज़ होकर जाना। वे झट सलाम करके चल दिये।

सलाम देना—(१) सलाम करना। (२) सलाम कह देना। मैं मियाँ से मिला था उसने आपको सलाम दी है।

सलाम फेरना—(१) नमाज पढ़ना। (२) नाराज़ होकर सलाम भी न मानना।

सलाम लेना—सलाम का जवाब देना।

सलामती से—अच्छी तरह, भगवान की कृपा से। बेटा सलामती से घर आये, यही दुआ है।

सलामी उतारना—इज्जत के लिये तोपें बंदूकें छोड़ना, बाढ़ दागना।

सलाह ठहराना—निश्चय, राय

होना। फिर सलाह ठहरी रिपोर्ट ही करदें।

सवारी लेना—चढ़ना. चढ़ने के काम में लाना।

सवाल जवाब करना— चखचख, हुज्जत करना।

(किसी पर) सवाल देना— दावा, नालिश करना।

सवाल हलकरना–विपत्ति, कठिनाई दूर करना।

सस्ता लगना— कीमत, दाम कम होना।

सस्ते छूटना—आसानी से कठिन काम होना। सस्ते छूटे वरना हज़ार का खर्च था।

सहम चढ़ना— डर या शर्म होना।

सहारा ढूँढना—आश्रय, वसीला खोजना।

सहारा देना—(१) सहायता, मदद करना। (२) टेक देना। (३) आसरा देना। (४) रोकना।

सहारा पाना—सहायता पाना।

सही पड़ना—ठीक बैठना, सच उतरना।

सही भरना—मान लेना।

स्वांग भरना, लाना—(१) किसी की नक़ल उतारना। (२) खेल करना। (३) रूप बनाना।

स्याह सफ़ेद करना—भला बुरा कुछ भी, जो चाहना सो करना।

स्वाहा करना—(१) कुछ बाकी न रखना। (२) जलाकर भस्म करना।

स्वाहा होना— नष्ट, बरबाद होना। सारा धन स्वाहा होगया।

साँचे में ढालना—अति सुन्दर बनाना। लड़का ऐसा है साँचे में ढला हुआ, अति सुन्दर।

साँचे में ढला होना—बहुत सुन्दर आकार-रूप होना।

साँचे में ढालना—सुन्दर बनाना। मूर्ति तो ऐसी बनी है जैसे साँचे में ढाली हो।

साँड की तरह घूमना—मस्त बेफ़िक्र घूमना।

साँड की तरह डकारना—जोर से चिल्लाना।

साँधामारना– गाँठ से दो रस्सी जोड़ना (लश)।

साँप की चाल चलना—

साँप के मुँह में—खतरे में।

साँप की लहर—साँप के जहर का चढ़ना और उसका दुख होना।

साँप की तरह केंचुली झाड़ना—पुराना रूप छोड़ नया करना। वसंत में आकर आपने भी गुदड़े छोड़ साँप की केंचुली झाड़ी है।

साँप खिलाना—(१) नीच, दुखदेय को पालना। (२) भयंकर वस्तु से खेल करना। उसे

शामिल तो कर लिया है, पर समझ लो साँप को खिला रहे हो।

साँप छाती पर लोटना—दिल पर चोट लगना। तुमने ऐसी बात कही कि उनकी छाती पर साँप लोट गया।

साँप छछूँदर की दशा—दुविधा में दोनों ओर आफत। न करूँ तो पिटूँ करूँ तो जेल, क्या करूँ साँप छछूँदर की सी हालत है।

साँप लोटना (कलेजेपर)—(वैर आदि से) अति ईर्ष्या जलन होना। उसकी उन्नति देख मेरे कलेजे पर साँप लोट गया।

साँप सूँघ जाना—निर्जीव सा हो जाना। ऐसे सोये मानो साँप सूँघ गया हो।

साँस उखड़ना—(१) दमे का दौरा होना। मरते समय ऊपर ऊपर बड़े कष्ट से साँस आना।

साँस उड़ना—(१) मरने के करीब होना। (२) रुककर साँस आना।

साँस उलटी लेना—शोक करना, पछताना।

साँस ऊपर नीचे होना—साँस रुकना।

साँस खींचना—(१) साँस लेना। (२) साँस, दम रोकना।

साँस चढ़ जाना—(१) हाँफने लगना। (२) जल्द थक जाना। (३) मरने के निकट होना।

साँस तक न लेना—कुछ न बोलना। उनके डर से कोई साँस तक नहीं लेता।

साँस लेना—करते करते, चलते चलते ज़रा ठहर जाना। साँस लेलूँ तो चलूँ।

साँस रहते जीते जी।

(गहरी) साँस भरना, लेना
साँस ठंडी, लम्बी लेना

खूब साँस खींचकर बाहर निकलना (दुख में या दुख बीतने पर ऐसा होता है)।

साँस चढ़ना — चिन्ता होना। लड़की के व्याह का अभी से साँसा चढ़ा है।

साँसा पड़ना—खतरे का संदेह होना।

साई देना—काम के लिये कुछ पेशगी देना। जूते की साई देदी।

साई बजाना—पेशगी देने वाले के यहाँ बाजा बजाना।

साका चलाना—प्रभाव माना जाना।

साका बाँधना — धाक, रौब जमाना।

साग पात समझना—दे० मु० १६८५।

साज छेड़ना—बाजे बजाना शुरू करना।

सात घाट का पानी पीना—चालाक, धूर्त या दुनिया से अभिज्ञ होना।

सात तालों के अंदर रखना—बड़ी हिफ़ाज़त से रखना।

सात धार होकर निकलना—हज़म न होना, दस्त की राह निकलना।

सात परदे में रखना—बहुत संभाल कर रखना। चाहे सात परदों में रखो जान रह नहीं सकती।

सात पाँच—(१) कई एक, बहुत से। (२) चालाकी, छल कपट। इसे सात पाँच नहीं आता।

सात पाँच करना—(१) चालबाजी करना। सीधा आदमी है सातपाँच नहीं जानता। (२) हुज्जत, तकरार करना। (३) संदेह करना। सात पाँच मत करो तुम्हारा देना न डूबेगा (४) बहाना करना।

सातों भूल जाना—होश-हवाश चले जाना। शेर को देखोगे तो सातों भूल जाओगे।

साथ देना—सहायता देना, एक साथ चलना। तुमने मेरा आधा साथ दिया।

साथ सोकर मुँह छिपाना—अधिक घनिष्टता होने पर भी शर्म या छिपाव करना।

सान देना, धरना—धार तेज करना।

सान पर चढ़ना—(१) निखरना। (२) तेज़ होना।

साफ़ उड़ जाना हाथ न आना, भाग जाना।

साफ़ उड़ा जाना—बहाना कर देना, इन्कार कर देना।

साफ़ उड़ा लेना—चुपचाप ले आना।

साफ़ कान खोल देना—खूब जता देना, समझा देना। मैंने तो साफ़ कान खोल दिये हैं, अब भी करो तो तुम्हारे सिर।

साफ़ करना—(१) मार देना। (२) बरबाद कर देना। (३) खा जाना।

साफ़ छूट जाना—बेदाग़ बच जाना।

साफ ज़वाब देना—बिल्कुल 'ना' कर देना। जब मैंने माँगा तो साफ़ जवाब देदिया।

साफ़ बचना—बाल बाल, बिल्कुल बच जाना।

साफ साफ़ सुनाना—खरी खरी, सत्य-स्पष्ट (चाहे बुरी लगें) कहना।

साफ़ा देना—भूखा रखना।

साबिका पड़ना—(१) वास्ता काम पड़ना। (२) मेल जोल, लेनदेन होना।

सामना करना—(१) धृष्टता करना, बराबरी करना। (२) लड़ना, मुठ भेड़ करना।

सामने करना—आगे हाजिर करना।

सामने का—(१ उपस्थित। (२) अपने देखने में हुआ हो।

सामने की बात—आँखों देखी बात।

सामने पड़ना—(१) आँखों आगे आना। (२) लड़ने-झगड़ने लगना।

सामने होना—परदा छोड़ कर आगे आना।

सामान बाँधना—सामान लेकर चलने को तैयार होना।

साया डालना—(१) असर डालना। (२) कृपा करना, आना।

साया पड़ना—(१) असर होंना।

साया होना—(१) दया, रक्षा, कृपा होना। बड़ों का साया है डर कहाँ से हो। (२) भूत-प्रेत का असर होना।

साये में आना—(१) भूत-प्रेत चढ़ना। (२) रक्षा, शरण में आना।

साये में रहना—रक्षा, शरण में रहना।

साये से भागना—पास न आना।

साष्टाँग प्रणाम करना—दे० हाथ जोड़ना।

सिक्का पड़ना—सिक्का ढलना।

सिक्का बैठना जमना—प्रभाव, अधिकार होना। राजा पर सिक्का बैठ गया तो करा दूँगा।

सिक्का बैठाना-अधिकार, रौब जमाना। जहाँ जाता है अपना सिक्का बैठा लेता है।

सिट्टी पिट्टी गुम होना
सिट्टी भूलना } होश हवाश जाते रहना।

सिड़ सवार होना—सनक, धुन होना।

सितारा चमकना
सितारा बलंद होना } भाग्योदय अच्छे दिन होना। इस साल सितारा चमका और लखपती बने।

सितारा मिलना—(१) ग्रहों का मेल होना। (२) मन मिलना, प्रेम होना।

सिप्पा जमाना—उपाय, भूमिका बाँधना।

सिप्पा बैठना—कोशिश चलना।

सिप्पा भिड़ना, लड़ना—(१) उपाय से काम बन जाना। (२) तदबीर हो जाना।

सिप्पा भिड़ाना, लड़ाना—युक्ति, तदबीर करना। सिप्पा भिड़ाओ उनका कोई रिश्तेदार सिफ़ारिश करदे।

सिर आँखों पर बैठाना, रखना—बड़ी इज्जत और आव भगत से बैठाना।

मैं उसकी क़द्र जानता हूँ अतः सिर आँखों पर बिठाता हूँ।

सिर आँखों पर होना—मान्य होना। आपकी आज्ञा सिर आँखो पर है।

सिर आना—भूत प्रेत का प्रभाव होना, खेलना।

सिर उठाना—(१) विरोध, उपद्रव करना, बिगड़ खड़े होना। जो भी बाग़ी सिर उठाये सिर काट डालो। (२) घमंड करना। (३) बिमारी से मौका पाना। जब से बच्चा ज्वर में पड़ा है सर नहीं उठाया। (४) इज्जत से खड़े होना। गुलाम भारत स्वतंत्र देशों के सामने सर नहीं उठा सकता। (५) सामने देखना, लज्जित होना।

सिर उठाने की फ़ुर्सत न होना-जरा भी फ़ुर्सत न होना, व्यस्त होना।

सिर उठाकर चलना—शान से ऐंठ कर चलना। जो एक भी डिग्री होगई तो बाज़ार में सिर उठाकर न चल सकोगे।

सिर उतरवाना—सिर कटवाना।

सिर उतारना—सिर काटना।

(किसी का) सिर ऊँचा करना—इज्जत देना। आपने उसका सिर ऊँचा कर दिया है।

(अपना) सिर ऊँचा करना—प्रतिष्ठा रखना। बिरादरी में अपना सिर ऊँचा किए रहो चाहे भूखे मरो।

सिर ओखली में देना—आपत्ति में पड़ना, जान पर खेलना। ओखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर।

सिर औंधाकर पड़ना—फिक्र या रंज में नीचा सिर किए पड़ना।

सिर करना—(१) गले मढ़ना। (२) जिम्मे करना। (३) सिर गूँथना।

सिर काढ़ना-मशहूर होना।

सिर का एक बाल न छोड़ना—सब कुछ ले लेना।

सिर का न पाँव का—आदि का न अंत का, बे ठिकाने।

सिर का पसीना पैर तक आना—बहुत मेहनत पड़ना। धान कूटते कूटते सिर का पसीना एड़ी तक आजाता है तब दस पैसे मिलते हैं।

सिर का बोझ टलना, टालना—झंझट दूर होना, बेफ़िक्र होना।

सिर के बल चलना—आदर पूर्वक जाना। आप बुलावेंगे तो मैं सिर के बल आऊँगा।

सिर खपाना—(१) बहुत समझाना। (२) बहुत सोचना बिचारना। बहुत सिर खपाया पर समझ में ही न आया।

सिर खाना—व्यर्थ बातों से तंग

करना। मैं नहीं सुनता मेरा सिर मत खाओ।

सिर खाली करना—(१) बहुत बोलना। (२) बहुत सोचना। (३) बहुत समझाना। व्यर्थ में सिर खाली कर डालो, वह न समझेगा।

सिर खुजलाना—पिटना चाहना। क्यों सिर खुजला रहा है सीधा चला जा, पिटेगा क्या ?

सिर गंजा करना—(१) मार मार कर सिर के बाल उड़ाना। (२) कौड़ी न छोड़ना।

सिर घुटनों में देना—(१) शर्मिन्दा होना। (२) सोच विचार में होना।

सिर चढ़कर बोलना—छिपाये न छिपना। पाप कर्म सिर चढ़कर बोलता है।

सिर चढ़ना—गुस्ताख़ी करना। बे अदब बनना।

सिर चढ़ाना—दे० मुँह लगाना।

सिर चढ़ा—दे० मुँह चढ़ा।

सिर चला जाना—मरना। सिर चला जाय पर आन न जाय।

सिर जोड़ कर बैठना—एक दूसरे के समीप सहाय बनकर आपत्ति में बैठना।

सिर जोड़ना—(१) जलसा करना। (२) एका कर के। सिर जोड़कर करोगे तो काम बन जायगा।

सिर झुकाना, नीचा करना—(१) लज्जित होना। (२) हुक्म मानना। (३) प्रणाम करना। (४) हार मानना। (५) नम्र बनना।

सिर टकराना—कोशिश करना। लाख सिर टकराओ पर काम न बनेगा।

सिर टूटना—झगड़ा होना, सिर फटना।

सिर डालना (किसी के)—दे० सिर मढ़ना।

सिर थाम के बैठना—अधिक दुख में सिर पकड़ कर बैठना, बेहोशी सी होना।

सिर देना—जान दे देना। सिर दो गढ़ न दो।

सिर धरना—(१) मानना। आज्ञा सिर धरे चले तहाँ ते। (२) जिम्मेदार बनाना। मारा आपने सिर मेरे धरते हो।

सिर धुनना—सिर पीटना। सिर धुनि धुनि पछताहिं।

सिर नंगा करना / **सिर नवाना**—दीन बनना। सिर नवाकर ही काम निकाल लो।

सिर नीचा करना—(१) प्रतिष्ठा खोना। (२) लजित करना। भरी सभा में बेचारे का सिर नीचा कर दिया।

सिर नीचा होना—लज्जित होना।

सिर पचाना—(१) बहुत सोचना। (२) बहुत यत्न, श्रम करना।

सिर पटक के मरना — बहुत कोशिश करते करते थक जाना। सिर पटक के मरजाओ तब भी न दूँगा।

सिर पटकना – अफ़सोस करना। अब क्यों सिर पटकते हो तब भी तो तुम्हीं थे न?

सिर पड़ना, सिर पर आना —(१) अपने ऊपर घटित होना। जब सिर पर आई तो ज्ञात हुआ कितना कठिन है। (२) जिम्मे होना। सिर पर आगई तो करनी पड़ी।

सिर पर आ जाना — थोड़े दिन रहना। लो ब्याह सिर पर आ गया कुल बीस दिन हैं।

सिर पर आरे चलना—(१) जान पर बीतना। (२) अन्याय, अत्याचार होना। रियासतों की प्रजा के सिर पर आरे चलते हैं परन्तु वेचारी आह भी नहीं कर सकती।

सिर पर उठा लेना—धूम मचाना। लड़कों ने स्कूल सिर पर उठा रखा है।

सिर पर कोई न होना—देखभाल करने वाला न होना। पिता जी के बाद सिर पर कोई न रहा।

सिर पर खड़ा रहना—सामने ही रहना। सिर पर खड़े रहोगे तो काम न कर सकूँगा।

सिर पर खून चढ़ना, सवार होना—जान लेने पर उतारू होना। सिर पर खून सवार था एक दिन क़त्ल कर ही डाला।

सिर पर खेलना — (१) जान जोखों में डालना। सिर पर खेल कर ही विजय मिलेगी। (२) पास ही होना। मौत सिर पर खेल रही है। (३) भूत प्रेत आदि का सिर पर होना।

सिर पर चढ़ना, कर बोलना— स्वयं प्रकट होना। जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले।

सिर पर छप्पर रखना—(१) दबाव डालना। जब कई लोगों ने सिर पर छप्पर ही रख दिया तो करना पड़ा। (२) बाल बढ़ाना।

सिर पर जूँ न रेंगना– चेत, ख्याल, चिन्ता न होना।

सिर पर बीतना – दे० सिर पर पड़ना।

सिर पर पाँव रखना — (१) बहुत जल्दी भागना। मैं वहाँ से सिर पर पाँव रखकर भागा। (२) उद्दंड व्यवहार करना। बुरा भला कह लेते पर उच्च के सिर पर पाँव न रखते।

सिर पर पृथ्वी उठाना– शोर गुल मचाना।

सिर पर पड़ना—जिम्में पड़ना।

सारा नुकसान तुम्हारे सिर पड़ेगा। (२) अपने पर गुज़रना। सिर पर पड़ी तब जाना गृहस्थ चलाना कठिन है।

सिर पर मिट्टी डालना—(१) रंजीदा होना। (२) घृणा प्रकट करना। बुढ़ापे में व्यभिचार छिनाल के सिर मट्टी डाल।

सिर पर रखना आदर करना। अपने मित्र होते तो मैं सिर पर रखता।

सिर पर लेना—(१) जिम्मे लेना। (२) सहना। (३) स्वयं को खतरे में डालना। सिर पर ले लिया तो मर ही मिटेगा।

सिर पर शैतान चढ़ना—गुस्सा आना। ऐसा शैतान सिर पर चढ़ा कि दिन भर खाना ही न बनाया।

सिर पर सहना स्वयं सहना।

सिर पर सींग होना — कोई विशेषता होना। उनके क्या सिर पर सींग हैं जो उन्हें ज्यादा दूँ।

सिर पर सेहरा बंधना—बड़ाई वाहवाही मिलना। विजय का सेहरा उसके सिरबँधा।

सिर पर हाथ धरकर रोना— भाग्य को रोना। रुपया खो गया तो सिर पर हाथ धर कर रोओगे।

सिर पर हाथ धरना —(१) रक्षा, सहायता होना। हैडमास्टर ने सिर पर हाथ धरा है, पास होगे। (२) सर की कसम खाना। सिर पर हाथ धर के कहा 'मैंने नहीं ली।'

सिर पर हाथ फेरना—(१) पुचकारना। (२) धोखे में डाल कर हड़पना। किसी अमीर के सिर पर हाथ फेरो जो कुछ हाथ लगे।

सिर पर होना— रक्षक, पालक तथा सहायक होना। मेरे सिर कोई होता तो मैं पढ़ जाता।

सिर पीटते फिरना—पश्चाताप, अफ़सोस जताते रहना।

सिर पीटना— शोक मनाना। दुख में सिर पीटोगे तो वेहोश हो जाओगे।

सिर पीट लेना—करम ठोककर बैठ जाना। सिर पीट लिया, दिलके गुब्बार निकाल लिये।

सिर फिरना—(१) पागल होना।

सिर फेरना— (१) 'ना' करना। (२) बहका कर विरुद्ध कर देना।

सिर फोड़ना—(१) कपाल क्रिया करना। (२) झगड़ना। दो दो आने पर सर फोड़ते शर्म नहीं आती।

सिर बाँधना—बाल बाँधना।

सिर बेंचना - फौज़ी बनना।

सिर भिन्नाना— सिर दर्द होना, चकराना।

सिर मढ़ना — जिम्मे करना। नुकसान तुमने किया जुर्माना मेरे सिर मढ़ा।

सिर माथे—दे० सिर आँखो...।

सिर मारना—(१) समझाना। (२) उत्तेजित हो देना। सड़ेगले फल उसी के सिर मार आओ। (३) जान लड़ाना। (४) बहुत खोजना। बहुत सिर मारा पर वही शब्द न मिला।

सिर मुँड़ाते ओले पड़ना—प्रारम्भ में ही काम बिगड़ना।

सिर मुडाना—संन्यासी होना।

सिर मूँडना—धोखे में फाँस कर ले लेना।

सिर में बाल होना—सहन शक्ति होना। जब तक फिर पर बाल हैं मैं लड़ूँगा।

सिर रँगना—सिर फोड़ना।

सिर रहना—कहते ही रहना। उनके सिर रहोगे तो नंबर बताही देंगे।

सिर सफ़ेद होना—बुढ़ापा आना, अनुभव होना।

सिर से कफ़न बाँधना—मरने को तैयार होना। क्यों? सिर से कफ़न बाँधे बिना लड़ाई कैसी?

सिर से खेलना—(१) सिर पर भूत आना। (२) लड़ना।

सिर से खेल जाना—जान दे देना।

सिर से चलना—सिर के बल चलना, बहुत आदर करना।

सिर से तिनका उतारना—प्रत्युपकार करना। तुमभी उनके साथ भला कर के सिर से तिनका उतारो।

सिर से पानी गुज़रना—सहने की हद होना। कहाँ तक गाली सुनें अब तो पानी सिर से भी गुजर गया।

सिर से पैर तक—सारे शरीर में, पूर्णतया।

सिर से पैर तक आग लगना—बहुत क्रोध आना।

सिर से बोझ उतरना, उतारना—(१) एहसान का बदला देना। (२) भारी काम कर डालना। (३) बेगार सी टालना। (४) काम क्या किया सिर से बोझ उतारा है, इससे अच्छा तो मैं ही कर लेता।

सिर से बला टालना—(१) झंझट दूर करना। (२) दे० बेगार टालना।

सिर पर सेहरा होना—(१) मुख्य होना। (२) वाह वाही मिलना।

सिर सहलाना—प्यार, खुशामद करना।

(किसी के) सिर होना—(१) पीछे पड़ना। (२) उलझ पड़ना। (३) तंग करना, हठ करना।

(किसी बात के) सिर होना—(१) ताड़ जाना। (२) सतत

प्रयत्न करना। (३) प्राप्ति करना।

(दोषादि किसी के) सिर होना—जिम्मे होना।

सिरवा मारना—भुस उड़ाने को कपड़े से हवा करना।

सिर सूँघना—आशीष देना।

(जमीन) सूँघना—औंधे मुँह गिरना।

सिरे का—पल्ले सिरे का, अत्यंत।

सिरे का रंग—जेठा रंग (रंग रेज)।

सिले में बदले में।

सिसकती भिनकती—गंदी, मैली-कुचैली सूरत (स्त्री)।

सींग काट कर बछड़ों में मिलना—बूढ़े होकर बच्चों में मिलना।

सींग दिखाना—दे० अँगूठा दिखाना।

सींग निकलना—(१) पशु जवान होना। (२) इतराना, पागलपन करना।

सींग पर मारना—जरा परवा न करना।

सींग समाना—ठिकाना होना।

(किसी के सिर पर) सींग होना—विशेषता, औरों, से बढ़ कर बात होना। (व्यंग्य)

सींगी तोड़ना, लगाना—(१) चुंबन करना (बाज़ारू)। (२) सींगी से खून खींचना।

सींव चरना या काँड़ना—जबरदस्ती करना, दबाना। हैं काके द्वै सीस ईस के जो हठि जन की सींव चरै।

(अपनी) सी—जहाँ तक अपने से हो सका। मैं अपनी सी बहुत करी री।

सीटी देना—सीटी बजाना।

सीढ़ी सीढ़ी चढ़ना—क्रमशः उन्नति करना। सीढ़ी सीढ़ी चढ़ेगा तो पढ़ाई कच्ची न रहेगी।

सीध बाँधना—(१) सीधी रेखा डालना। (२) निशान लगाना।

सीधा आना—सामना करना, भिड़ना।

सीधा करना—(१) निशाना साधना। (२) रास्ते पर लाना, टेढ़ा पन निकालना।

सीधा दिन—शुभ दिन। सीधा दिन देखकर यात्रा करो।

सीधा सादा—(१) भोला निष्कपट। (२) बनावट या तड़क भड़क से परे। प्रेमचन्द्र जी सीधे सादे रहते थे।

सीधी अँगुली घी नहीं निकलता—भलमनसाहत से काम नहीं होता।

सीधी तरह—नम्रता, शिष्टता से। सीधी तरह न देगा तो पीट कर लूँगा।

सीधी राह—अच्छे रास्ते,

आचरण। सीधी राह चलो जग में बुरे न बनो।

सीधी सुनाना – साफ़ साफ़ कह देना।

सीधे मुँह बात न करना—प्रेम से नहीं, ऐंठ कर बोलना। डिप्टी बन कर तो सीधे मुँह बात नहीं करता।

सीना जोरी करना—जबर्दस्ती करना।

सीने से लगाना—(१) गले लगाना। (२) प्रेम जताना। चिट्ठी सीने से लगाई।

सीमा से बाहर जाना—हद, मर्यादा या औचित्य से अधिक।

सीर में—मिल कर। सीर में खेती करलो।

सीर खुलवाना—दे० फसद खुलवाना।

सुख मानना—(१) अनुकूल ही रहना। यह पेड़ हर जमीन में सुख मानता है। (२) संतुष्ट रहना।

सुख की नींद सोना—आनन्द तथा संतोष से रहना।

सुख लूटना—मौज-मज़े उड़ाना।

सुध दिलाना—भूली बात याद कराना।

सुनना चाहना—बुरा भला सुनने की इच्छा होना।

सुनी अनसुनी करना—सुन कर भी ध्यान न देना।

सुध बिसराना—(१) भूल जाना। कृष्ण गोपियन की सुधि बिसराई। (२) बेहोश, मद होश होना। बांसुरी ने मो सुधि बुधि बिसराई।

सुध रखना—याद रखना।

सुध लेना—(१) याद करना। (२) रक्षा के लिये आना। भगवान हमारी भी सुध लेगा।

सुध बुध जाती रहना—होश हवास उड़ जाना। सिर पर लाठी लगते ही सब सुध बुध जाती रही।

सुध बुध मारी जाना—दीवाना हो जाना।

सुनपाना—सुन लेना। वह सुन पायेंगे तो घर से निकाल देंगे।

सुर में सुर मिलाना—हाँ में हाँ मिलाना।

सुरखाब का पर लगना—दे० सिर पर सींग होना।

सुरत बिसारना—भूलना।

सुरपुर सिधारना—मरना।

सुहाग भरना—माँग भरना।

सुहाग मानना—पति के जीवन, सौभाग्य की कामना करना। वह तो दिन रात बेचारी सुहाग मनाती रहती है और तुम इतने निठुर हो!

सूख कर काँटा होना—बहुत दुबला हो जाना।

सूई का भाला बनाना—(१)

तनिक सी चीज़ से बहुत दुख होना। (२) जरा सी बुराई का बहुत बढ़ जाना।

सूखे खेत लहलहाना—दुख में सुख मिलना। कल दाने दाने को तरसते थे पर भगवान की कृपा से सूखे खेत लहलहाने लगे।

सूखा जवाब देना—साफ़ इन्कार करना।

सूखा टरकाना, टालना—दिये बिना, इच्छा पूरी किये बिना लौटाना। अजी क्या लाये, सूखा टाला, कुछ न दिया।

सूखा लगना—(१) सूखते जाना, सूखा रोग होना। (२) अरुचिकर होना।

सूखे धान पर पानी पड़ना—बुरी से भली हालत होना। बेचारे के सूखे धान पर पानी पड़ा जो बुढ़ापे में लड़का हुआ।

सूखे पर लगना—किनारे पहुँचना।

सूत धरना—सीध बाँध कर सूत से निशान करना। बढ़ई ने गीली सूतली से लकड़ी पर सूत धरा।

सूत बराबर—बहुत महीन, सूक्ष्म।

सूत सूत—जरा जरा, तनिक तनिक।

सूद दर सूद—ब्याज पर भी ब्याज लगाना।

सूद पर लगाना—रुपया ब्याज पर देना।

सूधी कहना—खरी खरी सुनाना।

सूधी सूधी सुनाना—खरी खरी सुनाना, गाली या चुभती बात कहना।

सूधे सुध—कोरा, साफ़ साफ़। सूधे सूध जवाब न दीजै।

सूना लगना—आदमियों के बग़ैर जी न लगना।

सूप भर—बहुत सा (अन्न)।

सूरज को दीपक दिखाना—अति गुणवान को कुछ बताना।

सूरज पर थूकना—निर्दोष को दोष लगाना। भले को बुरा कहना सूरज पर थूकना है।

सूरज पर धूल फेंकना—

सूरत करना—(१) उपाय करना। (२) ख्याल करना।

सूरत नजर न आना—उपाय न सूझना। काम बनने की कोई सूरत नज़र नहीं आती।

सूरत बनाना—(१) अरुचि दिखाना। जब हिस्सा थोड़ा मिला तो सूरत बनाने लगे। (२) पूरी पूरी नकल करना।

सूली पर जान होना—दे० फाँसी खड़ी होना।

सैकड़ों, सौ २ घड़े पानी पड़ना—बहुत लज्जित होना।

सोने की कटारी—सुन्दर पर नाशकारी।

सोने की चिड़िया—जिससे खूब लाभ हो।

सोने की चिड़िया हाथ में से निकल जाना — लाभ दायक मनुष्य का अपने वश में न रहना।

सोने में सुगंध होना—असंभव गुण भी होना। धनवान का विद्वान् होना सोने में सुगंध है।

सोलह आने—दे० बीस बिस्वे।

सौ कोस भागना — दूर रहना, लगाव न रखना। मैं बुरे से सौ कोस भागता हूँ।

सौ बात की एक बात—सारांश। सौ बात की एक बात यह है कि तुम रुपये दे दो।

स्टीम भरना—जोश दिलाना। स्वामी जी ने ऐसी स्टीम भरी कि वह बराबर पढ़ता गया।

ह

हँस कर उड़ाना—ध्यान न देना। काम की बात को तो हँस कर उड़ा देता है।

हँसते खेलते—खुशी खुशी। इतना दुख तो हँसते खेलते सहते हैं।

हँसते हँसते पेट में बल पड़ना, बुरा हाल होना, लोट पोट होना—खूब जोर से हँसना। उसके मज़ाक से तो हँसते हँसते···।

हँसी उड़ाना—(१) मूर्ख बनाना। (२) अपमानित होना। भरी सभायें हँसी उड़ाई।

हँसी खेल समझना—आसान, सरल समझना। लीडर बनना क्या हँसी खेल समझा है?

हँसी खेल (न) होना—सरल (न) होना। प्रेम पयोनिधि में धँसिके हँसिके कढ़िबो हँसी खेल नहीं कछु।

हँसी में उड़ा देना—ध्यान न देना। उपदेश की बात हँसी में उड़ा दोगे तो पछताओगे।

हँसी में लेना—मज़ाक जानना।

हँसी होना— बदनामी होना।

हक्का बक्का रह जाना—(१) हैरत में, भौचक्का होना। (२) कहते करते न बनना।

हजम करना—लेकर न देना।

हजामत बनाना—लूटना, पीटना, उड़ाना। उसने सौ रुपये से तो मेरी हजामत बनाई।

हड़प कर जाना, लेना—बेईमानी से ले लेना। उसने दूसरे के सब रुपये हड़प कर गये।

हत्थे पड़ना—पंजे में फँसना, काबू में आना।

हथियार डाल देना—(१) आधीन होना। (२) लड़ाई बंद कर देना, अस्त्रशस्त्र रख देना।

हथियार बाँधना—हथियार लेकर लड़ने चलना।

हत्या टलना — झंझट, संकट मिटना। महीने भर पीछे यह भी हत्या टल जायगी, सुख से बैठेंगे।

हथेली पर जान लिए फिरना—मरने को तैयार रहना।

हथेली पर सरसों जमना—हद से जल्दी काम करने की इच्छा।

हद करना — (१) आखिर को पहुँचाना। (२) कमाल कर देना।

हरफ़ आना — दोष लगना। बे फ़िक्र रहो तुम पर हरफ़ न आवेगा।

हरियाली सूझना—(१) आनन्द में मग्न। (२) सरल जानना। अभी तो हरियाली सूझी है पीछे पता लगेगा कितना कठिन हैं।

हराम मुँह लगना—बुरी कमाई की आदत पड़ना। हराम मुँह लगा नहीं छूटता।

हरा हो जाना (१) खुश हो जाना। (२) तरो ताज़ा होना। बाग में जाते ही थकान मिट गई हरा हो गया।

हल कम डालना—जल्दी मचाना।

हलक में ऊँगली डाल कर निकालना—छान बीन, कड़ाई से पचाई वस्तु को प्राप्त करना। मैं उनसे हलक में उँगली डाल कर निकाल लूँगा, मेरे रुपये वह नहीं पचा सकते।

हलका लोहू होना—खून देखते ही वेहोश हो जाना।

हलका करना--अपमानित करना। दस आदमियों में हलका मत करो।

हलका होना—तुच्छ होना। एक ही बुरे काम से तुम दुनिया की आँखों में हलके हो गये।

हमेशा रोते जन्म गुजरा—एक न एक दुख बना ही रहा।

हलके भारी होना—बोझ सा समझना। कल तक चले जायँगे क्यों हलके भारी होते हो।

हल्दी चढ़ना—ब्याह होना।

हवाइयाँ छूटना—रङ्ग उड़ जाना।

हलवे माँडे से काम—अपने लाभ से काम। तुम्हें अपने हलवे माँडे से काम दूसरा हारे चाहे जीते।

हवाई खबर—झूठी दे० उड़ती खबर।

हवा उखाड़ना
हवा उड़ना } रौब, प्रसिद्धि न रहना। एक शादी में ही उनकी हवा उखड़ गई।

हवा का रंग देखना—मौका समझना। हवा का रंग देख कर काम करना ही बुद्धिमानी है।

हवा के घोड़े पर सवार होना—बड़ी जल्दी में होना। ठहरो कपड़े तो पहनूँ तुम तो हवा के...।

हवा खाना—बिना प्राप्ति, असफल

जाना। अब हवा खाओ तब आते तो दे देता।

हवा खिलाना—भेजना। अगर जेल की हवा न खिला दूँ तो नाम नहीं।

हवा चलना—रीति-रिवाज हो जाना।

हवा पर उड़ना—(१) इतराना। डिप्टी होकर हवा पर उड़ते हैं। (२) अंदाज पर चलना। हवा पर ही उड़ते हो या कुछ सही बात भी है।

हवा पर दिमाग़ होना—दे० ६४७।

हवा पलटना, फिरना, बदलना—हालत बदलना। सदा यह दुख नहीं कभी तो हवा फिरेगी ही।

हवा बताना—टाल देना। अपना काम निकाल कर तुम्हें हवा बता देगा।

हवा बाँधना—बढ़ बढ़ कर बोलना। क्यों हवा बाँधते हो दस की जगह एक भी तो तुम्हारे पास नहीं।

हवा बिगड़ना—(१) हवा में खराबी होना। (२) समय बदल जाना। मंदे में अच्छे अच्छों की हवा बिगड़ गई।

हवा में गाँठ बाँधना—असंभव के पीछे कष्ट उठाना। तुम मूर्ख हो हवा में गाँठ बाँधना चाहते हो।

हवा लगना—(१) बुरी दशा होना। (२) संगत का प्रभाव पड़ना। दिल्ली की हवा लगी और बरबाद हुए। (३) इतराना।

हवा से बातें करना—(१) बहुत तेज दौड़ना। घोड़ा दौड़ में हवा से बातें करने लगा था। (२) फुर्तीला (३) चालाक (४) जल्दबाज होना।

हवा से झगड़ना, लड़ना—अकारण क्रोध करना। आह करने पे क्यों बिगड़ते हो, तुम तो साहब हवा से लड़ते हो।

हवा हो जाना—न रहना, भाग जाना। बहुत आशा थी पर सारी बातें हवा हो गईं।

हाँजी हाँजी करना—हाँ में हाँ मिलाना।

हाथ उठा कर देना—(१) राजी, प्रसन्नता से देना। जो कुछ हाथ उठाकर दोगे वही स्वीकार है। (२) भीख सी देना।

हाथ उठाना—(१) मारना। औरत पर हाथ उठाना ठीक नहीं। (२) प्रणाम करना। (३) आशीश, देना (४) हाथ खींचना।

हाथ ऊँचा रहना—(१) दानी होना। (२) भाग्यवान होना। जब तक वह जिये हाथ ऊँचा रहा।

हाथ ऊँचा होना—देने लायक, सम्पन्न। आज कल उसका हाथ ऊँचा है जो कुछ देदे थोड़ा है।

हाथ कट जाना, काट लेना—लिख देना, लिखा लेना। मेरे हाथ कट गये हैं दावा नहीं कर सकता।

हाथ का खिलौना—(१) प्रिय व्यक्ति। गुणों के कारण वह बड़ों के हाथ का खिलौना है।

हाथ का मैल—तुच्छ, मामूली। रुपया पैसा हाथ का मैल हैं।

हाथ का सच्चा—(१) ईमानदार। (२) अचूक वार करने वाला। क्षत्रिय लड़ाई में बनिया देने में हाथ का सच्चा पहचाना जाता है।

हाथ के तोते उड़ जाना—अक्ल गुम हो जाना।

हाथ खाली जाना—(१) सफलता न मिलना। (२) वार ठीक न बैठना। हाथ खाली गया नहीं गर्दन कट गई होती।

हाथ खाली होना—(१) रुपया-पैसा न होना। आज कल हाथ खाली है फिर दे दूँगा। (२) काम न होना (३) हथियार न होना।

हाथ खींचना—काम से अलग होना। उन्होंने मदद करने से हाथ खींच लिया है।

हाथ खुजलाना—पीटने को जी चाहना। हाथ खुजला रहे हैं पिट जाओगे

हाथ चढ़ना—(१) प्राप्त होना। (२) वश में आना।

हाथ चलना—मारना। मेरा हाथ चलता है जबान नहीं।

हाथ चाटना—सब खा पीकर भी तृप्त न होना। ऐसा अच्छा साग था कि सभी हाथ चाटते रहे।

हाथ चालाक — फुर्ती से चीज़ उड़ाने वाला। यह नौकर हाथ चालाक है भीतर न आने दो।

हाथ चूमना—कारीगरी पर मुग्ध होकर हाथ चूमना। चित्र को देख कर जी चाहता है चित्रकार के हाथ चूम लूँ।

हाथ जोड़ना — संबन्ध न रखना। मैं ऐसे नीच को दूर से ही हाथ जोड़ता हूँ।

हाथ झूठा पड़ना—(१) निशाना न बैठना। (२) विश्वास न होना।

हाथ डालना—दखल या योग देना। मैं इस मामले में हाथ न डालूँगा।

हाथ तकना—दूसरे के आश्रित होना। क्यों किसी का हाथ तकते हो खुद कमाओ और खाओ।

हाथ दिखाना — (१) नाड़ी दिखाना। (२) वीरता दिखाना।

हाथ झाड़ कर खड़े होना—कह देना मेरे पास कुछ नहीं। तुम्हारा क्या है हाथ झाड़कर खड़े हो जाओगे, खर्च तो मेरे सिर पड़ेगा।

हाथ धो के पीछे पड़ना—जी जान से लग जाना। हाथ धोकर पीछे पड़ा है सफल होगा।

हाथ तंग होना—दे० हाथ खाली होना।

हाथ धो बैठना, धोना—खो देना। आखिर मकान से हाथ धो बैठे।

हाथ धरना—(१) सहारा देना, रक्षा करना। आप हाथ धर दें तो कृतार्थ हो जाऊँ। (२) फाँस लेना।

हाथ पकड़ना—शरण में लेना, जिम्मेदार बनना। हाथ पकड़े की लाज रखो।

हाथ न धरने देना—जरा बातों में न आना। लड़का चालाक है हाथ नहीं धरने देता, समझाऊँ क्या।

हाथ पड़ना—वार पड़ना।

हाथ पत्थर तले दबना—विवश होना। हाथ पत्थर तले दबा है वरना दुखी कर देता।

हाथ पर धरा होना—जबान पर होना।

हाथ पर सरसों जमाना—जल्दी करना चाहना।

हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना—निराश हो जाना। बस इतने प्रयत्न में ही हाथ...।

हाथ पर हाथ धर कर बैठना—खाली बैठे रहना। कुछ नहीं करते हाथ पर हाथ...।

हाथ पसारना—माँगना। जिसने लगी में तुझको पुकारा, सामने तेरे हाथ पसारा।

हाथ पसारे जाना—खाली हाथ जाना।

हाथ पाँव चलना—(१) काम की सामर्थ्य होना। जब तक हाथ पैर चलते हैं हम न माँगेंगे। (२) एक न एक चीज़ हाथ पाँव से छेड़ते रहना।

हाथ पाँव ठंडे पड़ना, होना—मरने का समय होना।

हाथ पाँव तोड़ना—(१) अपाहिज कर देना। (२) कठिन मेहनत करना।

हाथ पाँव निकालना—आपे से बाहर होना।

हाथ पाँव पकड़ना—प्रार्थना, खुशामद करना। नाराज होती हैं तो हाथ पाँव पकड़ कर मनाते हैं।

हाथ पाँव फूलना—डर से घबरा जाना। ऐसी लड़ाई देखते ही हाथ पाँव फूल गये।

हाथ पाँव फैलाना—काम अधिक करना। व्यापार में हाथ पाँव फैलाओगे तो सँभालेगा कौन ?

हाथ पाँव बचाना—सचेत होकर काम करना। मशीन से हाथ पाँव बचाये रहना।

हाथ पाँव मारना पीटना—बहुत कोशिश करना। बहुतेरे हाथ पाँव मारे पर पार न लगा।

हाथ पाँव हिलाना—(१) मेहनत करना। (२) काम धंधा करना। हाथ पाँव हिलाओ तो पेट भरेगा।

हाथ पूरा पड़ना—थप्पड़ हथियार जोर से लगना।

हाथ फेरना—ले लेना।

हाथ फैलाना—माँगने के लिये हाथ बढ़ाना। ईश्वर न करे किसी के सामने हाथ फैलाना पड़े।

हाथ बँटाना—योग, मदद देना। बेटी काम में हाथ बँटाती है।

हाथ फैलाना — कुछ माँगना। गरीब हैं तो क्या किसी के सामने हाथ तो नहीं फैलाते।

हाथ बढ़ाना—(१) दख़ल बढ़ाना। हाथ बढ़ाने से झगड़ा खड़ा हो जायगा। (२) अति लोभ करना।

हाथ बैठना—(१) वार खाली न जाना। ऐसा हाथ बैठा कि बेहोश होगया। (२) अभ्यास होना। पट्टी पर हाथ बैठा लो फिर काग़ज़ पर लिखना।

हाथ बैठना, जमना—(१) अक्षर साफ साफ आना। (२) तलवार बैठना (३) काम का अभ्यास होना।

हाथ मँजना — अभ्यास होना। लिखते लिखते हाथ मँज गये हैं।

हाथ मलना — पछताना। हाथ मलते रह गये कुछ भी न कर सके।

हाथ मारना—उड़ाना, चटकाना। उसके सौ रुपयों पर हाथ मारा।

हाथ मिलाना—दान देना। क्यों न मिल जायगा खुदा उनके हाथ से हाथ जो मिलाते हैं।

हाथ में ठीकरा या सोने का कटोरा होना—भीख माँगना।

हाथ रोकना—(१) खर्च कम करना। हाथ रोको तो पूरा पड़े। (२) वार बचाना। हाथ रोको वरना चोट आयगी।

हाथ लगना—प्राप्त होना। यह पुस्तक कहाँ से हाथ लगी?

हाथ लगाना—दे० मज़ा चखाना।

हाथ लाल करना—कलंक सिर लेना।

हाथ साफ़ करना—माल उड़ाना, दुख देना। गरीबों पर क्या हाथ साफ़ करते हो।

हाथ सिर पर रखना—(१) प्यार करना। (२) सलाम करना। (३) सहायक बनना। (४) किसी के सिर की कसम खाना।

हाथ से देना—खोना। आता हो तो हाथ से न दीजे, जाता हो तो ग़म न कीजे।

हाथ हिलाते आना — कुछ न लाना। कुछ सौग़ात भी लाये या योंही हाथ हिलाते आये हो ?

हाथा पाई होना—लड़ाई झगड़ा होना।

हाथी के संग गाँड़े खाना—बड़े की बराबरी करना।

हाथी पाँव पाना—कड़ा दंड। बातों हाथी पाइये बातों हाथी पाँव।

हाथी बाँधना—(१) बहुत खर्च की चीज़ रखना। मोटर रखना भी हाथी बाँधना ही है। (२) अमीर होना। तुम्हीं बेईमानी से क्या हाथी बाँध लोगे।

हाथों में लेना—सम्हालना।

हाथों कलेजा उछलना — दे० बाँसों उछलना।

हाथों हाथ—बहुत शीघ्र। पुस्तक हाथों हाथ बिक गई।

हाथों हाथ लेना—बहुत आदर करना।

हाय पड़ना—कष्ट देने का फल मिलना। गरीब की हाय पड़ी नाश होगया।

हामी भरना—हाँ कहना।

हिये की फूटना—बुद्धि न होना। तेरे हिये की फूट गई कि यह सड़ी हुई है ?

हिजो करना—ऐब निकालना।

हिन्दी की चिन्दी निकालना— बात की खोज करना।

हुक्का पानी पिलाना—खूब आदर करना।

हुक्का पानी बंद करना—संबन्ध न रखना।

हृदय की गाँठ--दिल का फ़र्क़, कपट, कुटिलता।

हृदय उछलना—मन में आनन्द होना।

हैं हैं करना—गिड़ गिड़ाना।

होंठ चाटना — और खाने का लालच करना।

हेकड़ी किरकिरी होना—शान जाती रहना।

होने के दिन— रजोदर्शन के दिन।

होम कर देना, होम देना— भस्म कर देना। हजारों रुपये और जान तक होम दी।

होली का भंडवा—बेढंगा हास्या-स्पद। नीला मुँह कर के होली का भंडवा बना दिया।

होश उड़जाना — सुध बुध भूल जाना। शेर देखते ही होश उड़ गये।

होश की दवा करना—समझ बूझ कर बोलना। होश की दवा करो नहीं पछताओगे।

होश ठिकाने होना— चित्त स्वस्थ होना, घमंड मिटना। पिटकर होश ठिकाने होजायँगे।

होश दंग होना — चकित चित्त

होना। उसकी रहस्यभरी बातों से सब के होश दंग होगये।

होश सँभालना—सयाना होना। जब होश संभाला तो गरीबी थी।

हौल दिल होना—धड़कन, घबराहट होना।

हौल बैठ जाना — डर समा जाना।

हौल हौली करना—घबरा देना।

हौंस बुझना, बुझाना—इच्छा पूरी होना, करना। आज १७-२-३७ को पुस्तक समाप्त कर हौंस बुझी।

हौंसला अफ़ज़ाई करना, बढ़ाना—हिम्मत बढ़ाना। अब देखें कितने विद्वान हमारा हौंसला बढ़ाते हैं।